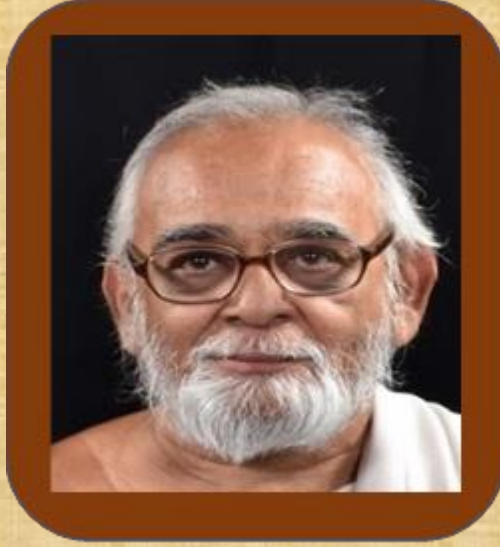


नमो नमो निम्मलदंसणस्स  
बाल ब्रह्मचारी श्री नेमिनाथाय नमः  
पूज्य आनन्द-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर-गुरुभ्यो नमः

## आगम परिभाषा कोषः [५]

आगम शब्दादि परिचय [य..से..ह ]



सर्जन कर्ता

आगम दीवाकर डॉ.मुनि दीपरत्नसागरजी

[ M.Com. M.Ed. Ph.D. श्रुत महर्षि ]

નમો નમો નિમ્મલદંસણસ્સ  
બાલ બ્રહ્મચારી શ્રી નેમિનાથાય નમઃ  
પૂજ્ય આનન્દ-ક્ષમા-લલિત-સુશીલ-સુધર્મસાગર-ગુરૂભ્યો નમઃ

## આગમ-પરિભાષા-કોષ: [૫]

[આગમ શબ્દાદિ પરિચય- ય.. સે ..હ]  
(8200 સે જ્યાદા શબ્દ ઓર કરિબ 14000 વ્યાખ્યાણ )

પ્રકાશન તારીખ 13/07/2021

શુક્રવાર

તિથી- ૨૦૭૭, શ્રાવણ-સુદ, ૫

અનુવાદક અને સંપાદક

આગમ દિવાકર મુનિ દીપરત્નસાગરજી

[M.Com. M.Ed. Ph.D. શ્રુત મહર્ષિ]

∞∞: સંપર્ક :∞∞

જૈનમુનિ ડો. દીપરત્નસાગર [M.Com., M.Ed., Ph.D., શ્રુતમહર્ષિ]

Email: - [jainmunideepratnasagar@gmail.com](mailto:jainmunideepratnasagar@gmail.com)

Mobile: - 09825967397

Web address:- (1) [www.jainelibrary.org](http://www.jainelibrary.org),

(2) Deepratnasagar.in

ફક્ત માહિતી માટે સંપર્ક

આગમ દિવાકર ડો. મુનિશ્રી દીપરત્નસાગરજી મ.સા.

‘પાર્શ્વવિહાર’ જૈન દેરાસરજી, ફોરેસ્ટ રેસ્ટ હાઉસ સામે, હાઈવે ટચ

Post: ઠેબા, Pin: 361120, Dis. જામનગર (ગુજરાત)

–: ટાઈપ સેટિંગ :– આસુતોષ પ્રિન્ટર્સ, 09925146223

–: પ્રિન્ટર્સ :–નવપ્રભાત પ્રિન્ટીંગ પ્રેસ, 09825598855

४५ आगम वर्गीकरण

| क्रम | आगम का नाम          | सूत्र         | क्रम | आगम का नाम       | सूत्र          |
|------|---------------------|---------------|------|------------------|----------------|
| ०१   | आचार                | अंगसूत्र-१    | २५   | आतुरप्रत्याख्यान | पयन्नासूत्र-२  |
| ०२   | सूत्रकृत्           | अंगसूत्र-२    | २६   | महाप्रत्याख्यान  | पयन्नासूत्र-३  |
| ०३   | स्थान               | अंगसूत्र-३    | २७   | भक्तपरिज्ञा      | पयन्नासूत्र-४  |
| ०४   | समवाय               | अंगसूत्र-४    | २८   | तंदुलवैचारिक     | पयन्नासूत्र-५  |
| ०५   | भगवती               | अंगसूत्र-५    | २९   | संस्तारक         | पयन्नासूत्र-६  |
| ०६   | ज्ञाताधर्मकथा       | अंगसूत्र-६    | ३०.१ | गच्छाचार         | पयन्नासूत्र-७  |
| ०७   | उपासकदशा            | अंगसूत्र-७    | ३०.२ | चन्द्रवेध्यक     | पयन्नासूत्र-७  |
| ०८   | अंतकृत् दशा         | अंगसूत्र-८    | ३१   | गणिविद्या        | पयन्नासूत्र-८  |
| ०९   | अनुत्तरोपपातिकदशा   | अंगसूत्र-९    | ३२   | देवेन्द्रस्तव    | पयन्नासूत्र-९  |
| १०   | प्रश्नव्याकरणदशा    | अंगसूत्र-१०   | ३३   | वीरस्तव          | पयन्नासूत्र-१० |
| ११   | विपाकश्रुत          | अंगसूत्र-११   | ३४   | निशीथ            | छेदसूत्र-१     |
| १२   | औपपातिक             | उपांगसूत्र-१  | ३५   | बृहत्कल्प        | छेदसूत्र-२     |
| १३   | राजप्रश्रिय         | उपांगसूत्र-२  | ३६   | व्यवहार          | छेदसूत्र-३     |
| १४   | जीवाजीवाभिगम        | उपांगसूत्र-३  | ३७   | दशाश्रुतस्कन्ध   | छेदसूत्र-४     |
| १५   | प्रज्ञापना          | उपांगसूत्र-४  | ३८   | जीतकल्प          | छेदसूत्र-५     |
| १६   | सूर्यप्रज्ञप्ति     | उपांगसूत्र-५  | ३९   | महानिशीथ         | छेदसूत्र-६     |
| १७   | चन्द्रप्रज्ञप्ति    | उपांगसूत्र-६  | ४०   | आवश्यक           | मूलसूत्र-१     |
| १८   | जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति | उपांगसूत्र-७  | ४१.१ | ओघनिर्युक्ति     | मूलसूत्र-२     |
| १९   | निरयावलिका          | उपांगसूत्र-८  | ४१.२ | पिंडनिर्युक्ति   | मूलसूत्र-२     |
| २०   | कल्पवतंसिका         | उपांगसूत्र-९  | ४२   | दशवैकालिक        | मूलसूत्र-३     |
| २१   | पुष्पिका            | उपांगसूत्र-१० | ४३   | उत्तराध्ययन      | मूलसूत्र-४     |
| २२   | पुष्पचूलिका         | उपांगसूत्र-११ | ४४   | नन्दी            | चूलिकासूत्र-१  |
| २३   | वृष्णिदशा           | उपांगसूत्र-१२ | ४५   | अनुयोगद्वार      | चूलिकासूत्र-२  |
| २४   | चतुःशरण             | पयन्नासूत्र-१ | ---  | -----            | -----          |

## અમારા પ્રકાશનો ૩૦/૦૬/૨૦૨૦ સુધીમાં

| ક્રમ | સાહિત્યનો પ્રકાર                               | બુક્કસ | કુલપાના | બુક્કસ | કુલપાના |
|------|------------------------------------------------|--------|---------|--------|---------|
| 1    | આગમ સાહિત્ય મૂળ [૧ થી ૩] કુલ પુસ્તકો           | --     | -----   | 149    | 07,864  |
|      | 1. આગમ મૂળ પ્રિન્ટેડ (સાઈઝ A- 5)               | 49     | 03510   |        |         |
|      | 2. આગમ મૂળ નેટ (સાઈઝ A- 4)                     | 47     | 02832   |        |         |
|      | 3. આગમ મંજુષા નેટ                              | 53     | 01522   |        |         |
| 2.   | આગમ અનુવાદ સાહિત્ય [૪ થી ૯] કુલ પુસ્તકો        | --     | -----   | 175    | 23,080  |
|      | 1. આગમ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ- મૂળ, પ્રિન્ટેડ       | 49     | 03360   |        |         |
|      | 2. આગમ હિન્દી અનુવાદ-મૂળ, નેટ                  | 48     | 02898   |        |         |
|      | 3. આગમદીપ ગુજરાતી અનુવાદ પ્રિન્ટેડ             | 07     | 02962   |        |         |
|      | 4. આગમ ઇંગ્લીશ અનુવાદ નેટ                      | 11     | 00410   |        |         |
|      | 5. આગમ સટીક ગુજરાતી અનુવાદ પ્રિન્ટેડ           | 48     | 10340   |        |         |
|      | 6. આગમ હિન્દી અનુવાદ-મૂળ, પ્રિન્ટેડ            | 12     | 03110   |        |         |
| 3.   | આગમ વિવેચન સાહિત્ય [૧૦ થી ૧૬] કુલ પુસ્તકો      | --     | -----   | 171    | 60,888  |
|      | 1. આગમ સૂત્ર સટીક પ્રિન્ટેડ                    | 46     | 13806   |        |         |
|      | 2. આગમ-મૂલં એવં વૃત્તિ- 1 નેટ                  | 51     | 17992   |        |         |
|      | 3. આગમ-મૂલં એવં વૃત્તિ- 2 નેટ                  | 09     | 02560   |        |         |
|      | 4. આગમ ચૂર્ણિ સાહિત્ય નેટ                      | 09     | 02668   |        |         |
|      | 5. સવૃત્તિક આગમ સૂત્રાણિ-1, પ્રિન્ટેડ          | 40     | 18460   |        |         |
|      | 6. સવૃત્તિક આગમ સૂત્રાણિ-2, પ્રિન્ટેડ          | 08     | 02648   |        |         |
|      | 7. સચૂર્ણિક આગમ સૂત્રાણિ, પ્રિન્ટેડ            | 08     | 02754   |        |         |
| 4.   | આગમ ડિક્શનેરી સાહિત્ય [૧૭ થી ૨૧] કુલ પુસ્તકો   | --     | -----   | 016    | 05,506  |
|      | 1. આગમ સદ્ધકોસો, પ્રિન્ટેડ                     | 04     | 02184   |        |         |
|      | 2. આગમ કહા વ નામ કોસો, પ્રિન્ટેડ               | 01     | 00208   |        |         |
|      | 3. આગમ સાગર કોષ, નેટ                           | 05     | 01126   |        |         |
|      | 4. આગમ બૃહત નામ કોષ, પ્રિન્ટેડ                 | 02     | 00500   |        |         |
|      | 5. આગમ શબ્દાદિ સંગ્રહ, પ્રિન્ટેડ               | 04     | 01488   |        |         |
| 5.   | આગમ વિષયાનુક્રમ સાહિત્ય [૨૨ થી ૨૪] કુલ પુસ્તકો |        | -----   | 009    | 01,578  |
|      | 1. આગમ વિષયાનુક્રમ પ્રિન્ટેડ + નેટ             | 02     | 00726   |        |         |
|      | 2. આગમ સટીક વિષયાનુક્રમ નેટ                    | 04     | 00428   |        |         |
|      | 3. આગમ સૂત્ર + ગાથાનુક્રમ નેટ                  | 03     | 00424   |        |         |
|      |                                                |        |         |        |         |
|      | અમારા સાહિત્ય પ્રકાશનો ચાલુ.....               |        |         |        |         |

અમારા પ્રકાશનો ૩૦/૦૬/૨૦૨૦ સુધીમાં

| ક્રમ                                                     | સાહિત્યનો પ્રકાર                                           | બુક્કસ | કુલપા | બુક્કસ | કુલપાના |
|----------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------|--------|-------|--------|---------|
| 6                                                        | આગમ અન્ય સાહિત્ય [૨૪ થી ૨૭] કુલ પુસ્તકો                    | --     | ---   | 15     | 03544   |
|                                                          | 1. આગમ સંબંધી લેખ, પ્રિન્ટેડ                               | 3      | 0068  |        |         |
|                                                          | 2. આગમ કથાનુયોગ, પ્રિન્ટેડ                                 | 6      | 2172  |        |         |
|                                                          | 3. આગમ સંબંધી અન્ય સાહિત્ય, પ્રિન્ટેડ                      | 4      | 1140  |        |         |
|                                                          | 4. આગમ પૂજન સાહિત્ય, પ્રિન્ટેડ                             | 1      | 0068  |        |         |
|                                                          | 5. આગમ સંક્ષિપ્ત પરિચય, પ્રિન્ટેડ                          | 1      | 0096  |        |         |
|                                                          | કુલ આગમ સાહિત્ય 1,02,460 પેજ                               | --     | ---   | 535    | 102460  |
|                                                          | આગમ સિવાયનું અન્ય સાહિત્ય 09,080 પેજ                       | --     | ---   | 80     | 009080  |
| 1                                                        | તત્ત્વાભ્યાસ સાહિત્ય, પ્રિન્ટેડ                            | 13     | 2090  |        |         |
| 2                                                        | સૂત્રાભ્યાસ સાહિત્ય, પ્રિન્ટેડ                             | 6      | 1480  |        |         |
| 3                                                        | વ્યાકરણ સાહિત્ય, પ્રિન્ટેડ                                 | 5      | 1048  |        |         |
| 4                                                        | વ્યાખ્યાન સાહિત્ય, પ્રિન્ટેડ                               | 5      | 1300  |        |         |
| 5                                                        | જિનભક્તિ સાહિત્ય, પ્રિન્ટેડ                                | 9      | 1196  |        |         |
| 6                                                        | વિધિ સાહિત્ય, પ્રિન્ટેડ                                    | 3      | 0256  |        |         |
| 7                                                        | આરાધના સાહિત્ય, પ્રિન્ટેડ                                  | 3      | 0534  |        |         |
| 8                                                        | પરિચય સાહિત્ય, પ્રિન્ટેડ                                   | 3      | 0136  |        |         |
| 9                                                        | પૂજન સાહિત્ય, પ્રિન્ટેડ                                    | 1      | 0068  |        |         |
| 10                                                       | તીર્થંકર સંક્ષિપ્ત દર્શન પ્રિન્ટેડ                         | 25     | 0680  |        |         |
| 11                                                       | પ્રકીર્ણ સાહિત્ય, પ્રિન્ટેડ                                | 5      | 0246  |        |         |
| 12                                                       | દીપરત્નસાગરના લઘુશોધનિબંધ, પ્રિન્ટેડ                       | 2      | 0106  |        |         |
|                                                          | આગમ સાહિત્ય બુક્કસ 535 કુલ પેજ 1,02,460                    |        |       |        |         |
|                                                          | આગમેતર સાહિત્ય બુક્કસ 80 કુલ પેજ 0,09,140                  |        |       |        |         |
|                                                          | કુલ સાહિત્ય નિર્માણ બુક્કસ 615 કુલ પેજ 1,11,600            |        |       |        |         |
|                                                          | ‘તત્ત્વાર્થસૂત્ર’ એક વિશિષ્ટ સંકલનની DVD 84બુક્કસ 0,27,930 |        |       |        |         |
| કુલ સાહિત્ય નિર્માણ 615 બુક્કસ + 1 DVD, કુલપાના 1,39,530 |                                                            |        |       |        |         |

| संक्षेप- आगम रत्न कोषः |                   |         |                     |         |                 |
|------------------------|-------------------|---------|---------------------|---------|-----------------|
| संक्षेप                | आगमनाम            | संक्षेप | आगमनाम              | संक्षेप | आगमनाम          |
| अनुत्त०                | अनुत्तरोपपातिक    | जंबू०   | जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति | पिंड०   | पिंडनिर्युक्ति  |
| अनुओ०                  | अनुओगद्वार        | जीत०    | जीतकल्प             | पुष्प०  | पुष्पचूलिका     |
| अंत०                   | अंतकृत् दशा       | जीवा०   | जीवजीवाभिगम         | पुष्पि० | पुष्पिका        |
| आचा०                   | आचारांग           | ज्यो०   | ज्योतिषकरण्डक       | बुह०    | बृहत्कल्प       |
| आव.चू०                 | आवश्यक चूर्णि     | ठा०     | स्थानांग            | भग०     | भगवती           |
| आतु०                   | आतुर प्रत्याख्यान | तं०     | तंदुलवैचारिक        | भक्त०   | भक्तपरिज्ञा     |
| आव.म०                  | आवश्यक मलयगिरि    | दश०     | दशवैकालिक           | मर०     | मरणसमाधि        |
| आव.वृ०                 | आवश्यक वृत्ति     | दशा०    | दशाश्रुतस्कंध       | महानि०  | महानिशीथ        |
| उत्त०                  | उत्तराध्यायनानि   | देवि०   | देवेन्द्रस्तव       | महाप०   | महाप्रत्याख्यान |
| उपा०                   | उपासकदशा          | नं०     | नंदीसूत्र           | रा०     | राजप्रश्रिय     |
| उव०                    | उववाइय            | नाया०   | ज्ञाताधर्मकथा       | वव०     | व्यवहार         |
| ओह०                    | ओघनिर्युक्ति      | निर०    | निरयावलिका          | विपा०   | विपाकसूत्र      |
| कल्प०                  | कल्पसूत्र         | निसी०   | निशीथ               | वि०     | विशेषावश्यक     |
| गच्छा०                 | गच्छाचार          | पंच०चू० | पंचकल्पचूर्णि       | वीर०    | वीरस्तव         |
| गणि०                   | गणिविद्या         | पंच०भा० | पंचकल्पभाष्य        | संथा०   | संस्तारक        |
| चउ०                    | चउशरण             | पण्हा०  | प्रश्नव्याकरण       | सम०     | समवायांग        |
| चंद०                   | चन्द्रप्रज्ञप्ति  | पन्न०   | प्रज्ञापना          | सूर०    | सूर्यप्रज्ञप्ति |
| चंदा०                  | चन्द्रवेध्यक      | पा०     | पाक्षिकसूत्र        | सूय०    | सूत्रकृतांग     |
|                        |                   |         |                     |         |                 |

| संक्षेप | विस्तार | संक्षेप | विस्तार    | संक्षेप | विस्तार    | संक्षेप | विस्तार     |
|---------|---------|---------|------------|---------|------------|---------|-------------|
| अ०      | अध्ययन  | ठा०     | स्थान      | प्रति   | प्रतिपत्ति | श०      | शतक         |
| उ०      | उद्देशक | द्वा०   | द्वार      | भा०     | भाष्य      | श्रु    | श्रुतस्कन्ध |
| गा०     | गाथा    | नि      | निर्युक्ति | व०      | वर्ग       | सम०     | समवाय       |
| चू०     | चूर्णि  | प०      | पद         | वक्ष०   | वक्षस्कार  | सू०     | सूत्र       |
| चूलि०   | चूलिका  | पाहु०   | प्राभृत    | वृ०     | वृत्ति     | --      | -----       |
|         |         |         |            |         |            |         |             |



## मुझे कुछ कहना है

\*\*\* मै ईस 'आगम परिभाषा कोष:' की कुछ मुख्य बाते बताना चाहता हुं ---

[१] ४५ आगम मूल, उन की निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि और वृत्तिमे जो आगमिक शब्दो कि व्याख्याए कि गइ है, उसी को यहा 'आगम परिभाषा कोष' मे हमने स्थान दिया है.

[२] ईस कोषमे ४५ आगम, उस के साथ ४ वैकल्पिक आगम (पंचकल्प, पिंडनिर्युक्ति, चन्द्रवेध्यक और वीरस्तव), पाक्षिक सूत्र (जो १४वि सदीमे एक आगम के रुपमे स्विकृत हुआ था), ज्योतिष करण्डक (जो पयन्ना रूप से गिना जाता है), कल्पसूत्र (जो दशाश्रुतस्कन्ध का अध्ययन होते हुए भी विशिष्ट महत्त्व रखता है) और विशेषावश्यक भाष्य (जो की आवश्यक सूत्र के पहले अध्ययन पर रचित है) का समावेश ईस कोषमे किया है.

### \*\*\* ईस विराट कार्य की भूमिका—

कोष रचना (डीक्षनेरी) के विषयमे हमारा अनुभव तो था ही. हमने पूर्वमे १.आगम सदकोसो, २.आगम कथाकोसो, ३. आगम सागर कोष, ४.आगम शब्दादि संग्रह, ५. आगम बृहत् नाम कोष. ये पांच डीक्षनेरी की रचना कि है, जिसमे 'आगम सागर कोष' के अलावा सभी डीक्षनेरी प्रिन्टेड स्वरुपमे भी मौजूद है.

मेरे मनमे ये 'आगम परिभाषा कोष' बनाने का बीज अंकुरित हुआ उस के दो प्रमुख कारण है-

(१) आगमो का मनोयोगपूर्वक वांचन करते हुए, एक बात दृष्टि संमुख आयी कि- हम किसी भी शब्द का कुछ भी विपरीत या अन्यथा अर्थ निकालते है अथवा पूर्वाचार्य कृत सही अर्थ नहि करते है तो प्रायश्चित्त आता है.

(२) आगम सम्बन्धी अलग अलग कोष का अवलोकन करते करते ये देखा की बहोत से शब्दोमे मैने देखा की कोइ कोइ शब्द अभिधान राजेन्द्रमे छुटे है, तो बहोत से शब्द अल्प परिचित शब्द कोषमे भी छुटे है, अर्धमागधी कोषमे एवं जैन लक्षणावलिमे भी अनेक शब्द नहि दिख रहे है. इस के अलावा दुसरे परिवर्तन भी हमारी नज़रमे आये है, जैसे की कोइ कोइ स्थानमें अकारादि क्रममे शब्द आगे-पीछे दिखे थे, किसी जगह व्याख्या के संदर्भ गलत थे वगैरह; उन स्थानोमे मेरी शारीरिक स्थिति के हिसाब से जितने हो शके उतने परिवर्तनो को यहां स्थान देने कि मनीषा से हमने कार्य का आरम्भ भी किया. आगे-पीछे हुए शब्दो को अ-कारादि क्रममे कर दिये, प्रत्येक अर्थ, व्याख्या या परिभाषा को अलग पंक्तिमे रख दिये, आगम संदर्भमे आगमो के नाम भी लिख दिये है, बहोत शब्दो को शामिल भी किये; फिर भी मै यह कहुंगा की जो अभ्यासक संपूर्ण सूची की इच्छा रखते है, उन को तो हमारे [jainelibrary.org](http://jainelibrary.org) मे तैयार होनेवाले 'डेटाबेझ' कि हि मदद लेनी पडेगी.

मेरे हिसाब से करिब ३६,००० जितने शब्दो और ६३,००० से ज्यादा आगमिक व्याख्याए ईस कोषमे शामिल है. जिस का स्वरुप ईस डीक्षनेरीमे ईस तरह प्रस्तुत है. पहले बोल्ड टाइपमे दिया गया शब्द आगम का प्राकृत भाषा का शब्द है और जहां संस्कृत व्याख्या का हि शब्द मिला, वहां उन का प्राकृत शब्दमे रुपान्तर कर के भी दिया है. उस के बाद नोर्मल टाइपमे उन शब्दो की व्याकरणीय ओळख दी है, उस के बाद इटालिक टाइपमे उसी शब्दो के संस्कृत रुपान्तर दिये है; फिर शब्दो कि नीचे से उन कि आगमिक व्याख्याए आरंभ होती है, साथमे उन आगमो के संदर्भ भी बताये है. प्रत्येक व्याख्या 'आगम संदर्भ के साथ अलग अलग लाइनमे कंपोझ की हुइ है.

आप के करकमलोमे ये -पांच- भागोमे तैयार किया हुआ आगम परिभाषा कोष: हम अर्पण कर रहे है .

**डो. मुनि दीपरत्नसागर**

[ M.Com.,M.Ed.,Ph.D.,श्रुतमहर्षि ]

आद्य 'य' वर्ण प्राकृतमें 'ज' अथवा 'अ' हो जाता है, इसीलिए यहाँ 'य' वर्ण से आरंभ होता हुआ कोई शब्द नहि दिया है

## र-कारादि शब्द-परिभाषा:

**र-** अव्य० [र]

किलशब्दार्थे, दश० १ अ० ।

पादपूरणे च । बृह० ३ उ० । वव० । गच्छा० । आव० म० । आव० ।

**रइ-१ स्त्री० [रति]**

रमणं रतिः । क्रीडायाम्, आचा० १ श्रु० २ अ० २ उ० । आव० म० ।

उव० । उत्त० । सूय० । नाया० । रा० ।

मानसे विकारे, आचा० १ श्रु० ३ अ० ३ उ० ।

मन्मथवाञ्छायाम्, तं० ।

मैथुनप्रीतौ, उत्त० १४ अ० ।

विषयाभिषङ्गे, सूय० १ श्रु० १६ अ० ।

आसक्तौ, चंद० २० पाहु० ।

‘एगा रई’ रतिश्च तथाविधानन्दरूपा । ठा० १ ठा० ।

विषयेषु मोहनीयोदयाच्चिताभिरतौ, दशा० ६ अ० ।

रुच्या कामभोगे, निसि० १ उ० ।

असंयमे प्रीतौ, उत्त० ६ अ०

रम्यते अस्यामिति रतिः । स्पर्शनादिभोगजनितायां चित्तप्रहृति, उत्त० ५ अ० ।

रम्यतेऽनयेति रतिः । क्रीडायाम्, दश० १ अ० ।

मनोजेषु असंयमे वा रमणं, रतिः । आभ्यन्तरपरिग्रहे, बृह० १ उ०

रतिवेदनीयकर्मणि, दश० १ चू० ।

**रइ-२ स्त्री० [रति]**

पद्मप्रभस्य षष्ठजिनस्य प्रवर्तिन्याम् । सम० ।

भूतानन्दस्य नाट्यानीकाधिपति, पुं० । ठा० ५ ठा० २ उ० ।

**रइआसण- न० [रचिताशन]**

लोकोत्तररीत्या त्रयोदशतिथिदिने, कल्प० १ अधि० ६ ।

**रइकम्म- न० [रतिकर्मण]**

यदुदयेन सचित्ताचितेषु बाह्यद्रव्येषु जीवस्य रतिरुत्पद्यते-तस्मिन् कर्मणि, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**रइकर- पुं० [रतिकर]**

नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणपूर्वाऽऽदिकोणवर्तिषु पर्वतेषु, रा० ।

**रइकरपव्वय- पुं० [रतिकरपर्वत]**

नन्दीश्वरद्वीपे विदिग्व्यवस्थितेषु पर्वतेषु, ठा० ।

**रइतरंगा- स्त्री० [रतितरङ्गा]**

तरङ्गनन्दननामराजस्य भार्यायाम्, दश० ५ अ० १ उ० ।

**रइप्पभा- स्त्री० [रतिप्रभा]**

किन्नरेन्द्रस्य अग्रमहिष्याम् । ठा० ५ ठा० २ उ० ।

**रइप्पिय- पुं० [रतिप्रिय]**

किन्नरेन्द्रे, नवमे किन्नरभेदे च । पन्न० १ पद ।

**रइप्पिया- स्त्री० [रतिप्रिया]**

किन्नरस्य किन्नरेन्द्रस्य अग्रमहिषि, नाया० २ श्रु० ४ वर्ग० १ अ० । भग०

**रइमोहणिज्ज- न० [रतिमोहनीय]**

यदुदयात्सन्निमित्तमनिमित्तं वा बाह्याभ्यन्तरेषु वस्तुषु जीवस्य रतिः प्रमोदो भवति । मोहनीय कर्मणि । आव० म० ।

**रइय- त्रि० [रचित]**

निर्मिते, न्यस्ते, नाया० १ श्रु० १ अ० । उव० । सम० । रा० ।

विहिते, उव० ।

औद्देशिकादिभेदाद्यन्मोदकचूर्णादि पुनर्मोदकतया कूरदध्यादिकं

वा यत्करम्बकादितया विरचितं तद्रचितमित्युच्यते । उव० । रा० ।

रचितं नाम संयतनिमित्तं कांस्यपात्रादौ मध्ये भक्तं निवेश्य पार्श्वेषु व्यञ्जनानि बहुविधानि स्थाप्यन्ते । औद्देशिकतया विरचिते भक्तादौ, वव० ३ उ० ।

**रतिद- त्रि०**

रम्ये, सुखप्रदे च । जीवा० ३ प्रति० ४ । नाया० । उव० । रा० ।

। पण्हा० ।

**रइयभोइ- पुं० [रचितकभोजिन्]**

रचितकं नाम कांस्यपात्रादिदेयबुद्ध्या वैचित्र्येण स्थापितं तद् भुङ्क्ते इत्येवंशीलो रचितकभोजी । धातुपात्रभोजिनि साधौ, वव० १ उ० ।

**रइल्लिय- त्रि० [रजस्वल]**

रजोयुक्ते, भग० ८ श० ३ उ० ।

**रइवंत- पुं० [रतिमत्]**

रतिः कामप्रिया विद्यतेऽस्येति रतिमान् । कन्दर्पे, तं० । ।

**रइवक्का- स्त्री० [रतिवाक्या]**

रतिकारकाणि रतिजनकानि तानि वाक्यानि येन कारणेनास्यां चूडायां तेन निमित्तेन रतिवाक्या, एषां च रतिकतृणां वाक्यानि यस्यां सा रतिवाक्या । रतिजनक वाक्यदोषप्रतिबद्धा-चूडा, दश०

**रइसेट्ट- पुं० [रतिश्रेष्ठ]**

किन्नरभेदे, पन्न० १ पद ।

**रइसेणा- स्त्री० [रतिसेना]**

किन्नरस्य अग्रमहिष्याम्, ठा० ४ ठा० १ उ० । भग० ।

**रउग्घाय- पुं० [रजउद्घात]**

रजस्वलासु दिक्षु, यासु समन्ततो धार इव दृश्यते । वव० ७ उ० । भग० । आव० ।

महासंधावारगमनसमुद्भूता इव विश्रसा परिणामतः समन्तात् रेणुपतनं रउग्घातो भण्णति, अहवा-एस रउग्घाओ पुण पांसुरता भण्णति । निसि० १९ उ० । आव० चू० ।



**रजोहरण-** न० [रजोहरण]

बाह्यम्, आभ्यन्तरं च, रजो हियते अनेनेति रजोहरणम्, तत्र बाह्यरजोऽपहारित्वमस्य सप्रतीतम्, आन्तररजोऽपहरणसमर्थश्च परमार्थतः संयमयोगस्तेषां च कारणमिदं धर्मलिङ्गमिति कारणे कार्योपचाराद्रजोहरणमित्युच्यते। पिंड०।

रजो हियते अपनीयते येन तद्रजोहरणम्। ठा० ५ ठा० ३ उ०।

**रंक-** पुं० [रङ्क]

कृपणे, ठा० ५ ठा० ३ उ०।

**रंग-** न० [रङ्ग]

नाट्यस्थाने, वव० ८ उ०।

मल्लयुद्धमण्डपे, कल्प०१ अधि०५ क्षण०।

रक्तायवच्छविविचित्ररूपे, दश०२ अ०। ठा०। बुह०।

**रंगण-** पुं० [रङ्गण]

रङ्गणं रागस्तद्योगाद्रङ्गणः। जीव, भग०२० श०२ उ०।

**रंजन-** न० [रञ्जन]

राग, नाया०१ श्रु०५ अ०।

**रंडा-** स्त्री० [रण्डा]

विधवायाम्, महानि० २ चू०।

**रंडिया-** स्त्री० [रण्डिका]

व्यभिचारिण्यां स्त्रियाम्, तं०।।

**रंध-** न० [रन्ध्र]

छिद्रे, दूषणे च। वव० ७ उ०। नाया०।

**रंधण-** न० [रन्धन]

रन्धनविषयकविशेषपरिज्ञानरूपे स्त्री कलाभेदे, कल्प०१ अधि०७

**रंभा-** स्त्री० [रम्भा]

वैरोचनेन्द्रस्य बलेरग्रमहिष्याम्, नाया०२ श्रु०३ वर्ग०१ अ०। भग० धर्मकथायां द्वितीयवर्गे तृतीयमध्ययनम्। नाया०।

**रक्क-** न० [रक्क]

वृषभादिशब्दकरणे, अणुओ०।

**रक्खंत-** त्रि० [रक्षत्]

अन्यायात् रक्षां कुर्वति, उव०। भग०।

**रक्खण-** न० [रक्षण]

आहारादिना उपजीव्ये, सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ०। तं०।

सम्यक्त्वव्रतानामनुपालनोपाय। आव०म०।

**रक्खस-पुं० [रक्षस]**

मांसास्वादनपरे, उक्त० १६ अ०।

व्यन्तरविशेषे उक्त० १६ अ०। उव०। पण्हा०। ठा०। सूय०।

उव०। सम०।

व्यन्तरमात्रे, सूय०१ श्रु०१२ अ०। पत्र०।

**रक्खिय-** त्रि० [रक्षित]

गुप्ते, ठा० ९ ठा० ३ उ०। उक्त०।

दुर्गतिपतनात् निवारिते, उक्त० १५ अ०। पण्हा०।

अनुयोगचातुर्विध्यकारके सोमदेवब्राह्मणेन रुद्रसोमायां भार्यायां जाते आर्यवर्यशिष्ये पूर्वधरे सूरौ। आव०म०१ अ०। आव०चू०। 'वन्दामि अजररक्खियखमणे रथियचरित्तसव्वस्सो। रयणकरंड-गभूओ, अणुओगो रक्खिओ जेहिं। नं०।

आर्यसुहस्तिनो द्वादशशिष्याणां सप्तमे, कल्प०२ अधि०८।

**रक्खिया-** स्त्री० [रक्षिता]

धनेन सार्थवाहेन भद्रायां भार्यायां जनितस्य धनगोपाख्यपुत्रस्य भार्यायाम्, नाया०१ श्रु०७ अ०।

**रक्खी-** स्त्री० [रक्षी]

अष्टादशजिनस्य स्वनामख्यातायां प्रवर्तिन्याम्, पण्हा०१ अ०

**रचिय-** त्रि० [रचित]

निहिते, सम०।

रचनाविशेषे, पण्हा०३ अ०

**रज्ज-** न० [राज्य]

यावत्सु देशेषु एकभूपतेराज्ञा तावद्देशप्रमाणे राष्ट्रे, बुह० ४ उ०।

जीत०। उक्त०। नाया०।

राजादिपदार्थसमुदाये, 'स्वाम्यमात्यश्च राष्ट्रं च, कोशो दुर्गं बलं सुहृत्। सप्ताङ्गमुच्यते राज्यं, बुद्धिसत्त्वसमाश्रयम्। भग०१५ श०।

रा०। गच्छा०। कल्प०।

नृपत्वे, तं०।।

प्रभुतायाम्, ठा० ५ ठा० ३ उ०।

**रज्जजिया-** स्त्री० [राज्यार्या]

स्वनामख्यातायामार्यिकायाम्, महानि०।

**रज्जधम्म-** न० [राज्यधर्म]

प्रतिराज्यं भिन्ने करादिके, दश० १ अ०।

**रज्जपालिया-** स्त्री० [राज्यपालिका]

कामर्द्धिकस्थविरात्रिर्गतस्य वेसपाटिकगणस्य द्वितीयशाखायाम्, कल्प०।

**रज्जमाण-** त्रि० [राज्यमान]

रागवति, नाया०१ श्रु०१७ अ०।

**रज्जवइ-** पुं० [राज्यपति]

स्वतन्त्रे राजनि, नाया०१ श्रु०१ अ०।

**रज्जवद्धण-** पुं० [राज्यवर्द्धन]

अवन्तिराजपालकपुत्रे अवन्तिवर्द्धनलघुभ्रातरि, आव०चू०४ अ०।

**रज्जहीण-** पुं० [राज्यहीन]

राज्यच्युते, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ०।

**रज्जाहिवड-** पुं० [राज्याधिपति]

महामन्त्रिणि, राजनि च । बुह०४ उ०

**रज्जु-** स्त्री० [रज्जु]

रज्जा यसंस्थानं तद् रज्जुरभिधीयते । क्षेत्रगणिते ठा० १० ठा० ३ उ०

**रज्जुग-** पुं० [रज्जुक]

लेखके, कल्प० १ अधि०६ क्षण ।

**रज्जुगसभा-** स्त्री० [रज्जुकसभा]

रज्जुका लेखकाः । 'कारकून' शालायाम्, कल्प०१ अधि०६ ।

**रज्जुग्घाय-** पुं० [रज्जुद्वारा]

विश्रसः परिणामतः समन्ताद्रेणुपतने, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**रज्जुचिलिमिलिया-** स्त्री० [रज्जुचिलिमिलिका]

और्णिकदवरके, बुह०१ उ०३ ।

**रज्जुपिण्ड-** त्रि० [रज्जुपिण्ड]

रश्मिनियन्त्रे, पण्हा०४ अ० ।

**रज्जुमग-** पुं० [रज्जुमार्ग]

यत्र रज्जा किञ्चिदतिदुर्गमतिलङ्घ्यते तादृशे मार्गे, सूय०१ श्रु०११

**रज्जिय-** त्रि० [रहित]

अनिरन्तरे, सूय०१ श्रु० ५ अ०१ उ० ।

**रङ्ग-** न० [राष्ट्र]

जनपदे, देशे, नाया०१ श्रु०१ अ० । कल्प० । रा० ।

जनपदैकदेशे, भग० १५ श० ।

ऋषभदेवस्य स्वनामख्याते चतुस्त्रिंशे पुत्रे, कल्प०१ अधि०७ ।

**रङ्गउड-** पुं० [राष्ट्रकूट]

राष्ट्रमहत्तरे, बुह० ३ उ० ।

मण्डलोपजीविनि राजनियोगिके, विपा० १ श्रु० १ अ० ।

**रङ्गकूट-** पुं० [राष्ट्रकूट]

बेभेससंनिवेशे स्वमातुलसुतायाः सोमानाम्नाः पति, पुष्कि०४ अ०

**रङ्गधम्म-** पुं० [राष्ट्रधर्म]

देशाचारे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**रङ्गवर्द्धन-** पुं० [राष्ट्रवर्द्धन]

अवन्तिराजपालकस्य पुत्रे प्रद्योतस्य पौत्रे, आव० ४ अ० । आव० चू०

**रङ्गवाल-** न० [राष्ट्रपाल]

भरतचक्रवर्तिनः चरितप्रकाशके आषाढभूतिना कृते नाटके, यद्धि सिंहस्थस्य राज्ञः सभायाम्-प्रतिनर्तितं सत् पञ्चशतानां राज-पुत्राणां नाट्यपात्रीभूतानां प्रव्रज्याकारणमभूदिति । पिंड० ।

**रङ्गिय-** न० [राष्ट्रिक]

राष्ट्रमहत्तरे, निसि०२ उ० ।

**रङ्गिय-** न० [रुदित]

अश्रुविमोचने, पण्हा० ५ अ० ।

**रण-** पुं० [रण]

कातरजनक्षोभके संग्रामे, सम०१४१ सूय० । सूय० ।

**रणसीस-** न० [रणशीर्ष]

संग्रामशिरसि, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ० । पण्हा० ।

**रत्नोच्चय-** पुं० [रत्नोच्चय]

रत्नानां नानाविधानामुत्प्रावल्यान चयः उप चयो यत्र स रत्नोच्चयः । मेरुपर्वते, सूय० ५ पाहु० ।

**रत्त-** त्रि० [रक्त]

रञ्जिते, नाया०१ श्रु०१ अ० । उत्त० ।

अरुणे, 'अरुणं सोणं रत्तं पाडलमायं बिरं तंबं' उत्त० ।

अत्यन्त-सम्यक्त्ववासितान्तश्चेतसि, सूय०२ श्रु०७ अ० ।

प्रदत्तरागे, बुह०२ उ० ।

धातुप्रभृतिभिर्द्रव्यैः रक्तीकृते, बुह०१ उ०२ ।

कुसुम्भरागे, बुह०१ उ०३ ।

लोहिते, रक्तवर्णे, भग०१ श० १ उ० । पण्हा० ।

रुधिरे, नं० । तं० । । ठा० ।

रागयुक्ते, तद्भावितामूर्तौ च । आचा०१ श्रु०३ अ०२ उ० । आव० ।

गेयरागानुरक्तेन यद् गीयते तद् रक्तम् । द्वितीय गेयगुणे, जीवा०३

प्रति० ४ । अणुओ० । जंबू० । रा० ।

मनोहरे, उव० ।

गृद्धे, आचा०१ श्रु०२ अ०३ उ० ।

**रत्तंसुय-** न० [रत्तांशुक]

मशकगृहाभिधे, चंद० २० पाहु० ।

**रत्तंसुयसंबुड-** त्रि० [रत्तांशुकसंवृत]

रत्तांशुकेनातिरमणीयेन मशक-गृहाभिधानेन वस्त्रेण संवृते आच्छादिते, कल्प०१ अधि०२ । जीवा० । रा० । भग० ।

**रत्तकंबलसिला-** स्त्री० [रत्तकम्बलशिला]

मेरौ, पण्डकवनमध्ये चूलिकायाः पश्चिमदिशि चतुर्योजनोच्छित सर्वकाञ्चनमयचन्द्रार्द्धसंस्थानसंस्थित चतुर्थ्यां शिलायाम्, ठा० ।

**रत्तकूड-** न० [रत्तकूट]

शिखरधरपर्वते षष्ठे कूटे, जंबू०४ वक्ष० ।

**रत्तक्ख-** त्रि० [रत्ताक्ष]

अयणदिवाकरनयने, आव०४ अ० ।

**रत्तचंदण-** न० [रत्तचन्दन]

लोहितवर्णे चन्दनविशेषे, सम० । रा० । पत्र० । उव० ।

**रत्तच्छ-** त्रि० [रत्ताक्ष]

लोहितलोचने, उवा० २ अ० ।

**रत्ततल-** न० [रत्ततल]

लोहिताधोभागे, उव० । तं० । ।

**रक्तपड-** पुं० [रक्तपट]

सौगते, परिव्राजके च । बुह० १ उ०२ । नाया० ।

**रक्तपालजक-** पुं० [रक्तपालयक्ष]

महापुरं नाम नगरं रक्ताशोकं नाम उद्यानम्, तस्मिन् पूज्यमाने यक्षे, विपा० २ श्रु० ७ अ० ।

**रक्तप्पवायदह-** पुं० [रक्तप्रपातहृद]

जम्बूद्वीपे ऐरवतवर्षे, दीर्घवैताढ्यपर्वते पूर्वोदधिगामिन्याः रक्तवत्याः महानद्याः उद्गमस्थाने गङ्गाप्रपातहृदसदृशे, ठा० ।

**रक्तरयण-** न० [रक्तरत्न]

पद्मरागादिके, सूय०२ श्रु०२ अ० । भग० । नाया० ।

**रक्तवई-** स्त्री० [रक्तवती]

जम्बूद्वीपे ऐरवतवर्षे शिखरिवर्षधरपर्वतात् निर्गत्य पश्चिमसमुद्र-सङ्गतायां महानद्याम्, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

**रक्तवड्पवायदह-** पुं० [रक्तवतीप्रपातहृद]

जम्बूद्वीपे ऐरवतवर्षे दीर्घवैताढ्यपर्वते पश्चिमोदधिगामिनि रक्त-वतिनद्याः उद्गमस्थाने सिन्धुप्रपातसदृशप्रपातहृद, ठा० २ ठा० ३

**रक्तशिला-** स्त्री० [रक्तशिला]

मेरौ पण्डकवने तृतीयशिलायाम्, जंबू०

**रक्ता-** स्त्री० [रक्ता]

जम्बूद्वीपे ऐरवतवर्षे शिखरिवर्षधरपर्वतान्निर्गत्य पूर्वलवणसमुद्र-सङ्गतायां महानद्याम्, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

**रक्ताकुंड-** न० [रक्ताकुण्ड]

रक्ताख्यमहानद्युद्गमस्थानीभूते कुण्डे, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**रक्ताभ-** पुं० [रक्ताभ]

रक्तवर्णे, जीवा०४ प्रति० ।

**रक्तावईकुंड-** न० [रक्तावतीकुण्ड]

रक्ताख्यमहानद्युद्गमस्थानीभूते कुण्डे, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**रक्तावंग-** त्रि० [रक्तापाङ्ग]

लोहितनयनोपान्ते, जंबू० १ वक्ष० । जीवा० ।

**रक्तासोग-** पुं० [रक्ताशोक]

अशोकवृक्षविशेषे, कल्प०१ अधि०३ । उव० ।

**रक्तासोगप्पगास-** पुं० [रक्ताशोकप्रकाश]

रक्तस्याशोकस्य प्रभासमूहे कल्प०१ अधि०३ । दशा० ।

**रत्तितिहि-** स्त्री० [रात्रितिथि]

तिथेः पश्चार्द्धभागे, चंद० १ पाहु० ।

**रत्तिय-** त्रि० [रात्रिक]

रात्रौ भवं रात्रिकम् । रात्रियाते, उत्त०२६अ०

**रत्तियर-** त्रि० [रात्रिचर]

चौरादिके, ठा० ४ ठा० ३ उ० ।

**रत्तिविणास-** पुं० [रात्रिविनाशक]

रात्रिविनाशकारणे, कल्प० १ अधि० ३ ।

**रत्तुक्कडा-** स्त्री० [रत्तुक्कटा]

मासान्ते त्रीणि दिनानि यावत्स्त्रीणां यन्निरन्तरमसृक् स्रवति तदत्र रक्तमुच्यते तेन रक्तेन रुधरेण उत्कटा या सा । रजस्वलायाम्, तं० । आव० ।

**रत्तुप्पल-** न० [रत्तुत्पल]

रक्तपद्मपत्रे । पण्हा० ४ अ० । रा० ।

लोहितकमले, उव० । भग० । कल्प० ।

रक्तं लोहितम् उत्पलपत्रवत् । जीवा० ३ प्रति० २ उ० ।

रत्तुत्पलवत् करचरणानां कोमला अङ्गुल्यो येषाम् । तं० ।

**रत्तोयाकूड-** न० [रत्तोदाकूट]

शिखरधरपर्वते अष्टमे कूटे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**रत्थंतर-** न० [रत्थान्तर]

मार्गमध्ये, कल्प० १ अधि० ५ । उव० ।

**रत्था-** स्त्री० [रत्था]

सेरिकायाम्, उत्त० ३० अ० ।

**रत्थामुह-** न० [रत्थामुख]

मार्गप्रवेशे, आव०म०१ अ० ।

रत्थायाः पार्श्वे, बुह०१ उ०३ ।

**रथकार-** पुं० [रथकार]

काष्ठकलाभिज्ञे कारुके, 'पुरं सोपारकं तत्र रथकारोऽभवत्सुधीः । तद्वास्याश्च द्विजाज्जातः, कोकसो नाम दारकः । आव० १ अ० ।

**रद्ध-** न० [राद्ध]

पाचिते, पक्वे च । आव० ४ अ० । निसि० । जीवा० ।

**रम-** धा० [रम]

क्रीडायाम्, रमते हर्षितो भवति । उत्त० ४ अ० ।

अभिरतिमान् भवति । उत्त०१ अ० ।

रतिं कुरुते । नाया०१ श्रु० १७ अ० ।

हसताणि वा, रमंताणि वा, मोहंताणि वा । आचा०२श्रु०२चू०४ अ०

**रमंत-** त्रि० [रममाण]

अक्षादिना रतिं कुर्वति । भग० १३ श०६ उ० ।

**रमणिज-** पुं० [रमणीय]

जम्बूमन्दरस्य पूर्वे सीतामहानद्याः दक्षिणे सुभाख्यराजधानी विभूषिते विजयक्षेत्रे, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

रमणीये, मनोहरे, ठा० ९ ठा० । नाया० । कल्प० । उव०

महाविदेहान्तर्गतायां स्वनामख्यातायां नगर्याम्, ठा० ।

**रमिय-** न० [रमित]

मैथुनसेवायाम्, जीवा०३ प्रति०४ अधि० । रा० ।

**रम्म- न० [रम्य]**

रमयति मनांसि द्रष्टृणामिति रम्यम् । रमणीये, जीवा० ३ प्रति०४  
अधि० । रा० । जंबू० । उत्त० ।

जम्बूमन्दरस्य पूर्वे सीताया महानद्याः दक्षिणे अङ्गवत्याख्य-  
राजधानीभूषितविजयक्षेत्रे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

रम्यविजयः अङ्गावती राजधानी अञ्जनवक्षस्कारः । जंबू०४ वक्ष०

**रम्मग- पुं० [रम्यक]**

पक्षमावतीराजधानीभूषिते विजयक्षेत्रे, ठा० ।

लान्तककल्पे विमानविशेषः । सम० ।

रम्यकूटं-रम्यवक्षेत्राधिपदेवकूटम् । जंबू० ।

**रम्मगकूड- न० [रम्यकूट]**

जम्बूद्वीपे मन्दरस्योत्तरे नीलवतवर्षधरपर्वतस्याष्टमकूटे, ठा०९ठा०

**रम्मगवंसग- पुं० [रम्यकवर्षक]**

रम्यकवर्षजाते मनुष्ये, ठा० ७ ठा०

**रय-१ पुं० [रज]**

सूक्ष्मधूलीरूपे, दशा०७ अ० ।

वातोत्खाते आकाशवर्तिनि । सम० ३४ सम० ।

श्लक्ष्णतरे रेणुपुद्गल, जीवा०३ प्रति०४ अधि० । तं० । उव० ।

पृथ्वीकाय, निसि० १९ उ० ।

मल, उव० । आव०चू० ।

जीवस्यरूपोपरञ्जनाद्रज इव रजः । कर्माणि ठा० ५ ठा० २ उ० ।

। आव०म० । विशे० । सूय०

बद्धमाने कर्माणि, आव० ३ अ० ।

बद्धमानकं कर्म रजो भण्यते । नं० ।

**रय-२ त्रि० [रत]**

सक्ते, आव०चू०१ अ० । विशे० । उव० । ठा० ।

मैथुन-क्रीडिते, सम०९ सम० ।

व्यवस्थिते, सूय० १ शु० १० अ० ।

स्त्रीभिः सह निधुवने, । ठा० ।

**रय-३ पुं० [रय]**

वेगे, उव० । आव० ।

**रयउज्जोय- पुं० [रजउज्जोत]**

रजस्वलादिके, अणुओ० ।

**रयंत- त्रि० [रदत्]**

उत्पाटन, तं० ।

**रयंधकार- पुं० [रजोऽन्धकार]**

रेणोः यो रयो वेगः तेनान्धकारः । रेणुवेगेनान्धकार, पण्हा०३ अ०

**रयग- पुं० । स्त्री० [रजक]**

वस्त्रप्रक्षालक, वव० ३ उ० ।

**रयण- न० [रत्न]**

कर्केतनादौ रत्नविशेषे, रा० । आव०म० । नाया० । पण्हा० । सूर० ।  
संथा० । जीवा० । कल्प० । भग० नाया० । उव० । चंद० ।

रत्नानि द्विविधानि-द्रव्यरत्नानि, भावरत्नानि च । तत्र मरकत  
वज्रेन्द्रनीलवैडूर्यादीनि द्रव्यरत्नानि, सुखमधिकृत्य तेषामनैकान्ति-  
कत्वादानात्यन्तिकत्वाच्च भावरत्नानि । आव०म० १ अ० । ठा० ।

**रयणकंड- न० [रत्नकाण्ड]**

रत्नप्रभापृथिव्याः षोडशविधरत्नमये प्रथमकाण्डे, सम०८ सम०

**रयणकरंडग- पुं० [रत्नकरण्डक]**

रत्नानां रक्षणपुटके, रा० ।

**रयणकूड- न० [रत्नकूट]**

जम्बूमन्दरस्य उत्तरे रुचकवरपर्वतस्य प्रथमकूटे, ठा० ८ठा०३उ०

मानसोत्तरपर्वतस्य गरुडवेणुदेवस्य निवासभूतकूटे, ठा० ४ठा०२

**रयणनिकरराशि- पुं० [रत्ननिकरराशि]**

रत्ननिकराणामुच्छ्रितसमूहे, कल्प०१ अधि०३ ।

**रयणत्थाल- न० [रत्नस्थाल]**

रत्नभृतस्थाले, वव०६ उ० ।

**रयणदीव- पुं० [रत्नद्वीप]**

लवणसमुद्रमध्यगे द्वीपे, नाया० १ शु० ९ अ० । महानि० ।

**रयणदीवदेवया- स्त्री० [रत्नद्वीपदेवता]**

रत्नद्वीपस्वामिन्यां देवतायाम्, नाया० १ शु०९ अ० ।

**रयणपुर- पुं० [रत्नपुर]**

मालवदेशप्रसिद्धे नगरे, अणुत्त० ।

**रयणप्पभा- स्त्री० [रत्नप्रभा]**

रत्नानि वज्रवैडूर्यादीनि प्रभा स्वरूपं यस्यां सा । रत्नबहुलायां  
रत्नमय्यां गोत्रेण धर्मानाम्नायां नरकप्रथमपृथिव्याम्, पत्र०१ पद ।  
जीवा० । उव० । सम० । विपा० । सूर० । अणुओ० । ठा०

**रयणभूय- त्रि० [रत्नभूत]**

चिन्तारत्नादिसदृशे, भग० ९ श० ३३ उ० ।

**रयणमणिभेय- पुं० [रत्नमणिभेद]**

रत्नमणिभेदपरिज्ञानाऽऽत्मके सप्तचत्वारिंशत्तमस्त्रीकलाभेदे, कल्प०

**रयणवई- स्त्री० [रत्नवती]**

पक्षहरिलकन्यायां ब्रह्मदत्तचक्रिभार्यायाम् उत्त० १३ अ० ।

**रयणवडंसय- न० [रत्नावतंसक]**

ईशानकल्पे रत्नमयेऽवतंसके, पत्र०२ पद ।

**रयणवास- पुं० [रत्नवास]**

रत्नवर्णरूपे वर्षे, भग० १५ श० । ठा० ।

**रयणविचित्त- त्रि० [रत्नविचित्र]**

रत्नखचिते, आव०म०२ अ० ।

**रयणसंकडुकड-** न० [रत्नसङ्कटोक्त]

रत्नसङ्कटे उत्कृष्टवस्तुनि, भग० ९ श० ३३ उ० ।

**रयणसंचया-** स्त्री० [रत्नसंचया]

उत्तरपश्चिमे रतिकरपर्वते उत्तरदिशि ईशानेन्द्रदेवस्य वसुन्धरा नामिक अग्रमहिष्यां राजधान्याम्, जीवा० ३ प्रति० ४ । ठा० । जंबू० सुवप्रविजयराजधान्याम् । ठा० ।

**रयणसंचयाकूड-** पुं० न० [रत्नसञ्चयाकूट]

जम्बूद्वीपे मेरोरुत्तरे रुचकपर्वते चतुर्थे कूटे, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**रयणसार-** पुं० [रत्नसार]

सिंहपुरराजे मदनरेखापतौ स्वनामख्याते राजनि । ठा० ।

**रयणसिरि-** स्त्री० [रत्नश्री]

आमलकल्पायां नगर्यां रत्निनो गृहपतेर्भार्यायां रत्नायाः अग्रमहिष्याः पूर्वभवमातरि, नाया० २ श्रु० १ वर्ग० ४ अ० ।

**रयणा-** स्त्री० [रत्ना]

उत्तरकुरुपश्चिमे रतिकरपर्वते पूर्वदिशि ईशानेन्द्रदेवस्य रत्नवसुनामिका अग्रमहिष्याः राजधान्याम् जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । ठा०

**रयणागर-** पुं० [रत्नाकर]

माणिक्योत्पादनस्थाने, समुद्रे च । बुह० । नाया० । उत्त० । पण्हा० । गवेषणायामुदाहृतस्य शुद्धगवेषकक्षपकस्य गुरौ एकदा पोतनपुरसमवसृते सूरौ, पिंड० ।

**रयणावलि-** स्त्री० [रत्नावली]

रत्नमयमणिकात्मिके आभरणविशेषे, तपोविशेषे च, रा० । विशेषे ।

**रयणावलिमहावर-** पुं० [रत्नावलिमहावर]

रत्नावलिवरसमुद्रदेवे, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**रयणावलिवर-** पुं० [रत्नावलिवर]

स्वनामख्याते द्वीपे, समुद्रे च । तत्र द्वीपे रत्नावलिवरभद्र रत्नावलिवरमहाभद्रौ समुद्रौ रत्नावलि वररत्नावलिमहावरौ देवौ । जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**रयणावलिवरभद्र-** पुं० [रत्नावलिवरभद्र]

स्वनामख्याते रत्नावलिवरद्वीपाधिपतौ देवे, जीवा० ३ प्रति० ४

**रयणावलिवरमहाभद्र-** पुं० [रत्नावलिवरमहाभद्र]

रत्नावलिवरमहाभद्रद्वीपाधिपतौ देवे, जीवा० ३ प्रति० ४ ।

**रयणावलिवरोभास-** पुं० [रत्नावलिवरावभास]

स्वनामख्याते द्वीपे, समुद्रे च । तत्र द्वीपे रत्नावलिवरावभास-रत्नावलिवरावभासमहाभद्रौ देवौ, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**रयणावलिवरोभासवर-** पुं० [रत्नावलिवरावभासवर]

रत्नावलिवरावभासासमुद्रदेवे, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**रयणाहिय-** पुं० [रत्नाधिक]

पर्यायज्येष्ठे, आव० ३ अ० ।

**रयणि-१ स्त्री० [रजनि]**

रात्रौ, आव० म० १ अ० । उत्त० ।

**रयणि-२ पुं० स्त्री० [रत्नि]**

हस्तपरिमाणे, जीवा० १ प्रति० । निसि० । भग० ।  
'चउव्वीसअंगुलाई रयणी ।' भग० ६ श० ७ उ० ।

**रयणिअर-** पुं० [रजनिकर]

निशाकरे, आव० चू० । सूर० । उव० । निर० । रा० । आव० म० । नाया०

**रयणी-१ स्त्री० [रजनी]**

ईशानेन्द्रलोकपालसोमराजस्याग्रमहिष्याम् । ठा० ४ ठा० १ उ० ।  
। भग० ।

चरमासुरेन्द्रस्याग्रमहिष्याम्, ठा० ५ ठा० १ उ० ।

षड्जग्रामस्य चतुर्थमूर्च्छनायाम्, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**रयणी-२ पुं० स्त्री० [रत्नि]**

हस्ते, जंबू० २ वक्ष० । अणुओ० ।

'रयणी हत्थो' उत्त० २६० गाथा० ।

**रयणुच्चयकूड-** पुं० [रत्नोच्चयकूट]

मानसोत्तरपर्वतस्वदक्षिणस्य गरुडस्य वेलम्बसुखदमित्यपरनाम-  
कवेलम्बस्य वायुकुमारेन्द्रस्य निवासभूते कूटे, ठा० ४ ठा० २ उ०  
जम्बूद्वीपे मन्दरस्योत्तरे रुचकवरपर्वते द्वितीये कूटे, ठा० ८ ठा०

**रयणोच्चय-** पुं० [रत्नोच्चय]

रत्नानां नानाविधानामुत्प्रावत्येन चयः उपचयो यत्र स रत्नोच्चयः ।  
मन्दरे, जंबू० ४ वक्ष० । सम० ।

**रयणोच्चया-** स्त्री० [रत्नोच्चया]

उत्तरपाश्चात्यरतिकरपर्वतस्य दक्षिणस्यां वसुगुप्तायाः ईशानाग्र-  
महिष्याः राजधान्याम्, ठा० ४ ठा० २ उ० ।

**रयणोरुजालय-** न० [रत्नोरुजालक]

रत्नसम्बन्धि ऊर्वोर्बृहज्जङ्घयोर्जालकम् । उरःप्रदेशे लम्बमाने रत्न-  
मये जालके, पण्हा० ५ अ० ।

**रयत्ताण-** न० [रजस्त्राण]

पात्रावेष्टनके, बुह० ३ उ० । नाया० ।

**रयतामयकूल-** न० [रजतमयकूल]

रूप्यमये कूले, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**रयमल-** पुं० [रजोमल]

रज इव रजः । मल इव मलः । संक्रममणोद्वर्तना पवर्तनादियोग्ये  
निधत्तनिकाचितावस्थे कर्मणि, वव० ३ उ० । दश० ।

**रयय-** न० [रजत्]

जातरूपे रौप्ये, नाया० १ श्रु० १ अ० । अणुओ० । नाया० ठा० ।  
दश० । उव० । रा० । पण्हा० ।

'कलहोअं रुप्पयं रययं' उत्त० ।

**रययकलस-** पुं० [रजतकलश]

रूप्यघटे, कल्प०१ अधि०३ क्षण ।

**रययकूड-** पुं० [रजतकूट]

मेघमालिन्यावासभूते । ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

जम्बूद्वीपस्य पूर्वे रुचकपर्वते चतुर्थकूटे, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**रययमय-** त्रि० [रजतमय]

रूप्यविकारे, उवा०७ अ० । रा० ।

**रययमयकूल-** त्रि० [रजतमयकूल]

रूप्यमये कूले, जंबू०१ वक्ष० ।

**रययमहासेल-** पुं० [रजतमहाशैल]

रजतस्यरूप्यस्य महाशैलोपर्वतः । वैताड्ये, कल्प० १ । भग० ।

**रययहार-** पुं० [रजतहार]

रजतमये आभरणविशेषे, रजतं जातीयरूप्यं हारो मुक्ताहारः ताभ्यां सदृशः । उत्त० ३४ अ० ।

**रययागर-** पुं० [रजताकर]

रूप्यखतौ, ओह० ।

**रयरेणुविणासन-** न० [रजोरेणुविनाशन]

श्लक्ष्णतरा रेणुपुद्गला रजः, त एव स्थूला रेणवः रजांसि रेणवश्च रजोरेणवस्तेषां विनाशनं रजोरेणुविनाशनम् । जीवा०३ प्रति०४ । वातोत्पाटितस्य व्योमवर्तिनो रजसः भूमिवर्त्तिपांशूनां रेणूनां चोपशमके, भग० १५ श० ।

**रयसंसट्टहडा-** स्त्री० [रजःसंसृष्टहता]

पृथिवीरजः सम्बद्धानीतायां भिक्षायाम्, आव० ४ अ० ।

**रयहरण-** न० [रजोहरण]

बाह्याभ्यन्तरमलापहारके, निसि० ।

**रयावंत-** त्रि० [रज्जयत्]

रज्जनं कारयति, निसि०१७ उ० ।

**रयावेइयत्ता-** अव्य० [रचयित्वा]

रचनां कृत्वेत्यर्थे, कल्प०१ अधि० ३ ।

**रल्लग-** पुं० [रल्लग]

द्रुमविशेषे, जंबू०२ वक्ष० ।

**रव-** पुं० [रव]

नादितरूपे शब्दे, उव० । ठा० । विपा० ।

**रवण-** त्रि० [रवत]

रवं कुर्वति, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**रवि-** पुं० [रवि]

सूर्ये, अर्कवृक्षे च । पण्हा० २ अ० उव० ।

**रविगय-** न० [रविगत]

यत्र रविस्तिष्ठति तादृशे नक्षत्रे, आव०म० । विशे० । निसि० । जीत०

**रविय-** न० [रुत]

शब्दायिते, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**रस-** पुं० [रस]

रसनेन्द्रियविषये, ठा० ।

**रसंत-** त्रि० [रसत्]

भृशं शब्दं कुर्वति, तं० । ।

प्रक्षिपति, सूय०१ श्रु० ५ अ०१ उ० ।

प्रलपति, पण्हा०१ अ०

आरटति, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।

**रसग-** त्रि० [रसग]

रसमनुगच्छन्तीति रसगाः । कटुतिक्तकषायादिरसास्वादिनि ।

आचा० १ श्रु०७ अ० १ उ० ।

**रसगारव-** पुं० [रसगौरव]

रसेन तत्प्राप्त्यभिमानम् । तदप्राप्तिप्रार्थनद्वारेणाऽऽत्मनोऽशुभभाव गौरवे, सम० ३ सम० ।

**रसगिद्ध-** पुं० [रसगृद्ध]

मधुराहारलम्पटे, बुह०४ उ० ।

**रसगेही-** स्त्री० [रसगृद्धि]

मधुरादिरसेष्वभिकाङ्क्षायाम्, उत्त०७ अ०

**रसच्चाय-** पुं० [रसत्याग]

दुग्धदध्यादीनां त्यागे, रसत्यागोऽनेकधा यथौपपातिके- 'णिव्वितिए पणीयरसपरिच्चाई । आयंबिले य आयामसित्थं भोई अरसा- हारे विरसाहारे अंताहारे पंताहारे लूहाहारे' । गच्छा०१ अधि० । बाह्यतपोभेदे, नं० ।

**रसच्चायतव-** न० [रसत्यागतपस]

रसत्यागतपसि, उत्त०३० अ० ।

**रसणा-** स्त्री० [रसना]

गुणे रज्जौ, जिह्वायाम्, आचा०२ श्रु०१ चू०२ अ०१ उ० ।

'रसणा जीहा' उत्त० । आचा० ।

**रसणाम-** न० [रसनामन्]

रस्यते-आस्वाद्यते इति रसस्तिक्तादिस्तन्निबन्धनं रसनाम । जन्तु- शरीरे तिक्तादिरसहेतुककर्मणि, रसाभिधायके, नामनि, अणुओ०

**रसणिज्जूढ-** पुं० [रसनिर्जूढ]

सर्वगुणोपेते, दश०८ अ० ।

**रसपरिच्चाय-** पुं० [रसपरित्याग]

क्षीरादीनां परित्यागे, वव०४ उ० । पा० । दश० । ठा० । बाह्यतपोभेदे, सम०६ सम० । विकृतीनां परित्यागे, उत्त०३० अ० ।

**रसपरिणाम-** पुं० [रसपरिणाम]

रसरूपतया पुद्गलानां परिणामे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।



**रसपुलाग-** न० [रसपुलाग]

अतीसारकर्तारं द्राक्षादिके, बुह० ५ उ० ।

**रसमाण-** न० [रसत्]

शब्दायमाने, पण्हा०१ अ०

**रसमाणप्यमाण-** न० [रसमानप्रमाण]

मद्यादिविषयकमानेन प्रमाणे, अणुओ० ।

**रसमेह-** पुं० [रसमेघ]

रसजनको मेघः रसमेघः । दुष्पमदुष्पमाभाविनि  
रसजनकवारिवर्षणकारके मेघे, । जंबू० ।

**रसय-** पुं० [रसज]

रसाज्जाता रसजाः । तक्रारनालदधितीमनादिषु कृम्याकृतितयाऽ-  
तिसूक्ष्मेषूपपत्रेषु जीवेषु, आचा०१ श्रु०१ अ० ६ उ० । पण्हा० ।  
सूय० । ठा० । दश० ।

दधिसोवीरकादिषु रूपपक्षमसन्निभेषु जीवेषु, सूय०१ श्रु०७ अ० ।

**रसरूव-** पुं० [रसरूप]

रसप्रधाने, तं० । ।

**रसवई-** स्त्री० [रसवती]

बहुरसायाम्, आचा०२ श्रु०१ चू०४ अ०२ उ० ।

सूपकारशालायाम्, ओह० । नाया० । आव०म० ।

**रसवंत-** न० [रसवत्]

देवानामाहारभेदे, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**रसवाणिज्ज-** न० [रसवाणिज्य]

मधुमद्यमांसभक्षणवसामज्जादुग्धदधितैलादिविक्रये । आव० ।  
उत्त० । भग० । आव०चू० ।

**रसावेजयंत-** पुं० [रसवैजयन्त]

स्वगुणैरपरपताकेवोपरिव्यवस्थिते, सूय०१ श्रु०६ अ० ।

**रसहरणी-** स्त्री० [रसहरणी]

रसो ह्रियते आदीयते यया सा रसहरणी । नाभिनाले, तं० । ।

**रसायण-** न० [रसायन]

अमृतरसस्तस्यायनं प्राप्ती रसायनम् । वयःस्थापने आयुर्मैधाक-  
रणे रोगापहरणसमर्थं च क्रियाभेदे, ठा०८ठा०३ । विपा० । आचा०  
पुरुषकलाभेदे, कल्प०१ अधि०७ ।

**रसालु-१** पुं० [रसाल]

दाडिमाम्रादिषु, आव०४ अ० ।

**रसालु-२** पुं० [रसालु]

मज्जिकायाम्, तल्लक्षणम्-दो घयपला महपलं, दहियस्सद्वाढयं  
मिरियवीसा । दस खंडगुलपलाई, एस रसालू निवइजोग्गो ।  
भग० ७ श० १० उ० । चंद० ।  
भोजनभेदे, ठा० ३ ठा० १ उ० । सूर० ।

**रसावण-** पुं० [रसापण]

मद्यहृष्टे, बुह० २ उ० । निसि० ।

**रसिणी-** स्त्री० [रसिनी]

सौवीरिण्याम् मदिरायाम्, बुह० १ उ० २ ।

**रसिय-** न० [रसिक]

माधुर्याऽऽद्युपेत, ठा० ६ ठा० ।

रसितदाडिमाम्रादिरसाले, आव० ४ अ० ।

गर्जित, रा० । अणुओ० । आचा० ।

शूकरादिशब्दमिव शब्दकरणे, पण्हा०५ अ० । ज्ञा  
पित, आव०चू०४ अ० ।

**रसेसि-** पुं० [रसैषिण्]

रस्यत आस्वाद्यत इति रसस्तमेष्टुं शीलमेषां ते रसैषिणः ।

रसान्वेषणे, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०६ उ० ।

पानार्थिनि, आचा० १ श्रु० ९ अ० ४ उ० ।

**रस्सि-** पुं० स्त्री० [रस्मि]

किरणे, जंबू० ३ वक्ष० । आव०म० ।

रज्जु, दश० ७ अ० ।

**रह-** पुं० [रथ]

स्यन्दने, भग०८ श०९ उ० ।

रथा द्विधा-यानरथाः, संग्रामरथाश्च । जीवा०३ प्रति०४ । अणुओ० ।

रहसि, एकान्ते, विजने, आव० ६ अ० । ठा० । सूय० । नाया० ।

प्रच्छन्ने, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

रहस्ये, ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

स्थविरस्य आर्यवज्रस्य त्रयाणां शिष्याणामन्यतमे शिष्ये, कल्प०२

**रहंम-** न० [रथाङ्ग]

चक्रे, ज्यो०१० पाहु० ।

**रहकार-** पुं० [रथकार]

रथनिर्माणकर्तारि, सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ०

**रहघणघणाइय-** न० [रथघनघनायित]

रथानां यत् घनघनायितम् । घनघनेत्येवं रूपे शब्दे, पण्हा०३ अ०  
आव०म० । उव०

**रहचक्रवालसंठाण-** न० [रथचक्रवालसंस्थान]

रथाङ्गस्य चक्रवाल-मण्डलं तस्येव संस्थानम् । अथवा-चक्रवालं  
मण्डलं मण्डलत्वधर्मयोगाच्च रथचक्रमपि रथचक्रवालम् ।  
वलयवृत्ताकारे, जंबू० १ वक्ष० । उव० ।

**रहजोही-** पुं० [रथजोधी]

रथेन युध्यते इति रथयोधी । रथक रणकयुद्धकर्तारि, उव० । नाया०

**रहणेमि-** पुं० [रथनेमि]

अरिष्टनेमिजिनभ्रातरि, तत्कथा राजीमत्या सह० । उत्त० ।

**रहणेमिज्ज-** न० [रथनेमीय]

रथनेमिवक्तव्यताप्रतिपादके द्वाविंशे उत्तराध्ययने, उत्त० २२ । सम०

**रहपह-** पुं० [रथपथ]

शकटचक्रद्वयप्रमिते मार्गे, भग० ७ श० ७ उ०

**रहपहगर-** पुं० [रथपथकर]

रथनिकरे, उव० ।

**रहमद्दण-** न० [रथमर्दन]

धातकीखण्डे अतरकङ्कायां नगर्यां कोष्ठे, नाया० १ श्रु० १६ अ० ।

**रहमुसल-** पुं० [रथमुशल]

यत्र रथो मुशलेन युक्तः परिधावन् महाजनक्षयं कृतवान् असौ रथमुशलः । स्वनामख्याते कोणिकपुत्राणां चेटकेन राज्ञा सार्द्धं संग्रामे, भग० ७ श० ९ उ० । नि०

**रहरेणु-** पुं० [रथरेणु]

रथेन गच्छता उत्खातो रेणुः रथरेणु वा, रथे गच्छति तदुत्खातो य ऊर्ध्वतिर्यङ्करेणुः रथरेणुः अष्टत्रसरेणुपरिमिते परिमाणे, ज्यो० २ पाहु० । अणुओ० । ठा० । जंबू० । भग० ।

**रहवर-** पुं० [रथवर]

ऋषभदेवस्य चतुर्दशे पुत्रे, कल्प० अधि० ७ ।

**रहवीरउर-** न० [रथवीरपुर]

अष्टमनिहवानां बोटिकानाम् उत्पत्तिस्थाने, आव० म० १ अ० । विशेष० । आव० चू० । उत्त० । कल्प० ।

**रहसंगेल्ल-** पुं० [रथसंगेल्ल]

रथसमुदाये, उव० । नाया० । दशा० ।

**रहसिय-** न० [राहसिक]

विजने, विपा० १ श्रु० १ अ० ।

**रहस्स-** न० [रहस्य]

रह एकान्तस्तत्र भवं रहस्यम् । विविक्तोपाश्रयादौ, प्रच्छन्ने, गृहे, गुप्ते, । आव० । उत्त० । सूय० । अणुओ० । भग० । ठा० । पण्हा० । निसि० । नाया० ।

ऐदम्पर्ये, नाया० १ श्रु० ५ अ० ।

**रहस्स-** न० [हस्व]

अपवादपदे, इहापवादपदानि रहस्यमुच्यते । बुह० ६ उ० ।

अदीर्घे, 'एगे रहस्से ।' ठा० १ ठा० ।

**रहस्सकड-** पुं० [रहःकृत]

प्रच्छन्नकृते, भग० २ श० १ उ० ।

**रहस्सगय-** न० [रहस्यगत]

कलाभेदे, सम० ७२ सम० ।

**रहस्सगारवपरिणाम-** पुं० [हस्वगौरवपरिणाम]

परिणामभेदे, यस्माद्धस्वं गमनं स हस्वगौरवपरिणामः । ठा० ९

**रहस्सट्ठाण-** न० [रहस्यस्थान]

गुह्यापवरकमन्त्रगृहादौ, दश० ५ अ० २ उ० ।

**रहस्सम्भक्खाण-** न० [रहस्याभ्याख्यान]

रह एकान्तस्तत्र भवं रहस्यं रहस्येनाभ्याख्यानभिशंसनमदसद-  
धारोपणं रहस्याभ्याख्यानम् । स्थूलमृषावादविरते द्वितीयातिचारे  
रह एकान्तस्तत्र भवं रहस्यं तेन तस्मिन्वा अभ्याख्यानं रहस्या-  
भ्याख्यानम्, एतदुक्तं भवति एकान्ते मन्त्रयमाणान्वक्ति एते हीदं  
चेदं च राजापकारित्वादि मन्त्रयन्ति । आव० ६ अ० । उवा०

**रहस्सयंत-** पुं० [हस्ववन्त]

वामनकुब्जादिषु, सूय० २ श्रु० १ अ० ।

**रहस्सिय-** न० [रहसिक]

अकार्यसम्बद्धमन्त्रे, आचा० २ श्रु० १ चू० २ अ० ३ उ० ।

रहसिके जने, विपा० १ श्रु० १ अ० । गुप्ते, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

एकान्तयोगिनि, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

**रहावट्टगिरि-** पुं० [रथावर्त्तगिरि]

वज्रस्वामिनोऽनशनेन शरीरत्यागस्थाने, कल्प० २ । आचा० । आव०

**रहिय-** पुं० [रहित]

परित्यक्ते, वियुक्ते च । आव० ४ अ० । विशेष० ।

**रहोक्कम्म-** न० [रहःकर्म]

विजनव्यापारे, ठा० ९ ठा० ।

**राइ-** स्त्री० [राजि]

अवल्याम्, पङ्क्तौ, तं० ।

एकानेकजातीयवृक्षाणां पङ्क्तिषु, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

रेखायाम्, ठा० ४ ठा० ३ उ० ।

**राइ-** स्त्री० [रात्रि]

रज्यते इति रात्रिः । रजन्याम्, सा च सूर्यकिरणास्पष्टव्योमखण्ड-  
रूपाश्चतुर्यामात्मिका । विशेष० । सूय० ।

**राइअं-** त्रि० [रात्रिकं]

रजनिनिर्वृत्ते, आव० ४ अ० ।

**राइंदिय-** न० [रात्रिंदिव]

अहोरात्रे, सम० ।

**राइद्धि-** स्त्री० [राजद्धि]

त्रिधा २ प्रकाराभ्यां षड्धा राजद्धिः । राजसंपत्तौ, ठा० ३ ठा० ४

**राइणिय-** पुं० [रात्रिक]

रत्नेर्ज्ञानादिर्भव्यवहरतीति रात्रिकः । बुह० ।

बृहत्पर्याये, ठा० ५ ठा० १ उ० । सम० । आचा० । बुह०

**राइण्ण-** पुं० [राजन्य]

भगवद्भयस्यवंशजे क्षत्रियजातिविशेषे, ये हि श्रीऋषभदेवेन  
मित्रस्थाने स्थापिताः । नाया० १ श्रु० १ अ० । कल्प० । भग० ।

**राइभक्त-** न० [रात्रिभक्त]

रजनिभोजने, दश० । सूय० ।

**राइभोजन-** न० [रात्रिभोजन]

रात्रौ-भक्तं भोजनं भुक्तिः रात्रिभोजन् । दश० ।

**राइय-** त्रि० [रात्रिक]

रात्रौ भवः रात्रिकः । रात्रियाते, आतु० । आव०

**राइया-** स्त्री० [रात्रिका]

अतिलघुसर्षपे, सूय० १ श्रु० ४ अ० १ उ० ।

**राइसिरी-** स्त्री० [राजश्री]

चमरेन्द्रस्याऽग्रमहिष्या मातरि, नाया० २ श्रु० १ वर्ग० २ अ० ।

**राईमई-** स्त्री० [राजीमती]

उग्रसेनपुत्र्यामरिष्टनेमिभार्यायाम् । कल्प० १ अधि०७ ।

**राउग्रह-** पुं० [राजावग्रह]

राजा-चक्रवर्ती तस्याऽवग्रहः षट्खण्डभरतादिक्षेत्रं राजावग्रहः ।

अवग्रहभेदे, भग० १३ श० २ उ० । आचा० ।

**राउल-** न० [राजकुल]

नृपकुले, पंच०चू० ३ ।

**राग-१** पुं० [राग]

रञ्जनं रागः । कुसुम्भादिना वर्णान्तरापादने, उत्त० १ अ० ।

रज्यतेऽनेनेति रागः । सौवीरादिके अञ्जने, सूय० १ श्रु० ६ अ० ।

उव० । सम० ।

रञ्जनं रज्यते वा अनेन जीव रागः आव०चू० ४ अ० ।

**राग-२** पुं० [राग]

रागवेदनीयकर्मापादितेऽभिष्वङ्गपरिणामरूपे भावे, । सूय० ।

उव० । आव० ।

अनभिव्यक्त मायालोभलक्षणभेदस्वाभावेऽभिष्वङ्गमात्रे, । आव०

म० । सूय० । आतु० । आव० । न० । गच्छा० । निसि० ।

**रागकिरिया-** स्त्री० [रागक्रिया]

येन परस्य राग उत्पद्यते तादृशे क्रियाभेदे, आव०चू० ४ अ० ।

**रागाज्झवसान-** न० [रागाध्यवसान]

रागहेतुकेऽध्यवसानभेदे, आव० चू० १ अ० ।

**रागज्ज्ञान-** न० [रागध्यान]

रागविषयकदुर्ध्याने, आतु० ।

‘रागज्ज्ञाने रागाऽभिष्वङ्गमात्रम्, स च कामरागस्नेहरागदृष्टिराग-  
भेदाक्षिधा । तत्र कामरागो विष्णुश्रियां विक्रमयशोराजस्येव ।  
स्नेहरागो दामत्रकस्य सुरश्रेष्ठिन इव स्वपुत्रमरणश्रवणतो हृद-  
यस्फाटात्, दृष्टिरागो ब्रह्मलोकादागत्य स्वदर्शनानुरागतः स्व-  
शिष्यं प्रति आसुरे ! रमसे इत्यादिभणतः कपिलस्येव तस्य  
ध्यानम् । तस्मिन्, आतु० ।

**रागदोसभिभूय-** न० [रागद्वेषाभिभूत]

रागश्चप्रीतिलक्षणो द्वेषश्च तद्विपरीतलक्षणस्ताभ्यामभिभूत आत्मा  
येषाम् । रागद्वेषाभिभूतस्वरूपे, सूय० १ श्रु० ३ अ० ३ उ० ।

**रागदोसविसपरममंत-** पुं० [रागद्वेषविषपरममन्त्र]

रागद्वेषो विषमिवेति रागद्वेषविषं तस्य परममन्त्रः तद्भातित्वादिति ।

रागद्वेषविनाशने, सूय० ।

**रागदोसाणुगया-** स्त्री० [रागद्वेषानुगता]

प्रीतिलक्षणो रागः, अप्रीतिलक्षणो द्वेषः, ताभ्यामनुगता सहिता ।

निष्कारणदर्पररागद्वेषानुगतादर्पिकाप्रतिषेवणायाम्, निसि० १ उ० ।

**रागबंधन-** न० [रागबन्धन]

रञ्जनं रज्यते वाऽनेन जीव इति रागः । राग एव बन्धनं राग-  
बन्धनम् । बन्धनभेदे, आव०चू० ४ अ० ।

दुविहे बंधणे पन्नत्ते, तं जहा- रागबंधणे, दोसबंधणे चेव । सम०  
२ सम०

**रागमंडल-** न० [रागमण्डल]

वसन्तादिरागसमूह, गच्छा० ३ अधि० ।

**रागरक्त-** न० [रागरक्त]

अभिष्वङ्गलक्षणो रागः तेन रक्तः । तद्भावितमूर्त्तौ, आव० ४ अ० ।  
विषयासक्ते, तं० ।

**रागविहि-** पुं० [रागविधि]

रञ्जनं रागः कुसुम्भादिना वर्णान्तरापादनं तद्विधयः । स्निग्धत्वादिषु  
रूक्षत्वादिषु च क्रियाभेदेषु, उत्त० १ अ० ।

**रागाइविधुरया-** स्त्री० [रागादिविधुरता]

अविषमत्वे, निसि० १६ उ०

**राम-** पुं० [राम]

बलदेवे, आव० १ अ० । सम० ।

**रामकण्ह-** पुं० [रामकृष्ण]

कूणिकमहाराजभार्यायाः रामकृष्णायाः अपत्ये, निर० १ अ० ।

**रामगुत्त-** पुं० [रामगुप्त]

साकेतनगर स्थिते भद्रपुत्रे, अणुत्त० । ठा०

स च द्वात्रिंशत् कन्याः परिणीय वीरान्तिके प्रव्रज्य संलेखनया  
मृत्वा सर्वार्थसिद्धे उपपद्य महाविदेहे सेत्स्येति ।

लौकिकराजर्षौ, रामगुप्तश्च राजर्षिराहारादिकं भुक्तवैव भुञ्जान एव  
सिद्धिं प्राप्तः । सूय० १ श्रु० ३ अ० ४ उ० ।

द्विगृद्धिदशानां दशमाध्ययनोक्ते स्वनामख्याते पुरुषे, ठा० १० ठा०

**रामण-** न० [रामण]

मञ्चाकीडने, गच्छा० ३ अधि० ।

**रामरक्खिया-** स्त्री० [रामरक्षिता]

ईशानेन्द्रस्याग्रमहिष्याम्, भग० १० श० ५ उ० ।

रामा-१ स्त्री० [रामा]

अरिष्टनेमिना सह रमते गोविन्दनितम्बिनीवत् क्रीडयतीति । तं० ।

रामा-२ स्त्री० [रामा]

ईशानेन्द्रस्याग्रमहिष्याम्, नाया० २ श्रु० ८ वर्ग० १ अ० । भग० ।

रामा-३ स्त्री० [रामा]

सुग्रीवराजभार्यायाम्, पुष्पदन्तनवमतीर्थ-करमातरि, ठा० ५  
ठा० १ उ० । आव० । सम्म० ।

रामायण- न० [रामायण] वाल्मीकिकृते दाशरथिरामचरितप्रतिबद्धे  
स्वनामख्याते महाकाव्ये, अणुओ० । सम्म० ।

राय- पुं० [राजन्]

राजते इति राजा । नरपतौ, ठा० ५ ठा० ३ उ० । दश० । नाया० ।  
जंबू० । पण्हा० । उव० ।

चक्रवर्त्यादौ, सूय० १ श्रु० ३ अ० २ उ० ।

राजा-चक्रवर्ती बलदेवो वासुदेवो महामाण्डलिको वा । जीवा० ३  
राजा द्विविधो भवति आत्माभिषिक्तः, अपराभिषिक्तश्च ।  
आत्मनैव निजवलेन राज्येऽभिषिक्तः आत्माऽभिषिक्तः, परेणा-  
भिषिक्तः पराभिषिक्तः । तत्राऽऽत्माभिषिक्तो भरतश्चक्रवर्ती तस्य  
पुत्र आदित्ययशाः पराभिषिक्तः । वव० ५ उ० ।

रायंत- पुं० [राजमान]

देदीप्यमाने, कल्प० १ अधि० ३ क्षण० ।

रायंतैर- न० [राजान्तःपुर] राजमहिषीगृहे, ठा० ५ ठा० २ उ० ।  
रा० ।

रायंस- पुं० [राजांस]

राजयक्ष्मणि, आचा० १ श्रु० ६ अ० १ उ० ।

रायंसि- त्रि० [राजांसिन्]

राजांसः-राजयक्ष्मा सोऽस्यास्तीति राजांसी । क्षयिणि, आचा० १  
श्रु० ६ अ० १ उ० ।

रायककुह- पुं० न० [राजककुह]

राजचिह्ने, दशा० । उव० । ठा० ।

रायकहा- स्त्री० [राजकथा]

राजसम्बन्धिन्यां विकथायाम्, ठा० ।

रायकुल- न० [राजकुल]

‘राउला’ इति ख्याते राजवंशे, अणुओ० । आव० म० ।

रायखुड्डय- पुं० [राजकुल्लक]

राजबालके, बुह० ६ उ० ।

रायगिह- न० [राजगृह]

मगधेषु जनपदेषु वैभारगिर्युपत्यकायां प्रधाननगरे, पत्र० १ पद ।  
सूय० । आव० । आव० म० । भग० । ठा० । अणुत्त० । अंत० ।  
आव० चू० ।

रायगल- पुं० [राजगल]

षष्ठाशीतितमे महाग्रहे, ठा० ।

रायजक्ख- पुं० [राजयक्ष्मन्]

रोगविशेषे, आचा० १ श्रु० २ अ० १ उ०

रायणिय- त्रि० [रात्रिक]

रत्नाधिके, वव० २ उ० । ठा० ।

ज्ञानादिभावरत्नाभ्युच्छिते, दश० ९ अ० ३ उ० ।

रत्नाधिकस्तु पर्यायज्येष्ठः । यद्वा-‘रायणिओ नामजो नाणदंसण-  
चरणसाहणेसु सुट्टु पयओ’ ति । कल्प० । आव० चू० ।

चिरदीक्षितादिषु, दश० ८ अ० ।

रायणियत्तवाद- पुं० [रात्रिकत्ववाद]

रत्नाधिकोऽयमिति प्रवादे, वव० ४ उ० ।

रायणियपरिहासी- पुं० [राजनीतिपरिभाषिन्]

आचार्यादिषु परिभवकारिणि, सम० २० सम० ।

राइणियपरिभासी राइणिय आयरिय अन्नो वा जो महल्लो जाइ-  
सुयपरियायादीहिं तस्स परिभासी परिभवकारी असुद्धचित्तणओ  
अप्पाणं परे य असमाहीए जोजयति ।’ आव० ४ अ० । दश० ।

रायणीइ- स्त्री० [राजनीति]

राज्ञां नीतिः । राजज्ञेये सामाद्युपाये, तत्प्रतिपादके शास्त्रे च ।  
नाया० १ श्रु० १ अ० ।

रायदुट्ट- न० [राजद्विष्ट]

द्वेषणं द्विष्टं राज्ञो द्विष्टं राजद्विष्टम् । राजद्वेषे, वव० १ उ० । आव० ।

रायधम्म- पुं० [राजधर्म]

दुष्टे नरनिग्रहपरिपालनादिरूपे लौकिकधर्मभेदे, दश० १ अ० ।  
आखेटकेन विनोदक्रियायाम्, सूय० १ श्रु० ५ अ० १ उ० ।

रायपध- पुं० [राजपथ]

राजगमनयोग्यमार्गं, ठा० ५ ठा० १ उ० । उव० ।

रायपसेणीय- न० [राजप्रश्रीय]

राज्ञः-प्रदेशिनाम्नः प्रश्नानि राजप्रश्नानि । तत्प्रतिपादके सूत्रकृता-  
ङ्गस्योपाङ्गे, रा० ।

रायपिंड- पुं० [राजपिंड]

राज्ञश्चक्रवर्तिवासुदेवादेः पिण्डो राजपिण्डः नृपाहारे, ठा० ९ ठा०  
। दशा० ।

सेनापतिपुरोहितश्रेष्ठ्यमात्यसार्थवाहलक्षणैः पञ्चभिः सह राज्यं  
पालयन्मूर्द्धाभिषिक्तो यो राजा, तस्य अशनादिचतुष्कं-वस्त्रं,  
पात्रं, कम्बलं, रजोहरणं चेत्यष्टविधे पिण्डे, कल्प० १ । बुह० ।

रायपुर- पुं० [राजपुर]

स्वनामख्याते नगरे, तत्र समरकेतुर्नाम राजा परिवसति, तस्य  
शृङ्गारमञ्जरी नाम भार्या । दश० १ अ० । आव० ।

**रायपेसिय-** त्रि० [राजप्रेष्य]

दण्डपाशप्रभृतिषु, आचा० २ श्रु०१ चू० १ अ०३ उ० ।

**रायभय-** न० [राजभय]

राज्ञो भयं राजभयम् । राजसम्बन्धिनि भये, उव० ।

**रायभोत्ति-** स्त्री० [राजभुक्ति]

राज्ये, निसि०१ उ० ।

**रायमास-** पुं० [राजमाष]

चवलकाख्यधान्यविशेषे, गच्छा०२ अधि० । ध० । दश० ।

**रायरक्खिय-** त्रि० [राजरक्षिक]

राजपालके, निसि०४ उ० ।

**रायरिसी-** पुं० [राजर्षि]

राजा ऋषिरिव श्रेष्ठत्वात्, संयतत्वाच्च । राजश्रेष्ठे, उत्त० १८ अ० ।  
आव०म० ।

**रायरुक्ख-** पुं० [राजवृक्ष]

वृक्षाणां राजा राज-वृक्षः, वृक्षशब्दस्य परनिपातः । रा० । उव० ।

**रायलक्खण-** न० [राजलक्षण]

राज्यसूचकचिह्ने, 'रायलक्खणविराडयंगमंगा' । रा० ।

**रायललित-** पुं० [राजललित]

नवमबलदेवस्य पूर्वभवजीवे, । आव०म० । ठा० ।

**रायवंसतिलग-** पुं० [राजवंशतिलक]

राजवंशमण्डनभूते, पण्हा०४ अ०

**रायवल्ली-** स्त्री० [राजवल्ली]

लताभेदे, पन्न०१ पद ।

**रायविजय-** पुं० [राजविजय]

तन्दुलवैचारिकग्रन्थसंशोधनकर्तारि, स्वनामख्याते सूरौ, तं० । ।

**रायवुग्गह-** पुं० [राजव्युद्ग्रह] राज्ञां संग्रामे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**रायवेढि-** स्त्री० [राजवेष्टि]

भूतिशून्ये राजकार्ये, उत्त०२७ अ० ।

**रायसंमय-** पुं० [राजसम्मत]

राजगणाः सम्मताश्चेति राजसम्मताः । मञ्च्यादि, दश०३ अ० । वव०

**रायसिरि-** स्त्री० [राजश्री]

राजशोभायाम्, राजैश्वर्ये च । आव०म०१ अ० । उत्त० ।

**रायसुया-** स्त्री० [राजसुता]

राज्ञः सुतायाम्, आव०क० ।

**रायहंस-** पुं० [राजहंस]

हंसानां राजा श्रेष्ठत्वात् । रक्तवर्णचञ्चुरणयुक्तेष्वेतवर्णे हंसभेदे,  
कलहंसे च । राजा हंस इव सारग्रहणात् नृपश्रेष्ठे । पन्न० । पण्हा० ।

**रायहंससरिस-** पुं० [राजहंससदृश]

राजहंसगतिसदृशे, भग०११ श० ११ उ० ।

**रायहाणी-** स्त्री० [राजधानी]

राजा धीयते विधीयतेभिषिच्यते यस्यां सा राजधानी । जनपदानां  
मध्ये प्रधाननगर्याम्, राजाधिष्ठाननगरे, यत्र राजा स्वयं वसति ।

ठा० १० ठा० ३ उ० । जीवा० । भग० । दशा० । उत्त० । आचा० ।  
पन्न० । निसि० । बुह० ।

राजकुलस्थाने, सूय०२ श्रु०२ अ० ।

राजधानी-राजाधिष्ठानं, राज्ञः पीठिकास्थानम् । आचा०

जत्थ राया वसइ सा रायहाणि । निसि०

**राया-** पुं० [राजन्]

राज्ञि, 'नरनाहो पत्थिवो निव्वो राया' उत्त० ।

**रायाभियोग-** पुं० [राजाभियोग]

राज्ञो नृपादेरभियोगो राजाभियोगः राजपरतन्त्रतायाम् । उवा० ।

**रायाभिसेय-** पुं० [राजाभिषेक]

राज्ञोऽभिषेकक्रियायाम्, निसि० ।

**रायावकारि-** पुं० [राजापकारिन्]

गृहान्तःपुरनृपतिशरीरतत्पुत्रादिद्रो-हकारिणि, गच्छा०१ अधि० ।  
पंच०भा० । पंच०चू० । निसि० ।

**रायाहीण-** पुं० [राजाधीन]

राज्ञो दूरेऽपि वर्तमानाः । राजवशवर्तिनि नाया०१ श्रु०१४ अ० ।

**रालग-** पुं० [रालक]

कङ्गुविशेषे, ठा० ७ठा० । आव० । दश० । पन्न० । जंबू० । भग० । गच्छा०

**रासभ-** पुं० [रासभ]

गर्दभे, सूय०१ श्रु०३ अ०४ उ० ।

**रासभी-** स्त्री० [रासभी]

गर्दभस्त्रियाम्, पन्न०११ पद ।

**रासि-** पुं० [राशि]

समूहे, उव० । ओह० । अणुओ० । विशे० ।

पुञ्जे, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

पूगीफलादिसमुदाये, पिंड० ।

इह सजातीय-वस्तुसमुदायो वर्गाणां समूहो वर्गो राशिरिति  
पर्यायाः । विशे०

शालिधान्यादिराशिवद्राशिः, विप्रकीर्णपुञ्जीकृतधान्यादिपुञ्जवत्  
पुञ्जः । अणुओ० । सम० ।

**राहव-** पुं० [राघव]

मत्स्यविशेषे, अस्ति मत्स्यस्तिभिर्नाम, शतयोजनविस्तृतः । तिमि-  
ङ्गिलगिलोऽप्यस्ति, तद्रिलोऽप्यस्ति राघवः । सूय०२ श्रु०५ अ०

**राहस्सिय-** पुं० [राहसिक]

रहसि भवा राहसिकाः । पुरुषेण परिभुज्यमानायाः स्त्रियाः  
स्तनितादिषु शब्देषु, बुह० १ उ० ३ । निसि० ।



राहु- पुं० [राहु]

महाग्रहे, 'दो राहु' । ठा० २ ठा० ३ उ० ।  
अब्मपिसाओ राहु' । कल्प० । पत्र० । सूर० । पण्हा० । चंद० ।  
स्वनामख्याते ज्योतिषिकदेवे, उव० ।  
स च द्विधा नित्यराहुः, पर्वताहुश्चेति । चंद० । ज्यो० । सम० ।

राहुकम्म- न० [राहुकम्मन्]

राहुक्रियाख्यायाम्, सूर० २० पाहु० । चंद० ।

राहुचरिय- न० [राहुचरित]

४१ कलाभेदे, सम० ७२ सम० ।

राहुहय- न० [राहुहत]

रविशशिनोर्यत्र ग्रहणमभूत् तादृशे नक्षत्रे, निसि० २० उ० । विशेष० ।  
'राहुणा मुखेन पुच्छेन वा आक्रान्ते नक्षत्रे, जीत० ।

रिउकाल-पुं० [ऋतुकाल]

मासान्ते यत् स्त्रीणामजस्रमसृक् दिनत्रयं स्रवति स ऋतुकालः ।  
स्त्रीणां रजःप्रवृत्तिकाले, तं० । ।

रिउपडिसण्ण- पुं० [रिपुप्रतिसंज्ञ]

अचलबलदेवस्य पितरि प्रजापतौ स च पूर्वं रिपुसंज्ञनामाऽऽसीत्,  
ततः स्वपुत्रीं मृगावतीं परिण-यन् अचलं नाम बलदेवं तत्रोत्पाद्य  
पुत्रीपतित्वेन प्रजापतिरिति प्रसिद्धो जातः । आव० म० १ अ० ।

रिउया- स्त्री० [ऋजुता]

आर्जवे, विशेष० ।

रिउव्वेय- पुं० [ऋग्वेद]

चतुर्णां वेदानां प्रथमे व्यवस्थितपादात्मकऋगात्मके वेदे, भग० २  
श० १ उ० । उव० ।  
ऋग्वेदाहितनिर्णयव्यापारे, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

रिखा- स्त्री० [रिद्धा]

सर्पणक्रियायाम्, बुह० १ उ० ।

रिंगण- न० [रिङ्गण]

किञ्चिच्चलने, आव० ।

रिंगिसिया- स्त्री० [रिङ्गिसिका]

वाद्यभेदे, रा० ।

रिक्क- न० [रिक्त]

त्यक्ते, निसि० १६ उ० । आचा० ।

रिक्ख- न० [ऋक्ष]

रिच्छं । रिक्खं । नक्षत्रे, । चंद० ।  
रि-क्खं उडु नक्खत्तं' । उक्त० । आव० म० ।  
रिक्ख । क्षुद्रे, क्रूरे, जन्तुविशेषे, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

रिच्छज्झय- पुं० [ऋक्षध्वज]

ऋक्षाङ्कितध्वजे, रा० ।

रिजुभाव- पुं० [ऋजुभाव]

ऋजुरकुटिलो मोक्षं प्रति प्रगुणो यो भावः परिणामः स  
ऋजुभावः । मोक्षौपयिकपरिणामे, बुह० १ उ० २ ।

रिट्ट-१ पुं० [रिष्ट]

रत्नविशेषे, आव० म० । उव० । नाया० । जंबू० । रा० । जीवा० ।

रिट्ट-२ पुं० [रिष्ट]

वेलम्बस्य प्रभञ्जनेन्द्रस्य च तृतीये लोकपाले, ठा० ४ ठा० १ उ०

रिट्ट-३ पुं० [रिष्ट]

महाकच्छविजयाख्यराजधान्याम्, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

रिट्ट-४ पुं० [रिष्ट]

पक्षिविशेषे, कलविशेषे च । उव० । नाया० ।

रिट्टकंड- न० [रिष्टकाण्ड]

रत्नप्रभायाः पृथिव्याश्चतुर्दशे काण्डे, ठा० १० ठा० ।

रिट्टकूड- पुं० [रिष्टकूट]

जम्बूद्वीपे मन्दरस्य पूर्वे रुचकवरपर्वतस्य प्रथमे कूटे, ठा० ८ ठा०

रिट्टपुर- पुं० [रिष्टपुर]

कच्छगावत्याख्यराजधान्याम्, 'दो रिट्टपुरे ।' ठा० २ ठा० ३ उ० ।

रिट्टमय- त्रि० [रिष्टमय]

रिष्टरत्नमये, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । जंबू० । रा० ।

रिट्टा- स्त्री० [रिष्टा]

मदिरायाम्, नाया० १ श्रु० १७ अ० ।

या शास्त्रान्तरे जम्बूकलकालिकेति प्रसिद्धा । जंबू० २ वक्ष० ।

पञ्चमनरकपृथिव्याम्, ठा० ७ ठा० ३ उ० । जीवा० ।

रिट्टाभ-१ न० [रिष्टाभ]

पञ्चमदेवलोकविमानभेदे, सम० ८ सम० ।

रिट्टाभ-२ न० [रिष्टाभ]

कृष्णराजीमध्यमभागवर्तिनि रिष्टाख्यलोकान्तिकदेवाऽऽवासभूते  
विमाने, भग० ६ श० ५ उ० ।

रिट्टिसाल- न० [रिष्टिशाल]

अष्टमदेवलोकविमानभेदे, सम० १८ सम०

रित्त- न० [रिक्त]

तुच्छे, आचा० १ श्रु० २ अ० ६ उ० ।

रित्तग- पुं० [रिक्तक]

शुद्धे, आव० चू० ४ अ० ।

रित्तमुट्टि- स्त्री० [रिक्तमुष्टि]

पोल्लकमुष्टौ, तं० । ।

रित्तहत्थ- पुं० [रिक्तहस्त]

फलादिशून्यकरे, 'रिक्तहस्तो न वै पश्येत्, राजानं देवतां गुरुम् ।  
निमित्तत्वं विशेषेण, फलेन फलमादिशेत् । कल्प० १ अधि० ४ ।



**रिद्ध-** न० [ऋद्ध]

संपत्तौ, धनधान्यभवननादिभिवृद्धिमुपगते । सूर० १ पाहु० विपा० । पण्हा० । नाया० । भग० ।

ऋद्धा भवनैः पौरजनैश्चातीव वृद्धिमुपगता । रा० । उव० । भग० । आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां भारते भविष्यति द्वादशेचक्रवर्ति । सम०

**रिद्धमेहवण-** न० [ऋद्धमेघवन]

भारते वर्षे रोहिडनगरस्य समीपोद्याने, निर० ।

**रिभिय-** न० [रिभित]

स्वरघोलनाप्रकारे, नाया० १ श्रु० १७ अ० ।

स्वरघोलनाप्रकारोपेते, यत्र स्वरोऽक्षरेषु घोलनास्वरविशेषेषु च सञ्चग्ररिङ्गीवीव प्रतिभाषते स पदसञ्चारः रिभित उच्यते । नाया० १ श्रु० १६ अ० । रा० । ठा० । नं० ।

नाट्यभेदे, आव० म० १ अ० । ठा० ।

**रिय-** न० [ऋत]

सत्ये, भग० ८ श० ७ उ० ।

**रियारिय-** न० [रितारित]

गमनागमने, रा० । जीवा० । आव० म० ।

**रिरसा-** स्त्री० [रिरंसा]

कदलीगृहादिक्रीडायाम्, आव० म० १ अ० ।

**रिसजिह-** पुं० [रिश्यजिह्व]

महाकुष्ठभेदे, पण्हा० ५ अ० ।

**रिसभ-** पुं० [ऋषभ]

प्रथमतीर्थकरे, आव० म० ।

**रिसभ-** [ऋषभ]

ऋषभस्तद्वद्यो वर्तते स ऋषभ इति, आह च- 'वायुः समुत्थितो नाभेः, कण्ठशीर्षसमाहतः । नर्दत्यृषभवद्यस्मात्, तस्मादृषभ उच्यते । इत्युक्तलक्षणे स्वरभेदे, ठा० ७ ठा० । अणुओ० । अस्थिद्वयस्यावेष्टके पट्टे, तं० ।

**रिसिघायण-** न० [ऋषिघातन]

ऋषिवधे, 'विज्जं परिभवमाणो, आयरिआणं गुणे पणा सिंतो । रिसिघायणाण लोअं, वच्चइ मिच्छत्तसंजुत्तो । मरण० ।

**रिसिभासिय-** न० [ऋषिभाषित]

देवलोगच्छुयाणं इसीणं चोयालीसं इसिभासिय अज्झयणा सम० । 'पण्हवागरणदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा- उवमासंखाइ इसिभासियाइ' । ठा० १० ठा० ।

**रिसिवज्झा-** स्त्री० [ऋषिहत्या]

ऋषिव्यापादने, । बुह० १ उ० ३ ।

**रिसिवाइय-** पुं० [ऋषिवादिक]

गन्धर्वभेदे, पत्र० १ पद ।

**रीइ-** स्त्री० [रीति]

स्वभावे, अणुओ० । भग० ।

**रीइया-** स्त्री० [रीतिका]

पित्तलाख्ये धातुविशेषे, उव० । आचा० ।

**रीढा-** स्त्री० [रीढा]

यदृच्छायाम्, घृणाक्षरन्याथे, बहुधम्मचरणहसणं, रीढा जणपूय- णिज्जाणं । बुह० १ उ० ३ । जीवा० ।

अनादरे, 'हेला य अनादरो रीढ' । उत्त० ।

**रीयमाण-** त्रि० [रीयमाण]

संयमानुष्ठाने, गच्छति, विहरति च । आचा० १ श्रु० ६ अ० २ उ० । उत्त० । भग० । बुह० ।

**रुइ-** स्त्री० [रुचि]

परमश्रद्धायाम्, आत्मनः परिणामविशेषरूपे, बुह० १ उ० १ । चेतोऽभिप्राये, सूय० २ श्रु० १ अ० । विशेष० ।

अभिलाषरूपे, ठा० १० ठा० ।

प्रीतौ, आव० ४ अ० । विशेष० ।

नैर्मल्ये, उत्त० १ अ० ।

**रुइर-** न० [रुचिर]

मनोज्ञे, उत्त० ३२ अ० ।

स्निग्धे, जंबू० १ वक्ष० ।

सुन्दरे, उत्त० ।

**रुइल-** त्रि० [रुचिल]

रुचिर्दीप्तिस्तां लान्त्याददतीति । सदीप्तिमत्सु । सूय० २ श्रु० १ अ० । मनोज्ञे, उव० । जंबू० । जीवा० सम० ।

ब्रह्मलोके हि 'रुइल्लं रुइल्लावंतं रुइल्लप्पभं रुइल्ललेसं रुइल्लवण्णं' इत्यादि विमानानि सन्ति । सम० ९ सम० ।

**रुचिज्जमाण-** त्रि० [रुंचीयमान]

श्लक्ष्णखण्डीयमाने, जंबू० १ वक्ष० । आव० म० ।

**रुजग-** पुं० [रुचक]

द्रुमे, कस्मिंश्चिद्देशे द्रुमाः रुचका इत्याख्यायन्ते दश० १ अ० ।

**रुंद-** त्रि० [रुन्द]

विस्तीर्णे, बुह० १ उ० ३ । उव० । निसि० । नं० । पण्हा० ।

**रुंधंतिया-** स्त्री० [रुन्धन्तिका]

यन्त्रके व्रीहिकोद्रवादीनां निस्तुषत्वकारिकाक्रियायाम्, नाया० १ ।

**रुभण-** न० [रोधन]

आवरणे, पण्हा० १ अ०

गुप्तप्रेक्षणे, बुह० ३ उ० ।

**रुक्ख-** पुं० न० [वृक्ष]

चूताऽऽशोकादिकेषु तरुषु, कल्पादिद्रुमेषु च । उत्त० ।

**रुक्खकालिय-** न० [वृक्षकालिक]

अनन्तोत्सर्पिण्यवसर्पिणीमाने, आव०म०१ अ० ।

**रुक्खगिह-** न० [वृक्षगृह]

वृक्ष एव गृहाकारः वृक्षगृहं, वृक्षे वा गृहं वृक्षगृहम् । वृक्षप्रधाने, तदुपरि वा गृहे, निसि०१२ उ० । आचा० ।

**रुक्खगेहालय-** पुं० [वृक्षगेहालय]

वृक्षरूपाणि गेहानि आलया आश्रया येषाम् । वृक्षरूपगेहनिवासिषु, जंबू० २ वक्ष० ।

**रुक्खपइट्टिय-** न० [वृक्षप्रतिष्ठित]

स्फुटितबीजप्रतिष्ठित आहारशयनादौ, दश०४ अ० ।

**रुक्खमूल-** न० [वृक्षमूल]

वृश्च्यत इति वृक्षः, तस्य मूलम् । सहकारादिवृक्षस्याधोभागे, उत्त०२ अ० । वृ० । उव० ।

**रुक्खमूलगिह-** न० [वृक्षमूलगृह]

वृश्च्यत इति वृक्षः तस्य मूले गृहम् । सहकारादिवृक्षस्याधोभागे गृहे, उत्त० २ अ० । बुह० । उव० ।

वृक्षस्य करीरादेर्निर्गलस्य मूलमधोभागस्तदेव गृहं वृक्ष मूल-गृहम् । वृक्षाधोगृहे, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

**रुक्खमूलिअ-** पुं० [वृक्षमूलिक]

वृक्षमूल एव सदा वासिनि वानप्रस्थे, उव० । निसि० ।  
वैताढ्यपर्वतवासिनि विद्याधरमनुष्ये, आव०चू०१ अ० ।

**रुक्खविगुव्वणा-** स्त्री० [वृक्षविकुर्व्वणा]

वृक्षविक्रियापादने, ठा० ।

**रुक्खासण-** न० [वृक्षासन]

स्नेहरहितभोजने, बुह०१ उ०३ ।

**रुग्ग-** त्रि० [रुग्]

जीर्णतां गते, नाया०१ श्रु०७ अ० ।

**रुट्ठ-** त्रि० [रुष्ट]

क्रोधविमोहिते, निर० १ अ० । विपा०

उदितक्रोधे, भग०७ श०९ उ० । नाया० । पण्हा० ।

**रुट्ठवंदण-** न० [रुष्टचन्दन]

क्रोधाध्मातो वन्दते, क्रोधाध्मातं वा । वन्दनदोषविशेषे, आव०३ 'रोसेण धमधमंतो जं वंदइ रुट्ठमेअं तं' आव०३ अ० । आव०चू० ।

**रुण्ण-** न० [रुदित]

रुण्णं । अश्रु विमोचने, पण्हा०५ अ० ।

भगवत्यपवर्गं गते, भरत-दुःखमसाधारणमवबुध्य तदपसरणाय शक्रेण कृतस्ततो लोकेऽपि ततः कालादारभ्य रुदितशब्दः प्रवृत्तः । तथा चाह-लोकोऽपि तथा भरतवद शक्रवद वा रुदितशब्दं प्राकृतः कर्तुमारब्धवान् । आव०म०१ अ० ।

**रुत्तजोणि-** न० [रुदितयोनि]

रुदितं योनिर्जातिः समानरूपतया यस्य तत् रुदितयोनिकम् । रुदितसमाने गीते, 'सत्त सरा णाभीओ, भवंति गीतं च रुत्तजोणी यं ।' ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**रुद्ध-** पुं० [रुद्ध]

रुद्धो । रुद्धो । हरे । अणुओ० । भग० । आव० ।

श्लेषानक्षत्रस्याऽधिपतौ, जंबू०७ वक्ष० ।

नारकाणां दुःखोत्पादके असुरकुमारविशेषे, पण्हा० ५ अ० ।

सम० । भग० । आव०

**रुद्धज्झाण-** न० [रौद्रध्यान]

रोदयत्यपरानिति रुद्रः । प्राण्युपघातादिपरिणत आत्मैव तस्येदं कम्मं रौद्रम् । उत्त० ३० अ० ।

हिंसाद्यतिक्रौर्यानुगतं रौद्रम् । ठा० ४ ठा० १ उ० । आव० ।

रौद्रभावं गतो रौद्रः । । आव०चू०४ । तच्च ध्यानं चेति । हिंसा-

नृतचौर्यधनसंरक्षणभिधानलक्षणे ध्यानभेदे, सम०४ सम० ।

'संछेदनैर्दहनभञ्जनमारणैश्च, बन्धप्रहारदमनैर्विनिकृन्तनैश्च । यो याति रागमुपयाति च नानुकम्पाध्यानं तु रौद्रमिति तत् प्रवदन्ति तज्जाः । दश० १ अ० । आव० ।

**रुह्य-** पुं० [रुद्रक]

आर्जवशब्दे उदाहृते ज्योतिर्यशसो मारके कौशिकार्यशिष्ये, आव० ४ अ० । आव०चू० ।

**रुहसेण-** पुं० [रुद्रसेण]

धरणिनागकुमारेन्द्रस्य पदात्यनीकाधिपतौ, ठा० ७ ठा० ।

**रुहसोमा-** स्त्री० [रुद्रसोमा]

दशपुरनगरे शोमदेवतानामब्राह्मणस्याग्रमहिष्याम् आर्यवज्र-मातरि, विशेषे । आव०चू० । आव०म० ।

**रुद्ध-** न० [रुद्ध]

स्थगिते, बुह०३ उ० ।

**रुधिर-** न० [रुधिर]

रक्ते, सम० ।

**रुधिरपाल-** पुं० [रुधिरपाल]

उज्जयिन्यां तोसलिनगरवास्तव्ये वणिजि, बुह० ३ उ० ।

**रुप्प-** न० [रुप्य]

रजते, आव०चू० ।

**रुप्पकूड-** पुं० [रुप्यकूट]

जम्बूद्वीपे मेरोरुत्तरे रुक्मिवर्षधरपर्वते षष्ठे कूटे, ठा० ३उ० । जंबू०

**रुप्पकूलप्पवायदह-** पुं० [रुप्यकूलप्रपातहद]

रोहितप्रपातहदसमानवक्तव्याके रूप्यकूलोद्गम स्थाने, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**रुप्यकूला-** स्त्री० [रुप्यकूला]

जम्बूद्वीपे पूर्वावरेण लवणसमुद्रगामिन्यां महानद्याम्, सम० १४  
सा च महापुण्डरीकहृदस्योत्तरतोरणेन विनिर्गत्य ऐरण्यवद्वर्षं  
विभजन्ती रोहित्रदीतुल्यवक्तव्या अपरसमुद्रं गच्छतीति । ठा० २  
ठा० ३ उ० । रा० ।

**रुप्यच्छद-** पुं० [रुप्यच्छद]

रुप्याच्छादने छत्रे, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**रुप्यनाम-** पुं० [रुप्यनामन्]

मङ्गलावतीविजये वज्रसेनसुतस्य वज्रनाभनाम्नः ऋषभपूर्वभव-  
जीवस्य कनिष्ठभ्रातरि, आव०चू० १ अ० । आव०म० ।

**रुप्यपट्ट-** पुं० [रुप्यपट्ट] रूप्यो रूप्यमयो पट्टो येषां ते रूप्यपट्टाः ।

रजतपट्टकेषु, रा० । जीवा० । आव०म० । नाया० ।

**रुप्यय-** न० [रुप्यक]

रूपाय आहन्यते स्वर्णादि यत् । अलङ्कारादिनिर्माणाय आहन्य-  
माने स्वर्णे, रजते च । स्वार्थे यत् । रजतमात्रे, आव० ३ अ० ।

**रुप्यागर-** पुं० [रुप्याकर]

रजतखनौ, ठा० ८ ठा० । जीवा० ।

**रुप्याभास-** पुं० [रुप्याभास]

अष्टाविंशतितमे महाग्रहे, चंद० २ पाहु० ।

‘दो रुप्याभासा ।’ ठा० २ ठा० ३ उ० । कल्प० ।

**रुप्पि-** पुं० [रुक्मिन्]

कृष्णाग्रमहिष्या रुक्मिण्या भ्रातरि भीष्मसुते कौण्डिल्यनगरराजे,  
नाया० १ श्रु० १६ अ० ।

मल्लीनाथजिनेन सह प्रव्रजिते कुणालराजे, नाया० १ श्रु० ८ । ठा०  
जम्बूद्वीपे मन्दरस्योत्तरे स्वनामख्याते वर्षधरपर्वते, जंबू० ।

**रुप्पिणी-** स्त्री० [रुक्मिणी]

कृष्णवासुदेवस्याग्रमहिष्याम्, ठा० ८ ठा० ।

रुक्मिणीपरिणयनम् । पण्हा० ।

**रुय-** न० [रुत]

रवणं रुतम् । शब्दकरणे, दश० ४ अ० । नाया० ।

**रुयग-१** पुं० [रुचक]

वर्णे, उव० ।

कृष्णमणिविशेषे, आव० १ अ० पत्र० । उत्त० । सूय० । उव० ।

**रुयग-२** पुं० [रुचक]

कुण्डलवरावभाससमुद्रपरिक्षेपौ रुचक द्वीपः । जीवा० ।

रुचकद्वीपपरिक्षेपी रुचकसमुद्रः । जीवा० ३ । पत्र० । अणुओ० । नाया०

रुचकद्वीपवर्तिनि चक्रवालपर्वते, ठा० ९ ठा० ।

**रुयगकुमारी-** स्त्री० [रुचककुमारी]

चतुर्षु रुचकपर्वतेषु प्रत्येकमष्टसु कूटेषु दिक्कुमार्यः । ठा० ८ ठा०

**रुयगकूड-** न० [रुचककूट]

जम्बूद्वीपे मन्दरस्य पश्चिमे रुचकवरपर्वते पश्चिमकूटे, रुचकक्षक्र-  
वालपर्वतः तदधिष्ठातृदेविवासो रुचककूटम् । ठा० ९ ठा० । जंबू०  
सुवत्सादेव्यधिष्ठितस्थानके, ठा० ६ ठा० ।

**रुयगदीव-** पुं० [रुचकद्वीप]

कुण्डलवरावभासपरिक्षेपिणि द्वीपभेदे, जीवा० ।

**रुयगवर्डिसग-** न० [रुचकावतंसक]

रुचकाराजधान्यां रुचकादेव्या आवासभवने, नाया० २ श्रु० ४ वर्ग० १

**रुयगवर-** पुं० [रुचकवर]

रुचकवरसमुद्रपरिक्षेपिणि द्वीपे, जीवा० ।

**रुयगवरभद्र-** पुं० [रुचकवरभद्र]

रुचकवरद्वीपाधिपे देवे, सूर० १९ पाहु० ।

**रुयगवरमहाभद्र-** पुं० [रुचकवरमहाभद्र]

रुचकवरद्वीपदेवे, सूर० १९ पाहु० । जीवा० ।

**रुयगवरमहावर-** पुं० [रुचकवरमहावर]

रुचकवरोदसमुद्रदेवे, जीवा० ३ प्रति० २ उ० ।

**रुयगवरोद-** पुं० [रुचकवरोद]

रुचकवरद्वीपपरिक्षेपिसमुद्रे, चंद० २० पाहु० । सूर० ।

**रुयगवरोभास-** पुं० [रुचकवरावभास]

रुचकोदसमुद्रपरिक्षेपिणि द्वीपे, जीवा० ।

**रुयगवरोभासभद्र-** पुं० [रुचकवरावभासभद्र]

रुचकवरावभासद्वीपदेवे, सूर० १९ पाहु० । जीवा० ।

**रुयगवरोभासमहाभद्र-** पुं० [रुचकवरावभासमहाभद्र]

रुचकवरावभासोदसमुद्रदेवे, जीवा० ३ प्रति० २ उ० ।

**रुयगवरोभासवर-** पुं० [रुचकवरावभासवर]

रुचकवरावभाससमुद्रदेवे, सूर० १९ पाहु० ।

**रुयगवरोभासोद-** पुं० [रुचकवरावभासोद]

रुचकवरावभासद्वीपपरिक्षेपिणि समुद्रे, जीवा० ३ प्रति० २ उ० ।

**रुयगसिरी-** स्त्री० [रुचकश्री]

चम्पायां नगर्यां रुचकगृहपतेर्भार्यायाम् यत्सुता रुचका जन्मान्तरे  
भूतानन्दस्याग्रमहिषी जाता । नाया० २ श्रु० ३ वर्ग० १ अ० ।

**रुयगावई-** स्त्री० [रुचकावती]

रुचकपर्वतस्य मध्यभागे उत्तरदिग्वास्तव्यायां दिक्कुमारीमहत्तरि-  
कायाम्, आव०म० १ अ० । जंबू० ।

भूतानन्दस्याग्रमहिष्यां च । भग० १० श० ५ उ० ।

**रुयगिंद-** पुं० [रुचकेन्द्र]

बलेः वैरोचनाराजस्य उत्पातपर्वते, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**रुयगुत्तमकूड-** पुं० [रुचकोत्तमकूट]

जम्बूमन्दरस्य पश्चिमे रुचकपर्वते षष्ठे कूटे, ठा० ८ ठा० ।

**रुयगोद-** पुं० [रुचकोद]

रुचकद्वीपपरिक्षेपिणि समुद्रे, जीवा० ।

**रुयण-** न० [रुदन]

रुदितप्राये, नाया०१ श्रु०१८ अ० ।

**रुयणिया-** स्त्री० [रुदनिका]

रुदितक्रियायाम्, नाया०१ श्रु०१६ अ० ।

**रुरु-** पुं० [रुरु]

मृगविशेषे, नाया० १ श्रु० १ । कल्प० । पन्न० । रा० । पण्हा० ।  
आचा०

वनस्पतिकायभेदे, म्लेच्छजा, तिभेदे च । पण्हा०१ अ०

**रुरुकण्ह-** पुं० [रुरुकृष्ण]

साधारणबादरवनस्पतिकायभेदे, पन्न०१ पद ।

**रुलंत-** पुं० [रुलत]

भूमौ लुठति, पण्हा०३ अ०

**रुह-** त्रि० [रुह]

रुहः बीजजन्मनि, प्रादुर्भावे, रोहयतीति रुहः । पुनरुत्पत्ति-  
शालिनि, आचा० १ श्रु० ५ अ० ६ उ० ।

**रुहिर-** न० [रुधिर]

शोणिते, पण्हा०१ अ०

**रुहिरविंदु-** पुं० [रुधिरविन्दु]

शोणितविन्दौ, जंबू०७ वक्ष० ।

**रूढ-** पुं० [रूढ]

प्रादुर्भूते, दश०७ अ० ।

शुष्के, विशेष० ।

**रूय-** न० [रूत]

बीजरहिते लोठितकर्पासे, बुह० १ उ० ३ । निसि० ।

कार्पासपक्ष्मणि, सूर०२० पाहु० । नाया० । भग० ।

**रूय-** पुं० [रूप]

द्वीपकुमारेन्द्रस्य लोकपाले, भग० ३ श० ८ उ० । ठा०

स्वभावे, पण्हा०१ अ०

**रूयंती-** स्त्री० [रूतवन्ती]

कर्पासलोठिन्या लोठयन्त्याम्, पिंड० ।

**रूयंस-** पुं० [रूपांश]

द्वीपकुमारेन्द्रस्य लोकपाले, भग०३ श०८ उ० ।

**रूयंसा-** स्त्री० [रूपांशा]

भूतानन्दस्याग्रमहिष्याम्, भग० ११ श० ५ उ० ।

दक्षिणदिक्कुमार्या मातरि, आव०म० १ अ० ।

**रूयकंत-** पुं० [रूपकान्त]

विशिष्टेन्द्रस्य लोकपाले, ठा० ४ ठा० १ उ०

**रूयकंता-१ स्त्री० [रूपकान्ता]**

मध्यमरुचकवास्तव्यायां दिक्कुमारीमहत्तरिकायाम्, ठा० ६ ठा०

**रूयकंता-२ स्त्री० [रूपकान्ता]**

भूतानन्दस्य नागकुमारेन्द्रस्याग्रमहिष्यां च । ठा० ६ ठा० । भग० ।

**रूयगावई-** स्त्री० [रूपकावती]

रुचकपर्वतवास्तव्यायां दिक्कुमार्याम्, आव० १ अ० ।

**रूयणालिया-** स्त्री० [रूतनालिका]

रूतं कार्पासविकारस्तद्धृता नालिका शुषिरवंशादिरूपा । रूतभृन्ना-  
लिकायाम्, भग० २ श० ५ उ०

**रूयप्पभा-** स्त्री० [रूपप्रभा]

भूतानन्दस्याग्रमहिष्याम्, भग० ९ श० ३३ उ० ।

दिक्कुमार्या महत्तरिकायाम्, ठा० ६ ठा० । भग० ।

**रूयवग्ग-** पुं० [रूपवर्ग]

लोमपक्षिविशेषे, जीवा०१ प्रति० ।

**रूयसीह-** पुं० [रूपसीह]

द्वीपकुमारेन्द्रस्य उत्तरदिग्लोकपाले, भग० ३ श० ८ उ० ।

**रूया-** स्त्री० [रूपा]

रुचकपर्वतस्य पूर्वदिग्वास्तव्यायां दिक्कुमारी आव० १ अ० । जंबू०  
पूर्वदिग्वास्तव्यायां दिक्कुमार्या महत्तरिकायाम्, आव०म०१ । ठा०  
भूतानन्दस्याग्रमहिष्याम्, नाया०२ श्रु०४ वर्ग०१ अ० ।

**रूयार-** पुं० [रूपकार]

चित्रकारे, विशेष० ।

**रूयासिया-** स्त्री० [रूपासिका]

मध्यमरुचकपर्वतवास्तव्यायां दिक्कुमार्याम्, आव०१ अ० । जंबू० ।

**रूव-** न० [रूप]

रूपणं रूपः, रूप्यते अवलोक्यते इति रूपम् । आ-कारे  
चक्षुर्विषये, ठा० १ ठा० । अणुत्त० । पंच०चू० । आव०म० । उव०

**रूवंगी-** स्त्री० [रूपाङ्गी]

रूपेणातिशयिना युक्तमङ्गं शरीरं यस्याः सा रूपाङ्गी । सुरूपायाम्,  
वव० ३ उ० ।

**रूवंज्ञाण-** न० [रूपध्यान]

रूपविषयके ध्याने, आतु० ।

**रूवंधार-** पुं० [रूपंधार]

मुनिवेषधारिणि, उत्त० १७ अ० ।

**रूवकहा-** स्त्री० [रूपकथा]

विकथाभेदे, ठा० ४ ठा० ।

**रूवखंध-** पुं० [रूपस्कन्ध]

बौद्धपरिभाषते अवयविद्रव्यविशेषे, स च पृथिवीधात्वादिरूपो  
रूपादिरूपश्च । सूय० १ श्रु० १ अ० १ उ०

**रूवग- न० [रूपक]**

रजतमुद्रायाम्, गच्छा० ।  
रूपकप्रमाणं चेदम्- द्वीपसत्करूपकद्विकेनोत्तरापथरूपक एकः  
पाटलिपुत्रीयो रूपकः ।  
अथवा- दक्षिणापथरूपकद्वयेन काञ्ची-पुरीयरूपक एकः स्यात्,  
तद्वयेन पाटलिपुत्रीय एकः, एवंविधो रूपकोऽत्रावगन्तव्यः ।  
गच्छा०१ अधि० । बुह० । निसि० । रा० ।  
रूपकप्रतिरूपदर्शनीये, रा० ।

**रूवगदोष- पुं० [रूपकदोष]**

स्वरूपभूतानामवयवानां व्यत्यये, अनु आव०म० ।  
रूपकदोषो यथा-पर्वते रूपियितव्ये तत्स्वरूपभूतान् शिखरादी-  
नवयवानिरूपयते, अन्यत्र वा समुद्रादेः सम्बन्धिनस्तांस्तत्र  
रूपयतीत्यादि । विशेष० ।

**रूवजक्ख- पुं० [रूपयक्ष]**

रूपेण मूर्त्या यक्ष इव रूपयक्षः । धर्मेकविशिष्टे देवकल्पे  
आधिकरणके, वव० ।

**रूवजढ- त्रि० [रूपत्यक्त]**

रूपं त्यक्तं येन स रूपत्यक्तः । सुखादिदर्शनात् त्तान्तस्य  
परनिपातः । त्यक्तवेषे, वव० १० उ० ।

**रूवतेणय- पुं० [रूपस्तेनक]**

रूपवन्तम् उपलभ्य स त्वं यो मया विवक्षितो रूपवान् इत्यादि  
भावनया परसम्बन्धिरूपमात्मनि सम्पादयति, पण्हा०३ अ० ।

**रूवदेस- पुं० [रूपदेश]**

आदित्यमण्डलादिसमाक्रान्तप्रदेशे, विशेष० ।

**रूवधम्म- न० [रूपधर्म]**

रजोहरणादिके स्वलिङ्गे धर्मज्ञानादिके ज्ञानादित्रिके, वव०१० उ०

**रूवपरियारग- पुं० [रूपपरिचारक]**

रूपतः परिचारकः । रूपतो मैथुनासेवके, ठा० २ ठा० ४ उ० ।

**रूवमय-पुं० [रूपमद]** रूपेण मदो रूपमदः । मदभेदे, सम० ८ सम०, ठा०

**रूवलक्ख- त्रि० [रूपलक्ष्य]**

कथितानुसारप्रसरत्प्रज्ञानां चतुरचेतसां सुज्ञेये । विशेष० ।

**रूववं- पुं० [रूपवान्]**

प्रशस्तरूपे, विशेष० ।  
मतोः प्रशंसावाचित्वाद्, रूपमात्राभिधाने पुनरिनेव, यथा-  
रूपिणः पुद्गलाः प्रोक्ता इति । गच्छा० ।

**रूववई- स्त्री० [रूपवती]**

भूतानन्दस्याऽग्रमहिष्याम्, भग० १० श०५ उ० । ठा० । नाया० ।  
उत्तरदिग्वास्तव्यायां दिक्कुमारीम् हत्तिरि-कायाम्, ठा० ६ ठा० ।

**रूवसंपत्ति- स्त्री० [रूपसम्पत्ति]**

रूपणं रूपः रूप्यत इति रूपम् । तस्य संपत्तिः रूपसम्पत्तिः ।  
निरुपहतेन्द्रियतायाम्, पंच०चू०१ कल्प० ।

**रूवसच्च- न० [रूपसत्य]**

रूपापेक्षया सत्यं रूपसत्यम् । सत्यभेदे, यथा प्रपञ्चयति प्रव्रजित-  
रूपं धारयन् प्रव्रजित उच्यते न चासत्यताऽस्येति । ठा० १० ठा०  
रूपतः सत्या रूपसत्या । सत्यमृषाभाषाभेदे, यथा-दम्भतो  
गृहीतप्रव्रजितरूपः प्रव्रजितोऽयमिति । पन्न० ११ पद ।

**रूवसत्तिकय- न० [रूपसत्तिकय]**

रूपमभिज्ञाप्रतिबद्धे, आचा०२ श्रु ०२ चू०५ अ० ।  
आचाराङ्गस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धस्य पञ्चमाध्ययने, ठा० ७ ठा० ।

**रूवसहगय- पुं० [रूपसहगत]**

सजीवे स्त्रीशरीरे, भूषणसहिते वा स्त्रीशरीरे, दश० ४ अ० । निसि०

**रूवसाली- पुं० [रूपशालिन्]**

किन्नरभेदे, पन्न०१ पद ।

**रूवसिरी- पुं० [रूपश्री]**

वटगच्छापरपर्यायस्य । वृद्धगच्छस्य प्रवर्तकानां देवसूरीणां नृपति  
प्रदत्तविरुदे, गच्छा०३ अधि० ।

**रूवसोभगमयमत्ता- स्त्री० [रूपसौभाग्यमदमत्ता]**

चार्वाकृत्या स्वकीर्तिश्रवणादिरूपेण सौभाग्येन मन्मथजगर्वेण च  
मत्तायां स्त्रियाम्, तं० ।

**रूवाणुवाय- पुं० [रूपानुपात]**

अभिगृहीतदेशाद्बहिःप्रयोजनसद्भावे शब्दमनुच्चारत एव परेषां  
स्वसमीपे नयनार्थं स्वशरीररूपानुदर्शनं रूपानुपातः ।  
देशावकाशिकव्रतस्य चतुर्थेऽतिचारे, उक्त० १ अ० । आव० ।

**रूवावई- स्त्री० [रूपावती]**

मध्यरुचकवास्तव्यासु अर्हतो जातमात्रस्य नालकर्तनादिकारि-  
कासु, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**रूवि-१ त्रि० [रूपिन्]**

रूपं मूर्तिवर्णादिमत्त्वं तदस्ति येषां ते । ठा० ४ ठा०१उ० । पन्न०  
मूर्तद्रव्येषु, ठा० ५ ठा० ३ उ० । भग० ।

**रूवि-२ त्रि० [रूपिन्]**

अतिशये मत्वर्थीयः अतिशयरूपवति, सूर० १३ पाहु० ।

**रूविअजीव- पुं० [रूप्यजीव]**

स्कन्धादिषु मूर्तेषु द्रव्येषु, पन्न० १ पद ।

**रूविअजीवाभिगम- पुं० [रूप्यजीवाभिगम]**

जीवाभिगम भेदे, जीवा० ३ प्रति० ।

**रूविअमास- पुं० [रूप्यमाष]**

गुञ्जाद्वयपरिमाणे कर्ममाषे, ज्यो०२ पाहु० ।



**रुविजीव-** पुं० [रूपिजीव]

अनादिकर्मसन्तानपरिगते जीवभेदे । आव० म० २ अ० ।  
देवानां वैक्रियशरीरवतां दर्शनाद्रूप्येव जीव इत्येवमवष्टम्भसदृशे  
षष्ठे विभङ्गज्ञाने, ठा० ४ ठा० २ उ० ।

**रुविणी-** स्त्री० [रूपिणी]

समुद्रपालस्य मातरि पालकस्य भार्यायाम् उत्त० २१ अ० ।  
अतिशयेन रूपवत्याम्, वव० २ उ० ।

**रूवी-** स्त्री० [रूपी]

गुच्छवनस्पतिभेदे, पत्र० १ पद ।

**रे-** अव्य० [रे]

सम्भाषणादौ, जीवा० ।

**रेणा-** स्त्री० [रेणा]

स्थूलभद्रभगिन्याम्, आव० ४ अ० । आव० चू० । कल्प० ।

**रेणु-** पुं० [रेणु]

भूवर्तिनि धूलिरूपे, सम० ३४ सम० । पण्हा० । निसि०  
रेणुनाधूल्या कलुषामलिना रेणुकलुषास्तमः पटलेनान्धकारेण  
निरालोकानिरस्तप्रकाशा निरस्तदृष्टिप्रसरा वा तमः—पटलनि-  
रालोकास्ततः कर्मधारयः । भग० ७ श० ६ उ० ।  
स्थूलतरे पृथ्वी पुद्गले, श्लक्ष्णतरा रेणुपुद्गला रजः, त एव स्थूला  
रेणवः । जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।  
पांशुषु, नाया० १ श्रु० १७ अ० । नाया० ।

**रेणुया-** स्त्री० [रेणुका]

परशुराममातरि यमदग्नेः भार्यायाम्, आचा० १ श्रु० २ अ० १ उ० ।  
आव० । तं० । आव० म० ।  
अनन्तजीववनस्पतिभेदे, पत्र० १ पद ।

**रेय-** पुं० [रेत]

पुरुषसम्बन्धिनि शुक्रे, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**रेल्लि-** स्त्री० [रेल्लि]

श्रोतसि, तं० । ।

**रेवई-** स्त्री० [रेवती]

पूषादेवताके नक्षत्रभेदे, अणुओ० । ठा० । जंबू० । सूर० ।

**रेवईनक्खत्त-** पुं० [रेवतीनक्षत्र]

आर्य्यनागहस्तिनां स्वनामख्याते शिष्ये, नं० ।

**रेवईमित्त-** पुं० [रेवतीमित्त]

दशपूर्विणि स्वनामख्याते युगप्रधानसूरौ कल्प० २ अधि० ८ ।

**रेवय-** पुं० [रेवत]

गन्धर्वभेदे, पत्र० १ पद ।  
द्वारवत्यामुत्तरपूर्वस्वनामख्याते पर्वते, आव० १ श्रु० ५ वर्ग० १  
अ० । निर० । आव० म० । आव० चू० ।

**रेहंत-** त्रि० [राजत्]

शोभमाने, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

**रेहा-** स्त्री० [रेखा]

अल्पे, दले, आभोगे, विन्दुपुञ्जकृते दण्डाकारेण चिह्नभेदे, पङ्क्तौ  
च । कल्प० १ अधि० १ क्षण० ।  
रेखाः—पादपर्यन्तर्तिनी सीमा । जंबू० ।

**रेहिज्जमाण-** त्रि० [राराज्यमान]

देदीप्यमाने, अतिशयेन राजमाने, भग० ७ श० ३ उ० ।

**रोअणागिरि-** पुं० [रोचनागिरि]

मेरोः भद्रशालवने अष्टमे दिग्हस्तिकूटे, मन्दरस्योत्तरपूर्वे उत्तरायाः  
शीतायाः पूर्वे स्वनामख्याते देवे च । जंबू० ४ वक्ष० ।

**रोइआवसाण-** न० [रोचितावसान]

रोचितम्-सम्यग्भावितम् अवसानं यस्य तद्रोचितावसानम्, शनैः  
शनैः प्रक्षयेष्यमाणस्वरं यस्य गेयस्यावसानं तद्रोचितावसानम् ।  
गेयभेदे, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । जंबू० । रा० । आव० म० ।

**रोइंदग-** न० [रोचितान्तक]

रोचितावसाने, आव० चू० १ अ० ।

**रोइजंत-** न० [रोच्यमान]

प्रशस्यमाने, आचा० २ श्रु० १ चू० ५ अ०

**रोइय-** त्रि० [रोचित]

भाविते, चिकीर्षिते च । आव० म० १ अ० । ठा० ।

**रोएमाण-** त्रि० [रोचयत्]

रुचिविषयीकुर्वाणे । आचा० । आव० म० ।

**रोग-** पुं० [रोग]

व्याधौ, आचा० १ श्रु० ६ अ० १ उ० । तं० ।  
ज्वरातिसारकासश्वासादिषु, आव० ४ अ० । आचा० ।  
कालसहेषु व्याधिषु, उव० । भग० । नाया० । ठा० ।  
कुष्ठादिरूपे, उत्त० २ अ० । नाया० । ठा० ।  
सद्योघातिनि रोगे, सूय० । आव० । निसि० । पण्हा० । आचा० ।  
खासे सासे जरे दाहे, जोणीसूले भगंदले । अरिसाऽजीरए दिट्ठी,  
मुद्धसूले अकारए । पंच० भा० २ ।  
सासे १ कासे २ जरे ३ दाहे ४, कुच्छिसूले ५ भगंदरे ६ । अरिसा  
७ ऽजीरए ८ दिट्ठी, ९ मुद्धसूले १० अकारए ११ । अच्छिवेयण १२  
कन्नवेयण १३ कंठे १४ उदरे १५ कोढे १६ । उवा० ४ अ० ।

**रोगपरीसह-** पुं० [रोगपरीषह]

रोगो-रुक् तत्परिषहणं च तत्पीडासहनं चिकित्सावर्जनम् । भग०  
८ श० ८ उ० ।

**रोगविहि-** पुं० [रोगविधि]

चिकित्सायाम्, वैद्यशास्त्रपुस्तके च । बुह० १ उ० २ ।



**रोगायंक- न० [रोगातङ्क]**

रोगो दाहज्वरादिः आतङ्कः—शीघ्रघाती शूलादिः, रोगश्च आतङ्कश्च  
अनयोः समाहारो-रोगातङ्कम् । रोगातङ्कद्वये, उत्त० १६ अ० । भग० ।  
रोगोव्याधिः स चासावातङ्कश्च कृच्छ्रजीवितकारीति रोगातङ्क ।  
रोगरूपे आतङ्के, । भग० ९ श० ३३ उ० । तं० । पण्हा० ।

**रोगावस्था- स्त्री० [रोगावस्था]**

ज्वरादिरोगप्रकारे, बुह० २ उ० । निसि० ।

**रोगासयसमण- न० [रोगाशयसमन]**

रोगनिदानचिकित्सायाम्, आव० ४ अ० ।

**रोगिण्या- स्त्री० [रोगिणिका]**

रोग आलम्बनतया विद्यते यस्यां सा रोगिणी सैव रोगिणिका ।  
सनत्कुमारस्येव प्रव्रज्या भेदे, ठा० १० ठा० ।

**रोगिय- त्रि० [रोगित]**

सञ्ज्ञातचिरस्थायिज्वरादिदोषयुक्ते, विपा० १ श्रु० ७ अ० । नाया० ।

**रोगुप्पत्ति- स्त्री० [रोगोत्पत्ति]**

रोगोत्पादे, ठा० ।

**रोज्झ- पुं० [रोज्झ]**

द्विखुरपशुभेदे, पन्न० १ पद । विपा० ।

पुच्छार्थं रोज्झा हन्यन्ते । आचा० १ श्रु० १ अ० ६ उ० ।

**रोट्ट- पुं० [रोट्ट] न० ।**

लोटे, बुह० १ उ० १ ।

**रोद्द- पुं० [रौद्र]**

रोदयत्यतिदारुणतया अश्रूणि मोचयतीति रौद्रः । रिपुजनमहा-  
दारुणान्धकारादिदर्शनाद्युद्भवो विकृताध्यवसायरूपो रसोऽपि  
रौद्रः । रसभेदे, अणुओ० ।

**रोद्दज्ञाण- न० [रौद्रध्यान]**

रोदयत्यपरानिति रुद्रः, प्राणिवधादिपरिणत आत्मैव; तस्येदं कर्म  
रौद्रं, तच्च ध्यानं च रौद्रध्यानम् । प्रव० ।  
हिंसाद्यतिक्रौर्यानुगतं रौद्रम् । ध्यानभेदे, ठा० ४ ठा० १ उ० ।  
आव० । भग० । दश० । ठा० ।

**रोम- न० [रोमन्]**

तनूरुहे, तं० । उव० ।

केशाः-शिरःकूर्चसम्भवाः रोमाणिशेषशरीरसम्भवानि । सम० । ठा०  
लवणविशेषे, सूय० १ श्रु० ७ अ० ।

**रोमंच- पुं० [रोमाञ्च]**

रोम्णां हर्षे, निसि० ७ उ० ।

**रोमकूव- पुं० [रोमकूप]**

रोम्णां तनूरुहाणां कूप इव कूपाः । रोमरन्ध्रेषु, तं० । । नाया० ।  
उत्त० । आव० म० ।

**रोमग- पुं० [रोमक]**

म्लेच्छदेशभेदे, पण्हा० १ अ०

रोमकदेशोद्भवे, जंबू० ३ वक्ष० ।

तत्र जाते अनार्यजातिभेदे, सूय० २ श्रु० १ अ० । आव० चू० ।

**रोमराइ- स्त्री० [रोमराजि]**

उदरमध्यस्थकेशावल्याम्, निसि० ३ उ०

**रोमसुहा- स्त्री० [रोमसुखा]**

रोमसुखकारिण्यां सम्बाधनायाम्, कल्प० १ अधि० ३ ।

**रोयइत्ता- अव्य० [रोचयित्वा]**

विधिभावनाभ्यां प्रियं कृत्वेत्यर्थे, उत्त० २९ अ० । दश० ।

**रोयत- त्रि० [रुदत्]**

सशब्दमश्रूणि विमुञ्चति, नाया० १ श्रु० ९ अ० । आव० म० ।

साश्रुपातं शब्दं विदधाने, नाया० १ श्रु० १ अ० । सूय० ।

**रोयग- न० [रोचक]**

रोचयति, सम्यगनुष्ठानप्रवृत्तिं न तु कारयतीति रोचकम् । अविर-  
तसम्यगदृशां कृष्णश्रेणिकादीनामिव । यत्र सदनुष्ठानं रोचयत्येव  
केवलं न पुनः कारयति । विशे० । आव० म० ।

**रोयमाणी- स्त्री० [रुदन्ती]**

अश्रूणि विमुञ्चन्त्याम्, भग० ९ श० ३३ उ० विपा० ।

**रोर- पुं० [रोर]**

रङ्गे, ठा० ६ ठा० । तं० । ।

जत्थय अज्जा कप्पो, पाणव्वाए वि रोरदुब्भिक्खे । न य परिभुज्जइ  
सहसा, गोअम ! गच्छं तयं भणियं । गच्छा० २ अधि० ।

**रोरव- पुं० [रौरव]**

सप्तमनरकपृथिव्यां नरकभेदे, सूय० १ श्रु० १ अ० १ उ० ।

**रोरुय- पुं० [रोरुय]**

जम्बूद्वीपे मेरोः दक्षिणे पङ्कप्रभापृथिव्यां नरकभेदे, ठा० ६ । सम०  
तमस्तमायां पृथिव्यां नरकभेदे, पन्न० २ पद । जीवा० ।

**रोवग- पुं० [रोहक]**

वृक्षे, दश० १ अ० ।

**रोवण- न० [रोपण]**

रोप्यते इति रोपणं, व्य ० १ उ० ।

स्थापने, वव० १ उ० ।

**रोवमाणी- स्त्री० [रुदती]**

अश्रुविमोचनं कुर्वत्याम्, विपा० १ श्रु० ९ अ० ।

**रोविंदय- न० [रोविन्दक]**

गेयभेदे, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**रोस-१ पुं० [रोष]**

देशभेदे, तद्वासिनि जने च । पण्हा० १ अ०

रोस-२ पुं० [रोष]

क्रोधे, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

क्रोधरूपे गौणमोहिनीयकर्मणि, सम० ५२ सम० ।

रोसा- स्त्री० [रोषा]

रोषात् शिवभूतेरिव या सा । प्रव्रज्याभेदे, ठा० १० ठा० १० । पंच० भा०

रोह-१ पुं० [रोह]

चतुर्थपरावर्तपरिहारे गोशालकजीवे, भग० १५ श०

भगवतो महावीरस्वामिनः स्वनामख्यातेऽनगारे, भग० ।

रोह-२ पुं० [रोध]

प्रतिरोधे, दे० ना० ७ वर्ग० १६ गाथा ।

रोहग- पुं० [रोहक]

उज्जयिन्याः प्रत्यासन्नटग्रामे भरतनटसुते, आव० १ अ० । विशेष० ।

आव० म० । नं० ।

रोहगुत-१ पुं० [रोहगुत]

अन्तरङ्गिकानगर्ग्या श्रीगुप्ताऽऽचार्याणां शिष्यत्वं प्राप्ते त्रैराशिक-  
निह्वमत्प्रवर्तके तद्भागिनेये, आव० म० १ अ० । आव० चू० । विशेष०  
आर्यसुहस्तिशिष्ये, कल्प० २ अधि० ८ ।

षडुलूके, यो हि नामान्तरेण रोहगुप्तः । ठा० ७ ठा० ७ । उत्त० । कल्प०  
चम्पायां नगर्ग्या सिंहसेनस्य महामन्त्रि, आचा० १ श्रु० ४ अ० २ उ० ।

रोहण- न० [रोधन]

रज्ज्वादिना आवरणे, ठा० ५ ठा० १ उ० ।

स्वनामख्याते दिवसमुहूर्ते, । गणि० ।

काश्यपगोत्रे आर्यसुहस्ति-शिष्ये, कल्प० २ अधि० ८ ।

रोहणगिरि- पुं० [रोहणगिरि]

जम्बूद्वीपे मन्दरपर्वते भद्रशालवने, ईशान्यकोणे अष्टमे  
दिग्हस्तिकूटे, ठा० ८ ठा० ८ ।

रोहा- स्त्री० [रोहा]

कण्टकोद्धरणे उदाहृतायां स्वनामख्यातायां परिव्राजिकायाम्,  
गच्छा० २ अधि० । बुह० ।

रोहिअसम्पवायदह- पुं० [रोहितांशाप्रपातहृद]

रोहितां शोद्धमस्थाने, ठा० ।

रोहिअसा- स्त्री० [रोहितांशा]

जम्बूद्वीपे मेरोरुत्तरे शिखरिवर्षधरपर्वते पुण्डरीकहृदार्निर्गतायां  
महानद्याम्, ठा० ३ ठा० ४ उ० । सम० ।

स्वनामख्याते द्वीपे, पं० । जंबू० ।

रोहिअसापावयकुंड- न० [रोहितांशाप्रपातकुण्ड]

स्वनामख्याते कुण्डे, जंबू० ४ वक्ष० ।

रोहिणिज्ज- पुं० [रोहिणीय]

अन्तःपुरमहल्लिकवर्धिके । यैः सह राजा मन्त्रयते । बुह० १ उ० १

रोहिण्या- स्त्री० [रोहिणिका]

त्रीन्द्रियजीवभेदे, जीवा० १ प्रति० । पत्र० ।

रोहिणी- स्त्री० [रोहिणी]

प्रजापतिदेवताके पञ्चतारे नक्षत्रविशेषे, ठा० २ । अणुओ० । चंद०

रोहिण्यचौर- पुं० [रोहिण्यचौर]

स्वनामख्याते राजगृहवास्तव्ये चौर, वव० २ उ० । पत्र० ।

रोहितंशकूड- पुं० [रोहितांशकूट]

जम्बूद्वीपे हिमवद्वर्षधरपर्वते दशमे कूटे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

रोहियंसा- स्त्री० [रोहितांशा]

नदीभेदे, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

रोहिय- न० [रोहित]

मत्स्यभेदे, पुं० । उत्त० १४ अ० । जीवा० । पत्र०

चतुष्पदविशेषे, च । पण्हा० १ अ० । ठा० ।

रोहियकूड- पुं० [रोहितकूट]

जम्बूद्वीपे मन्दरस्य दक्षिणे महाहिमवति वर्षधरपर्वते  
स्वनामख्याते सप्तमे कूटे, ठा० २ ठा० ३ उ० । जंबू० ।

जम्बूद्वीपे हैमवद्वर्षनायकदेवावासभूते कूटे, ठा० ८ ठा० ८ ।

रोहियदीव- पुं० [रोहितद्वीप]

स्वनामख्याते द्वीपे, जंबू० ४ वक्ष० ।

रोहियप्पवायदह- पुं० [रोहितप्रपातहृद]

स्वनामख्याते हृदे, । ठा० २ ठा० ३ उ० ।

रोहिया- स्त्री० [रोहिता]

जम्बूद्वीपे पूर्वावरेण लवणसमुद्रं समुत्सर्पन्त्यां स्वनामख्यातायां  
महानद्याम्, सम० १४ सम० । ठा० ।

रोहीडग- न० [रोहीडग]

भरतक्षेत्रे रोहिणीगणिकावासभूते नगरे, नि० । विपा० । संथा० ।

रोहेउ- अव्य० [रोधयित्वा]

रोधं कृत्वेत्यर्थे, बुह० ३ उ० ।

**र-कारादि शब्द-परिभाषा: समाप्ता:**

## ल-कारादि शब्द-परिभाषा:

**लङ्ग- त्रि० [लङ्गित]**

अवलम्बिते, सम०७० सम० ।

**लउड- पुं० [लकुट]**

यष्टौ, उव० । नाया० । सम० । पण्हा० ।

प्रहरणकरणे, ठा० ३ ठा० ४ उ० । नाया० । जंबू० । पण्हा० ।

**लउडकट्ट- न० [लकुटकाष्ठ]**

लकुटदण्डे, पण्हा०३ अ०

**लउय- पुं० [लकुच]**

वृक्षविशेषे, उव० ।

**लउसिका- स्त्री० [लकुसिका]**

लकुशदेशोत्पन्नयामनार्थस्त्रियाम्, नाया०१ श्रु०१ अ० । रा० ।

**लंककालियावात- पुं० [लङ्ककालिकावात]**

चक्रवद् भ्रामके वायौ, कल्प०१ अधि०६ क्षण ।

**लंकाडाह- पुं० [लङ्कादाह]**

लङ्काभस्मीकरणे, रामायणे वि सुणिज्जति जह हणुअंतस्स पुच्छं महन्तमासी, तं च किल अणेगेहिं वत्थसहस्सेहिं वेढिऊण तेल्ल-घडसहस्सेहिं सिञ्चिऊण पलीवियन्तेण लङ्का पुरी दड्ढा । निसि०१

**लंख- पुं० [लङ्ख]**

महावंशाग्रखेलके, रा० । जंबू० । अणुओ० ।

ये वंशादेरुपरि वृत्तं दर्शयन्ति ते लङ्काः । वव० ३ उ० । जीवा० । कल्प० । नाया० ।

नर्तकभेदे, पंच०चू० १ कल्प० ।

**लंखपेहा- स्त्री० [लङ्खप्रेक्षा]**

ये महावंशाग्रमारुह्य नृत्यन्ति तेषां प्रेक्षायाम्, वव०३ उ० । जीवा०

**लंखिया- स्त्री० [लङ्खिका]**

वंशोपरि नर्तक्याम्, । नाया०

**लंगल- न० [लाङ्गल]**

हल, पण्हा०३ अ०

**लंगूल- न० [लाङ्गूल]**

पुच्छे, ठा० ४ ठा० २ उ० । नाया० । कल्प० ।

**लंगूलिय- पुं० [लाङ्गूलिक]**

अष्टाविंशत्यन्तर्द्वीपानां मध्ये तृतीयेऽन्तर्द्वीपे, उक्त० ३६ अ० ।

**लंघण- न० [लङ्घन]**

गतदिरतिक्रमणे, उव० । रा० । निसि० । जीवा० नाया० ।

अतिदीर्घस्यात्युच्चस्यापि चातिक्रमणे, आव०म०१ अ० ।

साधू-साध्याद्युपरि वा क्रोधादिना अन्नपानादिमोचने, गच्छा०२

**लंघियजिणाण- त्रि० [लङ्घितजिनाञ्ज]**

त्यक्तसर्वज्ञशासने, जीवा० १ प्रति० ।

**लंघेयव्व- त्रि० [लङ्घयितव्य]**

लङ्घनीये, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**लंचा- स्त्री० [लञ्चा]**

उत्कोचे, वव०१ उ० ।

**लंचिल्ल- त्रि० [लञ्चावत्]**

उत्कोचमुपजीव्य सापेक्षे व्यवहारिणि, वव०१ उ० ।

**लंछण- न० [लाञ्छन]**

मषतिलकादिके चिह्ने, अणुओ० । न०

अङ्गावयवच्छेदे, दश० ।

कर्णादिकल्पनाङ्गनादिभिर्लाञ्छने, पण्हा० २ अ० ।

उल्मुकादिभिरङ्कने, आव०४ अ० ।

**लंछपोस- पुं० [लञ्छपोष]**

लञ्छाख्यचौरविशेषाणां पोषणे, विपा० १ श्रु०१ अ० ।

**लंछिय- त्रि० [लाञ्छित]**

रेखादिभिः कृतलाञ्छने, बुह० २ उ० । ठा० । नाया० । भग० । आव० । भस्मना पिहिते, बुह०२ उ० ।

**लंजर- न० [लञ्जर]**

उदककुम्भे, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**लंतग- पुं० [लान्तक]**

षष्ठे देवलोके । सम० । ठा० । उव० ।

लान्तककल्पवासिदेवेषु, तदिन्द्रे च । विशेष० । ठा० ।

लान्तकदेवानां स्थाने, पन्न० २ पद ।

**लंद- पुं० [लन्द]**

काले, बुह०३ उ० ।

यावता कालेनोदकार्द्रकरः शुष्यति तावान् कालो जघन्यतो लन्दः । कल्प० २ अधि० ८ ।

**लंबंत- त्रि० [लम्बमान]**

दैर्घ्यं गच्छति, कल्प० १ अधि० २ । नाया०

**लंबण- पुं० [लम्बन]**

कवले, बुह० ४ उ० । वव० ।

नङ्गरे, नाया० १ श्रु०८ अ० ।

**लंबियय- पुं० [लम्बितक]**

तरुशाखायां बाहौ बद्धे अभिग्रहविशेषवति वानप्रस्थे, उव० ।

**लंबूसग- पुं० [लम्बूसक]**

गेन्दुके, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

गोलाकृतिमण्डनविशेषे, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । आव०म० । जीवा० । न० ।

दाम्नामग्निभागे मण्डनविशेषे, रा० । जंबू० ।

आभरणविशेषे, रा० ।

**लंबेयव-** त्रि० [लम्बयितव्य]

अवलम्बनीये, रज्ज्वादिनिबद्धे, हस्तादिना धरणीये च । भग० ९ श० ३३ उ० ।

**लंबोयर-** पुं० [लम्बोदर]

गणपतौ, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

**लंभ-** पुं० [लाभ]

मूलधनादितोऽधिके लभ्यमाने धने, प्राप्तौ च । विशेष० । सूय० ।

**लंभणमच्छ-** पुं० [लम्भनमत्स्य]

मत्स्यभेदे, जीवा० १ प्रति० । पन्न० ।

**लंभित्ता-** अव्य० [लब्ध्वा]

प्राप्येत्यर्थे, ठा० ३ ठा० २ उ० ।

**लंभिय-** त्रि० [लम्बित]

प्रापिते, सूय० २ श्रु० ७ अ० ।

**लक्ख-** १ न० [लक्ष]

शतेन गुणिते सहस्राणामकशते, कल्प० ।

**लक्ख-** २ त्रि० [लक्ष्य]

शख्य, 'मुष्टिना छादयेल्लक्ष्यं, मुष्टौ दृष्टिं निवेशयेत् । हतं लक्ष्यं विजनीयाद्यदि मूर्धा न कल्पते ।' सूत्र० १ श्रु० ८ अ० ।

**लक्खण-** न० [लक्षण]

लक्ष्यतेऽनेनेति लक्षणम् । पदार्थानां स्वरूपे, विशेष० । अणुओ० ।

**लक्खणंकिंय-** त्रि० [लक्षणाङ्कित]

प्रशस्तलक्षणोपेते, जीवा० ३ प्रति०

**लक्खापंडग-** पुं० [लक्षणपण्डक]

लक्षणेन लक्षिते पण्डके, पंच० भा० १ ।

**लक्खणपसत्थ-** त्रि० [प्रशस्तलक्षण]

शुभलक्षणे, भग० ११ श० ११ उ०

**लक्खणवज्जणगुणोववेय-** त्रि० [लक्षणव्यञ्जनगुणोपपत्ति]

लक्षणम् पुरुषलक्षणं शास्त्राभिहितम्, मानोन्मानादिकं वा, व्यञ्जनं मषतिलकादि, गुणाः-सौभाग्यादयः । अथवा-लक्षणव्यञ्जनयोर्ये गुणास्तैरुपेतो लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेतः । ठा० ९ ठा० ।

**लक्खणसंवत्सर-** पुं० [लक्षणसंवत्सर]

प्रमाणसंवत्सर एव लक्षणानां वक्ष्यमाणस्वरूपाणां प्रधानतया लक्षणसंवत्सरः । ठा० ५ ठा० ३ उ० । प्रमाणसंवत्सरलक्षणेन यथावस्थितेनोपेते संवत्सर भेदे, चंद० १० पाहु० ।

**लक्खणा-** १ स्त्री० [लक्षणा]

चन्द्रप्रभस्वामिनो मातरि, । आव० । सम० ।

**लक्खणा-** २ स्त्री० [लक्षणा]

अस्याः अवसर्पिण्याः अतीतायां चतुरशीतितमायां चतुर्विंशति तीर्थकरकाले जम्बूदाडिमराजपुत्र्याम्, महानि० ६ अ० ।

**लक्खणा-** ३ स्त्री० [लक्षणा]

द्वारवत्यां कृष्णस्य वासुदेवस्याग्रमहिष्याम्, ठा० ८ ठा० । अंत०

**लक्खणुणय-** त्रि० [लक्षणोन्नत]

महालक्षणे, प्रशस्तलक्षणे च । तं० । उव० ।

**लक्खपाग-** पुं० [लक्षपाक]

लक्ष्यरूप्यकव्ययनिष्पन्ने तैलघृतादौ, ठा० ९ ठा० ।

**लक्खवाणिज्ज-** न० [लाक्षावाणिज्य]

लाक्षाजतुः, अत्रापि लाक्षाग्रहणमन्येषां सावधानां मनःशिला-दीनामुपलक्षणम्, तदाश्रिता वाणिज्या लाक्षावाणिज्यम् । लाक्षा धातकीनीलीमनःशिलावज्रलेपतुवरिकापट्टवासटङ्कणसावृक्षादि-विक्रये, 'लाक्षामनःशिलानीलीधातकी टङ्काणादिना । विक्रयः पापसदने, लाक्षावाणिज्यमुच्यते । आव० । भग० । उवा० ।

**लक्खा-** स्त्री० [लाक्षा]

जतौ, भग० ८ श० ९ उ० ।

**लक्खारस-** पुं० [लाक्षारस]

यावके, अंत० १ श्रु० ३ वर्ग० ८ अ० ।

**लक्खी-** स्त्री० [लक्ष्मी]

हिमवतः उपरि 'पौण्डरीकहृदाधीश्वरभवनपतिनिकायाभ्यन्तर-भूतायां स्वनामख्यातायां देव्याम्, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**लगंड-** न० [लगण्ड]

वक्रकाष्ठे, सूय० २ श्रु० २ अ० ।

**लगंडसाई-** पुं० [लगण्डशायिन्]

लगण्डं किल दुःस्थितं तद्वन्मस्तकपार्श्विकानां भुवि लगनेन पृष्ठस्य चालगनेनेत्यर्थः, यः शेते तथाऽभिग्रहात्सलगण्डशायी । लगण्डं वक्रकाष्ठं तद्वत् शेते लगण्डशायिनः । सूय० २ श्रु० २ अ० ।

**लगंडसायिया-** स्त्री० [लगण्डशायिका]

लगण्डं किल दुःस्थितं काष्ठं तद्वत् कुब्जतया मस्तकपार्श्विकानां विलगनेन पृष्ठस्य चालगनेन या शेते सा लगण्डशायिका । भूम्यलग्नपृष्ठायां साध्व्याम्, बुह० ५ उ० ।

**लगिय-** न० [लगित]

संघटिते, आव० ४ अ० ।

नियोजिते, नाया० १ श्रु० ८ अ० ।

**लग-** न० [लग्न]

मेषादिराशीनामुदये, । सूय० ।

सम्बद्धे, । नाया० १ श्रु० ८ अ० ।

**लधिमा-** पुं० [लधिमन्]

तूलपिण्डवल्लघुत्वप्राप्तौ, सूय० ।

**लच्छिघर-** न० [लक्ष्मीगृह]

मिथिलायां नगर्यां चैत्ये, ठा० ७ ठा० । उत्त० । आव० म० । आव० चू०

**लच्छिमइ-१ स्त्री० [लक्ष्मीमति]**

जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे षष्ठवासुदेवस्य पुरुषपुण्डरीकस्य मातरि,  
आव० १ अ० । सम० ।

**लच्छिमइ-२ स्त्री० [लक्ष्मीमति]**

दक्षिणरुचकवास्तव्यायां दिक्कुमारीमहत्तरिकायाम्, आव० म० १ ।  
। आव० चू० । जंबू० । ठा० ।

**लच्छिमइ-३ स्त्री० [लक्ष्मीमति]**

जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे वर्तमानावसर्पिण्यां महाशिवस्य भार्या, सम०

**लच्छी-१ स्त्री० [लक्ष्मी]**

जम्बूमन्दरस्योत्तरे पौण्डरीकहृदे भवनपतिनिकायाभ्यन्तरभूतायां  
देव्याम्, ठा० ३ ठा० ४ उ० । नाया० ।

सौधर्मकल्पे लक्ष्मीविमानदेव्याम्, पुष्कि० ४ अ० ।

**लच्छी-२ स्त्री० [लक्ष्मी]**

चतुर्थे स्वप्ने, कल्प० ।

**लच्छीकूड- पुं० [लक्ष्मीकूट]**

शिखरिवर्षधरपर्वते षष्ठे कूटे, जंबू० ४  
वक्ष० । ठा० ।

**लच्छीपुर- पुं० [लक्ष्मीपुर]**

भारतवर्षीयपुरे, 'पुरे लक्ष्मीपुरे नाम्ना, दत्तस्य श्रेष्ठिनः प्रिया ।  
आराधयदभक्तार्थे, पुत्रार्थं नागदेवतम् । आव० ४ अ० ।

**लज्जण- न० [लज्जन]**

लज्जायाम्, बुह० १ उ० १ ।

**लज्जणिज्ज- त्रि० [लज्जनीय]**

लज्जते यस्मादसौ लज्जनीयः । लज्जाहेतौ, नाया० १ श्रु० ८ अ० ।

**लज्जामाण- त्रि० [लज्जामान]**

लज्जां कुर्वाणे, लज्जमानाः प्रव्रज्याभासं कुर्वाणाः, यदि वा-  
सावधानुष्ठानेन लज्जमानाः लज्जां कुर्वाणाः पृथग्विभक्ताः  
शाक्योलूककणभुक्कपिलादिशिष्याः । आचा० १ श्रु० १ अ० ३ उ० ।

**लज्जसंजम- पुं० [लज्जासंयम]**

लज्जा प्रतीता संयमः पञ्चाश्रवादिविस्मणात्मक एताभ्यां समी-  
भावमुपगताभ्यामन्य इति लज्जासंयमः । संयते, उत्त० २ अ० ।

**लज्जासंजय- पुं० [लज्जासंयत]**

लज्जायां सम्यक् यतते यत्नं कुरुते इति लज्जासंयतः । लज्जया  
सम्-सम्यग् यतते-कृत्यं प्रत्यादृतो भवतीति लज्जासंयतः,  
लज्जावति साधौ, उत्त० २ अ० ।

**लज्जा- स्त्री० [लज्जा]**

ब्रीडायाम्, गच्छा० १ अधि० ।

अनुचितानुष्ठानसंवरणात्मिकायां हियाम्, उत्त० ५ अ० । ठा० ।

मनोवाक्कायसंयमे, रा० । लज्जासंयमः दश० ६ अ० २ उ० ।

अपवादभये, दश० ९ अ० १ उ० ।

**लज्जाणास- पुं० [लज्जानाश]**

गुर्वादिसमक्षमपि तद्गुणोत्कीर्तने, दश० ६ अ० ।

योषितसङ्गे पुरुषस्य लज्जानाशो भवति गोविन्दद्विजपुत्रवत् । तं० ।

**लज्जातवस्सीजिइंदिय- पुं० [लज्जातपस्विजितेन्द्रिय]**

लज्जाप्रधानास्तपस्विनः शिष्या जितेन्द्रियाश्च ये ते लज्जातपस्वि-  
जितेन्द्रियाः व्युत्पत्तिलब्धार्थकेषु साधुषु, उव० ।

**लज्जादाण- न० [लज्जादान]**

लज्जया हिया दानं यत्तल्लज्जादानमुच्यते । 'अभ्यर्थितः परेण तु,  
यद्दानं जनसमूहमध्यगतः । परचित्तरक्षणार्थं, लज्जायास्तद् भवेद्  
दानम् । इत्युक्तलक्षणे दानभेदे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**लज्जालाघवसंपण्ण- त्रि० [लज्जालाघवसम्पन्न]**

तत्र लज्जा प्रसिद्धा संयमो वा लाघवं द्रव्यतोऽल्पोपधित्वं, भावतो  
गौरवत्यागस्ताभ्यां संपन्नः । लज्जालाघवयुते, भग० २ श० ५ उ० ।

**लज्जावण- त्रि० [लज्जापन]**

लज्जामापयन्ति प्रापयन्तीति । लज्जाजनकेषु, पण्हा० १ अ०

**लज्जाविय- त्रि० [लज्जापित]**

प्राप्तलज्जे, पण्हा० ३ अ०

**लज्जासंपण्ण- त्रि० [लज्जासम्पन्न]**

लज्जया अपवादभीरुतया संयमेन वा सम्पन्ने, उव० ।

**लज्जिय- त्रि० [लज्जित]**

लज्जायुक्ते, नाया० १ श्रु० ८ अ० ।

**लज्जु- स्त्री० [रज्जु]**

रश्मौ, रज्जुरिव रज्जुः । सरलत्वात् । पण्हा० ५ अ० ।

अवक्र-व्यवहारे, भग० २ श० १ उ० ।

**लट्ट- त्रि० [लष्ट]**

मनोज्ञे, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

शोभने, पण्हा० ४ अ० ।

सुन्दरे, उत्त० ।

मनोहरे, रा० । जंबू० । उव० । भग० । जीवा० । नाया० । तं० ।

समीचीने, वव० ३ उ० ।

**लट्टतर- त्रि० [लष्टतर]**

शोभनतरे, अतिकल्याणे, तं० । ।

**लट्टदन्त- पुं० [लष्टदन्त]**

मेघमुखस्यान्तर्द्वीपस्य नैर्ऋत्यको णे नव योजनशतानि व्यतिक्रम्य  
लवणसमुद्रे अन्तर्द्वीपविशेषे, पत्र० १ पद । ठा० । नं० ।

राजगृहे श्रेणिकस्य राज्ञो धारिण्यां जाते कुमारे, अनुत्त० ।

**लट्टबाहू- पुं० [लष्टबाहू]**

जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दशमतीर्थकरपूर्वभवजीवे, सम० ।

**लट्टसंठिय- त्रि० [लष्टसंस्थित]**

मनोज्ञसंस्थाने, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि



**लट्टसाग-** न० [लट्टशाक]

कौसुम्भशालनके, बुह० १ उ० २ ।

**लट्टा-** स्त्री० [लट्टा]

कुसुम्भे, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**लट्टि-** स्त्री० [यष्टि]

काष्ठयष्टिकायाम्, उव० । सूय० ।

**लडण-** न० [लडन]

स्त्रीपुंसोरन्योन्यं प्रेमकलहे, बुह० १ उ० । पंच० भा० । निसि० ।  
आचा० । निर० ।

**लडह-** त्रि० [लडभ]

सलावण्ये, उव० । जंबू० ।

मनोज्ञे, पण्हा० ४ अ०

ललिते, जंबू० २ वक्ष० ।

**लणह-** त्रि० [श्लक्ष्ण]

घुण्टितमढवत् मसूणे, रा० । जीवा० । पत्र० । आव० म० ।  
उव० । भग० । सम० । जंबू० ।

**लत्तिया-** स्त्री० [लत्तिका]

काशिकायाम्, आचा० २ श्रु० २ चू० ४ अ० ।

पार्ष्णिप्रहारे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

आतोद्यभेदे, आव० चू० १ अ० ।

**लत्तियासद्-** पुं० [लत्तिकाशब्द]

पार्ष्णिप्रहारशब्दे, ठा० २ ठा० ३ उ०

**लद्ध-** त्रि० [लद्ध]

प्राप्ते, उक्त० २ अ० । आचा० । नाया० । सूय० । दश० । संथा० । पण्हा० ।  
भवान्तरोपार्जिते, नाया० २ श्रु० २ वर्ग० १ । ठा० । आतु० । विपा० ।  
अवाप्ते, उव०

**लद्धट्ट-** त्रि० [लद्धार्थ]

श्रवणतो गृहीतार्थे, उवा० ७ अ० । सूय० ।

अर्थश्रवणात् । भ० २ श ० ५ उ० । रा० ।

ज्ञाततत्त्वे, सूय० २ श्रु० ७ अ० ।

**लद्धट्ट-** त्रि० [लद्धास्थ]

आस्थानमास्था प्रतिष्ठा सा लद्धा येन स लद्धार्थः । आस्थायुक्ते,  
सूय० २ श्रु० १ अ० ।

**लद्धाणुमान-** त्रि० [लद्धाणुमान]

लद्धमनुमानं-पराभिप्रायपरिज्ञानं येन स लद्धाणुमानः । पराभि-  
प्रायज्ञे, सूय० १ श्रु० १३ अ० ।

**लद्धावलद्धविति-** त्रि० [लद्धापलद्धवृत्ति]

सन्मानादिना लद्धैः न्यक्कारपूर्वकतया चोपलद्धैः भक्तादिभि-  
निर्वाहे, ठा० ९ ठा० ।

**लद्धि-** स्त्री० [लद्धि]

आत्मनो ज्ञानादिगुणानां तत्तत्कम्मक्षयादितो लाभे, भग० ८ श० २  
गुणप्रत्यये सामर्थ्यविशेषे, आव० म० १ अ० ।

आत्मनः शुभभावावरण क्षयोपशमे, विशेषे ।

केवलज्ञानादिलब्धिनिमित्तत्वान्नलब्धिः । अहिंसायाम्, पण्हा० १ अ०  
श्रोत्रेन्द्रियादिविषये, जीवा० १ प्रति० ।

लब्धिर्दानलाभभोगोपभोगवीर्यभेदात् पञ्चधा । सूय० १ श्रु० १२  
योग्यतायाम्, अणुओ० ।

अवधिज्ञानस्यावस्थाने, विशेषे ।

**लद्धिअक्खर-** न० [लद्धयक्षर]

लद्धिरूपमक्षरं लद्धयक्षरम् । भावश्रुते, न० । आव० चू० । बुह० ।

**लद्धिवीरिय-** न० [लद्धिवीर्य]

वीर्यभेदे, 'जो पुण संसारी जीवो अपज्जत्तगो ठाणातिसत्तिसुजुत्तो  
तस्स तं लद्धिवीरियं भवति' निसि० १ उ० ।

**लद्धिसंपण्ण-** त्रि० [लद्धिसम्पन्न]

आहारवस्त्राद्युत्पादनशक्तियुक्ते आमर्षौषध्यादिलब्धियुक्ते, गच्छा०

**लद्धुं-** अव्य० [लद्ध्वा]

अवाप्येत्यर्थे, सूय० १ श्रु० १५ अ० । दश० ।

**लद्धेल्लिय-** त्रि० [लद्ध]

प्राप्ते, आव० २ अ० ।

**लद्ध-** त्रि० [लद्ध] त्रि० ।

उचिते, पण्हा० ५ अ० ।

**लय-** पुं० [लय]

शृङ्गार्वाद्यन्यतरमयेनाङ्गुलिकोशकेनाहतायाः तन्त्र्याः स्वरप्रकारे,  
ठा० ७ ठा० ३ उ० । जीवा० । रा० ।

लयास्तन्त्रीस्वनविशेषाः, 'दश० २ अ० ।

आश्लिष्टे, मिलने च । कल्प० १ अधि० ३ क्षण ।

**लयंग-** न० [लमाङ्ग]

पूर्वाणां चतुरशीतिलक्षगुणिते पूर्वशतसहस्रे, ज्यो० २ पाहु० ।

**लयण-** न० [लयन]

गिरिवर्तिपनाषाणगृहे, नाया० १ श्रु० २ अ० ।

उत्कीर्ण-पर्वतगृहे, अणुओ० ।

**लयसम-** न० [लयसम]

लयमनुसरतो गातुर्गये, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**लया-** स्त्री० [लया]

पद्मनागाशोकचम्पकचूतवासन्त्यतिमुक्तक कुन्द लताद्यादिके  
वनस्पतिभेदे, आचा० १ श्रु० १ अ० ५ उ० ।

यस्य तिर्यक् तथाविधाः शाखाः प्रशाखा वा न प्रसृता सा  
लतेत्यभिधीयते । जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**लयाघर- न० [लताघर]**

अशोकादिलतागृहेषु, नाया० १ श्रु० ३ अ० ।

**लयाजुद्ध- न० [लतायुद्ध]**

युद्धकलाभेदे, यथा लता वृक्षमारोहन्ती आमूलमाशिरस्तं वेवेष्टि, तथा यत्र योधः प्रतियोधशरीरं गाढं निपीड्य भूमौ पतति तल्लतायुद्धम् । जंबू० २ वक्ष० । सम० । उव० । नाया० ।

**लयामग- पुं० [लतामार्ग]**

यत्र लतावलम्बेन गम्यते तादृशे मार्गे, सूय० १ श्रु० ११ अ० ।

**ललंत- त्रि० [ललत्]**

दोलायमाने, उव० ।

ईप्सितक्रियाविशेषान् कुर्वति, भग० १३ श० ६ उ० ।

क्रीडति, बृह० १ उ० ३ ।

मन ईप्सितं यथा भवति तथा वर्तमाने, रा० ।

**ललण- स्त्री० [ललना]**

रमण्याम्, तं० । ।

**ललाडदेस- पुं० [ललाटदेश]**

भाग्यलक्षणे शरीरभाग, उव० ।

**ललिय-१ न० [ललित]**

हस्तपादाङ्गविन्यासविशेषे, बृह० १ उ० ३ । पण्हा० ।

स-विलासे, उत्त० ९ अ० । नाया० ।

विलासवद्गतौ, उव० । लालित्योपेते, उव० ।

सम्पन्नतायाम्, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

माधुर्ये, उव० । माईवे, आव० ४ अ० ।

शोभावति, त्रि० । नाया० १ श्रु० १ अ० । उवा० ।

ललितानि शोभनानि कृतानि न्यस्तानि आभरणानि सारभूषणानि यस्य स तथा तम् । विलासवति, उत्त० २ अ० ।

मनोहरे, उव० । सम० । अणुओ० । रा० ।

मनोज्ञलीलया सहिते, चंद० १ पाहु० ।

ईप्सिते, क्रीडायुक्ते, स्थिते च । नाया० १ श्रु० ९ अ० ।

**ललिय-२ न० [ललित]**

अस्यामवसर्पिण्यां जातस्य पञ्चमबलदेवस्य पूर्वभवे जीवे, सम०

**ललियंग- पुं० [ललिताङ्ग]**

ईशाने कल्पे उपपन्ने ऋषभदेवपूर्वभवजीवे, तं० । कल्प० । आचा०

ललितशरीरे, ललिताङ्गकेललितशरीरे कृतानि विन्यास्तानि

ललिताभरणानि येन स तथा । उव० । आव० म० ।

**ललियंत- त्रि० [लाल्यमान]**

विलास्यमाने, पण्हा० ४ अ०

**ललियगुठी- स्त्री० [ललितगोष्ठी]**

रोहितकपुरे स्वनामख्यातायां गोष्ठ्याम्, आव० ४ अ० ।

**ललियघडा- स्त्री० [ललितघटा]**

स्वनामख्यातायां स्वच्छन्दचारिगोष्ठ्याम्, संथा० ।

**ललियमित- पुं० [ललितमित्र]**

सप्तमवासुदेवस्य पूर्वभवे जीवे, सम०

**ललियासण- न० [ललिताशन]**

मनोज्ञभोजने, यस्य भोजनमासनं च इष्टं-तनोऽभिरुचितं क्रियते परिवेषिका च स्त्री तस्याभीष्टा क्रियते इष्टभोजनस्य द्विगुणो भागो दीयते । सलीलमशनमासनं वा अस्येति व्युत्पत्त्या ललिताशनको ललितासनको वा । बृह० २ उ०

**लल्ल- पुं० [लल्ल]**

अव्यक्तध्वनो, लल्ल अव्यक्ता विफला फलासाधनी वाग्येषाम् ।

पण्हा० २ अ०

**लल्लिरी- स्त्री० [लल्लिरी]**

मत्स्यबन्धनविशेषे, विपा० १ श्रु० ८ अ०

**लव- पुं० [लव]**

सप्तकस्तोकरूपे कालविशेषे, नाया० १ श्रु० ५ अ० । ठा० । तं० ।

अणुओ० । भग० । ज्यो० ।

‘सत्त पासूणि ये थोवे, सत्त थोवाणि से लवे । लवाणां सत्तह-तरिए, स मुहुत्ते वियाहिए ।’ भग० १ श० १ उ० ।

काष्ठाद्वयपरिमिते काले, तं० ।

**लवइय- त्रि० [लवकित]**

सञ्जातनवदलके, जंबू० १ वक्ष० । रा० ।

अङ्कुरवति, भग० १ श० १ उ० ।

**लवंग- न० [लवङ्ग]**

स्वनामख्याते वृक्षे, तत्पुष्पे च । पत्र० १ पद । रा० । जंबू० । आचा० फलाविशेषे, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

**लवंगदल- न० [लवङ्गदल]**

लवङ्गपत्रे, आव० म० १ अ० । रा० ।

**लवंगविट्ट- त्रि० [लवङ्गवेधित]**

दानं दत्त्वा आत्मना दानफलप्रशंसने अन्यजीथिकैर्वा प्रशंसां कारयति च । निसि० २ उ० ।

**लवग- पुं० [लवग]**

लवपरिमिते काले, सम० ७७ सम० ।

**लवण- न० [लवण]**

सामुद्रादौ क्षरविशेषे, जीवा० १ प्रति० । आतु० । दश० ।

सचित्तलवणगृहीते को विधिः । स्तम्भिताहारविध्वंसादिकर्तरी सिन्धुलवणाद्याश्रिते रसे, । अणुओ० ।

लवणेन पूरितः समुद्रो लवणसमुद्रः । एकादेशेन गम्यमानत्वात् लवणसमुद्रे, अणुओ० ।

**लवणसमुद्र-** पुं० [लवणसमुद्र]

लवणरसास्वादीनरपूरितः समुद्रो लवणसमुद्रः। आचा० १ श्रु० १ अ०  
ते च असंख्येयाः। जीवा० ३ प्रति०  
जम्बुद्वीपस्याभितः समुद्रे, अणुओ०।

**लवणिया-** स्त्री० [लवणिका]

दिगम्बरप्रसिद्धे साधूपकरणे, आचा० १ श्रु० २ अ० ५ उ०।

**लवणोद-** पुं० [लवणोद]

लवणमिवोदकं यत्र स लवणोदः। समुद्रे, ठा० २ ठा० १ उ०।

**लवली-** स्त्री० [लवली]

गन्धवद्वक्षविशेषे, आचा० १ श्रु० १ अ० ५ उ०

**लवसत्तम-** पुं० [लवसत्तम]

पञ्चानुत्तराविमानस्थदेवेषु, सूय० १ श्रु० ६ अ०।

**लवालव-** पुं० [लवालव]

कालानुपेक्षणेन सामाचार्यानुष्ठाने, सम० ३२। पण्हा०। आव०

**लवावसंकि-** त्रि० [लवावशङ्कि]

लवं कर्म तस्मादपशङ्कितुमपसर्तुं शीलं येषां ते लवापशङ्किनः।  
कायतिकेषु, शाक्यादिषु च। सूय० १ श्रु० १२ अ०।

**लवावसर्पि-** त्रि० [लवावसर्पि]

लवं कर्म तस्माद् अवसर्पिणः यदनुष्ठानं कर्मबन्धोपादानभूतं  
तत्परिहारिषु, सूय० १ श्रु० १ अ०।

**लसुए-** न० [लसुन]

कन्दविशेषे, उत्त० ३६ अ०।  
दुरभिगन्धपरिणता। पन्न० १०।

**लहरी-** स्त्री० [लहरी]

उत्कलिकायाम्, ठा० ४ ठा० ३ उ०।

**लहु-** न० [लघु]

शीघ्रे, उत्त० १ अ०। पण्हा०।  
प्रायस्तिर्यग्गूर्द्धाधगमनहेतौ अर्कतूलादिनिःसृते स्पर्शभेदे, अणुओ०  
लघुस्पर्शवद् द्रव्ये, यत्तु द्रव्यं निसर्गत एवोर्ध्वगतिस्वभावं तल्लघु  
यथा दीपकलादि। आव० म० १ अ०।  
अणुके, ठा० ५ ठा० १ उ०।  
गुणगौरवरहिते, पण्हा० १ अ०।  
लघुपञ्चकादौ प्रायश्चित्ते, वव० १ उ०

**लहुकरण-** न० [लघुकरण]

गमनादिकायां शीघ्रक्रियायाम्, नाया० १ श्रु० ३ अ०।  
लघुकरणेन दक्षत्वेन ये युक्ता पुरुषास्तैर्योजितं यन्त्ररूपादिभिः  
सम्बद्धितं यत्तत्तथा। उवा० ७ अ०।  
लघुकरणं शीघ्रक्रियादक्षत्वं तेन युक्तौ योगिकौ च प्रशस्त-  
योगवन्तौ प्रशस्तसदृशरूपत्वाद् यौ तौ। भग० ९ श० ३३ उ०।

**लहुग-** पुं० [लघुक]

षष्ठभक्तकरणतः पूरणीये त्रिशद्विषसपरिमाणे प्रायश्चित्तव्यवहारे,  
वव० २ उ०। बुह०।  
गौरवत्रयत्यागात् लाघववति, पण्हा० ५ अ०।

**लहुत्तरग-** न० [लघूत्तरक]

अष्टाविंशतिदिनमाने प्रायश्चित्ते, वव० २ उ०

**लहुदक्खोववेय-** न० [लघुदाक्ष्योपपेत]

लघु-शीघ्रं दाक्ष्यं चातुर्यं तेनोपपेतः। अविलम्बितचातुर्यतया  
कार्यकारिणी, उत्त० १ अ०

**लहुपरकम-** पुं० [लघुपराक्रम]

ईशानेन्द्रदेवस्य पदात्यनीकाधिपतौ, ठा० ५ ठा० १ उ०।

**लहुबुद्धि-** स्त्री० [लघुबुद्धि]

शीघ्रक्रियाकरणाध्यवसाये, कल्प० १ अधि० ७ क्षण।

**लहुभूय-** पुं० [लघुभूत]

लघुभूतो अनुपधित्वेन गौरवत्यागेन च लघुरूपसाधौ, ठा० ९ ठा०  
मोक्षे, संयमे च। आचा० १ श्रु० ३ अ० २ उ०।

**लहुभूयगामि-** पुं० [लघुभूतगामिन्]

लघुभूतो मोक्षो संयमो वा तं गन्तुं शीलमस्येति लघुभूतगामी।  
लघुभूतं वा कामयितुं वा शीलमस्येति लघुभूतकामी। मुमुक्षौ,  
संयते च। आचा० १ श्रु० ३ अ० २ उ०।

**लघुभूयविहारि-** पुं० [लघुभूतविहारिन्]

लघुभूतो वायुः वायुभूतोऽप्रतिबद्धतया विहारोऽस्यास्तीति लघु-  
भूत विहारी। क्वचिदप्यप्रतिबद्धविहारिणि, दश० ४ अ०।

**लहुय-** त्रि० [लघुक]

अल्पे, सूय० २ श्रु० २ अ०।  
उर्ध्वगमनस्वभावे धूमादौ, ठा० १० ठा० ३ उ०।  
सत्त्वसारवर्जिते तुच्छे, पण्हा० २ अ०।

**लहुयत्त-** न० [लघुकत्व]

गौरवविपरीते, भग० १ श० ९ उ०।

**लहुय-** स्त्री० [लघुता]

लघोर्भावो लघुता। लघुत्वे, वव० १ उ०।  
स्तोकतायाम्, आव० म० १ अ०।  
त्रीन्द्रियजीवभेदे, पन्न० १ पद।

**लहुवित्तिपरिक्खेव-** पुं० [लघुवृत्तिपरिक्षेप]

लघुवृत्तिः परिक्षेपोऽस्येति लघुवृत्तिपरिक्षेपः। अल्पाहारे, आचा० १  
श्रु० ८ अ० १ उ०

**लहुस-** त्रि० [लघुस्व]

लघुः स्व आत्मा यस्य सः लघुस्वः। अल्पस्वरूपे, नाया० १ श्रु० २  
ईषदल्पे, स्तोके, निसि० २ उ०।

**लहुसग-** त्रि० [लहुसग]

स्तोके, वव०२ उ० ।

लघुस्वभावयुक्ते, भग० ९ श०३३ उ० ।

लहुस्सगे नामं ववहारे पट्टवियव्वे सिया । निसि० २ उ० ।

**लहुस्सग-** पुं० [लघुस्वक]

तुच्छात्मनि, पण्हा०३ अ०

**लहुस्सगदोस-** पुं० [लघुकस्वकदोषे]

तुच्छत्वरूपस्वकदोषे, वव० ५ उ० ।

**लहुहत्थ-** पुं० [लघुहस्त]

हस्तलाघवे, पण्हा० ३ अ०

क्रियासु दक्षे हस्ते, नाया० १ श्रु०२ अ० ।

**लाइम-** त्रि० [लाविम]

लवनमति, लवनयोग्ये च । दश०७ अ० । आचा० ।

**लाइय-** न० [लायित]

छगणादिना भूमिकायाः संमृष्टीकरणे, । भग० १२ श० ८ उ० ।

नाया० । जीवा० ।

**लाउ-** न० [अलाबुक]

तुम्बक, लाउं । अलाउं । निसि० । भग० ।

पात्रभेदे, ठा० ३ ठा० ३ उ० । विशेष० । नाया० ।

**लाउडिय-** पुं० [लाकुटिक]

डङ्गरायाम्, बुह० ३ उ० ।

**लाउयनिल्लेवण-** न० [अलाबुकनिल्लेपन]

पात्रप्रक्षालने, बुह० १ उ० २ ।

**लाउयपाय-** न० [अलाबुकपात्र]

तुम्बपात्रे, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

**लाउयफल-** न० [अलाबुकफल]

तुम्बिनः फले, अणुओ० ।

**लाउयवण्ण-** त्रि० [अलाबुकवर्ण]

आर्द्रततुम्बवर्णे, चंद० २० पाहु

**लाउयवण्णाभ-** त्रि० [अलाबुकवर्णाभ]

पक्कावस्थतुम्बकवर्णाभे, भग० १२ श० ३ उ० ।

**लाउल्लोइयमहिय-** त्रि० [लापितोल्लोचितमहित]

छागणादिना भूमौ लेपनम् । । भग०१२ श०८ उ० ।

**लाघव-** न० [लाघव]

लघोर्भावो लाघवम् । आचा०१ श्रु०६ अ०३ उ० ।

द्रव्यतोऽल्पोपधित्वे, भावतो गौरवत्रयत्यागे, कल्प०१ अधि०६ ।

आचा० । ठा० । निसि० । उव० । सम० । निर० ।

तद्रूपे श्रमणभेदे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

क्रियासुदक्षत्वे, भग०२ श०५ उ० । रा० ।

**लाघविय-** न० [लाघविक]

कर्मणां लाघवापादनं कर्म गुरोर्वात्मनः कर्मापनययतो  
लघ्ववस्थासंजनने, सूय० २ श्रु० १ अ०

**लाड-** पुं० [लाट]

कोटीवर्षनगरप्रतिबद्धआर्यदेश, पन्न० । आचा० । सूय० । ठा० । आव०

**लाढ-** पुं० ।

लाढयति प्रासुकैषणीयाहारेण साधुगणैः आत्मानं यापयतीति  
लाढः, प्रशंसाभिधेयो वा, देशीपदमेतद् वा । उत्त० ।

लाढयति यापयति आत्मानम् एषणीयाहारेण निर्वाहयतीति  
लाढः । एषणीयचारिणि साधौ, उत्त० २ अ० ।

**लाढारिय-** पुं० [लाढाचार्य]

छेदग्रन्थव्याख्याविशेषकारके आचार्ये, बुह०१ उ०३ । निसि० ।

**लाभ-** पुं० [लाभ]

अप्राप्तवस्तुप्राप्ते, उत्त०१ अ० ।

लम्भनलाभः । ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

अभ्युदयप्राप्तिविशेषे, आव०म०१ अ० । उत्त०२८ अ० ।

अन्नादौ, ठा० ४ ठा० ३ उ० ।

**लाभंतर-** न० [लाभान्तर]

लम्भनं लाभोऽपूर्वार्थप्राप्तिरन्तरं विशेषः, उत्त०४ अ० ।

लाभविशेषे, वव०१० उ० ।

एकस्माल्लाभादन्यो लाभो लाभान्तरम् । ज्ञानदर्शनचारित्रादीनां  
लाभविशेषे, उत्त० ४ अ० ।

**लाभंतराय-** न० [लाभान्तराय]

अन्तरायकर्मभेदे, यदुदयवशाद्दानगुणेन प्रसिद्धादपि दातुर्गृहे  
विद्यमानमपि देयमर्थजात याच्नाकुशलोऽपि गुणवानपि याचको  
न लभते तल्लाभान्तरायम् । सम० ।

**लाभकंखि-** त्रि० [लाभाकाङ्क्षिन्]

ज्ञानदर्शनचारित्ररूपपरमार्थलाभार्थिनि, वव० १ उ० ।

**लाभट्टि-** त्रि० [लाभार्थिन्]

धनादिलाभार्थिनि, भग०९ श०३३ उ०

भोजनमात्रादिप्रार्थिनि, उव० ।

**लाभट्टिय-** पुं० [लाभार्थिक]

भावलाभेन निर्जरादिनाऽर्थोऽस्येति लाभार्थिकः ।

संयते, दश०५ अ०१ उ० ।

**लाभमय-** पुं० [लाभप्रद]

अहमेव लाभेनोत्तमया पर्यन्तवर्तीति लाभजन्यमदभेदे, ठा० १०  
ठा० ३ उ० । सम० । यो कल्पान्तरायो लब्धिमानात्मकृते परस्मै  
चोपकरणादिकमुत्पादयितुमलं स लघुप्रकृतितया लाभदावलिप्तो  
भवति । सूय० १ श्रु० १३ अ० ।

**लाभासंसापओग-** पुं० [लाभासंसाप्रयोग] कीर्तिः श्रुतादिलाभो मे भूयादिति लाभासंसाप्रयोगः। तद्भाषारे, ठा० १० ठा० ३ उ०।

**लाभ-** त्रि० [ललाम]

रम्ये, रम्याणि गललातानि कण्ठेनाऽऽतानि वरभूषणानि येषां ते तथा। उव०।

**लाय-** पुं० [लाज]

भृष्टीव्रीहौ, आचा० २ श्रु० १ चू० ४ अ० २ उ०।

**लायातरण-** न० [लाजातरण]

तीर्यते इवास्यामतिस्वच्छतया तरणम्, लाजाभृष्टा ब्रीहयस्तैर्निर्वृतं तरणं लाजातरणम्। पेयायाम्, जीत०।

**लालप्पइत्ता-** अव्य० [लालप्य]

अत्यर्थं पुनः पुनर्वा लपित्वेत्यर्थे, सूय० १ श्रु० १० अ०।

**लालप्पणपत्थणा-** स्त्री० [लालपनप्रार्थना]

लालपनस्य गर्हितलापस्य प्रार्थनेव प्रार्थना लालपनप्रार्थना। चौर्यं हि कुर्वन् गर्हितलपनानि तदपलापरुपाणि, दीनवचनरुपाणि वा प्रार्थयत्येव, तत्र हि कृते तान्यवश्यं वक्तव्यानि भवन्तीति भावः। पञ्चविंशतितमे गौणचौर्ये, पण्हा० ३ अ०

**लालप्पणया-** स्त्री० [लालपनता]

भृशं लपनताप्रार्थने, भग० १२ श० ५ उ०।

**लालप्पमाण-** त्रि० [लालप्यमान]

भोगार्थमत्यर्थे लपति, आचा० १ श्रु० २ अ० ३ उ०।

**लाला-** स्त्री० [लाला]

लालतीति लाला। अत्रुट्यन्मुखश्लेष्मसन्ततौ आचा० १ श्रु० २ अ० ५ उ०। उव०। जंबू०। निसि०। जीवा०।  
मुखश्रावे, पत्र० १ पद।

**लालापच्चासि-** त्रि० [लालाप्रत्याशिन]

ललतीति लालाअत्रुट्यन्मुखश्लेष्मसन्तानातिस्तां प्रत्यशितुं शीलमस्येति लाल प्रत्याशी। वान्ताभिलाषिणि, आचा० १ श्रु० २ अ० ५

**लालाविस-** पुं० [लालाविष]

लाला मुखश्रावः तत्र विषं यस्य। सर्प भेदे, पत्र० १ पद। जीवा०।

**लावग-** पुं० [लावक]

पक्षिविशेषे, पण्हा० २ अ० विपा०। निसि०। पत्र०।  
लोमपक्षिविशेषः। पत्र०।  
लावकः-पारापतः। आव० ८१९।

**लावगकरण-** न० [लावककरण]

यत्र लावकपक्षिणमुद्दिश्य किञ्चित् क्रियते। तादृशे स्थाने, ठा० ४ ठा० १ उ०। आचा०।

**लावगलक्खण-** न० [लावकलक्षण]

लावकपक्षिप्रतिपादके शास्त्रे, सूय० २ श्रु० २ अ०।

**लावण-** न० [लावण्य]

स्पृहणीयत्वे, नाया० १ श्रु० ९ अ०। उत्त०। उव०।

मनोज्ञत्वे, नाया० १ श्रु० ९ अ०।

शरीरकान्तौ, रा०।

सौन्दर्य, अणुत्त०।

लावण्यं छायाविशेषेलक्षणम्, कुङ्कुमाद्यनुलेपन जभित्यपरे, पत्र० २३ पद।

शरीराकृतिविशेषे, भ० १४ श० ३ उ०

**लावणलतिया-** स्त्री० [लावण्यलतिका]

वरधनुषो भार्यायाः श्रीकान्त्याः दास्याम्, उत्त० १६ अ०।

**लासग-** पुं० [लासक]

गायके, अणुओ०।

**लालग-** पुं० [रासक]

गायके, अणुओ०। रा०।

ये रासकान् गायन्ति, जयशब्दप्रयोक्तारो वा भाण्डाः। उव०।

जीवा०। रा०। निसि० जंबू०। पण्हा०। नाया०।

**लासिय-** पुं० [लासिक]

भिल्लविशेषे, पण्हा० १ अ०

**लाह-** पुं० [लाभ]

प्राप्तौ, आव०।

**लाहविय-** न० [लाघविक]

लघोर्भावो लाभं तद्विद्यते यस्यासौ लाघविकः। लघुभूते, आचा० १ श्रु० ८ अ०।

गौरवत्यागे, ठा० ५ ठा० ३ उ०।

**लाहुक्क-** न० [लाघुक्य]

लाघवे, बुह० ५ उ०।

**लिंग-** न० [लिङ्ग]

लिङ्गयते गम्यतेऽतीन्द्रियार्थोऽनेनेति लिङ्गम्। अथवा-लीनं तिरोहितमर्थं गमयतीति। धूभकृतकत्वादिके, विशेष०। दश०।

लिङ्गयते विशेषेण ज्ञायसेऽनेनेति लिङ्गम्। चिन्हे, आव०। भग०।

**लिंगकप्प-** पुं० [लिङ्गकप्प]

लिङ्गसामाचार्याम्, पंच० भा०।

**लिंगकरण-** न० [लिङ्गकरण]

रजोहरणसमर्पणे, वव० १ उ०।

**लिंगतिय-** न० [लिङ्गत्रिक]

स्त्रीपुंनपुंसकरूपे लिङ्गत्रये, अणुओ०।

**लिंगत्थ-** पुं० [लिङ्गस्थ]

द्रव्यप्रव्रजिताङ्गारमर्द्दकादौ, दश० ३ अ०।

**लिंगधारि-** पुं० [लिङ्गधारिन्]

वेषमात्रधारिणि, गच्छा० १ अधि०।



**लिंगभिण्ण-** न० [लिङ्गभिन्न]

सूत्रदोषभेदे, यत्र लिङ्गव्यत्ययो यथा-इयं स्त्रीति वक्तव्ये अयं स्त्रीति वक्ति । आव०म० १ अ० ।

**लिंगविहार-** पुं० [लिङ्गविहार]

लिङ्गावस्थितस्य विहारः । स्वलिङ्गपरित्यजनेन विहारे, बुह० १ उ० १

**लिंगाजीव-** पुं० [लिङ्गाजीव]

लिङ्गम्-साधुलिङ्गं तेनाजीवति, ज्ञानादिशून्यस्तेन जीविकां कल्पयति । साधुवेषजीविनि, ठा० ५ ठा० १ उ० ।

**लिंगावसेसमेत्त-** न० [लिङ्गावशेषमात्र]

मात्रशब्दो लक्षणवाची, प्रव्रज्यालक्षणे द्रव्यलिङ्गमात्रे, निसि० १३

**लिंगि-** त्रि० [लिङ्गिन्]

लिङ्गं तिरोहितमर्थं गमयतीति लिङ्गं धूमकृतकत्वादिकं तदस्यास्तीति लिङ्गी । साध्येऽनुमेये, विशेष० ।

लिङ्गं विद्यतेऽस्यासौ लिङ्गी । साधुवेषवती, गच्छा० २ । निसि० ।

रजोहरणादिसाधुलिङ्गवति, पत्र० २० पद ।

**लिंछ-** न० [लिच्छ]

कुम्भकारस्यापाके भाण्डपचनस्थाने, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**लिंद-** न० [लिंद]

सशैवलपुराणजलवत्स्वादरहिते, पण्हा० ५ अ० ।

गोवराख्यसविशेषकलिते, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**लिक्खा-** स्त्री० [लिक्खा]

लघूयुके, जंबू० २ वक्ष० ।

वालाग्राष्टके प्रमाणे अवमानभेदे न० । जंबू० ।

**लिच्च-** त्रि० [लिच्च]

कोमले, आव०म० १ अ० । जीवा० ।

**लित्त-** त्रि० [लित्त]

संमृष्टे, ठा० ५ ठा० २ उ० ।

सर्वतः ठा० ३ ठा० १ उ० ।

पिच्छिलीकृते, सूय० २ श्रु० २ अ० ।

उपदिग्धे, पत्र० २ पद ।

छगणादिभिः । कल्प० ३ अधि० ९ ।

मृत्तिकाया सर्वतः खरण्टिते, बुह० २ उ० । गच्छा० ।

प्रचुरकर्मखरण्टिते, उत्त० ८ अ० । सूय० ।

एषणादोषविशेषे, ठा० ३ ठा० ४ उ० । आचा० ।

लिप्तं यत्र दध्यादिद्रव्यलेपो लगति । पिंड० ।

**लित्तसीहकेसर-** पुं० [लित्तसिंहकेशर]

आस्तरणविशेषे, नाया० १ श्रु० १ अ०

**लित्थारिय-** [देशी]

खरण्टिते, पिंड० ।

**लिप्पकम्म-** न० [लेप्यकम्मन्]

लेप्यरूपकम्मणि० अणुओ० ।

**लिप्पगहत्थि-** पुं० [लिप्पगहस्तिन्]

चित्रकहस्तिनि, आव० ५ अ० ।

**लिम्ब-** पुं० [लिम्ब]

कोमले, रा० ।

**लिवि-** स्त्री० [लिपि]

अक्षरलेखप्रक्रियायाम्, सम० १८ सम० ।

पुस्तकादावक्षरविन्यासे, भग० १ श० १ उ० ।

अष्टादशलपयः शास्त्रेषु श्रूयन्ते । तद्यथा- 'हंसलिवी १ भूयलिवी २ जक्खी ३ तह रक्खसी य बोधव्वा । उड्डी ५ जवणि ६ तुरुक्की ७, कीरी ८ दविडी य ९ सिंधवी य १० ।। ११ ।। मालविणी ११ नडि १२ नागरि १३, लाडलिवी १४ पारसी य १५ बोधव्वा ।। तह अनिमित्ती य लिवी १६, चाणक्की १७ मूलदेवी १८ । विशेष० । पत्र० लेप्यविधौ, सम० ४५ सम० ।

**लिविपरिच्छेय-** पुं० [लिपिपरिच्छेद]

लिपिभेदपरिज्ञाने कलाभेदे, कल्प० १ अधि० ७ ।

**लिवायण-** न० [लिप्पासन]

मसीभाजेन, रा० । जीवा० ।

**लिहमाण-** त्रि० [लिखत्]

लेखन्या मृष्टं कुर्वाणे, अणुओ० ।

**लिहिय-** न० [लिखित]

शिल्पविशेषे, कल्प० १ अधि० ७ ।

**लीण-** त्रि० [लीन]

गुप्ते, आचा० १ श्रु० ३ अ० ३ उ० ।

**लीलट्टिय-** त्रि० [लीलास्थित]

ललिताङ्गनिवेशरूपया लीलया स्थिते जंबू० १ वक्ष० । जीवा० ३

**लीला-** स्त्री० [लीला]

सकामगमनभाषितादिके, अणुओ० ।

**लीलाचंकम्ममाण-** त्रि० [लीलाचङ्कम्यमाण]

हेलया कुटिलगमनं कुर्वाणे, पण्हा० ५ अ० ।

**लीलायंत-** त्रि० [लीलायत्]

सविलासगतौ, कल्प० १ अधि० २

लीलां कुर्वति, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

**लीहोदर-** न० [लीहोदर]

रोगविशेषे, पण्हा० ५ अ० ।

**लुंचन-** न० [लुञ्चन]

सामान्यतः केशोत्पादने, पिंड० ।

अपनयने, सूय० १ श्रु० ४ अ० २ उ० ।

**लुंचित-** त्रि० [लुञ्चित]

उत्पाटितकेशे, आचा० १ श्रु० ६ अ० २ उ० ।

**लुपइत्ता-** त्रि० [लुम्पयितृ]

ग्रन्थिच्छेदनादिभिर्विलुम्पयितरि, आचा० १ श्रु० २ अ० १ उ० ।  
अन्यतराङ्गावयवविकर्तने, सूय०२ श्रु०२ अ० ।  
केशाकर्षणाद्युत्पीडने, सूय०२ श्रु०२ अ० ।

**लुपणा-** स्त्री० [लोपना]

प्राणानां छेदने, पण्हा०१ अ०

**लुंबी-** स्त्री० [लुम्बी]

आम्नादिमञ्जर्याम्, कल्प० २ अधि०८ ।

**लुञ्चित-**

उत्पाटितकेशे, लुञ्चितविलुञ्चितो यथा कपोतः । पिंड० ।

**लुक्कसिरय-** त्रि० [लुञ्चितशिरष्क]

कर्त्तरील्किप्रशिरके, कल्प०३ अधि०९ क्षण ।

**लुक्ख-** पुं० [रुक्ख]

संयोगे सति संयोगिनामबन्धकारणे स्पर्शभेदे, ठा० १ ठा० ।  
निस्त्रेहे, । पण्हा० ५ अ० । जीत० । बुह० । ठा० ।

**लुक्खदेसीय-** पुं० [रुक्खदेशीय]

रुक्खकल्पे, आचा०१ श्रु०९ अ०३ उ०

**लुक्खफासपरिणय-** पुं० [रुक्खस्पर्शपरिणत]

भस्मादिवत् रुक्खस्पर्शपरिणतेषु, पुद्गलेषु, पत्र० १ पद ।

**लुक्खमरसुण्हमनिकामभोइ-** पुं० [रुक्खाऽरसोष्णानिकामभोजिन्]

रुक्खम् – निस्त्रेहम् अरसोष्णमिति नञ् प्रत्येकमभिसंबध्यते, अरसं हिङ्गादिभिरसंस्कृत मनुष्णं शीतलमनिकामं परिमितं भक्तं भोक्तुं शीलशेषां शीलमेषां ते रुक्खारसानुष्णानिकामभोजिनः । तथा-विधाऽभिग्रहविशेषपरके, बुह० १ उ० ३ ।

**लुट्टन-** न० [लुट्टन]

अवधावने, वव०१ उ० ।

**लुत्त-** त्रि० [लुम्]

अपगते, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।

**लुत्तधम्म-** त्रि० [लुम्धम्मन्]

विगतधम्मणि, पण्हा०२ अ०

**लुत्तपण्ण-** त्रि० [लुम्प्रण]

अपगतावधिविवेके, सूय० १ श्रु० ५ अ०१ उ० ।

**लुद्ध-** त्रि० [लुब्ध]

अन्नादिष्वभिकाङ्क्षावति, उत्त० ११ अ० ।

आहारोपधिपात्रादिषु लोलुपे, गच्छा०२ अधि० । उत्त० ।

रागद्वेषाते, सूय०२ श्रु०१ अ० ।

लोभनम्-लुब्धम्, । लोभे, नं० । बुह० ३ उ० ।

**लुद्ध-** पुं० [लोध]

स्वनामख्याते गन्धद्रव्यविशेषे, दश० ६ अ० ।

**लुद्धग-** पुं० [लुब्धक]

व्याधे, पण्हा०१ अ०

**लुद्धगदिद्वंतिभाविय-** त्रि० [लुब्धकदृष्टान्तभावित]

पार्श्वस्थादिभिर्भाविते, निसि० ।

**लुप्पमाण-** त्रि० [लुप्पमान]

कर्णनासिकादिच्छेदनेन छिद्यमाने, उवा०७ अ० ।

**लुलिय-** त्रि० [लुलित]

अतिक्रान्तप्राये, नाया०१ श्रु०४ अ० ।

मदवशेन घूर्णिते, चलत्पदे च । उत्त० ५ अ० ।

तीव्रभुवि लुठति, पण्हा० ३ अ०

**लुडण-** न० [देशी]

अपहरणे, जीवा० १ प्रति० ।

**लुडिय-** त्रि० [लूटित]

अपहृते, आचा० २ श्रु० १ चू० २ अ० १ उ० । आव०म० ।

**लूया-** स्त्री० [लूता]

कोलिक पुटके, कोलिकाजालके च । बुह० १ उ० २ ।

**लूसग-** त्रि० [लूषक]

मुष्णाति लूषयति वा इति लूषकः । ठा० ४ ठा० ३ उ० ।

चौरै, वव०४ उ० ।

क्रूरे, भक्षके च । सूय०१ श्रु० ३ अ०१ उ० ।

हिंसके, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ० ।

व्यापादके, सूय०२ श्रु०४ अ० ।

विराधके, सूय०१ श्रु०२ अ०२ अ० ।

उपमर्दकारिणि, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।

**लूसण-** न० [लूषण]

कदर्थने, सूय० १ श्रु०३ अ०१ उ० ।

दूषणे, सूय० १ श्रु०१४ अ० ।

उपमर्दने, सूय० १ श्रु०१४ अ० ।

अतिक्रमणे, सूय० १ श्रु०५ अ०२ उ० ।

विध्वंसने, आचा० १ श्रु०६ अ०४ उ० ।

विराधने, आचा० २ श्रु०१ चू०१ अ०७ उ० ।

ह्रस्वकरणे, सूय० १ श्रु०७ अ० ।

**लूसिय-** त्रि० [लूषित]

परितापने, आचा०२ श्रु०४ उ० ।

हिंसके, सूय०१ श्रु०१ अ० । आचा० ।

**लूसियपुव्व-** न० [लूषितपूर्व]

हिंसितपूर्व, आचा० १ श्रु० ९ अ० १ उ० ।

**लूह-१ त्रि०/रुक्ष**

निस्नेहे, ठा० ५ ठा० १ उ० । बुह० । आचा० । नाया० ।  
अप्रणीते, भग० ३ श० ४ उ० ।  
स्नानस्निग्धभोजनादिपरिहारेण, । उत्त० २ अ० ।  
तैलाभ्यङ्गादिरहिते, उत्त० २ अ० ।  
स्वजनादिषु स्नेहविरहाद्रक्षः । दश० १० अ० ।  
रुक्षः शरीरे मनसि च । द्रव्यभावस्नेहवर्जितत्वेन परुषे, ठा० ४  
ठा० १ उ० ।  
रागद्वेष रहिते, सूय० २ श्रु० १ अ० ।

**लूह-२ पुं०/लूष**

लूषयति वा कर्ममलपनयतीति लूषः । ठा० ४ ठा० १ उ० । उत्त०  
स्नेहपरित्यागे, दश० २ अ० ।  
संयमे, सूय० १ श्रु० ३ अ० २ उ० ।

**लूहचरय- पुं०/रुक्षचरक**

रुक्षं निस्नेहं चरति अभिग्रहविशेषात् । रुक्षमात्रग्राहके भिक्षौ ठा०  
५ ठा० १ उ० । सूय० ।

**लूहजीवि- पुं०/रुक्षजीविन्**

रुक्षेण तैलादिवर्जितेन जीवितुं शीलमस्येति, निस्नेहभोजिनि  
आभिग्रहिके साधौ, ठा० ५ ठा० १ उ०

**लूहवित्ति- पुं०/रुक्षवृत्ति**

वल्लचणकादिभिवर्तनशीले आभिग्रहिके साधौ, दश० ।

**लूहाहार- पुं०/रुक्षाहार**

रुक्षं तैलादिवर्जितम् आहारयति रुक्षो वा आहारो यस्य स  
तथाविधे आभिग्रहिके साधौ, ठा० ५ ठा० १ उ० ।

**लूहिय- न०/रुक्षित**

विरुक्षिते, उव० ।  
निर्जलीकृते, कल्प० १ अधि० ३ ।

**लेख- न०/लेख्य**

द्विधा लिपिविषयभेदात् । सम० ।

**लेखविहाण- न०/लेख्यविधान**

लेख्यविधौ, पत्र० १ पद ।

**लेच्छइ- पुं०/लेच्छकिन्**

क्षत्रियविशेषे, सूय० १ श्रु० १३ अ० ।  
लेच्छकि जातीय कोशलदेशस्य राजसु, । भग० । नाया० । उव० ।

**लेज्ज- त्रि०/लेह्य**

मधुशिखरिणीप्रभृतिषु आस्वाद्यरसेषु, नाया० १ श्रु० १७ अ० ।

**लेट्ट- पुं०/लेष्ट**

प्रस्तरे, पण्हा० ३ अ०  
पाषाणे, कल्प० १ अधि० ६ ।

**लेण- न०/लयन**

स्थाने, वसतिरूपे । दश० ८ अ० ।  
शैलगृहे, प्रश्न ०६ अ० ।  
मयगृहे, पण्हा० ३ अ०  
पर्वत निकुटितगृहे, पण्हा० १ अ०  
गृहे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।  
उत्कीर्णपर्वतगृहे, भग० ५ श० ७ उ० ।  
आश्रये, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।  
गुहायाम्, उत्त० २ अ० । सूय० ।

**लेणजंभय- पुं०/लयनजृम्भक**

जृम्भन्ते विजृम्भन्ते स्वच्छन्द चारितया चेष्टन्ते ये ते जृम्भकाः—  
तिर्यग्लोकवासिनो व्यन्तरदेवाः । भ० ।  
लयनम्-गृहम्, लयनाविभागेन जृम्भको देवः लयन-जृम्भकः ।  
जृम्भकदेवभेदे, भग० १४ श० ८ उ० ।

**लेणभोग- पुं०/लयनभोग**

चित्रशालाद्यावासनवनवाभोगे, उव० ।

**लेणसुहम- न०/लयनसूक्ष्म**

लयनम्-आश्रयः सत्वानाम्, यत्र कीटिकाद्यनेकसूक्ष्मसत्त्वा भवंति  
तल्लयनम् । सूक्ष्मविले, ठा०

**लेच्छारिय- [देशी]**

खरण्टिते, बुह० १ उ० १ ।

**लेप्यकम्म- न०/लेप्यकर्मन्**

लेप्यपरिज्ञानात्मके कलाभेदे, कल्प० १ अधि० ७ ।

**लेप्यकार- पुं०/लेप्यकार**

लेप्यकरणशिल्पिनि, अणुओ० ।

**लेप्यपुत्तलिया- स्त्री०/लेप्यपुत्तलिका**

लेप्यकर्मनिर्मितायां पुत्तलिकायाम्, अणुओ० ।

**लेलु- पुं०/लेष्ट**

लोष्टे, सूय० २ श्रु० १ अ० ।  
कपाले, आचा० १ श्रु० ९ अ० ३ उ० ।  
पृथिवीशकले, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ५ उ०

**लेव- पुं०/लेप**

मृल्लेपनादिश्लेषे, दश० ५ अ० १ उ० ।  
उपचये, उत्त० ८ अ० । बुह० ।

**लेवकण्णिय- पुं०/लेपकल्पिक**

लेपसामाचार्यभिज्ञे, बुह० ।

**लेवण- न०/लेपन**

कुड्यानां कर्दमेन गोयमेन च लेपप्रदाने, बुह० १ उ० २ । निसि० ।  
प्रलेपे, सूय० २ श्रु० १ अ० ।

**लेवमेरा-** स्त्री० [लेपमर्यादा]

नियमितलेपविधाने, दश०५ अ०२ उ० ।

**लेववं-** त्रि० [लेपवत्]

सलेपे, सूय०१ श्रु०२ अ०१ उ० ।

**लेस-** पुं० [श्लेष]

श्लेषणि, विशेषे ।

**लेस-** पुं० [लेश]

कलाद्वयकाले, तं० ।

**लेस-** पुं० [श्लेष]

संश्लेषे, रा० । आचा० ।

मात्रामायाम्, श्लेषद्रव्ये पण्हा० ५ अ० ।

**लेसणता-** स्त्री० [श्लेषण] न० ।

ऊर्वादीनां जानुप्रभृतिभिः संबन्धे पत्र० १६ पद ।

**लेसणा-** स्त्री० [श्लेषणा]

श्लेषद्रव्येण द्रव्ययोः सम्बन्धने, भग० ८ श० ९ उ० । सूय० ।

**लेसणा-** स्त्री० [लेशना]

अङ्गुल्याद्यवयवसंश्लेषरूपायाः स्तम्भने, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ० ।

**लेसणी-** स्त्री० [श्लेषणी]

श्लिष्टताहेतौ विद्याभेदो, नाया० १ श्रु० १६ अ० ।

**लेसा-** स्त्री० [लेश्या]

लिश्यते प्राणी कर्मणा यया सा लेश्या । ठा० १ ठा० । नाया० ।

कृष्णादिद्रव्यसाचिव्यादात्मनः परिणामविशेषे, पत्र० १७ पद ।

ठा० । आव०म० । सम० ।

अध्यवसाये, आचा० १ श्रु० ६ अ० ५ उ० ।

अन्तःकरणवृत्तौ, आचा० १ श्रु० ८ अ० ५ उ० । सूय० ।

**लेस्सापरिणाम-** पुं० [लेश्यापरिणाम]

जीवानां लेश्यापरिणतौ, पत्र० १३ पद । ठा० ।

**लेस्साभिताव-** पुं० [लेश्याभिताप]

तेजसोऽभितापे, भग० ८ श० ८ उ० ।

**लेस्सि-** त्रि० [लेश्यिन्]

लेश्या विद्यते येषां ते लेश्यिनः । लेश्यावति, बुह०१ उ०१ ।

**लेह-** पुं० [लेख]

अक्षरविन्यासे, सम० ७२ । आव०चू० । आव०म० । बुह० । नाया० ।

लिपिपरिज्ञाने, नं० ।

तद्विषये कलाभेदे, जंबू० २ वक्ष० ।

लिख्यते इति लेखः । ग्रन्थे, आव० ३ अ०

**लेस्सागइ-** स्त्री० [लेश्यागति]

तिर्यङ्मनुष्याणां कृष्णादिलेश्या द्रव्याणि संप्राप्य तद्रूपादितया परिणमतीति लेश्यागतिः । गति भेदेः, पत्र० १६ पद ।

**लेस्साणुवायगइ-** स्त्री० [लेश्यानुपातगति]

लेश्याया अनुपातोऽनुसरणं तेन गतिर्लेश्यानुपातगतिः । गतिभेदे, पत्र०१६ पद ।

**लेहना-** स्त्री० ।

आस्वादने, कल्प० १ अधि०१ ।

**लेहणी-** स्त्री० [लेखनी]

लेखनसाधने, कलमे । रा० ।

**लेहसाला-** स्त्री० [लेखशाला]

अक्षरविन्यसनशिक्षणशालायाम्, आव०चू०१ अ० ।

**लेहायरिय-** पुं० [लेखाचार्य]

उपाध्याये, आव०म०१ अ० ।

**लोअ-** पुं० [लोच]

केशानामुत्पाटने, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।

**लोइय-** पुं० [लौकिक]

लोके भवा, लोके वा विदिता इति लौकिका अध्यात्मादित्वा-  
दिकण । सूय०१ श्रु०३ अ०२ उ० ।

इतिहासादिकर्तृषु, दश०४ अ० ।

लोकाचीर्णे, उत्त० । अणुओ० ।

सामान्य लोकाश्रये, ठा० ३ ठा० ३ उ० । सूर० । नं० ।

**लोइयकहा-** स्त्री० [लौकिककथा]

असंविग्नलोकसम्बन्धिन्यां कथायाम्, पण्हा०४ अ० ।

**लोउज्जोय-** पुं० [लोकोद्योत]

लोकप्रकाशे, ठा० ।

**लोउत्तर-** न० [लोकोत्तर]

लोकस्योत्तरम् प्रधानं लोकोत्तरम् । जिनशासने, अणुओ० । निसि०

**लोउत्तरिय-** न० [लोकोत्तरिक]

लोकोत्तरे-जिनप्रवचने भवं लोकोत्तरिकम् । जिनप्रवचनभवे,  
लोकोत्तराणि यानि न लोके प्रसिद्धानि, किंतु-प्रवचन एव कृतानि  
तानि लोकोत्तराणि । शास्त्रप्रसिद्धे, सूर०१० पाहु० । वव० । निसि० ।

**लोक-** पुं० [लोक]

लोक्यत इति लोकः । । आचा० १ श्रु०२ अ०१ उ० ।

लोक्यते दृश्यते केवलज्ञानभास्वतेति लोकः । आव०५ अ० ।

चतुर्दशरज्ज्वात्मके । आचा०१ श्रु० २ अ० १ उ० ।

धर्माधर्मास्तिकायव्यवच्छिन्ने अशेषद्रव्याधारे वैशाखस्थानकटि-  
न्यस्तकरयुग्म पुरुषोपलक्षिते आकाशखण्डे, आचा०१ श्रु०२ अ०१  
पञ्चास्तिकायात्मके, सूय०१ श्रु० १२ अ० ।

लोक्यते प्रमाणेन दृश्यत इति भावः । आव० ६ अ० आचा० ।

विशे० । आव० । सूर० । आव०म० ।

धर्मादीनां वृत्तिर्द्रव्याणां भवति यत्र तत् । आव०५ अ० । अणुओ०

**लोगंत- पुं० [लोकान्त]**

लोकाग्रलक्षणे सिद्धस्थाने, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।  
लोको लोकशास्त्रं तत्कृतत्वात्तदध्येयत्वाच्चाशस्त्रादि तस्मादन्तो  
निर्णयस्तस्य वा परमरहस्यं पर्यन्तो वेति लोकान्तः  
लौकिकसिद्धान्ते, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।  
ईषत्प्राग्भाराख्यायां पृथिव्याम्, आव०म०१ अ० ।

**लोगंतिय- पुं० [लोकान्तिक]**

लोकान्तिकविमानवास्तव्येषु सारस्वतादिकेषु, ठा० ।

**लोगंतियविमान- पुं० [लोकान्तिकविमान]**

लोकस्य ब्रह्मलोकस्यान्ते समीपे भवानि लोकान्तिकानि तानि च  
तानि विमानानि चेति समासः । लोकान्तिका वा देवास्तेषां  
विमानानीति । सारस्वतादिलोकान्तिकदेवावासविमानेषु, भग० ७  
श० ८ उ० ।

**लोगयंधार- पुं० [लोकान्धकार]**

लोके अयमेवान्धकारो नान्योऽस्तीदृश इति लोकान्धकारः ।  
तमस्काये, ठा० ४ ठा० २ उ० ।

**लोगकंत- न० [लोककान्त]**

लान्तककल्पे षष्ठदेवलोकविमाने, सम० १३ सम० । भग० ।

**लोगग- न० [लोकग्र]**

ईषत्प्राग्भाराख्ये । आव० ५ अ० ।  
ऊर्ध्वलोकस्याग्रे । आव०चू० ५ अ० ।  
सिद्धानां स्थाने, उव० ।

**लोगगचूलिया- स्त्री० [लोकग्रचूलिका]**

लोकस्य चतुर्दशरज्ज्वात्मकस्य चूलिका शिखररूपा लोकाग्र-  
चूलिका । ईषत्प्राग्भाराख्यायां पृथिव्याम्, सम० १२ सम० ।

**लोगगपड्ढाण- पुं० [लोकग्रप्रतिष्ठान]**

ईषत्प्राग्भाराख्यपृथिवीस्थिते सिद्धे, उव० ।

**लोगट्टिइ- स्त्री० [लोकस्थिति]**

लोकव्यवस्थायाम्, ठा० ।

**लोगणाभि- पुं० [लोकनाभि]**

लोकस्य तिर्यग्लोकस्य स्थालप्रख्यस्य नाभिरिव स्थालमध्यगत  
समुन्नतं वृत्तचन्द्रक इवेति लोकनाभिः मेरुपर्वते, चंद० ५ पाहु० ।  
सूर० ५ पाहु० ।

**लोगणाह- पुं० [लोकनाथ]**

लोकस्य संज्ञिभ्यलोकस्य नाथः प्रभुर्लोकनाथः । सम० १ । रा० ।  
चतुर्दशरज्जुप्रमाणलोकप्रभौ, उत्त० २२ अ० ।  
भव्यानां नाथे, कल्प० १ अधि० १ ।

**लोकतम- न० [लोकतमस्]**

लोके इदमेव तम इति लोकतमः । तमस्काये, ठा० ४ ठा० २ उ०

**लोगदव्य- न० [लोकद्रव्य]**

लोकस्यांशभूतं द्रव्यं लोकद्रव्यम् । पञ्चास्तिकायादौ, ठा० ५ ठा० ३

**लोकपईव- पुं० [लोकप्रदीप]**

लोकस्य विशिष्टतिर्यग्नन्मजरामरणरूपस्यान्तरतिमिर निकर निरा-  
करणेन प्रकृष्टपदार्थप्रकाशकारित्वात्प्रदीप इव प्रदीप सम० १ ।  
लोकस्य सम्यग् दर्शनादेर्योगकरणेन लब्धस्य परिपालनेनेति ।  
भग० १ श० १ उ० ।

मिथ्यात्वध्वान्तनाशकत्वात् । कल्प० १ अधि० १ ।

लोकस्यदेशनायोग्यस्य विशिष्टस्य प्रदीपदेशनांशुना यथावस्थित  
वस्तुप्रकाशको लोकप्रदीपः । जिने, जीवा० ३ प्रति० ४ ।

**लोगपगत- पुं० [लोकप्रकृत]**

बहुलोकसम्पत्ते, बुह० ३ उ० ।

**लोगपज्जोयगर- पुं० [लोकप्रद्योतकर]**

लोकालोकरूपस्य समस्त वस्तुस्तोमस्य भावस्याखण्ड मार्त्तण्ड-  
मण्डलमिव निखिलभावस्वभावावभासनसमर्थः केवलालोकपूर्व  
प्रवचनप्रभापटल प्रवर्तनेन प्रकाशं करोतीत्येवं शील । सम० १ ।  
लोकस्योत्कृष्टमतेर्भव्यसत्त्वलोकस्य प्रद्योतनं प्रद्योतकत्वं विशिष्टा  
ज्ञानशक्तिस्तत्करणशीलो लोकप्रद्योतकरः । रा० । जीवा० ।  
सूर्यवत्सर्ववस्तुप्रकाशकत्वाद् जिने, कल्प० १ अधि० १ ।

**लोगपरिपूरणा- स्त्री० [लोकपरिपूरणा]**

ईषत्प्राग्भाराख्यायां पृथिव्याम्, सम० १२ सम० ।

**लोगपाल- पुं० [लोकपाल]**

शक्रादीनां पूर्वादिदिक्पालेषु सोमादिषु, ठा० ३ ठा० १ उ० ।

**लोगप्पइअ- पुं० [लोगप्राकृत]**

त्रिजगता अर्चिते, उत्त० २३ अ० ।

**लोगफुड- पुं० [लोकस्पष्ट]**

लोकेन-लोकाकाशेन सकलस्वप्रदेशैः स्पृष्टो लोकस्पष्टः । तथा  
लोकमेव च सकलस्वप्रदेशैः स्पृष्टा तिष्ठति । सकललोकपरिमिते  
आत्मनि, भग० २ श० १० उ० ।

**लोगबिन्दुसार- पुं० [लोकबिन्दुसार]**

अस्मिन् लोके श्रुतलोके बिन्दुरिवाक्षरस्य सर्वोत्तममिति, सर्वाक्षर-  
सन्निपातप्रतिष्ठितत्वेन लोक बिन्दुसारम् । चतुर्दशे पूर्वे, तत्प्रमाण-  
मर्द्धत्रयोदशपदकोट्य इति सम० । न० ।

**लोगमज्झ- पुं० [लोकमध्य]**

लोकस्य तिर्यग्लोकस्य समस्तस्यापि मध्ये वर्तते इति  
लोकमध्यः । मेरुपर्वते, चंद० ४ पाहु० । सूर० ४ पाहु० ।  
संपूर्णगोलकश्च लोकमध्य एव स्यादिति । भग० ११ श० ११ उ० ।  
'जे मंदरस्स पुब्बेण मणुस्सा दाहिणेण अवरेण । जे वावि उत्तरेण,  
सव्वेसिं उत्तरो मेरु' । ॥ ४९ ॥ आचा० १ श्रु० १ अ० १ उ० ।



**लोगमज्झवासिय-** न० [लोकमध्यवासिक]

अभिनयभेदे, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**लोगमज्झावसाणिय-** न० [लोकमध्यावसानिक]

अभिनयभेदे, रा० एतच्च नाट्यकुशललेभ्यो वेदितव्यम् ।  
आव० म० १ अ० ।

एते नाट्यविधयोऽभिनयविधयश्च भरतादिसङ्गीत शास्त्रज्ञेभ्योऽ-  
वसेयाः । जंबू० ५ वक्ष० ।

**लोगमत्थयत्थ-** पुं० [लोकमस्तकस्थ]

त्रैलोक्यपरिवर्तिनि सिद्धे, दश ०४ अ० ।

**लोगरिसि-** पुं० [लोकऋषि]

तापसे, वव० १० उ० ।

**लोगरूढिनिराकय-** पुं० [लोगरूढिनिराकृत]

मिथ्याभेदे, यथा शुचि नरशिरःकपालमिति । ठा० १० ठा० ३ उ०

**लोगवाइ-** त्रि० [लोकवादिन्]

लोकयतीति लोकः प्राणिगणस्तं वदितुं शीलमस्येति । ब्रह्मत्स-  
वादिनि, आचा० १ श्रु० १ अ० १ उ०

**लोगवाय-** पुं० [लोकवाद]

पाखण्डिनां पौराणिकानां वा वादे, सूय०

**लोगविजय-** पुं० [लोकविजय]

भाविलोकरागद्वेषलक्षणस्य विजयो निराकरणं यत्राभिधीयते स  
लोकविजयः । आचाराङ्गद्वितीयाध्ययन, ठा० ९ ठा० ३ उ० । पण्ठा०

**लोगवियस्सि-** त्रि० [लोकविदर्शिन्]

लोकं विषयानुषङ्गावाप्तदुःखातिशयं तथा त्यक्तकामावाप्तप्रशम-  
सुखं विविधं द्रष्टुं शीलमस्येति लोकविदर्शी, अथवा-लोकस्यो-  
र्ध्वाधस्तिर्यग्भागगतिकारणायुष्कसुखदुःखविशेषान् पश्यतीति  
लोकविदर्शी । लोकस्य विशेषतो द्रष्टरि, आचा० १ श्रु० २ अ० ५ उ०

**लोगवित्त-** न० [लोकवृत्त]

आहारभयमैथुनपरिग्रहोत्कटसंज्ञात्मके लोकस्य वृत्ते, आचा० १  
श्रु० ५ अ० २ उ० ।

**लोगविरुद्ध-** न० [लोकविरुद्ध]

जननिन्दे, जीवा० १३ अधि० ।

**लोगसण्णा-** स्त्री० [लोकसंज्ञा]

मतिज्ञानावरणकर्मक्षयोपशमनात् शब्दाद्यर्थगोचरायां सामान्या-  
वबोधक्रियायाम्, पत्र० १० पद ।

लोकसंज्ञास्वच्छन्दघटितविकल्परूपा लौकिकाचरिता, यथा-न  
सन्त्यनपत्यस्य लोकाः, श्वानो-यक्षाः, विप्रादेवाः, काकाः-  
पितामहाः । आचा० १ श्रु० १ अ० १ उ० ।

**लोगसार-** पुं० [लोगसार]

चतुर्दशरज्ज्वात्मकस्य लोकस्य परमार्थे, आचा० १ श्रु० ५ अ० १ उ० ।

**लोगसारत्थ-** पुं० [लोकसारार्थ]

त्रैलोक्यप्रधानविजये, बृह० २ उ० ।

**लोगसिद्धिवासि-** पुं० [लोकसिद्धिवासिन्]

चतुर्दशरज्ज्वात्मके लोकान्ते या सिद्धिः प्रशस्तक्षेत्ररूपा तद्वा-  
सिनः । ईषट्प्राग्भारावासिषु सिद्धेषु, सूय० ।

**लोगसिरी-** स्त्री० [लोकश्री]

स्वनामख्याते ज्योतिष्कग्रन्थे, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**लोगहिय-** पुं० [लोकहित]

लोकस्यैकेन्द्रियादिप्राणिगणस्य हित आत्यन्तिकतद्रक्षाप्रकर्ष प्ररू-  
पणेनानुकूलवृत्तिर्लोकहितः । सम० १ सम० ।

‘लोकहितेभ्यः’ इह लोकशब्देन सकल एव सांव्यवहारिका-  
दिभेदभिन्नः प्राणिवर्गो गृह्यते तस्मै सम्यग्दर्शनप्ररूपण रक्षण-  
योगेन हितो लोकहितः । रा० ।

लोकस्य प्राणिलोकस्य पञ्चास्तिकायात्मकस्य सा हितोपदेशेन  
सम्यक्प्ररूपणतया हितो लोकहितः ।

जीवानां हितकारके दयाप्ररूपके, जीवा० ३ प्रति० ४ । कल्प० ।

जिन, कल्प० १ ।

**लोगायत-** न० [लोकायत]

प्रत्यक्षैकप्रमाणवादिनां जडमात्रपदार्थवादिनां बार्हस्पत्यानां शास्त्रे  
तस्य लोके विस्तीर्णत्वाल्लोकायतं नाम । अणुओ० । दश० ।

**लोगायतिग-** पुं० [लौकायतिक]

चार्वाक बृहस्पतिशिष्ये, सूय० १ श्रु० १ अ० १ उ० ।

**लोगालोगप्पमाण-** न० [लोकालोकप्रमाण]

लोकालोकयोस्तद्व्यक्त्योर्यत्प्रमाणमनन्ताः प्रदेशास्तदेव परिमाण-  
मस्येति लोकालोकप्रमाणः ।

लोकालोकप्रदेशपरिमिते आत्मनि, ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

**लोगालोगपवंच-** पुं० [लोकालोकप्रपञ्च]

लोके चतुर्दशरज्ज्वात्मके आलोको लोकालोकस्तस्य प्रपञ्चः ।  
पर्याप्तापर्याप्तकसुभगादिद्वन्द्वविकल्पे, तद्यथा-

नारको नारकत्वेना- वलोक्यते एकेन्द्रियादिरेकेन्द्रियत्वेन पर्याप्ता-  
पर्याप्तकाद्यपि वाच्यम् । आचा० १ श्रु० ३ अ० ३ उ० ।

**लोगावाई-** त्रि० [लोकापातिन्]

लोकश्चतुर्दशरज्ज्वात्मकः प्राणिगणो वा तत्रापतितुं शीलमस्येति ।  
लोकाकाशमध्यवर्तिनि, आचा० १ श्रु० १ अ० १ उ० ।

**लोगुज्जोय-** पुं० [लोकोद्योत]

लोकप्रकाशे, ठा० ।

**लोगुत्तम-** १ पुं० [लोकोत्तम]

लोको भव्यसत्त्वलोकस्तस्य सकलकल्याणैकनिबन्धनतया भव्य-  
सत्त्वभावेनोत्तमः लोकोत्तमः । जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । रा० ।

**लोगुत्तम-२ पुं० [लोकोत्तम]**

लोकस्योत्तमश्चतुस्त्रिंशत् बुद्धातिशयाद्यसाधारण-गुणोपपेततया सकलसुरासुरखेचरनिकरनमस्यतया च प्रधानो लोकोत्तमः। सम०१ सम०।

लोकस्य भव्यसमूहस्य चतुस्त्रिंशदतिशययुक्तत्वाद्वा लोकोत्तमः, सकलसुरासुरादिवन्द्य मानेषु जिनादिषु, कल्प०१ अधि०१। भग०। लोकश्रेष्ठे, आव०४ अ०। आव०चू०।

**लोगेसणा- स्त्री० [लोकैषणा]**

प्राणिगणस्यैषणा अन्वेषणा। इष्टेषु शब्दादिषु प्रवृत्तौ अनिष्टेषु च हेयबुद्धौ, आचा०१ श्रु०४ अ०१ उ०।

**लोगोवयारविणय- पुं० [लोकोपचारविनय]**

लोकानामुपचारो व्यवहारस्तेन स एव वा विनयो लोकोपचार विनयः।

विनयभेदे, स च सप्तविधः। ठा० ७ ठा० ३ उ०।

**लोट्ट- धा० [स्वप्]**

शयने, असत्योवहतो आमे अचेयणं, तंदुले लोट्टो भण्णति। अशस्त्रोपहते आमे अचेतने तण्डुले, निसि० ४ उ०।

**लोट्टण- न० [लोट्टन]**

अवधावने, वव०१ उ०।

**लोट्टय- पुं० [लोट्टक]**

कुमारावस्थे हस्तिनि, नाया०१ श्रु०१ अ०।

**लोढ- पुं० [लोष्ट]**

शिलापुत्रके, दश० ५ अ०।

**लोण- न० [लवन]**

सामुद्रादिके क्षारे, पन्न०१ पद।

सैन्धवसौवर्चलादिकेषु, आचा०१ श्रु०१ चू०१ अ०१ उ०।

लवणपञ्चकं चेदम्, तद्यथा-सैन्धवं सौवर्चलं विडं रोमं सामुद्रं चैति। सूय० १ श्रु०७ अ०।

**लोणभाव- पुं० [लवणभाव]**

क्षारभावे, आव०३ अ०।

**लोणासायण- न० [लवणास्वादन]**

लवणस्य प्रासनै प्रक्षेपे, 'एगा दत्ती लोणासायणमित्तमवि पडिगाहिया।' कल्प० ३ अधि०८।

**लोटुरली- स्त्री० [लोतुरली]**

वादनार्थे अपर्ववंशखण्डे, नालियत्ति अपव्वा भवति सा पुण लोटुरली भण्णति। निसि०१ उ०।

**लोद्ध- पुं० [लोद्ध]**

वृक्षविशेषे, जीवा०। सम०। नाया०।

तद्वक्षत्वग् रूपे हट्टद्रव्ये, निसि०१ उ०।

**लोभ- पुं० [लोभ]**

लोभनमभिकाङ्क्षणं लुभ्यते अनेनेति वा लोभः। कषायभेदे, ठा० ४ ठा० १ उ०।

**लोभंझाण- न० [लोभध्यान]**

लोभशब्दोक्तसिंहकेसरमुग्धसुव्रतसाधोरिव दुर्ध्यानि, आतु०।

**लोभणिस्सिय- न० [लोभनिश्चित]**

वणिक् प्रभृतीनामन्यथाक्रीतमेवेत्यं क्रीतमित्यादिरूपे मिथ्या-वचने, ठा० १० ठा० ३ उ०।

**लोभदंड- पुं० [लोभदण्ड]**

लोभनिबन्धनप्राणिहिंसायाम्, पण्हा०५ अ०।

**लोभपडिसंलीण- पुं० [लोभप्रतिसंलीन]**

लोभं प्रति उभयनिरोधेनोदयप्राप्तविफलीकरणेन प्रतिसंलीनः लोभप्रतिसंलीनः। प्रतिसंलीनभेदे, ठा० ४ ठा० ४ उ०।

**लोभपिंड- न० [लोभपिण्ड]**

लोभेन पिण्डग्रहणे, पिंड०।

**लोभभय- न० [लोभभय]**

लोभश्च भयं च समाहारद्वन्द्वः, लोभाद्वा भयम्। लोभभयद्वये, लोभरूपे भये च।

लोभभयादतीताः लोभश्च भयं च समाहार-द्वन्द्वः लोभाद्वा भयं तस्मादतीताः। ठा० ७ ठा० ३ उ०।

**लोभवत्तिय- न० [लोभप्रत्ययिक]**

लोभदण्डे लोभप्रत्ययिकाभिधाने द्वादशे क्रियास्थाने, सूय०।

**लोभवत्तियदंड- पुं० [लोभप्रत्ययिकदण्ड]**

लोभप्रत्ययिको दण्ड इति लोभनिमित्ते द्वादशे क्रियास्थाने, सूय० २ श्रु० २ अ०।

**लोभविजय- पुं० [लोभविजय]**

लोभोदयनिरोधे, उत्त०२९ अ०।

**लोभसंज्ञा- स्त्री० [लोभसंज्ञा]**

लोभोदयात्प्रधानभवकारणाभिष्वङ्गपूर्विकासचित्तेतरद्रव्योत्पादन-क्रियैव संज्ञायतेऽनयेति। भग० ७ श० ८ उ०। ठा०।

लोभवेदनीयोदयतो लालसत्त्वेन लोभोदयाल्लोभसत्त्वान्विता सचित्तेतरद्रव्यप्रार्थनैव संज्ञायतेऽनयेति लोभसंज्ञा। ठा० १० ठा० ३ सचित्तेतरद्रव्यप्रार्थनायाम्, पन्न० ८ पद।

**लोभा- स्त्री० [लोभा]**

लोभानुगतायां क्रियायाम्, आव० ३ अ०।

वाराणस्यामुदितोदयराजभार्यायाम्, आव०चू०५ अ०।

**लोभाणु- पुं० [लोभानु]**

लोभलक्षणकषायसूक्ष्मकिट्टिकायाम्, भग० ५ श०७ उ०।

**लोभि- त्रि० [लोभिन्]**

लुब्धे, अणुओ०।

**लोम-न० [लोम]**

लुनाति, निलीयन्ते वा अस्मिन् यूका इति लोमम् कक्षादिजाते केशाकारे रोमाख्ये द्रव्ये, पण्हा०१ अ० ।

**लोमडिया- स्त्री० [लोमडिका]**

शिवायाम्, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**लोमपक्वि- पुं० [लोमपक्षिन्]**

सारसराजहंसकाकबकादिके पक्षिभेदे, सूय० २ श्रु० ३ अ० । ठा० । पत्र० ।

**लोमसिया- स्त्री० [लोमसिका]**

वल्लीभेदे, वव०१ उ० ।

**लोमहृत्- पुं० [लोमहस्त]**

लोममयप्रमार्जनके, उव० ।

**लोमहरिस- पुं० [लोमहर्ष]**

लुनाति निलीयन्ते वा तेषु यूका इति लोमानि तेषां हर्षो लोमहर्षः । रोमाञ्चे, उत्त०५ अ० । नाया० । रोमोद्गमे, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ० ।

**लोमावहार- पुं० [लोमावहार]**

लोमान्यवहरन्ति ये ते लोमावहाराः । लोमकर्तृकेषु, पण्हा०२ अ०

**लोमाहार- पुं० [लोमाहार]**

शरीरपर्याप्त्युत्तरकालं बाह्यया त्वचा लोमभिराहारो लोमाहारः । आहारभेदे, सूय०२ श्रु०३ अ० ।

**लोय- पुं० [लोच]**

हस्तेन केशलुञ्चने, आव०म० ।

**लोयग- न० [लोचक]**

विगुणे अत्रे, यत्पुनरत्रादि स्वभावादेव लुप्तमाहारगुणैरनुपेतं तल्लोचकं नाम । बुह० २ उ० ।

**लोयण- न० [लोचन]**

अवलोकने, दर्शने, नाया० १ श्रु० १ अ० । उत्त०

**लोयणा- स्त्री० [लोचना]**

उज्जयिन्यां देवलासुतराजभार्यायाम्, आव० चू० ४ अ० ।

**लोयबज्ज- त्रि० [लोकबाह्य]**

बहिर्भूते, जनवर्जिते च । पण्हा०३ अ०

**लोयसार- न० [लोकसार]**

लोकप्रधाने, पण्हा०३ अ०

**लोयाणी- स्त्री० [लोकानी]**

वनस्पतिभेदे, पत्र०१ पद ।

**लोयायार- पुं० [लोकाचार]**

प्राण्युपमर्दादिकषायहेतुके कर्मोपादाने, येन पुनः पुनः संसारे जन्म भवति तथाभूतानुष्ठाने, आचा० १ श्रु० ३ अ० १ उ० ।

**लोल- पुं० [लोल]**

चपले, नाया०१ श्रु०१ अ० । ठा० ।

लम्पटे, नाया० १ श्रु० ८ अ० ।

रत्नप्रभायां पृथिव्यां मध्यनरकेन्द्रकात्सीमन्तकात्पूर्वावलिकायां नरकेन्द्रके, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**लोलण- न० [लोलन]**

परतो लोलने, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।

**लोलमज्ज- पुं० [लोलमध्य]**

रत्नप्रभायामुत्तरस्यामावलिकायां नरकेन्द्रके, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**लोलावट्ट- पुं० [लोलावर्त्त]**

रत्नप्रभायां पश्चिमायामावलिकायां नरकेन्द्रके, ठा० ६ ठा० ३ उ०

**लोलावसिट्ट- पुं० [लोलावशिष्ट]**

रत्नप्रभायाः पृथिव्याः दक्षिणायामावलिकायां नरकेन्द्रके, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**लोलिक- न० [लोल्य]**

चाञ्चल्ये, पण्हा०३ अ०

**लोलुय- पुं० [लोलुष]**

लम्पटे, उत्त०२ अ० ।

पिशिते, उत्त०७ अ०

गृद्धौ, सूय०२ श्रु०६ अ० ।

रत्नप्रभायां पूर्वावलिकायां नरकेन्द्रके, ठा०७ठा०३उ० । आव०म०

**लोव- पुं० [लोप]**

अदर्शने, अणुओ० ।

**लोह- पुं० [लोभ]**

द्रव्याद्यभिकाङ्क्षायाम्, उत्त०६ अ० ।

‘एगे लोभे’ ठा० १ ठा० ।

**लोह- न० [लोह]**

अयसि, पण्हा० १ अ०

‘लोहागरधम्ममाणधमधर्मेतिघोसं’ लोहस्येवाकरे ध्मायमानस्या-ग्रिना ताप्यमानस्य धमधमायमानो धमधमेति वर्णव्यक्तिमिवो-त्पादयन् घोषः शब्दो यस्य सः । भग० १५ श० ।

**लोहकडाह- न० [लोहकटाह]**

बृहत्कुण्डिल्ले, अणुओ० ।

भाजनविशेषेभग०८ श०९ उ० ।

**लोहकडाही- स्त्री० [लोहकटाही]**

कवेल्याम्, भग०५ श०७ उ० ।

**लोहगल- न० [लोहगर्गल]**

पुष्कलावतीविजये स्वनामख्याते नगरे, कल्प०१ अधि०७ क्षण । वज्रजङ्घस्य राज्ञः स्वनामख्याते पुरे च । आव०क०१ अ० ।

**लोहजंघ-१** पुं० [लोहजङ्घ]

उज्जयिनीनगरे चण्डप्रद्योतराजदूते, उक्त० ९ अ० ।

**लोहजंघ-२** पुं० [लोहजङ्घ]

‘द्वितीयवासुदेवप्रतिशत्रौ, सम० ।

**लोहज्ज-** पुं० [लोहार्य]

उत्पन्नकेवलज्ञानवीरस्य भिक्षादायके साधौ, आव०म० १ अ० ।

**लोहविलीणतत्त-** त्रि० [लोहविलीनतत्त]

लोहमयस्तद्वत्तत्तम् अतितापविलीनलोहसदृशे, सूय० १ श्रु० ५ अ० २ उ० ।

**लोहागरिय-** पुं० [लोहाकरिक]

लोहाकरोऽस्यास्तीति लोहाकरिकः । लोहखनिस्वामिनि, ओह० ।

**लोहारंबरीस-** पुं० [लोहकाराम्बरीष]

लोहकारभ्राष्ट्रेषु, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**लोहिच्च-** पुं० [लौहित्य]

लोहितर्ष्यपत्ये, जंबू०७ वक्ष० । ठा० ।

भूतदत्ताचार्य्यशिष्ये, नं० ।

**लोहिच्चायन-** न० [लौहित्यायन]

लोहितर्षिगोत्रापत्ये, सूर०१० पाहु० ।

**लोहिणी-** स्त्री० [लोहिनी]

कन्दविशेषे, उक्त० ३६ अ० । भग० ।

बादरवनस्पतिकायभेदे, पत्र० १ पद ।

**लोहिय-** न० [लोहित]

रुधिरे, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।

लोहितं-रुधिरम्, पूयम्-रुधिरमेव पक्वं ते द्वे अपि पक्तुं शीलं यस्यां सा लोहितपूयपाचिनी । सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० । सूय० ।

हिङ्गुलादिवत् लोहितवर्णपरिणते रक्ते, पत्र०१ पद ।

स्वनामख्याते महाग्रहे, एगे लोहिए । ठा० १ ठा० ।

**लोहियकुंथु-** पुं० [लोहितकुन्थु]

आरक्तस्वरूपे कुन्थौ, जीवा०३ प्रति० १ अधि०२ उ० ।

**लोहियक्ख-१** पुं० [लोहिताक्ष]

स्वनामख्याते महाग्रहे, कल्प०१ अधि०६ क्षण ।

‘दो लोहियक्खा ।’ ठा० २ ठा० ३ उ० ।

रत्नविशेषे, रा० । जीवा० । जंबू० । पत्र० । नाया० । सूय० । आव०म० ।

**लोहियक्ख-२** पुं० [लोहिताक्ष]

चमरस्य असुरेन्द्रस्य महिषानीकाधिपतौ, ठा० ५ ठा० १ उ० ।

**लोहियक्ख-३** पुं० [लोहिताक्ष]

शक्रस्य देवेन्द्रस्य अपत्यस्थानीये, भग०३ श०७ उ० ।

**लोहियक्ख-४** पुं० [लोहिताक्ष]

रत्नप्रभायाः पृथिव्याः स्वनामख्याते काण्डे, ठा० १० ठा० ३ उ०

**लोहियक्खूड-** पुं० [लोहिताक्षकूट]

जम्बूद्वीपे द्वीपे गन्धमादने वक्षस्कारपर्वते स्वनामख्याते षष्ठे कूटे, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**लोहियक्खबिंउट्ट-** त्रि० [लोहिताक्षबिम्बोष्ठ]

लोहिताक्षरत्नवत् बिम्बवच्च बिम्बाफलवत् ओष्ठौ येषां ते लोहिताक्षबिम्बोष्ठाः । आरक्तोष्ठेषु, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**लोहियगंगा-** स्त्री० [लोहितगङ्गा]

गोशालकपरिभाषिते परिणामभेदे, भग०१५ श० ।

**लोहियपत्त-** पुं० [लोहितपत्र]

चतुरिन्द्रियजीवभेदे, पत्र० १ पद ।

**लोहियपाणि-** त्रि० [लोहितपाणि]

प्राणिवत्कर्त्तनेन लोहितौ रक्तारक्ततया पाणी हस्तौ यस्य । प्राणिहिंसया लोहितहस्ते, विपा० १ श्रु०२ अ० । नाया० । सूय० ।

**लोहिल्ल-** त्रि० [लोभवत्]

लोभिनि, बुह०१ उ० ।

**लोही-** स्त्री० [लौही]

मण्डकादिपचनिकायाम्, भग०५ श०७ उ० । अणुओ० ।

आयसभाजनविशेषे, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।

कन्दविशेषे, जीवा०१ प्रति० ।

वनस्पतिविशेषे, आचा०१ श्रु०१ अ०५ उ० ।

**ल्हादि-** स्त्री० [ल्हादि]

प्रहत्तौ, वव०१ उ० ।

**ल्हादिजणन-** न० [ल्हादिजनन]

ल्हादेर्जननमुत्पत्तिर्ल्हादिजननम् । प्रमोदोत्पादने, वव०१ उ० । मनःप्रहृत्तिजनके, वव०३ उ० ।

**ल-कारादि शब्द-परिभाषाः समाप्ताः**

## व-कारादि शब्द-परिभाषा:

**व- पुं० [व]**

श्रावके, वपति गुणवत्सप्तक्षेत्रेषु धनबीजानि निक्षिपतीति वा इति व्युत्पत्तेः ।

‘धनानि पात्रेषु वपत्यनारतम्’ इति श्रावक शब्द घटक ‘व’ शब्दार्थनिर्वचनात् । ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**वइ- स्त्री० [वाच्]**

वचने, श्रुते, बुह० ।

**वइ- पुं० [वतिन्]**

हिंसादिविरतत्वात्साधौ, दश०१० अ० । द्वा०

**वइआयार- पुं० [वागाचार]**

वाच्याचारो वागाचारः । वाग्गोचरे, वाग्व्यापारे, आचा० २ श्रु०१ चू०४ अ०१ उ० ।

वइआयाराइं सोच्चा णिसम्म । आचा०२ श्रु०१ चू०४ अ०१ उ० ।

**वइकंत- त्रि० [व्यतिक्रान्त]**

गते, ‘बहुसुहेण भे दिवसो वइकंतो’ आव० ३ अ० । कल्प० ।

**वइक्रम- पुं० [व्यतिक्रम]**

विशेषेणापदभेदकरणतोऽतिक्रमणं व्यतिक्रमः । आतु० ।

प्रमादोद्भवे विपरीतकार्ये, आव० ३ अ० ।

अवश्यं करणीयानां योगानां विराधने, आव०चू० ४ अ० । वव० ।

**वइखलिय- न० [वाग्विखलित]**

वाचि विविधमनेकैः प्रकारेर्लिङ्ग-भेदादिभिस्खलिते, दश०८ अ० ।

**वइगा- स्त्री० [व्रजिका]**

गोकुलिकायाम्, बुह० ३ उ० । निसि० ।

**वइगुण- न० [वैगुण्य]**

विधर्मतायाम्, विपरीतभावे, आव०चू०४अ

**वइगुत्त- त्रि० [वाग्गुप्त]**

वाचि वाचा वा गुप्तो वाग्गुप्तः । मौनव्रतिनि सपर्यालोचितधर्म-सम्बन्धभाषिणि, सूय० १ श्रु० १० अ० । आचा०

**वइगुत्तया- स्त्री० [वाग्गुप्ता]**

वचसोऽशुभपदार्थत्वात् गोपने, उक्त० २९ अ० ।

वाग्गुप्तिमत्तायाम्, उक्त० ।

**वइजोग- पुं० [वाग्योग]**

वाग्विषये योगो वाग्योगः । वाग्निसर्गविषये व्याप्रियमाणे योगे, वाक्परिस्पन्दे, वाग्वीर्ये, विशे० ।

औदारिकवैक्रियाहारकशरीरव्यापाराहतवाग्द्रव्यसमूहसाचिव्या-जीवव्यापारे, ठा० १ ठा० । नं० । दश० । जीत० ।

**वइणी- त्रि० [वक्त्र]**

कथयितरि, ‘मुसं वइता भवइ ।’ ठा० ३ ठा० १ उ० ।

**वइतुलिय- पुं० [वैतुलिक]**

विगतास्तुल्यभावे वैतुलिकाः । नास्तित्वादिषु, निसि० ११ उ० ।

**वइतेण- पुं० [वाक्स्तेन]**

धर्मकथिकादितुल्यरूपे वाक्चौरे, दश०५ अ० ।

**वइत्ता- अव्य० [उदित्वा / उक्त्वा]**

कथयित्वेत्यर्थे, ठा० ३ ठा० १ उ० । भग० ।

**वइदंड- पुं० [वाग्दण्ड]**

सावद्यभाषायाम्, आव०चू० ।

**वइदिस- न० [वैदिश]**

विदिशाया अदूरभवे नगरे, वैदिशनगरासन्ने गोचरग्रामे धूर्तः कोलिकः । बुह० ६ उ० । आव०म० ।

**वइदुक्कडा- स्त्री० [वाग्दुष्कृता]**

असभ्यपरुषादिवचनानिमित्तायां भा-षायाम्, भग०२ अधि० ।

**वइदुहिया- स्त्री० [वाग्दुःखिता]**

वचसो वचसा वा दुःखकारित्वे, द्रोहकत्वे च । ठा० ७ ठा० ३ उ०

**वइधम्म- न० [वैधर्म्य]**

विधर्मतायाम्, विपरीतभावे च । आव०चू० ४ अ० ।

**वइपाडव- न० [वाक्पाटव]**

वाग्विषयकपटुतायाम्, कल्प० १ अधि० ७ ।

**वइप्पओग- पुं० [वाक्प्रयोग]**

प्रयुज्यन्त इति प्रयोगाः व्यापारा धर्म कथाः प्रवन्धा वा । वाग्व्यापारेषु, सूय० १ श्रु० १३ अ० ।

**वइप्पओगपरिणय- त्रि० [वाक्प्रयोगपरिणत]**

भाषाद्रव्यं काययोगेन गृहीत्वा वाग्योगेन निसृज्यमाने, भग० ८ श० १ उ० ।

**वइमय- न० [वाङ्मय]**

स्वरादिवागात्मके, दश०९ अ० ।

**वइयव्व- न० [व्रजितव्य]**

आगन्तव्ये, बुह०१ उ०२ ।

**वइर- न० [वज्र]**

हीरके, अणुओ० । सूय० । ठा० । पन्न० । जीवा० । आव०म० । रा० । संथा० ।

आर्यवज्रनाम्ना प्रसिद्धे दशपूर्विणि स्थविरेन्द्रे, नं० ।

शरीरावयवकीलिकायाम्, जीवा० १ । ठा० ।

**वइर- न० [वैर]**

शत्रुतायाम्, ‘हत्थिसीसयं नगरं तत्थ दमदंतो नाम राया, इतो य पंचपंडवाणं परोप्परं वइरं ।’ आव०म० १ अ० । महानि० ।

अतीतायां त्रयोविंशतितमायां चतुर्विंशतिकायां जाते पञ्चशत-गच्छाधिपतौ, महानि० ४ अ० ।



**वइरउसभनारायसंघयण-** न० [वज्रऋषभनाराचसंहनन]

वज्रं कीलिका ऋषभः-परिवेषणपट्टः नाराचम् उभयतो मर्कट-  
बन्धः ततश्च द्वयोरश्वोरुभयतो मर्कटबन्धेन बद्धयोः पदाकृति-  
ङ्गच्छता तृतीयेनास्थापरिवेष्टितयोरुपरितदस्थित्रयभेदकीलिकाख्यं  
वज्रनामकमस्थि यत्र भवति तद् वज्रर्षभनाराचसंहननम् । प्रथम-  
संहनने, जीवा० १ प्रति० । कल्प० । पं० सं० । ठा० । तं० ।  
वज्रर्षभनाराचसंहननं येषां ते वज्रर्षभनाराचसंहनिनः । प्रथम-  
संहननिनि, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**वइरकंड-** न० [वज्रकाण्ड]

रत्नप्रभायाः पृथिव्याः वज्ररत्नमये काण्डे ठा० १ ठा० ३ उ० ।

**वइरकंत-** न० [वज्रकान्त]

षष्ठदेवलोकीये विमानभेदे, सम० १३ सम

**वइरकंद-** पुं० [वज्रकन्द]

कन्दभेदे, दश० ३ अ० । जीवा० ।

**वइरकूड-** न० [वैरकूट]

मन्दरपर्वतस्य नन्दनस्य वलाहकाया देव्या आवासभूते कूटे, ठा०  
९ ठा० ३ उ० ।

**वइरजंघ-** पुं० [वज्रजङ्घ]

श्रीऋषभस्वामिनः पूर्वविदेहे पुष्कलावती विजय लोहार्गलनगरे  
जाते पूर्वभवजीवे, आव० म० १ अ० । कल्प० ।

**वइरणाभ-** त्रि० [वज्रनाभ]

वज्रमयी नाभिर्यस्य सः । मध्ये वज्ररत्नमये, जीवा० ३ प्रति० ४  
अधि० । रा० ।

**वइरणाभ-** पुं० [वैरनाभ]

स्वनामख्याते राजनि, आव० १ अ० ।

ऋषभस्वामिनः पूर्वभवीये जम्बूद्वीपस्य पूर्वविदेहे पुष्कलावती  
विजये पुण्डरीकिण्यां नगर्यां वज्रसेनस्य केवलिनः पुत्रे चक्रवर्तितां  
प्राप्त जीव, कल्प० । आव० म० । आव० चू० ।

**वइरतुंड-** त्रि० [वज्रतुण्ड]

वज्रवतीक्षणतुण्डे, कल्प० १ अधि० ६

**वइरदंड-** पुं० [वज्रदण्ड]

वज्ररत्नमये रूप्यपट्टमध्यवर्तिनि दण्डे, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**वइरपडिरूव-** त्रि० [वज्रप्रतिरूप]

वज्रसदृशे, भग० ७ श० ९ उ० ।

**वइरपाणि-** पुं० [वज्रपाणि]

वज्रं पाणौ अस्य वज्रपाणिः । जीवा० ४ प्रति० २ उ० ।

करधृतवज्रे, कल्प० १ अधि० १ क्षण ।

**वइरभूड-** स्त्री० [वज्रभूति]

भरुकच्छनगरे नरवाहननृपसमये एकदा समवसूतआचार्य, वव० ३

उ० ।

**वइरभूमि-** स्त्री० [वज्रभूमि] अङ्गदेशीये नगरीभेदे, यत्र श्रीवीरो नवमं  
वर्षारात्रं कृतवान् । कल्प० १ अधि० ६ क्षण ।

**वइरमज्झचंदपडिमा-** स्त्री० [वज्रमध्यचन्द्रप्रतिमा]

वज्रेणोपमा चन्द्रेण च । वज्रस्येव मध्यं यस्याः सा वज्रमध्या ।  
चन्द्राकारा प्रतिमा चन्द्रप्रतिमा । प्रतिमाभेदे, यस्या हि कृष्ण प्रति-  
पदि पञ्चदश कवलान् भुक्त्वा ततः प्रतिदिनमेकहान्या अमावा-  
स्यायामेकं शुक्लप्रतिपदि अप्येकमेव ततः पुनरेकैकवृद्ध्या पौर्ण-  
मास्यां पञ्चदश भुङ्क्ते, सा तनुमध्यत्वाद् वज्रमध्या । ठा० २ ठा० २

**वइररयण-** न० [वज्ररत्न]

वज्राभिधानरत्ने, भग० १५ श० ।

**वइरसामि-** पुं० [वैरस्वामिन्]

आर्यवज्रेति प्रसिद्धे, सिंहगिरिशिष्ये, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

आर्यसमितसूरिमातुले, कल्प० २ अधि० ८ ।

**वइरसूरि-** पुं० [वज्रसूरि]

दशपूर्विणि स्वनामख्याते आचार्ये, कल्प० २ अधि० ८ क्षण० ।

**वइरसेण-** पुं० [वैरसेन]

ऋषभदेवपूर्वभवजीवे वज्रनाभपितरि, स च पूर्वविदेहे पुण्डरी-  
किण्यां नगर्यां राजा भूत्वा प्रव्रजितस्तीर्थकरः सञ्जातः । आव० ।  
आव० म० । आव० चू० ।

आर्यवज्रसूरिशिष्ये, गच्छा० ३ अधि० ।

**वइरागर-** पुं० [वज्राकर]

वज्रानि रत्नानि तेषामाकरो वज्राकरः । वज्राख्यरत्नोत्पत्तिस्थाने,  
उव० । निसि० ।

**वइराड-** न० [वैराट]

मत्स्यदेशराजधान्याम्, पत्र० १ पद । सूय० ।

**वइरामय-** त्रि० [वज्रमय]

वज्ररत्नमये, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । भग० । उव० ।

‘वइरामया संधी’ । जंबू० १ वक्ष० । पण्हा० । रा० ।

**वइरामयपासाणा-** स्त्री० [वज्रमयपाषाणा]

वज्रमयाः पाषाणाः यासान्ता वज्रमयपाषाणाः ।

वज्रमयपाषाणै रचिततटिकायां नद्याम्, । जीवा० ३ प्रति० ४  
अधि० । रा० ।

**वइरित्त-** त्रि० [व्यतिरिक्त]

तदस्यस्मिन्, आव० म० १ अ० ।

वइरित्तो नाम जहाभिहियकालाओ अन्नो अकालो भवति । निसि०  
१ उ० ।

**वइरेय-** पुं० [व्यतिरेक]

साध्याभावे साधनाभावरूपे, विशे० ।

**वइरोयण-** पुं० [वैरोचन]

विविधै रोचन्ते दीप्यन्ते इति विरोचनास्त एव । ठा० ४ ठा० १ उ०  
दाक्षिणात्यासुरकुमारेभ्यः सकाशाद् विशिष्टं रोचनं दीपनं येषा-  
मस्ति ते वैरोचनाः । औदीच्यासुरकुमारेषु, भग० ३ श० १ उ० । पन्न०  
अग्रौ, सूय० १ श्रु० ६ अ० ।  
कृष्णराज्यवकाशान्तरगे वह्निनामकदेवावासभूते, ठा० ८ ठा० ३  
उ० । भग० ।

**वइरोयणिद-** पुं० [वैरोचनेन्द्र]

वैरोचना औदीच्यासुरास्तेषु मध्ये इन्द्रः परमेश्वरो वैरोचनेन्द्रः ।  
बलौ, प्रा० । भग० ।  
वैरोचनोऽग्निः स एव प्रज्वलितत्वात् इन्द्रः । विभावसौ, सूय० १  
श्रु० ६ अ० ।

**वइवाय-** पुं० [व्यतीपात]

रविशशितप्रयुक्तयोगभेदे, ज्यो० ।

**वइवीरिय-** न० [वावीर्य]

वीरिय शब्दे वक्ष्यमाणस्वरूपे वाग्विषयके प्रकर्षे, सूय० १ श्रु० ८ अ०

**वइसमाहारणा-** स्त्री० [वचःसमाधारणा]

वचनस्य शुभकार्ये स्थापने उक्त० ।

**वइसाह-** पुं० [वैशाख]

विशाखानक्षत्रयुतपौर्णमासीपर्यन्ते मासभेदे, सम० २९ सम० ।  
योधस्थानभेदे, आचा० १ श्रु० २ अ० १ उ० । आव० म० ।

**वइसाही-** स्त्री० [वैशाखी]

वैशाखमासभाविन्याममायाम्, पूर्णिमायां च । जंबू० ७ वक्ष० ।

**वइसुहया-** स्त्री० [वचःशुभता]

वचसः शुभभावे, तस्याः सातानुभावकारणत्वात् । सातानुभव-  
भेदे, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**वइसेसिय-** पुं० [वैशेषिक]

विशेषाख्यातिरिक्तपदार्थाभ्युपगन्तरि कणादशिष्ये,  
वैशेषिकाणां शास्त्रं कणादमुनिना द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेष सम-  
वायाः षट्पदार्था इति, षट्पदार्थानङ्गीकृत्य प्रपञ्चितम् । सूय० १  
श्रु० १ अ० १  
अत्र पदार्थविभागव्यवस्थानुपपन्नेत्याहनापि वैशेषिकोक्तं तत्त्वम्-  
इति, तथाहि-द्रव्य-गुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाभावास्तत्त्वम् ।  
सूय० १ श्रु० १२ अ० ।

**वउ-** न० [वपुष्]

शरीरे, विशे० । अणुओ० ।

**वउल-** पुं० [वकुल]

मुकुलश्रीनामके वनस्पतिभेदे, विशे० । सम० ।  
केसरे, पन्न० १ पद । कल्प० ।

**वउस-** त्रि० [वकुश]

शवले, कर्बुरे, भग० २५ श० ६ उ० ।  
वकुशसंयमयोगाद् वकुशः । भग० २५ श० ६ उ० ।  
शरीरोपकरणविभूषादिना शवलचारित्रपटे, ठा० ३ ठा० २ उ० ।  
निर्ग्रन्थभेदे, भग० ।

**वउसत्तण-** न० [वकुशत्व]

शरीरोपकरणविभूषाकरणे, वव० ३ उ०

**वओगय-** न० [वागत]

वचनगते, 'वयणविभक्तीकुसलो, वओगयं बहुविहं विआणंतो ।'  
दश० ७ अ० ।

**वंक-** त्रि० [वक्र]

कुटिले, ठा० ४ ठा० १ उ० ।  
अन्तर्मायिकत्वे, नाया० १ श्रु० ८ अ० । महानि० । उव० । रा० । ठा०  
असंयमे, आचा० १ श्रु० ४ अ० २ उ० ।

**वंकगइ-** स्त्री० [वक्रगति]

वक्रा चासौ गतिः । गतिभेदे, वंक्वलीविगयभेसणमुहा वक्रं  
पाठान्तरेण व्यङ्ग्यम् सलाञ्छनं वलिभिर्विकृतं बीभत्सं भेषणं  
भयजनकं मुखं येषां ते तथा । बुह० १ उ० ३ ।

**वंकजड-** पुं० [वक्रजड]

वक्रश्चासौ जडश्च वक्रजडः । कुटिलप्राज्ञे, वीरतीर्थे हि साधवो  
वक्रजडाः । कल्प० ।

**वंकण्या-** स्त्री० [वङ्कनता]

वक्रीकरणे, ठा० २ ठा० १ उ० ।

**वंकसमायार-** त्रि० [वक्रसमाचार]

वक्रः समाचारो यस्य स तथा । असंयमानुष्ठायिनि, आचा० १ श्रु०  
१ अ० ५ उ० ।  
मायाविनि, आचा० १ श्रु० ५ अ० ३ उ० ।

**वंकाणिकेय-** पुं० [वक्रानिकेत]

असंयमाश्रये, इच्छा पणीया वंकाणिकेया । आचा० १ श्रु० ४ अ० २

**वंग-** पुं० [वङ्ग]

ऋषभदेवस्य त्रयोविंशे पुत्रे, कल्प० १ अधि० ७ क्षण ।  
तच्छासिते देशविशेषे, यत्र ताम्रलिप्ती राजधान्यासीत् । पन्न० १  
पद । कल्प० ।

**वंग-** त्रि० [व्यङ्ग]

विगताङ्गे, क्षतिग्रस्ते, पण्हा० ।

**वंगण-** न० [व्यङ्गन]

क्षते, कल्प० १ अधि० ७ क्षण । वव० ।

**वंगिय-** त्रि० [व्यङ्गित]

जुङ्गिताङ्गे, ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

**वंचइत्ता- स्त्री० [वञ्चयित्वा]**

प्रभूतं त्याजयित्वाऽल्पं ग्राहयित्वेत्यर्थे, सूय० १ श्रु०५ अ०१ उ० ।

**वंचण- न० [वञ्चन]**

प्रतारणे, सूय०२ श्रु०२ अ० । नाया० । दशा० ।

भ्रंशने, सूय०१ श्रु०१३ अ० । रा० ।

**वंचणया- स्त्री० [वञ्चनता]**

प्रतारणतायाम्, उव० । पण्हा० । सम० । उपघाते, विशेष० ।

**वंच- त्रि० [वञ्च]**

वन्दनार्हे, आव० ।

**वंचग- त्रि० [व्यञ्जक]**

प्रकाशके, विशेष० ।

**वंचण- न० [व्यञ्जन]**

व्यज्यतेऽनेनार्थः प्रदीपेन घट इवेति व्यञ्जनम् विशेष० ।  
ककाराद्यक्षरे, अणुओ० । न० ।

घटादौ वाचकशब्दे, विशेष० । अणुओ० । आव० । आचा० ।  
निसि० । पत्र० । आव०म० ।

पदे, तस्यार्थाभिधायकत्वात् । बुह०४ उ० । आव०म०  
सूत्रे, सुतं कम्हा वंचणं भण्णति ? उच्यते-वंचजति तिव्यक्तं करोति  
जहोदणरसो वंचणसंयोगाद् व्यक्तो भवति एवं सुत्ता अत्यो वत्तो  
भवति त्ति वंचणं सुतं । निसि० १ उ० ।

पुद्गले, तेषां क्षेत्राभिव्यञ्जकत्वात् । आव०म० १ अ० ।  
उपकरणेन्द्रियस्य शब्दादिपरिणतद्रव्याणां च परस्परं संपर्के,  
आव०म० १ अ० । न० । ठा० ।

वटिकाभर्जिकापत्रशाकतीमनतक्रसूपादिकशालनक, ठा०३ ठा०  
रसाभिव्यञ्जकत्वात्तेषाम् । चंद० २० पाहु० । भग० । पिंड० । बुह० ।  
मषतिलकादिके शरीरे शुभाशुभसूचके चिह्ने, अणुओ० । विशेष० ।  
ठा० । नाया० ।

सहजे, जन्मना सहैव जाते शरीरे चिह्ने, भग० २ श० १ उ० ।  
कल्प० । सम० । नि० ।

वंचणभेयं-मषतिलगादी, सह जायं लक्खणं, पच्छा जायं  
वंचणं । निसि० १७ उ० । भग० । आव० । रा० । विपा० । नि० ।  
आव०चू० ।

मषादिव्यञ्जनफलोपदेशके शास्त्रे, सम०२९ सम० । पण्हा० । दशा०  
वस्तिकूर्चकक्षादिरोमणि, कल्प०३ अधि०९ क्षण० ।

उपस्थरोमणि, वव०१ उ० ।

**वंचणअत्थतदुभयभेद- पुं० [व्यञ्जनार्थतदुभयभेद]**

व्यञ्जनार्थतदुभयान्याश्रित्य भेदरूपे दर्शनातिचारे, दश० ।

**वंचणक्खर- न० [व्यञ्जनाक्षर]**

शब्दरूपे अक्षरश्रुतविशेषे, विशेष० ।

**वंचणभेय- पुं० [व्यञ्जनभेद]**

व्यञ्जनमाश्रित्य भेदरूपे ज्ञानाचारे, गच्छा० १ । दश० । वव० ।

**वंचणाऽवग्रह- पुं० [व्यञ्जनावग्रह]**

व्यज्यतेऽनेनार्थः । प्रदीपेनेव घट इति व्यञ्जनम् । तच्चोपकरणेन्द्रि-  
यस्य श्रोत्रादेः शब्दादिपरिणतद्रव्याणां च परस्परं सम्बन्धः,  
सम्बन्धे हि सति सोऽर्थः शब्दादिरूपः श्रोत्रादीन्द्रियेण व्यञ्जयितुं  
शक्यते, नान्यथा । ततः सम्बन्धो व्यञ्जनं च । तथा व्यञ्जनेन-  
संबन्धेनावग्रहणं सम्बन्ध्यमानस्य शब्दादिरूपस्यार्थस्याव्यक्तरूपः  
परिच्छेदो व्यञ्जनावग्रहः, अथवा-व्यज्यन्ते इति व्यञ्जनानि  
व्यञ्जनानां शब्दादिरूपतया परिणतानां द्रव्याणाम्-उपकरणेन्द्रिय  
संप्राप्तानामवग्रहः-अव्यक्तरूपः परिच्छेदो व्यञ्जनावग्रहः, अथवा  
-व्यज्यतेऽनेनार्थः प्रदीपेनेव घट इति व्यञ्जनम् उपकरणेन्द्रियं तेन  
स्वसम्बद्धस्यार्थस्य शब्दादेरवग्रहणम्-अव्यक्तरूपः परिच्छेदो  
व्यञ्जनावग्रहः । न० ।

ततश्च व्यञ्जनेनोपकरणेन्द्रिये । आव०म० ।

**वंचिय- त्रि० [व्यञ्जित]**

व्यक्तीकृते, गच्छा० ३ अधि० ।

‘यथा व्यञ्जिताव्यक्तीकृता यथा गङ्गेत्यादि ।’ गच्छा० ३ अधि० ।

**वंचुल- पुं० [वञ्जुल]**

वेतसे, दश० २ अ० । विशेष० । ठा० ।

लोमपक्षिविशेषे, स्त्री० । जीवा० १ प्रति० । पत्र० ।

**वंचग- पुं० [वण्टक]**

विभागे, निसि०१९ उ० ।

**वंच- न० [वान्त]**

वमने, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

कर्मणिक्तः परित्यक्ते, दश० ।

**वंचा- अव्य० [वान्त्वा]**

उद्गीर्येत्यर्थे, । आचा०१ श्रु०२ अ०६ उ० । सूय० ।

**वंचा- त्रि० [वमि]**

उद्गारके, ‘से वंचा कोहं च माणं च’ । सूय० ।

वमिता, यो हि यथोक्तसंयमानुष्ठायी सोऽचिरात्क्रोधं वमिष्य-  
त्येवमुत्तरत्रापि । आचा० १ श्रु० ३ अ०४ उ० ।

**वंचपडिआयाण- न० [वान्तप्रत्यादान]**

भुक्तवोज्झितपरिभोगे, दश०

**वंचासव- पुं० [वान्ताश्रव]**

वान्तं वमनं तदाश्रवन्तीति, वान्ताश्रवाः । नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**वंचण-१ न० [वन्दन]**

वाचा स्तुतौ, नाया०१ श्रु०१ अ० । ठा० । आचा० । उत्त० । संथा० ।  
कायेनाभिवादने, वाचा स्तवने, आव०चू०१ अ० ।

**वंदण-२ न० [वन्दन]**

विधिना कायवाङ्मनःप्रणिधाने । दश० । जीवा० । संथा० । सूय० ।  
शिरसाऽभिवादाने । आव० । आव०म० । आव०चू० ।  
द्वादशावर्त्तादिना । ठा० ४ ठा० १ उ० ।  
प्रशस्तकायवाङ्मनः प्रवृत्तौ, आव० ५ अ० ।  
ततश्च वन्द्यते स्तूयतेऽनेन प्रशस्तमनोवाक्कायव्यापारजालेनेति  
वन्दनम् । आव० ३ अ० ।

**वंदणकलस- पुं० [वन्दनकलश]**

माङ्गल्यघटे, नाया० १ श्रु० १ अ० । आव०म० ।

**वंदणग- न० [वन्दनक]**

वन्द्यन्ते पूज्या गुरवोऽनेनेति वन्दनं तदेव वन्दनकम् । आचार्या-  
दिप्रतिपत्तौ, वन्दनकमपि षण्णामावश्यकानामन्यतमं साधोरव-  
श्यकार्यम् श्रावकस्यापि कर्तव्यम् । गुणवत्पतिपत्तिरूपत्वात् ।  
तस्य गुणवत्प्रतिपत्तेश्च श्रावकस्यापयविरुद्धत्वात् । आव०म० ।  
गुणवत्प्रतिपत्तिप्रधाने अध्ययनविशेषे, । आव०चू० । आव० ।

**वंदणघड- पुं० [वन्दनघट]**

वन्दनकलशे, आव०म० १ अ० ।

**वंदणवत्तिा- स्त्री०न० [वन्दनप्रत्यय]**

वन्दनं प्रशस्तमनोवाक्कायप्रवृत्तिस्तत्प्रत्ययंतन्निमित्तम् ।  
वन्दनार्थे, यादृक् वन्दनात् पुण्यं स्यात्तादृकायोत्सर्गः कार्यः ।  
उव० । रा० । दश०

**वंदणिज्ज- त्रि० [वन्दनीय]**

वन्द्यन्ते स्तूयन्तेऽभिवाद्यन्ते च भक्तिभरनिर्भरान्तःकरणैः सुरासुर  
नरनायकगणैर्ये ते वन्दनीयाः । स्तुत्येषु, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।  
उव० । उवा० ।  
स्तोतव्ये, तं० ।  
त्रिविधयोगेन सम्यक्स्तुते, कल्प० । आव० । नाया० । म० ।

**वंदणीओदय- न० [वन्दनीयोदक]**

आचमनोदकप्रवाहभूमौ, आचा० १ श्रु० १ चू० १ अ० ६ उ० ।

**वंदि- त्रि० [वन्दिन्]**

स्तुतिपाठोपजीविनि, सूय० १ श्रु० १ ७ अ० ।

**वंदिऊण- अव्य० [वन्दित्वा]**

नमस्कृत्येत्यर्थे, चंद० १ पाहु० ।

**वंदित्तए- अव्य० [वन्दितुम्]**

अभिवादनं कर्तुमित्यर्थे, । उवा० । ठा० । रा० ।

**वंदित्तु- अव्य० [वन्दित्वा]**

अभिवाद्य स्तुत्वा चेत्यर्थे, ओह० ।

**वंदिम- त्रि० [वन्द्य]**

वन्दनीये, यदा वन्द्यो भवति श्रमणपर्यायस्थ नरेन्द्रादीनाम् । दश०

**वंदिय- त्रि० [वन्दित]**

गुणस्तुतिकरणेन नमनीये, कल्प० १ अधि० ३ क्षण० ।

**वंफ- धा० [काङ्क्ष]**

गार्ध्ये, नाभिलषेत् । सूय० १ श्रु० १ अ० ।

**वंस- पुं० [वंश]**

परम्परयोत्पत्तिप्रवाहे, विशेष० । आव०म० । पन्न० ।  
क्रमभाविपूर्वपुरुषप्रवाहे, नं० ।  
पुत्रपौत्रादिपरम्परायाम्, ठा० १० ठा० ३ उ० ।  
अन्वये, संथा० । सन्ताने, ठा० ९ ठा० ३ उ०  
हरिवंशादिके, नाया० १ श्रु० १ ६ अ० ।  
वेणौ, नाया० १ श्रु० १ ७ अ० । पन्न० । उव० । आचा० ।  
छित्तराधारभृते, भग० ८ श० ६ उ० ।  
महति षष्ठवंशे, रा० ।  
'जोई रसमया वंसकवेल्लुका य' जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । रा० ।  
वाद्यभेदे, नं० । आचा० । पण्हा० ।  
'अट्टसयं वंसाणं अट्टसयं वंसवायगाणं' । रा० ।

**वंसकरिल्लय- न० [वंशकरीलक]**

कोमलाभिनववंशावयवविशेषे, रा० ।

**वंसकवेल्लुय- न० [वंशकवेल्लुक]**

उभयतस्तिर्यक्स्थाप्यमाने वंशे, रा० । जीवा० ।

**वंसग- पुं० [वंशक]**

व्यंसयति परं व्यामोहयति शकटतित्तिरीग्राहकधूर्तवद् थः स  
व्यंसकः । दुर्हेतुभेदे, ठा० ।

**वंसग- पुं० [वंशक]**

दण्डके, दण्डकाकुट्टणे, जंबू० ।

**वंसा- स्त्री० [वंशा]**

शर्कराप्रभायां नरकपृथिव्याम्, तृतीयनरकपृथिवी हि गोत्रेण  
शर्करप्रभा नाम्ना वंशा । जीवा० ३ प्रति० १ अधि० १ उ० । ठा०

**वंसालय- पुं० [वंशालय]**

वैताढ्यनगे उत्तरश्रेण्यां स्वनामख्याते नगरे, कल्प० १ अधि० ७ ।  
आव०चू० ।

**वंसिअ- त्रि० [त्यंसित]**

छुलिते, अनर्थप्राप्ते, नाया० १ श्रु० १ ३ अ० ।

**वंसी- स्त्री० [वंशी]**

मुरलिकाख्ये वाद्यभेदे, बुह० २ उ० ।

**वंसी- स्त्री० [वांशी]**

वंशकरीलनिष्पन्ने सुराभेदे, बुह० २ उ० । आव० म० । उव० ।

**वंसीकलंका- स्त्री० [वंशीकलङ्का]**

वंशजालमय्यां वृत्त्याम्, नाया० १ श्रु० १ ८ अ० । नि० । आव०चू० ।

**वंसीणहिया-** स्त्री० [वंशीनखिका]

कुहणाख्यवनस्पतिभेदे, पत्र० १ पद ।

**वंसीपत्तिया-** स्त्री० [वंशीपत्रिका]

वंश्या वंशजात्याः पत्रकमिव या सा वंशीपत्रिका । योनिभेदे, ठा० ३ ठा० १ उ० ।

**वंसीपासाय-** पुं० [वंशीप्रासाद]

वंशगहनं तदुपलक्षितं प्रासादं वंशी प्रासादम् । सन्निवेश, यतः प्रचलितस्य ब्रह्मदत्तचक्रिणः समकटकान्तरवर्तिन्यामटव्यां तृड-तिशयः संजातः । उक्त० १३ अ०

**वंसीमुहा-** स्त्री० [वंशीमुखा]

द्वीन्द्रियजीवविशेषे, जीवा० १ प्रति० । पत्र० ।

**वंसीमूल-** न० [वंशीमूल]

गृहाद् बहिः स्थिते अलन्दकादिके, बुह० २ उ० । ठा० ।

**वकुल-** पुं० [वकुल]

केसरे, यः स्त्रीमुखसीधुसित्तो विकसति० । जंबू० ३ वक्ष० ।

**वकुस-** पुं० [वकुश]

शबलचारित्रे निर्गन्धे, ठा० ५ ठा० ३ उ० । उक्त० ।

**वक्क-** न० [वाक्य]

वचने, दश० ।

**वक्क-** पुं० [वल्क]

त्वचि, ठा० १० ठा० ३ उ० । आचा० ।

**वक्क-** त्रि० [वक्र]

कुटिले, आव०क०१ अ० ।

**वक्कंत-** त्रि० [व्युत्क्रान्त]

उत्पन्ने, कल्प०१ अधि०१ क्षण० । नाया० ।

**वक्कंति-** स्त्री० [व्युत्क्रान्ति]

उत्पत्तौ, स्थानात्प्राप्तस्योत्पादे, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

निष्क्रमणे, पत्र० १ पद । ठा० ।

प्रज्ञापनायाः षष्ठे पदे, व्युत्क्रान्तिलक्षणाधिकारयुक्तत्वात्तस्य ।

पत्र० १ पद । ठा० । भग० ।

**वक्ककर-** पुं० [वाक्यकर]

गुरुनिर्देशकरणशीले, दश०९ अ० ३ उ० ।

**वक्ककर-** पुं० [वल्ककर]

चर्मकारे, आव०४ अ० ।

**वक्कगय-** न० [वाक्यगत]

वाक्ये वचनरचनात्मनि गतं वाक्यगतम् । उक्त० १ अ० ।

वाक्यविषये, उक्त०१ अ० ।

**वक्कबंध-** पुं० [वल्कबन्ध]

शणप्रभृतिवल्कलबन्धने, विपा० १ श्रु० ८ अ० ।

**वक्कभेय-** पुं० [वाक्यभेद]

मुख्यविशेषताद्वयप्रयोजके वाक्यस्य तन्त्रेणावृत्त्या वा कल्पिते खण्डद्वये, आचा० १ श्रु० १ अ० ५ उ० ।

**वक्कमाण-** त्रि० [व्युत्क्रामत्]

उत्पद्यमाने, नाया० १ श्रु० ।

**वक्कय-** न० [वल्कज]

शणप्रभृतिके, वल्कजाते, आव०म० १ अ० ।

**वक्कल-** न० [वल्कल]

ऋषीणामुपकरणभेदे, भग०११ श०९ उ० । सूय० ।

‘ताव सखं विउव्वित्ता वक्कलं नियत्था ।’ आव०म० १ अ० ।

वर्धे, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।

**वक्कलचीरि-** पुं० [वल्कलचीरिण]

वल्कले स्थापितत्वाद् वल्कलचीरीति, तं० । आव०म० । आव०चू०

**वक्कलवास-** पुं० [वल्कलवासस]

वल्कलवाससि वानप्रस्थे, पुष्पि० ४ अ० । भग० ।

**वक्कस-** न० [वक्कस]

मृदूभाषादिनखिकानिष्पन्ने अतिनिष्पीडितरसे तुवे, उक्त०८ अ० ।

**वक्कसुद्धि-** स्त्री० [वाक्यशुद्धि]

संयमशुद्धिनिमित्ते वाक्योक्तौ, दश०

**वक्कखंग-** न० [व्याख्याङ्ग]

गौणव्याख्यारूपे अध्याहारदौ अध्याहारो विपरिणामो व्यवहित-कल्पना गुणकल्पना लक्षणा वाक्यभेदश्च । आचा०१श्रु०१ अ०५ उ०

**वक्कखा-** स्त्री० [व्याख्या]

व्याख्याने, उक्त० १ अ० । ठा० ।

**वक्कखान-** न० [व्याख्यान]

अनुयोगे, विधिप्रतिषेधाभ्यामर्थप्ररूपणे, विशेषे आव०चू० ।

**वक्कखानविहि-** पुं० [व्याख्यानविधि]

व्याख्यानस्य विधिः व्याख्यानविधिः । शिष्याचार्यपरीक्षाभिधाने, आव०म० १ अ० ।

**वक्कखायरय-** पुं० [व्याख्यातरत]

विविधम्-अनेकप्रकारं प्रधानपुरुषार्थतयाऽऽरब्धशास्त्रार्थतया तपः संयमानुष्ठानार्थत्वेन आख्यातो व्याख्यातो मोक्षः अशेषकर्मक्षय-लक्षणो विशिष्टाकाशप्रदेशाख्यो वा तत्र रतो व्याख्यातरतः । आचा०१ श्रु० ५ अ०६ उ० ।

**वक्कखार-** पुं० [वक्षार]

अपवरके, वव०६ उ० ।

**वक्कखारपव्वय-** पुं० [वक्षस्कारपर्वत]

वक्षसि मध्ये गोप्यं क्षेत्रं द्वौ संभूय कुर्वन्तीति वक्षस्कारः । तज्जातीयोऽयम् । गजदन्तापरपर्याये पर्वते, जंबू०४ वक्ष० । चंद०



**वक्खित्त-** त्रि० [व्याक्षिप्त]

कर्मणि कर्त्तव्ये व्याकुले, वव० ६ उ० ।

धर्मकथादिना । आव० ३ अ० । प्रयोजनान्तरोपयुक्ते, नाया० १ श्रु० २ अ०

**वक्खेव-** पुं० [व्यापेक्ष]

चित्तैकतानताविच्छेदे, वव० ।

**वग-** पुं० [वक]

अनन्तकायवनस्पतिभेदे, आचा० १ श्रु० १ अ० ५ उ०

**वग-** पुं० [वृग]

शृगालाकृतौ हिंस्रजन्तौ, आव० म० १ अ० ।

**वगडा-** स्त्री० [वगडा]

परिक्षेपे, वव० ९ उ० ।

**वगलग-** पुं० [अवगलक]

अलोपः । कुटुम्बिनि, रा० ।

**वगोड्डायक-** पुं० [वकोड्डायक]

स्त्र्यादेशप्रयुक्तस्वसंज्ञाप्रसिद्धे, पुरुषविशेषे, पिंड० ।

**वग-१ पुं० [वर्ग]**

वृज्यन्ते दूरतः परिह्रियन्ते रागादयो दोषा अनेनेति वर्गः । विशेष० ।

आवश्यकै समूहे, सम० । नं० ।

समुदाये, निर० १ अ० । अंत० । ठा० ।

समानजातीयवृन्दे, उव० । सम० । राशौ, विशेष० । आव० म० ।

**वग-२ पुं० [वर्ग]**

अध्ययनानां समूहे, यथाऽन्तकृद्दशास्वष्टौ वर्गाः । नं० । ठा० ।

**वग-३ पुं० [वर्ग]**

गोवर्गवत् वर्गः । अणुओ० ।

**वग-४ पुं० [वर्ग]**

तेनैव राशिना गुणने, आव० ४ अ० । नाया० ।

**वग-५ पुं० [वर्ग]**

अ-च-ट-त-प-य-श-वर्गा इति परिभाषितेषु स्वरादिषु हकारान्तेषु अक्षरसमूहेषु, निसि० १ उ० ।

पुरुषापेक्षया स्त्रीपक्षे, निसि० २० उ० ।

**वग-६ पुं० [वल्क]**

वंशादिबन्धनभूतायां वटादित्वचि, भग० ८ श० ६ उ० । विशेष० ।

**वगंत-** त्रि० [वल्गत]

वल्गनं कुर्वाणे, वल्गतुरङ्गैरथैश्च प्रधाविताः वेगेन प्रवृत्ता ये ते समर-भटाश्चेति । पण्हा० ३ अ०

**वगचूलिया-** स्त्री० [वर्गचूलिका]

वर्गोऽध्ययनानां समूहो यथाऽन्तकृद्दशास्वष्टौ वर्गा इत्यादि, तेषां चूलिका । सांक्षेपिकदशानां प्रथमे अध्ययने उत्कालिकश्रुत विशेषे ठा० १० ठा० ३ उ० । नं० ।

**वगण-** न० [वल्गन]

उत्कूर्दने, नाया० १ श्रु० १७ अ० । ठा० । आव० म० । उव० ।

उल्लङ्घने, कल्प० १ अधि० ३ क्षण ।

मल्लवद् । निसि० १ उ० ।

उल्ललने, भग० ११ श० ११ उ० । आव० म० ।

**वगणा-** स्त्री० [वर्गणा]

सजातीयवस्तुसमुदाये वर्गराशौ, विशेष० । आव० म० । विशेष० ।

**वगगतव-** न० [वर्गतपस्]

यदा घनः चतुःषष्टिपदात्मको घनेनैव चतुःषष्टिपदात्मकेनैव गुण्यते तदा वर्गो भवति, तदुपलक्षितं तपो वर्गतप उच्यते । तपोभेदे, उत्त० ३० अ० ।

तथा भवति वर्गश्चेतीहापि प्रक्रमाद्वर्ग इति वर्गतपः, तत्र च घन एव घनेन गुणितो वर्गो भवति, ततश्चतुःषष्टिश्चतुःषष्ट्यैव गुणिता जातानि षण्णवत्यधिकानि चत्वारि सहस्राणि एतदुपलक्षितं तपो वर्गतपः । उत्त० ३० अ० ।

**वगवग-** पुं० [वर्गवर्ग]

वर्गगुणितो वर्गो वर्गवर्गो भवति । वर्गगुणितवर्गे, उत्त० ३० अ० ।

पृथक्सजातीयसमूहे, बुह० १ उ० ३ । ठा० ।

अनन्ताभिरपि वर्गवर्गाभिः वर्गवर्गैर्वर्गितमपि, तत्र तदुणो वर्गो यथा- द्वयोर्वर्गश्चत्वारः । तस्यापि वर्गो वर्गवर्गः, चूर्णिकारस्त्वाह- अनन्तरपि वर्गवर्गैः खण्डखण्डैः उव० ।

**वगवगतव-** न० [वर्गवर्गतपस्]

वर्गवर्गोपलक्षिते तपोभेदे, उत्त० ।

वर्गवर्गतपः, तुः समुच्चये पञ्चमं पञ्चसंख्यापूरणमत्र वर्ग एव यदा वर्गेण गुण्यते तदा वर्गवर्गो भवति, तथा च चत्वारि सहस्राणि षन्नवत्यधिकानि तावतैव गुणितानि जातैका कोटिः सप्तषष्टिलक्षाः सप्तसप्ततिसहस्राणि द्वे शते षोडशाधिके अङ्कतोऽपि १६७७७२१६, एतदुपलक्षितं तपोवर्गवर्गतप इत्युच्यते, उत्त० ३० अ० ।

**वगसंख्या-** स्त्री० [वर्गसंख्या]

वर्गः संख्यां यथा द्वयोर्वर्गश्चत्वारः ‘सदृशद्विराशिघात’ इति वचनात् । संख्याभेदे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**वगसीह-** पुं० [वर्गसिंह]

सप्तदशस्य जिनस्य प्रथमभिक्षादायकके, सम० ।

**वगु-** त्रि० [वल्गु]

शोभने, सूय० १ श्रु० ४ अ० २ उ० । आव० म० ।

शक्रदेवेन्द्रलोकपालवैश्रवणस्य विमाने, नपुं० । भग० ३ श० ७ उ० ।

चक्रपुराख्यपुरीविभूषितविजयक्षेत्रयुगले, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

तच्च जम्बूद्वीपे मन्दरस्य पश्चिमायां शीतोदाया उत्तरेऽस्तीति । ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**वग्गु- स्त्री० [वाच्]**

वचने, वग्गु ति वा वय ति वा वयणं ति वा एगट्ठा । आव० चू० १ अ०

**वग्गुफल- न० [वल्गुफल]**

शोभने, नारिकेरादिके फले, सूय० १ श्रु० ४ अ० २ उ० ।

**वग्गुफल- न० [वाक्फल]**

धर्मकथारूपाया व्याकरणादिव्याख्यानरूपाया वाचो वस्त्रादिलाभ रूपे फले, सूय० १ श्रु० ४ अ० २ उ०

**वग्गुर- पुं० [वागुर]**

पुरिमतालनगरे जातिबन्ध्याया भद्रायाः पत्न्यौ श्रेष्ठिनि, आव० म० १

**वग्गुरा- स्त्री० [वागुरा]**

मृगबन्धने, विपा० १ श्रु० २ अ० । भग० ।

वागुरा मृगबन्धनम् । वागुरेव वागुरा समुदायः । नाया० १ श्रु० ५ अ० । आव० चू० । नाया० । उव० ।

**वग्गुरिय- पुं० [वागुरिक]**

पाशप्रयोगेण मृगघातके, बुह० १ उ० ।

नर्तकभेदे, पंच० चू० ।

मृगजालजीविनि, वव० ३ उ० ।

**वग्गुली- स्त्री० [वल्गुली]**

चर्मपक्षिविशेषे, भग० १३ श० ९ उ० । सम० पण्हा० । जीवा० ।

चर्मजलूकायाम्, आचा० १ श्रु० १ अ० ६ उ० ।

**वग्गुलीकिच्चगय- पुं० [वल्गुलीकृत्यगत]**

वल्गुलीलक्षणं कृत्यं कार्यं गतं प्राप्तं येन स तथा । वल्गुलीरूपतां गते, भग० १३ श० ९ उ० ।

**वग्गुवाइ- त्रि० [वल्गुवादिन्]**

वल्गु शोभनं वदतीत्येवं शीलो वल्गुवादी । शोभनवादि, वव० ८ उ०

**वग्गू- स्त्री० [वाच्]**

वाण्याम्, उव० । ठा० । विशेष० । भग० ।

**वग्घ- १ पुं० [व्याघ्र]**

शार्दूले, जीवा० १ प्रति० । जंबू० । पण्हा० । पन्न० । निसि० । ठा० । आचा०

**वग्घ- २ पुं० [व्याघ्र]**

वाघ इति ख्याते सनखपदे जन्तौ, पन्न० १ पद ।

**वग्घमुह- पुं० [व्याघ्रमुख]**

गोमुखद्वीपस्य परतोऽन्तरद्वीपे, ठा० ४ ठा० २ उ० । उत्त० । नं० । पण्हा० । पन्न० ।

**वग्घसीह- पुं० [व्याघ्रसिंह]**

सप्तदशतीर्थकरस्य कुन्थुनाथस्य प्रथमभिक्षादायक, आव० म० १

**वग्घाडिया- स्त्री० [व्याघ्राटिका]**

उपहासार्थरुतविशेषे, नाया० १ श्रु० ८ अ० ।

उद्धट्टककारिण्याम्, बुह० ६ उ० ।

**वग्घारिय- [देशी]**

प्रलम्बिते, सूय० २ श्रु० २ अ० । उव० । पन्न० । जीवा० ।

‘गलति सीओदगवग्घारियहल्यमेत्तेणं गलंतेणं ति भणियं होइ ।’

आव० ४ अ० । नाया० ।

**वग्घारियपाणि- त्रि० [वग्घारियपाणि]**

प्रलम्बितभुजे, भग० ३ श० २ उ० । दशा० । नाया० । अंत० । नाया० ।

प्रलम्बितभुजद्वये, कल्प० १ अधि० ७ ।

**वग्घारियमल्लदामकलाव- त्रि० [वग्घारियमाल्यदामकलाप]**

अवलम्बितपुष्पमालासमूहे, रा० ।

**वग्घारियवुट्टिकाय- पुं० [वग्घारियवृष्टिकाय]**

अच्छिन्नधारावृष्टौ, कल्प० ३ अधि० ९ ।

**वग्घावच्च- पुं० [व्याघ्रापत्य]**

स्वनामख्याते व्याघ्रर्षेरपत्ये, जंबू० ७ वक्ष० ।

यद्गोत्रे उत्तराषाढानक्षत्रम् । चंद० १० पाहु० ।

**वग्घी- स्त्री० [व्याघ्री]**

स्त्रीत्वविशिष्टे व्याघ्रजातौ, आव० १ अ० । तं० । पन्न० ।

अनेकेषां व्याघ्राणां विकुर्वणालिकायाम् परिव्राजकविद्याविशेष- परिपत्थिन्यां जैनविद्यायाम्, कल्प० २ अधि० ८ । विशेष० । आव० म०

**वच्च- न० [वर्चस्]**

तेजसि, प्रभावे, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

पुरीषे, बुह० उत्त० । सूय० ।

गूथे, तं० । । आचा० ।

वर्चः-वर्चः प्रधानानि समुच्छ्रितान्यन्त्राण्यङ्गानि वा येषां ते तथा ।

सूय० १ श्रु० ५ अ० १ उ० ।

**वच्चंसि- त्रि० [वर्चस्विन्]**

शरीरकलोपेतत्वात् । सम० ।

विशिष्टप्रभावोपेते, भग० २ श० ५ उ० ।

रूपवति, आचा० २ श्रु० १ चू० २ अ० १ उ० ।

वचोवचनं सौभाग्याद्युपेतं यस्यास्ति स वर्चस्वी । नाया० १ श्रु० १ अ०

विशिष्टवचनयुक्ते, भग० २ श० ५ उ० । रा०

**वच्चकिमि- पुं० [वर्चस्कृमि]**

विष्ठालग्रकृमौ, उदरमध्यस्थविष्ठायामुत्पन्ने द्वीन्द्रियजन्तुविशेषे, तं०

**वच्चकुंडी- स्त्री० [वर्चस्कण्डी]**

विष्ठकुण्ड्याम्, तं० । ।

**वच्चकूव- पुं० [वर्चस्कूप]**

विष्ठाभूतकूपे, तं० । ।

**वच्चग- न० [वर्चक्]**

दर्भाकारे तृणविशेषे, बुह० २ उ० । आचा० ।

तृणरूपवाद्यविशेषे, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**वच्चघर-** न० [वर्चोगृह]

पुरीषोत्सर्गस्थाने, सूय० १ श्रु० ४ अ० २ उ०

**वच्चसंघाय-** पुं० [वर्चःसंघात]

परमपवित्रविष्ठासमूहे, तं० ।

**वच्चापेलिय-** न० [व्यत्याप्रेडित]

अस्थाननिबद्धपठने, स्वमतिचर्चितसूत्रं प्रक्षिप्य पठने च । अस्थान विरतिसहिते, आव० म० १ अ० आव० । आव० चू० ।  
एकस्मिन्नेव शास्त्रे यान्यस्थाननिबद्धान्येकार्थानि सूत्राण्येकत्र स्थाने समानीय पठतो त्यत्याप्रेडितम्,  
अथवा-आचारादिसूत्रमध्ये स्वमतिचर्चितानितत्सदृशानि सूत्राणि कृत्वा प्रक्षिपतो व्यत्याप्रेडितम् । अस्थानविरक्तं वा व्यत्याप्रेडितम् । अणुओ० । विशे० ।

**वच्चाविष्य-** न० [वल्ककविष्यक]

वल्ककस्तृणविशेषस्तस्य विष्यकः कुट्टितत्वग्रूपस्तेन निष्पन्नं वल्ककविष्यकम् । तृणविशेष-विष्यकजे, 'पंचरयहरणां पन्नताई तं-उण्णियरे उट्टिए साणाए वच्चाविष्यए मुंजविष्यए । बुह० २ उ०

**वच्चीसग-** पुं० [वर्चीसक]

तन्त्रीवाद्यविशेषे, अणुत० । आचा० ।

**वच्छ-** न० [वक्षस्]

उरसि, नाया० १ श्रु० ८ अ० । उवा० । जंबू० । उव० सम० ।

**वच्छ-** पुं० [वत्स]

पुत्रे, डिम्भे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।  
ऋषभदेवस्य पुत्रशतकान्तर्गते सप्तदशे पुत्रे, कल्प० १ अधि० । ठा०  
तच्छासिते कौशाम्बीनाम नगरीप्रतिबद्धे जनपदे, पण्हा० । सूय० ।

**वच्छ-** पुं० [वात्स्य]

वत्सस्यापत्यं वात्स्यः । वत्सापत्ये वत्सगोत्रीये पुरुषे, 'पभवं कच्चायणं वंदे वच्छं सिज्जंभवं तहा । नं० ।

**वच्छग-** पुं० [वत्सक]

क्षुद्रवृक्षभेदे, । दश० ५ अ० । आव० म० । आव० ।

**वच्छगावई-** स्त्री० [वत्सकावती]

जम्बूद्वीपे मन्दरस्य पूर्वे सीताया महानद्या दक्षिणे स्वनामख्याते विजयक्षेत्रयुगले, जंबू० ४ वक्ष०  
'वच्छावई विजए पभंकरा रायहाणी' । जंबू० ४ वक्ष० ।

**वच्छणयरी-** स्त्री० [वत्सनगरी]

कौशाम्ब्याम्, आव० म० १ अ० । आव० चू० ।

**वच्छभूमि-** स्त्री० [वत्सभूमि]

कोशलायाः पूर्वविशये, आव० म० १ अ० । आव० चू० ।

**वच्छवाली-** स्त्री० [वत्सपाली]

गोप्याम्, 'तत्येव वच्छवाली परमन्नं ।' आव० म० १ अ० । आव० ।

**वच्छमिता-** स्त्री० [वत्समित्रा]

अधोलोकवासिदिक्कुमारीमहत्तरिकायाम्, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।  
। आव० म० । आव० ।

जम्बूद्वीपे मन्दरे पर्वते नन्दनस्य वनस्य रुचककूटदेव्याम्, ठा० ९ ठा० ३ उ० । आव० चू० ।

ऊर्ध्वलोकवासिन्यां दिक्कुमारीमहत्तरिकायाम्, जंबू० ५ वक्ष० ।

**वच्छराय-** पुं० [वत्सराज]

वत्सदेशमहाराजे, आव० क० १ अ० ।

वसन्तपुरनगरे रुक्मिणीपतेर्जिनदासश्रावकस्य गोपाले, पिंड० ।

**वच्छल-** त्रि० [वत्सल]

रक्षके, आव० ४ अ० ।

**वच्छलया-** स्त्री० [वत्सलता]

वात्सल्ये, अनुरागयथावस्थितगुणोत्कीर्तनरूपाचारे, नाया० १ श्रु० ७ अ० । पन्न० । आव० म० ।

हितकारितायाम्, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**वच्छलिज्ज-** न० [वत्सलीय]

श्रीगुप्तावर्गितस्य चारणगणस्य प्रथमकुले, कल्प० २ अधि० ८ ।

**वच्छल्ल-** न० [वात्सल्य]

आचार्यग्लानप्राघूर्णकासहबालवृद्धादीनामाहारोपध्यादिनासमाधि सम्पादने, जीवा० १ प्रति० । वव० ।

साधर्मिकाणां भक्तपानीयैर्भक्तिकरणे, उत्त० २८ । दश० । गच्छा०

**वच्छवाल-** पुं० [वत्सपाल]

गोवत्सरक्षके, आव० १ अ० ।

**वच्छसुत्त-** न० [वक्षःसूत्र]

हृदयाभरणभूतसुवर्णसङ्कलके, भग० ९ श० ३३ उ० ।

**वच्छाणुबंधिया-** स्त्री० [वत्सानुबन्धिका]

वत्सः पुत्रस्तदनुबन्धो यस्यां सा वत्सानुबन्धिका । वैरस्वामिमातुः प्रव्रज्यायाम्, ठा० १० ठा० ३ उ० । पंच० भा० । पंच० चू० ।

**वच्छायण-** पुं० [वात्सायन]

वत्सगोत्रापत्ये साहित्यशास्त्राचार्ये, स्था० ३ ठा० ३ उ० ।

**वच्छावई-** स्त्री० [वत्सावती]

प्रभङ्गराख्यराजधानीविभूषितविजयक्षेत्रयुगले, जंबू० ४ वक्ष० । ठा०

**वच्छासुत्त-** न० [वक्षःसूत्र]

उत्तरासङ्गपरिधानीये, भग० ९ श० ३३ उ० ।

**वच्छी-** स्त्री० [वार्क्षी]

चारुदत्तकन्यायां ब्रह्मदत्तचक्रिभार्यायाम्, उत्त० ०१३ अ० ।

**वज्ज-१** न० [वज्र]

हीरके, जंबू० ३ वक्ष० ।

कीलिकायाम्, सम० । उत्त० ।

**वज्ज-२ न० [वज्र]** ++++++

गुरुत्वादधःपातकत्वेन वा वज्रवद् वज्रम् । पापे, सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ० । आचा० । ठा०

**वज्ज-३ न० [वज्र]**

षष्ठदेवलोकविमानभेदे, सम० ।

**वज्ज-४ त्रि० [वर्ज]**

वर्जनीयं वर्ज्यते इति वर्जम् । पापे, विशेष० । आव०म० ।  
अकृत्ये, आव०४ अ० । तं० । ।

**वज्ज-५ त्रि० [वर्ज्य]**

वर्ज्यते विवेकिभिरिति वर्ज्यम् । वव०१ उ० ।  
कर्मणि, पण्हा०१ अ०

**वज्ज-६ त्रि० [वर्ज]**

प्रधाने, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**वज्ज-७ न० [वाद्य]**

वादनकर्मीभूते ततादौ, ठा० ।

**वज्ज-८ न० [अवद्य]**

पापे, बुह०१ उ०२ ।

**वज्जकंद- पुं० [वज्रकन्द]**

कन्दविशेषे, भग० ।

**वज्जकर- त्रि० [अवद्यकर]**

अवद्यं पापं वज्रं वा गुरुत्वादधः पातकत्वेन पापमेव तत्करण-  
शीलोऽवद्यको वज्रकरो वा । पापकृति, सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ० ।

**वज्जकिरिया- स्त्री० [वर्जक्रिया]**

आत्मार्थं गृहं निर्वर्त्य साधुभ्यो दत्त्वाऽन्यद् गृहं निर्वर्त्य तत्रोषित्वा  
निवसति । शय्यातरे तद्वत्तगृहवसतौ, आचा०२ श्रु०१ चू०२ अ०२ उ०

**वज्जण- न० [वर्जन]**

त्यजने, आव० ५ अ० । विशेष० ।

**वज्जणाभ- पुं० [वज्रनाभ]**

अभिनन्दनस्य चतुर्थकुलकरस्य प्रथम-भिक्षादायके, सम० ।

**वज्जणिज्ज- त्रि० [वर्जनीय]**

वर्ज्यत इति वर्जनीयम् । परिहरणीये, पण्हा० ४ अ०  
पापे, विशेष० ।

**वज्जतुंड- त्रि० [वज्रतुण्ड]**

वज्रवद्दृढमुखे, आव०म०२ अ० ।

**वज्जधूली- स्त्री० [वज्रधूली]**

वज्रवतीक्षणकण्ठरेणौ, 'सामिस्स उवरिं वज्जधूली वरिसं  
वरिसइ ।' आव०म०१ अ० ।

**वज्जपरिवज्जि- त्रि० [वर्ज्यपरिवर्जिन्]**

वर्जनीयं वर्ज्यमकृत्यं परिगृह्यते तत्परिवर्जि । अप्रमत्ते, आव०४ अ०

**वज्जपाणि- पुं० [वज्रपाणि]**

वज्रं वज्राभिधानायुधं पाणावस्येति वज्र पाणिः । पन्न० २ । उत्त० ।  
कुलिशकरे, उत्त० २ अ० । आव०म० ।

**वज्जबंध- पुं० [वज्रबन्ध]**

वज्रवेष्टे, वज्रकीलके, आव०चू० १ अ० ।

**वज्जबहुल- त्रि० [वज्रबहुल]**

वज्रवद्वज्रं गुरुत्वात्कर्म तद्बहुलस्तत्करणप्रचुरस्तथा । वध्यमान-  
कर्मगुणे, सूय० २ श्रु० २ अ० ।

**वज्जभीय- त्रि० [वज्रभीत]**

वज्रं पापं कल्मषमित्यर्थः । तस्माद् भीतो वज्रभीतः । असंयम-  
भीते, पंच०चू० १ । आव०चू० । वव० । आव०म० । पण्हा० ।

**वज्जभीरु- त्रि० [अवद्यभीरु]**

अकारलोपादवद्यं पापं तद्भीरुः । पाप भीते, बुह० १ उ०२ ।

**वज्जभूमि- स्त्री० [वज्रभूमि]**

लाटदेशस्ये गतकण्टकादिप्रधाने नगरे, आव०म० १ अ० । आचा०

**वज्जमाण- त्रि० [वाद्यमान]**

वादनं कार्यमाणे, द्रुततुर्येण वाद्यमाने, विपा०१ श्रु०३ अ० ।

**वज्जयंत- त्रि० [वर्जयत्]**

परित्यजति, सूय० १ श्रु० ११ अ० ।

वर्जयन्-परिहरन् । दश० ५ अ० ।

**वज्जरिसभनारायसंघयण- न० [वज्रर्षभनाराचसंहनन]**

नाराचम् उभयतो मर्कटबन्धः, ऋषभः तदुपरिवेष्टनपट्टः,  
कीलिका अस्थि उभयस्यापि भेदकमस्थि एवं रूपं संहननं यस्य  
सः तथा । प्रथमसंहनिनि, सूर० १ पाहु० । आव०चू० ।

**वज्जलाढ- पुं० [वज्रलाट]**

लाटदेशवास्तव्येषु म्लेच्छविशेषेषु, आव० म०१ अ० ।

**वज्जवित्ति- स्त्री० [वर्जवृत्ति]**

प्रधानजीविकायाम्, अणुओ० । ठा० ।

**वज्जसामि- पुं० [वज्रस्वामिन्]**

आर्यवज्रे, निसि०१ उ० ।

**वज्जवेढ- पुं० [वज्रवेष्ट]**

वज्रकीलियाम्, आव०चू०१ अ० ।

**वज्जा- स्त्री० [वज्रा]**

'परिणामिया' शब्दे उदाहृतस्य काष्ठश्रेष्ठिभार्यायाम्, आव०म०१

**वज्जि- पुं० [वज्रिन्]**

शक्रेन्द्रे, भग०७ श०९ उ० ।

**वज्जिय- त्रि० [वर्जित]**

रहिते, परित्राणविकले, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ० ।

त्यक्ते, सूय० १ श्रु०२ अ०२ उ० । उत्त० । आव० ।

**वज्रियावग-** पुं० [देशी]

इक्षौ, 'वज्रियावगो नाम उच्छू' इति वचनात् । वव० १ उ० ।

**वज्जेता-** अव्य० [वर्जयितुम्]

मोक्तुमित्यर्थे, निसि० २० उ० ।

**वज्जेयव्य-** त्रि० [वर्जयितव्य]

त्याज्ये, सूय० १ श्रु० १३ अ० । ठा० ।

परिहार्ये, सूय० १ श्रु० ५ अ० ।

**वट-** त्रि० [वृत्]

अयोगोलकवत् । अणुओ० ।

वर्तुले, नाया० १ श्रु० १ अ० ठा० । सूय० । विशेष० । ठा० ।

आव० म० । पत्र० । भग० ।

अन्तःशुषिररहिते परिमण्डलरूपे, भग० १४ श० ७ उ० ।

**वट-** न० [वर्त्मन्]

मार्गे, वर्त्म ग्राहयति यानानि मार्गे स्थापयतीत्यर्थः । उव० ।

**वटअ-** पुं० [वर्तक]

तित्तिरजातीये, सूय० १ श्रु० २ अ० १ उ० ।

बृहत्तरे रक्तपादे । निसि० ९ उ० ।

वटेर इति, ख्याते पक्षिणि, आव० म० १ । पण्हा० । उत्त० । निसि० ।

जत्वादिमयगोलके नाया० १ श्रु० १८ अ० । सूर० ।

बालमरणकविशेषे, अणुत्त० ।

**वटंत-** त्रि० [वर्तमान]

विद्यमाने, सूय० १ श्रु० ३ अ० ४ उ० ।

**वटंत-** त्रि० [वर्तयत्]

परिवेषयति, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

**वटखुर-** पुं० [वृत्तखुर]

तुरङ्गमे, बुह० ३ उ० ।

अश्वप्रधाने, ओह० । निसि० ।

**वटखेडु-** पुं० [वृत्तखेड]

कन्दुकक्रीडायाम्, सम० ७२ सम० । उव० ।

**वटचणग-** पुं० [वृत्तचणक]

मसूरधान्ये, ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

**वटणा-** स्त्री० [वर्तना]

वर्ततेऽनवच्छिन्नत्वेन निरन्तरं भवतीति वर्तना कालकार्ये, आत्मधारणे, । उत्त० २८ अ० ।

**वटभावपरिणय-** त्रि० [वृत्तभावपरिणत]

वर्तुलाकृतौ, जंबू० १ वक्ष० ।

**वटमाण-** त्रि० [वर्तमान]

व्यवस्थिते, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

तपोऽर्हं प्रायश्चित्तं वहति, वव० १ उ० ।

**वटमाणसुहेसि-** त्रि० [वर्तमानसुखैषिन्]

वर्तमानसुखमेव सुखमिह लोकसुखमाधाकर्मिकाद्युपभोगजमे-  
षितुं शीलं येषां ते वर्तमानसुखैषिण । समुद्रवायसवत् तत्काला-  
वाप्तसुखलवासक्तचेतस्सु अनालोचिताधाकर्मोपभोगजनितानि-  
कटुकदुःखौघानुभवनेषु, सूय० १ श्रु० १ अ० ३ उ० ।

**वटमाणी-** स्त्री० [वर्तमानी]

वार्तायाम्, वर्तन्यां च । आव० म० १ अ० ।

**वटलोह-** न० [वृत्तलोह]

त्रिकुटीत्यभिधाने गोलायसि, उव० ।

**वटवेयडुपव्वय-** पुं० [वृत्तवैताड्यपर्वत]

वृत्तः पल्याकारत्वात् वैताड्यो नामतो वृत्तवैताड्यः । स च  
पर्वतश्चेति वृत्तवैताड्यपर्वतः स्वनामख्याते पर्वते, ठा० ।

**वट्टावरय-** पुं० [वर्तविरक]

लोष्ठकप्रधाने, भग० १९ श० ३ उ० ।

**वट्टि-** स्त्री० [वर्ति]

गुटिकायाम्, उव० ।

**वट्टिजमाणचरय-** पुं० [वर्त्यमानचरक]

परिवेष्यमाणचरके, उव० ।

**वट्टिय-** त्रि० [वर्तित]

वृत्ते, पण्हा० ४ अ० आचा० । उव० । नाया० ।

बद्धस्वभावानुपचितकण्ठित्वभावे, रा० ।

**वट्ट-** न० [वट्ट]

अष्टकमये भाजने, बुह० १ उ० ।

कमठके, बुह० १ उ० ।

**वट्टकर-** पुं० [वट्टकर]

यक्षभेदे, विद्यासिद्धिभेदे, स्त्री० । आव० १ अ० ।

**वट्टेलिखेडग-** पुं० [वट्टेलिखेटक]

अर्बुदगिरिसविधे ग्रामे, यत्र वटगच्छः प्रथममजनि । वव० २ उ० ।

**वड-** पुं० [वट]

वृक्षभेदे, पत्र० १ पद । उव० । आव० म० ।

कण्टके, विभागे, आव० चू० ५ अ० । अणुओ० ।

मत्स्यभेदे, पत्र० १ पद ।

**वटग-** न० [वटक]

त्रिसरीमये निकृष्टकौशेयसूत्रे, नाया० १ श्रु० ३ अ०

**वडगच्छ-** पुं० [वटगच्छ]

वट्टेलीखेटकसीमावनिःस्थवरवटाधः संस्थापिते वृद्धगच्छे,  
गच्छा० ३ अधि० ।

**वडगर-** पुं० [वटकर]

मत्स्यभेदे, जीवा० १ प्रति० । पत्र० ।



**वडपायव-** पुं० [वटपादप]

वटनामके वृक्षविशेषे, उत्त० १३ अ० ।

**वडप्पय-** पुं० [वडप्पक]

काष्ठयन्त्रविशेषे, पण्हा० ३ अ०

**वडभ-** त्रि० [वडभ]

महडकोष्ठे, दशा० १० अ० ।

एकपार्श्वहीने, । निसि० । ओह० । बुह० ।

वामने, विनिर्गतपृथिवीवडमे, आचा० १ श्रु० २ अ० ३ उ० ।

**वडभिया-** स्त्री० [वडभिका]

वकाधः कायायाम्, उव० ।

महडकोष्ठा धिपत्यां दास्याम्, रा० ।

**वडवामुह-** न० [वडवामुख]

चतुर्षु महापातालेषु मध्ये प्रथमे महापाताले, ठा० ४ ठा० २ उ०

**वडवामुह-** न० [वलयामुख]

चतुर्षु महापातालेषु मध्ये प्रथमे महापाताल, ठा० ४ ठा० २ उ०

**वडार-** पुं० [वटाचार]

वडो वण्टगो वा एगट्टं । आरितो आयरितो वडारो इति ।

विभागव्यवहारे, निसि० २ उ० । आव०चू० ।

**वडेंसय-** पुं० [अवतंसक]

शेखरके, कर्णपूरे च । अवतंसक इवावतंसकः । प्रधाने, सम० प्र० सम० । रा० । उव० । नाया० । ठा०

श्रेष्ठे, जंबू० १ वक्ष० ।

**वडेंसा-** स्त्री० [अवतंसका]

किन्नरनाम्नः किन्नरेन्द्रस्याग्रमहिष्याम्, ठा० ४ ठा० १ उ० । भग० ।

**वडिया-** स्त्री० [वटिका]

वरी इति ख्याते पदार्थे, पन्न० १ पद ।

वर्धपट्टिकायाम्, उव० ।

**वडिस-** न० [वडिश]

प्रान्तन्यस्तामिषे लोहकीलके, उत्त० ३ अ० ।

**वडु-** पुं० [वडु]

ब्राह्मणे, ब्रह्मचारिणि, विशे० ।

**वडुअ-** न० [वडुक]

कमठके, बुह० ३ उ० ।

स्वनामख्याते वाणारसीराजे, आव०म० १ अ० ।

**वडुकर-** पुं० [वडुकर]

गुडाकरपुरजाते स्वनामख्याते वाद पराजितपरिव्राजक जीवे,

आव० १ अ० । आव०म० ।

**वडेंसग-** पुं० [अवतंसक]

अवतंसक इवावतंसकाः । शिखरे, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

**वडु-** त्रि० [वडु]

महति, आव० ४ अ० ।

**वडुकुमारी-** स्त्री० [वडुकुमारी]

विनयशब्दे उदाहरिष्यमाणे मालिने आत्मसमर्पयति स्त्रीभेदे,

निसि० १ उ० । दश० ।

कौमार्यवस्था यामेव वार्द्धक्यमनुभवन्त्यां स्त्रियाम्, निसि० १ उ० ।

**वडुइ-** पुं० [वर्धीक]

सूत्रधारे, ठा० ७ ठा० ३ उ० । सूय० ।

रथादि-निर्मापयितरि, सम० १४ सम० । नं० ।

**वडुइरयण-** न० [वर्धीकिरल]

अत्युत्कृष्टे सूत्रधारे, ठा० ७ ठा० ३ उ०

**वडुंतय-** पुं० [वडुंतयन्तक]

क्रमशो वृद्धिं प्राप्ते विहारे, पंच०चू० ।

**वडुणी-** स्त्री० [वार्धनी]

गलन्तिकायाम्, जंबू० २ वक्ष० ।

**वडुमाण-१** पुं० [वर्धमान]

उत्पत्तेरारभ्य ज्ञानादिभिवर्धते इति वर्द्धमानः । कल्प० ।

वीरजिनेन्द्र, अस्यामवसर्पिण्यां जाते चतुर्विंशे तीर्थकर, सम० ।

नं० । आव०चू० ।

**वडुमाण-२** पुं० [वर्धमान]

स्वनामख्याते चान्द्रकुलीये, आचार्ये, । भग० ४१ श० ।

**वडुमाण-३** पुं० [वर्धमान]

द्वाषष्टितमे महाग्रहे, ठा० २ ठा० ३ उ० । चं० । कल्प० ।

**वडुय-** त्रि० [वर्धित]

वृद्धिमुपनीते, भग० ७ श० ३३ उ० ।

**वडुयग-** पुं० [वर्द्धितक]

कृत्रिमनपुंसके, यस्य हि आयत्यां राजान्तःपुरमहल्लकपद-  
प्राप्तयादिनिमित्तं यस्य बालत्वेऽपि छेदं दत्त्वा वृषणौ गालितौ  
भवतः । गच्छा० १ अधि० । पंच०भा० । पंच०चू० ।

**वण-** न० [वन]

एकजातीयवृक्षसमुदाये, भग० । जीवा० । अणुओ० । नाया० । ठा०  
उद्याने, उत्त० गाथा ।

नगरविप्रकृष्टे गहने, सूय० १ श्रु० १४ अ० । भग० । नाया० ।

अटव्याम्, सूय० १ श्रु० ३ अ० २ उ० ।

तरु-विशेषे, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**वण-** पुं० [वण]

व्रणति गच्छतीति व्रणः । अणुओ० ।

विस्फोटकादि क्षते, जंबू० २ वक्ष० । दश० ।

लाञ्छने, अणुओ० ।

**वणंत- पुं० [वनान्त]**

वनविभागे, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**वणकम्म- न० [वनकर्मन्]**

वनविषयं कर्म वनकर्म । वनच्छेदनविक्रयरूपे कर्मते उपभोगपरिभोगव्रतातिचारे, भग०८ श०५ उ० ।

यत्र वा समुदितं वनं क्रीत्वा ततश्चित्वा विक्रीय च तल्लाभेन जीवति, आव० । आचा० ।

छिन्नाछिन्नवनपत्रपुष्पफल कन्दमूलतृण काष्ठकं वा वंशादि- विक्रयः कणदलपेषणं वानकच्छादिकरणं च । आव०चू० । उवा०

**वणकम्मंत- न० [वनकर्मन्ति]**

यत्र वनकर्म क्रियते तादृशे गृहे, आचा०२ श्रु०१ चू०२ अ०२ उ० ।

**वणकर- पुं० [व्रणकर]**

व्रणं देहे क्षतं स्वयं करोति रुधिरादिनिर्गलनार्थमिति व्रणकरः । व्रणजनके, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**वणखण्ड- पुं० [वनखण्ड]**

एकजातीयवृक्षसमूहे, भग०५ श०७ उ०

अनेकजातीयोत्तमवृक्षेषु, ठा० २ ठा० ४ उ० । जंबू० ।

**वणचर- पुं० [वनचर]**

पुलिन्द्रशवरादिके आरण्यके मनुष्ये, पण्हा०२ अ०

**वण- न० [वनन]**

वत्सत्यान्यमातारि योजने, पण्हा०२ अ०

**वणतिगिच्छा- स्त्री० [व्रणचिकित्सा]**

व्रणति गच्छतीति व्रणः, व्रणस्य चिकित्सा । चारित्रपुरुषस्य योऽ- तिचाररूपो भावव्रणः । दशविधप्रायश्चित्तभेषजेन कायोत्सर्गा- ध्ययने प्रतिपादतेऽधिकारविशेषे, अणुओ० ।

**वणतेल्ल- न० [व्रणतैल]**

व्रणसंरोहके तैले, वव० ५ उ० ।

**वणदव- पुं० [वनदव]**

वनाग्नौ, नाया०१ श्रु०१ अ० । आव०चू० ।

**वणपव्वय- पुं० [वनपर्व्वत]**

वनमध्यपर्व्वते, आचा०२ श्रु०१ चू०३ अ०३ उ० ।

**वणपिसाय- पुं० [वनपिशाच]**

पिशाचभेदे, पत्र० १ पद ।

**वणफई- पुं० [वनस्पति]**

लतादिरूपे एकेन्द्रियजीवशरीरे, पत्र० १ पद

**वणफइकाइय- पुं० [वनस्पतिकायिक]**

वनस्पतिर्लतादिरूपः स एव कायः शरीरं येषां ते वनस्पतिकायाः, त एव वनस्पतिकायिकाः । वनस्पतिकशरीरेषु एकेन्द्रिय- जीवभेदेषु, पत्र०१ पद जीवा० । दश० । ठा० । गच्छा० । सम० ।

**वणफइकाल- पुं० [वनस्पतिकाल]**

अनन्तोत्सर्पिण्यवत्सर्पिणीलक्षणे कालभेदे, आव०म० १ अ० ।

**वणफइगण- पुं० [वनस्पतिगण]**

वनस्पतीनां समुदाये पण्हा०४ अ०

**वणमाला- स्त्री० [वनमाला]**

रत्नादिमये आपदीने आभरण विशेषे, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**वणमुह- न० [व्रणमुख]**

व्रणाग्रे, व्रणमुखानि कृमिभिरुत्तुद्यमानानि ऊर्ध्वं व्यथ्यमानानि प्रगलत्पूरुधिराणि यस्य सः । विपा०१ श्रु०७ अ० ।

**वणयरय- पुं० [वनचरक]**

शबरादौ, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**वणराइ- स्त्री० [वनराजि]**

एकजातीयानामितरेषां वा तरूणां पङ्क्तौ, अणुओ० । नाया० । एकजातीयोत्तमवृक्षसमूहे, जीवा०३ प्रति०४ । पत्र० । भग० । रा० ।

**वणलया- स्त्री० [वनलता]**

अशोकादिलतासु, पत्र०१ पद । जंबू० । रा० । जीवा० । भग० । कल्प० । नाया० ।

एकशाखेषु तरुविशेषेषु, वणादुम्रविशेषाः द्रुमाणां च लतात्व- मेकशाखाकानां द्रष्टव्यम्, ये हि द्रुमा ऊर्ध्वागतैकशाखा न तु दिग्विदिक्प्रवृत्तबहुशाखास्ते लता इति प्रसिद्धाः । रा० ।

**वणवास- पुं० [वनवास]**

अरण्यवासे, बुह० ।

लौकिका हि वानप्रस्था श्रमे वर्तमाना वनवासमेव श्रेयते मन्यन्ते । तत्राप्राशुकादिपरि भोगदोषः । बुह० १ उ०३ ।

**वणवासी- स्त्री० [वनवासी]**

दक्षिणार्द्धभरतक्षेत्रीय नगरीभेदे, गच्छा०२ अधि० ।

**वणविदुग- पुं० [वनविदुर्ग]**

नानाविधवृक्षसमूहे, भग०१ श०८ उ० । वव० ।

एकं वनं वनम्, वनविदुर्गः । वव० ९ उ० । सूय० ।

**वणविरोह- पुं० [वनविरोध]**

लोकोत्तररीत्या द्वादशे मासे, कल्प०१ अधि०६ क्षण । जंबू० । ज्यो० । सूर० । चंद० ।

**वणसंड- पुं० [वनषण्ड]**

अनेकजातीयोत्तमवृक्षसमुदाये, कल्प० १ अधि० ४ ।

अनेकजातीयानामुत्तमानां महीरुहाणां समूहे जीवा०३ प्रति०४ अधि० । रा० । जीवा० । अणुओ० ।

एकजातीय वृक्ष समूहे, नाया०१ श्रु०१ अ० । नाया० । ठा० ।

**वणहत्थि- पुं० [वनहस्तिन्]**

आरण्यगजे, उत्त०१३ अ० ।

**वणाहार-** पुं० [वनाहार]

वन्यघस्तूपभोक्तारि यक्षभेदे, पत्र०१ पद ।

**वणाहिवड-** पुं० [वनाधिपति]

यक्षभेदे, पत्र०१ पद ।

**वणि-** त्रि० [व्रणिन्]

व्रणोऽस्यास्तीति व्रणी । रौद्रतरे शल्ये, आव० ५ अ० ।

**वणिया-** स्त्री० [वनिता]

स्त्रियाम्, उत्त० ।

**वणी-** स्त्री० [वनी]

कर्पासनिष्पादके फलीभेदे, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० । ठा० ।

**वणीमक-** पुं० [वनीपक]

परेषामात्मदुस्त्यत्वदर्शनेनाकूल भाषणतो यल्लभ्यते द्रव्यं सा वनी प्रतीता, तां पिबति आस्वादयति पातीति वेति वनीपः । स एव वनीपकः । याचके, ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

कृपणे, दश०५ अ० ।

वनु याचने, वनुते प्रायो दायकाभिमतेषु श्रमणादिष्वात्मानं भक्तं दर्शयित्वा पिण्डं याचते । पिंड० ।

अभीष्टजनप्रशंसने, गच्छा०१ अधि

**वण्ण-** पुं० [वर्ण]

वर्ण्यते प्रकाश्यतेऽर्थो अनेनेति । अकार ककारादौ, विशेष० । आचा०

**वण्णअ-** न० [वर्णक]

वर्णरूपे, बृह०१ उ०२ ।

विलेपने, उव० आव०म० ।

चन्दने वर्णनके, विपा०१ श्रु०१ अ० । नाया० ।

कम्पिल्लकादो, आचा० २ श्रु०१ चू०२ अ०१ उ० ।

वण्णओ जो सुगंधो चंदणादि । निसि० १ उ० ।

वण्णो पुण हिंगुलादी तेल्लमादी । निसि०१४ उ० ।

**वण्णंतर-** न० [वर्णान्तर]

अपान्तरालेषु नवसु वर्णेषु, आचा०१ श्रु० १ अ०१ उ० ।

**वण्णकर-** न० [वर्णकर]

एकदिग्व्यापिनि साधुवादकरे । वपुषि गौरत्वादिवर्णकरे, तं० ।

**वण्णकर-** न० [वर्णकरण]

विशिष्टेषु भोजनादिषु विशिष्टवर्णापादने, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।

**वण्णकाल-** पुं० [वर्णकाल]

वर्णश्चासौ कालश्च वर्णकालः । कालभेदे, विशेष० ।

**वण्णगपेसिया-** स्त्री० [वर्णकपेयिका]

चन्दनपेयिकायाम्, भग० १९ श० ३ उ० ।

**वण्णगुणप्पमाण-** न० [वर्णगुणप्रमाण]

स्वनामख्याते प्रमाणभेदे, अणुओ० ।

**वण्ण-** स्त्री० [वर्णना]

प्ररूपणायाम्, विशेष० ।

**वण्णाम-** न० [वर्णनामन्]

वर्ण्यते अलंक्रियते शरीरमनेनेति वर्णः । स च पञ्चप्रकारः श्वेतपीतरत्ननीलकृष्णभेदात् । तन्निबन्धनं नाम । नामकर्मभेदे, तच्च पञ्चधा-

तत्र यदुदयवशाज्जन्तुशरीरे श्वेतवणप्रादुर्भावे यथा वलाकादीनाम् तत् श्वेतवर्णनाम, एवं शेषाण्यपि वर्णनामानि भावनीयानि । सम० ।

वर्णरूपेऽर्थे, अणुओ० ।

**वण्णणिव्वत्ति-** स्त्री० [वर्णनिवृत्ति]

वर्णसंसिद्धौ, भग० १९ श०८ उ० ।

**वण्णपज्जव-** पुं० [वर्णपर्यव]

तत्तदन्यतमुत्पद्यमानवर्णविशेषे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**वर्णपरिणय-** त्रि० [वर्णपरिणत]

वर्णतः परिणतो वर्णपरिणतः । वणभाजि, पत्र० १ पद ।

**वर्णपरिणाम-** पुं० [वर्णपरिणाम]

पञ्चानां श्वेतादीनां वर्णानां परिणतिः । द्रव्यादिसंयोगपरिणतौ, सूय० १ श्रु० १ अ० १ उ० । ठा०

**वर्णपरिसज्जुत्त-** त्रि० [वर्णस्पर्शयुक्त]

प्रधानवर्णस्पर्शे, भग० ९ श० ३३ उ० ।

**वर्णमंत-** त्रि० [वर्णवत्]

प्रशंसायामतिशायने वा । प्रशस्त वर्णे, अतिशयितवर्णे च । ठा० ४ ठा० ४ उ० । सूय० । आचा० ।

**वर्णवाइ-** त्रि० [वर्णवादिन्]

श्लाघावादिनि, वव० १ उ० ।

**वर्णवाय-** पुं० [वर्णवाद]

श्लाघायाम् । ठा० ५ ठा० २ उ० ।

**वर्णसंजलणा-** स्त्री० [वर्णसंज्वलना]

तीर्थकरादीनां सद्भूत गुणोत्कीर्तनायाम्, दश० ९ अ० १ उ० ।

**वर्णादेसि-** पुं० [वर्णदेशिन्]

वर्ण्यते प्रशस्यते येन स वर्णः । साधु कारादेशिनि वर्णाभिलाषिणि, आचा० १ श्रु० ५ अ० ३ उ० ।

**वर्णवास-** पुं० [वर्णावास]

वर्णःश्लाघा यथावस्थितस्वरूप कीर्तनं तस्यावासो निवासो ग्रन्थपद्धतिरूपो वर्णवासः । वर्णक निवेशे, जीवा० ३ प्रति० ४ । आव०म० । रा० । भग० ।

**वर्णवास-** पुं० [वर्णकव्यास]

वर्णकविस्तरे, भग०१४ श०६ उ० ।

**वणिज- त्रि० [वर्णित]**

प्ररूपिते, उत्त० ५ अ० ।  
उपदिष्टे, आव० १ अ० ।  
कथिते, दश० १० अ० ।  
व्याख्याते, विशेषे । निसि० । सूय० । अणुओ० । ठा० । आचा० ।

**वण्णैऊण- स्त्री० [वर्णयित्वा]**

व्याख्यायेत्यर्थे, वव० ३ उ० ।

**वण्णेतुं- अव्य० [वर्णयितुम्]**

प्रतिपादयितुमित्यर्थे, आव० म० १ अ० ।

**वह्नि पुं० [वह्नि]**

अभ्यन्तरदक्षिणायाः कृष्णराजेवैरोचनाविमानवासिनि लोकान्ति-  
कदेवे, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।  
अग्रौ, नाया० । आव० म० ।

**वह्निदसा- स्त्री० [वृष्णिदशा]**

अन्धकवृष्णिदशा इति, अयं चान्वर्थः—अन्धकवृष्णिनराधिपकुले  
ये जातास्तऽपि अन्धकवृष्णयः, तेषां दशाः अवस्थाश्चरितगति-  
सिद्धिगमनलक्षणा यासु ग्रन्थपद्धतिसु वर्ण्यन्ते ता अन्धकवृष्णि  
दशाः, अथवा—अन्धकवृष्णिवक्तव्यताप्रतिपादिका दशाः—अध्य-  
यनानि अन्धकवृष्णिदशाः, आह च चूर्णिकृत्—'अंधकवह्निणो  
जे कुले अन्धसद्वलोवाओ वह्निजो भणिया, तेसिं चरियं गती  
सिज्झणा य जत्य भणिया ता वह्निदासाओ, दस ति अवत्या  
अज्झयणा वा' इति । न० ।

निरयावलिकाश्रुत स्कन्धान्तर्गते स्वनामख्याते पञ्चमवर्गे, निर०

**वह्निपुंगव- पुं० [वृष्णिपुङ्गव]**

यदुप्रधाने, नाया० १ श्रु० १६ अ० ।  
वृष्णिपुंगवो नेमिकुमारः । उत्त० २२ अ० ।

**वति- स्त्री० [वाच्]**

द्रव्यश्रुते, भग० १९ श० ३ उ० ।

**वतिमिस्स- त्रि० [व्यतिमिश्र]**

सम्मिलिते, 'वतिमिस्सं हु रत्या' आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ३ उ० ।

**वत्त- त्रि० [व्यक्त]**

स्फुटे, विशेषे । आव० म० ।  
स्पष्टे, जीवा० १ प्रति० । सूय० ।  
अक्षरस्वरस्फुटकरणत्वात् । । ठा० ७ ठा० ३ उ० ।  
स्फुटार्थे सूत्रादौ, अणुओ० ।  
पञ्चमहाभूतं प्रति सन्दिहाने श्रीवीरजिनेन्द्रसमीपे प्रव्रजिते  
स्वनामख्याते चतुर्थे गणधरे, विशेषे ।

**वत्त- त्रि० [वृत्त]**

अतिक्रान्ते, दश० १ अ० ।

**वत्त- त्रि० [व्याप्त]**

पूर्णे, आव० म० १ अ० ।

**वत्तण- न० [वर्तन]**

पालने, सूय० १ श्रु० ७ अ० ।  
अन्यत्र पातने, आचा० २ श्रु० ३ चू० ।

**वत्तणय- न० [वर्तनक]**

बालानामधीयानानां वार्ताकरणे, विशेषे ।

**वत्तणा- स्त्री० [वर्तना]**

नवपुराणादिना रूपेणाभवने, विशेषे । पंच० चू० ।  
प्राग्गृहीतस्यैव सूत्रादेरस्थिरस्य गुणने, आव० म० १ । आव० चू० ।

**वत्तणी- स्त्री० [वर्तनी]**

मार्गे, विशेषे ।

**वत्तणुवत्त- न० [वृत्तानुवृत्त]**

वृत्तिमतिक्रान्तमनुवर्तमानेन ज्ञायत इति वृत्तानुवृत्तम् । वर्तमान-  
हेतुके भूतानुमाने, दश० १ अ० ।

**वत्तव्व- त्रि० [वक्तव्य]**

कथयितव्ये, सूय० १ श्रु० ९ अ० । विशेषे । पन्न० । पण्हा० ।

**वत्तव्वया- स्त्री० [वक्तव्यता]**

अध्ययनादिषु प्रत्यवयवं यथा सम्भवं प्रतिनियतार्थकथने । सूय० १

**वत्ता- त्रि० [वक्तृ]**

व्याख्यातरि, विपा० २ श्रु० १ अ० ।

**वत्ति- स्त्री० [व्यक्ति]**

भावे; विशेषे ।  
भेदे, भेदो-विशेष इत्यनर्थान्तरम् । ठा० १० ठा० ३ उ० ।  
सामान्याश्रये वस्तुनि, आव० म० १ अ० । सम्म० ।

**वत्ति- स्त्री० [वृत्ति]**

वर्तने, ठा० ४ ठा० १ उ० । सूय० ।

**वत्ति- स्त्री० [उत्का]**

अभिहितायाम्, । सूय० १ श्रु० ३ अ० ३ उ० ।

**वत्ति- स्त्री० [वर्त्ति]**

दशायाम्, भग० ८ श० ६ उ० ।

**वत्तिअ- त्रि० [वर्तित]**

पुञ्जीकृते, आव० ४ अ० ।  
धूल्यास्थगित च । विशेषे ।

**वत्तिअ- न० [वार्तिक]**

वृत्तेः सूत्रविवरणस्य व्याख्यानं भाष्यम् वार्तिकम् । सूत्रविवरण,  
विशेषे ।

**वत्तिअयर- पुं० [वार्तिककर]**

प्रज्ञातिशयवत्तया व्याख्यानादधिकं भाषमाणे, विशेषे ।

**वत्तिअयर-** पुं० [व्यतिकर]

निरवशेषैरपि व्याख्याप्रकारैर्व्याख्येयप्रति पादनकृति, विशेष० ।

**वत्तिपइट्टा-** स्त्री० [व्यक्तिप्रतिष्ठा]

यस्तीर्थकृद्यदा किल तस्य तदाद्येति समयविद इत्युक्तलक्षणे वर्तमानतीर्थकरप्रतिष्ठापने, जीवा० १ प्रति० ।

**वत्तिय-** त्रि० [वर्तित]

वृत्तीभूते, 'वत्तिय' ति ब्रीहीणां पत्राणि मध्यशलाका परिवेष्टनेन नालरूपतया वृत्तानि भवन्ति, तद्वत्ततया जातवृत्तत्वाद् वर्तिताः, शाखादीनां वा समतया वृत्तीभूताः सन्तो वर्तिता अभिधीयन्ते । नाया० १ श्रु० ७ अ० ।

**वत्तुल-** त्रि० [वर्तुल]

वृत्ते, ठा० ४ ठा० २ उ० ।

**वत्तैत-** त्रि० [वर्तयत्]

श्लक्ष्णतां नयति, भग० ८ श० ७ उ० ।

**वत्थ-** न० [वक्षस्]

हृदये, हारेण विराजमाने, रचितं-शोभितं वक्षो यस्य स हारविराजमानरचित वक्षाः । रा० ।

**वत्थ-** न० [वस्त्र]

वस्तेऽनेनेति वस्त्रम् । वाससि, ठा० ९ ठा० ३ उ० साटकादौ, उत्त० २ अ० । अम्बरे, सूय० १ श्रु० ४ अ० २ उ० । चीनांशुकादौ, सूय० १ श्रु० ३ अ० २ उ० । आव० म० ।

**वत्थकप्पिय-** पुं० [वस्त्रकल्पिक]

वस्त्रग्रहणसामाचारीज्ञातरि, बुह० १ उ० १ ।

**वत्थक्खेड्ड-** न० [वस्त्रखेल]

खेलशब्दस्य खेड्डादेशः । वस्त्रक्रीडायाम् तत्परिज्ञानरूपे कलाभेदे, नाया० १ श्रु० १ अ० । जंबू० ।

**वत्थगंध-** पुं० [वस्त्रगन्ध]

वस्त्रं चीनांशुकादि गन्धाः काष्ठपुटकादायां वस्त्राणि च गन्धाश्च वस्त्रागन्धम्, । वस्त्रगन्धोमये सूय० १ श्रु० ३ अ० २ उ० ।

**वत्थधारि-** पुं० [वस्त्रधारिन्]

सचले, 'इच्चेयं खुवत्थधारिस्स सामगिय' आचा० १ श्रु० ८ अ० ५

**वत्थधोवग-** पुं० [वस्त्रधावक]

वस्त्रप्रक्षालके रजके, सूय० १ श्रु० ४ अ० २ उ० ।

**वत्थधोवण-** न० [वस्त्रधावन्]

वासः क्षालने, पण्हा० १ अ०

**वत्थपडिमा-** स्त्री० [वस्त्रप्रतिमा]

अभिग्रहविशेषे, ठा० ।

**वत्थपडिया-** स्त्री० [वस्त्रप्रतिज्ञा]

वस्त्रग्रहणप्रतिज्ञाने, आचा० १ श्रु० ३ अ० २ उ० ।

**वत्थपरिवट्ट-** पुं० [वस्त्रपरिवर्त्त]

वस्त्रपरिवर्त्तने, विपा० १ श्रु० १ अ० ।

**वत्थपाउरण-** न० [वस्त्रप्रावरण]

और्णादो महामूल्ये वस्त्रे, निसि० ८ उ० ।

**वत्थपुसमित्त-** पुं० [वस्त्रपुष्यमित्र]

दशपुरनगरे आर्यरक्षितसूरेः स्वनामख्याते शिष्ये, विशेष० ।

**वत्थीभोग-** पुं० [वस्त्रभोग]

देवदूष्यक्षीरोदकादिवस्त्राणां परिभोगे, उव०

**वत्थविज्जा-** स्त्री० [वस्त्रविद्या]

वस्त्रविषयायां विद्यायाम्, यया परिजपितेन वस्त्रेण वा प्रमृज्य-मानः आतुरः प्रगुणो भवति । वव० ५ उ० ।

**वत्थविहि-** पुं० [वस्त्रविधि]

वस्त्रस्य परिधानीयादिरूपस्य नवकोणदैविकादि मागयथास्थान विशेषादिविज्ञाने, जंबू० २ वक्ष० । नाया० उव० ।

वस्त्रप्रकारे, सम० २ सम० ।

'तयाणंतं च णं वत्थविहिपरिमाणं करेइ नन्नत्थ एगेण खोम-यजुयलेण अवसेसं वत्थ विहिं पच्चक्खामि । उवा० १ अ० ।

**वत्थव्व-** त्रि० [वास्तव्य]

वसतीति वास्तव्यः । वसेस्तव्यक्तर्त्तरि णिच्चेति तव्यः, णित्वाद् वृद्धिः । वासिनि, आव० म० १ अ० ।

**वत्थाणी-** स्त्री० ।

वल्लीभेदे, पन्न० १ पद ।

**वत्थामिल-** न० [अम्लातवस्त्र]

यानि शीघ्रं न म्लायन्ति तेषु वस्त्रेषु, निसि० २ उ० ।

**वत्थि-** स्त्री० । वस्ति हतौ, भग० ।

**वत्थिकम्म-** न० [वस्तिक्तकर्म]

चर्मवेष्टनप्रयोगेण शिरः प्रभृतीनां स्नेहपूरणे, विपा० १ श्रु० १ अ० ।

गुदे वस्त्यादिक्षेपणे, नाया० १ श्रु० १३ अ० ।

पुटकेनाधिष्ठाने, स्नेहदाने, दश० ३ अ० ।

अनुवासने, सूय० १ श्रु० ९ अ० ।

शलाकानिवेशनस्थाने, उव० ।

**वत्थिणिरोह-** पुं० [वस्तिनिरोध]

उपस्थसंयमे, आचा० १ श्रु० १ अ० १ उ० ।

**वत्थिपुड-** न० [वस्तिपुटक]

उदरान्तर्वर्तिनि प्रदशे, निर० १ अ० ।

**वत्थिप्पएस-** पुं० [वस्तिप्रदेश]

गुह्यप्रदेशे, जंबू० २ वक्ष० ।

**वत्थिभाय-** पुं० [वस्तिभाग]

'मणिरयणं, छत्तरयणं वत्थिभाए ठवेइ' ठा० १ अ० ।



**वत्थिय- पुं० [वास्त्रिक]**

वस्त्रं शिल्पमस्येति वास्त्रिकः । वस्त्रनिर्माणोपयोगिनि, अणुओ० ।  
जीवाजीवरूपे, आव०म०१ अ० ।

**वत्थु-१ न० [वस्तु]**

वसतीति वस्तु । द्रव्ये, नाया० १ श्रु० । विशेष० । आव० । उव० । ठा० ।  
त्रिविधं वस्तु ग्राह्यं, हेयम्, उपेक्षणीयं चेति । तत्र क्षान्त्यादयो  
ग्राह्याः, क्रोधादयो हेयाः । अतो निग्रहीतव्यास्त इत्येवमर्थमि-  
त्यमुपन्यस्ता इति स्यात्साधु सर्वमेवैतद्वाथासूत्रमिति । ओह० ।  
वसन्त्यस्मिन् गुणा इति । विशेष० ।

**वत्थु-२ न० [वस्तु]**

आचार्यादिपुरुषरूपेषु नमस्कारहेषु, विशेष० । ठा० ९ ठा० ३ उ० ।  
निसि० । आव०चू० । आव०म० ।  
पूर्वान्तर्गतेषु अध्ययनस्थानीयग्रन्थविशेषेषु, नि० । ठा० । सम० ।  
। अणुओ० ।  
वसतः साध्यधर्मसाधनधर्मो अत्रेति वस्तु । प्रकरणात् पक्षे, ठा०  
१० ठा० ३ उ० ।

**वत्थु-३ न० [वस्तु]**

वसन्त्यास्मिन्निति वास्तु, उत्त०३ अ० ।  
गृहे, उवा० १ अ० । वव० । पत्र० । निसि० । उत्त० । आव० । सूय० ।

**वत्थुकुरुड- न० [वस्तुकुरुट]**

शटित्रपटितगृहे, तद्धि उत्कटमिवितत कृत्वा वास्तुकुरुटमुच्यते ।  
बुह० १ उ०२ ।

**वत्थुजीवग- पुं० [वस्तुजीवक]**

गुल्मवनस्पतिभेदे, पत्र०१ पद ।

**वत्थुणाण- न० [वस्तुज्ञान]**

किमिदं राजाऽमात्यादि सभासदादि वा वस्तु दारुणमदारुणं  
भद्रकमभद्रकं चेति निरूपणे, उत्त०१ अ०

**वत्थुदोस- पुं० [वस्तुदोष]**

वस्तु प्रकरणात् पक्षस्तस्य दोषः । प्रत्यक्ष निराकृतत्वादिके पक्ष-  
दोषे, यथा-श्रावणः शब्दः शब्दे हि श्रावणत्वं प्रत्यक्ष निरा-  
कृतमिति । ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**वत्थुल- पुं० [वस्तुल]**

स्वनामख्याते शाकभेदे, ठा० ३ ठा० १ उ० । आचा० ।  
स च गुच्छवनस्पतिषु परिगण्यते । पत्र० १ पद ।

**वत्थुविजा- स्त्री० [वास्तुविद्या]**

प्रासादादिलक्षणाभिधायिशास्त्रे, उत्त० ।

**वत्थूल- पुं० [वस्तूल]**

गुच्छवनस्पतिकायभेदे, पत्र० १ पद ।  
हरितवनस्पतिभेदे, पत्र० १ पद । निसि० ।

**वत्थेसणा- स्त्री० [वस्त्रैषणा]**

वस्त्रगतैषणासमितौ, सा च आचाराङ्गस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धे  
पञ्चमाध्ययने प्रतिपादिताः, तत्र द्वा उद्देशकौ, प्रथमोद्देशके तावत्  
वस्त्रग्रहणविधिः प्रतिपादितो द्वितीये तु धरणविधिरिति, तद-  
ध्ययनमपि वस्त्रैषणेति । आचा० २ श्रु० १ चू० ५ अ० १ उ० ।

**वदमाण- त्रि० [वदत्]**

वाक्यं ब्रुवाणे, पत्र० ११ पद ।

**वदिता- अव्य० [वदित्वा]**

उक्तत्वेत्यर्थे, सूय० १ श्रु०४ अ०१ उ० ।

**वदलय- न० [वार्दलक]**

वाः-पानीयं तस्य दलानि वार्दलानि वार्दलान्येव वार्दलकानि ।  
मेघेषु, रा० । ठा० । आव०म० । आव०

**वदलियाभक्त- न० [वार्दलिकाभक्त]**

वार्दलिका मेघाडम्बरं तत्रदीयमानं भक्तम् । दुर्दिने दीयमाने  
भक्ते, वार्दलिकायां हिवृष्ट्या भिक्षाभ्रमणाऽक्षमो भिक्षुको भवति  
इति गृहीतमर्थं विशेषतो भक्तं दानाय निरूपयतीति । ठा० ९  
ठा० ३ उ० । उव० ।

**वद्धमाण- पुं० [वद्धमान]**

राधमाने, वर्धमानः सुभूपोऽथ यौवनमुखोऽभवत्, आव०१ अ० ।  
उत्पत्तेरारभ्य ज्ञानादिभिर्वर्धत इति वद्धमानः, उत्पन्ने वा यस्मिन्  
ज्ञातकुलं विशेषेण धनेन धान्येन च वर्द्धत इति वर्द्धमानः । आव०  
वीरजिनेन्द्रे, । आव०१अ० । कल्प० । आव०म० । आव०चू० । सम० ।

**वद्धमाणय- न० [वद्धमानक]**

अवधिज्ञानस्य भेदे, विशेष० ।

**वद्धमाणा- स्त्री० [वद्धमाना]**

चतसृणां शाश्वतजिनप्रतिमानामन्यतमशाश्वतजिनप्रतिमायाम्, रा०

**वद्धवइत्ता- अव्य० [वद्धयित्वा]**

ज्यादिशब्दैर्वर्द्धस्वेत्याद्युक्तत्वेत्यर्थे, जयने वर्धापयते जय त्वं देव !  
विजयस्व त्वं देवेत्येवं वर्द्धापयन्तीत्यर्थः । रा० । विपा० ।

**वपु- न० [वपुष्]**

शरीरे, सम० ।

**वप्प- पु० [वप्प्र]**

समुन्नते भूभागे, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०५ उ०  
जलभृते केदारे, निसि० २० उ० । जीवा० । जंबू० । पण्हा० ।  
पितरि, दश० ७ अ० । तटे, नाया०१ श्रु०४ अ० ।  
जम्बूद्वीपे मन्दरस्य पश्चिमायां शीतोदाया महानद्या उत्तरस्यां  
चक्रवर्त्तिविजये, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**वप्पगावई- स्त्री० [वप्प्रकावती]** जम्बूद्वीपे शीतोदाया महानद्या उत्तरे  
समुद्रप्रत्यासन्ने विजये वर्तमानायां नद्याम्, ठा० ९ ठा० ३ उ०

**वप्पा-** स्त्री० [वप्पा]

भरते वर्षेऽस्यामवसर्पिण्यामेकविंशजनिनमेर्मातरि, सम० । आव०

**वप्पि-** पुं० [वप्पिन्]

केदारे, रा० । नाया० । पण्हा० ।

**वभियार-** पुं० [व्यभिचार]

विकल्पे, व्याहृतौ, भजनायाम्, अनियते, विशेषे ।

**वभियारि-** त्रि० [व्यभिचारिन्]

नियमभञ्जके, जारे, वव० ६ उ० ।

स्वैरिणि, वव० ७ उ० ।

**वमण-** न० [वमन]

मदनफलादिना । दश० ३ अ० ।

छर्दने, ओह० । आचा० । विपा० ।

उद्धरणे, उत्त० १५ अ० ।

ऊर्ध्वविरेके सूय० १ श्रु० ९ अ० ।

त्यजने, उत्त० ११ अ० । ठा० ।

वमनविरेचने करोति, निसि० ।

**वम्म-** न० [वर्मन्]

वृणोति आच्छादयति शरीरकमिति वर्मा । अश्वतनुत्राणे, उत्त० ४

**वम्मधारि-** त्रि० [वर्मधारिन्]

वर्म सन्नाहं धरतीति । सन्नाह धारके, उत्त० ४ अ० ।

**वम्मिय-** त्रि० [वर्मित]

वर्मीकृते, उव० ।

सन्नद्धे, रा० ।

अङ्गरक्षीकृते, नाया० १ श्रु० २ अ० ।

**वम्मिय-** न० [वल्मीक]

पृथ्वीविकाररूपे स्तूभे, सूय० २ श्रु० १ अ० ।

**वय-** न० [वचस्]

वचने, विशेषे । आचा० । उत्त० । ठा० । नाया० ।

**वय-** पुं० [वज्र]

गोकुले, भग० ११ श० ११ उ० । नाया० । उवा० । बुह० । ओह० ।

**वय-** न० [व्रत]

नियमे, । निर० ।

व्रते, उवा० २ अ० । आचा० ।

स्थूलप्राणातिपातविरमणे, ठा० ४ ठा० । गच्छा० ।

सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं १, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं

२, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं ३, सव्वाओ मेहुणाओ

वेरमणं ४, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ५' इति व्रतानि ।

गच्छा० १ अधि० ।

महाव्रतेषु, कल्प० १ अधि० १ । तं० ।

मूलगुणेषु, सम० ।

**वय-१** न० पुं० [वयस]

देहावस्थाविशेषे, आव० म० १ अ० ।

**वय-२** पुं० [व्यय]

लब्धस्य प्रणाशे, निसि० १ उ० ।

**वय-३** न० [वाक्य]

वचने, 'पच्छा वयमुयाहरे' दश० ७ अ० २ उ० ।

**वयंस-** पुं० [वयस्य] स्त्री० ।

मित्रे, आव० म० १ अ० ।

**वयंसि-** पुं० [वचस्विन्]

वचनं सौभाग्याद्युपेतं यस्यास्ति स वचस्वी नाया० १ श्रु० १ । निर०

वक्रादित्वादनुस्वारः । वचनसौभाग्योपेते, निर० १ अ० ।

**वयगुत्त-** त्रि० [वचोगुप्त]

वचनगुप्तया गुप्ते, उत्त० १२ अ० ।

**वयगुत्ति-** स्त्री० [वागुत्ति]

'सच्चा तहेव मोसा य, सच्चा मोसा तहेव य । चउत्थी

असच्चमोसा उ, वयगुत्ती चउव्विहा' । उत्त० २४ अ० ।

इति चतुर्विधे वचोगोपने, निसि० १ उ०

**वयग्गाम-** पुं० [व्रजग्राम]

गोकुले, आव० चू० १ अ० । आव० म० ।

**वयछक्क-** न० [व्रतषट्क]

प्राणातिपातादीनां रात्रिभोजनविरतिषष्ठानां व्रतानां षट्के, दश०

६ अ० । आव० ।

**वयजोग-** पुं० [वाग्योग]

निसृज्यमानभाषापुद्गलसमूहरूपे । विशेषे ।

वाग्व्यापारे, सूय० २ श्रु० ४ अ० । उव० ।

**वयण-** न० [वचन]

भणने, ठा० ३ ठा० ३ उ० । अणुओ० ।

वाक्याक्रियायाम् । रा० । पण्हा० ।

'वग्गु ति वा वय ति वा वयण ति वा एगट्ठा' आव० चू० १ अ० ।

**वयण-** न० [वदन]

मुखे, नाया० १ श्रु० १ अ० । ठा० ।

**वयणकप्प-** पुं० [वचनकल्प]

वचनवक्तव्यताप्रतिबद्धे कल्पे, पंच० भा०

**वयणत्ति-** न० [वचनत्रिक]

एको द्वौ बहव इत्येकत्वाद्यभिधायक-शब्दत्रये, विशेषे । पण्हा० ।

**वयणपज्जाय-** पुं० [वचनपर्याय]

वचनरूपा वस्तुनः पर्याया वचनपर्यायाः । ये शब्दाः सर्वं वस्तु

सम्पूर्णं प्रतिपादयन्ति । तेषु, सर्वेषामपि वस्तूनामभिलाषवाचकेषु

शब्देषु, विशेषे ।

**वयणप्भूय- त्रि० [वचनप्रभूत]**

वचनैर्नयभेदाः प्रभूता वचनप्रभूताः अल्पाक्षरेषु, उत्त० १३ अ० ।

**वयणभिण्ण- न० [वचनभिन्न]**

यत्र वचनव्यत्ययो भवति तादृशे सूत्रदोषे, अणुओ० । आव० म० ।

**वयणमाला- स्त्री० [वदनमाला]**

मुखपुञ्जे, जंबू० २ वक्ष० ।

**वयणमाला- स्त्री० [वचनमाला]**

उक्तिसमूहे, 'वयणसहस्रेहिं अभिथुणिज्जमाणे' जंबू० २ वक्ष० ।

**वयणमित्त- न० [वचनमात्र]**

निर्हेतुके केवलवचने, यथा कश्चिद्व्यथेच्छया कञ्चित् प्रदेशं लोकमध्यतया जनेभ्यः प्ररूपयति । अणुओ० । आव० म० । बुह० ।

**वयणरुद्ध- त्रि० [वचनरौद्र]**

वदनेन भीषणे, पण्हा० ३ अ०

**वयणविगण्प- पुं० [वचनविकल्प]**

भाषणभेदे, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**वयणविभक्ति- स्त्री० [वचनविभक्ति]**

उच्यते एकत्वद्वित्वबहुत्वलक्षणोऽर्थो यैस्तानि वचनानि, विभज्यते कर्तृत्वादिलक्षणोऽर्थो यया सा विभक्तिर्वचनानां विभक्तिर्वचन- विभक्तिः । प्रथमादिषु व्याकरणपरिभाषितेषु प्रत्ययेषु, ठा० ।

**वयणविभक्तिअकुशल- पुं० [वचनविभक्त्यकुशल]**

वाच्येतर प्रकारानभिज्ञे, दश० ।

**वयणविभक्तिकुशल- पुं० [वचनविभक्तिकुशल]**

वाच्येतरवचनप्रकाराभिज्ञे, दश० ।

**वयणसंथव- पुं० [वचनसंस्तव]**

वचनमात्रहेतुके परिचये, निसि० २ उ० ।

**वयणसंपया- स्त्री० [वचनसंपद्]**

गणिसंपद्धेदे । दश० ।

**वयणाणुओग- पुं० [वचनानुयोग]**

धर्मकथानुयगादिरूपे अनुयोगभेदे, आचा० ।

**वयणाभिघाय- पुं० [वचनाभिघात]**

खरादिवचनप्रहारे, दश० ९ अ०

**वयणिज्ज- त्रि० [वचनीय]**

बालवचनैर्गर्ह्ये, आचा० १ श्रु० ६ अ० ४ उ० ।

**वयणिरोह- पुं० [वाङ्निरोध]**

अकुशलवाचोऽकरणे, आव० ४ अ० ।

**वयदंड- पुं० [वाग्दण्ड]**

दुष्प्रयुक्तवाचि, सम० ३ सम० ।

**वयसमिय- त्रि० [वयःसमित]**

वाचा समिते, अकुशलवाङ्निवृत्ते, सूय० २ श्रु० २ अ० ।

**वयसुहया- स्त्री० [वचःसुखता]**

वाचि सुखं यस्याऽसौ वाक्सुखस्तस्य भावो वाक्सुखता । सर्वेषां श्रोत्रमनःप्रसादकारिण्यां वाचि पन्न० २३ पद ।

**वयस्स- पुं० [वयस्स]**

समानवयसि गाढतरस्त्रेहविषये, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

'वयस्याश्चिन्तयामासुः, स्नेहः सत्योऽनयोर्न वा,' आव० १ अ० ।

**वयी- स्त्री० [वाचा]**

वचनं वाक्, वाग्योगे । ठा० १ ठा० ।

**वर- त्रि० [वर]**

प्रधाने, उत्त० १ अ० । नाया० । ठा० । कल्प० । सूय० । अणुओ० । आव० म० । जीवा० । पन्न० । उव० ।

उत्तमे, पन्न० १ पद

श्रेष्ठ, सूय० २ श्रु० २ अ० । सूर० । रा० । आव० । नाया० । न०

वरिष्ठे, आव० चू० २ अ० ।

भव्य, 'वरं मे अप्पा दंतो संजमेण तवेण य ।' उत्त० १ अ० ।

परिणेतारि, नाया० २ श्रु० १ वर्ग० १ अ० ।

**वंक- पुं० [वराङ्क]**

प्रधानलक्षणे, उव० ।

**वरंकुर- पुं० [वराङ्कुर]**

प्रथममुद्भिद्यमानेऽङ्कुरे, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

वराङ्कुरोपेते, रा० ।

**वरंग- न० [वराङ्ग]**

गण्डे, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**वरंतिया- स्त्री० [वरान्तिका]**

श्रेष्ठदिशि, यस्यां दिशि तीर्थकर-केवलमिनःपर्यायज्ञानावधि- ज्ञानिचतुर्दशपूर्वधरादयो यावत् युग प्रधाना विहरन्ति । आव० म०

**वरकडग- पुं० [वरकटक]**

वरकङ्कणे, कल्प० १ अधि० १ क्षण ।

वरैः-प्रधानैः कटकैः-वल्यैः तुटकैश्च बाह्याभरणैः स्तम्भित इव भुजो यस्य स तथा । कल्प० १ अधि० ३ ।

**वयदुष्पणिहाण- न० [वाग्दुष्पणिधान]**

कृतसामायिकस्य निष्ठुरसावद्यवाक्प्रयोगे, आव० ६ अ० ।

**वयधर- पुं० [व्रतधर]**

भरतक्षेत्रजपद्मप्रभतीर्थकरसमकालिके ऐरवतषष्ठजिने, व्रतधारि- शब्दोऽप्यत्र सम० ।

**वयपडिमा- स्त्री० [व्रतप्रतिमा]**

दंसणपडिमाजुत्तो, यततो णुव्वए निरइयारे । अणुकंपाइगुणजुत्तो जीवो इह होइ वयपडिमा' । इत्युक्तलक्षणे उपासकप्रतिमाभेदे, उवा० १ अ० ।

**वयपत्त-** त्रि० [वयःप्राप्त]

यौवनं प्राप्ते, पिंड० ।

**वयपरिणाम-** पुं० [वयःपरिणाम]

वृद्धत्वे, 'वयपरिणामो य जरा' उक्त० ।

**वयपुण्ण-** न० [वाक्पुण्य]

वाचा तीर्थकरादिप्रशंसनलभ्ये पुण्ये, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**वयप्पहाण-** पुं० [व्रतप्रधान]

व्रतं-यतित्वं प्रधानमुत्तमं शाक्यादियतित्वापेक्षया निर्ग्रन्थयति-  
त्वात्, येषां व्रतेन वा प्रधाना ये ते तथा । निर्ग्रन्थश्रमणेषु, उव० ।

**वयभंग-** पुं० [व्रतभङ्ग]

नियमभङ्गे, आव० । कल्प० १ अधि० १ क्षण ।

**वयमंत-** त्रि० [व्रतवत्]

रात्रिभोजनविरमणषष्ठपञ्चममहाव्रतधारिणि आचा० २ श्रु० १ चू० १

**वयमाण-१** त्रि० [वदत्]

वाचं ब्रुवति, सूय० १ श्रु० २ अ० २ उ० ।

**वयमाण-२** त्रि० [व्रजत्]

गच्छति, । ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**वयर-** पुं० [बदर]

'बोर' इति प्रसिद्धे वृक्षभेदे, आचा० १ श्रु० १ अ० ५ उ० । आव० म०

**वयरी-** स्त्री० [वैरी]

कोटिककाकन्दिकाभ्यां निर्गतस्य कोटिकगणस्य तृतीयशाखा-  
याम्, कल्प० २ अधि० ८ ।

**वयविणय-** पुं० [वाग्विनय]

वाचो विनयार्हेषु कुशलप्रवृत्तौ, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**वयसंकिलेस-** पुं० [वचःसंकलेश]

संकलेशभेदे, ठा० ५ ठा० २ उ०

**वयसमिद्-** स्त्री० [वचःसमिति]

वचोऽकुशलत्वनिरोधे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**वरकणग-** न० [वरकनक]

जात्यसुवर्णे, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

वरं-प्रधानं सुवर्णम् वरसुवर्णम् । पीतसुवर्णे, जंबू० १ वक्ष० । रा०

**वरकणगणिघस-** पुं० [वरकनकनिघर्ष]

वरकनकस्य जात्यसुवर्णस्य यः कषपट्टको निघर्षः । स वरकनक  
निघर्षः । पीतसुवर्णस्य कषपट्टके रेखायाम्, जीवा० ३ प्रति० ४ ।

**वरकणगथूभियाग-** न० [वरकनकस्तूपिकाक]

वरकनका वरकनकमयी स्तूपिका शिखरं यस्य तत् वरकनक-  
स्तूपिकाकम् । स्वर्णमयशिखरे, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । रा० ।

**वरकमल-** पुं० [वरकमल]

प्रधानहरिणे, श्रेष्ठकमले च । जंबू० २ वक्ष०

**वरकमलगम्भ-** पुं० [वरकमलगर्भ]

श्रेष्ठकमलमध्यभागे, वरकमलस्य प्रधानहरिणस्य गर्भ इव गर्भो  
जठरसंभूतत्वसाधर्म्यात्, वर कमलगर्भः । कस्तूरिकायाम्, नाया०  
१ श्रु० ८ अ० ।

**वरकमलगम्भगौरी-** स्त्री० [वरकमलगर्भगौरी]

वरकमलगर्भः-कस्तूरिका तद्वत् गौरी अवदाता वरकमलगर्भगौरी  
श्यामवर्णकत्वात्कस्तूरिकायाः । श्यामच्छाय, नाया० १ श्रु० ८ अ०

**वरकमलगम्भवण्णा-** स्त्री० [वरकमलगर्भवर्णा]

श्यामवर्णायाम्, नाया० १ श्रु० ८ अ० ।

**वरकमलपट्टाण-** त्रि० [वरकमलप्रतिष्ठान]

वरं प्रधानं यत्कमलं तत्प्रतिष्ठानमाधारो येषां ते वरकमल  
प्रतिष्ठानाः, उत्तमकहलाहितेषु, रा० ।

**वरकम्म-** न० [वरकर्मन्]

विवाहसमये वरपक्षीये कर्मणि, भगवत ऋषभस्य वरकर्म  
देवेन्द्रोऽकार्षीत्, द्वयोर्वरमहिलकयोर्नन्दासुमङ्गलयोर्वधूकर्मदेव्यो-  
ऽकार्षुः । आव० म० १ अ० ।

**वरकलस-** पुं० [वरकलश]

माङ्गल्ये प्रवरघटे, आव० चू० १ अ० ।

**वरकहा-** स्त्री० [वरकथा]

परिणेतृकथायाम्, पण्हा० ४ अ० ।

**वरकुसुमदाम-** न० [वरकुसुमदामन्]

वराश्च ताः कुसुमदाममालाश्च वरकुसुममालास्ताभिरुज्ज्वलं देदी-  
प्यमानत्वाद् वरकुसुमदाममालोज्ज्वलम् । जीवा० ३ प्रति० ४

**वरकोउय-** न० [वरकौतुक]

श्रेष्ठकुतूहले, वराणि यानि कौतुकानि भूतिरक्षादीनि मङ्गलानि च  
सिद्धार्थकादीनि तद्रूप उपचारः-पूजा तेन कृतं शान्तिकर्म  
दुरितोपशमक्रिया यस्य सः । भग० ११ श० ११ उ० ।

**वरग-** पुं० [वरक]

वरट्टे, धान्यविशेषे, जंबू० २ वक्ष० । भग० ।

मण्यादिमहामूल्ये, आचा० १ श्रु० ७ अ० ७ उ० ।

**वरगन्ध-** पुं० [वरगन्ध]

प्रधानवासे, सम० । उव० । पत्र० ।

**वरगन्धिय-** त्रि० [वरगन्धिक]

वरो गन्धो वरगन्धः सोऽस्यास्तीति वर गन्धिकम् । ततोऽनेक-  
स्वरादितीकप्रत्ययः । सुगन्धयुक्ते, सूर० २० पाहु० । चंद० ।

**वरगवेषिय-** त्रि० [वरगवेषित]

ग्रामनगरादिषु प्रमाणीकृतेन ग्राममहत्तरादिना गवेषिते, निसि० ।

**वरचंदणवंदिय-** त्रि० [वरचन्दनवन्दित]

वरचन्दनं वन्दितं ललाटे निवेशितं येन । चन्दनलिप्त मस्तके भग०

**वरचंपय-** पुं० [वरचम्पक]

राजचम्पके, जंबू०३ वक्ष० ।

**वरचम्म-** न० [वरचर्मन्]

प्रधानचर्मविशेषे, पण्हा०३ अ०

**वरचार-** पुं० [वरचार]

पाण्डवसमकालिके मथुराराजे, 'छट्टं दूयं महुरानयरे तत्थ णं तुमं वरचारं करमल० जाव समोरयह ।' नाया०१ श्रु०७ अ० ।

**वरचीणपट्ट-** न० [वरचीनपट्ट]

दुकूलवृक्षवल्कवृक्षस्यैव यान्यभ्यन्तरहीरतया निष्पाद्यन्ते सूक्ष्म-तराणि भवन्ति तानि चीनदेशोत्पन्नानि वा चीनान्युच्यन्ते पट्टसूत्र-मयानि पट्टानि । वस्त्रभेदेषु, पण्हा०४ अ०

**वरजोह-** पुं० [वरयोध] प्रधानयोधे, पण्हा०४ अ०

**वरण-** न० [वरण]

ग्रहणे, नाया०१ श्रु०८ अ० ।

**वरणा-** स्त्री० [वरणा]

वैराटनगरप्रतिबद्धे जनपदे, वत्सदेशराजधान्यां च । सूय०१ श्रु०५

**वरतरुणीसंपउत्त-** त्रि० [वरतरुणीसंप्रयुक्त]

सुरमणीसंप्रयुक्ते, विपा० २ श्रु०१ अ० ।

**वरतालियंट-** न० [वरतालवृन्त]

व्यजनविशेषे, पण्हा० ४ अ० ।

**वरतुरग-** पुं० [वरतुरग]

जात्याश्चे, जंबू०२ वक्ष० । रा० । उव० ।

**वरदरिसि-** पुं० [वरदर्शिनि]

चरमव्यभिचारित्वेन वस्तुस्वरूपं द्रष्टुं शीलं येषां ते वरदर्शिनः । सम्यग्ज्ञानदर्शनवत्सु, उत्त०२८ अ०  
क्षायिकदर्शिनि, सम०३० सम० ।

**वरदत्त-** पुं० [वरदत्त]

अरिष्टनेमेप्रथमगणधरे, आव०म० । कल्प० । सम० । निर० । आव०चू०  
साकेतमित्रनन्दिनः पुत्रे, विपा० ।

**वरदाम-** न० [वरदामन्]

स्वनामख्याते जलतीर्थे, तच्च भारते वर्षे दक्षिणस्यामैरवते तत्रत्यापेक्षया दक्षिणस्यां विजयक्षेत्रेषु मध्यमभागेषु इत्येवं चतुस्त्रिंशद्विजयक्षेत्रयुगलानि । जंबू०६ वक्ष० । आव०म० ।

**वरधनु-** पुं० [वरधनुष]

ब्रह्मदत्तराजमन्त्रिणो धनुर्नाम्नः सुते, येन ब्रह्मदत्तमातृव्यभिचारो ब्रह्मदत्तं प्रति कथितः । उत्त०१३ अ० । आव०म० । आव०चू० । वव०

**वरधम्मतिथ्यमग-** पुं० [वरधर्मतीर्थमार्ग]

धर्मजिनोक्तरूपस्य तीर्थं पवित्रकरणस्थानकं तस्य मार्गो ज्ञान-दर्शनचारित्ररूपः, वरश्चासौ धर्मतीर्थमार्गश्चेति । मोक्षमार्गे, तं० । ।

**वरधम्मसिरी-** पुं० [वरधर्मश्री]

अतीतायां चतुर्विंशतिकायामन्तिमतीर्थकरे, महानि० ।

**वरपट्टण-** न० [वरपत्तन]

प्रधानपत्तने, उव० । वरवस्त्रोत्पत्तिस्थाने, नाया० १ श्रु०१ अ० ।

**वरपायव-** पुं० [परपादप]

प्रधानद्रुमे, पण्हा० ५ अ० ।

**वरपुंडक-** पुं० [परपौण्ड्रक]

विशिष्टे पुण्ड्रदेशोद्भवे, जीवा० ३ प्रति०४ अधि० ।

**वरपुरिस-** पुं० [वरपुरुष]

वासुदेवे, जीवा० ३ प्रति० ४ । जंबू० । रा० । आव०म० । पन्न० ।

**वरपुरिसवसन-** न० [वरपुरुषवसन]

वरपुरुषो वासुदेवस्तस्य वसनम् वासुदेववस्त्रे, तच्च किल पीतमेव भवतीति, पीतोपमायां वर्ण्यते, आव०म० १ अ० । जीवा० । रा० ।

**वरपोय-** पुं० [वरपोत]

वोहित्ये, पण्हा०४ अ०

**वरप्पसन्ना-** स्त्री० [वरप्रसन्ना]

सुराविशेषे, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**वरफलग-** न० [वरफलक]

प्रधानफलके, पण्हा० ३ अ०

**वरफलिह-** न० [वरस्फटिक]

प्रवलागलायाम्, पण्हा० ३ अ० ।

**वरभवण-** न० [वरभवन]

सामान्यतो विशिष्टे गृहे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० । उव० ।  
वरभवनविशिष्टसंस्थानसंस्थिताः । वरभवनं सामान्यतो विशिष्टं गृहं तस्येव यत् विशिष्टं संस्थानं तेन संस्थिताः । जीवा०३ प्रति०४

**वरमउड-** न० [वरमुकुट]

प्रवरशेखरे, पण्हा० ४ अ०

**वरमल्लधर-** त्रि० [वरमाल्यधर]

वराभरणधारिणि, सूर० २० पाहु

**वरमहिस-** पुं० [वरमहिष]

प्रधाने सौरभेये, जीवा० ३ प्रति०४ अधि० उव० । जंबू० ।

**वरमुत्तम-** त्रि० [वरमोत्तम]

वरा श्रेष्ठा मा लक्ष्मीस्तया उत्तमम् । सुश्रीके, कल्प०२ अधि० ८

**वरमुरय-** पुं० [वरमुरज]

महामर्दले, पण्हा०५ अ० ।

**वररुइ-** पुं० [वररुचि]

नवमनन्दसमकालिके काव्यकर्त्तरि, आव० ४ अ

**वरवइरविगगहिय-** पुं० [वरवज्रविग्रहिक]

वरवज्रस्येव ग्रह आकृतिर्यस्य स वरवज्रविग्रहिकः । भग०२ श०८



**वरवण-** पुं० [वरवर्ण]

प्रधानचन्दने, उव० ।

**वरवराह-** पुं० [वरवराह]

श्रेष्ठशूकरे, तं० । ।

**वरवरिया-** स्त्री० [वरवरिका]

समयपरिभाषया, वरं याचध्वं वरं याचध्वमित्येवं घोषणायाम्, आव०म० १ अ० । आव० ।

**वरवारण-** पुं० [वरवारण]

प्रधानगजेन्द्रे, तं० । । उव० । पण्हा० । जीवा०

मत्तो मदोन्मत्तो यो वरः- प्रधानो भद्रजातिको वारणो हस्ती । विलासवती गतिर्मग्नं येषां ते वरवारणमत्ततुल्य विक्रमविलासित गतयः । जीवा०३

**वरवारुणी-** स्त्री० [वरवारुणी]

वरा चासौ वारुणी वरवारुणी । जीवा० ३ प्रति०४ अधि० । उत्तमवारुणीनामके मदिराभेदे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० । पण्हा० ।

**वरसिद्ध-** न० [वरसिद्ध]

शक्रलोकपालस्य वरशिष्टस्य विमाने, भग०३, श०७ उ० ।

**वरसीधु-** न० [वरसीधु]

वरं च तत्सीधु वरसीधु, जीवा०३ प्रति०४ अधि० । मदिराविशेषे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**वरहिण-** पुं० [वरहिण]

मयूरे, जीवा० १ । निसि० । जंबू० । रा० । पण्हा० । आचा० । पन्न० ।

**वराग-** पुं० [वराक]

तपस्विनि पण्हा० १ अ० । तं० ।

दुःखमोक्षार्थमभ्युद्यते, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।

अपुष्टधर्मिणि, दशा० ६ अ० ।

अशक्ते, यः सर्वथाऽशक्तः पङ्कपायः स वराक उच्यते, बुह० १ उ० २ । आव०म० ।

**वराडय-** न० [वराटक]

दक्षिणापथीय जनपदविशेष । कपर्दके । उत्त०३६ अ० । जीवा० । पन्न० । आव० । अणुओ० । आव०म० । पिंड० ।

**वराह-** पुं० [वराह]

शूकरे, उव० । जंबू० । रा० । प्रव० । जीवा० । पन्न०

**वराहमिहिर-** पुं० [वराहमिहिर]

भद्रबाहुस्वामिभ्रातरि, वाराह्याः संहितायाः कारके स्वनामख्याते द्विजे, कल्प० २ अधि० ८ क्षण० । गच्छा० ।

**वराहरुधिर-** न० [वराहरुधिर]

वराहः शूकरस्तस्य रुधिरम् शूकरशो-णितम्, तद्वि अतिशोणितं भवति । अतिलोहिते वराहरक्ते, रा०

**वराही-** स्त्री० [वराही]

परिव्राजकसम्बन्धिन्यां वराहविकुर्वणात्मिकायां विद्यायाम्, आव० १ अ० । आव०म० । विशेष० । कल्प० ।

**वरिष्ठ-** न० [वरिष्ठ]

प्रधाने, उव० । आचा० ।

**वरिय-** त्रि० [वर्य]

प्रधाने, सूय० २ श्रु०२ अ०३ उ० ।

**वरिस-** न० [वर्य]

‘वत्स संवत्सर संवदित्यादि पर्यायाः’ वत्सरे, उत्त०७ अ० ।

**वरिसकण्ह-** पुं० [वर्षकृष्ण]

काश्यपगोत्रावान्तरगोत्रप्रवर्तके ऋषि-भेदे, तद्गोत्रपुरुषेषु च । ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**वरिसगन्धि-** स्त्री० [वर्षग्रन्थि]

जन्मदिनोत्सवे, यत्र वर्षं वर्षं प्रतिसंख्याज्ञापनार्थं ग्रन्थिबन्धः क्रियते । नाया० १ श्रु० ८ अ० ।

**वरिसधर-** पुं० [वर्षधर]

वर्द्धितकीकरणेन नपुंसकीकृते अन्तःपुरमहल्लक, भग० ९ श०३३ उ० । उव० ।

**वरिसा-** स्त्री० [वर्षा]

श्रावणभाद्रपदमासयोः, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**वरिसारत्त-** पुं० [वर्षारित्र]

भाद्रपदाश्वयुग्मासद्वयरूपे ऋतुभेदे, नाया० १ श्रु०१ अ० । ठा० । सूर० । चंद० । आव०म० ।

**वरुंट-** पुं० [वरुण्ट]

विच्छिके, शिल्पविशेषोपजीवके, पन्न० १६ पद । अणुओ० । ठा०

**वरुण-** पुं० [वरुण]

स्वनामख्याते नागनमृके, भग० ५ श०९ उ० ।

शक्रस्य पश्चिमदिग्लोकपाले, शतभिषजो नक्षत्रस्य देवयोः, ठा०

**वरुणकाइय-** पुं० [वरुणकायिक]

शक्रलोकपालस्य वरुणस्याभियोग्येषु देवेषु, भग०३ श०७ उ० ।

**वरुणदेवकाइय-** पुं० [वरुणदेवकायिक]

शक्रलोकपालस्य वरुणस्याभियोगिकदेवेषु भग० ७ श० ३ उ० ।

**वरुणदेवा-** स्त्री० [वरुणदेवा]

मेतार्यस्य वीरदशमगणधरस्य मातरि, आव०म०१ । आव०चू० ।

**वरुणप्पभ-** पुं० [वरुणप्रभ]

वरुणद्वीपदेवे, सूर०१९ पाहु० ।

शक्रादिलोकपालस्य वरुणस्य उत्पातपर्वते, ठा० १० ठा० ३ उ०

**वरुणवर-** पुं० [वरुणवर]

पुष्करोदसमुद्रस्य सर्वतो द्वीपे, जीवा० ।

**वरुणोद-** पुं० [वरुणोद]

वरुणवरद्वीपस्याभितः समुद्रे, जीवा० ।

**वरुणोववाय-** पुं० [वरुणोपपात]

वरुणो नाम देवस्तत्समयनिबद्धो ग्रन्थस्तद्रूपपातहेतुर्वरुणोपपातः संक्षेपिकदशानां सप्तमेऽध्ययने, ठा० ।

**वरोट्टिया-** स्त्री० [वरोट्टिका]

ब्राह्मया लिपेरन्यतमे लेख्यविधाने, पत्र० १ पद । आव० म० । सम०

**वरोरु-** त्रि० [वरोरु]

वरः प्रधान ऊरुर्विशालश्च यस्य सः । प्रधानोरुयुजिं, कल्प० १ ।

**वलगय-** त्रि० [अवलगक]

पश्चाल्लगित्वा वार्ताश्रावके, आव० १ अ० ।

**वलय-** न० [वलक]

वलयाणि पृथिवीनां वेष्टनानि । घनोदधिघनवाततनुवातलक्षणे, ठा० २ ठा० ४ उ० ।

**वलयमरण-** न० [वलन्मरण]

मरणभेदे, उत्त० ५ अ० ।

**वली-** स्त्री० [वली]

द्वितीये असुरकुमारे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**वव-** न० [वव]

ज्योतिषप्रसिद्धे अध्रुवकरणभेदे, उत्त० ४ अ० । विशेष० । जंबू० । आव० चू० । आव० म० ।

**ववगम-** पुं० [व्यपगम]

व्यवच्छेदने, आव० म० २ अ० ।

**ववगय-** त्रि० [व्यपगत]

अविद्यमाने, सूय० १ श्रु० ३ अ० ४ उ० ।

व्यपगता ऋद्धिर्विभवैश्वर्यं सत्कारश्च सेव्यतालक्षणो येभ्यस्ते । जंबू० २ वक्ष० । उव० ।

**ववट्टावण-** न० [व्यवस्थापन]

निक्षेपे, अणुओ० ।

**ववणीयदोहला-** स्त्री० [व्यपनीतदोहदा]

सर्वथाऽसदोहदायाम्, यस्याः सर्वे दोहदाः पूरिताः । कल्प० १

**ववत्था-** स्त्री० [व्यवस्था]

मर्यादायाम्, बृह० ६ उ० । ठा० ।

स्थितिः समयो व्यवस्था मयदित्यनर्थान्तरम् । आव० चू० २ अ० । ठा०

**ववदेस-** पुं० [व्यपदेश]

प्रतिपादने, सूय० १ श्रु० १५ अ० । आचा० ।

तात्स्थ्यात्तद् व्यपदेशो, यथा-मञ्जाः क्रोशन्ति । आव० म० १ अ०

**ववरोवण-** न० [व्यपरोपण]

विनाशने, प्रच्यावने, आचा० २ श्रु० १ चू० २ अ० १ उ० ।

**ववरोविता-** स्त्री० [व्यपरोपयिता]

भ्रंशयितीरे, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**ववरोविय-** त्रि० [व्यपरोपित]

‘जीवियाओ ववरोविया’ आव० म० १ अ० ।

**ववसायि-** त्रि० [व्यवसायिन्]

अनलसे उद्योगवति, वव० ३ उ० ।

**ववसाय-** पुं० [व्यवसाय]

दुष्करणाध्यवसाये, व्यापारे, उत्त० ३ अ० ।

विशिष्टोऽवसायो निर्णयः । न० ।

निश्चये, पण्हा० १ अ० ।

**ववसायसभा-** स्त्री० [व्यवसायसभा]

व्यवसायनिबन्धनभूता सभा व्यवसायसभा । रा० ।

व्यवसायार्थसभायाम्, यत्र पुस्तकवाचनतो व्यवसायं तत्त्वनिश्चयं करोति देवेन्द्रादिः । ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

**ववसिय-** न० [व्यवसित]

व्यवसाये, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

सौधर्मे, कल्प० १ अधि० ३ ।

अभ्युपगतवति, वव० ३ उ० ।

**ववहरण-** न० [व्यवहरण]

व्यवहारे, व्यवहियत इति व्यवहरणम् । द्रव्यादौ, वव० १ उ०

**ववहरियव्व-** त्रि० [व्यवहर्तव्य]

व्यवहर्त्रा निष्पाद्ये कार्ये, वव० ।

**ववहार-** पुं० [व्यवहार]

व्यवहियते यद्यस्य प्रायश्चित्तमाभवति स तद्दानविषयीक्रियतेऽ-  
नेनेति व्यवहारः । । वव० १ उ० ।

कथंचिदापन्नदोषे व्यपोहाय प्रायश्चित्तलक्षणे, दश० ३ अ० । ठा०  
व्यवहारप्ररूपणा कर्तव्या, तत्र व्यवहारग्रहणेन व्यवहारो व्यव-  
हर्तव्यं चेति द्वितयं सूचितमेव तद्व्यतिरेकेण व्यवहारस्यासंभवात्  
न खलु करणं सकर्मकक्रियासाधकतमरूपं कर्म कर्तारं च विना  
क्वचित्सम्भवदुपलब्धम् । वव० १ उ० ।

**ववहारउत्त-** त्रि० [व्यवहारोक्त]

छेदग्रन्थभणिते, ‘भणिओ नो तक्करणं, तहा य ववहारउत्तं च’ ।  
जीवा० १ प्रति० ।

**ववहारज्झाण-** न० [व्यवहारध्यान]

व्यवहारः स्वकार्यनिर्णयार्थं राजकुलादौ न्यायकारणं तस्य ध्यानम्  
पुत्रधनार्थं देशान्तराऽऽयातसार्थवाहपत्न्योः सपत्न्योरिव दुर्ध्याने,  
आतु०

**ववहारकप्प-** पुं० [व्यवहारकल्प]

प्रायश्चित्तदानसामाचार्याम्, पंच० भा० ।

**ववहारक्खेवणी- स्त्री० [व्यवहारक्षेपणी]**

कथाभेदे, ठा० ४ ठा० ।

**ववहारणय- पुं० [व्यवहारणय]**

संग्रहेण गोचरीकृतानामर्थानां विधिपूर्वकमवहरणं येनाभिसन्धि-  
ना क्रियते स व्यवहारः । व्यवहरणं व्यवहरतीति वा व्यवहियते  
वा अपलप्यते सामान्यमनेन विशेषान् वाऽऽश्रित्य व्यवहारपरो  
व्यवहारः । स एव नयः । ठा० ७ । ठा० ३ उ० । आव०चू० । विशेष०  
अथ व्यवहारनयमाह- व्यवहरणं व्यवहारः । यदिवा विशेषतोऽ-  
वहियते निराक्रियते सामान्यमनेनेति व्यवहारः विशेष प्रतिपादन  
परो व्यवहारनय इत्यर्थः । आव०म० १ अ०

**ववहारभणिय- त्रि० [व्यवहारभणित]**

छेदग्रन्थोक्ते, जीवा०१ प्रति० ।

**ववहारवं- त्रि० [व्यवहारवत्]**

आगमश्रुताज्ञाधारणजीतलक्षणानां पञ्चानामुक्तरूपाणां व्यवहा-  
राणां ज्ञातरि, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।  
व्यवहियतेऽपराधजातं प्रायश्चित्तप्रदानतो येन स व्यवहारः ।  
आगमादिकः पञ्चप्रकारः, सोऽस्यास्तीति व्यवहारवान् । यः  
सम्यगामादिव्यवहारं जानाति, ज्ञात्वा च सम्यक् प्रायश्चित्तदानतो  
व्यवहरति स व्यवहारवानिति भावः । वव०१ उ० ।

**ववहारसच्च- न० [व्यवहारसत्य]**

व्यवहारेण सत्यं व्यवहारसत्यम् । सत्यभेदे, यथा दृढ्यते गिरि-  
र्गलति भाजनम्, अयञ्च गिरिगततृणादिदाहे व्यवहारः प्रवर्तते,  
उदके च गलिते सतीति । ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**ववहारसच्चा- स्त्री० [व्यवहारसत्या]**

व्यवहारतो लोकविवक्षातः सत्या व्यवहारसत्या । लोकव्यवहार-  
मपेक्ष्य साधोरपि तथा ब्रुवतो भाषायाम्, पत्र० ११ पद ।

**ववहाराऽऽभास- पुं० [व्यवहाराभास]**

अयथार्थे व्यवहारे, योऽपारमार्थिकद्रव्यपर्यायप्रविभागमभिप्रेति ।  
ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**ववहारि- त्रि० [व्यवहारिन्]**

व्यवहारः पण्यक्रयविक्रयलक्षणो विद्यते यस्य सः । सांयात्रिके,  
सूय०१ श्रु०११ अ० ।

व्यवहारस्य कर्तरि, व्यवहारच्छेत्तरि, वव०१ उ० ।

**ववहिय- न० [व्यवहित]**

शून्ये, विशेष० ।

यत्र प्रकृतं मुक्त्वा अप्रकृतं व्यासतोऽभिधाय पुनः प्रकृतमुच्यते  
तादृशे सूत्रदोषे, विशेष० । अणुओ० ।

व्यवहितं नाम-अन्तर्हितम्, यत्र प्रकृतमुत्सृज्याप्रकृतं विस्तरतो-  
ऽभिधाय पुनः प्रकृतमधिक्रियते । आव०म०१ अ० ।

**ववहियकप्पणा- स्त्री० [व्यवहितकल्पना]**

साकाङ्क्षाणां व्यवहितानां पदानां सान्निध्यकल्पनालक्षणे व्याख्या-  
नाङ्गे, आचा० १ श्रु०१ अ०५ उ० ।

**ववीलय- पुं० [अपव्रीडक]**

अपव्रीडयति लज्जां मोचयतीति अपव्रीडकः । वव० १ उ० ।

**वस- त्रि० [वश]**

पारतन्त्र्ये, नाया०१ श्रु०८ अ० ।

अस्वायत्ततायाम्, सूय०१ श्रु०४ अ० । नाया० । उव० । सम० । पण्हा०  
बल, नाया०१ श्रु०१७ अ० ।

सामर्थ्ये, । भग० । उव० ।

**वसंत- पुं० [वसन्त]**

लोकोत्तररीत्या नवमे मासे, सूर० १० पाहु० । कल्प० । ठा० ।

ऋतुभेदे, स च चैत्रफाल्गुनौ । नाया०१ श्रु०१ अ० । ।

चैत्रवैशाखाविति लोके, चंद० १२ पाहु० । सूर० । पण्हा० । भग० ।  
अणुओ० ।

**वसंतउर- न० [वसन्तपुर]**

मगधजनपदे स्वनामख्याते नगरे, यत्र समाधिको नाम कुटुम्बी  
प्रतिवसति । सूय० २ श्रु० ६ अ० । आव० । विशेष० । आव०म० ।  
ज्यो० । आव०चू० ।

**वसंतमास- पुं० [वसन्तमास]**

फाल्गुनमासे, चंद० १० पाहु० ।

**वसंतय- पुं० [वसन्तक]**

उज्जयिन्यां प्रद्योतनृपतेर्हस्तिवाहके, आव०४ अ० ।

अम्बष्टे, आव० चू०४ अ० । आव० ।

**वसट्- त्रि० [वशार्त्त]**

वशेनेन्द्रियपारतन्त्र्येण ऋताः पीडिताः वशार्त्ताः । वशं वा  
विषयपारतन्त्र्यमृताः प्राप्ताः वशार्त्ताः । नाया० १ श्रु० १७ अ० ।  
कर्मायत्तेषु, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ० ।

**वसट्मयग- पुं० [वशार्त्तमृतक]**

वशेनेन्द्रियपारतन्त्र्येण ऋतः पीडितो वशार्त्तः, वशं वा  
विषयपारतन्त्र्यमृतः प्राप्ता वशार्त्तः । वशार्त्ततया मृते, उव० ।

**वसट्मरण- न० [वशार्त्तमरण]**

विषयपारतन्त्र्यतया दुःखमरणे, भग० २ श० १ उ० । ठा० ।  
नाया० । सम० । उत्त० । निसि० ।

**वसण- न० [वसन]**

वर्तने, आव०म०१ अ० ।

आवासे, जंबू०२ वक्ष०

चीनकादौ वस्त्र, पंच०भा०५ ।

वस्त्रे, 'चैलं वासं वसनं च, अंसुअं अम्बरं वत्थं' । उत्त० ।  
परिधाने, नाया० १ श्रु० १६ अ० । पत्र० । निसि० ।

**वसण-१ पुं० [वृषण]**

अण्डे, उव० । विपा० । पात्रके, उवा०२ अ० ।

**वसण-२ पुं० [व्यसन]**

आयति, । आव०४ अ० ।

**वसणपत्त- त्रि० [व्यसनप्राप्त]**

इन्द्रियपरायत्तताक्रोडीकृतत्वेनोन्मादं वा प्राप्ते । अणुओ० ।

**वसणभूय- त्रि० [व्यसनभूत]**

आपद्धते, भग०३ श०७ उ० ।

**वसणविणास- पुं० [वृषणविनाश]**

वर्त्तिकरणे, सम० ।

**वसणि- त्रि० [व्यसनिन्]**

सप्तानां व्यसनानामन्यतरेण व्यसनेन युक्ते बुह०१ उ०२ ।

**वसधि- स्त्री० [वसति]**

वसन्ति साधवोऽस्यामिति वसतिः । उपाश्रये बुह०२ उ० । आचा० ।

**वसभ- पुं० [वृषभ]**

वृषभ-पुण्यं तेन भातीति, वृषभः । संथा० ।

गीतार्थे, बुह०३ उ० । आव० ।

उपाध्यायो वृषभानुग इति कृत्वा वृषभ इत्युच्यते । बुह०१ उ०२

महायूथाधिपे, वव० ३ उ० । गवि, जंबू०२ वक्ष० ।

**वसभकरण- न० [वृषभकरण]**

वृषभमुद्दिश्य यत्र किञ्चित् क्रियते तादृशे स्थाने, आचा०२ श्रु०२

**वसभकखेत्त- न० [वृषभक्षेत्र]**

वर्षासु साचार्यगणावच्छेदकगच्छत्रयावासभूतक्षेत्रे, निसि० १७ उ०

**वसभगाम- पुं० [वृषभग्राम]**

तादृशे वृषभावासे, समयपरिभाषिते ग्रामे, वर्षासु एकविंशति र्जना उपलक्षणत्वादृतबुद्धे पञ्चदश जना यत्र जघन्येन संस्तरन्ति स वृषभग्राम उच्यते । उत्कर्षतस्तु द्वयोरपि कालयोद्वात्रिंशत्सहस्रसंख्याको गच्छो यत्र संस्तरति । बुह०३ उ० ।

**वसभवाहण- पुं० [वृषभवाहन]**

गोवाहने ईशानेन्द्रे, जंबू०२ वक्ष० ।

**वसभवीहि- स्त्री० [वृषभवीथि]**

ज्योतिषप्रसिद्धेशुक्रादिमहाग्रहाणां सञ्चरणयोग्ये आकाशमार्गे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**वसभाणुगत- न० [वृषभानुगत]**

वृषभस्य स्वस्थानानुगतकल्पे, सत्त्वे, निसि०२ उ० ।

**वसभाणुजाय- पुं० [वृषभानुजात]**

अनुजातशब्दः सदृशवचनो वृषभस्यानुजातः सदृशो वृषभानुजातः । वृषभाकारेण चन्द्रसूर्यनक्षत्राणि यस्मिन् योगे एव तिष्ठन्ति, तादृशे योगे, सूर०१२ पाहु० ।

**वसभी- स्त्री० [वृषभी]**

अभिषेकायाम्, निसि०१५ उ० ।

**वसमाण- त्रि० [वसत्]**

मासकल्पविहारिणि, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०४ उ० । निसि० ।

वसमाणे उडुबद्धि ए अट्टमासे वासावासं व नवम ए य नवविहविहारंतो वसमाणो भण्णति । निसि०२ उ० ।

वास्तव्ये, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०११ उ० ।

**वसवति- त्रि० [वशवर्तिन्]**

आत्मवशं वर्तितुं शीलमस्येति वशवर्तीवशेन्द्रिय, सूय०१ श्रु०१ अ०

**वसहि- स्त्री० [वसति]**

निवासे, अनुस्थाने, ठा० १ ठा० ।

आवासस्थाने, नाया० १ श्रु०१५ अ० ।

निलये, ग्रामे, जीत० ।

उपाश्रये, बुह०२ उ० ।

**वसहिदानफल- न० [वसतिदानफल]**

वसतिदानफले, बुह० ।

**वसहिपाल- पुं० [वसतिपाल]**

वसतिरक्षके, ओह० ।

**वसा- स्त्री० [वसा]**

शरीरस्नेहे, पण्हा०१ अ०

शरीरावयवे, सम० ।

अस्थिमध्यरसे ठा० ४ ठा० १ उ० ।

वसार्थं व्याघ्रमकरादयो मार्यन्ते । आचा०१ श्रु०१ अ०६ उ० ।

**वसिउ- अव्य० [उषित्वा]**

स्थित्वेत्यर्थे, बुह०१ उ०२ ।

**वसिउं- अव्य० [वसितुम्]**

धातूनामेकार्थत्वात् बन्धितुमित्यर्थे, तं० ।

**वसिष्ठ- पुं० [वशिष्ठ]**

वाशिष्ठमूलगोत्रप्रवर्तके महर्षौ, यद्गोत्रे आर्यसुहस्तिषष्ठगणधरा आसन् । ठा० ७ ठा० ३ उ० । आव०म० ।

पार्श्वनाथस्य तृतीये गणधरे, ठा० ८ ठा० ३ उ० । कल्प० । आव०म० । औत्तराहाणां द्वीपकुमाराणामिन्द्रे, ठा० २ ठा० ३ उ० । भग० । सम०

**वसित्ता- अव्य० [उषित्वा]**

वासं कृत्वेत्यर्थे, 'गिहवासमज्ज्ञे वसित्ता' आचा०१ श्रु०४ अ०४

**वसिम- पुं० [वसिम]**

जनावासभूते जनपदे, बुह०१ उ०३ ।

**वसीकय- त्रि० [वशीकृत]**

पराजिते, आचा०१ श्रु०२ अ०४ उ० ।

**वसीकरण- न० [वशीकरण]**

वश्यताकारके प्रयोगे, विपा० १ श्रु०२ अ० । निसि० । नाया० ।

**वसीकरणसूत- न० [वशीकरणसूत्र]**

अवशा वशाः क्रियन्ते येन तत् दोरके, निसि० ।

**वसु-१ न० [वसु]**

द्रव्ये, संयमे च । आचा०१ श्रु०८ अ०८ उ० । सूय० ।  
वसुनि, द्रव्याभावभेदाद् द्विधा द्रव्यवसूनिमरकतेन्द्रनीलवज्रा-  
दीनि, भाववसूनि सम्यक्तत्वादीनि । आचा०१ श्रु०१ उ० । सूय० ।

**वसु-२ न० [वसु]**

वसुद्रव्यं तद्भूतः कषायकालिकादिमलापगमाद्, वीतराग इत्यर्थः  
साधौ, 'वीतरागो वसुर्ज्ञेयो जिनो वा संयतोऽथवा' । आचा०१  
श्रु०६ अ०२ उ० ।

**वसु-३ न० [वसु]**

जीवप्रादेशिकाचार्यस्य निहवस्य तिष्यगुप्तस्य गुरौ, चतुर्दशपूर्वणि  
साधौ, ठा० ७ठा० ३उ० । आव०म० । उत्त० । विशेष० । आव०चू० ।  
देवे, पण्हा०३ अ०

**वसु-४ न० [वसु]**

धनिष्ठानक्षत्रस्य वसवो देवताः । सूर० १० पाहु० अणुओ० । ज्यो० ।

**वसु-५ न० [वसु]**

मल्लीपूर्वभवजीवस्य महाबलस्य बालवयस्ये, नाया०१श्रु०८ अ०

**वसुंधरा- स्त्री० [वसुंधरा]**

चमरस्य असुरेन्द्रस्याग्रमहिष्याम्, ठा० ४ ठा० १ उ० । भग० ।  
ईशानाग्रमहिष्याम्, ठा० ५ ठा० २ उ० । भग० । नाया० ।  
नवमचक्रिणोऽग्रमहिष्याम्, सम० ।  
पृथिव्याम्, 'आव०म०१ अ० ।  
'वसुन्धरं च स्ववफासविसहे' पृथिवीवत् शीतातपाद्यनेकविध-  
स्पर्शक्षमः । नाया०१ श्रु०५ अ० ।  
जम्बूद्वीपे मन्दरस्य दक्षिणे रुचकपर्वते वैडूर्यकूटवासिन्यां  
दिक्कुमार्याम्, ठा० १ ठा० ।

**वसुंधरी- स्त्री० [वसुंधरी]**

जीवानुशासनवृत्तिकरणोपष्टम्भकस्य दोहट्टिवसतिवासिनः जासक  
श्रावकस्य भार्यायाम्, जीवा० १ प्रति

**वसुगुप्ता- स्त्री० [वसुगुप्ता]**

उत्तरपाश्चात्यरतिकरपर्वतस्य दक्षिणदिग्व्यवस्थितरत्नोच्चयापुरी-  
वास्तव्यायामीशानेन्द्रस्याग्रमहिष्याम्, ठा० ४ ठा० २ उ० । भग०

**वसुदत्त- पुं० [वसुदत्त]**

जयन्तीनामपुरीवास्तव्ये गृहपतौ वसुन्धरापतौ, पिंड० ।  
सोमदत्तभार्यायां बृहस्पतिदत्तमातरि । विपा० २ श्रु०१ अ० ।

**वसुदेव- पुं० [वसुदेव]**

कृष्णस्य नवमवासुदेवस्य पितरि, सम० । अंत० । आव०म० ।  
ठा० । आव० । उत्त० ।

**वसुदेवहिंडी- [देशी]**

स्वनामख्याते ग्रन्थे, बुह० ।

**वसुपुज्ज- पुं० [वसुपूज्य]**

वासुपूज्यजिनपितरि, सम० । आव०चू० । आव० । प्रव० ।

**वसुभूइ- पुं० [वसुभूति]**

पाटलिपुरे जिनकल्पं प्रतिपन्नस्य महागिरेः शिष्ये, आव०चू० ४  
अ० । आव०म० । आव० ।

**वसुमई-१ स्त्री० [वसुमती]**

चम्पाराजस्य दधिवाहनस्य धारिणीदेव्यां जातायां पुत्र्याम्, आव०  
१ अ० । आव०म० । कल्प० ।

**वसुमई-२ स्त्री० [वसुमती]**

भीम-राक्षसेन्द्रस्य द्वितीयाग्रमहिष्याम् । ठा० ४ ठा० ।

**वसुमं- त्रि० [वसुमत्]**

वसूनि द्रव्यभावभेदाद् द्विधा, द्रव्यवसूनिमरकतेन्द्रनीलवज्रा-  
दीनि, भाववसूनिमरकत्वादीनि, तानि यस्य यस्मिन्वा सन्ति स  
वसुमान् । .....

द्रव्यवति, आचा० १ श्रु०१ अ०७ उ० ।

संयमवति मूलोत्तरगुणानां सम्यग्विधायिनि, सूय०१ श्रु० १३ अ० ।

निवृत्तारम्भे, आचा०१ श्रु०५ अ०३ उ० । सूय० ।

**वसुमित्त- पुं० [वसुमित्र]**

ब्रह्मदत्तचक्रवर्तिश्वशुरे, येन कूटव्यतिकरे पुस्तीनामकन्या दत्ता ।  
उत्त० १३ अ० ।

**वसुमिता- स्त्री० [वसुमित्रा]**

उत्तरपश्चिमरतिकरपर्वते पश्चिमायां सर्वरत्नानाम्नां राजधान्या-  
मधिष्ठितायामीशानेन्द्रस्याग्रमहिष्याम्, ठा० ३ ठा० ३उ० । भग० ।

**वसुया- स्त्री० [वसुका]**

उत्तरपश्चिमरतिकरपर्वते पूर्वदिक्स्थरत्नाख्यो पर्यधिष्ठितायामी-  
शानेन्द्रस्याग्रमहिष्याम्, ठा० ३ ठा० ३ उ० । भग० ।

**वसुल- पुं० [वृषल]**

शूद्रे, आचा०२ श्रु०१ चू०४ अ०१ उ० ।

कस्मिंश्चिद्देशे गौरवार्थे पुरुषामन्त्रणे 'वसुले' ति प्रयुज्यते ।

नाया०१ श्रु०९ अ० ।

वसुल इति परुषं नैवमालपेत् । दश०७ अ० ।

**वसुवम्मण- पुं० [वसुवर्मन्]**

ऋषभदेवस्य षट्षष्टितमे पुत्रे, कल्प० १ अधि०७ क्षण ।

**वसुसूरि- पुं० [वसुसूरि]**

तिष्यगुप्तस्य जीवप्रादेशिकाचार्यस्य गुरौ, विशेष० ।

**वसुहा- स्त्री० [वसुधा]**

पृथ्व्याम्, विशेष० ।



**वसुहारा- स्त्री० [वसुधारा]**

वसु द्रव्यं तस्य धारा सततपातजनिता वसुधारा । देवैः कृतायां  
स्वर्णदीनाराणां वृष्टौ, उत्त० १२ अ० ।  
सुवर्णवृष्टौ, आव० १ अ० । आव० म० । कल्प० ।  
हिरण्यप्रपातरूपायाम् । आव० म० १ अ० ।  
धारायाम्, भग० १५ श० । आव० म०  
तीर्थकरजन्मादिष्वाकाशाद् द्रव्यवृष्टौ, भग० ३ श० ७ उ० । सम०

**वसुवरिचर- पुं० [वसूपरिचर]**

उपरिचरे वसुराजे । जीवा० ३ प्रति० १ अधि० २ उ० ।

**वसोवगय- त्रि० [वशोपगत]**

वशमुपगते, वश्ये, सूय० १ श्रु० ५ अ० २ उ० ।

**वह- पुं० [व्यथ]**

व्यथयतीति व्यथः । लकुटादिप्रहारे, सूय० १ श्रु० ५ अ० २ उ० ।  
दण्डादिघाते, उत्त० १ अ० ।

**वहंत- त्रि० [वहत्]**

योगवाहिनि, बुह० १ उ० २ । निसि० ।  
परिभोगं कुर्वति, निसि० ६ उ० ।

**वहग- त्रि० [व्यथक]**

चपेटादिना ताडके, जंबू० २ वक्ष० ।

**वहण- न० [वहन]**

यानपोते, पण्हा० १ अ०

**वहपरीसह- पुं० [वधपरीषह]**

त्रयोदशे परीषहे, आव० ४ अ० ।

**वहमाण- त्रि० [वहमान]**

नद्यादिश्रोतोवर्तिव्याप्रियमाणे, उव० ।

**वहिय- त्रि० [व्यथित]**

पीडिते, आव० म० १ अ० ।

**वहिलग- पुं० [वहिलक]**

करभीवेसरबलीवर्दप्रभृतौ, बुह० १ उ० ३ । निसि० ।

**वा-अव्य० [वा]**

विकल्पे, नाया० १ श्रु० २ अ० । वव० । निसि० । बुह० । उत्त० ।  
पण्हा० । ठा० । उव० । रा० ।  
उत्तर-पक्षापेक्षया विकल्पे, आचा० १ श्रु० १ अ० १ उ० । रा० ।  
पूर्वविकल्पापेक्षया समुच्चये, चंद० १ पाहु० । वव० । जीत० । दशा० ।  
विभाषायाम्, आव० ४ अ० । वव० ।  
पक्षान्तरद्योतने, आचा० १ श्रु० ८ अ० १ उ० । सूर० ।  
अथवाऽर्थे, विशेष० । इवार्थे, विशेष० ।  
व्यवस्थायाम्, प्रति० ।  
अप्यर्थे, कल्प० १ अधि० ६ । आव० म० ।

पातनासूचने, विशेष० ।

आनन्तर्ये, सूय० १ श्रु० १६ अ० ।

अवधारणे, ठा० ८ ठा० १ उ० ।

उपमायाम्, न० ।

समुच्चये, विपा० १ श्रु० २ अ० । सूर० । रा० । जंबू० ।

वा विकल्पोपमानयोः, वव० १ उ० ।

उपमानान्तरापेक्षया समुच्चये जंबू० १ वक्ष० ।

पादपूरणे, उत्त० २८ अ० । निसि० ।

**वाइ- पुं० [वादिन्]**

परेणाजेये मन्त्रवादिनि, धातुवादिनि, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

तीर्थिके, ठा० ४ ठा० ४ उ० । पण्हा० । सूय० ।

**वाइंगणी- स्त्री० [वृन्ताकी]**

‘वैगन’ इति प्रसिद्धे शाके, आव० ४ अ०

**वाइत्त- न० [वादित्र]**

वाद्ये, कल्प० १ अधि० ७ । उव० ।

**वाइत्तए- अव्य० [वाचयितुम्]**

सूत्रं पाठयितुम्, अथवा श्रावयितुमित्यर्थे बुह० ४ उ० ।

**वाइद्ध- त्रि० [व्यादिग्ध]**

विशिष्टद्रव्योपदिग्धे, वक्रे, । भग० १६ श० ४ उ० ।

विपर्यस्तरत्नमालावदनेकप्रकारे, आव० ४ अ० आव० चू० ।

**वाइद्धखर- न० [व्याविद्धाक्षर]**

विपर्यस्तरत्नमालागतरत्नानीव विद्धानि विपर्यस्तान्यक्षराणि यत्र  
तत्तथा । असंग्रथिते, अणुओ० । विशेष० ।

**वाइम- न० [वातव्य]**

कुविन्दैर्वस्तुविनिर्मितेऽश्वादिके, दश० २ अ० ।

**वाइय- त्रि० [वाचिक]**

वाकृते, आव० ४ अ० । आव० म० । आव० चू० ।

दुर्वचनादिके, सूय० २ श्रु० २ अ०

येन संरम्भेण वाग्द्रव्याणि मुञ्चति स वाचिकः । विशेष० ।

मद्य, । बुह० ५ उ० । निसि० ।

**वाइय- त्रि० [वाचित]**

आक्षेपपरिहारपूर्वकतया सम्यगुरुपादान्तिके निर्णीतार्थीकृते,  
वव० ३ उ० ।

पाठिते, शिक्षां ग्राहिते, आचा० १ श्रु० ६ अ० ३ उ० ।

**वाइय- पुं० [वातिक]**

वातिको न प्रव्राजनीयः । बुह० ४ उ०

**वाइय- त्रि० [वादित]**

शब्दत्वेन कृते, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

पटहादि वादने, पण्हा० ४ अ० ।

वाद्यकलायाम्, सा च ततविततशुषिरघनवाद्यानां चतुःपञ्चत्येक-  
प्रकारतया त्रयोदशधा । सम० ७२ सम० । पण्हा० । उव० ।

**वाइल- पुं० [वातिल]**

पालकग्रामवास्तव्ये वाणिजके, ततो सामी पालयं नाम गामं गतो तत्थ वाइलो नाम वाणिययो सोऽसिं गृहीत्वा तत्र वीरस्वामिनं प्रति प्रधावित इति स्वशिर एव चिच्छेद । आव०चू०१ अ० ।

**वाइसमोसरण- न० [वादिसमवसरण]**

वादिनस्तीर्थिकाः समवसरन्त्यवतरन्ति एष्विति समवसरणानि । विविधमतमीलकास्तेषां समवसरणानि वादिसमवसरणानि । क्रियावाद्यादिषु वादिमीलकेषु, ठा० ।

**वाईकरण- न० [वाजीकरण]**

अवाजिनो वाजिनः करणम् वाजीकरणम् । रेतोवृद्ध्या अश्वस्येव करणे, विपा० १ श्रु० ७ अ० । तद्धि अल्पक्षीणविशुष्करेत-सामाप्यायन-प्रसादोपजनननिमित्तं प्रहर्षजननार्थम् । ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**वाउ- पुं० [पायु]**

अपाने, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**वाउ-१ पुं० [वायु]**

पवने, आव०४ अ० । चलनलक्षणे, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० । वायुरात्मेति केचित् । पण्हा०१ अ०

**वाउ-२ पुं० [वायु]**

स्वातिनक्षत्रस्य देवे, सूर० १० पाहु० । अणुओ० । जंबू० ।

**वाउकम्म- न० [वायुकर्मन्]**

अपानवायुनिसर्गे, तं० । ।

**वाउकुमार- पुं० [वायुकुमार]**

भवनपतिदेवभेदे, पन्न०१ पद ।

**वाउकलिया- स्त्री० [वातोत्कलिका]**

समुद्रस्येव वातस्योत्कलिकायाम्, जीवा०१ प्रति० । भग० ।

**वाउकाइय- पुं० [वायुकायिक]**

वायुः-पवनः स एव कायो येषां ते वायुकायाः वायुकाया एव वायुकायिकाः । पन्न०१ पद । जीवा० दश० । वायुशरीरत्वेन परिगृहीतेषु एकेन्द्रियजीवभेदेषु, सम० ६ सम० ।

**वाउकाय- पुं० [वायुकाय]**

प्रचण्डवाते, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

**वाउक्खित्त- त्रि० [वातोक्खित्त]**

समीरणोत्पादिते, पिंड० ।

**वाउचारण- पुं० [वायुचारण]**

पवनेष्वनेकदिग्मुखोन्मुखेषु प्रतिलोमानुलोमवर्तिततद्रदेशावली मु-पादाय गतिमत्स्खलित-चरणविन्या समास्कन्दति चारणभेदे, गच्छा०२ अधि० ।

**वाउजीव- पुं० [वायुजीव]**

वायुकायिकजीव, उत्त०३ अ० । आचा० ।

**वाउत्तरवडिंसग- न० [वायुत्तरावतंसक]**

तृतीये देवलोकविमाने, सम०५ सम० ।

**वाउद्धूय- त्रि० [वातोद्धूत]**

वायुकम्पिते, चंद०१८ पाहु० । वातोद्धूता विजयसूचिका वैजयन्ती पार्श्वतो लघुपताकाद्वययुक्तः पताकाविशेषो वातोद्धूतविजयवैजयन्ती । भग० ९ श० ३३ उ० । सूर० । रा० । जीवा० ।

**वाउप्पइया- स्त्री० [वातोत्पतिका]**

पक्षिजातिभेदे, पण्हा०१ अ०

**वाउप्पवेस- पुं० [वायुप्रवेश]**

गवाक्षे, उव० ।

**वाउब्भाम- पुं० [वातोद्भ्राम]**

अनवस्थितवाते, जीवा०१ प्रति० । पन्न० वृष्ट्यव्यभिचारिणि प्रदक्षिणं दिक्षु भ्रमति प्रशस्ते वाते, अणुओ०

**वाउभक्खि- पुं० [वायुभक्षिन्]**

वायुमात्रभक्षके वानप्रस्थे, नि० । उव० ।

**वाउभूइ- पुं० [वायुभूति]**

गौतमगोत्रे इन्द्रभूतेर्भ्रातरि वीरजिनस्य तृतीये गणधरे, सम० १ सम० । आव०म० ।

**वाउय- त्रि० [व्यापृत]**

व्यापारवति, नाया० १ श्रु० ८ अ० । उव० ।

**वाउरिय- पुं० [वागुरिक]**

वागुरा मृगबन्धनं तथा चरन्तीति वागुरिकाः । मृगव्याधे, अणुओ० । आव०म० । ठा० ।

**वाउलग्ग- न० [व्याकुलाग्र]**

सेवायाम्, 'नित्यं वाउलग्गति' सेवां कुर्वन्ति विदधति । जीवा० ।

**वाउलणा- स्त्री० [व्याकुलना]**

धर्मकथादिभिराचार्यस्य समयक्षेपे, वव० ४ उ० ।

**वाउलिय- त्रि० [व्याकुलित]**

आकुलीभूते, बुह०३ उ० । पण्हा० ।

**वाउलियसलिला- स्त्री० [व्याकुलितशलिला]**

विलोलितजलायाम्, पण्हा०३ अ०

**वाउली- स्त्री० [वातोलि]**

वात्स्यायाम्, नाया०१ श्रु०१ अ० । आचा० ।

**वाउल्ल- त्रि० [व्याकुल]**

असमञ्जसे, भग०७ श०६ उ० ।

क्षुब्धे, पण्हा०३ अ०

**वाउल्लिया-** स्त्री० [व्याकुलिका]

रूपके, अणुओ० ।

**वाउसत्य-** न० [वायुशस्त्र]

वायव्ये शस्त्रे, सूय०१ श्रु०८ अ०२ उ०

**वाउसिय-** न० [बाकुश्य]

बकुशत्वे, कश्मलचारित्रत्वे ग्लानत्वादि-कारणं विनाऽपि हस्तपादादिक्षालनशीलत्वे, जीत० ।

**वाउसिय-** पुं० [बाकुशिक]

विभूषणशीले, उव० ।

**वाओस-** त्रि० [व्याक्रोश]

उद्बुद्धे, विशे० ।

**वाकवासि-** पुं० [वल्कवासिन्]

वल्कवाससि वानप्रस्थे, उव० ।

**वाकहण-** न० [व्याकथन]

धर्मकथायाम्, आव०म०१ अ० ।

**वाग्-** पुं० [वल्क]

शणादिवृक्षत्वचि, बुह०१ उ० ।

**वागजोगजुत्त-** त्रि० [वाग्योगयुक्त]

प्राणवायुना सर्वक्रियासु प्रवर्तिते पण्हा०२ अ०

**वागड-** त्रि० [व्याकृत] लोकप्रतीतशब्दार्थे, संथा० ।

**वागड-** त्रि० [व्यापृत]

व्यापारसक्ते, वहमानके, बुह०३ उ० ।

**वागपणिहि-** पुं० [वाक्प्रणिधि]

वाग्नियमे, दश०५ अ०२ उ० ।

**वागमई-** स्त्री० [वल्कमयी]

वल्केषु कृतायाम्, वल्कमयेन वस्त्रेण दोरकेण वल्कलेन कृतायां चिलिमिल्याम्, निसि०१ उ० ।

**वागय-** न० [वल्कज]

वल्कनिष्पन्ने अतसीशणदुकूलादौ, पंच०चू०१ कल्प० ।

**वागरण-** न० [व्याकरण]

व्याक्रिये प्रश्नान्तरमुत्तरतयाऽभीधीयते निर्णायकत्वेन यत् । सम० । परप्रश्नितार्थोत्तररूपे । उव० ।

निर्वचने, ठा० १ ठा० । आव०म० । भग० । नाया० । उवा० । नं० पृष्ठाऽपृष्ठार्थकथने, कल्प०३ अधि० ९ ।

यथाऽवस्थितार्थप्रज्ञापने, आचा० १ श्रु०५ अ०६ उ० ।

उपदेशे, आचा० १ श्रु०१ अ०१ उ० ।

व्याक्रियन्ते लौकिकाः वैदिकाः सामयिकाश्च शब्दा अनेनेति व्याकरणम् । शब्दशास्त्रे, तच्च प्रथममृषभदेवेन शक्रेन्द्रं प्रति कथितमिति ऐन्द्रं व्याकरणं जातम् । आव०म०१ अ० । पण्हा० ।

**वागरणी-** स्त्री० [व्याकरणी]

प्रतिपादिकायाम्, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**वागरमाण-** त्रि० [व्यागृणत्]

व्याकुर्वति, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

**वागरिता-** अव्य० [व्याकृत्य]

प्रतिपाद्येत्यर्थे, सम०५५ सम० ।

**वागलवत्थनिवसिय-** त्रि० [वल्कलवस्त्रनिवसित]

वल्कलं वल्कलस्तस्येदं वाल्कलं, तद् वस्त्रं निवसितं येन स वाल्कलवस्त्रनिवसितः । परिहितवाल्कलवस्त्रे, भग०११ श०९ उ० ।

**वागुरा-** स्त्री० [वागुरा]

मृगबन्धने, सूय०२ श्रु०२ अ० ।

मृगबन्धपाशे । अणुओ० ।

उपानद्विशेषे, यया पादयोरङ्गुलीश्छादयित्वा उपर्यपि छादयति । बुह०३ उ० ।

**वागुरिय-** पुं० [वागुरिक]

वागुरया मृगादिबन्धनरज्ज्वा चरति वागुरिकः । प्रति० ।

लुब्धके, सूय०२ श्रु०२ अ० । ठा० । पण्हा० ।

मृगघातके, बुह०१ उ०३ ।

**वाघाइम-** न० [व्याघातिम]

व्याहननं व्याघातः—पर्वतादिस्खलनम्, तेन निर्वृत्तं व्याघातिमम् । चंद० १८ पाहु० ।

पर्वतादिकारणिके, सूय०२८ पाहु० ।

सितव्याघ्रादिकृते मरणभेदे, ‘वाघाइयमाएसो, अवरद्धो होज्ज अन्नतरणंतो । सलिमहिसीयण्हओ, एयं बाघाइयं मरणं’ आचा० १ श्रु० ८ अ०

**वाघाय-** पुं० [व्याघात]

व्याहनं व्याघातः । स्खलने, सूय० १७ पाहु० । चंद० ।

विलोपे, वव० १० उ० ।

संहारणे, नं० ।

विनाशे, आचा०१ श्रु०६ अ०५ उ० ।

परिमन्थे, बुह०४उ

**वाघायरूव-** त्रि० [व्याघातरूप]

परिक्षयस्वभावे, सूय०१ श्रु०११अ०

**वाघुण्णिय-** त्रि० [व्याघूर्णित]

चञ्चले, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**वाड-** न० [वाट]

वृत्त्यादिपरिक्षिप्तगृहसमूहे, उत्त०३४ अ० ।

कण्टकवाटिकायाम्, उत्त० २२ अ० । आचा० । पण्हा० ।

पाटकेति संज्ञाप्रसिद्धे, निसि०३ उ० ।

**वाडधानग-** न० [वाटधानक]

स्वनामख्याते लघुनगरे, । आव०४ अ० ।

**वाढ-** न० [वाढ]

अत्यर्थे, 'वाढन्ति भाणिऊणं' वाढमित्यभिधायात्यर्थं करोम्यादेशं शिरसि स्वाम्यादेशमित्युक्त्वा । आव०म०१ अ० । उत्त० ।

**वाढंकार-** पुं० [वाढंकार]

एतन्नान्यथेति कथने, विशेष० । न० । आव० म० ।

**वाण-** पुं० [वाण]

मार्गणे, पण्हा०४ अ०

**वाण-** त्रि० [वान]

वनेषु भवे, सम० । प्र० । सम० । भग० । आव० ।

**वाणपथ-** पुं० [वानप्रस्थ]

वनेऽटव्यां प्रस्था-प्रस्थानमवस्थानं वा वनप्रस्था । साऽस्ति येषाम्, तस्यां वा भवा वानप्रस्थाः । वने भवा वाना प्रस्था वा स्थितिः । वनतापसेषु, लोकप्रसिद्ध- तृतीयाश्रमवर्तिषु, पुष्कि० ३ अ० ।

**वाणमंतर-** पुं० [व्यन्तर]

देवभेदे, पत्र०१ पद ।

अन्तरं नामअवकाशः तच्चेहाश्रयरूपं द्रष्टव्यम्, विविधं भवननगरावासरूपमन्तरं येषां ते व्यन्तराः । । पत्र०१ पद ।

**वाणमन्तरी-** स्त्री० [वाणव्यन्तरी]

व्यन्तरदेवस्त्रियाम्, जीवा० ।

**वाणर-** पुं० [वानर]

मर्कटे, पण्हा० १ अ० । आव०चू० । अणुओ० । उत्त० ।

**वाणारसी-** स्त्री० [वाराणसी]

काशीजनपदराजधान्याम्, ठा० १ ठा० ३ उ० । सूय० । नाया० । आव० । पत्र० । अंत० । विपा० ।

**वाणी-** स्त्री० [वानी]

वने भवायाम्, पुष्कि० ३ अ० ।

**वात-** पुं० [वात]

वायुकायिके, जीवा० । भग० ।

**वातकंटग-** पुं० [वातकण्डक]

बहिश्चित्रिते उपरिगपिच्छिले मध्ये जलशून्ये करके, आव०म० १ अ० । जीवा० । जंबू० । रा० ।

**वातकण्ह-** पुं० [वातकृष्ण]

वत्सगोत्रान्तर्गतेऽवान्तरगोत्रप्रवर्तके ऋषौ, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**वातकेत-** न० [वातकेत]

चतुर्थदेवलोकविमाने, सम०५ सम० ।

**वातकूड-** न० [वातकूट]

स्वनामख्याते चतुर्थे देवलोकस्थे विमाने, सम०५ सम० ।

**वातकबंध-** पुं० [वातस्कन्ध]

घनवाततनुवातेषु, ठा० २ ठा० ४ उ०

**वातणिसग-** पुं० [वातनिसर्ग]

अधिष्ठानेन पवननिर्गमे, आव० । आचा० ।

**वातपइट्टिय-** त्रि० [वातप्रतिष्ठित]

वातप्रतिष्ठित उदधिर्घनोदधिस्तनुवातोपरि स्थितत्वात्, भग० ।

**वातपरिगय-** त्रि० [वातपरिगत]

देहगतवायुप्रेरिते, वातपरिगते वा देहे सति बाह्यवातेन चोक्षित इति । ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**वातपलिकखोभ-** पुं० [वातपरिक्षोभ]

वातोऽत्र वात्वा तद्वद्वातमिश्रत्वात् परिक्षोभहेतुत्वात् वात-परिक्षोभ । भग०६ श०५ उ० ।

कृष्णराजौ, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**वातफलहि-** पुं० [वातपरिघ]

परिहननात् परिघोऽर्गला परिघ इव । तमस्काये, ठा० ४ ठा० २ उ०

वातोऽत्र वात्या तद्वदातमिश्रत्वात्परिघश्च दुर्लङ्घ्यत्वात् वात-परिघः । भग०६ श०५ उ० ।

कृष्णराजौ, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**वातफलहक्खोभ-** पुं० [वातपरिघक्षोभ]

वातं परिघवत् क्षोभवति हेतुमार्गं करोतीति वातपरिघक्षोभः । वात एव वा परिघस्तं क्षोभयति यः स तथा । परिघवद्वात-क्षोभकारके, ठा० ४ ठा० २ उ० ।

**वातमंडलिया-** स्त्री० [वातमण्डलिका]

वातोल्याम्, जीवा०१ प्रति० । पत्र० । भग० ।

**वातमंडली-** स्त्री० [वातमण्डली]

मण्डलेनोर्द्धप्रवृत्ते वायौ, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**वाताइद्ध-** त्रि० [वाताविद्ध]

वातप्रेरिते, उवा०७ अ० । उत्त० ।

**वातिक-** पुं० [वातिक]

वातोऽस्यास्तीति वातिकः । विकटे, बुह०५ उ० ।

उच्छ्रितत्वे, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

**वातलिय-** पुं० [वातलिक]

नास्तिके, दश०१ अ० ।

**वाद-** पुं० [वाद]

वदनं वादः । विशेष० । ठा० । न० । सम० ।

वार्तायाम्, बुह० १ उ०३ ।

विकथने, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

स्व दर्शनस्थापनलक्षणे, । संथा० ।

अङ्गीकारे, सूय०१ श्रु०१ अ०४ उ० ।

**वादि-** पुं० [वादिन्]

वादलब्धिसम्पन्ने, निसि० १ उ० ।

**वाबाहा-** स्त्री० [व्याबाधा]

विविधा अबाधा व्याबाधा । आव० म० १ अ० ।

प्रकृष्टपीडायाम्, भग० ८ श० ३ उ० । पत्र० ।

**वाबाहा-** पुं० [व्याम]

व्यामीयते परिच्छिद्यते रज्ज्वाद्यनेनेति व्यामः । तिर्यग्बाहुद्वय-  
प्रसारणप्रमाणे रा० । जंबू० । जीवा० । ठा० ।

**वामण-** न० [वामन]

मडहकोष्ठे संस्थानभेदे, यत्र हि पाणिपादशिरोग्रीवं यथोक्त  
प्रमाणोपेतत्वात् पुनः शेषं कोष्ठं तन्मडहं न्यूनाधिकप्रमाणं  
भवति । ठा० ६ ठा० ३ उ० । अणुओ० । जीवा० । तं० । निसि० ।  
यत्र तु हिट्टिल्लकायं हस्तपादादिकं यथोक्तप्रमाणोपेतमुर-  
उदरादिकं मडहं प्रमाणरहितं भवति । । भग० ।

कालानौचित्येनातिह्रस्व देहे, पण्हा० १ अ० पुं०

वैयाकरणभेदे, यद्वचितं व्याकरणशास्त्रं विंशतेर्व्याकरणानामन्य-  
तमम् । कल्प० १ अधि० ५ ।

**वामणिज्ज-** न० [वामनीय]

गुणदोषं वा संसर्गान्तरेण वमति । संसर्गजे, ठा० १० ठा० ३ उ०

**वामणिया-** स्त्री० [वामनिका]

अत्यन्तह्रस्वदेहायां ह्रस्वोन्नतहृदयकोषायां वा स्त्रियाम्, उव० ।  
भग० । दशा० ।

**वामहण-** न० [व्यामर्दन]

परस्परेण बाह्याद्यङ्गमोटने, नाया० १ श्रु० १ । कल्प० । उव० । भग० ।

**वामप्पमाण-** न० [वामप्रमाण]

प्रसारितभुजयुगलमाने, उव० । जंबू० ।

**वामरत्थ-** पुं० [वामरत्थ]

वामस्थाख्यर्ष्यपत्ये, जंबू० ७ वक्ष० ।

**वामरत्थापण-** पुं० [वामरत्थापन]

वामरत्थर्षियुवापत्ये, यद्गोत्रेऽभिजिदादिगणनया द्वाविंशं नक्षत्रम्  
। जंबू० ७ वक्ष० ।

**वामवट्ट-** पुं० [वामवर्त्त]

प्रतिकूलतया वर्त्तमाने, वव० ३ उ० ।

**वामा-** स्त्री० [वामा]

पार्श्वजिनमातरि वाराणसीराजस्याश्वसेनस्य भार्यायाम्, कल्प० १  
अधि० ६ । सम० ।

**वामेगकुंडलधर-** पुं० [वामैककुण्डलधर]

वामे कर्णे एकमेव कुण्डलं धारयन्ति ये ते तथा । वामकर्णमात्रेण  
कुण्डलधरे दक्षिणे करणे आभरणान्तरधारिणि, उव० । जीवा० ।

**वामोह-** पुं० [व्यामोह]

मूढतायाम्, ठा० ।

**वाय-** पुं० [वात]

वायौ, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**वायंत-** त्रि० [वादयत्]

वाद्यं कुर्वति, उव० ।

**वायंतियववहार-** पुं० [वागन्तिकव्यवहार]

वागेवान्तःपरिसमाप्तिर्वागन्तिकस्तत्र भवो वागन्तिकः स चासौ  
व्यवहारश्चेति । वाङ्मात्रनियमिते व्यवहारे, वव० ४ उ० ।

**वायग-** पुं० [वाचक]

पूर्वगतं श्रुतं सूत्रमन्यच्च विनेयान् वाचयतीति वाचकः ।  
पूर्वगतश्रुतधारिणि, बुह० ६ उ० ।

उपाध्याये, विशेषे० । आव० म० ।

**वायगवर-** पुं० [वाचकवर]

वाचकप्रधाने, पत्र० १ पद ।

**वायगवरवंस-** पुं० [वाचकवरवंश]

वाचकवराः—प्रधानवाचकास्तेषां वंशः—प्रवाहो वाचकवरवंशः ।  
पूर्वधाराणां क्रमभाविपुरुषपूर्वप्रवाहे, नं० ।  
'वायगवरवंसाओ, तेवीसइमेण धीरपुरिसेण । दुद्धरधरेण  
मुणिणा, पुव्वसुयसमिद्धबुद्धीणं । पत्र० १ पद ।

**वायज्जयण-** न० [वाताध्ययन]

द्विगृद्धिदशानां प्रथमेऽध्ययने, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**वायडाग-** पुं० [वाग्डाक]

मुकुलिसर्पभेदे, पत्र० १ पद ।

**वायद्धि-** स्त्री० [वागृद्धि]

वाक्संपत्तौ, आव० म० १ अ० ।

**वायणसंपया-** स्त्री० [वाचनासंपद्]

गणिसंपद्धेदे, वव० ।

**वायणा-** स्त्री० [वाचना]

वाचनं वाचना । गुरुभ्यः श्रवणे, अधिगमे, विशेषे० । ठा० ।

गुरुप्रदत्तेनैव सूत्रस्य परिपाटीरूपे, विशेषे० ।

गुरुसमीपे सूत्राक्षराणां ग्रहणे, उक्त० २९ अ० ।

**वायणाकप्प-** पुं० [वाचनाकल्प]

वाचनाग्रहणसामाचार्याम् पंच० भा० १ कल्प० । पंच० चू० ।

**वायणारिय-** पुं० [वाचनाचार्य]

उपाध्यायादिसन्दिष्टो य उद्देशादि करोति तस्मिन्, अध्यापना-  
चार्य, आव० ४ अ० । आव० चू० ।

**वायणिय-** त्रि० [वाचनीय]

पाठनीये, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।



**वायप्पभ-** न० [वातप्रभ]

चतुर्थे देवलोकस्थे विमानभेदे, सम०५ सम० ।

**वायरुह-** न० [वातरुह]

अनन्तजीववनस्पतिभेदे, पत्र० १ पद ।

**वायलेस-** न० [वातलेश्य]

चतुर्थदेवलोकीये विमानभेदे, सम० ५ सम

**वायव-** त्रि० [वायव]

वायुरस्यास्तीति वायवः । वार्तिके, उवा०१ अ० ।

**वायवन्न-** न० [वातवर्ण]

चतुर्थदेवलोकविमाने, सम० ५ सम० ।

**वायव्या-** स्त्री० [वायव्या]

पश्चिमोत्तरविदिशि, ठा० १० ठा० ३ उ० । विशेष० ।

**वायस-** पुं० [वायस]

काक, आचा० १ श्रु० ९ अ० ३ उ० । पण्हा० । जीवा० । पत्र० । नाया० । अणुओ०

भामेइ तथा दिट्ठिं, चलचित्तो वायसु व्व उस्सगो । आव०५ अ० ।

**वायसंजय-** पुं० [वाक्संयत]

अकुशलवाग्निरोधात्कुशलवाग्निरोधेन संयमवति, दश०१० अ० ।

**वायसपरिमंडल-** न० [वायसपरिमण्डल]

वायसादीनां पक्षिणां यत्र स्थानादिकं स्वराश्रयेणाशुभफलं चिन्त्यते तादृशे निमित्तशास्त्रे, सूय० २ श्रु०२ अ० ।

**वाया-** स्त्री० [वाच्]

वचने, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

इदमित्थ करोमीत्यात्मके वचसि, उत्त०१ अ० । ठा० । विशेष० ।

**वायाभिओग-** पुं० [वागभियोग]

वाचाऽभियोगो वागभियोगः वचसा प्रेरणे, सूय०२ श्रु०६ अ० ।

**वायाम-** पुं० [व्यायाम]

व्यापारे, ठा० १ ठा० २ उ० ।

यथा-लकुटभ्रामणम् । निसि० १ उ० ।

**वायामण-** न० [व्यायामन]

व्यायामकरणे, जीवा० ३ प्रति० १ अधि० ।

**वार-** न० [वार]

पङ्कप्रभायां नरकपृथिव्याम-भिक्रान्तनरके, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**वारग-१** पुं० [वारक]

लघुघटरूपे, आव०म०१ अ० ।

गडुके, उवा०७ अ० ।

**वारग-२** पुं० [वारक]

क्रम, वव०१ उ० ।

परिपाट्याम्, निसि०१ उ० ।

**वारग-३** पुं० [वारक]

गुप्तिगृहे, वव०४ उ० । त्रि० ।

अशुद्धपाठनिषेधके, निसि० । कल्प० । उव० । नाया० ।

**वारगजगण-** न० [वारकजागरण]

वारकेण क्रमेण जागरणम्, एके जाग्रति अन्ये स्वपन्ति तदन्तरं ते जाग्रत्यन्ये स्वपन्ति इत्येवरूपे क्रमिकजागरणे, वव० ४ उ० ।

**वारण-** न० [वारण]

निषेधने, आव०म०१ अ० । वव० ।

**वारणा-** स्त्री० [वारणा]

वारणं-वारणा । निषेधनायाम्, आव० ।

**वारदत्त-** पुं० [वारदत्त]

राजगृहे नगरे स्वनामख्याते राज्ञि, अंत० ।

**वारधावण-** न० [वारधावन]

गङ्घटधावने, दश०५ अ०१ उ० ।

**वारसावत्त-** पुं० [द्वादशावर्त]

सूत्राभिधानगर्भे कायव्यापारविशेषे, आव०३ अ० ।

अश्वलक्षणविशेषे च, द्वादशावर्ताश्च इमे वराहोक्ताः-’ये प्रपाण गलकर्णसंस्थिताः, पृष्ठमध्यनयनोपरिस्थिताः । ओष्ठ सक्थिभुज-कुक्षि पार्श्वगास्ते ललाटसहिताः सुशोभनाः । जंबू०३ वक्ष० ।

**वाराह-** त्रि० [वाराह]

वाराहसम्बन्धिनि नवमतीर्थकरप्रथमशिष्ये, सम० ।

षष्ठबलदेवपूर्वभवजीवे, सम० ।

**वारि-** स्त्री० [वारि]

गजबन्धने, । आव० । बुह० । नपुं० ।

**वारिखल-** पुं० [वारिखल]

प्रव्राजके, बुह०१ उ०४ ।

**वारिज्जमाण-** त्रि० [वार्यमाण]

निवर्त्यमाने, भग० १५ श० ।

**वारिधाराचारण-** पुं० [वारिधाराचारण]

प्रावृषेण्यादिजलधाराविनिर्गतवारिधारावलम्बनेन प्राणिपीडामन्तरेण याति चारणभेदे, गच्छा० २ अधि० ।

**वारिप्पवेशन-** न० [वारिप्रवेशन]

जले प्रक्षेपे, पण्हा० १ अ०

**वारिभद्ग-** पुं० [वारिभद्रक]

अब्भक्षे, शैवलाशिनि, नित्यं स्नानपानादिधावनाभिरते वा । सूय०१ श्रु०७ अ० ।

भागवतविशेषे, सूय०१ श्रु०७ अ० ।

**वारिय-** त्रि० [वारित]

अहिताग्निवारिते, आव०म० । निसि० ।

**वारिय-** अव्य० [वारयित्वा]

प्रतिषिध्येत्यर्थे, सूय०१ श्रु०६ अ० ।

**वारिवसह-** पुं० [वारिवृषभ]

वहने, आव०५ अ० ।

**वारिसिय-** न० [वार्षिक]

वर्षोद्धवे, आव०५ अ० ।

**वारिसेण-** पुं० [वारिषेण]

वसुदेवस्य धारिण्यां जाते पुत्रे, अंत० ।

**वारिसेणा-१ स्त्री० [वारिषेणा]**

देवकुरुषु विद्युत्प्रभवक्षस्कारपर्वतस्य कनककूटवास्तव्यायां दिक्कुमार्याम्, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

अधो लोकवास्तव्यायां दिक्कुमार्याम्, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

ऊर्ध्वलोकवासिन्यां दिक्कुमार्याम्, आव० १ अ० । जंबू० । आव०चू०

**वारिसेणा-२ स्त्री० [वारिषेणा]**

जम्बूमन्दरस्योत्तरे रक्तावतीनदीसङ्गतायां महानद्याम्, ठा०५ ठा०  
शाश्वतजिनप्रतिमायाम्, रा० ।

**वारुण-** पुं० [वारुण]

वरुणदेवस्वामिके अस्त्रादौ, सूय०१ श्रु०८ अ०

आर्द्रानक्षत्रस्वामिनि, अणुओ० ।

अहोरात्रस्य पञ्चदशे मुहूर्ते, जंबू० ७ वक्ष० । ज्यो० । कल्प० । चंद० ।

**वारुणिप्रभ-** पुं० [वारुणीप्रभ]

वरुणोदसमुद्रदेवे, ठा० ४ ठा० ४ उ० । सूर० ।

**वारुणी-१ स्त्री० [वारुणी]**

वरुणो देवता यस्याः सा वारुणी । भग०१० श०१ उ० । ठा० । विशेष०

वरुणदेवत्यायां पश्चिमदिशि, आव०म०१ अ० ।

**वारुणी-२ स्त्री० [वारुणी]**

उत्तररुचकपर्वतस्य रत्नसञ्चयकूटवास्तव्यायां दिक्कुमार्याम्, आव०  
१ अ० । आव०चू० । आव०म० । ठा० ।

**वारुणी-३ स्त्री० [वारुणी]**

व्यक्तस्य वीरगणधरस्य मातरि, आव०चू० १ अ० । आव०म० ।

**वारुणी-३ स्त्री० [वारुणी]**

मदिरायाम्, उत्त०३४ अ० । ठा० ।

**वारुणोद-** पुं० [वारुणोद]

वारुणी-सुरा तथा समानं वारुणम् ।

वारुणमुदकं यस्मिन्स वारुणोदकः ।

लवणादिगणनया चतुर्थ-समुद्रे, ठा० ४ ठा० ४ उ० । रा० ।

**वारैऊण-** अव्य० [वारयित्वा]

प्रतिषिध्येत्यर्थे, निसि०१ उ० ।

**वाल-** पुं० [व्याल]

दुष्टसर्पे, बृह० १ उ०३ ।

श्वापदभुजङ्गे, नाया० १ । आव० । वव० । आव०म० । भग० । तं० ।

दुष्टगजे व्यालाः सर्पा दुष्टगजाश्चोच्यन्ते । विशेष० । उव० । आव० ।

जीवा० । भग० । रा० । जंबू० । वव० । कल्प० ।

**वालगाहि-** पुं० [व्यालग्राहिन्]

सर्पग्रहणशीले, आव०४ अ० ।

**वालवि-** पुं० [व्यालपिन्]

व्यालान्-भुजङ्गान् पान्तीति व्यालपास्ते विद्यन्ते येषान्ते  
व्यालपिनः । सर्पवधबन्धाद्युपजीविषु, पण्हा० २ अ०

**वालसतसंकणिज-** त्रि० [व्यालशतशङ्कनीय]

भुजगादिभिर्भयङ्करे, पण्हा० ३ अ०

**वालुयप्पभा-** स्त्री० [वालुकाप्रभा]

तृतीयपृथिव्याम्, जीवा० ।

**वाव-** अव्य० [वाव]

वाशब्दार्थे, आव०म०१ अ० ।

वा निवाओ वासद्वत्यो । वाव इत्ययं शब्दो निपातः, स च  
वाशब्दार्थः-‘अशरीरं वाव सन्तं प्रियाप्रिये न स्पृशतः ।’ विशेष० ।

**वावग-** त्रि० [व्यापक]

व्याप्तिकर्तारि, तत्सत्त्वेऽवश्यं वर्तमाने आधारभेदे, यथा-तिलेषु  
विद्यते तैलम् । आव०म० १ अ० ।

**वावड-** त्रि० [व्यापृत]

व्यापारिते, निसि० । आव०म० ।

व्यापारयुक्ते वहमानके, बृह०३ उ० ।

**वावड-** त्रि० [व्याकृत]

स्पष्टे, प्रकटार्थे, दश० ७ अ० ।

**वावड-** स्त्री० [व्यापद्]

उपद्रवे, वव०१ उ० ।

**वावण-** त्रि० [व्यापन्न]

विनष्टे, पन्न० १ पद । पण्हा० ।

विशारारभूते, पण्हा० ५ अ० । पन्न० ।

शकुनिशृङ्गालादिभक्षणद्वीभत्सतां गते, नाया०१ श्रु०१२ अ० ।

**वावणदंसण-** पुं० [व्यापन्नदर्शन]

व्यापन्नं विनष्टं दर्शनं येषान्ते व्यापन्नदर्शनाः । निह्वादिषु, नाया०  
१ श्रु० १२ अ० ।

**वावणसोया-** स्त्री० [व्यापन्नश्रोतस्]

व्यापन्नं-विनष्टं रोगतः श्रोतो-गर्भाशयच्छिद्रलक्षणं यस्याः सा  
तथा । नष्टगर्भाशयच्छिद्रे, ठा० ५ ठा० २ उ० ।

**वावत्त-** त्रि० [व्यावृत्त]

शुभव्यापारवति, ठा० ५ ठा० १ उ० ।

**वावत्ति- स्त्री० [व्यापत्ति]**

व्यावर्तनं व्यावृत्तिः । कुतोऽपि हिंसाद्यवद्यान्निवृत्तौ, ठा० ।

**वावरणशाला- स्त्री० [व्यावरणशाला]**

यत्राग्निकुण्डं स्वयंवरहेतोर्नित्यमेव ज्वलति । एवंभूतायां शाला-  
याम्, बुह० २ उ० ।

**वावहारिय- पुं० [व्यावहारिक]**

व्यवहारनिष्पन्ने, सम० ६५ सम० ।

**वावादिय- त्रि० [व्यापादित]**

मारिते, ठा० ४ ठा० ३ उ० ।

**वावार- पुं० [व्यापार]**

करणे, आव०म० १ अ० । आव० । आव०चू० ।

**वावारिय- त्रि० [व्यापारित]**

नियुक्ते, उत्त० ८ अ० ।

**वाविद्ध- त्रि० [व्याविद्ध]**

विपर्यस्तरत्नमालागतत्न इव विपर्यस्ते, आव०म० १ अ० ।  
निरुद्धे, ठा० ५ ठा० २ उ० । आव०म० ।

**वाविय- त्रि० [व्यापृत]**

विविक्ते, विशेषे । ठा० ।

**वाविया- स्त्री० [वाविता]**

सकृद्धान्यवपनवत्याम्, ठा० ४ ठा० ४ उ०

**वावी- स्त्री० [वापी]**

चतुरस्राकारे जलाशयविशेषे, ठा० ४ ठा० ३ उ० । अणुओ० ।  
नाया० । उव० । भग० । निसि० । पन्न० । जीवा० । जंबू० । रा० ।  
पुष्करावर्ते जलाशयविशेषे, पण्हा० १ अ० ।

**वास- न० [वर्ष]**

वत्ससंवत्सरसंबदित्यादिपर्यायाः । भरतादिक्षेत्रे, ठा० २ ठा० ४ उ०

**वास- पुं० [वर्ष]**

वृष्टौ, विशेषे । निसि० । ठा० ।  
वर्षोऽल्पतरो वृ-ष्टिस्तु महतीति तयोर्भेदः । भग० ३ श० ७ उ० ।  
जलसमूहे, नाया० १ श्रु० १ अ० । आचा० ।  
मेघे, भग० १६ श० ८ उ० ।

**वास- पुं० [व्यास]**

विस्तरे, । ठा० ।  
कृष्णद्वैपायने, आव० २ अ० ।  
द्वीन्द्रियजीवभेदे, पन्न० १ पद० । जीवा० ।

**वास- पुं० [वास]**

समवस्थाने, सूय० १ श्रु० ७ अ० ।  
अधिष्ठाने, ठा० ५ ठा० २ उ० ।  
सुगन्धद्रव्यनिष्पन्ने शुष्कपेषपिष्टे गन्धे, पिंड० ।

**वासंतिया- स्त्री० [वासन्तिका]**

पुष्पप्रधाने वृक्षविशेषे, जंबू० १ वक्ष० पण्हा० । आचा० । नाया० ।  
पन्न० । आव०म० । उव० ।

**वासंतियामउल- न० [वासंतिकामुकुल]**

वासन्तिकाकोरके, पण्हा० १ अ०

**वासंतियामंडव- पुं० [वासन्तिकामण्डप]**

वासन्तिकालतामये मण्डपे जीवा० ४ प्रति० ।

**वासकोडि- स्त्री० [वर्षकोटि]**

शतलक्षभिर्वर्षेणुणिते संख्याभेदे, स्था० २ ठा० ४ उ० ।

**वासकोडाकोडि- स्त्री० [वर्षकोटाकोटि]**

वर्षकोटिभिर्गुणितायां वर्षकोटौ, नाया० १ श्रु० ९ अ० ।

**वासक्खेव- पुं० [वासक्षेप]**

गन्धचूर्णस्य शिरसि क्षेपे, महानि० ।

**वासग- पुं० [वासक]**

वासन्तीति वासकाः भाषालब्धिसंपन्नेषु द्वीन्द्रियादिषु, आचा० १  
श्रु० ६ अ० १ उ० ।

**वासग- त्रि० [वर्षगत]**

आर्ष वा तथा रूपम् । वर्षलक्षणे कालपरिणाममाश्रिते, उत्त० २ अ०

**वासधरय- न० [वासगृहक]**

शयनगृहे, कल्प० १ अधि० २ क्षण० । नाया० । निसि० ।

**वासणा- स्त्री० [वासना]**

अविच्युत्याहिते संस्कारे, आव०म० १ अ० । नं० ।

**वासधर- पुं० [वर्षधर]**

वर्धितकरणेन नपुंसकीकृते अन्तःपुरमहल्लके, दशा० १ अ० ।  
वर्षक्षेत्रविशेषं धारयते व्यवस्थापयते । हिमवदादिषु, अणुओ० । ठा०

**वासधरकूड- पुं० [वर्षधरकूट]**

वर्षधरपर्वतसम्बन्धिनि शिखरे । सम० ६८

**वासधरपव्वय- पुं० [वर्षधरपर्वत]**

क्षुद्रहिमवदादिषु, जंबू० ३ वक्ष० । ठा० ।

**वासधरसंठिय- पुं० [वर्षधरसंस्थित]**

हिमवदादिवर्षधरपर्वताकारे, भग० ८ श० २ उ० ।

**वासयंत- त्रि० [वासयत्]**

सुरभिं कुर्वति, कल्प० १ अधि० ३ क्षण ।

**वासरेणु- पुं० [वासरेणु]**

वासके रजसि, उव० ।

**वासव- पुं० [वासव]**

इन्द्रे, आव०चू० ।  
वैताढ्ये पर्वते, तोरणाभिधे पुरे दृढशक्तेः खेचरस्य पुत्र्याः  
कनकमालायाः पतित्वार्थं युद्धमृते खेचरे, उत्त० ९ अ० ।

**वासवदत्त-** पुं० [वासवदत्त]

विजयपुरराजे कृष्णदेवीपत्तौ, विपा० २ श्रु०३ अ० ।

**वासवदत्ता-** स्त्री० [वासवदत्ता]

प्रद्योतस्य दुहितरि अङ्गारवत्या आत्मजायाम्, आव०चू० ४ । आव०  
वासवदत्ताचरितनिबद्धे नाटकभेदे, आव०म० १ अ० ।

**वाससंठिय-** त्रि० [वर्षसंस्थित]

भारतादिवर्षाकारे, भग० ७ श० २ उ०

**वाससय-** न० [वर्षशत]

शतसंख्येषु वर्षेषु, 'वीसं जुगाइं वाससयं' भग० ६ श० ७ उ० ।  
विंशत्या युगैर्वर्षशतम् । नं० । अनु० । जंबू० ।

**वाससयसहस्स-** न० [वर्षशतसहस्स]

वर्षलक्षे, 'सयं वाससहस्साणं वाससयसहस्सं' भग० ६ श० ७ उ० ।  
दशभिवर्षशतैः परिमिते कालविशेषे, अणुओ० । भग० ।  
'दस वाससयाइं वाससहस्सं' भग० १ श० ५ उ० ।

**वाससयाउय-** पुं० [वर्षशतायुष्क]

वर्षशतमायुर्यत्र काले मनुष्याणां स वर्षशतायुष्कः कालस्तत्र यः  
पुरुषः सोऽप्युपचाराद् वर्षशतायुष्कः । ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**वासा-** स्त्री० [वर्षा]

वृष्टौ, बुह० १ उ० २ । वर्षाकाले, निसि० १ उ० ।

**वासारत्त-** पुं० [वर्षारात्र]

वर्षाकाले, संथा० । बुह० ।  
वर्षा एव वासो वर्षावासः । स द्विधा-प्रावृट्, वर्षारात्रश्च । श्रावण  
भाद्रपदमासौ प्रावृडुच्यते, आश्विनकार्तिकौ वर्षारात्रः, बुह० १ उ०  
आश्वयुजादौ, भग० ९ श० ३३ उ० ।  
भाद्रपदाश्वयुजलक्षणे द्वितीयऋतौ, नाया० १ श्रु० ९, अणुओ० । ज्यो०

**वासावास-** स्त्री० [वर्षावर्षा]

वर्षासु वर्षाकाले वर्षा वृष्टिः वर्षावर्षा । वर्षाकालिकवृष्टौ, ठा०  
५ ठा० २ उ० ।

**वासावास-** पुं० [वर्षावास]

वर्षासु आवासोऽवस्थानं वर्षावासः । ठा० ५ ठा० २ उ० ।  
आचा० । कल्प० । दशा० । वव० ।  
वर्षा-वर्षाकालस्तस्मिन्वासः । पर्युषणायाम्, निसि० १० उ० ।  
चतुर्मासके, कल्प० ३ अधि० ९ । पंच० भा० । पंच०चू० । उव० ।

**वासावासिय-** त्रि० [वर्षावर्षिक]

वर्षास्वन्यत्र स्थिते, आचा०

**वासिउकाम-** त्रि० [वर्षितुकाम]

वर्षणकामे, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

**वासिक-** त्रि० [वर्षिक]

वर्षाकालसम्बन्धिनि, चंद० १२ पाहु० ।

**वासिकच्छत्त-** न० [वार्षिकच्छत्र]

वार्षिकाणि वर्षाकाले पानीयरक्षणार्थं यानि कृतानि तानि  
वार्षिकाणि, तानि च छत्राणि । वर्षा कालिकजलनिवारणछत्रेषु,  
जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । रा० ।

**वासिष्ठ-** पुं० [वाशिष्ठ]

वाशिष्ठगोत्रे, चंद० १० पाहु० । आचा० । जंबू० । आव०म० ।

**वासिष्ठिया-** स्त्री० [वाशिष्ठिका]

ऋषिगुप्ताद् वाशिष्ठसगोत्राव्रिगतस्य मानवगणस्य तृतीय शाखा-  
याम्, कल्प० २ अधि० ८ ।

**वासित्ता-** त्रि० [वर्षितु]

प्रवर्षणकारिणि, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**वासिय-** त्रि० [वासित]

पटवासकुसुमादिभिरपनीत दुर्गन्धभावे, गच्छा० २ अधि० । बुह० ।  
भाविते, आव० ४ अ० । ठा० ।  
समुत्पन्नशब्दपरिणामे द्रव्य, विशेष० । आव०म० ।

**वासिय-** त्रि० [वृष्ट]

वर्षितुमारब्धे, नाया० १ श्रु० १ अ० ।  
सुरभीकृते, कल्प० १ अधि० ।

**वासी-** स्त्री० [वासी]

'वसुला' इति ख्याते लोहकारोपकरणविशेषे, आचा० । नाया० ।

**वासीचंदणकम्प-** पुं० [वासीचन्दनकल्प]

उपकार्यनुपकारिणोरपि मध्यस्थे, आव० ५ अ० ।

**वासुदेव-** पुं० [वासुदेव]

बलदेवलघुभ्रातरि त्रिखण्डभरताधिपे, तं० ।  
भरते अवसर्पिण्यां नव वासुदेवाः, त्रिपृष्ठपादयः, ऐरवतजाश्च नव  
नव वासुदेवाः । आव० । सम० । ठा० ।

**वासुदेवखंधावार-** पुं० [वासुदेवस्कन्धावार]

वासुदेवकटकसन्निवेशे, पन्न० १ पद ।

**वासुदेवघर-** न० [वासुदेवगृह]

वासुदेववेश्मनि, आव०म० १ अ० ।

**वासुदेवपडिमा-** स्त्री० [वासुदेवप्रतिमा]

वासुदेवमूर्तौ, आव०म० १ अ० ।

**वासुपुज-** पुं० [वासुपूज्य]

भरतक्षेत्रजे अवसर्पिण्या द्वादशे जिने, आव०म० ।  
वसवो देवास्तेषां पूज्यः वासुपूज्यः, वसुपूज्य एव वासुपूज्यस्तत्र  
सर्वेऽपि तीर्थकृतो वासुपूज्याः ।

**वाह-१** पुं० [वाह]

वाहनं वाहः । भारोद्वहने, सूय० १ श्रु० ३ अ० ४ उ० ।  
वाहयतीति वाहः । शाकटिके, सूय० १ श्रु० २ अ० ३ उ०

**वाह-२ पुं० [वाह]**

धरिमप्रमाणचिन्तायाम्, ज्यो०२ पाहु० ।  
अष्टभिराढकशतैर्निर्वृते मानभेदे, अणुओ० ।

**वाह- पुं० [व्याध]**

लुब्धके, वव०३ उ० ।

**वाहइ- स्त्री० [व्याहति]**

भजनायाम्, विशेष० ।

**वाहण- न० [वाहन]**

शकटाद्याकर्षणे, पण्हा० २ अ०  
परैर्गवामिव । पण्हा०२ अ०  
अन्नतरेण नयणप्पगारेणं नयणं वाहणं भण्णति । निसि०१८ उ० ।  
शिबिकावेगसरादिके कल्प०१ अधि० ५ । ठा० । नाया० । रा० ।  
हस्त्यश्वबलीवदादिके, उव० ।  
शकटादिषु, पण्हा०१ अ० रा० । गच्छा० ।  
यानपात्रेषु, पण्हा०१ अ० रा० । गच्छा० ।  
प्रवहणेषु, पण्हा०३ अ०

**वाहणकहा- स्त्री० [वाहनकथा]**

वेगसरादिकथायाम्, हेसंतहयं गज्जंतमयंगलं घणघणंतरहलक्खं  
कस्सन्नस्स वि सेन्नं, विन्नासियसत्तुसिन्नंभो । ठा० ४ ठा० २ उ० ।

**वाहणा- स्त्री० [उपानह]**

पादरक्षिकायाम्, भग० २ श०१ उ० ।

**वाहतेण- पुं० [वाहस्तेन]**

मार्गचौरे, अडविं गच्छंताओ य उदगं घेतुं गच्छति निसि०१६ उ० ।

**वाहय-१ पुं० [वाहक]**

अश्ववारे, विशेष० ।  
अश्वन्दमे, उत्त०१ अ० ।

**वाहय-२ त्रि० [व्याहत]**

व्याहतिदुष्टे, यत्र पूर्वैण परं व्याहन्यते । अणुओ० । विशेष० । आव०  
वाधिते, नं० ।

**वाहरमाण- त्रि० [व्याहरत्]**

आह्वयति, आव० ।

**वाहरिउं- अव्य० [व्याहत्य]**

अकार्येत्यर्थे, वव०४ उ० ।

**वाहि- पुं० [व्याधि]**

विशिष्टचित्तपीडायाम्, नाया०१ श्रु०१३ अ० ।  
चिरस्थायिनि । विपा०१ श्रु०७ अ० ।  
ज्वरकुष्ठादिके, ठा० १० ठा० ३ उ० ।  
रोगे, तं० । पण्हा० ।  
ज्वरातिसारादौ, बुह० । ठा० ।

**वाहिणी- स्त्री० [वाहिनी]**

नद्याम्, निसि० ।  
सेनायाम् । उत्त० ।

**वाहित- त्रि० [व्याहत]**

आहते, उत्त०१ अ० । जीवा० ।  
शब्दिते, नाया० १ श्रु०१ अ० ।

**वाहिम- त्रि० [वाहिम]**

वाहनयोग्य, आचा०२ श्रु०१ चू०४ अ०२उ

**वाहिय- त्रि० [व्याधित]**

सञ्जातकुष्ठादिरोगे, पण्हा० ३ अ० नाया० ।  
पीडिते, सूय० १ श्रु० ५ अ० २ उ० ।  
भगन्दरातीसारकुष्ठप्लीहशूलार्शः प्रभृतिरोगैर्ग्रस्ते, गच्छा० १ ।  
विशिष्टचित्तपीडावति शोकादिविप्लुतचित्ते, विशिष्ट आधिर्यस्य स  
व्याधिः । स्थिरो रोगः कुष्ठादिस्तद्वान् । नाया० १ श्रु०१३ अ० ।  
रोगिणि, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।  
ग्लाने, बुह०३ उ० । निसि० ।

**वाही- स्त्री० [व्याधी]**

व्याधदुहितरि, बुह० ६ उ० ।

**वाहोवम- त्रि० [व्याधोपम]**

व्याधस्थानीये, वव० २ उ० ।

**वि- अव्य० [वि]**

विविध, सूय० १ श्रु०१३ अ० । अनेकप्रकारे, सूय० १ श्रु० १२अ०  
विरूपरूपे, सूय०१ श्रु०१२ अ० । सम० ।  
विशेषे, उत्त०३३ अ० । विशेष० ।  
प्रकर्षे, सूय०२ श्रु०१ अ० ।  
विविधार्थो विशेषार्थो वा विशब्दः । आव०म०१ अ० । आचा०  
सूय० । भग० । विपा० ।

**विअड- न० [विकट]**

प्रकटप्रकाशे, सम०११ सम० ।  
विविधौषधमिश्रे मद्ये, उत्त० २ अ० । निसि० ।

**विअडभोइ- पुं० [विकटभोजिन्]**

विकटे प्रकटप्रकाशे दिवा न रात्रौ दिवाऽपि वा अप्रकाशे न भुङ्क्ते  
अशनाद्यभ्यवहरतीति विकटभोजी । अरात्रिभोजिनि, सम०११ ।

**विअडिकरण- न० [विकटीकरण]**

विकसितमुकुलितार्थमुकुलितभेदनं कुर्वतो मालाकारस्येव  
आलोचने, आव०४ अ० ।

**विअसिय- त्रि० [विकसित]**

विकसितं वरं-प्रधानं यत्कमलं तद्वत् आननंमुखं नयने च यस्य  
स तथा प्रमोदपूरितत्वात् । कल्प० १ अधि० १ ।



**विइकिण्ण-** त्रि० [व्यतिकीर्ण]

परिपाट्या प्रसृते, मिलिते, बुह०२ उ० ।  
वृद्धैर्निजावाससीमोल्लङ्घनेन व्याप्ते, भग० १ श० १ उ० ।

**विइण्ण-** त्रि० [वितीर्ण]

अनुज्ञाते, नाया०१ श्रु०२ अ० । ठा० ।

**विइण्ण-** त्रि० [विकीर्ण]

गमनागमनाभ्यां व्याप्ते, नाया०१ श्रु०१ अ०

**विइण्णवियार-** पुं० [वितीर्णविचार]

वितीर्णो राज्ञानुज्ञातो विचारोऽवकाशो यस्य विश्वसनीयत्वात्  
असौ वितीर्णविचारः । राजानुज्ञातविचारे, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**विइत्तु-** अव्य० [विदित्वा]

विज्ञायेत्यर्थे, दश०१० अ० ।  
विदित्वा समुद्देशं परिणामादिकं शिष्यं ज्ञात्वेत्यर्थः । ठा० ८ ठा०

**विइय-** त्रि० [विदित]

ज्ञाते, आव०१ अ० ।  
प्रतीते, नाया० १ श्रु० १८ अ० ।  
कलिते, उत्त०११ गाथा ।

**विउ-** त्रि० [विद्वस्]

सद्विद्योपेते, सूय० २ श्रु०१ अ० ।  
सदसद्विवेकज्ञे, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ० ।  
संयमकरणैकनिपुणे, सूय० १ श्रु०१ अ०४ उ० ।  
ज्ञातसर्वपदार्थस्वभावे, सूय०१ श्रु०१६ अ०  
विदितसंसारस्वभावे, आचा०१ श्रु०५ अ०५ उ० ।  
विवेकिनि, सूय०१ श्रु०९ अ० ।  
पण्डिते, दश०४ अ० । गीतार्थे, पण्हा०५ अ० ।  
ज्ञापके, आव०६ अ० ।  
परिज्ञावति, आव०चू० ६ अ० ।

**विउकंति-** स्त्री० [व्यवक्रान्ति]

मरणे, भग०१ श०७ उ० ।

**विउकमण-** न० [व्यवक्रमण]

च्यवने, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।  
स्थानान्तरगमने, आचा० १ श्रु० ८ अ० ८ उ० ।

**विउकम्म-** अव्य० [व्यवक्रम्य]

परित्यज्येत्यर्थे, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ० । आचा० ।

**विउक्कस-** त्रि० [व्युत्कर्ष]

माने, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ० ।  
आत्मनः श्लाघायाम्, आचा०१ श्रु०६ अ०४ उ० ।

**विउट्टण-१** न० [व्यावर्तन]

अतीचारात्रिवृत्तौ, ठा० ८ ठा० ३ उ० । आचा० ।

**विउट्टण-२** न० [वित्रोटन]

विविधमनेकप्रकारं त्रोटनमपनयनम्, सूय० २ श्रु०२ अ० ।  
अनुबन्धच्छेदने, नाया०१ श्रु०१६ अ० । भग० ।  
तदध्यवसायविच्छेदने, ठा० ३ ठा० ३ उ० । आचा० ।

**विउट्टणा-३** स्त्री० [विकुट्टना]

विविधा विरूपा वा कुट्टना । जातिमरण

शोककृतायां शरीरपीडायाम्, सूय०१ श्रु०१२ अ० ।

**विउट्टणा-४** स्त्री० [विउट्टा]

विकुट्टन । शल्योद्धरणे, ओह० ।

**विउट्टित्तए-१** अव्य० [विवर्त्तयितुम्]

अतिचारानुबन्धि विच्छेदयितुमित्यर्थे, ठा० २ ठा० १ उ० ।

**विउट्टित्तए-२** अव्य० [विवर्त्तयितुम्]

अतिचारानुबन्धि विच्छेदयितुमित्यर्थे, ठा० २ ठा० १ उ० ।

**विउट्टित्तए-३** अव्य० [विकुट्टयितुम्]

अतिचारानुबन्धि विच्छेदयितुमि-त्यर्थे, ठा० २ ठा० १ उ० ।

**विउत्त-** त्रि० [वियुक्त]

शून्ये, आव०म०१ अ० ।

**विउट्टियमंदमइण्णसर-** त्रि० [विकुट्टिमन्दमतिप्रसर]

चूर्णिततुच्छशमुविकबुद्धिप्रागल्भ्ये, जीवा० १ प्रति० ।

**विउमंत-** पुं० [विद्वस्]

विवेकिनि, यथावस्थितसंसारस्वभावस्य वेत्तारि, सूय० १ श्रु०३ अ०

**विउल-** त्रि० [विपुल]

प्रभूततरे, सूय०२ श्रु०१ अ० । नाया० । ओघ । रा० ।  
बहुशब्दार्थे, विशेषे । ठा० । आव०म० ।  
विस्तीर्णे, उव० । नि० । सम० । रा० । जंबू० । पंच०चू० । उत्त० ।  
चंद० । आव० । ठा० । नाया० । आव०म० । जीवा० ।  
प्रतिपूर्णे, तं० । नाया० । महति ठा० ५ ठा० ३ उ० ।  
स्वनामख्याते पर्वतविशेषे, भग०२ श०१ उ० ।  
विपुलकालवेद्ये, पण्हा०४ अ० ।  
शरीरव्यापिन्यां वेदनायाम्, ठा० ९ ठा० ३ उ० । भग० ।  
विशेषग्राहिण्याम्, ठा० २ ठा० १ उ० ।  
विशाले, उत्त०८९ गाथा ।

**विउलकयवित्तिय-** पुं० [विपुलकृतवृत्तिक]

विहितप्रभूतजीवके, वृत्तिप्रमाणं-अर्द्धत्रयोदशरजत सहस्राणि ।  
यदाह- 'मंडलियाणं सहस्सा, पीइदाणं सयसहस्सा' उव० ।

**विउलकुलबालिया-** स्त्री० [विपुलकुलबालिका]

विपुलकुलाश्च ता बालिकाश्चेति विग्रहः । उत्तमकुलजातायां  
बालिकायाम्, भग० ९ श० ३३ उ० ।

**विउलखंध-** त्रि० [विपुलस्कन्ध]

विपुलो विस्तीर्णः स्कन्धोऽशदेशो येषान्ते । महास्कन्धेषु, जीवा०३ ।

**विउलट्ठाणभाव-** पुं० [विपुलस्थानभाव]

विपुलं मोक्षहेतुत्वात्संयम-स्थानं च सेवते तच्छीलश्च यः स तथा ।  
संयमस्थानसेविनि, दश०६ अ० ।

**विउलतरग-** त्रि० [विपुलतरक]

प्रभूततरके, न० ।

**विउलधण-** न० [विपुलधन]

प्रचुरगवादिके, भग०९ श० ३३ उ० ।

**विउलमइ-** स्त्री० [विपुलमति]

विपुलं-बहुविशेषसंख्योपेतं वस्तु मन्यते गृह्णातीति विपुलमतिः,  
यदि वा-विपुला पर्यायशतोपेता चिन्तनीयघटादिवस्तुविशेष-  
ग्राहिणी मतिर्मननं यत्तत् विपुलमतिः । बहुग्राहिण्यां वस्तुवि-  
शेषग्राहिण्यां वा बुद्धौ, आव०म०१ । विशेष० । उव० । गच्छा० । भग०

**विउलमइलद्धि-** स्त्री० [विपुलमतिलद्धि]

विशुद्धतरे संपूर्णमनुष्यक्षेत्रवर्तिसंज्ञिपञ्चेन्द्रियमनोद्रव्यप्रत्यक्षी-  
करणहेतौ मनःपर्यायज्ञानभेदे, गच्छा० २ अधि० ।

**विउला-** स्त्री० [विपुला]

सकलशरीरव्यापितया विस्तीर्णायां वेदनायाम्, जीवा०३ प्रति०१

**विउलाउल-** त्रि० [व्याकुलाकुल]

अतिव्याकुले, उव० ।

**विउवसिय-** त्रि० [व्यवशमित]

उपशमिते, बुह०६ उ० ।

**विउवसिओदीरणवयण-** न० [व्यवशमितोदीरणवचन]

व्यवशमितस्य पुनरुदीरणे नामनि षष्ठे वचने, बुह० ।

**विउवाय-** पुं० [व्यापात]

भ्रंशे, सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ० ।

**विउव्विजमाणं-** त्रि० [वैक्रियमाण]

वैक्रियतया परिणम्यमाने । ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**विउव्वइत्ता-** अव्य० [विकुर्व्य]

वैक्रियं कृत्वेत्यर्थे, उवा० २ अ० ।

**विउव्वणा-** स्त्री० [विकुर्वणा]

भूषणादिभिरलङ्करणे, बुह० १ उ० ।

मण्डने, बुह० ४ उ० ।

वैक्रियलब्धौ, ठा०

नानारूपायां विक्रियायाम्, सम० ६५ सम० ।

**विउव्वमाण-** त्रि० [विक्रियमाण]

विक्रियकरणवंशवर्तिनि, ठा० ३ ठा० । स्वेच्छया । सूर०२० पाहु० ।

विकुर्वणा कुर्वति, भग० १२ श० । वैक्रियशरीरं कुर्वति, भग० ३ श०

**विउव्विउ-** अव्य० [विकुर्वितुम्]

विक्रियां कृत्वेत्यर्थे, सूय० १ श्रु० १ अ०२ उ० । भग० ।

**विउव्विय-** अव्य० [विकृत्य]

परिचारणायोग्यं विधायेत्यर्थे, ठा० ३ ठा० १ उ० ।

**विउव्विय-** त्रि० [विकुर्वित]

दैवशक्त्या कृते, आव०म०१ अ० ।

**विउव्वियबोदि-** त्रि० [वैक्रियबोन्दि]

विकुर्विता वस्त्रादिभिरलंकृता बोन्दिः-शरीरं येषां ते तथा ।

अलङ्कृतशरीरेषु बुह० १ उ० ३

**विउव्वियसमुग्घाय-** पुं० [वैक्रियसमुद्घात]

समुद्घातभेदे, विहितोत्तरवैक्रियशरीरमिति । भग०३ श०४ उ० ।

**विउसज्ज-** अव्य० [व्युत्सृज्य]

परित्यज्येत्यर्थे, वव० १ उ० ।

**विउसमणकालसमय-** पुं० [व्यवशमनकालसमय]

व्यवशमनं पुंवेदविकारोपशमस्तस्य यः कालसमयः स तथा ।

रतावसाने, भग० १२ श० ६ उ० ।

**विउसमणया-** स्त्री० [व्यवशमनता]

परस्मिन् क्रोधान्निर्वृत्तयति सति क्रोधोज्झने, भग०१ श०९ उ० ।

**विउसमिय-** त्रि० [व्यवशमित]

उपशमिते, ठा० ६ ठा० ३ उ० । निसि० ।

**विउसमियपाहुड-** त्रि० [व्यवशमितप्राभृत]

विशेषेणावसायितमवसानं नीतं प्राभृतं-कलहो येन स  
व्यवशमितप्राभृतः । व्युत्सृ-ष्टकलहे, बुह०१ उ०३ ।

**विउसरण-** न० [व्युत्सर्जन]

परित्यजने, आचा० । उत्सर्गे, आव०५ अ० ।

**विउसरणया-** स्त्री० [व्यवसर्जनता]

त्यागे, भग०२ श०५ उ० ।

**विउसविय-** अव्य० [व्यवशमय्य]

विविधमनेकप्रकारैर्द्रव्यपदार्थप्रतिपत्तिपुरस्सरं मिथ्यादुष्कृतप्रदा-  
नेना वशमय्य उपशमं नीत्वेत्यर्थे, बुह०१ उ०३ । निसि० ।

**विउस्सग-** पुं० [व्युत्सर्ग]

विविधार्थो विशेषार्थो वा विशब्दः, उच्छब्दोभृशार्थः, सर्जनं-  
सर्गः, विविधं-विशेषेण वा भृशं त्यजनम् अतीतसावद्ययोगमिति  
भावः । आव०म०१ अ ।

परित्यागे, स च द्विधा-द्रव्यतो भावतश्च । द्रव्यतोगणशरीरोपध्या-  
हारविषयो, भावतस्तु-क्रोधादिविषय इति । आव०६ अ० ।

निःसङ्गतया देहोपधित्यागे, ठा० ४ ठा० १ उ० । उव० ।

उपयोगसम्बन्धिनि कायोत्सर्गे, बुह०१ उ० ३ । ठा० । भग० ।

अनेषणीयादिषु त्यक्तेषु गमनागमनसावधानस्वप्नदर्शननौ सन्तर-  
णोच्चारप्रश्रवणेषु च विशिष्टप्रणिधानपूर्वकं कायवाङ्मनो व्यापार-  
त्यागे, आव०चू० ।

**विउस्सगपडिमा- स्त्री० [व्युत्सर्गप्रतिमा]**

कायोत्सर्गकरणे, उव० । ठा० ।  
तथा पूर्वादिचतुष्टयाभिमुखस्य प्रत्येकप्रहरचतुष्टयमानकायो-  
त्सर्गे, ठा० ४ ठा० ३ उ० ।

**विउस्सगारिह- न० [व्युत्सर्गार्ह]**

कायचेष्टानिषेधोपयोगमात्रेण यत् दुःस्वप्नादिकमिव शुध्यति तत्  
व्युत्सर्गार्हम् । जीवा०१ प्रति० ।  
प्रायश्चित्तभेदे, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**विउस्सिय- त्रि० [व्युत्सृत]**

विविधमनेकप्रकारमुत्प्राबल्येन सितोबद्धः । स्वसमयेष्वभिनिविष्टे  
सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।  
संसारे उषितः । संसारान्तर्वर्तिनि, सूय०१ श्रु०१ अ० ।

**विओग- पुं० [वियोग]**

क्षये, आचा०१ श्रु०४ अ०४ उ० ।

**विओजण- न० [वियोजन]**

विश्लेषणे, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।  
खण्डने, विशेषे । ठा० ।

**विओयावइत्ता- त्रि० [वियोजयिता]**

मोक्षरि, ठा० ४ ठा० २ उ० ।

**विओसिय- त्रि० [व्यवसति]**

विविधमवसितं व्यवसितम् । पर्यवसिते उपशान्ते, सूय०१ श्रु०१३

**विंख- न० [विङ्ख]**

वाद्यभेदे, आव०चू०१ अ० ।

**विंट- न० [वृन्त]**

बन्धने, सूय०१ श्रु०२ अ०१ उ० ।  
फलस्य मूले, आव०क०४ अ० ।

**विंट्टाइ- त्रि० [वृन्तस्थायिन्]**

वृन्तेनाधोवर्तिना तिष्ठतीत्येवंशीलं वृन्तस्थायि । वृन्तमधोभागे  
उपरि पत्राणि इत्येवं स्थानशीले, रा० । आव०म० । उव० ।

**विंटबद्ध- न० [वृन्तबद्ध]**

अतिमुक्तकप्रभृतिषु, पत्र०१ पद ।

**विंटल- न० [विण्टल]**

तथाविधज्योतिषनिमित्तादिके छलोपजीवनोपाये, बुह० ।

**विंतागी- स्त्री० [वृन्ताकी]**

गुच्छवनस्पतिभेदे, आचा०१ श्रु०१ अ०२ उ० ।

**विंदमाण- त्रि० [विन्दत्]**

लभमाने, नि०१ श्रु०१ वर्ग०१ अ० ।

**विंदुसार-१ पुं० [विन्दुसार]**

चतुर्दशे पूर्वे, आव०म०१ अ० ठा० । आव० ।

**विंदुसार-२ पुं० [विन्दुसार]**

चन्द्रगुप्तसुते, अशोकश्रीमहाराजपितरिमगधराजे, कल्प०२ । विशेषे ।  
‘चंद्रगुप्तपुत्तोऽयं, विंदुसारस्स ननुओ । असोगसिरिणो पुत्तो  
अंधो जायइ कागणिं । बुह०१ उ० । निसि० १६ उ० ।

**विंदुसार-३ पुं० [विन्दुसार]**

लोकशब्दोऽत्र लुप्तो द्रष्टव्यस्ततश्च लोकस्य विन्दुरिवाक्षरस्य सारं  
सर्वोत्तमं विन्दुसारम् । सम० १४ सम० ।

**विहणिज्ज- त्रि० [बृंहणीय]**

मांसोपचयकारिणि, उव० । ठा० । नाया० । जीवा० ।  
धातूपचयकारिणि, जंबू० २ वक्ष० । जीवा० ।

**विकंपण- न० [विकम्पन]**

स्वस्वमण्डलाद्बहिरवष्पष्फणे, अभ्यन्तरप्रवशने च । सूर०१ पाहु० ।

**विकंपमाण- त्रि० [विकम्पमान]**

चलति, सूय० १ श्रु०१४ अ० ।

**विकट्टिय- त्रि० [विकर्तित]**

पाटिते, तं० । ।

**विकट्ट- न० [विकृष्ट]**

दूरे, नाया०१ श्रु०१ अ० ।  
विपरीतकर्षणे, पण्हा० १ अ०

**विकडुभ- न० [विकडुभ]**

विदारिते, शालनके, सूय०१ श्रु०५ अ०२ उ० । बुह० ।

**विकत्त- त्रि० [विकिरित्]**

अन्नादिविकिरति, उत्त०२० अ० ।

**विकत्थण- न० [विकत्थन]**

श्लाघने, वव०६ उ० । ठा० । आचा०

**विकप्प- पुं० [विकल्प]**

भेदे, विशेषे । प्रकार, अणुओ० । ठा० । पण्हा० । आव०चू० ।  
‘विकप्पो त्ति वा पगारो त्ति वा एकट्ठा’ मनोविशेषे, विमर्शे,  
विकल्पो व्याहृतिर्भजना व्यभिचार इत्येकार्थाः । विशेषे । ठा० ।

**विकप्पण- न० [विकल्पन]**

छेदने, पण्हा०१ अ०

**विकप्पणत्थ- पुं० [विकल्पनार्थ]**

भेदकथनार्थे, आव०चू०१ अ० ।

**विकप्पणा- स्त्री० [विकल्पना]**

अर्थभेदोपदर्शने, विशेषे ।

**विकप्पसो- अव्य० [विकल्पशस्]**

अनेकप्रकारे, वव०१० उ० ।

**विकरण- न० [विकरण]**

विविधमनेकप्रकारं करणं खण्डनं यस्य तद् । लिङ्गविवेके, बुह०४

**विकराल-** त्रि० [विकराल]

भीमे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**विकल-** त्रि० [विकल]

असम्पूर्णे, भग० ७ श० ६ उ० ।

**विकलाएस-** पुं० [विकलादेश]

नयवाक्ये, ठा० २ ठा० २ उ० ।

**विकसिय-** त्रि० [विकसित]

फुल्ले, अणुओ० । आव० म० ।

**विकहा-** स्त्री० [विकथा]

विरुद्धा संयमबाधकत्वेन कथा वचनपद्धतिर्विकथा । ठा० ४ ठा० ।

अनिष्टायाम्, । आव० ४ अ० ।

पैशून्यापादिन्यां वा कथायाम्, सूय० १ श्रु० २ अ० २ उ० ।

**विकहाविहीण-** त्रि० [विकथाविहीन]

विकथया भक्तकथादिरूपया विशेषेण हस्तसंज्ञादेरपि परिहारेण हीनास्त्यक्ताः । त्यक्तविकथादिकेषु बुह० ३ उ० ।

**विकाल-** पुं० [विकाल]

विगतः सन्ध्याकालोऽत्रेति विकालः बुह० १ उ० ३

दिनभिन्नेऽहोरात्रभागे, बुह० १ उ० ३ ।

चोर-पारदारिकादयो विरमन्त्यत्रेति । बुह० १ उ० ३ ।

संध्याकाले, बुह० १ उ० ३ ।

दिवसलक्षण-कालविगमात्संध्या विकालः । बुह० २ उ० ३ ।

**विकालग-** पुं० [विकालक] स्वनामख्याते द्वितीये महाग्रहे, कल्प० १ अधि० ७ क्षण ।

**विकिङ्-** स्त्री० [विकृति]

अन्यथाभावे, विशेषे ।

**विकिचणा-** स्त्री० [विवेचना]

उद्धरितभक्तपानादिपरिष्ठापनिकायाम्, बुह० १ उ० ३ ।

**विकिण्ण-** त्रि० [विकीर्ण]

विक्षिप्ते, पण्हा० ३ अ०

**विकिण्णाभरण-** न० [विकीर्णाभरण]

विक्षिप्तालंकारे, पण्हा० ३ अ० ।

**विकिरण-** न० [विकिरण]

विक्षेपे, नाया० १ श्रु० ८ अ० ।

विनश्वरत्वे, तं० ।

**विकिरिजमाण-** त्रि० [विकीर्यमाण]

इतस्ततो विक्षिप्यमाणे, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**विकिरिया-** स्त्री० [विक्रिया]

विविधायां विशिष्टायां क्रियायाम्, ठा० ५ ठा० २ उ० ।

‘विविहाय य विसिद्धा य किरिया विकिरिया ।’ अणुओ० ।

**विकुव्वमाण-** त्रि० [विकुर्वमाण]

वैक्रियं कुर्वति, ठा० ३ ठा० १ उ०

**विकुस-** पुं० [विकुश]

वल्बजादिषु तृणविशेषेषु, भग० ६ श० ७ उ० । उव० । नाया० । रा० ।

**विकोय-** त्रि० [विकोच]

फुल्ले, विशेषे ।

**विकोवण-** न० [विकोपन]

प्रकोपने, झटिति तत्तदर्थतया प्रसरीभवने, पिंड० ।

**विकोविय-** पुं० [विकोविद]

गीतार्थे, परिणामके, वव० ।

**विकोस-** त्रि० [विकोश]

विकाशिते, विशेषे ।

अपनीतकोशके निरावरणे, नाया० १ श्रु० ८ अ० ।

**विकोसायंत-** त्रि० [विकोशायमान]

विगतकोशीकृते, तं० ।

**विक्रंत-** त्रि० [विक्रान्त]

परकीयभूमण्डलाक्रमणसमर्थे, कल्प० १ अधि० ३ । भग० ।

त्रयश्चत्वारिंशे ऋषभदेवपुत्रे, कल्प० १ अधि० ७ ।

**विक्रंति-** स्त्री० [विक्रान्ति]

विक्रमे, नाया० १ श्रु० १६ अ० ।

**विक्रम-** पुं० [विक्रम]

पराक्रमे, तं० । । उव० ।

पौरुषे, उव० ।

हरितिलकराजसुते, तं० । ।

**विक्रमसूरि-** पुं० [विक्रमसूरि]

चान्द्रकुले देवानन्दसूरिशिष्ये, गच्छा० २ अधि० ।

**विक्रय-** पुं० [विक्रय]

मूल्येनान्येषां वस्त्रपात्रादिकार्पणे, गच्छा० ।

‘जत्थ य मुणिणो कयविक्रयाइं कुव्वंति संजमट्टाए । तं गच्छं

गुणसायरा विसं व दूरं परिहरेज्जा’ । गच्छा० २ अधि० ।

**विक्रवया-** स्त्री० [विक्रवता]

तच्छेकातिरेकेणाहारादिष्वप्यनपेक्ष-तायाम् । दश० ६ अ० ।

**विक्रायमाण-** त्रि० [विक्रीयमाण]

आपणे मूल्येन गृह्यमाणे, दश० १ अ० ५ उ० ।

**विक्रंभ-** पुं० [विक्रम्भ]

उन्माने, नाया० १ श्रु० ३ अ० ।

पूर्वोत्तरायत्ततया विस्तारे, ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

पृथुत्वे, ठा० १० ठा० ३ उ० । सूर० ।

विक्रम्भेनायामेन शोभनमौचित्यानतिवर्ति प्रमाणं यस्य स

विक्रम्भायामसुप्रमाणः । रा० ।

**विक्रंभसूह-** स्त्री० [विष्कम्भसूचि]

विस्तरश्रेणौ, अणुओ० ।

**विक्ररण-** न० [विकिरण]

इतस्ततो विक्रपणे, बुह०२ उ० । उवा०

**विक्ररिजमाण-** त्रि० [विकीर्यमाण]

इतस्ततो विप्रकीर्यमाणे, रा०

**विक्राय-** त्रि० [विख्यात]

‘इक्खागरायवसभो, कुन्थू नाम नरेसरो विक्रायकिती भयवं, पतो गइमणुतरं । उत्त० १८ अ० ।

**विक्रिण्ण-** त्रि० [विकीर्ण]

प्रसारिते, भग०१४ श०१ उ० ।

**विक्रित-** त्रि० [विक्षिप्त]

आकृष्टे, पण्हा० १ अ० आव० ।

विक्षिप्तानि नामत एव धान्यराशयोऽभिन्नाः परमेकतः संबद्धाः बुह० २ उ० ।

**विक्रित्ता-** स्त्री० [विक्षिप्ता]

प्रतिलेखितस्य वस्त्रस्य अप्रतिलिखितवस्त्रोपरिमोचने यवनिकादौ वा प्रक्षेपणे, वस्त्राञ्जलादीनामूर्ध्वं क्षेपणे, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।  
विक्षेपां तु तां विद्धि यत्र वस्त्रस्यान्यत्र क्षेपणम् । ओह०

**विक्रवे-** पुं० [विक्षेप]

विस्मृतिगमने, वव० ६ उ० ।

**विक्रवेणविणय-** पुं० [विक्षेपणविनय]

विक्षिप्यते इति विक्षेपणं तदेव विनयो विक्षेपणवि नयः । विनयभेदे । आव०म० ।

**विक्रवेणी-** स्त्री० [विक्षेपणी]

विक्षिप्यते सन्मार्गात्कुमार्गे कुमार्गाद् वा सन्मार्गे श्रोताऽनयेति विक्षेपणी । ठा० ४ ठा० २ उ० ।

कथाभेदे, ठा० ।

**विक्रवेविया-** स्त्री० [व्याक्षेपिका]

व्याक्षेपस्य व्याक्षेपशब्दस्य भावः प्रवृत्तिनिमित्तं व्याक्षेपिका । व्याक्षेपे, वव० ६ उ० ।

**विग-** पुं० [वृक्]

ईहामृगपर्याये, पण्हा०१ अ०

तरक्षके, नाया०१ श्रु०१ अ० । ठा० । पण्हा० ।

**विगइ-** स्त्री० [विकृति]

विकारे, बुह० ३ उ० ।

शरीरमनसोः प्रायो विकारहेतुत्वात् घृतादिरसविशेषे, ठा० ।

**विगइंगालधूम-** त्रि० [विगताङ्गारधूम]

अङ्गारधूमदोषरहिते, आचा० १ श्रु०२ अ०५ उ० ।

**विगइणिज्जूह-** त्रि० [विगतिनिर्युद्ध]

निर्विकृतिके, आचा०१ श्रु०२ अ०५ उ० ।

**विगइपडिबद्ध-** त्रि० [विकृतिप्रतिबद्ध]

घृतादिरसविशेषगृद्धे, अनुपधानकारिणि, बुह०४ उ० । ठा० ।

**विगओदग-** त्रि० [विगतोदक]

बिन्दुरहिते, कल्प०३ अधि० ९

**विगंचिउ-** अव्य० [विविच्य]

परिष्ठाणेत्यर्थे, वव०२ उ० ।

**विगणिज्जंत-** त्रि० [विगण्यमान]

आत्मपरेषां जुगुप्सायोग्ये, तं० । ।

**विगतग-** त्रि० [विकर्तक]

प्राणिनां चर्मापनेतृषु, सूय०२ श्रु०२ अ०

**विगतिऊण-** अव्य० [विकर्त्य]

छित्तेत्यर्थे, सूय०१ श्रु०५ अ०२उ०

**विगप्पण-** न० [विकल्पन]

उपकरणपरिकल्पने, उत्त०२३ अ० ।

**विगप्पिय-** त्रि० [विकल्पित]

कल्पनाशिल्पनिर्मिते, नं० । अणुओ० ।

**विगम-** पुं० [विगम]

विनाशे, विशेषे । आव०म० । गच्छा० । निसि० । ठा० । आव० ।

**विगमसहाव-** त्रि० [विगमस्वभाव]

विनश्चररूपे, विशेषे ।

**विगय-** [विकृत]

विकारवति, नाया०१ श्रु०८ अ० । उवा० ।

विगतजीवे, बुह० २ उ० ।

**विगय-** त्रि० [विगत]

अपगते, सूय०१ श्रु०१ अ०४ उ० ।

व्यतीते, बुह०२ उ० ।

प्रलीने, सूय०१ श्रु०६ अ० ।

विनष्टे, आव०म०१ अ० ।

विप्रनष्टे, जीवा०३ प्रति०४ ।

विकृतेविकारवत्यौ भग्नेविसंस्थुलतया भुग्ने वक्रे भ्रुवौ यस्य पिशाचरूपस्य तत्तथा । उवा०२ अ० ।

**विगयकप्पयणिभ-** त्रि० [विकृतकल्पकनिभ]

विकृतौ योऽरञ्जकादीनां कल्प एव कल्पकश्छेदः—खण्डं तन्निभम् । कर्परसदृशे, उवा० २ अ० ।

**विगयमेहि-** त्रि० [विगतगृद्धि]

विगता—प्रलीना बाह्याभ्यन्तरेषु वस्तुषु गुविर्ग्राह्याभिलाषो यस्य स विगतगृद्धिः । सूय०१ श्रु०६ अ० । आचा० ।

विगता—अपगता आहारादौ गृद्धिर्यस्यासौ विगतगृद्धिः । आहारा-दिषु गृद्धिरहिते, सूय०१ श्रु०१ अ०४ उ० ।



**विगयधूम-** न० [विगतधूम]

द्वेषरहिते, रागेण सङ्गालं दोसेण सधूमगं ति नायव्वो पण्हा० १

**विगयपक्ख-** पुं० [विगतपक्ष]

विगतं विगमो वस्तुनोऽवस्थान्तरापेक्षाया विनाशः, स एव पक्षो वस्तुधर्मस्तस्य वा पक्षः परिग्रहो विगतपक्षः। विगतं त्विहा-  
शेषकर्माभावोऽभिमतो जीवेन तस्याप्राप्तपूर्वतयाऽत्यन्तमुपादेय-  
त्वात्तदर्थत्वाच्च पुरुषप्रयासस्य। भग० १ श० १ उ०।

**विगयसोगा-** स्त्री० [विगतशोका]

नलिनावतीविजयक्षेत्रवर्तिपुरीयुगले, ठा० २ ठा० ३ उ०।  
पंचसप्ततितमे महाग्रहे, ठा०।

**विगयागार-** त्रि० [विगताकार]

साकाररहिते, अनाकारप्रत्याख्याने, ठा० २ ठा० ३ उ०।

**विगरण-** न० [विकरण]

उचितकरणादर्शने वव० १० उ०।  
खण्डशः कृत्वा परिष्ठापने, बुह० ४ उ०।

**विगराल-** त्रि० [विकराल]

विकृताङ्गोपाङ्गधरे, उत्त० १२ अ०।  
भयोत्पादके, तं०।

**विगल-** त्रि० [विकल]

विरुद्धेन्द्रियवृत्तिषु, पण्हा० ३ अ०  
पाणिपादाद्यवयवव्यङ्गितेषु, बुह० १ उ० २।

**विगलाएस-** पुं० [विकलादेश]

नयवाक्यापरपर्याये नये, ठा०।

**विगलेंदिय-** पुं० [विकलेन्द्रिय]

विकलान्यसंपूर्णानि इन्द्रियाणि येषां ते विकलेन्द्रियाः। एकद्वि-  
त्रिचतुरिन्द्रियेषु, वव० १ उ०। विशेषे  
अपञ्चेन्द्रियेषु, ठा० ३ ठा० १ उ०।

**विगसंत-** त्रि० [विकसत्]

वर्द्धमानविकाशे, नाया० १ श्रु० १ अ०।

**विगसिय-** त्रि० [विकसित]

व्याक्रोशीभूते, अभिनवोद्बुद्धे, चंद० १ पाहु०।

**विगहा-** स्त्री० [विकथा]

विरुद्धा स्त्र्यादिविषया कथा। सम० ४ सम०  
‘जो संजओ पमतो, रागदोसगो परिकहेइ। सा उ विकहा प-  
ययणे, पत्रत्ता धीरपुसेहिं’। उत्त०।

**विगहापरायण-** त्रि० [विकथापरायण]

सप्तप्रकारविकथातत्परे, गच्छा० १ अधि०।

**विगहासील-** त्रि० [विकथाशील]

विरुद्धकथाकथनस्वभावे, गच्छा० २ अधि०।

**विगाढ-** त्रि० [विगाढ]

विशेषेण गाढो विगाढः। विनाशयितुमशक्ये उत्त० १० अ०।  
समन्ताद् व्याप्ते, ठा० १ ठा०।

**विगार-** पुं० [विकार]

वर्णस्यान्यथाभावापादने, अणुओ०।

**विगिंचण-** न० [विवेचन]

पृथक्करणे, बुह० १ उ० ३। सूय०। आचा०।  
अपनयने, सूय० २ श्रु० १३ अ०।  
त्यागे, आचा० १ श्रु० १ अ० २ उ०। ठा०। सूय०। आव०चू०।  
निर्जरायाम्, ठा० ८ ठा० ३ उ०।

**विगिंचमाण-** त्रि० [विवेचयत्]

क्षपयति, आचा० २ श्रु० ६ अ० २ उ०।  
परिष्ठापयति, सकृच्छोधयति, ठा० ५ ठा० २ उ०।

**विगिंचिय-** अव्य० [विविच्य]

त्यक्त्वेत्यर्थे, आचा० १ श्रु० २ अ० ८ उ०। भग०।

**विगिङ्-** त्रि० [विकृष्ट]

नातिदीर्घे, नाया० १ श्रु० १५ अ०।

**विगुण-** पुं० [विगुण]

विगताः छाद्मस्थिकज्ञानादयो गुणा यस्य स विगुणः। आव०म० १  
केवलिनि, सत्त्वरजस्तमोगुणरहिते, विशेषे।

**विगुव्वणा-** स्त्री० [विकुर्वणा]

वैक्रियकरणे, ठा० ६ ठा० ३ उ०।

**विगुव्वित्ता-** अव्य० [विकुर्व्य]

वैक्रियं कृत्वेत्यर्थे, ठा० ७ ठा० ३ उ०।

**विगोवइत्ता-** अव्य० [विगोप्य]

गुप्तं प्रकटीकृत्वेत्यर्थे, कल्प० १ अधि० ०५।

**विगह-** पुं० [विग्रह]

कलहे, विशेषे। पण्हा०।  
विशिष्टं बाह्येन्द्रियेण गृह्यत इति विग्रहः। औदारिकशरीरे,  
आचा० १ श्रु० ५ अ० २ उ०।  
युद्धे, सूय० १ श्रु० १३ अ०। वक्रगमने, ठा० ३ ठा० ४ उ०।  
क्षेत्रविभागे, ठा० १० ठा० ३ उ०।  
लोकनाडीचक्रे, ठा० ०२ ठा० ४ उ०।  
काये, उत्त० ५९ गाथा।

**विगहकडय-** न० [विग्रहकण्डक]

विग्रहो-वक्रं कण्डकम् अवयवो विग्रहरूपं कण्डकं। ब्रह्मलोक-  
कूपरे लोकाऽवयवे, यत्र वा प्रदेशवृद्ध्या हान्या वा वक्रं भवति,  
तद्विग्रहकण्डकम्। प्रायो लोकान्तेषु अवयवविशेषे, भग० १३ श० ४  
अङ्गादाने, शिश्रे, निसि० ११ उ०।



**विग्गहगइ-** स्त्री० [विग्रहगति]

वक्रगतौ, ठा० २ ठा० ३ उ० । भग०

**विग्गहगइसमावन्नग-** त्रि० [विग्रहगतिसमापन्नक]

तद्गतप्राप्तेषु, भग० १ श० २ उ० ।

**विग्गहविग्रहिय-** पुं० [विग्रहविग्रहिक]

विग्रहो-वक्रं तद्युक्तो विग्रहः शरीरं यस्यास्ति स विग्रहविग्रहिकः ।  
वक्रकाये, भग० ।

**विग्रहिय-** पुं० [विग्रहिक]

विग्रहो-युद्धं स विद्यते यस्यासौ विग्रहिकः । युद्धप्रिय, सूय० १ श्रु०

**विग्घ-** न० पुं० [विघ्न]

अन्तराये, आव० ५ अ० । नाया० । तं० । । उव०

**विग्घकर-** त्रि० [विघ्नकर]

अन्तरायकारके, पण्हा० ३ अ०

**विघडण-** न० [विघटन]

विनाशने, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

**विघण-** न० [विघन]

विगतं घनं मेघं यत्र । मेघरहिते, नाया० १ श्रु० ९ अ० ।

**विघाय-** पुं० [विघात]

अन्तरे, विशेष० ।

**विघुट्ट-** त्रि० [विघुष्ट]

विरूपघोषकरणे, पण्हा० ३ अ०

**विचक्षु-** पुं० [द्विचक्षुष]

द्वाभ्यां चक्षुरिन्द्रियावधिभ्यां तत्त्व ग्रहीतरि ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

**विचच्चिया-** स्त्री० [विचर्चिका]

विपादिकायाम्, बुह० १ उ० ३ । पण्हा० ।

**विचिकी-** स्त्री० [विचिकी]

वाद्यभेदे, रा० ।

**विचित्त-** त्रि० [विचित्र]

विविधरूपवति, नाया० १ श्रु० २ अ० ।

नाना-प्रकारे, विशेष० । चंद० ।

अपूर्वे, आव० म० १ अ० । पन्न० । निसि० ।

विविधवर्णविशेषवति, ठा० १ ठा० ३ उ० ।

विविधचित्रयुक्ते, सूर० २० पाहु० ।

कुबुरे, नाया० १ श्रु० ९ अ० । ठा० ।

विचित्रो विचित्रकलित उल्लोकः उपरि-भागो यत्र तत्तथा ।

कल्प० १ अधि० २ क्षण । भग० ।

विचित्राणां मणिरत्नानां कुट्टिमतलं बद्धभूभागो यस्य स तथा ।

कल्प० १ अधि० ७ क्षण । जीवा० ।

वेणुदेववेणुदारिणोः पूर्वलोकपाले, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**विचित्तकूड-** पुं० [विचित्रकूट]

जम्बूद्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य पूर्वे शीतोदाया महानद्या दक्षिणे  
वक्षस्कारपर्वते, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**विचित्तपक्ख-** १ पुं० [विचित्रपक्ष]

चतुरिन्द्रियजीवभेदे, जीवा० १ प्रति० पन्न० ।

**विचित्तपक्ख-** २ पुं० [विचित्रपक्ष]

वेणुदेववेणुदारिणोरुत्तरलोकपाले, ठा० ४ ठा० १ उ० । भग० ।

**विचित्तवेस-** त्रि० [विचित्रवेष]

विविधवस्त्रादिनेपथ्यधारिणि, बुह० १ उ० ३ ।

**विचित्ता-** १ स्त्री० [विचित्रा]

ऊर्ध्वलोकवास्तव्यायां दिक्कुमार्याम्, आव० चू० १ अ० । ठा० । आव०

**विचित्ता-** २ स्त्री० [विचित्रा]

अधोलोकवासिन्यां दिक्कुमार्याम्, आव० म० । जंबू० । निसि० । आव०

**विच्च-** त्रि० [विच्य]

च्युते, वाते, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । आव० म० ।

**विच्चवण-** न० [विच्यवन]

भ्रंशे, विशेष० ।

**विच्चाभेलिय-** न० [व्यत्याप्रेडित]

विपरीते, विशेष० ।

**विच्चाभेलियदाण-** न० [व्यत्याप्रेडितदान]

वितथसूत्रार्थप्रदाने, विशेष०

**विच्चुइ-** स्त्री० [विच्युति]

विस्मरणे, विशेष० ।

**विच्चुय-** त्रि० [विच्युत]

विस्मरतः पतिते, वव० ८ उ० ।

**विच्चुया-** स्त्री० [विच्युता]

चतुरिन्द्रियजीवभेदे, पन्न० १ पद । जीवा०

**विच्चुया-** न० [विच्योयणा]

उपधानके, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । कल्प० ।

**विच्छडुइत्ता-** अव्य० [विच्छर्द्ध]

विशेषेण त्यक्तत्वेत्यर्थे, कल्प० १ अधि० ५ ।

**विच्छट्टिय-** त्रि० [विच्छर्दित]

त्यक्ते, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

विच्छर्दितप्रचुरभक्तपानः । विच्छर्दिते त्यक्ते बहुजनभोजन दानेना  
वशिष्टोच्छिष्टसंभवात् सञ्जातविच्छर्दे वा नानाविधभक्तिके भक्ति-  
पाने यस्य स तथा । नाया० १ श्रु० १ अ० ।

विच्छर्दितं विविधमुज्झितं बहुलोकभोजनत उच्छिष्टावशेषसम्भ-  
वात् । विच्छर्दितं वा विविधं विच्छित्तिमद् विपुलं भक्तं च पानकं  
च येषां ते तथा । भग० ३ श० ५ उ० ।

**विच्छय-** त्रि० [विक्षत]

विविधप्रकारेण पीडिते, । सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ० ।  
अनेकप्रकारं हते, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ० ।

**विच्छवि-** त्रि० [विच्छवि]

विगतच्छाये, स्फुरितच्छवौ, जीवा०३ प्रति ०१ उ० ।

**विच्छिंदण-** पुं० [विच्छेदन]

बहुवारं सुष्ठु वा छेदने, निसि०३ उ०

**विच्छिंदमाण-** त्रि० [विच्छिन्दत्]

नितरामसकृद् वा छिन्दति, भग० ८ श०३ उ० ।  
विशेषेण विविधतया वा छिन्दति, भग०१५ श० । विशेष० ।

**विच्छिंदावंत-** त्रि० [विच्छिन्दत्]

नितरामसकृद्वा छिन्दति, निसि० १ उ० ।

**विच्छिण्ण-** त्रि० [विच्छिन्न]

सान्तरे, विशेष० ।

**विच्छिण्ण-** त्रि० [विस्तीर्ण]

पृथुले, अतिविस्तीर्णे, पण्हा० ४ अ०  
विस्तारवति, ठा० ८ ठा० ३ उ० । जंबू० । आव०म० ।

**विच्छिण्णतर-** त्रि० [विस्तीर्णतर]

विष्कम्भतो विस्तीर्णे, भग० १३ श० ३ उ० ।

**विच्छिण्णदोहला-** स्त्री०

विच्छिन्नदोहदा विवक्षितार्थवाञ्छानुबन्धायाम्, विपा०१ श्रु०२ अ०

**विच्छिण्णमाण-** त्रि० [विच्छुप्यमान]

विशेषेण स्पृश्यमाने, जंबू० २ वक्ष० । कल्प० ।

**विच्छुडिय-** त्रि० [विच्छुटित]

मुक्ते, नाया० १ श्रु० १६ अ० ।

**विच्छुय-** पुं० [वृश्चिक]

पुच्छकण्टकविषधरे चतुरिन्द्रियजीवभेदे, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।  
आचा० । पन्न० । जीवा० ।

**विच्छुयडंक-** पुं० [वृश्चिकडङ्क]

वृश्चिकपुच्छकण्टके, पण्हा० १ अ०

**विच्छुयविजा-** स्त्री० [वृश्चिकविद्या]

वृश्चिकप्रधाना विद्या वृश्चिकविद्या । शतसहस्रवृश्चिकविकुर्वणा-  
त्मिकायां परिव्राजकविद्यायाम्, आव०म०१ अ० ।

**विच्छुलंगुल-** न० [वृश्चिकलाङ्गुल]

वृश्चिकपुच्छे, वृश्चिकलाङ्गुलसंस्थानं पूर्वाषाढायाः । जंबू०७ वक्ष० ।

**विच्छेय-** पुं० [विच्छेद]

विविधैः प्रकारैश्छेदे, उवा० ७ अ० । विशेष० । दशा० ।

**विच्छेयण-** न० [विच्छेदन]

दूरे व्यवस्थापने, विशेषेण छेदने, ठा० ५ ठा० १ उ० ।

**विजइंदसूरि-** पुं० [विजयेन्द्रसूरि]

देवेन्द्रसूरिसतीर्थ्य देवभद्रसूरिशिष्ये बुह० ।

**विजढ-** न० [विहीन]

परित्यक्ते, ओह० । बुह० । वव० ।

**विजंभिय-** न० [विजृम्भित]

मुखविस्फाटने, विशेष० ।

**विजण-** त्रि० [विजन]

विगतजने, आव०४ अ० ।

**विजय-** पुं० [विजय]

निर्णये, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**विजय-** पुं० [विजय]

परदेशजये, कल्प०१ अधि०१ ।  
समृद्धौ, ठा० १० ठा० ३ उ० । सम० ।  
अभ्युदये, चंद० १८ पाहु० । जीवा० । रा० । जंबू० ।  
अपरेषामभिभवे, नाया० १ श्रु०१ अ० । विपा० ।  
परेषामसहमानानामभिभवोत्पादे, जीवा० ३ प्रति० ४ ।

**विजयकूड-** न० [विजयकूट]

जम्बूद्वीपे मन्दरस्योत्तरे रुचकवरपर्वतस्य कूटभेदे, ठा० ८ ठा० ।

**विजयघोस-** पुं० [विजयघोष]

वाराणसीवास्तव्ये जयघोषभ्रातरि, उत्त०२५ अ० ।

**विजयदार-** न० [विजयद्वार]

जम्बूद्वीपलवणसमुद्रधातकीखण्डकालोदपुष्करवरपुष्करोदानां  
द्वीपसमुद्राणां पूर्वद्वारे, जंबू०१ वक्ष०

**विजयदूसग-** न० [विजयदूष्य]

वितानकरूपे वस्तुविशेषे, ठा० ४ ठा० २ उ० । आव०म० । जीवा०

**विजयदेवा-** स्त्री० [विजयदेवा]

मण्डिकमौर्यपुत्रयोर्वीरगणधरयोर्मातरि, आव०म० १ अ० ।

**विजयपुर-** न० [विजयपुर]

सुमतिनाथस्य तीर्थकृतः प्रथमपारणकस्थाने, आव०म०१ अ० ।  
'चउत्थस्स उक्खेवओ विजयपुरं गयरं गंदणवणं उज्जाणं असोगो  
जक्खो वासवदत्तो राया' निर० ।

**विजयपुरा-** स्त्री० [विजयपुरा]

पक्ष्मकावतीविजयक्षेत्रवर्तिपुरीयुगले, जंबू०४ वक्ष० ।

**विजयप्पभ-** पुं० [विजयप्रभ]

यशोविजयसमकालिके तपागच्छपदाधिष्ठिते सूरौ, न० ।

**विजयवद्धमाण-** पुं० [विजयवर्द्धमान]

एकापि राष्ट्रकूटरक्षिते, ग्रामभेदे, विपा० १ श्रु०१ अ० ।

**विजयविमल-** पुं० [विजयविमल]

गच्छाचारप्रकीर्णकवृत्तिकारक सूरि, गच्छा० ३ अधि० ।

**विजयवेजयंती- स्त्री० [विजयवैजयन्ती]**

विजयोऽभ्युदयस्तत्सूचिका वैजयन्त्यभिधाना पताका । अथवा – विजया इति वैजयन्तीनां पार्श्वकणिका उच्यते तत्प्रधाना वैजयन्ती विजयवैजयन्ती । रा० । सूय० । जीवा० । आव०म० । नाया० । भग० । विजयसूचके पार्श्वतो लघुपताकाद्वययुते पताकाविशेषे, उव० ।

**विजयसिंह- पुं० [विजयसिंह]**

यशोविजयोपाध्यायसमकालिकाचार्य विजयप्रभगुरौ, हीरविजय-सूरिपट्टपरम्परासूरौ, न० । मुनिचन्द्र-शिष्याजितदेवसूरिशिष्ये, गच्छा०३ अधि० ।

**विजयसेण-१ पुं० [विजयसेन]**

स्वनामख्याते चन्द्रकान्तानगरीराज, कल्प०१० अधि०१ ।

**विजयसेण-२ पुं० [विजयसेन]**

एकोनविंशे अहोरात्रमुहूर्ते, चंद० १० पाहु० ।

**विजया-१ स्त्री० [विजया]**

पूर्वरुचकवास्तव्यायां दिक्कुमार्याम्, ठा० ८ ठा० ३३० । आव०चू० । जंबू० । आव०म० । ति० । आव०

**विजया-२ स्त्री० [विजया]**

पक्षस्य सप्तमतिथिरात्रौ, चंद०१० पाहु० । कल्प० । जंबू० । ज्यो० ।

**विजया-३ स्त्री० [विजया]**

अङ्गारादीनां महाग्रहाणामग्रमहिषीषु, ठा०४ठा० १३० । भग० । जंबू०

**विजया-४ स्त्री० [विजया]**

द्वितीयजिनस्य अजितस्वामिनो मातरि, आव०१ अ० ।

**विजया-५ स्त्री० [विजया]**

पञ्चम-तीर्थकरस्य निष्क्रमणशिविकायाम्, सम० । आव० ।

**विजया-६ स्त्री० [विजया]**

चतुर्थचक्रवर्तिभार्यायाम्, सम० । पञ्चमबलदेवमातरि, सम० । आव० ।

**विजया-७ स्त्री० [विजया]**

पार्श्वनाथान्तेवासिन्याम् आव०म०१ अ० ।

**विजया-८ स्त्री० [विजया]**

मृगावतीप्रतिहारिण्याम्, आव०म०१ अ० । आव०चू० ।

**विजया-९ स्त्री० [विजया]**

उत्तरस्य अञ्जनादिपर्वतस्य पूर्वदिशि नन्दापुष्करिण्याम्, ठा० ।

**विजयाणंद- पुं० [विजयानन्द]**

धर्मसंग्रहवृत्तिकृष्णानविजयगुरुशान्ति विजयस्य गुरौ, कल्प० ।

**विजहण- न० [विहान]**

परित्यागे, ठा० । 'विजहण' ति आचार्योपाध्यायगणित्वादिभेदेन त्रिविधैव विहानं परित्यागः । ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

**विजहिता- अव्य० [विहाय]**

विशेषेण तदनुस्मरणात्मकेन हित्वा । । उत्त०८ अ० । परित्यज्येत्यर्थे, आचा०१ श्रु०१ अ०३ उ० ।

**विजाणंत- त्रि० [विजानान]**

विवेकानि, सूय०१ श्रु०११ अ० ।

**विजियसमुद्देशणा- स्त्री० [विवित्यसमुद्देशना]**

तदेव योग्यनान्यदिति विचिन्त्य समुद्देशने, वव०१० उ० ।

**विजियोद्देशणा- स्त्री० [विजितोद्देशना]**

सम्यग्योग्यतां परिनिश्चित्योद्देशने, वव०१० उ० ।

**विज- त्रि० [विद्वस्]**

पण्डिते, सूय०१ श्रु०१३ अ० ।

सदसद्विवेकिनि यथावस्थिततत्त्वग्रहीतरि, सूय०१ श्रु०७ अ० ।

सकलपदार्थानां करतलामलकन्यायेन वेत्तरि, सूय०१ श्रु०६ अ० ।

सश्रुतिके, सूय०१ श्रु०९ अ० ।

**विज- पुं० [वैद्य]**

चिकित्साकर्तारि, गच्छा०१ अधि० ।

वैद्यकशास्त्रे, चिकित्सायां च कुशले, विपा०१ श्रु०१ अ० ।

**विजकिरिया- स्त्री० [वैद्यक्रिया]**

चिकित्सापरिज्ञानरूपे कलाभेदे, कल्प०१ अधि०७ क्षण ।

**विज्जाणया- स्त्री० [वैद्यज्ञाता]**

स्थविरात् श्रीगुप्ताभिर्गतस्य चारणगणस्य शाखायाम्, कल्प०२ ।

**विज्जपुत्त- पुं० [वैद्यपुत्र]**

वैद्यकशास्त्रचिकित्सोभयकुशलस्य पुत्रे, विपा०१ श्रु०१ अ० ।

**विज्जमाण- त्रि० [विद्यमान]**

सति, आव०चू० । आचा० ।

'अत्थि भावो ति वा विज्जमाणभावो ति वा एगट्ठा' आव०चू०१

**विज्जय- न० [वैद्यक]**

चिकित्साशास्त्रे, सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ० ।

**विज्जल- न० [विज्जल]**

विगतं जलं विज्जलम् । शिथिलकर्दमे, निसि० १ उ० । दश० ।

**विज्जा- स्त्री० [विद्या]**

वेदनं विद्या । तत्त्वज्ञाने, उत्त०६ अ० । न० ।

सम्यग्ज्ञाने, उत्त० ५ अ० । सूय० । न० । गच्छा० ।

परिज्ञाने, आव०म० १ अ० । सम०

**विज्जाचरण- न० [विद्याचरण]**

श्रुतसंयमयोः, उत्त०२२ अ० ।

विद्या चरणं च क्रिया ते द्वे अपि विद्येते कारणत्वेन यस्येति विगृह्य अर्शआदित्वान्मत्वर्थयोऽच्, असौ विद्याचरणः । ज्ञानक्रियाजन्ये, सूय०१ श्रु०१२ अ० ।

**विज्ञाचरणपारग-पुं० [विद्याचरणपारग]**

विद्या श्रुतज्ञानं तथा चर्यत इति चरणं चारित्र्यम्, विद्या च चरणं च विद्याचरणे, तयोः पारगः—पर्यन्तगामी । उक्त० १८ अ० ।

ज्ञानचारित्र्ययोः पारगामिनि, उक्त० २३ अ० ।

**विज्ञाचरणविणिच्छय-पुं० [विद्याचरणविनिश्चय]**

विद्येति ज्ञानं तच्च सम्यग्दर्शनसहितमवगन्तव्यमन्यथा ज्ञान-  
त्वायोगात्, चरणं चारित्र्यमेतेषां फलविनिश्चयप्रतिपादको ग्रन्थो  
विद्याचरणविनिश्चयः श्रुतभेदे, न० ।

**विज्ञाचारण-पुं० [विद्याचारण]**

विद्या—श्रुतं तच्च पूर्वतत्कृतोपकारश्चारणो विद्याचारणः । भग० २०  
श० ८ उ० । उक्त० ।

विद्याविवक्षितः कोप्यागमस्तत्प्रधानश्चारणो विद्याचारणः । विशेषे  
विद्यावशतः समुत्पन्नगमनागमनलब्धि, आव० म० । आव० चू० ।

**विज्ञानुओग-पुं० [विद्यानुयोग]**

रोहिणीप्रभृतिविद्यासाधनाभिधायके शास्त्रे, सम० २९ सम० ।

**विज्ञानुप्पवाय-न० [विद्यानुप्रवाद]**

विद्या अनेकातिशयसंपन्ना अनुप्रवदति साधनानुकूल्येन सिद्धि-  
प्रकर्षेण प्रवदतीति विद्यानुप्रवादम् । दशमे पूर्वगते, तस्य पद-  
परिमाणम् एका पदकोटी दश च पदलक्षाः । न० ।

**विज्ञातिसय-पुं० [विद्यातिसय]**

विद्याविशेषेषु, यैराकाशगमादीनि भवन्ति । वव० ४ उ० ।

**विज्ञापिंड-पुं० [विद्यापिण्ड]**

विद्यया व्याख्यानतो यः प्राप्तः पिण्डः स विद्यापिण्डः । आचा० २  
श्रु० १ चू० १ अ० ९ उ० ।

विद्ययोपार्जिते उत्पादनादोषविशिष्टे आहारे, जीवा० ।

यदा विद्यया सुरं साधयित्वा आहारं गृह्णाति तदा विद्यापिण्डो  
द्वादशो दोषः । विद्यां पाठयित्वा ग्रन्थमध्याप्य भोजनादिकं  
गृहस्थात् गृह्णाति तदा विद्यापिण्डो द्वादशो दोषः । उक्त० २४ अ० ।

**विज्ञासत्थ-न० [विद्याशास्त्र]**

विद्याधिष्ठिते शास्त्रे, सूय० १ श्रु० ८ अ० ।

**विज्ञासिक्-पुं० [विद्यासिद्धि]**

साधितविद्ये सिद्धभेदे, आव० म० ।

**विज्ञाहर-पुं० [विद्याधर]**

विद्यां धरन्तीति विद्याधराः । वैताढ्यपुराधिपतिषु, सूय० १ श्रु० १४  
प्रज्ञास्यादिविविधविद्याविशेषधारिषु, उव० ।

विशिष्टशक्तिमत्पुरुषविशेषेषु, जंबू० ४ वक्ष० । रा० । आव० म० । पन्न०  
वज्रसेनप्रव्राजिते जिनदत्तपुत्रे, कल्प० २ अधि० ८ क्षण ।

सुस्थितसुमतिबुद्धयोः शिष्ये, कल्प० १ अधि० २ क्षण ।

विंशतिव्याकरणानां मध्ये अन्यतमव्याकरणस्य कर्तारि, कल्प० १

**विज्ञाहरनगरावास-पुं० [विद्याधरनगरावास]**

वैताढ्यपर्वते विद्याधरश्रेणिषु नगररूपेषु आवासेषु, जंबू० ४ वक्ष० ।

**विज्ञाहरसेढि-स्त्री० [विद्याधरश्रेणि]**

दीर्घवैताढ्यसंभवेषु विद्याधर-नगरश्रेणिषु, ठा० ।

**विज्ञाहरी-स्त्री० [विद्याधरी]**

विद्याधरसम्बन्धिन्याम् । नाया० १ श्रु० १६ अ० ।

कोटिकाकन्दिकाभ्यां निर्गतकोटिकगणस्य शाखायाम्, कल्प० २  
स्थविराद् विद्याधरगोपालात्रिर्गतशाखायाम्, कल्प० २ अधि० ८

**विज्जिडियामच्छ-पुं० [विज्जिटिकामत्स्य]**

मत्स्यभेदे, पन्न० १ पद ।

**विज्जु-स्त्री० [विद्युत्]**

तडिति, पन्न० । ठा० । सूर० । उव० ।

‘विज्जुआअंति’ विद्युतं विकुर्वन्तीत्यर्थः । आव० म० १ । उव० ।

असुरकुमारस्याग्रमहिष्याम्, ठा० ५ ठा० १ उ० । रा० ।

ईशानेन्द्रलोकपालानामग्रमहिष्याम्, ठा० ४ ठा० १ उ० । भग०

विद्युत्कुमार, पुं० । पण्हा० अ०

**विज्जुअंतरिया-स्त्री० [विद्युदन्तरिका]**

विद्युति सत्यामन्तरं भिक्षाग्रहणस्य येषामस्ति ते विद्युदन्तरिकाः ।

विद्युत्सम्पाते भिक्षामनटत्सु, उव० ।

**विज्जुकुमार-पुं० [विद्युत्कुमार]**

भूषणनियुक्तवज्ररूपचिह्नधर भवनपतिभेद, पन्न० २ पद । ठा० । भग०

**विज्जुकुमारीमहत्तरिया-स्त्री० [विद्युत्कुमारीमहत्तरिका]**

विदिगुरुचक्रवास्तव्यासु दिक्कुमारीमहत्तरिकासु, ठा० ।

**विज्जुजिब्भ-पुं० [विद्युजिह्व]**

कर्दमस्यानुबेलन्धरनागस्यावासपर्वते, ठा० ४ ठा० २ उ० ।

**विज्जुदंत-पुं० [विद्युदन्त]**

स्वनामख्याते अन्तरद्वीपे, ठा० ४ ठा० २ उ० । न० । पन्न० ।

**विज्जुप्पभ-पुं० [विद्युत्प्रभ]**

देवकुरुपश्चिमगजदन्तके, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**विज्जुप्पभदह-पुं० [विद्युत्प्रभदह]**

जम्बूद्वीपे मन्दरस्य दक्षिणे देवकुरुपुहदभेदे, ठा० ५ ठा० २ उ० ।

**विज्जुमई-स्त्री० [विद्युन्मती]**

कालायां सन्निवेशे सिंहनामग्रामकूटेन सह रतायां गोष्ठीदास्याम्,  
आव० म० १ अ० । आव० चू० ।

चित्रदुहितरि ब्रह्मदत्तचक्रवर्तिभार्यायाम्, उक्त० १३ अ० ।

**विज्जुमाली-पुं० [विद्युन्मालिन्]**

पञ्चशैलद्वीपराजे उदयनराजाय वीरप्रतिमाससमर्पके यक्षे,  
गच्छा० २ अधि० । आव० । कल्प० । निसि० । आव० चू० ।

स्वनामख्याते ब्रह्मलोकेन्द्रे, आव० म० १ अ० । आव० चू० ।

**विज्जुमेह-** पुं० [विद्युन्मेघ]

विद्युत्प्रधाने जलवर्जितमेघे, भग०७ श०६ उ० ।

**विज्जुया-** स्त्री० [विद्युत्]

बलिलोकपालानामग्रमहिष्याम्, ठा० ४ ठा० १ उ० । भग० ।

**विज्जुयार-** पुं० [विद्युत्कार]

विद्युत्-तडितसैव क्रियत इतिकारः कार्यं विद्युतो वा करणं कारः क्रिया । विद्युत्करणे, ठा० ।

**विज्जुवएस-** पुं० [वैद्योपदेश]

वैद्यनिरूपिते, गच्छा०१ अधि० ।

**विज्जुसिरी-** स्त्री० [विद्युच्छ्री]

आमलकल्पायां विद्युन्नामगृहपतेर्विद्युद्धारिकाजनिकायां भार्या-याम्, नाया०२ श्रु०१ वर्ग०४ अ० ।

**विज्जुसिहा-** स्त्री० [विद्युच्छिखा]

शिवमन्दरे नगरे ज्वलनशिखरस्य राज्ञो देव्याम्, उत्त०१३ अ० ।

**विज्जुसोयामिणीपहा-** स्त्री० [विद्युत्सौदामिनीप्रभा]

विशेषेण द्योतते इति विद्युत्, सा चासौ सौदामिनी चेति विद्युत् सौदामिनी । तद्वत्प्रभा यस्याः सा विद्युत्सौदामिनीप्रभा । स्फुरद् विद्युत्कान्तौ, उत्त० ९ अ० ।

**विज्जुडिय-** त्रि० [देशी]

मिश्रिते, व्याप्ते, भग०७ श०६ उ० ।

**विज्जुवण-** न० [विध्मापन]

विविधे उपशमने, निसि०५ उ० । आचा० ।

निर्वापने, आचा०२ श्रु०१ चू०२ अ०१ उ० ।

**विज्जुवेयव्व-** त्रि० [विध्यापयितव्य]

दाहादुपरमणे, नं० ।

निर्वापयितव्ये, दश०२ अ० । आव० ।

**विटंक-** पुं० [विटङ्क]

कपोतपाल्याम्, पण्हा०१ अ०

**विट्ट-** त्रि० [विष्ट]

उपविष्टे, बुह० १ उ०३ ।

**विट्टि-** स्त्री० [विष्टि]

करणभेदे, ववादिकरणानामन्यतमे, आव०म० १ अ० । सूय० ।

आव० । विशे० । आव०चू० । उत्त० । जंबू० ।

**विट्टाकोट्टागार-** न० [विष्टाकोट्टागार]

वर्चस्कगृहोपमे कलेवरे, तं० ।

**विड-** पुं० [विट]

स्त्रौणे, स्त्रीलम्पटे, आव०म०१ अ० ।

**विड-** स्त्री० [विट्]

गोमूत्रादिपक्वे लवणभेदे, दश०६ अ० ।

**विडंक-** पुं० [विटङ्क]

कपोतपाल्याम्, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

लोमपक्षिभेदे, जीवा०१ प्रति० ।

**विडंबक-** पुं० [विडम्बक]

विदूषके, नानावेषकारिणि, जीवा०३ प्रति० ४ अधि० । नाया० ।

**विडंबिय-** त्रि० [विडम्बित]

भूतावेष्टितपीतमद्यादिजनाङ्गविक्षेपतुल्ये उत्त० १३ अ० ।

विकृतिकृते, अणुओ० । नाया० ।

**विडाली-** स्त्री० [विडाली]

मार्जार्याम्, आव०क०१ अ० ।

**विडिम-** पुं० [विटपिन्]

वृक्षे, दश०१ अ० ।

**विडिमंतरपरिवसन-** पुं० [विडिमान्तरपरिवसन]

विडिमान्तेरेषु शाखान्तेरेषु प्रासादाद्याकृतिषु परिवसनमाकाल-मावासो येषां ते विडिमान्तरपरिवसनाः । वृक्षगेहालयेषु सुषमा-मनुष्येषु, विडिमान्तरनिवासिशब्दोऽप्यत्र । जीवा० ३ प्रति०४ ।

**विडिमा-** स्त्री० [विडिमा]

ऊर्ध्वविनिर्गतायां वृक्षशाखायाम्, जीवा० ३ प्रति०४ । जंबू० । रा० ।

**विड्वार-** न० [विद्वार]

विगतद्वारे नक्षत्रे, पूर्वद्वारिके नक्षत्रे, पूर्वदिशागन्तव्ये यदाऽपरया दिशा गच्छति तदा तद् विद्वारं भवति । वव० १ उ० । निसि० । विशे० । गणि० । आव०म० ।

**विड्वार-** न० [विड्वर]

यस्मिन् नक्षत्रे ग्रहो वक्रतामुपयाति शुद्धं वा विधत्ते तादृशे नक्षत्रभेदे, जीत० ।

**विणइय-** त्रि० [विनयित]

शिक्षां ग्राहित, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**विणओणय-** त्रि० [विनयावनत]

सर्वैर्विनयैर्नमति, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । जंबू० । भग० ।

**विणओवगय-** त्रि० [विनयोपगत]

मानमकुर्वति, सम० ३२ सम० ।

**विणओवयार-** पुं० [विनयोपचार]

विनय एवोपचारो विनयोपचारः विनयरूपे उपचारे, आव०३ अ०

**विणओववण-** त्रि० [विनयोपपन्न]

ज्ञानदर्शनसेवनरूपं विनयमुपपन्ने, उत्त० १ अ० ।

**विणट्ट-** त्रि० [विनष्ट]

उच्छूनत्वादिविकारैः स्वरूपादपेते, नाया०१ श्रु० ८ अ० ।

अत्यन्तविकृतावस्थां प्राप्ते, पण्हा०१ अ०

विगतभावे, नाया०१ श्रु०१ अ० । व्यापन्ने, ठा० ५ ठा० २ उ० ।



**विणट्ग- त्रि० [विनष्टाङ्ग]**

विकृतशरीरे, अप्रतिकर्मशरीरे, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ० ।

**विणट्टतेय- त्रि० [विनष्टतेजस]**

निःसत्ताकीभूततेजसि, भग०१५ सम० ।

**विणण- न० [विनन]**

वस्त्रस्य वानकर्मणि, बुह०१ उ०१ ।

**विणत- न० [विनत]**

प्राणतदेवलोकाविमानभेदे, सम०१९ सम० ।

**विणमि- पुं० [विनमि]**

महाकच्छसुते, भगवता ऋषभेण पुत्रत्वेन प्रतिपन्ने वैताड्यनगेश्वरे विद्याधरे, कल्प०१ अधि०७ । आव०चू० । आव०म० । आव० ।

**विणमिय- त्रि० [विनमित]**

विशेषेण फलपुष्पभारेण नते, उव० । नाया० । भग० ।

**विणय- पुं० [विनय]**

कर्मापनयने, विनीयते वाऽनेन कर्मेति विनयः । आव०२ अ० । विनयति नाशयति सकलक्लेशकारकमष्टप्रकारं कर्म स विनयः । देशकालाद्यपेक्षया यथोचितप्रतिपत्तिलक्षणे । आव०म० । दश० । कर्मविनयनसमर्थे अनुष्ठानविशेषे, । नाया० ठा० । उव० । आन्तरतपोरूपे, उत्त० १ अ० । गच्छा० । सम० । सूय० । नं० । विशिष्टो नयो विनयः । गुरुप्रतिपत्तिविशेषे ठा० ३ ठा० ३ उ० । गुरुशुश्रूषायाम्, ठा०४ठा०४उ० । आव० । आव०म० । आव०चू० । अभ्युत्थानपादधावनादौ, दश० ३ अ० । पादधावनादिरूपे, । आव०म० १ अ० । गुरुसेवाप्रकारे, दश० ९ अ०५ उ० । आव० । नं० । गच्छा० । अञ्जलिकरणादौ, भग० ९ श० ३३ उ० । उव० । आव०म० । अभिवन्दनादिलक्षणे । आव०म० १ अ० । आव०चू० । अभ्युत्थानाद्युपचारे, पण्हा०४ अ० । आव०क० । प्रमाणे, आव० २ अ० । आव०चू० । इच्छाकारादिदानेन बलात्कारपरिहारादिलक्षणे एकत्रान्यत्र च गुर्वनुज्ञया भोजनादिकृत्यकरणलक्षणे उपचारे, पण्हा० ३ । निसि० नीचैर्वृत्यनुत्सेके, आचा०१ श्रु०१ अ०१ उ० । संयम, आचा०१ श्रु०१ अ०७ उ० । चारित्र, सम०३० सम० ।

**विणयकम्म- न० [विनयकर्म]**

विनयनं विनयः । कर्मापनयनमित्यर्थः । विनीयते वाऽनेनाष्टप्रकारं कर्मेति विनयस्तस्य च कर्म विनयकर्म । पूजाकर्मणि, कृतिकर्मणि । आव० । विनयकर्माऽपि द्विधा-द्रव्यतो निहावादीनामनुपयुक्तसम्यग्दृष्टीनां च । भावत उपयुक्तसम्यग् दृष्टीनां विनयक्रियेति । आव०३ अ० ।

**विणयण- न० [विनयन]**

गमने, प्रापणे, आव०चू०१ अ० ।

**विणयण्णु- पुं० [विनयज्ञ]**

विनयो ज्ञानदर्शनचारित्र्यौपचारिकरूपस्तं जानातीति विनयज्ञः । ज्ञानादिरत्नत्रयज्ञे, आचा०१ श्रु०२ अ०५ उ० ।

**विणयपडिवत्ति- स्त्री० [विनयप्रतिपत्ति]**

विनयस्य प्रारम्भे, अङ्गो-कारे, दशा० ।

**विणयभंसि- पुं० [विनयभ्रंशिन]**

विनयाद् भ्रंश्यतीति विनयभ्रंशी । विनयकरणभीरौ, विशे० ।

**विणयवई- स्त्री० [विनयवती]**

विगतभयाया अन्तिके प्रव्रजितायां साध्व्याम्, सा च भक्त-प्रत्याख्यानेन मृत्वा देवलोकं गता । आव०४ अ० । आव०चू० ।

**विणयवादि- पुं० [विनयवादिन्]**

विनयादेव केवलात् क्रियासाध्यासिद्धिमिच्छति वैनयिके, आचा० १ श्रु०१ अ०७ उ० । सूय० ।

**विणयविजय- पुं० [विनयविजय]**

कल्पसुबोधिकाकारे, कीर्तिविजयगणिशिष्योपाध्यायश्री विनय-विजयगणिविरचितायां कल्पसुबोधिकायां सामाचारीव्याख्यानं सम्पूर्णम् । कल्प०३ अधि०२ ।

**विजयसंपण्ण- त्रि० [विजयसम्पन्न]**

अभ्युत्थानादिविनयसम्पन्ने, पंच०चू० १ । ठा० । उव० ।

**विणयसमाहि- पुं० [विनयसमाधि]**

विनयसमाधेश्च प्रतिपादके दशवैकालिकनवमेऽध्ययने, दश० ८

**विणयसमाहिद्वाण- न० [विनयसमाधिस्थान]**

विनयसमाधिभेदरूपेऽर्थे, दश० ।

**विणयसुद्ध- न० [विनयशुद्ध]**

‘किं इकम्मविसोहि पउंजए जो अहीणमइरित्तं । मणवयणकाय-गुत्तो, तं जाणसु विणयओ सुद्धं’ । इत्युक्तलक्षणे विनयतः सुद्धे कृतिकर्मणि, ठा० ५ ठा० ३ उ० । आव०चू० । आव० ।

**विणयस्सुय- न० [विनयश्रुत]**

विनयप्रतिपादके उत्तराध्ययनानां प्रथमेऽध्ययने, उत्त०१ अ० ।

**विणयहीण- त्रि० [विनयहीन]**

अकृतोचितविनये, आव० ।

**विणयायार- पुं० [विनयाचार]**

ज्ञानाचारभेदे, निसि०१ उ० ।

**विणस्समाण- त्रि० [विनश्यत]**

अनेकशो म्रियमाणे, उवा०७ अ० ।

**विणा- अव्य० [विना]**

अन्तरेणार्थे, वव०१ उ० ।

**विणायक- पुं० [विनायक]**

राक्षसभेदे, पत्र० १ पद । आव०म० १ अ० ।

**विणास- पुं० [विनाश]**

भूतविघटने, सूय० १ श्रु० १ अ० १ उ० ।

दण्डे, दण्डो निग्रहो याताना विनाश इति पर्यायाः । आव० ६ अ० ।

अत्यन्ताभावरूपे, सूय० २ श्रु० १ ।

**विणासन- न० [विनाशन]**

शैलेश्यवस्थायां सामस्येन कर्माभावापादने, आचा० १ श्रु० ९ अ० १

**विणासधम्म- त्रि० [विनाशधर्मन्]**

विनश्चरस्वभावे, बुह० ३ उ० ।

**विणासि- त्रि० [विनाशिन]**

विनश्चरे, विशेषे ।

**विणिउत्त- त्रि० [विनियुक्त]**

प्रतिसमयं प्रवृत्तिमति, विशेषे ।

निवेशिते, नाया० १ श्रु० १ अ० । व्यापारिते, वव० १ उ० ।

**विणिओग- पुं० [विनियोग]**

नियोगे, विणिओगो ति वा निओगो ति वा एगट्टा । आव०चू० १ आशयभेदे, विशेषे ।

**विणिगूहण- [विनिगूहन]**

प्रच्छादने, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० १ उ०

**विणिघाय- पुं० [विनिघात]**

विनाश, सूय० १ श्रु० ७ अ० ।

**विणिच्छय- पुं० [विनिश्चय]**

विगतो निश्चयो विनिश्चयः । अणुओ० । उत्त० । आव०म० । आव०चू० । निर्णये, सूय० १ श्रु० ११ अ० ।

निःसामान्यानां विशेषाणां निश्चये, विशेषे ।

**विणिच्छियट्ट- त्रि० [विनिश्चितार्थ]**

प्रश्नानन्तरम् । । भ० ११ श० ११ उ० ।

ऐदंपर्यायस्योपलम्भात् । भ० २ श० ५ उ० ।

निर्णीतार्थे, कल्प० १ अधि० ४ ।

**विणिज्जरा- स्त्री० [विनिर्जरा]**

विशेषेण निर्जरणं विनिर्जरा । पूर्वोपचितशुभाशुभकर्मपरिशाटे, सा च समितिगुप्तिश्रवणधर्मभावना मूलगुणोत्तरगुणपरीषहोप-सर्गादिसहनतरस्य भवति । जीत० ।

**विणिम्माण- न० [विनिर्माण]**

निर्माणे, विशेषे ।

**विणिम्मुयंत- त्रि० [विनिर्मुञ्चत]**

विसृजति, उव० ।

विक्षिपति, नाया० १ श्रु० ।

विकिरति, पण्हा० ४ अ०

**विणियट्टणा- स्त्री० [विनिवर्तना]**

पञ्चेन्द्रियाणां विषयेभ्यो विशेषेण निवर्तने, उत्त० २९ अ० ।

**विणियट्टमाण- त्रि० [विनिवर्तमान]**

समस्ताशुभव्यापारात् । आचा० १ श्रु० ५ अ० ४ उ० ।

भोगेभ्यो वा विषयेभ्यः निवर्तमाने, आचा० १ श्रु० ५ अ० ४ उ० ।

**विणिवट्टण- न० [विनिवर्तन]**

असंयमस्थानेभ्यो विरमणे, भग० १७ श० ३ उ० ।

**विणिवाइय- न० [विनिपातिक]**

नाट्यभेदे, आव०म० १ अ० ।

**विणिवाय- पुं० [विनिपात]**

सुतादिमरणे, अणुओ० ।

धर्मभ्रंशे, संसारे च । ठा० ४ ठा० ३ उ० । उव० ।

**विणिविट्ठ- त्रि० [विनिविष्ट]**

विविधमनेकधा निविष्टं स्थितम् । नाना प्रकारैर्निविष्टे, आचा० १ श्रु० २ अ० १ उ० ।

**विणिविट्ठचित्त- त्रि० [विनिविष्टचित्त]**

विविधमनेकधा निविष्टं स्थितमवगाढमर्थोपार्जनोपाये माता-पित्राद्यभिष्वङ्गे वा शब्दादिविषयोपभोगे वा चित्तम्-अन्तःकरणं यस्य स तथा । आचा० १ श्रु० २ अ० १ उ० ।

अभिनिविष्टचित्ते, आचा० १ श्रु० ६ अ० १ उ०

**विणिहय- त्रि० [विनिहत]**

व्यापादिते, सूय० १ श्रु० ७ अ० ।

विशेषेण निपातिते, उत्त० ३ अ० ।

**विणीय- त्रि० [विनीत]**

विनयप्रापिते, उत्त० १ अ० । आव०म० । नाया० ।

विनीतात्मतया प्रश्रयवति, तं० । सूय० ।

बृहत्पुरुषविनयकरणशीले, तं० ।

विनयवति, कल्प० १ अधि० ५ क्षण ।

गुणाधिकेषु गौरवकृति, । भग० । जंबू० । आव०चू० ।

सदैवागर्वितत्वेन विनयार्हं प्रति प्रह्वी भूतमनोवाक्काये, अपनीते, उत्त० १ अ० । सूय०

**विणीयणगरी- स्त्री० [विनीतनगरी]**

ऋषभदेवस्य जन्मस्थानेऽयोध्यायाम्, आव०म० १ अ० ।

**विणीयतण्ह- त्रि० [विनीततृष्णा]**

अपेताभिलाषे, दश० ८ अ० ।

**विणीयदोहला- स्त्री० [विनीतदोहदा]**

वाञ्छाविनयनात् अपनीतदोहदायाम् । विपा० १ श्रु० २ अ० ।

**विणीयसंसार- त्रि० [विनीतसंसार]**

तीर्थकरादौ विनष्टसंसारे, आव०चू० ४ अ० ।

**विणीया-** स्त्री० [विनीता]

विनीता मनुष्या अत्रेति विनीता । आव०चू० १ अ० ।

**विण्ये-** पुं० [विनेय]

शिष्ये, न० । आव० । शास्तानुयोग्ये, विशेषे

**विण्यो-** पुं० [विनोद]

विश्रामे, आव०चू० १ अ० । आव०म० । आचा०

**विण्यो-** पुं० [विनोकस्]

नरविहीने निवासगृहे, वव०५ उ० ।

**विण्यत्त-** त्रि० [विज्ञप्ति]

उक्ते, सूय० १ श्रु० ४ अ० २ उ० ।

**विण्यत्ति-** स्त्री० [विज्ञप्ति]

विविधं विशेषेण वा ज्ञापनं प्रबोधनं विज्ञप्तिः । विशेषे ।

विज्ञानं वा विज्ञप्तिः । परिच्छेदे, न० । आव०म० आचा० ।

ज्ञाने, सूय० १ श्रु० १२ अ० ।

**विण्यत्तिहेतुभूय-** त्रि० [विज्ञप्तिहेतुभूत]

ज्ञातव्यसामर्थ्यायुक्ते, वि-ज्ञप्तिकारणे, आव०चू० १ अ० ।

**विण्यपरिणयमेत-** पुं० [विज्ञकपरिणतमात्र]

विज्ञ एव विज्ञकः स चासौ परिणतमात्रं च कलादिष्विति गम्यते ।

विज्ञपरिणतमात्रे नाया० १ श्रु० १ अ० ।

योग्यविज्ञानं प्राप्ते, भग० ११ श० ११ उ० । विपा० ।

**विण्यवण-** न० [विज्ञपन]

विज्ञप्तौ, परिच्छेदे, आव०म० १ अ० ।

‘पण्यवण त्ति वा विण्यवण त्ति वा एगट्टा’ आव०म० १ अ० ।

**विण्यवणा-** स्त्री० [विज्ञापना]

विज्ञप्तिकायाम्, सप्रणयप्रार्थने, भग० ११ श० ११ । सूय० । नाया० । निर० ।

प्रतिसेवनायाम्, प्रार्थनायाञ्च । बुह० १ उ० ३ ।

विज्ञाप्यन्ते याः कामार्थिभिस्तदर्थिन्यो वा कामिनमिति विज्ञा-  
पनाः । स्त्रीषु, सूय० १ श्रु० २ अ० ३ उ० ।

**विण्यण-** न० [विज्ञान]

ज्ञानदर्शनोपयोगे, विशेषे । उव० ।

क्षयोपशमविशेषत एवावधारितार्थविषये, तीव्रतरधारणाहेतौ  
बोध-विशेषे, न० ।

चक्षुरादीन्द्रियोपलब्धिरूपे विशेषावबोधे, आतु० । न० । सूय० ।

हिताऽहितप्राप्तिपरिहाराध्यवसाये, आचा० १ श्रु० ४ अ० २ उ० ।

अर्थादीनां हेयोपादेयत्वविनिश्चये, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

मतिविशेषभूतौत्पत्तिक्यादिबुद्धिरूपपरिच्छेदे, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

अनेकधर्मिणि वस्तुनि तत्तथाध्यवसाये, दश० ४ अ० ।

ज्ञानं विशिष्टज्ञानफलम् । श्रुतज्ञानाद्धिहेयोपादेयविवेककारि -

विज्ञायतेऽनेनेति । मनसि, विज्ञाने, अणुओ० ।

**विण्यणखंध-** पुं० [विज्ञानस्कन्ध]

रूपविज्ञानादिरूपे बौद्धपरिभाषिते पञ्चसु स्कन्धेष्वन्यतमे, सूय० १  
श्रु० १ अ० १ उ० ।

**विण्यणघन-** पुं० [विज्ञानघन]

ज्ञानदर्शनोपयोगात्मकं विज्ञानं तन्मयत्वादात्मा विज्ञानघनः ।  
कल्प० १ अधि० ६

विज्ञान-पिण्डे, सूय० १ श्रु० १ अ० १ उ० ।

पृथिव्यादिभूतानां विज्ञानलवसमुदाये, पृथिव्यादिविज्ञानांशानां  
पिण्डे, विशेषे ।

**विण्यणपत्त-** त्रि० [विज्ञानप्राप्त]

हिताहितप्राप्तिपरिहाराध्यवसायं प्राप्ते, आचा० १ श्रु० ४ अ० २ उ० ।  
अवाप्तसद्बोधे, उवा० १ अ०

**विण्याय-** त्रि० [विज्ञात]

विशेषेण ज्ञातं विज्ञातम् । आचा० १ श्रु० १ अ० १ उ० ।

विदिते, आचा० १ श्रु० १ अ० १ उ० ।

**विण्याय-** अव्य० [विज्ञाय]

अवेत्येत्यर्थे । दश० ८ अ० ।

**विण्यायपरिणयमेत-** त्रि० [विज्ञातपरिणतमात्र]

विज्ञातं विज्ञानं तत् परिणतमात्रं यत्र सः । परिपक्वविज्ञाने, कल्प०  
१ अधि० ३ क्षण

**विण्यया-** त्रि० [विज्ञातु]

प्रतिभेदज्ञानेन पदार्थानां परिच्छेदके, आचा० १ श्रु० ५ अ० ५ । सूय०

**विण्यस-** पुं० [विन्यास]

निक्षेपे, विशेषे ।

**विण्यु-** पुं० [विद्वस्]

ज्ञानपिण्डे, सूय० १ श्रु० १ अ० १ उ० ।

जिनागमगृहीतसारे, आचा० २ श्रु० ४ चू० ।

**विण्ये-** त्रि० [विज्ञेय]

अवगन्तव्ये, विशेषे ।

**विण्यवण-** न० [विज्ञपन]

विशेषेण स्मरणे, बुह० १ उ० २ ।

**विण्यवणग-** न० [विज्ञापनक]

विविधैर्मन्त्रमूलादिभिः संस्कृतजलैः स्नापनके, पण्हा० २ अ०

**विण्यि-** पुं० [वृश्चि]

स्वनामख्याते अन्धकवृश्चिपुत्रे, अंत० ।

**विण्यु-** पुं० [विष्णु]

वाशिष्ठसगोत्रस्य जेहिलस्य माढरसगोत्रे स्वनामख्याते शिष्ये,  
कल्प० २ अधि० ८ क्षण ।

वासुदेवे, आव० १ अ० । ठा० ।

**विण्हुमि**- पुं० [विष्णुमित्र]

मानपिण्डशब्दे उदाहृते स्वनामख्याते श्रावके, पिंड० ।

**विण्हुसिरी-** स्त्री० [विष्णुश्री]

वीर तीर्थे सर्वान्तिमायामनगार्याम्, महानि० ४ अ० ।

**वितंडा-** स्त्री० [वितण्डा]

वितण्डयते आहन्यतेऽनया प्रतिपक्षसाधनमिति । प्रतिपक्षस्था-  
पनाहीने वाक्ये, अभ्युपेत्य पक्षं यो न स्थापयति स वैतण्डिकः ।  
इति हि न्यायवार्तिकम् जैनपरिभाषया तत्त्वविचारमौख्ये, निसि० ।  
सूय० । सम० । कल्प० ।

**वितक-** पुं० [वितर्क]

विमर्शे, न० । निसि० । श्रुते, आव० ४ अ० ।

**वितक-** त्रि० [वितर्क्य]

प्रार्थनीये, बुह० १ उ० ३ ।

**वितर्किय-** त्रि० [वितर्कित]

वितर्किते, पंच० चू० १ ।

**वितडी-** स्त्री० [वितटी]

विरूपासु नदीषु, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

**वितत-१** न० [वितत]

विततीकृते, ताडिते, आव० म० १ । जीवा० । पत्र० । भग० ।  
पटहादिके, जंबू० २ वक्ष० । जीवा० । सूय० ।  
'ततं वीणादिकं ज्ञेयं, विततं पटहादिकम् । घनं तु कांस्यतालादि,  
वंशादि शुषिरं मतम् । ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**वितत-२** न० [वितत]

सप्त सप्ततितमे महाग्रहे, ठा० २ ठा० ३ उ० । चंद० । कल्प० ।

**विततपक्खि-** पुं० [विततपक्षिण]

विततौ पक्षावस्येति । ठा० ४ ठा० ४ उ० ।  
बहिर्द्वीपवर्तिनि पक्षिभेदे, सूय० २ श्रु० ३ अ० ।

**वितद्-** पुं० [वितर्द]

विविधं तर्दयतीति वितर्दः । तर्द हींसायामित्यस्मात्कर्तरि पचा-  
द्यव् । हिंसके, संयमे, प्रतिकूले च । आचा० १ श्रु० ६ अ० ४ उ० ।

**वितरण-** न० [वितरण]

दानार्थनिमन्त्रणे, आचा० १ श्रु० ८ अ० १ उ०

**वितल-** त्रि० [वितल]

शवले, 'सवले त्ति वा वितले त्ति वा एगट्ठा' आव० चू० ४ अ० ।

**वितह-** त्रि० [वितथ]

अयथाभूते, नाया० १ श्रु० १ अ० । सूय० ।  
असद्भूते, आचा० १ श्रु० २ अ० ३ उ० । आव० । दश० ।  
मिथ्यावितथव्रतमिति पर्यायाः । आव० म० १ अ० ।  
वितहं त्ति वा असच्चं त्ति वा एगट्ठं । आव० चू० १ । ठा० । सूय० ।

**वितहायरण-** न० [वितथाचरण]

अन्यसामाचार्या आचरणे, ओह०

**वितिकिण्ण-** त्रि० [व्यतिकीर्ण]

अनानुपूर्व्या विप्रकीर्णे, निसि० १६ उ०

**वितिकिण्ण-** त्रि० [व्यतिकीर्ण]

एकतः सम्मिलितेषु सर्वेष्वपि धान्येषु, व्यतिकीर्णा यदेतेषां  
धान्यानां सम्मोलका भवन्तीति उक्तेः । बुह० २ उ० ।

**वितिगिच्छतिण्ण-** त्रि० [विचिकित्सातीर्ण]

चित्तविप्लुतिसंशयज्ञानं वा अतिक्रान्ते, सूय० १ श्रु० १० अ० ।

**वितिगिच्छा-** स्त्री० [विचिकित्सा]

चित्तविप्लुतौ, सूय० १ श्रु० १४ अ० ।

दानादौ फलं प्रति सन्देहे, । बुह० ।

मति-विभ्रमे, । ठा० । सूय० ।

आशङ्कायाम्, आचा० १ श्रु० ३ अ० ३ उ० । निसि० ।

वि इति विशेषेण विविधैः प्रकारैर्वा चिकित्सा प्रतिक्रिया । ठा०  
४ ठा० २ उ० । सूय० ।

विमर्षे, मीमांसायाम्, सूय० २ श्रु० २ अ० ।

आशङ्कायाम्, आचा० १ श्रु० ३ अ० ३ उ० ।

अनेषणीयाशङ्कायाम्, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ३ उ० ।

**वितिगिच्छासण्णा-** स्त्री० [विचिकित्सासंज्ञा]

मोहोदयात् चित्तविप्लुतौ, आचा० १ श्रु० १ अ० १ उ० ।

**वितिगिच्छासमावण्ण-** पुं० [विचिकित्सासमापन्न]

अनेषणीयाशङ्कागृहीते, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ३ उ० ।

**वितिगिच्छिय-** त्रि० [विचिकित्सित]

फलं प्रति शङ्कोपेते, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

अस्मिन्नुत्तरदत्ते किमस्य प्रतीतिरुत्पत्स्यते न वेत्येवं संशयिते, भ० ।  
किमिदमिहोत्तरमिदं वेति सञ्जातशङ्कइदमित्यमुत्तरं साधु इदं च न  
साधु । इदं च न साधु । भग० २ श० २ उ० । ठा० । नाया० ।

**वितिगिट्ठ-** त्रि० [व्यतिकृष्ट]

अतिशयेन क्षेत्रतो भावतश्च विकृतेन व्यतिकृष्टदिशमुद्दिशेत् ।  
वव० ७ उ० ।

दूरदेशवर्तिनि, बुह० १ उ० ३ ।

**वितिण्ण-** त्रि० [व्यतिकृष्ट]

अतिक्रान्ते, सूय० १ श्रु० १ अ० २ उ० ।

**वितिमिर-१** त्रि० [व्यतिकृष्ट]

विगतं तिमिरं तिमिरसंपाद्यो भ्रमो येषां ते वितिमिरः न० । उव० ।  
भ्रमरहिते, विशुद्धतरके वा निरन्धकारेषु, गमात् । पत्र० ३६ पद ।  
क्षीणावरणे, भग० ५ श० ४ उ० । सम० । न० ।  
विगताज्ञानेषु, उव० ।

**वितिमिर-२ त्रि० [वितिमिर]**

ब्रह्मलोके पञ्चमविमाने, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**वितिमिरकर- पुं० [वितिमिरकर]**

वितिमिराः करा यस्यासौ वितिमिरकरः । निरन्धकारकिरणे, जंबू० २ वक्ष० ।

**वितिय- त्रि० [द्वितीय]**

द्वित्वसंख्यापूरके, पण्हा० २ अ०

‘बिइया उवएसणे’ अणुओ० । उत्त० ।

**वितियपद- न० [द्वितीयपद]**

अपवादपदे, निसि० १ उ० ।

**वित्त-१ त्रि० [वित्त]**

विनयादिगुणेन प्रसिद्धे, उत्त० १ अ० । ठा० । भग० ।

विख्याते, निर० ।

द्रव्ये, सम० ३० सम० । नाया० । उत्त० । उव० । दशा० । सूय० । आचा० । द्रव्यजाते, सूय० १ श्रु० ९ अ० ।

वित्ते गद्धो वित्तगद्ध इति । वित्त इति अदत्तादानस्योपलक्षणम् ।

उत्त० ५ अ० । सूय० ।

**वित्त-२ न० [वृत्त]**

अनुष्ठाने, संयमे, ज्ञाने च । सूय० १ श्रु० २ अ० ३ उ० ।

सच्छन्दस्के पद्ये, सूय० १ श्रु० १ अ० १ उ० ।

**वित्तप्राजाय- न० [वृत्तप्राजाय]**

पद्यप्रकारे, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**वित्तास- पुं० [वित्तास]**

विक्षोभे, उत्त० २ अ० । आव० म० । आचा०

**वित्तासणय- न० [वित्तासनक]**

विकरालरूपादिदर्शने, आव० ४ अ०

**वित्ति- स्त्री० [वृत्ति]**

राजा-देशकारिणो जीविकायाम्, विपा० १ श्रु० १ अ० । भग० । ठा० । सूय० । नाया० ।

**वित्तिकान्तार- न० [वृत्तिकान्तार]**

वृत्तिर्जीविका तस्याः कान्तारमरणं तदिव कान्तारं क्षेत्रं कालो वा वृत्तिकान्तारम् । निर्वाहाभावे, उवा० १ अ० ।

**वित्तिकर- पुं० [व्यक्तिकर]**

व्यक्तिकरणशीलो व्यक्तिकरः । निरवशेषव्युत्पत्तिमतिचारानति-चारफलादिभेदभिन्नमर्थं भाषमाणे, आ म० १ अ० ।

**वित्तिकर- त्रि० [वृत्तिकर]**

निर्वाहकरे, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

**वित्तिच्छेय- पुं० [वृत्तिच्छेद]**

वर्तनोपायविघ्ने, सूय० १ श्रु० ७ अ० । आचा० । पण्हा० ।

**वित्तिदान- न० [वृत्तिदान]**

नियुक्तपुरुषेभ्यः सार्द्धद्वादशसुवर्णसहस्रदाने, आव० म० १ अ० ।

**वित्तिय- त्रि० [वित्तिक]**

वित्तं द्रव्यं तदस्ति यस्येति । धनसमृद्धे, वृत्तिं चाश्रितलोकानां ददाती वृत्तिदम् । जीविकादातरि, नाया० १ श्रु० १ । सम० । उव० ।

**वित्तिसंखेव- पुं० [वृत्तिसंक्षेप]**

भिक्षाचर्यारूपे । गच्छा० १ अधि० ।

बाह्य-तपोभेदे, सम० ६ सम० ।

**वित्तैषि- त्रि० [वित्तैषिन्]**

वित्तं द्रव्यं तदन्वेष्टुं शीलं येषां ते वित्तैषिणः । द्रव्यार्थिषु, सूय० २ श्रु० ६ अ० ।

**वित्थड- त्रि० [विस्तृत]**

विस्तरवति, उव० । रा० ।

**वित्थर- पुं० [विस्तर]**

प्रपञ्चे, आव० म० १ अ० ।

महावचनसंदर्भे, सम० ।

**वित्थराल- त्रि० [विस्तराल]**

विशाले, ठा० ५ ठा० १ उ० ।

**वित्थार- पुं० [विस्तर]**

विष्कम्भे, ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

पृथक्त्वे, निसि० ४ उ० ।

**वित्थारुड- पुं० [विस्ताररुचि]**

विस्तारो व्यासः सकलद्वादशाङ्गस्य नयैः पर्यालोचनमिति ततोऽ-पवृंहिता रुचिर्यस्य स विस्ताररुचिः पत्र० १ पद ।

विस्तारो व्यासस्तज्जा रुचिर्यस्य । दर्शनभेदे, धर्मास्तिकायादि द्रव्याणां सर्वपर्यायाणां सर्वैर्नयैः प्रमाणैर्ज्ञातरि, ठा० १० ठा० ३ उ०

**विस्थिण- त्रि० [विस्तीर्ण]**

विस्तारवति, भग० २ श० ५ उ० । रा० ।

संथा० । आव० । रा० ।

ऊर्ध्वाधोऽपेक्षया पृथुत्वे, जीवा० ३ प्रति० ४ ।

विस्तीर्णानि छात्राणि चामररूपबालव्यजनिकाश्च येषां ते तथा । भग० १३ श० ६ उ० ।

विस्तीर्णानि विस्तारवन्ति विपुलानि प्रचुरानि भवनानि गृहाणि शयनासनयानवाहनैराकीर्णानि येषां ते तथा । अथवा विस्तीर्णानि विपुलानि भवनानि येषां ते, शयनासनयानवाहनानि चाकीर्णानि गुणवन्ति येषां ते तथा । भग० २ श० ५ उ० ।

विस्तीर्णविपुले अतिवि-स्तीर्णो बलवाहने सैन्यगजाजादिके यस्य स तथा । भग० ११ श० ११ उ० । कल्प० ।

**विदंड- पुं० [विदण्ड]**

विशिष्टदण्डे, जीत० ।



**विदंसग- पुं० [विदंशक]**

विदंशतीति विदंशकः । श्येनादौ, पण्हा० १ अ०  
पक्षिबन्धनविशेषे, उवा० १ अ० ।

**विदंसण- न० [विदर्शन]**

अन्धकारस्य वस्तुप्रकाशने, पण्हा० १ अ०  
अलग्नस्यैव लग्नत्वेन दर्शने, बुह० १ उ० ३ । निसि०

**विदम्भ- पुं० [विदर्भ]**

सप्तमतीर्थकरप्रथमशिष्ये, सम० ।

**विदर- पुं० [विदर]**

क्षुद्रकनद्याकारेषु नदीपुलिनस्यन्दजलगतरूपेषु, नाया० १ श्रु० १

**विदरिसण- न० [विदर्शन]**

विरूपाकारे, विभीषिकादिदृष्टे, उक्त० ३६ अ०

**विदाय- अव्य० [विदित्वा]**

विज्ञायेत्यर्थे, दशा० ४ अ०

**विदारय- त्रि० [विदारक]**

विदारयतीति विदारकः । स्फोटके, पण्हा० १ अ० । नाया० ।

**विदालण- न० [विदारण]**

विविधप्रकारैर्दारणे, पण्हा० १ अ० ।

**विदिण्ण- त्रि० [वितीर्ण]**

विदत्ते, आव० म० १ अ० । राजानुज्ञाने, रा०  
वितीर्णच्छत्रबालवीजना वितीर्ण राजाप्रसादतो दत्तछत्रं चामररूपा  
बालवीजनिका यस्यै सा तथा । गणिकायाम्, विपा० १ श्रु० २ अ० ।  
‘विदिण्णवियारे’ साधुः वितीर्णो राजानुज्ञातो विचारोऽवकाशो  
यस्य स विश्वसनीयत्वात्स वितीर्णविचारः । संघकार्यादिष्विति  
प्रकृतम् । विपा० १ श्रु० २ अ० ।

**विदिता- अव्य० [विदित्वा]**

बुद्धेत्यर्थे, आचा० १ श्रु० ८ अ० ८ उ० ।

**विदितासमुद्देशणा- स्त्री० [विदित्वासमुद्देशना]**

ज्ञात्वा परिणामत्वादिगुणोपेतं शिष्यं यद्यस्य योग्यं तस्य तदेव  
समुद्दिशतः । वाचनासंपद्धेदे, उक्त० १ अ० ।

**विदितोद्देशणा- स्त्री० [विदित्वोद्देशना]**

ज्ञात्वा परिणामत्वादिगुणोपेतं शिष्यं यद्यस्य योग्यं तस्य तदेवो-  
द्दिशतः । उद्देशनालक्षणे वाचनासंपद्धेदे, उक्त० १ अ० ।

**विदिय- त्रि० [विदित]**

प्रत्यभिज्ञाते, विपा० १ श्रु० ३ अ० । उक्त० । आव० चू० ।  
पर्यालोचिते, न० ।

**विदिसा- स्त्री० [विदिश]**

एकप्रदेशात्मिकायां कोणदिशि, आचा० १ श्रु० १ अ० १ उ० ।  
मोक्षसंयमाभिमुखाया दिशोऽन्यस्यां कुदिशि, आचा० १ श्रु० ५ अ०

**विदिसापइण्ण- त्रि० [विदिक्प्रतीर्ण]**

मोक्षसंयमाभिमुखादिक् ततोऽन्या विदिक् तां प्रकर्षेण तीर्णः  
विदिक्प्रतीर्णः । असंयमाभिमुखे, आचा० १ श्रु० ५ अ० ३ उ० ।

**विदिसावाय- पुं० [विदिग्वात]**

विदिग्भ्यो वाति वायुकाये, पन्न० १ पद । ठा० ।

**विदु- अव्य० [विदित्वा]**

विज्ञायेत्यर्थे, बुह० ३ उ० ।

**विदु- त्रि० [विद्वस्]**

बुध, कालज्ञ, आचा० २ श्रु० ४ चू० । बुह० ।

**विदुगुंछा- स्त्री० [विद्वज्जुगुप्सा]**

विद्वांसः साधवः विदितसंसारस्वभावाः परित्यक्तसमस्तसंघास्तेषां  
जुगुप्सानिन्दा । साधुजुगुप्सारूपे दर्शनाचारातिचारे, यथा-अस्त्रा-  
नात् प्रस्वेदजलक्लिन्ना मलिनत्वाद् दुर्गन्धिवपुषो भवन्ति  
तान्निन्दति, आव० ६ अ० ।

**विदुग्ग- पुं० [विदुर्ग]**

समुदाये, भग० १ श० ८ उ० । निसि० ।

**विदुपरिसा- स्त्री० [विद्वत्पर्षद्]**

अनेकविज्ञानपर्षदि, रा० ।

**विदुर- पुं० [विदुर]**

हस्तिनापुरनगरराजधृतराष्ट्रभ्रातरि क्षत्रिये, नाया० १ श्रु० १६ अ० ।

**विदूसय- पुं० [विदूषक]**

नानावेषादिकारिणि, अणुओ० । उव० ।

**विदेश- पुं० [विदेश]**

स्वकीयदेशापेक्षयाऽन्यदेशे, नाया० १ श्रु० १ अ०  
विदेशो द्विधा-अनूपो, जङ्गलश्च नद्यादि पानीयबहुलोऽनूपः,  
तद्विपरीतो जङ्गलोः निर्जल इत्यर्थः । बुह० १ उ० २ ।

**विदेह- पुं० [विदेह]**

लोकप्रसिद्धे राजर्षी, स च प्रव्रज्य क्षत्रियपरिव्राजकेषु  
प्रसिद्धोभूत् । उव० ।

विशिष्टं देहं यस्य सः । कल्प० १ अधि० ५ ।

ऋषभदेवस्य अष्टाविंशतितमे पुत्रे, कल्प० १ अधि० ७ ।

तद्राज्ये मिथिलानगरीप्रतिबद्धे जनपदे, नाया० १ श्रु० ८ अ० ।

उक्त० । आव० । पन्न० । ठा० । सूय० ।

इहेव भारहे वासे पुव्वदेसे विदेहा नामं जणवया । आव० चू० ।

वर्षभेदे, चत्वारि वर्षाणि-विदेहे अपरविदेहे देवकुरा उत्तरकुरा ।

ठा० ४ ठा० २ उ० ।

**विदेहकूड- न० [विदेहकूट]**

जम्बूद्वीपे मन्दरस्योत्तरे नीलवतो वर्षधरस्य तृतीयकूटे, ठा० ९  
ठा० ३ उ० ।

**विदेहजंबू- स्त्री० [विदेहजम्बू]**

विदेहेषु जम्बू विदेहजम्बू । विदेहान्तर्गतोत्तरकुरुकृतनिवासत्वात्  
सौमनस्यहेतुत्वात् । जम्बूसुदर्शनयाम्, जीवा०३ प्रति०४ । जंबू० ।  
जम्बूद्वीपो ह्यनया जम्ब्या भुवनत्रयेऽपि विदितमहिमा ततः संपन्नं  
यथोक्तयशोधारित्वम-स्याः । जंबू० ४ वक्ष० ।

**विदेहजच्च- पुं० [विदेहजार्च]**

विदेहा त्रिशला तस्यां जाता अर्चाशरीरं यस्य स । वीरस्वामिन्,  
कल्प०१ अधि०५ ।

**विदेहजच्च- पुं० [विदेहजात्य]**

वीरस्वामिन्, आचा०२ श्रु०३ चू० ।

**विदेहदिण- पुं० [विदेहदत्त]**

विदेहदत्ता त्रिशला तस्या अपत्यं वैदेहदत्तः । वीरस्वामिन्, कल्प०

**विदेहदिना- स्त्री० [वैदेहदत्ता]**

त्रिशलायां वीरस्वामिमातरि, कल्प० १ अधि० ८ । आचा० ।

**विदेहपुत्त- पुं० [विदेहपुत्र]**

कृणिके, 'वज्जी विदेहपुत्ते जइत्था' भग०७ श०८ उ० ।

**विदेहरायवरकण्णगा- स्त्री० [विदेहराजवरकन्यका]**

विदेहो मिथिलानगरीजनपदस्तस्य राजा कुम्भकस्तस्य वरकन्या  
या सा तथा । नाया०१ श्रु०८ अ० ।  
मल्लीस्वामिन्यामेकोनविंशतीर्थकृत्, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**विदेहसुकुमाल-पुं० [विदेहसुकुमार]**

विदेहशब्देनात्र गृहवास उच्यते तत्र सुकुमारः । दीक्षायां तु  
परीषहादिसहनेऽतिकठोरत्वात् । वीर, कल्प०१ अधि०५ । आचा० ।

**विद्व- पुं० [विद्रव]**

विसर्पे, नाया० १ श्रु०९ अ० ।

**विद्ववण- न० [विद्रवण]**

विनाशकरणे, जीवा०१ प्रति० ।

**विद्वविअ- त्रि० [विद्रवित]**

विनाशिते, वव० २ उ० ।

**विद्वायमाण- त्रि० [विद्रव्यत्]**

विद्वान्सो वयमित्येवं मन्यमानेषु, आचा०१ श्रु०६ अ०४ उ० ।

**विद्रुम- पुं० [विद्रुम]**

प्रवाले, नाया० । ठा० ।

**विद्रुय- त्रि० [विद्रुत]**

अभिभूते, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**विद्व- त्रि० [विद्व]**

ताडिते, आचा०१ श्रु०५ अ०३ उ० ।

**विद्व- पुं० [वृद्ध]**

श्रुतपर्यायाभ्यां महति, तस्सेस मग्गो गुरुविद्वसेवा उत्त०३२ अ० ।

**विद्वंसण- न० [विध्वंसन]**

रोगज्वरादिना जर्जरीकरणे, तं० ।

विनाशे पण्हा०३ अ०

सर्वणा क्षये, ठा० ३ ठा० १ उ० । तं० ।

वसतेर्भञ्जने, बुह०१ उ०२ ।

प्रकृतेरुच्छेदे, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**विद्वंसणधम्म- त्रि० [विध्वंसनधर्म]**

विध्वंसनं धर्मोऽस्येति । विशारारुखभावे, गत्वरे, सूय० १ श्रु०२  
अ० २ उ० । आचा० ।

**विद्वत्थ- त्रि० [विध्वस्त]**

अप्ररोहसमर्थे, विद्वत्था अविद्वत्था जोणी जीवाणं होइ दश०४ अ०

**विद्वि- स्त्री० [वृद्धि]**

कुटुम्बिनां वितीर्णस्य धान्यस्य द्विगुणादिग्रहणे, विपा०१ श्रु०१ अ०

**विद्विकर- पुं० [वृद्धिकर]**

समृद्धिहेतौ, दस नक्खत्ता नाणस्स विद्विकरा ठा० १० ठा०३ उ०

**विद्वूण- अव्य० [विद्ध्वा]**

वेधं कृत्वेत्यर्थे, सूय० १ श्रु० ५ अ० १ उ०

**विधम्ममाण- त्रि० [विधर्मयत्]**

विगतधर्मं कुर्वति, विपा०१ श्रु०१ अ० ।

**विधवा- स्त्री० [विधवा]**

रण्डायाम्, निसि० ८ उ० ।

**विधान- न० [विधान]**

यद्येन प्राप्तव्यं तस्य करणे, बुह०१ उ०३

**विधाय- पुं० [विधात]**

व्यन्तराणामौत्तराहाणामिन्द्रे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**विधुणणा- स्त्री० [विधुनना]**

विविधप्रकारा धुणणा विधुणणा । आव०चू०२ अ० । निसि० ।

अपनयने, सूय० १ श्रु० १६ अ० । आचा० ।

**विधुर- न० [विधुर]**

अपापे, पण्हा०३ अ०

**विधूत- त्रि० [विधूत]**

क्षुण्णे, आचा०१ श्रु०६ अ० ३ उ० ।

**विधूतकप्प-पुं० [विधूतकल्प]**

विधूतः-क्षुण्णः सम्यक् स्पृष्टः कल्पः आचारो येन स तथा ।

कृताचारे, आचा० १ श्रु० ६ अ० ३ उ० ।

**विधूमहाण- न० [विधूमस्थान]**

विधूमस्याग्रेः स्थाने, सूय०१ श्रु०५ अ०२ उ० ।

**विपंची- स्त्री० [विपञ्ची]**

वितत्र्यां वीणायाम्, जीवा०३ प्रति०४ । पण्हा० । रा० । आचा० ।

**विपक्व-** त्रि० [विपक्व]

विशिष्टपरिपाकमागते, जीवा०३ प्रति०४ अधि

**विपक्व-** पुं० [विपक्व]

शत्रौ, उत्त०१४ अ० ।

**विपक्वभूय-** त्रि० [विपक्वभूत]

तत्प्रतिबन्धकतयाऽत्यन्तप्रतिभूते, उत्त०१४ अ० ।

शत्रुभूते, उत्त०१४ अ० ।

**विपच्चइय-** न० [विप्रत्ययिक]

दृष्टिवादस्य स्वनामख्याते सूत्रे, सम०

**विपणोल्लय-** त्रि० [विप्रणोदयत्]

विविधैः प्रकारैः संसारभावनादिभिः प्रेरयति, आचा०१श्रु० ५अ० २

**विपत्ति-** स्त्री० [विपत्ति]

कायस्यासिद्धौ, बुह०१ उ०२ ।

विपत्तिशब्देन कायस्यासिद्धिरत्राभिधीयते । बुह० १ उ०२ ।

**विपरामुसंत-** त्रि० [विपरामृशत्]

विविधमनेकप्रकारं विषयाभिलाषितया परामृशत्युपतापयतीति ।

दण्डकशतताडनादिभिर्घातयति, आचा०१श्रु० ५अ०१ उ० ।

नानापीडाकरणैर्वधकरणे, आचा०१श्रु० ८ अ०२ उ० ।

**विपरिकुञ्चि-** न० [विपरिकुञ्चित]

वन्दिते-अर्द्धवन्दनके दत्ते सति देशकथावृत्तान्तान् यत्र करोति तद्विपरिकुञ्चितम् । बुह० ३ उ० ।

**विपरिणमणा-** स्त्री० [विपरिणमना]

गिरिसरिदुपलन्यायेन द्रव्यक्षेत्रादिभिर्वा करणविशेषेण वा अवस्थान्तरापादने, ठा० ४ ठा० २ उ० ।

**विपरिणममाण-** त्रि० [विपरिणमत्]

परिणामान्तराणि गच्छति, भग० ७ श०१० उ० ।

**विपरिणाम-** पुं० [विपरिणाम]

विविधेन प्रकारेण परिणमनं विपरिणामो वस्तूनाम् । ठा० ४ ठा०

परिणामान्तरगमने, विभक्ति विपरिणामरूपे व्याख्याङ्गे, आचा० १

**विपरिणामाणुप्पेहा-** स्त्री० [विपरिणामानुप्रेक्षा]

वस्तूनां प्रतिक्षणं विविधपरिणामगमनानुचिन्तने, गच्छा०१ । भग०

**विपरिणामित्तए-** अव्य० [विपरिणामयितुम्]

विपर्ययतः परिणामयितुमित्यर्थे, उवा० २ अ० ।

**विपरिणामिय-** त्रि० [विपरिणामित]

स्थितिघातरसघातादिभिः विपरिणामं नीते, भग० ६ श०१ उ० ।

**विपरियास-** पुं० [विपर्यास]

वैपरीत्ये मिथ्यात्वमोहे, आचा० १ श्रु०६ अ०४ उ० । उत्त० ।

**विपलाइजंत-** त्रि० [विपलायमान]

विपलायति, विपा०१श्रु०२अ०

**विपाग-** पुं० [विपाक]

पुण्यपापरूपकर्मफले, विपा०१श्रु०१ अ० । ठा० ।

**विपिक्खंत-** त्रि० [विप्रेक्षमाण]

पश्यति, पण्हा० ३ अ०

**विपुल-** त्रि० [विपुल]

प्रचुरे, भग०२ श०५ उ० । पण्हा० ।

विस्तीर्णे, पण्हा०५ अ० ।

**विप्पइह-** त्रि० [विप्रकृष्ट]

बृहदन्तराले, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**विप्पइण्ण-** त्रि० [विप्रकीर्ण]

अनेकधा विक्षिप्ते, दश०५ अ०१ उ०

**विप्पइण्णबाहु-** त्रि० [विप्रकीर्णबाहु]

विप्रकीर्णौ अवकीर्णौ विरला-विरलावित्यर्थः, बाहु यस्य स विप्रकीर्णबाहुः । विरलभुजे, तं

**विप्पओग-** पुं० [विप्रयोग]

अप्रणिधाने, वियोगे, आव०४ अ० । उव० । ठा० ।

**विप्पगम्भिय-** त्रि० [विप्रगल्भित]

विविधं विशेषेण वा धाष्ट्योपगते, सूय० १ श्रु० १ अ०२ उ० ।

**विप्पचेइयव्व-** त्रि० [विप्रत्यक्तव्य]

त्याज्य, नं० ।

**विप्पजढ-** त्रि० [विप्रहीण]

परित्यक्त, उत्त० ८ अ० । निर० । नाया० । अणुओ० । आचा० ।

**विप्पजहणा-** स्त्री० [विप्रहाणि]

विशेषेण विविधं प्रकर्षतो हानिस्त्यागो । परित्याग, उव० ।

**विप्पजहमाण-** त्रि० [विप्रजहत्]

परित्यज्यति, ठा० २ ठा० २ उ० ।

**विप्पजहसेणियापरिकम्म-** न० [विप्रहाणश्रेणिकापरिकर्मन्]

दृष्टिवादपरिकर्मभेदे, सम० ।

**विप्पजहाय-** अव्य० [विप्रहाय]

त्यक्तवेत्यर्थे, सूय० १ श्रु० ४ अ० १ उ०

**विप्पजहियव्व-** त्रि० [विप्रहातव्य]

त्याज्य, भग० ९ श० ३३ उ० ।

**विप्पडिवण्ण-** त्रि० [विप्रतिपन्न]

विशेषेण प्रतिपन्नो विप्रतिपन्नः । नाया० १ श्रु० १३ अ० ।

विविधं प्रतिपन्नो विप्रतिपन्नः । आचा०१श्रु० ८ अ०१ उ० । ठा० ।

साधुसन्मार्गद्वेषिणि, सूय०१श्रु०२ अ०१ उ० ।

असंबद्धे, विशेष० ।

**विप्पडिवत्ति-** स्त्री० [विप्रतिपत्ति]

मिथ्याभिनिवेशे, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**विष्पडिवेयण-** न० [विप्रतिवेदन]

पर्यालोचने, आचा०१ श्रु०५ अ०४ उ० ।

**विष्पण्ड-** त्रि० [विप्रणष्ट]

वीति विधिना प्रेति प्रकर्षेण प्रक्षिप्यमाणोनष्टः । निसि० २ उ० ।

स्वमिकैर्गविषयद्विरपि अप्राप्ते, अप्राप्ते, पण्हा० ३ अ० ।

**विष्पणमंत-** त्रि० [विप्रणमत्]

विविधं संयमानुष्ठानं प्रति प्रणमत् । प्रह्लीभवति, सूय०१ श्रु०१ अ०

**विष्पणासधम्म-** त्रि० [विप्रणाशधर्म]

प्रणाशो विनश्वरो धर्मः-स्वभावो यस्य तद् विप्रणाशधर्मम् ।

विनश्वरस्वभावे, तं० ।

**विष्पमाय-** पुं० [विप्रसाद]

विविधे प्रसादे, सूय०१ श्रु०१४ अ० ।

**विष्पमुक्त-** त्रि० [विप्रमुक्त]

अपगते, सूय०१ श्रु०११ अ० ।

विविधं परमार्थभावनया शरीरानुबन्धात्प्रमुक्तो विप्रमुक्तः ।

आचा०१ श्रु०५ अ०२ उ० । सूय० । अणुओ० ।

विविधमनेकैः प्रकारैः प्रकर्षेण प्रभावसारं मुक्तः-परित्यक्तः ।

दश०३ अ० । जंबू० । पत्र० । उत्त० । सूय० ।

च्युते, सूय० २ श्रु० २ अ० ।

**विष्पय-** पुं० [विष्पक]

कुट्टिते त्वग्रूपे, बुह०२ उ० ।

**विष्परद्ध-** त्रि० [विपरद्ध]

व्याहते, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**विष्परिणामियभाव-** पुं० [विपरिणामितभाव]

विपरिणामितौ विवक्षिताचार्यादुत्तरितो भावो यस्य स विपरिणामितभावः । स्वाचार्यं प्रति प्रतिकूलवृत्तौ, बुह० ३ उ० ।

**विष्परियास-** पुं० [विपर्यास]

विविधोऽनेकप्रकारः पर्यासः परिक्षेपः, परिभ्रमणे, सूय०१ श्रु० १२ तत्त्वे अतत्त्वाभिनिवेशः, अतत्त्वे च तत्त्वाभिनिवेशः, हितेऽहि-

तबुद्धिरित्येवंभूते विपर्यये, आचा० १ श्रु० २ अ० ३ उ० । सूय० पर्यायान्तरे, भग० १४ श० ६ उ० । आचा० ।

व्यत्यये, सूय०१ श्रु०७ अ० ।

जन्मजरामरणरोगशोकोपद्रवे, सूय०१ श्रु० १३ अ० ।

आत्मानं विपर्यासयति, निसि० ।

विपर्यासो नाम अबंभचेरं । आव०चू०४ अ० ।

**विष्परियासिभूय-** त्रि० [विपर्यासीभूत]

अध्युपपन्ने, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०३ उ० ।

**विष्पलाव-** पुं० [विप्रलाप]

विविधे अनर्थके वचसि, ठा० ७ ठा० ३ उ० । तं० ।

**विष्पवसिय-** त्रि० [विप्रोषित]

देशान्तरं गन्तुं प्रवृत्ते, नाया०१ श्रु०२ अ० ।

**विष्पवसिय-** अव्य० [विप्रोष्य]

परदेशं गत्वेत्यर्थे, आचा०२ श्रु०१ चू०५ अ०२ उ० ।

**विष्पसाय-** पुं० [विप्रसाद]

विविधः प्रसादो विप्रसादः । आगमदृष्टयाऽऽत्मनो विविधैरुपायै-  
रिन्द्रियप्रणिधानप्रमादादिभिः प्रसादे, आचा०१ श्रु०३ अ०३ उ० ।

**विष्पहूण-** त्रि० [विप्रहीण]

विविधं प्रकर्षेण हीनो रहितः । बुह० ४ उ० । सूय० ।

विमुक्ते, पण्हा०१ अ०

अपगतकर्तव्यविवेके, सूय० १ श्रु० ५ अ० १ उ० ।

**विष्पित्तु-** अव्य० [विष्पित्वा]

कुट्टयित्वेत्यर्थे, बुह० २ उ० ।

**विष्पिय-** त्रि० [विष्पित]

यस्य जातमात्रस्यैवाङ्गुष्ठप्रदेशिन्योर्मध्यमाभिर्मलयित्वा वृषणद्वयं  
गालितं तादृशे नपुंसकभेदे, बुह० १ उ० ३ । गच्छा० । पंच०भा० ।

**विष्पुय-** त्रि० [विष्प्लुत]

विक्षुभे, ठा० ५ ठा० १ उ० ।

**विष्पुस-** न० [विष्पुष्]

मूत्रस्य पुरीषस्य वाऽवयवेषु, आव०म० १ अ०

**विष्पेक्खिय-** न० [विप्रेक्षित]

विविधमर्द्धाक्षिकटाक्षादिभिर्भेदैः प्रेक्षितं विप्रेक्षितम् । बुह० १ उ०३  
निरीक्षिते, निसि०१ उ० । पण्हा० । विशेष० । भग० ।

**विष्पोसहि-** पुं० [विप्रोषधि]

मूत्रपुरीषयोरवयवो विप्रडुच्यते । अन्ये त्वाहुः-वि इति उच्चारः प्र  
इति प्रश्रवणम् ओषधिर्यस्येति । लब्धिभेदे । विशेष० । उव० ।  
आव०म० । गच्छा० । पण्हा० ।

विष्पोसहिगहणेण विट्टस्स गहणं कीरइ तं चेव विट्टं ओसहि-  
सामत्यज्जतेण विष्पोसहि भन्नति । आव०चू० १ अ० ।

**विष्फंदमाण-** न० [विस्पन्दमान]

अस्वतन्त्रे, इतश्चैतश्च धावति, आचा० १ श्रु०४ अ०३ उ० ।

**विष्फाल-** धा० [विस्फाल]

विघाटने, विविधैः प्रकारैः स्फालने । निसि० ४ उ० ।

पृच्छायाम्, विष्फालेइ देशीवचनमेतत्, पृच्छतीत्यर्थः । वव०१ उ०

**विष्फालिय-** अव्य० [विस्फाल्य]

भृशं पाटयित्वेत्यर्थे, आचा०२ श्रु०१ चू०३ अ०२ उ० ।

**विष्फालिय-** त्रि० [विस्फारित]

विकाशिते, विस्फारितं रविकिरणैर्विकाशितं यत्पुण्डरीकं सितपद्मं  
तद्वन्नयने येषां ते विस्फारितपुण्डरीकनयनाः । जीवा०३ प्रति०४ ।

**विष्फुरंत-** त्रि० [विष्फुरत्]

विविधं परिणमति, प्रति० ।

इतस्ततस्तडफडति, उत्त० १९ अ० ।

**विफल-** त्रि० [विफल]

फलासाधने, पण्हा० २ अ०

**विबद्ध-** त्रि० [विबद्ध]

विशेषेण बद्धे, सूय० १ श्रु० ३ अ० २ उ० ।

**विबुह-** त्रि० [विबुध]

फुल्ले, आव० म० १ अ० । पुं० ।

देवे, हरिभद्रसूरिमित्रस्य मानदेवसुगुरोः शिष्ये, गच्छा० ३ अधि० ।

**विबोह-** पुं० [विबोध]

जागरणे, आव० म० ।

**विब्रंश-** त्रि० [विभ्रान्त]

विविधं भ्रान्ते, आचा० १ श्रु० ६ अ० ४ उ०

**विब्रंस-** पुं० [विभ्रंस]

प्राणातिपाते, प्राणिप्राणवियोजने, ठा० ५ ठा० १ उ० ।

**विब्रम-** पुं० [विभ्रम]

क्षिप्तचित्ततादिरूपसंभवे, बुह० ३ उ० ।

वक्त्र-मनसोभ्रान्तत्वे, सम० ३५ सम० । रा० । आव० म० ।

पञ्चदशे गौणालीके, पण्हा० ४ अ०

भूसमुद्भवे, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

शृङ्गारसप्रभवे मनसोऽस्थिरत्वे, उत्त० १५ अ० ।

विभ्रमविक्षेपकिलिकिञ्चितादिवियुक्तत्वम् । उव० ।

**विब्रमलगड-** त्रि० [विह्वलगति]

अर्दवितर्दगतिमत्सु, जंबू० २ वक्ष० ।

**विब्रिडिमच्छ-** पुं० [विब्रिटिमत्स्य]

मत्स्यभेदे, विपा० १ श्रु० ८ अ०

**विब्रिसमाण-** त्रि० [विभ्रश्यत्]

असकृद्देदीप्यमाने, आव० म० १ अ०

**विभंग-** पुं० [विभङ्ग]

विपरीतभङ्गः परिधिप्रकारो यस्मिन् तद् विभङ्गमिति । पत्र० । सूय०

मिथ्यादृष्टेरवधौ, ठा० ३ ठा० ३ उ० । निसि० ।

**विभंगणाण-** न० [विभङ्गज्ञान]

विरुद्धो, वितथो वाऽयथा वस्तुभङ्गो वस्तुविकल्पो यस्मिंस्तद्विभङ्गं

तच्च तज्ज्ञानं च साकारत्वादिति मिथ्यात्वसहितावधौ, ठा० ।

**विभंगु-** न० [विभङ्गु]

तृणभेदे, पत्र० १ पद ।

**विभज्ज-१** त्रि० [विभज्य]

विभुक्तुं शक्ये, ठा० ३ ठा० २ उ० ।

**विभज्ज-१** अव्य० [विभज्य]

पृथक्कृत्यर्थे, सूय० १ श्रु० १४ अ० ।

**विभज्जवाय-** पुं० [विभज्यवाद]

स्याद्वादे, विभज्यवादः स्याद्वादस्तं सर्वत्रास्त्रलितं लोकव्यवहारा-  
विसंवादितया सर्वव्यापिनं स्वानुभवसिद्धं वदेद् ।

अथवा-सम्यग-र्थान् विभज्य पृथक् कृत्वा तद्वादं वदेत् । सूय० १  
श्रु० १४ अ०

**विभक्त-** त्रि० [विभक्त]

विभागवति, तं० । जीवा० ।

विविक्ते, पण्हा० ४ अ०

दृश्यमानान्तरे, भग० ७ श० ६ उ० । उव० । जंबू० ।

पृथग्व्यवस्थापिते, आव० म० १ अ० । आचा० ।

भोजनविशेषरहिते, जंबू० २ वक्ष० ।

विभागे, आचा० १ श्रु० २ अ० १ उ० ।

**विभक्ति-** स्त्री० [विभक्ति]

विभजनं विभक्तिः । विभक्ततायाम्, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

पार्थक्येन स्वरूपप्रकटने, नं० ।

**विभक्तिभाव-** पुं० [विभक्तिभाव]

विभागरूपे, भग० ।

**विभक्तिभिन्न-** न० [विभक्तिभिन्न]

सूत्रदोषे, यत्र विभक्तिव्यत्ययः-यथा वृक्ष पश्य इति वक्तव्ये वृक्षः

पश्येति ब्रूयात् । अणुओ० । विशेष० । आव० म० ।

अत्र हि विभक्तेरन्यथाप्रयोगाद् विभक्तिभिन्नत्वम् । बुह० १ उ० १ ।

**विभक्तिविपरिणाम-** पुं० [विभक्तिविपरिणाम]

विभक्तीनां व्यत्यासे, आचा० १ श्रु० १ अ० ५ उ० । आव० ।

**विभव-** पुं० [विभव]

कृतसफलसंपदि, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

लक्ष्म्याम्, सम० प्र० सम० ।

समृद्धौ, नाया० १ श्रु० १७ अ० ।

**विभवन-** न० [विभवन]

विरूपकरणे, निसि० १६ उ० ।

**विभाग-** पुं० [विभाग]

विभजनं विभागः । विस्तरे, निसि० २० उ० वव० ।

प्रस्तावोऽवसरो विभाग इत्यनर्थान्तरम् । विशेष० आव० म० ।

प्राप्तिपूर्विकायामप्राप्तौ । विशेष० ।

अंशे, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

बंटगो विभागो वेति एगट्ठं आव० ४ अ०

**विभावण-** न० [विभावण]

प्रकटार्थीकरणे, आविर्भावने, सूय० २ श्रु० १ अ० ।



**विभावणा- स्त्री० [विभावना]**

संविभागे, संविभागो विभावना भण्यते, यथा- व्रतानां धारणं समितीनां रक्षणं कषायाणां निग्रह इत्यादि । । बुह० ।

विभावनं तु प्राणातिपाताद्विरमणं यावत्परिग्रहाद्विरमणम् । बुह० ३

**विभावता- स्त्री० [विभावता]**

विभावस्वभावे, दश० १ अ० ।

**विभाषग- पुं० [विभाषक]**

अनुयोगाचार्येण भणितस्य व्याख्यानस्य समं भाषमाणे, विशेषे ।

विभाषकस्तु अनुयोगाचार्याभाषितस्यैव अनेकधा अर्थमभिधत्ते, यथा-समभावः सामयिकं समानां वा ज्ञानदर्शनचारित्राणां यः

समवायः समाय एव सामायिकं । आव० म० १ अ० । आव० चू०

**विभाषा- स्त्री० [विभाषा]**

विविधा भाषा विभाषा । विषयविभाग-व्यवस्थापनेन व्याख्या-याम्, आव० २ अ० । निसि० ।

विविधपर्यायशब्दैः स्वरूपकथने, आव० म० १ अ० ।

भास ति वा विभास ति वा वक्तियं ति वा एगट्ठा । आव० चू० । बुह०

**विभासित्तए- अव्य० [विभाषयितुम्]**

व्याख्यातुमित्यर्थे, आव० म० १ अ० ।

**विभिण्ण- त्रि० [विभिन्न]**

विदारिते, उत्त० ३२ अ० ।

विशेषेण सूक्ष्म खण्डीकृते, उत्त० १९ अ० ।

**विभीयग- पुं० [विभीतक]**

‘बहेडा’ इति ख्याते वृक्षभेदे, विशेषे ।

**विभीषण- पुं० [विभीषण]**

अपरविदेहे सलिलावतीविजये वीतशोका-नगर्यां जितशत्रु-नृपतिपुत्रे वासुदेवे, आव० चू० १ अ० । आव० म० ।

**विभु- त्रि० [विभु]**

व्यापके, विशेषे । आव० म० । सम० ।

**विभूइ- स्त्री० [विभूति]**

उत्कृष्टपरसंपदि, आव० ४ अ० । आव० म० । नाया० । रा० ।

विच्छर्दे, उव० । निसि० । ठा० । पण्हा० ।

**विभूसणा- स्त्री० [विभूषणा]**

मण्डनायाम्, आव० म० १ अ० । उव० । वव० ।

चूल ति वा विभूसगं ति वा सिंहं ति वा एते एगट्ठा । निसि० १

**विभूसा- स्त्री० [विभूषा]**

विभूषणं विभूषा । शरीरोपकरणकरणादिषु स्नानधावनादिभिः संस्कारे, उत्त० १६ अ० । वस्त्रादिराढायाम्, दश० ८ अ० ।

स्फारोदारशृङ्गारकरणे, आव० म० १ अ० । रा० ।

उचितनेपथ्यादिकरणे, उव० ।

**विभूसावत्तिय- न० [विभूषाप्रत्यय]**

विभूषानिमित्ते, दश० ।

**विभूसिय- त्रि० [विभूषित]**

वस्त्रादिभिः सज्जातविभूषे, उव० । भग० । नाया० । अंत० । पण्हा० ।

कल्प० । न० ।

अलंकृते, विशेषे । आव० म० । आव० ।

**विभेलय- पुं० [विभीतक]**

बहेडा, वृक्षभेदे, पत्र० १ पद ।

**विमग- पुं० [विमक]**

पर्यकवनस्पतिभेदे, पत्र० १ पद ।

**विमज्झ- न० [विमध्य]**

अन्तराले, विशेषे ।

**विमण- त्रि० [विमनस्]**

विगतमिव विगतं मनश्चित्तमस्येति विमनाः । विषण्णे, उत्त० १० अ० । सूय० । पण्हा० ।

विषण्णतचेतसि, पण्हा० ३ अ०

विदूसवृत्ति, उत्त० १२ अ० ।

शोकाकुलमनसि, जंबू० २ वक्ष० । पण्हा० ।

विगतं भोगकषायादिष्वरतौ वा मनो यस्य स विमनाः ।

असंयमचित्ते, आचा० १ श्रु० ४ अ० ४ उ० ।

**विमता- स्त्री० [विमता]**

वज्रवीर्यराज्ञो भार्यायाम्, उत्त० २३ अ० ।

**विमरिस- पुं० [विमर्श]**

विकल्पे, मनोविशेषे, ठा० ४ ठा० १ उ० । विशेषे ।

**विमल-१ त्रि० [विमल]**

विगतागन्तुकमले, भग० १५ श० । रा० । तं० । जीवा० ।

स्वाभाविकागन्तुकमलरहिते, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । तं० ।

उव० । रा० । सम० ।

कर्ममलरहिते, उत्त० १२ अ० ।

विमलं निर्मलं महत् महाजातीयमेवं तपनीयं रक्तवर्णसुवर्णम् ।

कल्प० १ अधि० २ ।

**विमल-२ त्रि० [विमल]**

षट्सप्ततितमे महाग्रहे, चंद० २० पाहु० । सूर० ।

**विमलकूड- न० [विमलकूट]**

जम्बूद्वीपेसौमनसवक्षस्कारपर्वतस्य वत्साभिधानाधोलोकनिवासि दिक्कुमार्यावासभूते पञ्चमे कूटे, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**विमलगणि- पुं० [विमलगणिन्]**

अभयदेवसूरिशिष्ये, ‘प्रथमादर्शे लिखिता विमलगणिप्रभृतिः निजनिवेयैः । भग० ४१ श० ।

**विमलघोस-** पुं० [विमलघोस]

जम्बूद्वीपे भारतक्षेत्रे अतीतायामुत्सर्पिण्यां जाते पञ्चमे कुलकरे,  
ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**विमलणाहथय-** पुं० [विमलनाथस्तव]

समन्तभद्रविरचिते श्रीविमलनाथस्तोत्रे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**विमलपभ-** पुं० [विमलप्रभ]

क्षीरोदसमुद्रदेवे, सूर० १९ पाहु०

**विमलपभसूरि-** पुं० [विमलप्रभसूरि]

तपागच्छीये, सोमप्रभसूरिशिष्ये, गच्छा० ३ अधि० ।

**विमलवर-** न० [विमलवर]

प्राणतदेवेन्द्रस्य नवमदेवलोकाधिपतेः पारियानिके विमाने, ठा०  
१० ठा० ३ उ० ।

विमलोत्तमे, विमलवरो बद्धश्चिह्नपट्टो वस्त्रादिमयो यैस्ते तथा ।  
विपा० १ श्रु० २ अ० ।

**विमलवाहन-** पुं० [विमलवाहन]

अपरविदेहजवयस्यस्य मायिनः सम्प्रति हस्तित्वं प्राप्तस्य आभि-  
योग्यतां गतस्य वाहनीकरणात् लोके विमलवाहनेति नाम्ना  
प्रसिद्धः । भारतेऽस्यामवसर्पिण्यां जाते, प्रथमे कुलकरे,  
आव० म० १ अ० । ठा० । सम० । आव० चू० ।

**विमलहरिस-** पुं० [विमलहर्ष]

स्वनामख्याते वाचके आचार्ये, यद्वंश्येन भावविजयवाचकेन  
विनयविजयविरचितकल्पसूत्रटीका सुबोधिका व्यशोधि । कल्प० ३

**विमला-** स्त्री० [विमला]

वितिमिरत्वाद् उर्ध्वदिशि, ठा० १० ठा० ३ उ० । विशेष० ।  
सा च रुचकादूर्ध्वं विनिर्गता दिक् । आव० म० १ । ठा० । भग० ।  
धरणलोकपालकालस्याग्रमहिष्याम्, ठा० ४ ठा० १ उ० ।  
गीतरतेर्गन्धर्वस्याग्रमहिष्याम्, भग० १० श० ५ उ० । ठा० ।  
त्रयोदशस्य तीर्थकरस्य निष्क्रमणशिविकायाम्, सम०

**विमाण-** न० [विमान]

विविधं मन्यते उपभुज्यते पुण्यवद्भिर्जीवैरिति । पत्र० १ पद । जीवा०  
वैमानिकदेवावासविशेषे, ठा० २ ठा० । जीवा० । पण्हा० । भग०  
तानि च ज्योतिः संबन्धीनि अनुत्तरविमानान्तानि विमानशब्देन  
गृह्यन्ते । जीवा० ।

**विमाणपत्थड-** पुं० [विमानप्रस्तट]

विमानसम्बन्धिषु घनसमभागेषु, सौधर्मेष्टानयोस्त्रयोदश विमान-  
प्रस्तटा भवन्ति । सनत्कुमारमाहेन्द्रयोर्द्वादश, ब्रह्मलोके षट्,  
लान्तके पञ्च, शुके चत्वारः, एवं सहस्रारे आनतप्राणतयोश्चत्वारः,  
एवमारणाच्युतयोर्गैवेयकष्वधस्तनमध्यमोपरिमेषु त्रयः, अनुत्तरेषु  
इक इति द्विषष्टिस्ते भवन्ति । सम० ।

**विमाणप्रविभक्ति-** स्त्री० [विमानप्रविभक्ति]

आवलिकाप्रविष्टे तरविभजनं यस्यां ग्रन्थपद्धतौ सा विमान  
प्रविभक्तिः । अङ्गबाह्यकालिकश्रुतभेदे सा च द्विधा एकाऽल्प-  
ग्रन्थार्था, तथाऽन्या महाग्रन्थार्था । अतः क्षुल्लिकाविमान-  
प्रविभक्तिर्महती विमानप्रविभक्तिरिति । न० । वव० ।

**विमाणभवन-** न० [विमानभवन]

विमानाकारे भवने, विमानाकारं भवनं विमानभवनम्, अथवा  
देवलोकाद् योऽवतरति तन्माता विमानां पश्यति, यस्तु नरका-  
त्तन्माता भवनमिति । भग० ११ श० ११ उ० । कल्प० ।

**विमाणवरपोंडरीय-** न० [विमानवरपुण्डरीक]

विमानवरेषु मध्येषु पुण्डरीकमिव, अत्युत्तमत्वात् । विमानोत्तमे,  
कल्प० १ अधि० ३ क्षण० ।

**विमाणवास-** पुं० [विमानवास]

सुरलोके, आव० ३ अ० । भग० ।

**विमाणावलिया-** स्त्री० [विमानावलिका]

आवलिकाप्रविष्टेषु ग्रैवेयकादिविमानेषु, पत्र० २ पद ।

**विमाणोववण्णग-** पुं० [विमानोपपन्नक]

विमानेषु सामान्यरूपेषूपपन्नो विमानोपपन्नकः । जीवा० ३ प्रति० ४  
ग्रैवेयकानुत्तरलक्षणविमानोपपन्ने कल्पातीतवैमानिकभेदे, ठा० २ ।

**विमाया-** स्त्री० [विमात्रा]

विविधा मात्रा विमात्रा । सूय० १ श्रु० २ अ० ।  
अनेकविधमात्रायाम्, विशेष० ।

**विमिस्स-** त्रि० [विमिश्र]

युक्ते, विशेष० । आचा० ।

**विमुउल-** त्रि० [विमुकुल]

विकसिते, न० । उव० । नाया० ।

**विमुक्क-** त्रि० [विमुक्त]

निःसङ्गे, आचा० २ श्रु० ४ चू० ।

लोभद्वेष-त्यक्ते, पण्हा० ३ अ० । आचा० ।

**विमुक्कसंधिबंधन-** त्रि० [विमुक्कसन्धिबन्धन]

श्लथीकृतसन्धाने, भग० ९ श० ३३ उ० ।

श्लथीकृताङ्गसन्धाने, पण्हा० १ अ०

**विमुत्तया-** स्त्री० [विमुक्ता]

धर्मोपकरणेष्वपि अमूर्च्छायाम्, दश० ७ अ० ।

**विमुत्ति-** स्त्री० [विमुक्ति]

मोक्षे, आचा० ।

निक्षेपः-चतुर्थचूडारूपं विमुक्त्यध्ययनमारभ्यते ।

**विमुह-** त्रि० [विमुख]

निरपेक्षे, विशेष० ।

विमुखस्यादेरभावाद् विमुखम्, भग० २ श० २ उ० ।

**विमुहीकय-** त्रि० [विमुखीकृत]

विरञ्जिते, पण्हा०३ अ०

**विमोइय-** त्रि० [विमोचित]

स्वस्थानाच्चलिते, बुह०३ उ० ।

**विमोक्ख-** पुं० [विमोक्ष]

परित्यागे, आचा०१ श्रु०८ अ०१ उ० । निसर्गे, विशेष० ।

**विमोक्खण-** न० [विमोक्षण]

अष्टविधकर्मणः पृथक्करणे, उत्त०८ अ० ।

विमोचके, सूय०१ श्रु०८ अ० ।

कर्मबन्धनान्मुक्तिकरणे, उत्त०२६ अ० ।

**विमोयग-** त्रि० [विमोचक]

अपनेतरि, सूय०१ श्रु०९ अ० ।

**विमोयणा-** त्रि० [विमोचना]

त्याजने, सूय०१ श्रु०१३ अ० । नाया० ।

**विमोयतर-** त्रि० [विमोच्यतर]

त्याज्यतरे, ठा० २ ठा० १ उ० ।

**विमोह-** पुं० [विमोह]

विगतो मोहो येषु येषां वा येभ्यो वा । आचा ०१ श्रु०८ अ०८ उ० ।

अज्ञानरहितेषु, उत्त०५ अ० ।

अनुत्तरोपपातिनो विमोहाः । मोहसमुत्पत्तेषु परीषहोपसर्गेषु, प्रादुर्भूतेषु विमोहो भवत्तान् सम्यक् सहेतेति यत्राभिधीयते स विमोहः । ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

आचारप्रथमश्रुतस्कन्धस्य सप्तमअध्ययन, सम०९ । आव० । उत्त० विमोहा इवाल्पवेदादि-मोहनीयोदयतया विमोहाः । मोहो द्विधा-द्रव्यतो, भावतश्च । स द्विविधोऽपि रत्नोद्योतितत्वेन सम्यग्दर्शन-स्यैव च संभवेन विगतमोहो येषु ते विमोहाः । उत्त०५ । आचा०

**विमोहिता-** अव्य० [विमोह्य]

मोहमुत्पाद्येत्यर्थे, भग०१० श०३ उ०

**विम्हय-** पुं० [विस्मय]

आश्चर्ये, आव०४ अ० ।

मयाऽप्राप्तपूर्वमिदमित्येवंरूपे प्रमोदे, अणुओ० ।

**विम्हावण-** न० [विस्मापन]

आश्चर्यकुहकपराक्षेपकरणे, निसि० ।

**विम्हावित-** त्रि० [विस्मापयत्]

विस्मापके, इन्द्रजालिनि, ठा० ४ ठा० ४ उ० । पं०व० ।

**विय-** पुं० [विदु]

विदन्तीति विदः । विदुषि, आव०म०१ अ० ।

विदितवेद्ये, सूय०१ श्रु०१ अ०४ उ० ।

विज्ञाने, ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

**विच-** अव्य०

समुच्चयार्थे, अपि चेत्यव्ययद्वयस्थाने वियशब्दः समुच्चयार्थः । जीवा०१ प्रति० ।

**व्यय-** पुं०

विगमे, ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

**वियइ-** स्त्री० [विगति]

मरणे, ठा० ।

**वियइ-** स्त्री० [विकृति]

विकारे, पिंड० ।

**वियंग-** त्रि० [विगताङ्ग]

विगतकर्णनासाहस्ताद्यङ्गे, नाया०१ श्रु०१४ अ० । पण्हा० ।

**वियंजिय-** त्रि० [व्यञ्जित]

अभिव्यक्तीकृते, सूय०२ श्रु०१ अ० ।

**वियंति-** स्त्री० [व्यन्ति]

विशेषेणान्तिर्व्यन्तिः । अन्तक्रियायाम्, आचा०१ श्रु०८ अ०४ उ० ।

**वियंतिकारय-** पुं० [व्यन्तिकारक]

विशेषेणान्तिर्व्यन्तिरन्तक्रिया तस्याः कारकः । आचा० १ श्रु० ८ अ०४ उ० ।

कर्मक्षयविधायिनि, आचा०१ श्रु०८ अ०५ उ० ।

**वियंभिय-** त्रि० [विजृम्भित]

प्रबलीभूते, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

विवृताङ्गतायाम्, नाया०१ श्रु०९ अ० ।

विस्फुरिते, पण्हा०३ अ०

**वियकिल-** पुं० [विचकिल]

वनस्पतिविशेषे, आचा०१ श्रु०१ अ०५ उ० ।

**वियक्क-** पुं० [वितर्क]

विकल्पे, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

ऊहे, आतु० ।

मीमांसायाम्, सूय०२ श्रु०६ अ० ।

**वियक्कञ्ज्ञाण-** न० [वितर्कध्यान]

कथं राज्यादि ग्रहीष्ये इति चिन्ता माध्याने नन्दराज्यं जिघृक्षो-श्चाणक्यस्येव दुर्ध्यानि, आतु० ।

**वियक्खण-** पुं० [विचक्षण]

विविधमाख्याति कथयतीति विचक्षणः पण्डिते, दश० ६ अ० ।

विदुषि, दश०५ अ०१ उ० । उत्त० ।

विविधं सर्वाषु दिक्षु पश्यति, ओह० ।

**वियच्चा-** स्त्री० [विगतार्चा]

विगतस्य विगमवतो जीवस्य, मृतस्येत्यर्थः अर्चा-शरीरं विगतार्चः । विगतिमज्जीवशरीरे, ठा० १ठा

**वियच्चा-** स्त्री० [विचर्चा]

विशिष्टोपपत्तिपद्धति, विशिष्टभूषायां च । ठा० १ ठा० ।

**वियट्ट-** त्रि० [व्यावृत्त]

निवृत्ते, अपगते, भग० १ श० १ उ० । सम० ।

**वियट्टछउम-** पुं० [व्यावृत्तच्छद्मन्]

व्यावृत्तं निवृत्तमपगतं छद्म शठत्वमावरणं वा यस्यासौ व्यावृत्त-  
छद्मा । केवलिनि, भग० १ श० १ उ० । सम० । कल्प० ।

**वियट्टभोजि-** त्रि० [व्यावृत्तभोजिन्]

व्यावृत्ते सूर्ये भुङ्क्ते इत्येवंशीलो व्यावृत्तभोजी । प्रतिदिनभोजिनि  
भग० २ श० २ उ० ।

**वियट्टमाण-** त्रि० [विवर्तमान]

विचरति, नाया० १ श्रु० १ अ० । आचा०

**वियट्टिऊण-** अव्य० [विवर्तितुम्]

विविधमनेकप्रकारं वा वर्तितुमित्यर्थे, पंच० चू० ५ ।

**वियट्टित्तए-** अव्य० [विवर्तयितुम्]

आसितुमित्यर्थे, आचा० २ श्रु० १ चू० २ अ० २ उ० ।

**वियड-** न० [विकट]

समयभाषया जले, ठा० ५ ठा० २ उ० ।

सूत्र विगतजीवे उदके, सूय० १ श्रु० ९ अ० ।

प्रासुकोदके, आचा० १ श्रु० ९ अ० १ उ० । सूय० । निसि० ।

शीतोष्णादिशस्त्रेण विकारं प्रापिते प्रासुकीकृते, बुह० २ उ० ।

उष्णोदके, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

पल्वलादिगते जले, तं० । ।

मद्य, पिंड० ।

**वियड-** त्रि० [विकृत]

अस्वाभाविके, वव० ७ उ० ।

**वियड-** त्रि० [विवृत]

अनावृते, ठा० ५ ठा० २ उ० ।

**वियडगिह-** न० [विवृतगृह]

अधः कुड्याभावादुपरि वाच्छादनाभावादानावृते गृहे । ठा० ।

आचा० । बुह० ।

विवृतम् अनावृतं, तच्च द्वेधा-अध ऊर्ध्वं च । ठा० ३ ठा० ४ उ०

**वियडजाण-** न० [विवृतयान]

तल्लरकवर्जिते शकटे, भग० ११ श० ११ उ० ।

**वियडणा-** स्त्री० [विकटना]

आलोचनायाम्, ओह० । वव० । बुह० । निसि० ।

**वियडदत्ति-** स्त्री० [विकटदत्ति]

विकटं पानकाहारस्तस्य दत्तय एक-प्रक्षेपप्रदानरूपाः । पानक  
दत्तिषु, ठा० ।

**वियडभोजि-** त्रि० [विकटभोजिन्]

विकटे प्रकटे दिवसे; न रात्रौ इति यावत् भोक्तुं शीलमस्येति  
विकटभोजी । चतुर्विधाहार- रात्रिभोजनवर्जके, उवा० ।

**वियडा-** स्त्री० [विट्टा]

योनिभेदे, तत्र द्वीन्द्रियादीनां चतुरिन्द्रियपर्यन्तानां सम्मूर्च्छिम-  
मनुष्याणां च विवृता योनिस्तेषामुत्पत्तिस्था नस्य जलाशयादेः  
स्पष्टमुपलभ्यमानत्वात् । पत्र० १० पद ।

**वियडावडवासि-** पुं० [विकटापतिवासिन्]

विकटावतीवास्तव्ये, ठा०

**वियडावाइ-** पुं० [विकटापातिन्]

जम्बूद्वीपे मन्दरस्योत्तरत एरण्यवते वर्षे प्रभासदेवाधिष्ठिते वृत्त-  
वैताढ्यपर्वते, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**वियडासय-** पुं० [विकटाशय]

विकटं-जलं तस्याशयः आश्रयो वा स्थानं विकटाशयो विकटा-  
श्रयो वा । चुलुके, भग० १५ श० ।

**वियडासव-** त्रि० [विकटाश्रव]

अनिवारिताश्रवे, विकटानि अतिप्रकटानि स्थूराणीत्यर्थः आश्र-  
वाणि जलप्रवेशस्थानानि यस्य स । वव० १ उ०

**वियडी-** स्त्री० [वितटी]

विरूपायां तट्याम्, अटव्यां च । नाया० १ श्रु० १ अ० ।

**वियडिज्जंत-** त्रि० [विकट्यमान]

आलोच्यमाने, वव० ५ उ० ।

**वियत्त-१** त्रि० [व्यक्त]

परिस्फुटे, सूय० १ श्रु० १४ अ० ।

वयः श्रुताभ्यां परिणते, सम० १८ सम० ।

बालभावान्निष्क्रान्ते, सूय० २ श्रु० १ अ० ।

अमुक्ते, विवेकं प्राप्ते, सूय० १ अ० २ उ० ।

द्रव्यभाववृद्धे दश० ६ अ० । ठा० ।

**वियत्त-२** त्रि० [व्यक्त]

वीरजिनेन्द्रस्य चतुर्थे गणधरे, आव० म० १ अ० ।

**वियत्त-३** त्रि० [व्यक्त]

प्रीतिकरे, नाया० १ श्रु० ५ अ० । ठा० ।

**वियत्तकिच्च-१** त्रि० [व्यक्तकृत्य]

अकार्यं कृत्वाऽपि दृष्टे, ठा० ।

व्यक्तस्य भावतो गीतार्थस्य कृत्यं करणीयं व्यक्तकृत्यं प्रायश्चित्त-  
मिति । गीतार्थो हि गुरुलाघवपर्यालोचनेन यत्किञ्चन करोति  
तत्सर्वं पापविशोधकमेव भवतीति । अथवा- ज्ञानाद्यतिचार  
विशुद्ध्ये यानि प्रायश्चित्तान्यालोचनादीनि विशेषतोऽभिहितानि  
तानि तथा व्यपदिश्यन्ते प्रायश्चित्ते, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**वियत्तकिच्च-२ त्रि० [विदत्तकृत्य]**

प्रायश्चित्ते, विशेषेण अवस्थाद्यौचित्येन विशेषानभिहितमपि दत्तं वितीर्णमभ्यनुज्ञातमित्यर्थः । यत्किञ्चिन्माध्यस्थगीतार्थेन कृत्यम-  
नुष्ठानं तत् विदत्तकृत्यं प्रायश्चित्तमेव । ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**वियत्तूण- अव्य० [विवर्त्य]**

आवर्त्येत्यर्थे, आचा० १ श्रु० ८ अ० १ उ०

**वियत्थ- पुं० [वितस्त]**

अष्टाविंशतितमे महाग्रहे, ठा० ।

**वियत्थि- पुं० [वितस्ति]**

द्वादशाङ्गुलप्रमाणे मानभेदे, जीवा० १ प्रति०

**वियय- त्रि० [वितत]**

विस्तारिते, नाया० १ श्रु० ८ अ० ।

प्रसारिते, विशेषे ।

**वियर-१ पुं० [वितर]**

नदीपुलिनादौ जलार्थे गते, ठा० ४ ठा० ४ उ०

**वियर-२ पुं० [विदर]**

जलस्थानविशेषे, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

कूपिकायाम्, निसि० १५ उ० ।

**वियर-३ पुं० [विवर]**

रन्ध्रे, उत्त० २० अ० । निर्झरविशेषे, नाया० १ श्रु० ४ अ०

**वियरण- न० [वितरण]**

ग्रहणानुज्ञादाने, निसि० २ उ० ।

**वियरिय- त्रि० [विचरित]**

आसेविते, नाया० १ श्रु० ४ अ० ।

**वियसंती- स्त्री० [विकसन्ती]**

अमुकुलितायाम्, पत्र० २ पद । जीवा०

**वियसिय- त्रि० [विकसित]**

प्रफुल्लिते, विकसितानि यानि शतपत्राणि पुण्डरीकाणि च,  
प्रकृतित्वेन स्थितानि यत्रेति । सूर० १८ पाहु० । सम० । पत्र० । रा० ।

**वियाउरी- स्त्री० [विजनयित्री]**

अपत्यानां विजननशीलायाम्, नि० । आव० म० । नाया० ।

**वियागरेमाण- त्रि० [व्याकुर्वत्]**

सम्यग् व्याकर्तरि, आचा० २ श्रु० १ चू० २ अ० ३ उ० ।

कथयति, सूय० १ श्रु० १४ अ० ।

**वियागरेमाण- त्रि० [व्यागृणत्]**

प्रतिपादयति, सूय० १ श्रु० १४ अ० ।

व्याख्यायति, सूय० १ श्रु० १३ अ० । आचा० ।

**वियाण- न० [वितान]**

अनेकेषां संघाते, निसि० १ उ० ।

**वियाणग- पुं० [विज्ञानक]**

वादाभिज्ञे, वव० १ उ० ।

विशिष्टावबोधसहिते, आचा० १ श्रु० १ अ० २ उ० ।

**वियाणमाण- त्रि० [विज्ञानत्]**

विशेषेण विविधं वा जानन् विज्ञानन् अवगच्छति, उत्त० १२ अ० ।

अर्थधर्मज्ञे, उत्त० १२ अ० ।

**वियाणिय- अव्य० [विज्ञाय]**

विशेषेण । देवगतिमनुष्यगतित्वागामित्वलक्षणेन । ज्ञात्वेत्यर्थे,

उत्त० ७ अ० । सूय० ।

**वियाय- अव्य० [विजनय्य]**

प्रसूयेत्यर्थे, 'वियायपुत्तं हत्थिजूहेण समं चरति' आव० ४ अ० ।

**वियार-पुं० [विचार]**

मते, अभिमते, विशेषे ।

विचरणमर्थाद् व्यञ्जने व्यञ्जनार्थे, तथा मनःप्रभृतीनां संयोगा-  
नामन्यतरस्मादन्यतरस्मिन्निति विचारः । अर्थव्यञ्जनयोगसंक्रान्तौ,

ठा० ४ ठा० १ उ० । आव० । न० ।

सञ्चरणे, विपा० १ श्रु० ६ अ० ।

अवकाशे, नाया० १ श्रु० १ अ० । रा० ।

उच्चारदिपरिष्ठापने, वव० १ उ० । निसि० ।

संज्ञाव्युत्सर्जनार्थबहिर्गमने । गच्छा० । आव० ।

**वियारण- न० [विचारण]**

अनुगमने, अणुओ० ।

अर्थानां पर्यालोचने, आव० म० १ अ० । ठा० ।

**वियारण- न० [विदारण]**

स्फोटने, विशेषे । आव० ।

भेदने, आव० ४ अ० । ठा० ।

**वियारभूमि- स्त्री० [विचारभूमि]**

शरीरचिन्ताद्वयर्थगमने, कल्प० ३ अधि० ९ ।

विष्टोत्सर्गभूमौ, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ३ उ० । वव० । निसि० ।

बुह० ।

**वियारयणागर- पुं० [विचाररत्नाकर]**

हीरविजयसूरिशिष्यकीर्तिविजयकल्पसुबोधिकाकारविनयविजय-  
गुरौ, कल्प० ३ अधि० ९ क्षण० ।

**वियाल- पुं० [विकाल]**

सन्ध्यायाम्, निसि० ४ उ० । विपा० ।

सन्ध्यापगमे, निसि० ४ उ० । नाया० । आचा० ।

प्रत्यपराह्णकालसमये, नाया० १ श्रु० १ अ० । आव० म० ।

**वियाल- न० [विचाल]**

अन्तराले, विशेषे ।



**वियाल- पुं० [व्याल]**

सर्पे, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०५ उ० ।

**वियालण- न० [विचारण]**

ईहाज्ञाने, 'वियालणं ति ईहणं ति मग्गणं वि वा एगट्ठं ।'

आव०चू० १ अ० ।

**वियालग- पुं० [विकालग]**

द्वितीये महाग्रहे, सूर० २० पाहु० ।

**वियालयारि- पुं० [विकालचारिन्]**

विकालेऽपि रात्रावपि चरतीति विकालचारी । उव० ।

साहसिकत्वाद् रात्रावपि विचरणशीले, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**वियावण- न० [वितापन]**

शीतार्दितस्य शीतापनयनाय काष्ठप्रज्वालने, आचा०१ श्रु०१ अ०५

**वियावत्त-१ त्रि० [व्यव्यक्त]**

अव्यक्तं पतितशटितम्, प्रकटमित्यर्थः । आव०म०१ । आव०चू० ।

**वियावत्त-२ त्रि० [व्यव्यक्त]**

महाशुक्रदेवलोकस्थविमानभेदे, ठा० २ ठा० १ उ० ।

**वियावत्त-३ त्रि० [व्यव्यक्त]**

स्तनितकुमारेन्द्रयोर्घोषमहाघोषयोर्दक्षिणलोकपाल, भग० ३ श० ८ उ० । ठा०

**वियास- पुं० [व्यास]**

पराशरपुत्रे, कृष्णद्वैपायनर्षौ, विशेष० । सूय०

**विहाय- स्त्री० [व्याख्या]**

व्याख्यायन्तेऽर्था यस्यां सा व्याख्या । अर्थविवृतौ, सम० प्र० सम०

**वियाहिय- त्रि० [व्याख्यात]**

विविधमाख्यातो व्याख्यातः । आचा० १ श्रु०४ अ०४ उ० ।

तीर्थकरणधरादिभिः प्रतिपादिते, आचा०१श्रु०८अ० । ठा० । भग०

**वियाहिय- त्रि० [व्याहत]**

कथिते, गच्छा० २ अधि० । सूय० । आचा० । उक्त० ।

**वियुत्त- त्रि० [वियुक्त]**

रहिते, निसि०२० उ० । विशेष० ।

**विरइ- स्त्री० [विरति]**

विरमणं विरतिः । ठा० १ ठा० ।

प्राणातिपातादिनिवृत्तौ, सूय०१ श्रु०११ अ० । पण्हा० ।

सावद्ययोगान्निवृत्तौ विशेष० । उक्त० । पण्हा० । आव०म० ।

सम्यक्त्वपूर्विकायां सावद्यारम्भान्निवृत्तौ, सूय० २ श्रु० २ अ० ।

वर्जन, । आव०म० ।

**विरइय-१ त्रि० [विरचित]**

निर्मिते, नाया० १ श्रु०१ अ० । कल्प० ।

विहिते, सम० ।

**विरइय-१ त्रि० [विरचित]**

विरचिते वरकर्णपूरे प्रधानकर्णाभरणविशेषौ यस्य स तथा ।

भग०७ श०९ उ० । उव० ।

**विरंगभंगि- त्रि० [विरङ्गभङ्गि]**

तथाविधरङ्गेन रागद्रव्येण भङ्गिर्विच्छित्तिर्यत्र तद् विरङ्गभङ्गि ।

वर्णचित्रे, वव० ८ उ० ।

**विरत्त- त्रि० [विरक्त]**

क्वचिदपि रतिमप्राप्ते, पण्हा०२ अ०

निवृत्ते, पण्हा०५ अ० । आतु० ।

विविधरागे, विरागे वा । आचा०१ श्रु०२ अ०३ उ० ।

**विरमण- न० [विरमण]**

रागादिविरतिप्रकारे, नाया०१ श्रु०८ अ० । आतु० ।

सर्वसावद्ययोगनिवृत्तौ, आव०म०१ अ० ।

**विरय- त्रि० [विरत]**

प्राणातिपातादिनिवृत्ते, दश०२ अ० । उक्त० ।

विषयसुखनिवृत्ते, । उव० । दश० । सूय० ।

असंयमान्निवृत्ते, उक्त०१५ अ० । सूय० । आचा० ।

हिंसाद्याश्रवद्वारेभ्यो निवृत्ते, आचा०१ श्रु०५ अ०२ उ० । उक्त० ।

सूय० । संथा० । आचा० ।

निवृत्ते, सूय०१ श्रु०२ अ०१ उ० ।

सम्यक्संयमरूपेणोत्थिते, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ० । विशेष० ।

विविधमनेकधा द्वादशविधे तपसि रतो विरतः । तपोरते, दश०४

द्वासप्ततितममहाग्रहे, चंद०२० पाहु० । सूर० । कल्प० । आव०म०

**विरयण- न० [विरचन]**

निक्षेपे, अणुओ० ।

**विरयणा- स्त्री० [विरचना]**

प्रस्तारे, अणुओ० ।

विधौ, ठा० ४ ठा० २ उ०

**विरयाविरइ- स्त्री० [विरताविरति]**

विरमणं विरतं, न विरतिः, विरतिः, विरतं चाविरतिश्च यस्यां

निवृत्तौ सा विरताविरतिः । देशविरतिसामायिके, विशेष० ।

**विरयाविरय- त्रि० [विरताविरत]**

विरतः स्थूलादिविशेषणभ्यः प्राणातिपातादिभ्योऽविरतश्चानिवृत्तः

सूक्ष्मादिविशेषणभ्यः स एवेति विरताविरतः । आव०चू० । आव०

देशविरते श्रावके, सम० ४ सम० ।

**विरल- त्रि० [विरल]**

अल्पे । आव०म० । नाया० । उवा० ।

**विरलिया- स्त्री० [विरलिका]**

द्विसरसूत्रपट्याम्, बुह०३ उ० ।

**विरली-** स्त्री० [विरली]

चतुरिन्द्रियजीवभेदे, उत्त० ३६ अ० ।

**विरलोत्तमंग-** न० [विरलोत्तमाङ्ग]

विरलकेशे, उत्तमाङ्ग शब्देन उत्तमाङ्गस्थाः केशा उच्यन्ते । पिंड० ।

**विरल्लअ-** पुं० [विरल्लक]

लावकपक्षिणि, बृह० २ उ० ।

**विरल्लिअ-** त्रि० [विरल्लिअ]

विरलीकृते, जंबू० २ वक्ष० । जीवा० ।

विस्तारिते, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**विरस-** न० [विरस]

विगतरसे, पुराणधान्यौदनादौ, ठा० ५ ठा० १ उ० । नाया० ।

दश० । भग० । पण्हा० ।

**विरसमेह-** पुं० [विरसमेघ]

विरुद्धरसे मेघे, भग० ७ श० ६ उ० ।

**विरसाहार-** त्रि० [विरसाहार]

विरसं विगतरसं पुराणधान्यौदनादि आहरन्तीति विरसाहाराः ।

विरसो वाऽऽहारो यस्य स विरसाहारः । अभिग्रहविशेषेण

विरसं स्यैवाहर्तारि, ठा० ५ ठा० १ उ० सूय० । उव० ।

**विरह-** पुं० [विरह]

विजनत्वे, निर० । नाया० ।

**विरहय-** पुं० [विरहक]

पुष्पप्रधाने, विशेष० ।

अन्तरकाले, आव० म० १ अ०

**विरहालंभ-** पुं० [विरहालम्भ]

विजनालम्भे, निसि० १ उ० ।

**विरहिय-** त्रि० [विरहित]

विजनस्थाने, विपा० १ श्रु० ९ अ० ।

वियुक्ते, आतु० ।

त्यक्ते । विशेष० ।

**विराग-** पुं० [विराग]

विरञ्जने, आचा० १ श्रु० ३ अ० ३ उ० ।

‘विरागरूवेसु गच्छेज्जा’ आचा० १ श्रु० ३ अ० ३ उ० । सूय० ।

विरुद्धो रागो विरागः । अमनोज्ञरागे, विगतो रागो मन्मथभावो

यस्मात्स विरागः । वैराग्ये, तं० ।

**विराड-** पुं० [विराट]

विशेषो राट् यत्र । देशभेदे, तद्देशाधिपे नृपे च नगरभेदे, यत्र

युधिष्ठिरकाले कीचकराजो राजा आसीत् । नाया० १ श्रु० १६ अ० ।

**विराम-** पुं० [विराम]

अवसाने, दश० ९ अ० १ उ० ।

**विरायंत-** त्रि० [विराजमान]

शोभमाने, नाया० १ श्रु० १ अ० । पण्हा० । रा० । सूय० ।

**विराल-** पुं० [विडाल]

माजरि, पत्र० ११ पद ।

**विराली-** स्त्री० [विडाली]

मार्जार्याम्, पत्र० ११ पद । सूय० । आव० म० ।

परिव्राट् प्रयुक्तमूषिकविद्याप्रतिपक्षभूतायां विडालाप्रधानायां

विद्यायाम्, आव० म० १ अ० । आव० । विशेष० ।

**विराली-** स्त्री० [विदारी]

बल्लीभेदे, प्रव० ४ द्वार । ध० ।

**विराहग-** पुं० [विराधक]

विराधयतीति विराधकः । ज्ञानादीनां विनाशके, निसि० १ उ० ।

सम० । रा० । नाया० ।

**विराहणा-** स्त्री० [विराधना]

विराध्यन्ते दुःखं स्थाप्यन्ते प्राणिनोऽनयेति विराधना । आव० ४ अ०

ज्ञानादीनां सम्यगननुपालनायाम्, पण्हा० ५ अ० ।

**विराहणी-** स्त्री० [विराधनी]

ज्ञानदर्शनचारित्रविराधनाकारिण्यां भाषायाम्, दश० ७ अ० ।

**विराहिता-** अव्य० [विराध्य]

दूषयित्वेत्यर्थे, सूय० १ श्रु० ११ अ० ।

**विराहिय-** त्रि० [विराधित]

देशभग्रे, आव० ५ अ० ।

दुःखेन स्थापिते, आव० ४ अ० । ध० ।

**विराहियसंजम-** पुं० [विराधितसंयम]

विराधितः सर्वात्मना खण्डितो न पुनः प्रायश्चित्तप्रतिपत्त्या भूयः

सन्धितः संयमो यैस्ते विराधितसंयमाः । खण्डितचारित्रेषु, पत्र०

२० पद ।

**विरुद्धराज्याइक्रम-** पुं० [विरुद्धराज्यातिक्रम]

विरुद्धनृपयो राज्यं विरुद्धराज्यं तस्यातिक्रमोऽतिलङ्घनं विरुद्ध-

राज्यातिक्रमः । विरुद्धनृपाज्ञामन्तरेण तद्देशगमनरूपे स्थूलादत्ता-

दानविरतेऽतिचारे, आव० ६ अ० । श्रा० । उवा० ।

**विरूव-** त्रि० [विरूप]

नानाभूते, आचा० १ श्रु० ९ अ० ३ उ० । सूय०

बीभत्सामवस्थां प्राप्ते, नाया० १ श्रु० ८ अ० ।

**विरूवरूव-** त्रि० [विरूपरूप]

विरूपं बीभत्सं मनोऽनाह्लादि, विविधं वा मन्दादिभेदाद्रूपं येषां ते

विरूपरूपाः । आचा० १ श्रु० ६ अ० ३ उ० ।

इष्टानिष्टरूपतया नानाप्रकारेषु, आचा० १ श्रु० २ अ० । सूय० । निसि०

बीभत्सरूपे, आचा० १ श्रु० १ अ० १ उ०

**विरेय-** पुं० [विरेक]

विभजने, बुह०३ उ० । आव० ।

**विरेयण-** न० [विरेचन]

कोष्ठशुद्धिरूपे, उत्त०१५ अ० ।

वान्त्यादिना । दश० ३ अ० ।

निःश्रोतआदिभिर्वा अधोविरेके, नाया०१ श्रु० १३ अ० । आचा० ।  
आव० । उत्त० ।

निरुहे च । सूय०१ श्रु० ९ अ० ।

**विरोयण-** पुं० [विरोचन]

विविधैः प्रकारै रोच्यन्ते दीप्यन्ते इति विरोचनाः । उत्तरदिग्वा-  
सिषु, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**विरोह-** पुं० [विरोध]

विपर्यये, विशेषे ।

द्विविधो हि विरोधः परस्परपरिहारलक्षणः, सहानवस्थान लक्षणः  
च । न० । सूय० ।

**विल-** न० [विड]

खनिविशेषोत्पन्ने लवणभेदे, आचा०२ श्रु०१ चू० १ अ०६ उ० ।  
जल्य विसर्गं लोणं नत्थि तल्य उ सो पच्चति तं विललोणं  
भण्णति । निसि० ११ उ० ।

**विलओलग-** [देशी]

लुण्टाके, ये ग्रामं मुष्णन्ति । बुह०१उ०३

**विलंब-** पुं० [विलम्ब]

परिमन्थरे, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**विलंबिय-** न० [विलम्बित]

सूर्येण परिभुज्य मुक्ते नक्षत्रभेदे, वव० १ उ० । विशेषे । आव०म०  
विलम्बकरणे, नाट्यभेदे च । आव०म० १ अ० । रा० ।

**विलग-** त्रि० [विलग्न]

अवस्थिते, पण्हा० ३ अ० आव०म० । निसि० ।

**विलय-** पुं० [विलय]

विनाशे, विशेषे । आव० ।

**विलवणया-** स्त्री० [विलपनता]

क्लिष्टभाषणे, गच्छा०१ अधि० ।

**विलवमाण-** त्रि० [विलपमान]

आर्तस्वरं कुर्वाणे, विपा०१ श्रु०२ अ० ।

विलापान् कुर्वति, विपा०१ श्रु०९ अ० ।

**विलविय-** न० [विलपित]

आर्तस्वरे, पण्हा०५ अ० । विलापे, नाया०१ श्रु०९ अ० ।

विलपितमिव विलपितम् । निरर्थकतया मत्तबालगीततुल्ये, उत्त०  
१३ अ० । उव० ।

**विलवियसद्-** पुं० [विलपितशब्द]

भर्तृगुणान् स्मारं २ प्रलापरूपे शब्दे, उत्त०१६ अ० ।

**विलसंत-** त्रि० [विलसत्]

दीप्यमाने, कल्प० १ अधि०३ ।

**विलसिय-** न० [विलसित]

नेत्रविकारे, नाया० १ श्रु० ९ अ० ।

विलासवति, उव० ।

**विलाव-** पुं० [विलाप]

आर्तस्वरकरणे, पण्हा०१ अ०

शब्द-विशेषे, पण्हा०३ अ०

**विलास-** पुं० [विलास]

सकामे नेत्रचेष्टाविशेषे, अणुओ० । नाया० ।

स्त्रीणां स्थानासनगमनादिरूपे चेष्टाविशेषे, रा० । उव० । नाया० ।

पण्हा० । गच्छा० । नाया० । विपा० । बुह० । जंबू० ।

स्वकुलौचित्येन शटङ्गारादिकरणे, रा० ।

**विलासिय-** त्रि० [विलासित]

विलासः संजातोऽस्येति । विलासवत्याम्, जीवा० ३ प्रति० ४ ।

जातविलासे, नाया० १ श्रु० १७ अ० ।

**विलिंगण-** न० [विलिङ्गन]

कन्दर्पप्रधानानां वक्रसंयोगादिकानां क्रियाणां करणे, आचा०२  
श्रु० २ चू० २ अ० ।

**विलिंपावंत-** त्रि० [विलेपयत्]

विलेपनं कुर्वति, निसि०१७ उ० ।

**विलिङ्ग-** त्रि० [व्यलीकित]

सञ्जातव्यलीके, भग०१५ श० ।

**विलिहमाण-** त्रि० [विलिखत्]

नितरामनेकशो वा कर्षति, भग०८ श०१ उ० ।

**विलिहिज्जमाण-** त्रि० [विलिख्यमान]

खच्यमाने, कल्प०१ अधि०१ क्षण० ।

**विलीण-** त्रि० [विलीन]

क्लिन्ने, नाया०१ श्रु०१ अ० । जुगुप्सिते, प्रश्न०१ अ० नाया० ।

**विलुंगय-** पुं० [विलुङ्गक]

निर्ग्रन्थे, अकिञ्चने, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०२ उ० ।

**विलुंचण-** न० [विलुञ्चन]

विच्छित्या विश्वतो वा लुञ्चने, पिंड० ।

**विलुंपइत्ता-** त्रि० [विलम्पयितु]

कशाप्रहारादिभिरत्यन्त दुःखोत्पादनेन लुम्पके, सूय०२ श्रु०२ अ०

सर्वस्वापहारेण आशु पञ्चत्वं नयति, आचा०१ श्रु०८ अ०२ उ० ।

ग्रामघातादिना लुण्ठके, आचा०१ श्रु०८ अ०५ उ० ।

**विलुप्त-** त्रि० [विलुप्त]

विशेषण लुप्ते, विशेषण लुप्तो विलुप्तः नासानेत्रात्रकालेयादिषु  
चुण्टित इत्यर्थः । उक्त० १९ उ० ।

**विलुप्यमाण-** त्रि० [विलुप्यमान]

बाह्योपध्यपहारतो लुप्यमाने, उवा०७ अ० ।

**विलुलिय-** त्रि० [विलुलित]

शिथिलतया चञ्चले, पण्हा०३ अ०  
लुठिते, पण्हा०१ अ०

**विलेवणविहि-** पुं० [विलेपनविधि]

विलेपनप्रकारे, उवा०१ अ० ।  
यक्षकर्मादिपरिज्ञाने, जंबू०२ वक्ष० ।  
कलाभेदे, नाया०१ श्रु०१ अ० । उव० ।

**विलेविया-** स्त्री० [विलेपिका]

पानभेदे, विलेपिकायाम्, बुह० ।  
विलेपिका द्विविधा-एका काञ्जिकविलेपिका, द्वितीया उदकवि-  
लेपिका । बुह०१ उ०२ ।

**विलोव-** पुं० [विलोप]

उच्छेदे, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ० ।  
अवच्छेदने, आचा०१ श्रु०२ अ०३ उ० ।  
सद्धमाद् बाधने, सूय०१ श्रु०१३ अ० ।

**विल्ल-** पुं० [विल्व]

संयोगे-बहुबीजफले वृक्षभेदे, पत्र०१७ पद । आचा० । अणुओ० ।

**विल्लल-** पुं० [विल्लल]

सनखचतुष्पदविशेषे, पत्र०१ पद ।

**विल्लिय-** त्रि० [विलीय]

दीप्यमाने, विशेषण लीने, उव० ।

**विवक्क-** त्रि० [विपक्व]

सुपरिनिष्ठिते, प्रकर्षपर्यन्तमुपगते, उदयागते ठा० ५ ठा० २ उ०

**विवक्ख-** पुं० [विपक्ष]

विपरीतः पक्षो-धर्मो विपक्षः । विवक्षितवस्तुधर्मस्य विपरीते,  
धर्मे, अणुओ० ।  
वैधर्म्ये, विशेष०  
विसदृशः पक्षो विपक्षः, साध्यादिविपर्यये, दश०१

**विवक्खपडिसेह-** पुं० [विपक्षप्रतिषेध]

अनुमानवाक्यस्य षष्ठेऽवयवे, दश०१ अ० ।

**विवक्खा-** स्त्री० [विवक्षा]

वक्तुरिच्छायाम्, पिंड० ।

**विवक्खापुव्व-** त्रि० [विवक्षापूर्व]

विवक्षाकारणे, दश०१ अ० ।

**विवच्छा-** स्त्री० [विवत्सा]

वत्सरहितायाम्, बुह०१ उ०३ ।  
सिन्धुसङ्गते नदीभेदे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**विवज्जअ-** पुं० [विपर्यय]

अतस्मिंस्तदध्यवसाये, विशेष० ।

**विवज्जणा-** स्त्री० [विवर्जना]

विशेषतस्त्यागे, मिथ्याश्रुतश्रवणकुट्टाष्टसङ्गत्यागे, उक्त०३२० अ० ।

**विवज्जयंत-** त्रि० [विपर्ययत्]

अनेकैः प्रकारैः सूत्रोक्तैः परिहरति, दश०५ अ०१ उ० ।

**विवज्जास-** पुं० [विपर्यास]

वैपरीत्यभवने, विशेष० । सूय० । आचा०  
विपर्यासमुपैति, तत्वेऽतत्त्वाभिनिवेशमतत्वे च तत्त्वाभिनिवेशं च ।  
हितेऽहितबुद्धिमेवं सर्वत्र विपर्ययं विदधाति, आचा०१ श्रु०२ अ०३

**विवज्जिय-** त्रि० [विवर्जित]

रहिते, जीवा०१ प्रति० ।  
विकले, पण्हा०३ अ०

**विवड्ढणी-** स्त्री० [विवर्धनी]

विशेषण वृद्धिहेतौ, विषयरागस्य अतिशयेन वृद्धिकर्त्रीम् । उक्त०१६

**विवणि-** पुं० [विपणि]

वणिक्पथे, उव० । नाया० ।  
दरिद्रापणे, बुह०१ उ० ।

**विवण-** त्रि० [विवर्ण]

अशोभनवर्णे, आचा०२ श्रु०१ चू०५ अ०२ उ० ।  
रूपवर्णे, पण्हा०२ अ०  
विगतवर्णे, दश०५ अ०२ उ० ।

**विवण-** त्रि० [द्विपर्ण]

पर्णद्वययुक्ते, 'विवन्नओ रुक्खो' आचा०२ श्रु०१ चू०५ अ०२ उ० ।  
द्विपर्णो-वृक्षः, अङ्कुरोद्गमावस्थायां हि प्रथमं द्वौ पर्णौ भवतः ।  
बुह० १ उ०१ ।

**विवणच्छंद-** त्रि० [विवर्णच्छन्दसु]

परायत्ततया अपेतस्वाभिप्राये, दश० ९ अ०२ उ० ।

**विवणसारसद्-** पुं० [विवर्णसारशब्द]

विगतसर्वद्रव्यभाण्डे, उक्त० १४ अ० ।

**विवत्ति-** स्त्री० [विपत्ति]

कार्यविनाशे, निसि०१५ उ० ।  
'सम्प्राप्तिश्च विपत्तिश्च, कार्य्याणां द्विविधा स्मृता । सम्प्राप्तिः  
सिद्धिरर्थेषु, विपत्तिश्च विपर्ययः । निसि० १५ उ० ।

**विवद्धन-** न० [विवर्द्धन]

विविधैः प्रकारैर्वृद्धिकरे, नाया०१ श्रु०१ अ०

**विवर- न० [विवर]**

विगतावरणतया विवरम् । आकाश, भग० १७ श० ८ उ० ।  
रन्ध्रे, उत्त० २० अ० । आचा० । सूय० ।  
शेषजनविरहः । विपा० ।  
वृक्षरहितभूभागः । जंबू० ।

**विवरीउप्पाय- पुं० [विपरीतोत्पात]**

अशुभसूचके, प्रकृतिविकारे, पण्हा० २ अ०

**विवरीय- त्रि० [विपरीत]**

परमार्थादन्तथाभूते, सूय० १ श्रु० १ अ० ४ उ० ।  
विपर्यन्ते, निसि० १ उ० ।

**विवरीयपरूवणा- स्त्री० [विपरीतप्ररूपणा]**

अन्यथा पदार्थकथनायाम् आव० ४ अ० ।

**विवरीयभासग- पुं० [विपरीतभाषक]**

भाषकाद् विपरीतो विपरीतभाषकः । अभाषके, अणुओ० ।

**विवाग-१ पुं० [विपाक]**

विपचनं विपाकः । शुभाशुभकर्मपरिणामे, सम० प्र० सम० । न० ।  
विपच्यमानतायाम्, रसप्रकर्षावस्थायाम्, भग० ९ श० ३२ उ० ।  
उदये साध्ये, पण्हा० २ अ०  
परिणामे, आव० ४ अ० ।  
अनुभावे, ठा० ४ ठा० २ उ०  
परिपाककाले, उत्त० ३२ अ० । सूय० ।  
फले, सूय० १ श्रु० ६ अ० ।  
पुष्टतायाम्, आव० म० १ अ० ।  
विपाकः- पुण्यपाप-रूपकर्मफलम् । विपा० ।

**विवाग-२ पुं० [विपाक]**

द्विगृह्णदशानां द्वितीयेऽध्ययने, ठा० १ ठा० ३ उ० ।

**विवाग-३ पुं० [विपाक]**

भारत वर्षे आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां भविष्यति एकोनविंशे जिने,  
सम० । जीवा० ।

**विवागविजय- पुं० [विपाकविजय]**

विपाकः कर्मणां ज्ञानावरकत्वादि विचीयते निर्णीयते विजीयते  
अभिगमद्वारेण परिचितीक्रियते यस्मिंस्तद् विपाकविजयम् । ठा०  
४ ठा० १ उ० ।  
अशुभकर्मविपाकानुचिन्तनार्थे प्रकृत्यादिभेदभिन्नस्य कर्मणः  
स्वरूपध्यानरूपे धर्मध्याने, आव० चू० ।

**विवागसुय- न० [विपाकश्रुत]**

विपचनं विपाकः । शुभाशुभकर्मपरिणाम इत्यर्थः । तत्प्रतिपादकं  
श्रुतं विपाकश्रुतम् । न० ।  
एकादशाङ्ग विपा० ।

**विवाय- पुं० [विवाद]**

विरुद्धो वादो विवादः । आचा० १ श्रु० ४ अ० २ उ० ।  
विप्रतिपत्तौ, पण्हा० २ अ० ।  
विप्रतिपत्तिसमुत्थचने, क्रोधकार्यत्वादस्य क्रोधकषायविशेषे,  
भग० १२ श० ५ उ० । सम० । सूय० ।  
वाक्कलहे, जीवा० १ प्रति० ।  
कलहो त्ति वा भंडणं ति वा विवादो त्ति वा एगट्ठं । निसि० १६ उ०

**विवाह-१ पुं० [विवाह]**

पाणिग्रहणे, पण्हा० २ अ०  
'वर्षासु शुभकार्याणि, नान्यान्यपि समाचरेत् । गृहिणां मुख्य-  
कार्यस्य, विवाहस्य तु का कथा । कल्प० १ अधि० ७ । आव० म०  
विवाहविषये मूलकर्म द्वितीयो भेदः । पिंड० ।

**विवाह-२ स्त्री० [व्याख्या]**

भगवत्यपरनामके प्रवचन पुरुषस्य पञ्चमे अङ्गे, भग०

**विवाहचूलिया- स्त्री० [व्याख्याचूलिका]**

व्याख्या-भगवती तस्याश्चूलिका व्याख्याचूलिका । संक्षेपिकानां  
दशानां पञ्चमेऽध्ययने, ठा० १० ठा० ३ उ० । न० ।

**विवाहपण्णत्ति- स्त्री० [व्याख्याप्रज्ञप्ति]**

भगवत्यपरनामके प्रवचनपुरुषस्य पञ्चमे अङ्गे, भग० ।

**विवाहिय- त्रि० [विवाहित]**

संजातविवाहे, आव० म० १ अ० । ठा०

**विवित-त्रि० [विविक्त]**

स्त्रीपशुपण्डकविवर्जिते, सूय० १ श्रु० २ अ० २ उ० ।  
स्त्र्यादिरहितोपाश्रये, उत्त० ३२ अ० । आचा० । बुह० । पण्हा०  
पृथग्भूते त्यक्ते, आचा० १ श्रु० ८ अ० ८ उ० ।  
रहस्यभूते, दशा० ५ अ० । आव० म० ।  
एकान्तसंविग्ग, वव० ४ उ० ।

**विवित्तरिया- स्त्री० [विविक्तचर्या]**

पशुपण्डककुशीलवर्जितानवद्याश्रयाश्रयणे, दश० ।

**विवित्तजीवि- त्रि० [विविक्तजीविन्]**

विविक्तं स्त्रीपशुपण्डकसमन्वितशय्यादिरहितमसंक्लिष्टं जीवितुं  
शीलमस्येति विविक्तजीवि । स्त्र्यादिसंसक्तासनादिवर्जनतो जीवन-  
शील, भग० ९ श० ३३ उ० ।

**विवित्तमउअ- त्रि० [विविक्तमृदुक्]**

दोषवियुक्ते, लोकान्तरासंकीर्णे वा कोमले, भग० ९ श० ३४

**विवित्तवासवसहि- स्त्री० [विविक्तवासवसति]**

विविक्तानां निर्दोषाणां वासो निवासो यस्यां, सा चासौ वसतिः ।  
निर्दोषजनावासे पण्हा० ३ अ० ।  
तदन्यसाधुभी रहितायां वसतौ च । दश० ८ अ० ।



**विवित्तसयणासणसेवणया-** स्त्री० [विवित्तशयनासनसेवनता]

विवित्तानि स्त्र्याद्यसंसक्तानि यानि शयनासनानि उपलक्षणत्वा-  
दुपाश्रयश्च तेषां या सेवनता सा तथा । भग० १७ श० ३ उ० ।  
स्त्रीपशुपण्डकादिरहितशयनासनानामासेवनायाम्, उक्त० २९ अ०

**विवित्तेसि-** त्रि० [विवित्तैषिण]

विवित्तं स्त्रीपशुपण्डकादिरहितं स्थानमेषितुं शीलमस्य । स्त्री-  
पशुपण्डकादिरहितस्थानसेवके, सूय० १ श्रु० ४ अ० १ उ० ।

**विविद्धि-** स्त्री० [विवृद्धि]

उत्तरभाद्रपदनक्षत्राधिपतौ देवे, ठा० ।

**विविह-** त्रि० [विविध]

अनेकप्रकारे, चंद० १८ पाहु० । आचा० । सूय० । निसि० । दश० ।  
पण्हा० । पंच० चू० । रा० । सम० ।  
नाना प्रकारे, आचा० १ श्रु० २ अ० ३ उ० । जंबू० ।  
विचित्रे, आव० म० १ अ० । रा० ।  
विविधैस्तारारूपैस्तारिकारूपैरुपचितानि तोरणेषु हि शोभायै  
तारिका निबध्यन्ते इति प्रतीतम् । जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।  
विविधैर्देशनेपथ्यैर्गृहीतो वेषो यैस्ते विविधदेशनेपथ्यगृहीत  
वेषाः । जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**विविहकरणबुद्धि-** त्रि० [विविधकरणबुद्धि]

विविधचिकीर्षो, पण्हा० ५ अ०

**विविहगर-** पुं० [विविधकर]

३६ ऋषभदेवपुत्रे, कल्प० १ अधि० ७ ।

**विविहमुणतवोरय-** त्रि० [विविधमुणतपोरत]

अनशनाद्यपेक्षया अनेकगुणे तपसि रते, दश० ९ अ० ४ उ० ।

**विविहजाइ-** स्त्री० [विविधजाति]

नानाजातीयेषु, पण्हा० १ आश्र० द्वार

**विविहपाण-** न० [विविधपान]

द्राक्षापानकादौ, पण्हा० ५ संव० । द्वार

**विविहवत्थमल्लधारि-** त्रि० [विविधवत्थमाल्यधारिन्]

विविधानि शुभतराणि वस्त्राणि माल्यानि च धारयन्तीत्येवंशीलाः  
विविधवत्थमाल्यधारिणः । अनेकविविधवत्थमाल्यधारकेषु, जीवा०  
४ प्रति० २ उ० ।

**विविहवित्थराणुगम-** पुं० [विविधविस्तराणुगम]

विविधश्चासौ सत्पदप्ररूपणाद्यनेकानुयोगद्वाराश्रितत्वेन विस्तरा-  
णुगमः ।  
विस्तराणुगमनीयानेकजीवादितत्त्वानां विस्तरप्रतिपादेन, सम०  
प्र० सम०

**विविहवेस-** पुं० [विविधवेश]

विविधवेश्याजने, उव०

**विविहसत्त-** पुं० [विविधसत्त्व]

विविधा बहुप्रकारा वर्णादिभेदात्, सत्त्वा येषामनन्तकायिक  
वनस्पतिभेदानां ते तथा । अनेकविविधसत्त्वेषु, भग० ७ श० ३ उ० ।  
'अणंतजीवा विविहसत्ता ।' भग० ७ श० ३ उ० ।

**विविहसत्थ-** न० [विविधशस्त्र]

स्वकायपरकायभेदेषु शस्त्रेषु, पण्हा० १ अ०

**विवेग-** पुं० [विवेक]

विवेचनं विवेकः । 'विचिर' पृथग्भावे । ओह०  
परित्यागे, आचा० १ श्रु० ८ अ० १ उ० । वव० । सूय० ।  
विवेक-स्त्यागः । ठा० १ ठा० ।  
स्वजनसुवर्णादित्यागे, आव० म० १ अ०  
अशुद्धभक्तादिविवेचने, गच्छा० १ अधि० । भग० ।  
कायोत्सर्गाभिधाने, आव० ५ अ०

**विवेगपडिमा-** स्त्री० [विवेकप्रतिमा]

विवेचनं विवेकस्त्यागः, च चान्तराणां कषायादीनां बाह्यानां च  
गणशरीरानुचिन्ता-भक्तपानादीनां तत्प्रतिपत्तिः विवेकप्रतिमा ।  
अभिग्रहविशेषे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।  
सुद्धातिरिक्तभक्तपानवस्त्रशरीरतन्मलादित्यागे, ठा० ४ ठा० १ उ०

**विवेगभासि-** त्रि० [विवेकभाषिन्]

भाषासमित्युपेते, आचा० २ श्रु० १ चू० ४ अ० २ उ० ।

**विवेगारिह-** न० [विवेकार्हा]

परित्यागशोध्ये, ठा० १ ठा० ३ उ० ।  
प्रायश्चित्तभेदे, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।  
अशुद्धभक्तादिविवेचने, उव० । ठा० ।  
अनेषणीयग्रहणादेर्विधिना परित्यागेनैव शुद्धिर्भवति । जीत० । वव०

**विवेयणा-** स्त्री० [विवेचना]

निर्जरायाम्, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**विव्वोय-** पुं० [विव्वोक]

'इष्टानामर्थानां, प्राप्तावभिमानगर्वसंभूतः स्त्रीणामनादरकृतो,  
विव्वोको नाम विक्षेपः ।' इत्युक्तलक्षणे स्त्रीणां चेष्टाभेदे, बुह० १  
उ० ३ । गच्छा० । नाया० । आचा० ।  
देशीपदं वा 'विव्वोय' ति । अङ्गजविकारे, अणुओ० ।

**विव्वोयण-** न० [देशी]

उपधानके, सूर० २० पाहु० । दश० । नाया० । भग० ।  
उपधानकान्युच्यन्त इति जीवाभिगममूलटीकाकारोक्तेः । रा० ।

**विस-** स्त्री० [विष]

गरल, उक्त० १६ अ० । गच्छा० । पण्हा० ।

कालकूटे, पण्हा० १ अ० आव० ।

विषं स्थावराजङ्गमभेदाद् द्विधा । ठा० १० ठा० ३ उ० ।

विष्- पुं० [वृष]

गवि, वव०१ उ० ।

विसओदय- पुं० [विषयोदय]

विषयग्रहणेन विषयविषयो मोहः परि गृह्यते, विषयेन विषयिणोपलक्षणात् । विषयविषयमहोदये, वव० १ उ० ।

विसन्धि-१ पुं० [विसन्धि]

विगलितबन्धने, सूय०२ श्रु०१ अ० । आव० व्यवस्थितौ, आव०चू०४ अ० ।

विसन्धि-२ पुं० [विसन्धि]

द्वापञ्चाशत्तमे महाग्रहे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

विसंभोइय- पुं० [विसंभोगिक]

विसंभोगो दानादिभिरसंव्यवहारः, स यस्यास्ति स विसंभोगिकः । ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

मण्डलीबाह्ये, ठा० ५ ठा० १ उ० ।

विसंभोग- पुं० [विसंभोग]

दानादिभिरसंव्यवहारे, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।  
आर्यसुहस्तिमयाद्विसंभोगः । वव० ।

विसंवायणा- स्त्री० [विसंवादना]

अनाभोगादिना गवादिक्मश्वादिकं यद्वदति कस्यैचित् अभ्युपगम्य वा यत्र करोति तादृशे मिथ्याप्रत्यय, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

विसकंठिया- स्त्री० [विसकण्ठिका]

विसं मृणालमिव कण्ठोऽस्ति । बलाकायाम्, आव०म० १ अ० ।

विसकंद- पुं० [विसकन्द]

खाद्यविशेषे, जीवा०३ इति०४ अधि० ।

विसकल- त्रि० [विशकल]

खण्डाखण्डीकृते, वव०८ उ० ।

विसकलिय- त्रि० [विशकलित]

खण्डिते, आव०म०७ उ० ।

विसकुंभ- पुं० [विषकुम्भ]

स्फोटिकाविशेषे, बुह०३ उ० ।

विषभृतकुम्भे, ठा० ४ ठा० ४ उ०

विसक्कण- न० [विष्वक्कण]

शीघ्रविध्मापनार्थं ज्वलतामुल्मुकानामपकषणे, बुह०२ उ० ।

विसगंडूस- पुं० [विषगण्डूष]

कालकूटभृतगण्डूषे, सूय०१ श्रु०३ अ०४ उ० पण्हा० ।

विषघाइ- त्रि० [विषघातिन्]

गरदोषहननशीले, दश० ।

विषज्जणा- स्त्री० [विसर्जना]

मुत्कलने, वव०४ उ० ।

विसज्जिय- त्रि० [विसृष्ट]

प्रेरिते, नाया०१ श्रु०१३ अ० । निसि० । आव०म० । आव० ।

विसट्टमाण- त्रि० [विदलत्]

विकसति, ठा० ४ ठा० ४ उ० । भग० ।

विसट्टया- स्त्री० [विषार्थता]

विषमेवार्थो विषार्थस्तद्भावस्तता । विषत्व, भग०८श०२उ० । ठा०

विसण- न० [विशन]

प्रवेशे, वव०७ उ० ।

विसणंदि- पुं० [विषनन्दिन्]

प्रथमबलदेवस्याचलस्य पूर्वभवजीवे, सम० ।

विसण्ण- त्रि० [विषण्ण]

विविधमनेकप्रकारं सन्नो मग्नो विषण्णः । उत्त०६ अ० । सूय० ।

विशेषेण सन्नो निमग्नो विषण्णः । उत्त० ८ अ० । आचा० ।

विशेषेण दीने, उत्त०१२ अ० । सूय० । आचा० ।

अवसक्ते विषयप्रधाने, सूय०१ श्रु०१२ अ० ।

शोकिते, पण्हा०३ अ०

असंयमे, सूय०१ श्रु०५ अ०२ उ० ।

विसण्णचित्त- त्रि० [वियण्णवित्त]

मूर्च्छिते, सूय०१ श्रु०५ अ०२उ०

विसण्णेसि- त्रि० [विषण्णैषिण]

विषण्णोऽसंयमस्तमेषितुं शालमस्येति विषण्णैषी । असंयम- गवेष्के । सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ० ।

विसत्त- त्रि० [विसत्त्व]

विगताः सत्त्वा यत्र तद् विसत्त्वम् । विगतजने, वव० ६ उ० ।

विसद- त्रि० [विशद]

धवले, कल्प०१ अधि०५ ।

व्यक्ते, निसि०१ उ० ।

विसदंसण- पुं० [विषदर्शन]

आगाढकारणे उत्पन्ने प्रतिसेवमाने, निसि० १ उ० ।

विसपरिगय- त्रि० [विषपरिगत]

विषव्याप्ते, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

विसपरिणय- त्रि० [विषपरिणत]

विषरूपापन्ने, ठा० ४ ठा० १ उ०

विसपरिणाम- पुं० [विषपरिणाम]

गरलपरिपाके, ठा० ।

विसप्पमाण- त्रि० [विसर्पत्]

विस्तारं व्रजति, भग०२ श०१ उ० । आव०म० । नाया० । रा० ।

विशेषेण सर्पतीति विसर्पत् ।

विस्फुरति, उत्त०३५ अ० ।

**विसभ- पुं० [वृषभ]**

बलीवर्दे, भग० ११ श० ११ उ० ।

**विसभक्खण- न० [विषभक्षण]**

विषं तालपुटादि तस्य भक्षणं विष भक्षणम्, गच्छा० २ अधि० ।  
गरलाशत, विषभक्षणेन मरणभेद, भग० २ श० १ उ० ।

**विसम- त्रि० [विषम]**

दुरारोहावरोहस्थाने, जंबू० २ वक्ष० । जीवा० ।  
निम्नोन्नते, विपा० १ श्रु० ३ अ० । पण्हा० । आचा० । निसि० । दश० । तं०  
विषमभूमिप्रतिष्ठिते, भग० ३ श० ४ उ० ।  
पाषाण-गर्ततर्वाद्याकुलभूमिरूप, भग० ३ श० २ उ० । ठा० । बुह०  
नि-स्नेहे दुःसंचारे, आव० ४ अ० ।  
प्रतिकूले, सूय० १ श्रु० २ अ० २ उ० ।  
चलं श्लथं बहुलं स्थूलं विषमं बलियुक्तं चर्म यस्य स तथा ।  
ठा० ४ ठा० २ उ० ।  
असंयमे, सूय० १ श्रु० २ अ० १ उ० ।  
दुर्गमत्वाद् विषमम् । आकाशे, भग० २ श० २ उ० ।

**विसमंत- पुं० [विषमान्त]**

कूटपाशादियुक्तप्रदेशे, सूय० १ श्रु० १ अ० २ उ० ।

**विसमचारिणक्खत्त- पुं० [विषमचारिनक्षत्र]**

विषमचारिणी, यथा स्वतिथिष्वन्तर्वर्तीनि नक्षत्राणि यत्र स  
विषमचारित्रनक्षत्रः । विषमचारित्रनक्षत्रयुक्ते संवत्सरे, ठा० ५ ।

**विसमसंधिबंधण- त्रि० [विषमसन्धिबन्धन]**

विषमाणि दीर्घह्रस्वत्वा दिना सन्धिरूपाणि बन्धनानि येषां ते  
विषमसन्धिबन्धनाः । असमसन्धिबन्धनेषु, भग० ७ श० ७ उ० ।

**विसमीस- त्रि० [विषमिश्र]**

गरलयुक्ते, सूय० १ श्रु० ४ अ० १ उ० ।

**विसमेह- पुं० [विषमेघ]**

जनमरणहेतुजले मेघे, भग० ७ श० ७ उ० ।

**विसय- पुं० [विशद]**

निर्मले, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । जंबू० ।  
व्यक्ते उव० । स्पष्टे, नाया० १ श्रु० १ अ० । धवले, उव० ।

**विसय- पुं० [विशय]**

विशन्त्यस्मिन्निति विशयः । गृहे, उत्त० ७ अ०  
'संभावनायाम्, विसओ ति वा सम्भवो ति वा उववति ति वा  
एगट्ठा ।' आव० चू० १ अ० ।

**विसय-१ पुं० [विषय]**

विषीदन्ति धर्मं प्रति नोत्सहन्ते एतेष्विति विषयाः, यद्वा-सेवन  
काले मधुरत्वेन परिणामे चातिकटुकत्वेन विषस्योपमां यान्तीति  
विषयाः । उत्त० ४ अ० ।

**विसय-२ पुं० [विषय]**

ग्राह्ये अर्थे, भग० ८ श० २ उ० ।  
विषयः प्राप्तिर्गोचर एगट्ठा आव० चू० १ अ० ।  
विषीदन्त्येतस्मिन्सक्ताः प्राणिन इति विषयाः । इन्द्रियगोचरे,  
आव० ४ अ० ।  
शब्दरूपरसगन्धस्पर्शादौ, गच्छा० २ अधि० । आचा० । वव० । जीवा०  
। भग० । आव० । उत्त० । ठा० । सूय० । वव० । नाया० । दश०

**विसयंगण- न० [विषयाङ्गण]**

विशन्त्यस्मिन् विशयो गृहं तस्याङ्गणम् । गृहाङ्गणे, उत्त० ७ अ० ।

**विसयंगणा- स्त्री० [विषयाङ्गना]**

विषयप्रधानायामङ्गनायाम्, सूय० १ श्रु० १२ अ० ।

**विसयगाम- पुं० [विषयग्राम]**

शब्दादिविषयसमूहे, आचा० १ श्रु० ३ अ० २ उ० ।

**विसयतण्हा- स्त्री० [विषयतृष्णा]**

शब्दादिविषयलालसायाम् । सूय०

**विसयधम्मट्ठि- त्रि० [विषयधर्मार्थिन्]**

स्त्रीपरिभोगार्थिनि, निसि० १ उ० ।

**विसयपडिकूल- त्रि० [विषयप्रतिकूल]**

विषयपरिभोगनिषेधकत्वेन प्रतिलोमे, भग० ९ श० ३३ उ० ।

**विसयपमाय- पुं० [विषयप्रमाद]**

शब्दादिविषयजप्रमादे, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**विसयपास- पुं० [विषयपाश]**

शब्दादिरूपेषु रज्जुबन्धनेषु, सूय० १ श्रु० ४ अ० १ उ० ।

**विसयमेत्त- न० [विषयमात्र]**

विषय एव विषयमात्रम् । क्रियाशून्ये अर्थमात्रे, भग० ३ श० १ उ० ।

**विसयराग- पुं० [विषयराग]**

शब्दादिविषयविषयकेरक्तत्वे, आव० चू० १ अ० ।

**विसयविगयवोच्छिण्णकोउहल्ल-**

विषयेषु शब्दादिषु विगतं व्यवच्छिन्नमत्यन्तं क्षीणं कौतूहलं यस्य  
स तथा । विषयविषयककौतूहलरहिते, भग० ९ श० ३३ उ० ।

**विसयविवेग- पुं० [विषयविवेक]**

विषयपरित्यागे, दश० १० अ० ।

**विसयवेस- पुं० [विशदवेष]**

धवलाकारे, उव० ।

**विसयसुह- न० [विषयसुख]**

विषयेन्द्रियसंसर्गजे सुखे, सूय० १ श्रु० ४ अ० १ उ० ।

**विसयारंभय- पुं० [विषयारम्भक]**

विषयाणामारम्भोऽस्येति विषयारम्भकः । विषयार्थं सावधारम्भ-  
प्रवृत्ते, आचा० १ श्रु० ५ अ० १ उ०

**विसर-** पुं० [विसर]

मत्स्यबन्धनविशेषे, विपा०१ श्रु०८ अ० ।

**विसरण-** न० [विशरण]

परिशटने, ठा० १ ठा० ।

**विसरिया-** स्त्री० [विसरिका]

सरटे, निसि०१ उ० ।

**विसरिस-** त्रि० [विसरिश]

विजातीये, आव०म०१ अ० ।

**विसल्ल-** त्रि० [विशल्य]

विगतानि शल्यानि मायादीनि यस्यासौ विशल्यः । उद्गतशैल्ये,  
आव०५ अ० ।

**विसल्लकरणी-** स्त्री० [विशल्यकरणी]

शल्योद्धारकरणे विद्याभेदे, सूय०२ श्रु०२ अ० ।

**विसवाणिज्ज-** न० [विषवाणिज्ज]

जीवघातप्रयोजने विषशस्त्रादिविक्रयणे । उवा०१ अ० । आव०चू० ।

**विसहर-** पुं० [विषधर]

सर्पे, सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ० ।

**विसा-** स्त्री० [विषा]

सागरपुत्रस्य दुहितरि विषाणभार्यायाम्, आव०चू० ६ अ० ।

**विसाइ-** त्रि० [विषादिन्]

विषादयुक्ते, अणुत्त० ।

**विसाएमाण-** त्रि० [विस्वादयत्]

विशेषेण स्वादयन् । सर्वाऽऽस्वादके खर्जुरादेरिवाल्पत्यक्ते, कल्प०  
१ अधि०५ क्षण० । विपा०

**विसाण-** न० [विषाण]

शृङ्गे, ठा० ९ ठा० ३ उ० । आचा० । पण्हा०

शूकरदन्ते, विषाणशब्दो यद्यपि गजदन्ते रूढस्तथापि इह शू-  
करदन्ते प्रतिपत्तव्यः । उवा० ७ अ० । नाया० । अणुओ० ।

**विसाणच्छेय-** पुं० [विषाणच्छेद]

विषाणविशेषे, उव० ।

**विसाणि-** पुं० [विषाणिन्]

शृङ्गरूपेणावयवेनावयविनि, अणुओ० ।

**विसाद-** १ पुं० [विषाद]

पराभवगमने, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ० ।

दैन्यभावे, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ० ।

विषीदन्ति । संयमानुष्ठानात् शीतलीभवेन भ्रंशे, सूय०१ श्रु०३ अ०१  
‘किमहमत्र प्रदेशे सामायात इति खेदस्वरूपे, अणुओ० ।

स्वप्रानुभूतदुःखद्वेषलिङ्गे, । विशेष० ।

स्नेहादिसमूहप्रमोहे, आव०४ अ० । उव० ।

**विसाद-** २ पुं० [विषाद]

एकादशदेवलोकस्थविमानभेदे, सम० २० सम०

**विसायणिज्ज-** त्रि० [विस्वादनीय]

विशेषस्तद्रसमधिकृत्य स्वादनीये, जंबू० २ वक्ष० ।

विशेषत आस्वादयितुं योग्ये, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**विसारय-** पुं० [विशारद]

विपश्चिती, विशेष० । नं० । आव०म० ।

विचक्षण्ये, उत्त०२० अ० । पंच०चू० । संथा० । रा० ।

पण्डिते, नाया० १ श्रु० १ अ० । पण्हा० । उव० ।

**विसाल-** १ त्रि० [विशाल]

विस्तीर्णे, नाया०१ श्रु०१ अ० । कल्प० । ज्यो० । जंबू० । संथा० ।

रा० । आव०म० । आव० । सम० ।

बहुले, आव०चू०५ अ० । पुं० ।

**विसाल-** २ त्रि० [विशाल]

एकोनाशीतितमे महाग्रहे, ठा० २ ठा० ३ उ० । चंद० । सूर० ।

**विसालसिंग-** पुं० [विशालशृङ्ग]

स्वनामख्याते पर्वते, पिंड० ।

**विसाला-** १ स्त्री० [विशाला]

नगरीभेदे, आव०१ अ० ।

शैलप्रभस्य पूर्वेण राजधान्याम् । सूय० ।

**विसाला-** २ स्त्री० [विशाला]

त्रयोविंशति तीर्थकरस्य शिबिकाभेदे, सम० ।

**विसाला-** ३ स्त्री० [विशाला]

महावीरस्य जनन्याम्, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ०

**विसाहनंदि-** पुं० [विशाखनन्दिन्]

वीरस्य षोडशभवजीवस्य विश्वभूतेः पितृव्यपूत्रे, । कल्प० १ अधि०  
२६ । आव०म० । आव०चू० ।

**विसाहभूइ-** पुं० [विशाखभूति]

राजगृहनगरे विश्वनन्दिनराज्ञभ्रातरि युवराज, आव०म० । आव०चू०

**विसाहा-** पुं० [विशाखा]

इन्द्राग्निदेवताके पञ्चतारे नक्षत्रभेदे, सम० ५ सम० । सूर० ।

अणुओ० । ठा० । ज्यो० । चंद० । जंबू० ।

**विसिद्ध-** पुं० [विशिष्ट]

प्रधाने, कल्प० १ अधि०२ क्षण० । उव० । जंबू० । रा० ।

मनोहरे, नाया० १ श्रु०१ अ० ।

रमणीये, कल्प० १ अधि० ३ । शोभने, कल्प० १ अधि० ३ ।

**विसिद्धतर-** त्रि० [विशिष्टतर]

तीव्रतरशुभाध्यवसायविशेषणोत्कृष्टतरेषु संयमस्थानकण्डकेषु  
वर्तमाने, बुह०६ उ० ।

**विसीयमाण-** त्रि० [विषीदत्]

संयमे, अवसीदति, आचा० १ श्रु० ६ अ०१ उ० ।

**विसुज्झमाण-** त्रि० [विसुज्झयमान]

विशुद्धिं गच्छति, भग० १३ श०१ उ० ।

**विसुज्झमाणय-** त्रि० [विसुज्झयमानक]

उपशमश्रेणिक्षपकश्रेणीं वा समारोहति, भग० २५ श०७ उ० । ठा०

**विसुणिय-** न० [विशून्य]

अतिशून्ये, पण्हा०१ अ०

**विसुत्तिया-** स्त्री० [विश्रोतसिका]

अपध्याने, आव०४ अ० ।

**विसुद्ध-** त्रि० [विशुद्ध]

निर्दोषतया संमते, उत्त०१ अ० ।

निष्कलङ्के, सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ० ।

निर्दोषे, उव० । जंबू० । नाया० ।

निर्मले, आव०म०१ अ० । रा० । संथा० ।

रागादिदोषरहिते, पण्हा०४ अ० ।

प्रशस्ते, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

विरहिते, उव० ।

विशुद्धिमुपगते, सम० ।

उत्पादनादोषरहिते, आचा०१ श्रु०९ अ०४ उ० ।

ब्रह्मलोकस्य स्वनामख्याते प्रस्तरे, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**विसुद्धकोडि-** पुं० [विसुद्धकोटि]

क्रीतकृताद्याहारदोषकोटौ, आचा० १ श्रु०८ अ०२ उ० ।

**विसुद्धजाइकुलवंस-** पुं० [विसुद्धजातिकुलवंस]

विशुद्धे जातिकुले यत्रैवविधेषु वंशेषु, कल्प०१ अधि०२ ।

**विसुद्धतरग-** पुं० [विसुद्धतरक]

वितिमिरतरके, अतिशयविशुद्धे, नं०

**विसुद्धभाव-** त्रि० [विसुद्धभाव]

विशुद्धः स्वपरसंसारनिस्तारणैकतानतयाऽवदातो भावोऽभिप्रायो

यस्य स विशुद्धभावः । वव० ३ उ०

**विसुयजस-** त्रि० [विश्रुतयजस]

विख्यातकृत्तौ, संथा० ।

**विसुयण-** न० [विसूचन]

ग्रन्थने, निसि०२ उ० ।

**विसुयाविणा-** देशी-त्रि० [विशुचीकृत]

विशोधिते, वव०६ उ० ।

**विसुव-** न० [विषुवत्]

समरात्रिदिनकालके अयनांशक्रमेण खेः तुलामेषराशिसंक्रान्ति-

भेदे, ज्यो० ।

**विसूइया-** स्त्री० [विषूचिका]

अजीर्णोद्भूते वमनाध्मानविरेचादिसद्योमृत्युकृद्भुजि, उत्त० १० अ०

अजीर्णविशेषे, उत्त० १० उ० ।

**विसूणिय-** त्रि० [विशून्य]

उत्कृते, सूय०१ श्रु०५ अ०२ उ० ।

**विसूणियंग-** त्रि० [विशूनिताङ्ग]

उत्कृताङ्गे, अपगतत्वचि, सूय०१ श्रु०५ अ०२ उ० ।

**विसूरण-** न० [खेदन]

चित्तखेदे, पण्हा०५ अ०

**विसेढि-** त्रि० [विश्रेणि]

विरुद्धा विदिगाश्रिता श्रेणिर्यत्र तद्विश्रेणि । भग० २ श० १ उ० ।

विरुद्धदिक्स्थिते, नं० ।

**विसेस-** पुं० [विशेष]

भेदे, पर्याये, व्यक्तौ, विशेषे । उत्त० । निसि० ।

पर्यायो विशेषो धर्म इत्यनर्थान्तरम् । ठा० ४ ठा० २ उ० । दश० ।

**विसेस-** पुं० [विश्लेष]

वियुक्तीकरणे, पृथक्करणे, विश्लेषे कृते सति यदवतिष्ठते तदपि

विश्लेषतो जातत्वाद् विश्लेषः । .....

आरोपणाच्छेदे वव० १ उ० ।

**विसेसण-** न० [विशेषण]

भेद, व्यावर्त्तने, । आव०म० । नं० ।

**विसेसणविसिस्सभाव-** पुं० [विशेषणविशेष्यभाव]

व्यावर्त्यव्यावर्तकत्वे, आव०म०१ अ० ।

**विसेसणु-** पुं० [विशेषज्ञ]

विशेषं जानातीति विशेषज्ञः । वस्त्ववस्तु विभागवेदिनि, बुह०४ उ०

**विसेसावस्सय-** न० [विशेषावश्यक]

आवश्यकग्रन्थस्य प्रथमाध्ययनभाष्यविवरणे, विशेषे ।

**विसोग-** त्रि० [विशोक]

विगतशोक, उत्त० ३२ अ० । आचा० ।

**विसोत्तिया-** स्त्री० [विस्रोतसिका]

इन्द्रियैर्मनसा संयमस्थानप्लावने, वव० ६ उ० ।

विश्रोतसिका द्विधा-द्रव्यतो, भावतश्च । .....

द्रव्यतः सारिणीपनीयं वहमानम् । .....

भावतः-यया तृणदिकचवरस्थानीयया चित्तविप्लुत्या निरुद्धे सति

चारित्रस्य विनाशो जायते ....

सा विश्रोतसिकेत्युच्यते । बुह० १ उ० ३ । आव०चू० ।

शङ्कायाम्, आचा०१ श्रु०१ अ०३ उ० ।

**विसोहइत्ता-** अव्य० [विशोध्य]

अपनीयेत्यर्थे, सूय०१ श्रु०६ अ० ।



**विसोहण- न० [विशोधन]**

त्यजने, आचा०२ श्रु०१ चू०३ अ०३ उ० ।  
अपगमने, आचा०२ श्रु०३ चू० ।  
बहुशः शोधने, ठा० ५ ठा० २ उ० ।  
व्रतानां पुनर्नवीकरणे, नाया०१ श्रु० १६ अ० ।  
अतिचारकलङ्कस्य शुभभावजलेन शोधने, ठा० ८ ठा० ३ उ०  
निर्मलत्वाधाने, सम० प्र० सम० ।

**विसोहणा- स्त्री० [विशोधना]**

प्रमार्जनायाम्, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**विसोहि- स्त्री० [विशोधि]**

पिण्डचरणादीनां निर्दोषतायाम्, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।  
कर्ममलिनस्यात्मनो विशुद्धिहेतुत्वाद् विशोधिः । विशेष० ।  
आवश्यक, अणुओ० ।  
प्रतिक्रमणे, आव०चू०४ अ० ।  
पडिक्रमणं ति वा १, पडियरणं ति वा २, पडिहरणं ति वा ३,  
वारणं ति वा ४, नियती ति वा ५, निंदति वा ६, गरिहति वा ७,  
विसोहि ति वा ८ । एतेसिं एगट्टियाणं । आव०चू०४ अ० ।

**विसोहिकोडि- स्त्री० [विशोधिकोटी]**

अल्पतरदोषदुष्टायामुद्गमादिदो-षकोटौ, दश०५अ०१ उ० । निसि०

**विसोहिट्टाण- न० [विशोधिस्थान]**

कर्ममलापनयनस्थाने, दश०९ अ०१ उ० ।

**विसोहित्तए- अव्य० [विशोधयितुम्]**

उच्चारदिखरणितोपकरणादेः प्रक्षालनं कर्तुमिति ठा० २ ठा० १  
पूयाद्यपनेतुमित्यर्थे, विपा० १ श्रु०८ अ० ।

**विसोहिय- त्रि० [विशोधित]**

विविधमनेकप्रकारं शोधितो विशोधितः । कुमार्गप्ररूपणापनयन-  
द्वारेण निर्दोषतां नीत, सूय०१ श्रु०१४ अ० ।

**विसोहिय- अव्य० [विशोध्य]**

अपनीयेत्यर्थे, आचा०२ श्रु०१ चू०१ उ० ।

**विसोहिया- स्त्री० [विशोधिका]**

विशुद्धिकारिण्याम्, सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ० ।

**विस्स- त्रि० [विश्व]**

सर्वशब्दार्थे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।  
ऋषभदेवस्य षट्सप्ततितमे पुत्रे, कल्प०१ अधि० ७ ।  
स्वनामख्याते देवगणे, पूर्वाषाढानक्षत्रस्य विश्वेदेवा देवताः । चंद०  
१० पाहु० । अणुओ० । जंबू० ।

**विस्सउर- न० [विश्वपुर]**

स्वनामख्याते नगरभेदे, अथ विश्वपुरे धरणेन्द्रो राजा महेन्द्रः  
पुत्रः । गच्छा० २ अधि० ।

**विस्सओमुह- न० [विश्वतोमुख]**

प्रतिसूत्रं चरणानुयोगाद्यनुयोगचतुष्टयव्याख्याक्रमे, 'धम्मो मंगल-  
मुक्किट्ठ'मित्यादिश्लोके चत्वारोऽनुयोगा व्याख्यायन्ते । अनन्तार्थ-  
त्वाद् वा अनेकमुखे, अणुओ० । विशेष० । आव०म० ।  
सर्वतोऽधिकृतार्थप्रयच्छक, बुह०१ उ०१ ।

**विस्संभ- पुं० [विश्रम्भ]**

विश्वासे, वव०३ उ० ।

**विस्संभघाइ- त्रि० [विश्रम्भघातिन्]**

विश्वासघातक, नाया० १ श्रु० २ अ०

**विस्संभण- न० [विश्रम्भण]**

विश्वासे, आचा० १ श्रु०८ अ०६ उ० ।

**विस्संभर- पुं० [विश्रम्भर]**

भुजपरिसर्पभेदे, सूय०२ श्रु०३ अ० । नं० । पन्न० ।

**विस्संभिय- पुं० [विश्वभूत्]**

बिन्दुरलाक्षणिकः विश्वं जगत् विभर्तिपूरयति क्वचित्कदाचिदु-  
त्पत्त्या सर्वजगद्व्यापनेनेति विश्वभूत् । जीवे, एकैकेन जीवेन  
विश्वस्मिन्नेकशो भ्रान्तत्वात्, उत्त०३ अ० ।

**विस्सकम्म- पुं० [विश्वकर्मन्]**

देवत्वष्टरि ऋषभदेवस्य चतुर्थे पुत्रे, कल्प०१ अधि०७ क्षण ।  
स्वनामख्याते नटभेदे, पिंड० ।

**विस्सभूइ- स्त्री० [विश्वभूति]**

वीरजिनसत्कषोडशभवीयजीवविश्वनन्दिभ्रातृविशाखनन्दियुवराज  
पुत्रे, कल्प०१ अधि०२ क्षण० । आव०म० । आव०चू० ।

**विस्सर- त्रि० [विस्वर]**

विकृतशब्दे, पण्हा०१ अ०  
विरूपशब्दस्वरूपे, नाया०१ श्रु०९ अ० ।

**विस्सरूव- त्रि० [विश्वरूप]**

नानाविधे, विशेष० ।

**विस्सवाइ- पुं० [विश्ववादिन्]**

सर्ववादिनि, वीरजिनेन्द्रवादिनामन्य-तमे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**विस्ससेण-१ पुं० [विश्वसेन]**

ऋषभदेवस्य चतुःषष्टिमे पुत्रे, कल्प०१ अधि०७ ।  
जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे जातस्य पञ्चमचक्रवर्तिनः पितरि, सम० ।

**विस्ससेण-२ पुं० [विश्वसेन]**

अहोरात्रस्यैकोनविंशतितमे मुहूर्त्ते, सूर० १० पाहु० ।

**विस्साणण- न० [विश्राणन]**

दाने, आव०म०१ अ० । आचा० ।

**विस्साम- पुं० [विश्राम]**

चित्तस्याश्वासने, ठा० ४ ठा० ३ उ० ।

**विस्सामणा-** स्त्री० [विश्रामणा]

श्रमापनयनसंबाधनादिरूपायां शीतोदकादिना । निसि०३ उ० ।

**विस्सुय-** त्रि० [विश्रुत]

विख्याते, संघा० । उव० ।

**विस्सुयकित्ति-** त्रि० [विश्रुतकीर्तिक]

प्रतीतख्यातिके, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

**विस्सुयजस-** त्रि० [विश्रुतयशस्]

ख्यातकीर्त्ती, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**विह-** पुं० [विह]

अनेकाहगमनीये पथि, आचा०२ श्रु०१ चू०३ अ०१ उ० ।

अध्वनि, निसि० १ उ० ।

अटवीप्राये दीर्घे अध्वनि, आचा०२ श्रु०१ चू०३ अ०३ उ० ।

**विह-** न० [विध]

विधीयते क्रियते कार्यजातमस्मिन्निति । आकाशे । भग० २० श० २

**विह-** न० [विहायस्]

विशेषेण हीयते तदिति विहायः । आकाशे, भग०२० श०२ उ० ।

**विहंगम-** पुं० [विहङ्गम]

विहायसा गच्छतीति विहङ्गमः । पक्षिणि, सूय०१ श्रु०३ अ०४ उ०

**विहग-** पुं० [विहग]

पक्षिणि, अणुओ० । वव० । तं० । । कल्प० । ठा० । रा० ।

विहग इव सर्वतो विप्रमुक्तः निष्परिग्रह इत्यर्थः । पण्हा०५ अ० ।

**विहगगङ्गाम-** न० [विहायोगतिनामन्]

विहायोगतिनिबन्धनं नामकर्म । नामकर्मभेदे, यतः शुभेतरगमन-  
युक्तो भवति । सम०२ सम० ।

**विहगगङ्गपञ्चजा-** स्त्री० [विहगगतिप्रव्रज्या]

पक्षिन्यायेन परिवारादिवियोगेनैकाकिनो देशान्तरगमनेन च या  
सा विहगगतिप्रव्रज्या । प्रव्रज्याभेदे, ठा० ४ ठा० ३ उ० ।

**विहत्तु-** अव्य० [विहत्य]

नाशयित्वेत्यर्थे । सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।

**विहत्थि-** स्त्री० [वितस्ति]

विस्तृताङ्गुलिहस्ते, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।

‘बारस अंगुलाइं विहत्थी’ भग० ६ श० ७ उ० ।

द्वादशाङ्गुलानि वितस्तिः । द्वौ पादौ वितस्तिः । अणुओ० । जंबू० ।

**विहम्ममाण-** त्रि० [विहन्म्यान]

विविधं परीषहोपसर्गैर्हन्यमाने, आचा०१ श्रु०६ अ०५ उ० ।

**विहम्मेमाण-** त्रि० [विधर्मयत्]

स्वाचारभ्रष्टान् कुर्वति, विपा०१ श्रु० १ अ० ।

**विहय-** त्रि० [विहत]

विशेषतस्ताडिते, पण्हा०१ अ०

**विहरण-** न० [विहरण]

विचरण, पण्हा०४ अ०

क्रीडने, विजनत्वे, विपा० १ श्रु०६ अ० ।

**विहरंत-** त्रि० [विहरत्]

निष्प्रतिबन्धकत्वेनानियतं विचरति, उत्त०२ अ० ।

विहरंता वि य दुविहा, गच्छगया गच्छनिगया चैव ओह० ।

**विहयपव्वज्जा-** स्त्री० [विहतप्रव्रज्या]

दारिद्र्यादिभिररिभिर्वा विहतस्य प्रव्रज्यायाम्, ठा० ४ ठा० ४ उ०

**विहरियव्व-** त्रि० [विहर्त्तव्य]

साधुना चरितव्ये, पण्हा०३ अ० ।

**विहरेमाण-** त्रि० [विहरत्]

विहारेण ग्रामादिषु अवतिष्ठमाने, रा० ।

**विहल-** त्रि० [विफल]

अप्राप्तेच्छितार्थे, पण्हा०३ अ०

**विहल्ल-** पुं० [विहल्ल]

मगधराजश्रेणिकस्य चेल्लणागर्भजे हल्ले न सह यमलजे पुत्रे,

भग० ७ श० ३ उ० । आव० । आव० । आव०चू०

**विहवण-** न० [विधवन]

विनाशे, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**विहवा-** स्त्री० [विधवा]

धवो मनुष्यः स विनष्टो यस्या इति समासः ओह० ।

मृतपतिकायां नार्याम्, वव० ३ उ० । नाया० ।

**विहसिय-** न० [विहसित]

अर्द्धहसितादौ, नाया०१ श्रु०९ अ० ।

**विहा-** स्त्री० [विधा]

अङ्ग प्रत्ययः । नं० ।

विधाने, भेदे, विशे० ।

प्रकारे, अणुओ० । सूय० । आचा० । ठा० । नाया० ।

**विहाड-** त्रि० [विघाट]

विकटे, वव० १ उ० ।

**विहाडग-** त्रि० [विघाटक]

चूर्णके, सूय० १ श्रु० ४ अ० १ उ० ।

**विहाडिय-** [देशी]

विनाशिते, जीवा० १ प्रति० ।

**विहाण-** न० [विधान]

भेदे, आव०४ अ० ।

प्रकारे, आव०४ अ० । विशे० । निसि० । आचा० । पण्हा० ।

सम्पादने, ठा० ।

कृष्णो नील इत्यादिप्रतिनियतो वर्णविशेष इति । जीवा०१ प्रति० ।

**विहान-** न० ।

परित्यागे, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

**विहाणग-** न० [विधानक]

भेदे, पण्हा०१ आश्र०द्वार ।

**विहाणाएस-** पुं० [विधानादेश]

भेदप्रकारे, भग० २५ श० ४ उ० ।

समुदितानामप्येकैकस्यादेशने, भग० २५ श० ३ उ० ।

**विहाय-** अव्य० [विहाय]

विमुच्येत्यर्थे, । त्यक्त्वेत्यर्थे सूय० १ श्रु० १४ अ० ।

**विहायम्-** न० ।

आकाशे, उव० ।

**विहायगइ-** स्त्री० [विहायोगति]

स्पृशद्गत्यादिके गतिभेदे, भग० ८ श० ७ उ० ।

**विहायस-** पुं० [विहायम्]

मगधराजश्रेणिकमहाराजस्य चेल्लणादेवीगर्भसम्भूते स्वनाम-  
ख्याते राज्ञि, अनुत्त० ।

**विहार-** पुं० [विहार]

विहरणं विहारः । मनुष्यत्वेनावस्थाने, उत्त० १४ अ० ।

क्रीडायाम्, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

एकरात्रादिना विचित्रक्रीडायाम्, पण्हा० १ अ० । सूय० । ठा० ।

विचरणे, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

मुनिचर्यायाम्, गच्छा०१ अधि० । वव० ।

मासकल्पादौ, आव०४ अ० । सूय० ।

**विहारकप्-** पुं० [विहारकल्प]

विहरणं विहारो वर्तनं तस्य कल्पो व्यवस्था स्थविर कल्पादी-  
नामुच्यते यत्र ग्रन्थेऽसौ विहारकल्पः । उत्कालिकश्रुतभेदे, न० ।

**विहारगमण-** न० [विहारगमन]

विहरणं-क्रीडनं विहारस्तेन गमनम् । उद्यानादौ क्रीडया गमने,  
सूय० १ श्रु० ३ अ० २ उ० ।

**विहारघरय-** न० [विहारगृहक]

स्वनामख्याते उद्याने, यत्र वासुपूज्यो जिनो निष्क्रान्तः । आव०म०

**विहारचरिआ-** स्त्री० [विहारचर्या]

विहाररूपायां साधुचर्यायाम्, दश ०२ अ० ।

**विहारजत्ता-** स्त्री० [विहारयात्रा]

उद्यानक्रीडायाम्, उत्त० २ अ० ।

**विहारभूमि-** स्त्री० [विहारभूमि]

स्वाध्यायभूमौ, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०१ उ० । बुह० । निसि० ।

भिक्षानिमित्तभ्रमणभूमौ, वव०४ उ० ।

जिनचैत्यगमने, कल्प०३ अधि०९ क्षण ।

**विहारवत्तिया-** स्त्री० [विहारप्रतिज्ञा]

विहरिष्यामीति गमनप्रतिज्ञायाम् आचा०२ श्रु०१ चू०३ अ०१ उ० ।

**विहारि-** त्रि० [विहारिन्]

विहरतीत्येवंशीलो । विहरणशीले, आचा०१ श्रु०५ अ०४ उ० ।

**विहि-** पुं० [विधि]

विधानं विधिः । प्रकारे, आव०६ अ० । नाया० । दश० ।

भेदे, वव०५ उ० । उवा० ।

सम्यग्ज्ञानदर्शनयोर्योगपद्येनाप्तौ, सूय०१ श्रु०११ अ० ।

उपोद्धाते, आव०१ अ० ।

प्ररूपणे, आव०म०१ अ० ।

अनुष्ठाने, पण्हा०३ अ०

अनुज्ञायाम्, आव० ४ अ० ।

न्यायः स्थितिर्मर्यादा विधानमित्येकार्थाः । वव०७ उ० । आव०म०

विस्तरे, रचनायाम्, निसि० १ उ० ।

सर्वकौशले, आव०म०२ अ० ।

**विहिंस-** त्रि० [विहिंस्य]

विहिंस्यन्त इति विहिंस्याः । विधात्येषु, पण्हा०२ अ०

**विहिंसण-** न० [विहिंसन]

विविधव्यापादने, पण्हा०१ अ०

**विहिंसमाण-** त्रि० [विहिंसन्]

विविधैरुपायैर्हिसति, आचा०१ श्रु०५ अ०५ उ० ।

**विहिंसा-** स्त्री० [विहिंसा]

विविधैरुपायैर्हिसायाम्, आचा०१ श्रु०५ अ०४ उ० ।

जन्तुघातादौ, अणुओ० ।

विघाते, पण्हा०१ आश्र०द्वार

**विहिंसिय-** त्रि० [विहिंसित]

हिंसां प्राप्तं हिंसितम्, विरूपं हिंसितं विहिंसितम् । असम्यङ् -  
निर्जीवीकृते, सूय० २ श्रु०१ अ० ।

**विहिभुत्त-** न० [विधिभुक्त]

एषणीयं गृहीत्वा पश्चात्पण्डल्यां कृतप्रतरगच्छे सिंहखादितेन  
विधिना वा भुक्ते, आव०६ अ० ।

**विहिय-** त्रि० [विहित]

आचरिते, संथा० ।

चेष्टिते, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

अनुष्ठाने, नपुं० । आव०३ अ० ।

**विहियतव-** त्रि० [विहिततपस्]

विहितं दत्तं गुरुभिस्तपोरूपं प्रायश्चित्तं यस्येति । गुरुदत्ततपोऽ-  
नुष्ठातरि, जीत० ।

**विहिवाय-** पुं० [विधिवाद]

‘अग्निहोत्रं जुहुयात्स्वर्गकामः’ इत्यादिके चोदनावाक्ये, आव०म०१

**विहृण-** न० [विधुन]

वीजनके, बुह० ४ उ० । दशा० । सूय० ।

**विहृणिय-** अव्य० [विधूय]

कल्पयित्वेत्यर्थे, सूय० १ श्रु०२ अ०१ उ० ।

अपनीयेत्यर्थे, सूय०२ श्रु०६ अ० । आचा० ।

विध्वस्येत्यर्थे, ठा० ३ ठा० ३ उ० । सूय० ।

**विहृय-** त्रि० [विधूत]

प्रकम्पिते, आव०२ अ० ।

विविधमनेकप्रकारं धूतमपनीतम् । आचा०१ श्रु०३ अ०३ उ० ।

**विहृयकप्-** त्रि० [विधूतकल्प]

विधूतः कल्प आचारो यस्याऽसौ विधूतकल्पः । अपनीताचारे,

आचा०१ श्रु०३ अ०३ उ० ।

**विहुर-** न० [विधुर]

इष्टजनवियोगे, नाया०१ श्रु०२ अ० । आव० ।

**विहूण-** त्रि० [विहीन]

रहिते, नि० ।

**विहेज्ज-** त्रि० [विधेय]

विधिविषये, सूय०१ श्रु०१३ अ० ।

**विहेडंत-** त्रि० [विहेटयत्]

विशेषेण हिंसति, उत्त०१२ अ० ।

**विहेढय-** त्रि० [विहेठक]

विविधमनेकप्रकारं, हेठकोबाधकः । सूय०१ श्रु०८ अ० ।

**विहेलय-** पुं० [विभेलक]

ग्रामाकग्रामे प्रतिमास्थितस्य वीरजिनेन्द्रस्य पूजके स्वनामख्याते यक्षे, आव०चू०१ अ० ।

**विहोड-** धा० [तडि]

आघाते, जुगुप्सनीये, बुह०१ उ०२ ।

**वीइ-** स्त्री० [वीचि]

महाकल्लोले, उव० । भग० ।

ऊर्मौ, आव०४ अ० । ठा० ।

ह्रस्वकल्लोले, विविक्तत्वे, विवेचनाद्विविक्तस्वभावाद् वीचिः ।

आकाशे, भग० २० श० २ उ० ।

**वीइंगाल-** न० [वीताङ्गार]

वीतोगतोऽङ्गारो रागो यस्मात्तद् वीताङ्गारम् । अङ्गाराख्यग्रासैषणा-  
दोषरहिते भिक्षाभेदे, भग० ७ श०१ उ० ।

**वीइकंत-** त्रि० [व्यतिक्रान्त]

उल्लङ्घितवति, भग०१० श०३ श० ।

**वीइक्रमइत्ता-** अव्य० [व्यतिक्रमय्य]

नीत्वेत्यर्थे, भग०७ श०१ उ० ।

**वीइपंथ-** पुं० [वीचिपथिन्]

कषायवतो मार्गे, भग० १० श०२ उ० ।

**वीइधूम-** न० [वीतिधूम]

द्वेषरूपदोषरहिते, भग० ७ श०१ उ० ।

**वीइभय-** न० [वीतिभय]

सिन्धुसौवीरेषु उदायननृपपालिते नगरे, भग० १३ श०६ उ० ।

आव०चू० । आव० । निसि० ।

**वीइवइत्ता-** अव्य० [व्यतिव्रज्य]

व्यतिक्रम्येत्यर्थे, भग०३ श०७ उ० ।

**वीइवयण-** न० [व्यतिव्रजन]

व्यतिक्रमे, उल्लङ्घने, भग० ।

**वीचिदव्व-** न० [वीचिन्द्रव्य]

वीचिर्विवक्षितद्रव्याणां तदवयवानां च परस्परेण पृथग्भावो, तत्र वीचिप्रधानानि द्रव्याणि वीचिद्रव्याणि । एकादिप्रदेशन्यूनेषु द्रव्येषु भग० १४ श०६ उ० ।

यावता द्रव्यसमुदायेनाहारः पूर्यते स एकादिप्रदेशोनो वीचि-  
द्रव्याण्युच्यते । भग०१४ श०६ उ० ।

**वीचिवेग-** पुं० [वीचिवेग]

कल्लोलवेगे, व्या०१ उ० ।

**वीण-** स्त्री० [वीणा]

विपञ्चाम्, पण्हा०५ अ० । जीवा० । आचा०

**वीणिया-** स्त्री० [वीणिका]

वाद्यविशेषे, । आचा०२ श्रु०२ चू०४ अ० ।

**वीतगिद्धि-** स्त्री० [वीतगृद्धि]

विगता गृद्धिर्विषयेषु यस्य स वीतगृद्धिः । आशंसादोषरहिते, सूय०  
१ श्रु० ८ अ० ।

**वीभावण-** न० [विभापन]

भयोत्पादने, निसि० ।

**वीमंस-** पुं० [विमर्ष]

विमर्षणं विमर्षः । अपायात्पूर्वे ईहायाश्चोत्तरे प्रायः शिरःकरण-  
यनादयः पुरुषधर्मा इह घटन्ते इति । पुरुषोऽयमिति प्रत्यये,  
विशे० । आव०म० । न० ।

**वीमंस-** पुं० [विमर्श]

इदमित्यमेव घटते इत्थं वा तद्भूतमित्यमेव वा तद्भावीति  
यथावस्थितवस्तुस्वरूपनिर्णये, न० ।

चिन्तात ऊर्ध्वं क्षयोपशमविशेषात् स्पष्टतरं सद्भूतार्थविशेषा-  
भिमुखे एव व्यतिरेकधर्मपरित्यागतोऽन्वयधर्मापरित्यागतोऽन्व-  
यधर्मविमर्शनं विमर्शः । ईहायाम्, न० । आव०चू० । सूय० ।

किमेष साधुः शक्यः क्षोभयितुं नवेत्येवमादिकविकल्पे, बुह० १

**वीमंसा-स्त्री० [मीमांसा]**

मातृमिच्छा मीमांसा । प्रमाणजिज्ञासायाम् विशेष० । नं० । आव०म०  
परीक्षायाम्, निसि० १ उ० ।  
शैक्षकादिपरीक्षायाम्, 'वीमंसा सेहमाईणं' ठा० १० ठा० १ उ०  
पर्यालोचनात्मको मीमांसा वा मातुं परिच्छेतुमिच्छा सा । सूय० ।  
मीमांसा-शिष्याभिप्रायविचारणा । बृह० ।  
विमर्शनं विमर्शः, ईहाया उत्तरः, प्रायः शिरः कण्डूयनादयः पुरुष-  
धर्मा घटन्त इति संप्रत्ययो विमर्शः । आव० ।

**वीय- त्रि० [वीत]**

विगते, ठा० २ ठा० १ उ० ।  
अपगते, विशेष० ।

**वीयण- न० [वीजन]**

वंशादिमये अन्तर्ग्राह्यदण्डे वायूदीरके, भग० ९ श० ३३ उ० । नाया०

**वीयण- न० [व्यजन]**

चामरादिना वायुकरणे, दश० ४ अ० । सूय० आचा० । पण्हा० ।

**वीयभय- न० [वीतभय]**

उदयनराजपालित सिन्धुसौवीरदेशप्रधाननगर, पन्न० । आव०म० ।  
आव० ।  
उदयनदेवदत्तागन्धारश्राद्धवास्तव्यं नगरम् । उत्त० ९६ ।

**वीयमोह- पुं० [वीतमोह]**

मुह्यतेऽनेनेति मोहः वेदनीयं कर्म । आव०म० ।

**वीयराय- पुं० [वीतराग]**

वीतो रागो मायालोभकषायोदयरूपो यस्य स वीतरागः । ठा० ।  
सर्वज्ञे, निसि० २० उ० ।

**वीयरागदंशणारिय- पुं० [वीतरागदर्शनार्य]**

वीतरागदर्शनार्ये, पन्न० १ पद ।

**वीयरागया- स्त्री० [वीतरागता]**

वीतो रागो यस्मात्स वीतरागस्तस्य भावो वीतरागता । रागद्वेषा-  
भावे, उत्त० २९ अ० ।  
रागद्वेषनिवारणे, उत्त० २९ अ० ।

**वीयरागसुय- न० [वीतरागश्रुत]**

सरागव्यपोहेन वीतरागस्वरूपं प्रति पाद्यते यत्राध्ययेन तद्वीत-  
रागश्रुतम् । वीतरागस्वरूपप्रतिपादकेऽध्ययेन, नं० ।

**वीयसोग- पुं० [वीतशोक]**

पञ्चसप्ततितमे महाग्रहे, कल्प० १ अधि० । ठा० । सूय० । आव०म० ।

**वीयसोगा- स्त्री० [वीतशोका]**

जम्बूद्वीपेऽपरविदेहे सलिलावतीविजयराजधान्याम्, ठा० ७ ठा०  
३ उ० । नाया० । आव०म० ।  
सलीलावतीविजये नगरी । नाया० ।

**वीर-१ पुं० [वीर]**

कषायादिशत्रुसैन्यजयाद् । विशेष० ।  
विशेषत ईरयति क्षिपति तिरस्करोति अशेषाण्यति कर्माणीति  
वीरः । अथवा-  
विशेषत ईरयति शिवपदं प्रति भव्यजन्तून् गमयतीति वीरः ।  
यदि वा-विशेषतः शिवपदं स्वयमियतिगच्छतीति वीरः ।  
अथवा 'ट्ट' विदारणे, विदारयति कर्मरिपुसंघट्टमिति वीरः ।  
अनन्यानुभूतमहातपःश्रिया वा विराजत इति वीरः ।  
अन्तरङ्गमोहमहाबलनिर्दलनार्थमनन्तं तपोवीर्यं व्यापारयतीति वा  
वीरः । विशेष० । सूय० । आव०म० ।  
'ईर' गतिप्रेरणयोरित्यस्य विपूर्वस्याऽजन्तस्य विशेषेण ईरयति  
कर्म गमयति याति चेह शिवमिति । आव० ४ अ० । पन्न० । गच्छा०  
घनघातिकर्मसंघातविदारणाऽनन्तरं प्राप्तातुलकेवलश्रिया विराजत  
इति वीरः । तीर्थकृत्, आचा० १ श्रु० १ अ० ४ उ० ।  
कर्मविदारणसमर्थे, सूय० १ श्रु० २ अ० १ उ० । आचा० ।  
परीषहोपसर्गकषायसेनाविजयात् । आचा० १ श्रु० १ अ० ३ । सूय०  
संग्रामतो वा धीरे, नाया० १ श्रु० १ अ० । भग० । सूय० ।  
परानीकभेदिनि सुभटे, सूय० १ श्रु० १ अ० । भग० । सूय० ।  
औरसबलवति, वव० ३ उ० ।  
वीरयति-कषायान् प्रति विकारमतीति वीरः । रा० । आव०म० ।  
विशेषेणेयति प्रेरयत्यष्टप्रकारं कर्माषड्वर्गं वेति वीरः । शक्ति-  
मति, आचा० १ श्रु० २ अ० ६ उ० ।  
विशेषेण ईरयति-गमयति स्फोटयति कर्म प्रापयति वा शिवमिति  
वीरः । अथवा-'ईर' गतौ अविशेषेण-अपुनर्भावेन ईरयति  
शिवमिति वीरः । नं० । आचा० ।

**वीर-२ पुं० [वीर]**

शुनकद्वितीये शस्त्राद्यपेक्षारहिते मृगयाखेलक, बृह० १ उ० ।

**वीर-३ पुं० [वीर]**

चतुर्थदेवलोकस्थे विमानभेदे, । सम० ६ सम० ।

**वीर-४ पुं० [वीर]**

तगरायां नगर्यां पुष्पमित्रादिशिष्यकाष्ठकाचार्यस्य शिष्ये, वव० ३

**वीर-५ पुं० [वीर]**

अस्यामवसर्पिण्यां भरतक्षेत्रे जाते चरमतीर्थकरे, आतु० । सम०

**वीरगय-१ पुं० [वीराङ्गद]**

बलदेवपुत्र रेवतीगर्भसम्भूत निषधकुमारस्य पूर्वभवजीवे, निर० ।

**वीरगय-२ पुं० [वीराङ्गद]**

चेटकराजस्य रथिन, आव० ४

**वीरकण्ह- पुं० [वीरकृष्ण]**

श्रेणिकमहाराजभार्यायाः वीरकृष्णायाः पुत्रे, निर० ।



**वीरकण्हा-** स्त्री० [वीरकृष्णा]

श्रेणिकमहाराजभार्यायां वीरकृष्णकुमारमातरि, नि० ।

**वीरकूड-** न० [वीरकूट]

चतुर्थदेवलोकस्थे विमानभेदे, सम० ४ सम०

**वीरग-** पुं० [वीरक]

द्वारवत्यां वासुदेवभक्ते कौलिके, आव० ३ अ०

**वीरघोस-** पुं० [वीरघोष]

वीरजिनविहते मोराकसन्निवेशे कर्मकर, आव० म० १ । आव० चू० ।

**वीरजिण-** पुं० [वीरजिन]

जयति जगदेकदीपः प्रकटितनिःशेषभावसद्भावः । कुमतपतङ्ग-  
विनाशी, श्रीवीरजिनेश्वरो भगवान् । आव० म० १ अ०

**वीरण-** पुं० [वीरण]

तृणवनस्पतिकायभेदे, यन्मूलमुशीरं भवति । आचा० १ श्रु० १ अ०  
५ उ० । सूय० ।

म्लेच्छभेदे, पत्र० १ पद ।

**वीरतव-** न० [वीरतपस्]

वीरप्रभोश्छाद्यस्थिके तपसि, आव० म० १ अ० । आव० ।

**वीरत्थव-** पुं० [वीरस्तव]

महावीरस्वामिगुणकीर्तनप्रतिबद्धेष्वेसूत्रकृताङ्गाध्ययने, सूय० १  
श्रु० ६ अ० । पण्हा० । आव० चू० । आव०

**वीरदेवा-** स्त्री० [वीरदेवा]

सुधर्मस्वामिनो मातरि, आव० चू० १ अ० ।

**वीरपुर-** न० [वीरपुर]

नेमिनाथस्य तीर्थकरस्य प्रथमभिक्षालाभ स्थाने, आव० म० १ अ० ।

**वीरभद्र-१** पुं० [वीरभद्र]

कनकपुरादौ पूज्यमाने यक्षभेदे, विपा० २ श्रु० ६ अ० । आव० ।

**वीरभद्र-२** पुं० [वीरभद्र]

पार्श्वनाथस्य सप्तमे गणधरे, सम० ८ सम० कल्प० । ठा० ।

**वीरभद्र-३** पुं० [वीरभद्र]

आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णकर्तारिवीरजिनसाधौ, आतु० ।

**वीररवि-** पुं० [वीररवि]

वीरजिनादित्य, 'उद्बोधो विदधेऽब्जानामिव भव्यशरीरिणाम् ।  
गवां विलासैर्येनाऽसौ, जीयाद् वीररविश्चिरम् । गच्छा० १ अधि० ।

**वीररस-** पुं० [वीररस]

शूर वीर विक्रान्तौ इति वीरयतिविक्रामयति त्यागतपोवैरिनिग्रहेषु  
प्रेरयति प्राणिनमित्युत्तमप्रकृतिपुरुषचरित्रश्रवणादिहेतुसमुद्भूते  
दानाद्युत्साहप्रकर्षात्मके काव्यरसभेदे, अणुओ० ।

**वीरल्लसउण-** पुं० [वीरल्लसकुन]

उलूकजातीये हुलापकपक्षिणि, बुह० ३ उ० । निसि० ।

**वीरवयण-** न० [वीरवचन]

भगवन्महावीरवर्द्धमानस्वामिप्रवचने, आव० ६ अ० ।

**वीरवर-** पुं० [वीरवर]

वीरेषु वरः प्रधानो वीरवरः । वर्द्धमानस्वामी, सूर० २० । पण्हा०

**वीरवरनामधिज-** पुं० [वीरवरनामधेय]

वीरवरेति प्रशस्तनामनि, पण्हा० १ अ०

**वीरवलय-** न० [वीरवलय]

वीरत्वसंसूचके बलये, कल्प० १ अधि० ३ ।

सुभटो हि कश्चिदन्योऽप्यस्ति वीरव्रतधारी यदसौ मां विजित्य  
मोचयत्वेतानि वलयानीति स्पर्द्धयन् यानि परिदधाति तानि  
वीरवलयानीत्युच्यन्ते । नाया० १ श्रु० १ अ० । उव० ।

**वीरसासन-** न० [वीरशासन]

वर्तमानतीर्थे, न० ।

**वीरसूर-** पुं० [वीरशूर]

वीराणां मध्येऽत्यन्तसाहसधने शूरे, पण्हा० ४ अ० ।

**वीरसूरि-** [वीरसूरि]

भक्तामरकर्तुं 'मानतुङ्ग' सूरौ, गच्छा० ३ अधि० ।

**वीरसेण-** पुं० [वीरसेन]

सम्यक्तत्त्वप्राधान्ये दृष्टान्ततयोक्ते उदयसेनराज्ञोऽन्धे पुत्रे, आचा० १  
श्रु० ४ अ० १ उ० ।

यदुकुलप्रसिद्धे वीरे आव० चू० १ अ० । आव० म० । अंत० ।

**वीरसेणिय-** न० [वीरसैनिक]

चतुर्थदेवलोकस्थविमानभेदे, सम० ६ सम० ।

**वीराइपुत्तमाउ-** स्त्री० [वीरादिपुत्रमातु]

अणहिलपट्टननगरे वीरादिकानामनेकेषां पुत्राणां जनन्यां  
वसुन्धर्यां श्राविकायाम्, जीवा० १ प्रति० ।

**वीरायमाण-** त्रि० [वीरायमाण]

वीरमिवात्मानमाचरति, आचा० १ श्रु० ६ अ० ४ उ० ।

**वीरासन-** न० [वीरासन]

सिंहासनोपविष्टस्य भुविन्यस्तपादस्यापनीतसिंहासनस्येवावस्थाने  
आचा० १ श्रु० १ अ० ।

वीरासनं नाम यथा सिंहासने उपविष्टो भूयस्तपाद आस्ते तथा  
तस्यापनयने कृतेऽपि सिंहासने इव निविष्टे मुक्तजानुके इव  
निरालम्बनेऽपि यदास्ते । दुष्करं चैतत्, अत एव वीरस्य  
साहसिकस्यासनं वी-रासनमित्युच्यते । बुह० ५ उ० । नाया० ।  
सूय० । आचा० । ठा०

**वीरासणिय-** पुं० [वीरासनिक]

वीरासनमुक्तं तदस्यास्तीति वीरास-निकः । सूय० २ श्रु० २ अ० ।  
सिंहासने निविष्ट इवासीने, ठा० ७ ठा० । दशा० । बुह० । भग०

**वीरिय- न० [वीर्य]**

विशेषण ईर्यते चेष्ट्यतेऽनेनेति वीर्यम् । उक्त० ३३ अ० ।  
सामर्थ्यविशेष, उक्त० ३ अ० ।  
शक्ति, अर्थक्रिया सामर्थ्ये, मनसः स्वविषयज्ञानोत्पादने, सूय० २  
श्रु० ५ अ० । आव० म० ।  
आन्तरोत्साहे, चंद० २० पाहु० । आव० चू० ।  
जीवाश्रिते, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।  
पराक्रमे, कल्प० १ अधि० ६ क्षण । पंच० भा० । आव० चू० ।  
योगो वीर्यं शक्तिरुत्साहः पराक्रम इति पर्यायाः । आव० चू० ।  
आव० । जीवा० । उक्त० ।  
व्यवसाये, पंच० चू० १ कल्प० । उव० । जंबू० ।  
उत्साहातिरेके, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।  
औरस बले, सूय० १ श्रु० ६ अ० ।  
जीवबले, भग० ७ श० ७ उ० । ठा० ।

**वीरियंतराय- न० [वीर्यान्तराय]**

यदुदयवशात्सत्यपि नीरुजि शरीरे यूनोऽल्पप्राणता भव । सम० ।

**वीरियता- स्त्री० [वीर्यता]**

वीर्ययोगाद् वीर्यः प्राणी तद्भावो वीर्यता । अथवा-वीर्यमेव  
प्रत्ययाद् वीर्याणां वा भावो वीर्यता । वीर्यभावे, भग० १ श० ४ उ० ।

**वीरियपवाय- न० [वीर्यपवाद]**

सकर्मंतराणां जीवानामजीवानां च वीर्यं प्रवदतीति वीर्यप्रवादम् ।  
चतुर्दशपूर्वाणां तृतीयपूर्वे, तस्य पदपरिमाणं सप्ततिदश सहस्राणि  
। न० । सम० ।

**वीरियबल- न० [वीर्यबल]**

वीर्यमेव बलं वीर्यबलं यद्वशात् गमनागमनादिकासु विचित्रासु  
क्रियासु वर्तते यच्चापनीय सकलक लुषपटलमनवरतानन्दभाजनं  
भवति । तथाभूते बलभेदे, स्था० १० ठा० ३ उ० ।

**वीरियलक्षण- न० [वीर्यलक्षण]**

लक्षणभेदे, विशेष० । आव० म० ।

**वीरियसंपण्ण- त्रि० [वीर्यसंपन्न]**

वीर्यमुत्साहातिरेकस्तेन सम्पन्नः । ठा० ८ ठा० ३ उ० ।  
सपराक्रमे, कल्प० १ अधि० ५ क्षण ।

**वीरियसजोगसद्द्रव्या- स्त्री० [वीर्यसजोगसद्द्रव्यता]**

वीर्यं वीर्यान्तरायक्षयादिकृता शक्तिः योगा-मनःप्रभृतयः सह  
योगैर्वर्तत इति सयोगः, सन्ति विद्यमानानि द्रव्याणि तथाविध-  
पुद्गला यस्य जीवस्यासौ सद्द्रव्यो वीर्यप्रधानः ।  
सयोगो वीर्य-सयोगः स चासौ सद्द्रव्यश्चेति विग्रहस्तद्भावस्तत्ता  
वीर्यसयोग-सद्द्रव्यता । सवीर्यतायां सयोगतायां सद्द्रव्यतायाम्,  
। भग० ८ श० ९ उ० ।

**वीरियाऽऽता- पुं० [वीर्यात्मन्]**

वीर्यमुत्थानादि तदात्मा । सर्वसंसारिणां वीर्यरूपो आत्मनि, भग०  
१२ श० १ उ० ।

**वीरियाऽऽयार- पुं० [वीर्याचार]**

अनिहुतबाह्याभ्यन्तरसामर्थ्यस्य सतोऽनन्तरोक्तषट्त्रिंशद्विधे ज्ञान-  
दर्शनाद्याचारे,  
यथाशक्तिप्रतिपत्तिलक्षणे पराक्रमणे, प्रतिपत्तौ च । यथाबलं  
पालने, ठा० । आचा० ।

**वीरुणा- पुं० [वीरुण]**

पर्वकभेदे, पन्न० १ पद ।

**वीरुत्तरवर्डिसग- न० [वीरोत्तरावतंसक]**

चतुर्थदिवलोकस्थविमानभेदे सम० ६ सम० ।

**वीवाह- पुं० [विवाह]**

परिणयने, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । पण्हा० ।

**वीसंदण- न० [विस्यन्दन]**

अर्द्धनिर्दग्धघृतमध्यक्षिप्ततन्दुलनिष्पन्नखाद्यपदार्थे, बुह० १ । सूय०

**वीसंभणवेस- पुं० [विश्रम्भवेष]**

संविग्रवेषधारिणि, बुह० ३ उ० ।

**वीसंभर- पुं० [विश्रम्भर]**

जीवविशेषे, ओह० ।

**वीसत्य- त्रि० [विश्वस्त]**

क्षोभाभावेन । कल्प० १ अधि० १ ।

निर्भये, अनुत्सुके, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

विश्वासवति, निरुत्सुके, नाया० १ श्रु० १ अ० । उव० । रा० ।

निरुद्विग्रे, बुह० १ उ० २ ।

स्वपक्षाच्छ्रावकादेः, परपक्षाद् मिथ्यादृष्ट्यादेरविभ्यति प्राणा-  
तिपाताद्यकृत्यं सेवमाने जीत० ।

स्वपक्षतः परपक्षतो वा निर्भयं प्राणातिपातादिसेवी, वव० १० उ०

**वीसत्यत्त- न० [विश्वस्तत्व]**

विश्वासे, परस्परगुह्यगोपनविषये प्रत्यये बुह० १ उ० ३ ।

**वीसत्यसुहावासा- स्त्री० [विश्वस्तसुखावासा]**

विश्वस्तानां निर्भयानामनुत्सुकानां वा सुखः-सुखस्वरूपः शुभो वा  
आवासो यस्यां सा तथा । सुखनिवसज्जनायां पुरि, उव० । रा० ।

**वीसदेवा- स्त्री० [विष्वदेवा]**

उत्तराषाढायाम्, सूर० १० पाहु०

**वीसम- धा० [विश्रम]**

श्रमापनयने, पण्हा० ।

**वीसर- त्रि० [विस्वर]**

विरूपध्वनिषु, विपा० २ श्रु० ७ अ० ।

**वीससा- स्त्री० [वीससा]**

विगता स्रसना विस्रसा । आव०चू० १ अ० ।  
स्वभावे, विशेषे० । भग० । नाया० ।  
जरायाम्, जरापर्यायतया लोके रुढस्य स्वभावार्थत्वात् । भग० १  
श० ३ उ० ।

**वीससाकरण- न० [विससाकरण]**

विगता स्रसना विस्रसा तत्करणम् विगतप्रयोगकरणे करणभेदे,  
आव०चू० १ अ० ।

**वीससापरिणय- त्रि० [विससापरिणत]**

स्वभावपरिणते, भग० ८ श० १ उ० ।  
विश्रस्तपरिणामेन चाभोगोऽपि पुराणतयेति विश्रसा स्वभाव-  
तस्तत्परिणता अभ्रेन्द्रधनुरादिवदिति । ठा० ३ ठा० ३ उ०

**वीससाबंध- पुं० [विससाबन्ध]**

स्वभावसंपन्ने, पुद्गलानां छायातपत्वादिना रूपेण बन्धे, सूय० १  
श्रु० १ अ० १ उ० ।

**वीससिय- पुं० [वैससिक]**

विस्रसा परिणामसिद्धे संध्याभ्ररागादौ, आव०म० १ अ० ।

**वीससेण- पुं० [विश्वसेन]**

विश्वा हस्त्यश्वरथपदातिचतुरङ्गवलसमेता सेना यस्य स विश्वसेनः  
चक्रवर्ती, सूय० १ श्रु० ७ अ० । शान्तिपितरि, आव०म० ।  
अहोरात्रस्याष्टादशे मुहूर्ते, ज्यो० २ पाहु० । जंबू० ।

**वीसाएमाण- त्रि० [विस्वादयत्]**

विशेषेण स्वादयति, भग० ३ श० १ उ० ।

**वीसाजणिज्ज- त्रि० [विस्वादनीय]**

विशेषतः स्वादनीये, पत्र० १७ पद० ४ उ० ।

**वीसाम- पुं० [विश्राम]**

श्रमापनये, आव०म० १ अ० ।

**वीसास- पुं० [विश्वास]**

विश्वासयतीति विश्वासः । व्यवहारे वञ्चनाया अकरणे, वव० ३ उ०  
त्वं मम माता भगिनी दुहिता वा अतो मा भैषीरेवं वयोऽनुरूपे  
अविरुद्धे वचने, बुह० ३ उ० । निसि० ।

**वीसु- अव्य० [विष्वच्]**

पृथगर्थे, विशेषे० । वव० । निसि० ।

**वीसुंउवस्सय- पुं० [विष्वगुपाश्रय]**

विष्वग् भेदेन उपाश्रय आश्रयः । पृथक् पृथगाश्रये, ओह० ।

**वीसुंकरण- न० [विश्वकरण]**

विसंभोगकरणे, वव० ७ उ० । निसि०

**वीसुंभण- न० [विष्वग्भवन]**

मरणे, शरीरात् पृथग्भवने, ठा० ५ ठा० २ उ० । बुह० । वव० ।

**वीसेणि- स्त्री० [विश्रेणि]**

विश्रमश्रेणौ, मञ्चा क्रोशन्तीति न्यायाद् विश्रेणिव्यवस्थित,  
विशे० । वव० । ठा० ।

**वीहणग- न० [भयानक]**

भयोत्पादके, पण्हा० १ अ० आव०म

**वीहि- स्त्री० [वीथि]**

रथ्याविशेषे, आव०म० १ अ० ।  
पथि, आचा० १ श्रु० १ अ० ३ उ० ।

**वीहिया- स्त्री० [वीथिका]**

मार्गे, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**वुइय- त्रि० [उक्त]**

स्वरूपतः प्रतिपादिते, सूय० २ श्रु० १ अ० । ठा० । भग० ।

**वुक्कंत- त्रि० [व्युत्क्रान्त]**

परिणते, विध्वस्ते, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० १ उ० ।

**वुक्कंतजोणिय- त्रि० [व्युत्क्रान्तयोनिक्]**

व्युत्क्रान्ता अपगता योनिरुत्पत्तिस्थानं यत्र तद्व्युत्क्रान्तयोनिक्  
। प्रासुके, पिंड० ।

**वुक्कंति- स्त्री० [व्युत्क्रान्ति]**

उत्पत्तौ, न० ।

**वुक्कम्म- अव्य० [व्युत्क्रम्य]**

आगत्येत्यर्थे, सूय० २ श्रु० ३ अ० ।

**वुग्गह- पुं० [व्युद्ग्रह]**

विशेषेण उद्ग्रहः । दण्डादिप्रहारजनितं युद्धं व्युद्ग्रहः । उत्त० १७  
संग्रामे । वव० । आव० । ठा० ।  
दण्डादिघातजनिते विरोधे, कलहे, उत्त० १७ अ० ।  
'वुग्गहो ति वा कलहो ति वा भंडणं ति वा विवादो ति वा एगट्ठं'  
निसि० १६ उ० ।

परस्परविग्रहे, वव० ७ उ० ।

मिथ्याभिनिवेशे, ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

**वुग्गहट्ठाण- न० [विग्रहस्थान]**

कलहाश्रये, ठा० ।

**वुग्गहट्ठाण- न० [व्युद्ग्रहस्थान]**

विप्रतिपत्तौ, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

व्युद्ग्रहेण मिथ्याऽभिनिवेशेन विप्रतिपत्त्यर्थे, ठा० ६ ठा० ३ उ०

**वुग्गहवक्कंत- पुं० [व्युद्ग्रहव्युत्क्रान्त]**

कलहं कृत्वा निष्क्रान्ते, निसि० १६ उ० ।

**वुग्गाहिय- त्रि० [व्युद्ग्राहित]**

प्रतारिते, सूय० १ श्रु० ३ अ० १ उ० ।

कुप्रज्ञापकदृढीकृतविपर्यासे, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

**वुग्गाहिया-** स्त्री० [वैग्राहिकी]

कलहप्रतिबद्धायां कथायाम्, दश० १ अ० ।

**वुग्गाहेमाण-** त्रि० [व्युद्ग्राहयत्]

विविधत्वेनाधिक्येन च ग्राहयति, नाया० १ श्रु० १२ अ० ।

व्युद्ग्रहे योजयति, उव० ।

विरुद्धग्रहवन्तं कुर्वति, भग० ९ श० ३३ उ० ।

**वुच्चमाण-** त्रि० [उच्यमान]

आकुश्यमाने, सूय० १ श्रु० ९ अ० ।

**वुच्छिण्णकिरिय-** त्रि० [व्युच्छिन्नक्रिय]

योगाभावात् क्रियारहिते, आव० ४ अ० ।

**वुच्छिण्णदोहला-** स्त्री० [व्युच्छिन्नदोहदा]

पूर्णवाञ्छत्वादपगतगर्भकालिकमनोरथायाम्, कल्प० १ अधि० ४ ।

**वुच्छेय-** पुं० [व्यवच्छेद]

स्थगने, संवरणे, निवृत्तौ, आव० ६ अ० ।

दाने, आव० ६ अ० ।

**वुट्ठि-** स्त्री० [वृष्टि]

वर्षणं वृष्टिः । अधःपतने, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

महावर्षे, भग० ३ श० ७ उ० ।

**वुट्ठिकाय-** पुं० [वृष्टिकाय]

वर्षणधर्मयुक्तस्योदकस्य राशौ, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

**वुड्ड-** त्रि० [वृद्ध]

श्रुतेन पयरिण वयसा च महति, वव० ५ उ० । सूय० ।

स्थविरे, गच्छा० ३ अधि० ।

सप्ततिवर्षेभ्य उपरि वृद्धः । अन्ये त्वाहुः—अर्वागपीन्द्रियादिहा-  
निदर्शनात् षष्टिवर्षेभ्योऽप्युपरि वृद्धोऽभिधीयते । गच्छा० १ अधि० ।

सप्ततिवर्षाणां, मतान्तरापेक्षया षष्टिवर्षाणां वा उपरिवर्तिनि,  
पिंड० । तापसे, अणुओ० ।

प्रथममुत्पन्नत्वात् प्रायो वृद्धकाले दीक्षाप्रतिपत्तेः । नाया० १ श्रु० १४  
पितृमातुलादौ, सूय० १ श्रु० २ अ० १ उ० ।

**वुड्डकुमारी-** स्त्री० [वृद्धकुमारी]

बृहत्त्वादपरिणीतत्वाच्च बृहत्कुमारी । अधिकवयः कन्यायाम्,  
नाया० २ श्रु० १ वर्ग० १ अ० ।

**वुड्डत्त-** न० [वृद्धत्व]

जरायाम्, आचा० ।

**वुड्डवाय-** पुं० [वृद्धवाद]

प्रव्रज्यादानादनन्तरं संलेखनापर्यन्ते साधुधर्म, आचा० १ श्रु० ८ अ०

**वुड्डसावग-** पुं० [वृद्धश्रावक]

भरतादिकाले श्रावकाणामेव संतापश्चाद् ब्राह्मणत्वभावाद् ।  
ब्राह्मणेषु, अणुओ० । नाया० ।

**वुड्डसील-** त्रि० [वृद्धशील]

निभृतशीले, अवञ्चनशीले, दशा० १ श्रु० ४ अ० ।

**वुड्डसीलया-** स्त्री० [वृद्धशीलता]

वपुर्मनसोर्निर्विकारतायाम्, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

वपुषि मनसि च निभृतस्वभावतायाम्, उक्त० १ अ० । दशा० ।  
वृद्धशीलो—निभृतशीलः अवञ्चनशील इति यावत् । अर्थग्रहणात्-  
वृद्धेषु ग्लानादिषु सम्यग् वैयावृत्यादिकरणकारापणयोरुद्युक्तो  
भवति एवंविधः,—वृद्धशीलता च दूषितमनसि च निभृतस्वभाव-  
तानिर्विकारतेति यावत् । दशा० १ श्रु० ४ अ० । वव० । आव० म० ।

**वुड्डा-** स्त्री० [वृद्धा]

अतिक्रान्तयौवनायाम्, गच्छा० २ अधि० ।

**वुड्डावास-** पुं० [वृद्धावास]

वृद्धगत आवासो वृद्धावासः । पंच० चू० १ ।

**वुड्ढि-** स्त्री० [वृद्धि]

शरीरस्य वर्द्धने, ठा० ३ ठा० २ उ० । सूय० ।

स्फीति, । आव० म० ।

**वुड्ढिधम्मय-** न० [वृद्धिधर्मक]

वर्धनशीले जीवबद्धशरीरे, आचा० १ श्रु० १ अ० ५ उ० ।

**वुड्ढिपय-** न० [वृद्धिपद]

वृद्धिस्थाने, 'वड्ढि य णाणचरणे, जम्हा तम्हा उ तेण वुड्ढिपदं ।  
पवरं पहाणमेत्तं, सव्वेसिं रायदेवाणं' पंच० भा० ५ ।

**वुड्ढिवुड्ढि-** स्त्री० [वृद्धयवृद्धि]

प्रतिमासे मुहूर्तानां चन्द्रमसो वृद्धयपवृद्धौ, सूर० ।

**वुत्त-** त्रि० [उक्त]

अभिहिते, सूय० १ श्रु० १ अ० ३ उ० । आचा० । निसि० ।

**वुत्त-** त्रि० [व्युक्त]

विशेषणोक्ते, संथा० ।

**वुत्ततं-** पुं० [वृत्तान्त]

समाचारे, आव० म० १ अ० ।

**वुत्तपडिवुत्तिया-** स्त्री० [उक्तप्रत्युत्तिका]

भणितप्रतिभणिते, भग० ११ श० ११ उ० ।

**वुत्तित्ता-** अव्य० [उत्तत्वा]

पदवाक्यादिकं भणित्वेत्यर्थे, ठा० ३ ठा० २ उ० ।

**वुद्गुल-** पुं० [वृद्गुड]

आर्द्रे गुडे, बृह० २ उ० ।

**वुयावइत्ता-** अव्य० [विवाप्य]

प्रव्रज्याभेदे, ठा० ३ ठा० २ उ० ।

**वुसिय-** पुं० [व्युषित]

अनेकप्रकारं दशविधचक्रवालसामाचार्या स्थित, सूय० १ श्रु० १ अ०

**वुसी- स्त्री० [वृषी]**

चारित्र्ये, सूय० १ श्रु० १४ अ० ।

संविग्रे, निसि० १६ उ० ।

**वुसीमंत-१ त्रि० [वश्यवत्]**

वश्य आत्मा इन्द्रियाणि वा वश्यानि विद्यन्ते येषां ते उत्त० ५ अ० ।

आत्मवशगेषु वश्येन्द्रियेषु, सूय० १ श्रु० ८ अ० ।

तीर्थकृत्यु, सत्संयमवत्सु, सूय० १ श्रु० ८ अ० ।

एकचत्वारिंशे महाग्रहे, ठा० २ ठा० ३ उ० । सूर० ।

चन्द्रपूत्रे ज्योतिष्कभेदे, पत्र० २ पद ।

**वुसीमंत-२ त्रि० [व्यवसिन्]**

बुधत्वकार्ययुक्ते, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**वूढ- त्रि० [व्यूढ]**

नीते, बुह० ३ उ० । आव० म० १ अ० ।

**वूणक- [देशी]**

पुत्रादौ बालके, वव० २ उ० ।

**वूह- पुं० [व्यूह]**

स्थानुरेवाऽयमिति निश्चये, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

इदमित्यमेवरूपे निश्चये, उव० ।

युयुत्सूनां सैन्यरचनयाम्, यथा चक्रव्यूहे चक्रीकृतौ तुम्बारक  
प्रध्यादिषु राजन्यस्थापना । जंबू० २ वक्ष० । रा० । निसि० । ठा० । सम०  
समुदाये, नाया० १ श्रु० १ अ० । पण्हा० ।

**वै- अव्य० [वै]**

अवधारणे, आव० म० १ अ० ।

निश्चये, कल्प० १ अधि० ६ क्षण० ।

**वेइजमाण- त्रि० [वेद्यमान]**

अनुभूयमाने कर्मणि, भग० ।

‘वेइजमाणे वेइए’ वेदनं कर्मणामनुभव इत्यर्थस्तच्च वेदनं  
स्थितिक्षयादुदयप्राप्तस्य कर्मणा उदीरणाकरणेन चोदयमुपनीतस्य  
भवति । तस्य च वेदनाकालस्याऽसंख्येयसमयत्वादाद्यसमये वेद्य  
मानमेव वेदितव्यं भवतीति । भग० १ श० १ उ० ।

**वेइजमाण- त्रि०**

कम्पिते, व्येजितं कम्पितम् । ‘एजृ’ कम्पने, इति वचनात् । भग० १  
श० १ उ० ।

**वेइली- स्त्री० [वेदस्त्री]**

पुरुषाभिलाषरूपे स्त्रीवेदोदये, सूय० १ श्रु० ४ अ० १ उ० ।

**वेइय-१ त्रि० [वेदित]**

कथिते, आचा० १ श्रु० २ अ० ३ उ० ।

रस विपाकेन प्रतिसमयमनुभूयमाने अपरिसमाप्ते शेषानुभावे  
भग० १ श० १ उ० ।

**वेइय-२ पुं० [वैदिक]**

वेदे वेदिता वैदिकाः । त्रैविद्यवृद्धेषु, दश० ४ अ० । आचा० ।

वैदिकानां हिंसैव गरीयसी धर्मसाधनयज्ञोपदेशात् तस्य च तया  
विनाऽभावात् । सूय० २ श्रु० २ अ० ।

**वेइय- त्रि० [व्येजित]**

विशेषतः कम्पिते, जंबू० १ वक्ष० । जीवा० ।

**वेइया- स्त्री० [वेदिका]**

देवार्चनास्थाने, निर० ।

जम्बूद्वीप जगत्यादिसम्बन्धिनीषु, पत्र० २ पद ।

उपवेशनयोग्यासु भूमिषु, जंबू० २ वक्ष० ।

सुण्डा प्राकारे, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

प्रत्युपेक्षणाप्रकारे ठा० ।

उपवेशनयोग्यमत्तवारणेषु, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**वेइयापुड- न० [वेदिकापुट]**

वेदिकायुग्मे, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**वेइयापुडंतर- न० [वेदिकापुटान्तर]**

द्वयोर्वैदिकयोरपान्तराले, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**वेइयाबद्ध- न० [वेदिकाबद्ध]**

दशमे वन्दनदोषे, बुह० ।

दशमं दोषमाह-जानुनोरुपरि हस्तौ निवेश्याधो वा पार्श्वयोर्वा  
उत्सङ्गे वा एकं जानु दक्षिणं वा वामं वा करद्वयान्तः कृत्वा  
वन्दनकं यत्र करोति तद्वेदिकाबद्धम् । बुह० ३ उ०

**वेउव्विय- न० [वैकुर्विक]**

शरीरभेदे, पण्हा० ३ अ० जीवा० । पत्र० । ठा० । अणुओ० । आव० ।

**वेउव्वियमीससरीरकायप्पओग-पुं० [वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोग]**

देवनारकेषु उत्पद्यमानस्यापर्याप्तकस्य कायप्रयोगे, वैक्रियशरी-  
रस्य कर्मणैर्नैव लब्धिः, वैक्रियपरित्यागे त्वौदारिकप्रवेशाऽद्धा  
यामौदारिकोपादानाय प्रवृत्ते वैक्रियप्राधान्यादौदारिकेणापि वै-  
क्रियस्य मिश्रया इति । भग० ८ श० १ उ० ।

**वेउव्वियलद्धि- स्त्री० [वैक्रियलब्धि]**

वैक्रियशरीरकरणशक्ति, सा चानेकधा । गच्छा० २ अधि० । उव० ।

**वेउव्वियसमुद्घाय- पुं० [वैक्रियसमुद्घात]**

वैक्रिये प्रारभ्यमाणे समुद्घातो वैक्रियसमुद्घातः रा० ।

वैक्रियलब्धिमतो वैक्रियोत्पादनाय बहिरात्मप्रदेशप्रक्षेपे, आचा० १  
श्रु० २ अ० १ उ० । नाया० ।

वैक्रियसमुद्घातगतः पुनर्जीवः स्वप्रदेशान् शरीराद्वहिर्निष्काश्य  
शरीरविष्कम्भबाहल्यमान मायामतः संख्येययोजनप्रमाणं दण्डं  
निसृजति, निसृज्य च यथास्थूलान् वैक्रियशरीरनामकर्मपुद्गलान्  
प्राग्वच्छातयति । पत्र० १२ पद ।



**वेउव्वियसय-** न० [वैक्रियशत]

वैक्रियलब्धिमति शते, सम० प्र० सम० ।

**वेउव्वियसरीरकायप्पओग-** पुं० [वैक्रियशरीरकायप्रयोग]

वैक्रियपर्याप्तस्य कायप्रयोगे, भग० ८ श० १ उ० ।

**वेउव्वियसरीर-** त्रि० [वैक्रियशरीरिन्]

विभूषितशरीरे, भग० १८ श० ५ उ० ।

**वेउव्विया-** स्त्री० [वैकुर्विका]

विकुर्वितनानारूपधारिण्याम्, चंद० १९ पाहु० ।

**वेकुंथु-** पुं० [वैकुन्थु]

चमरसुरेन्द्रस्य पीठानीकाधिपतौ, ठा० ५ ठा० १ उ० ।

**वेग-** पुं० [वेग]

जवे, तं० । । पण्हा० ।

गतिविशेष, उव० । रय, आव० ४ अ० ।

**वेगच्छ-** न० [वैकक्ष]

उत्तरासङ्गे, उवा० २ अ० ।

**वेगच्छछिण्णग-** पुं० [वैकच्छछिन्नक]

उत्तरासङ्गन्यायेन विदारिते, उव० । सूय० ।

**वेगच्छिया-** स्त्री० [वैकक्षिकी]

संयतीनामुपकरणविशेषे, बुह० १ उ० २ ।

औपकक्षिकी विपरीतो वैकक्षिकीनामकः पटः, स च कञ्चुकमौ-  
पकक्षिकीं वस्त्रं छादयन् वामपार्श्वे परिधीयते । बुह० ३ उ० । निसि०

**वेगवई-** स्त्री० [वेगवती]

अस्थिकग्रामस्य समीपनद्याम्, आव० । आव० म० । आव० चू० ।

**वेगसर-** पुं० [वेगसर]

अश्वतर, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

**वेगुण्ण-** न० [वैगुण्य]

वैधर्मे, विपरीतभावे, आव० ४ अ० ।

**वेजयंत-** पुं० [वैजयन्त]

ऊर्ध्वलोकेऽनुत्तरोपपातिकविमानानां द्वितीये विमाने, ठा० ५  
ठा० ३ उ० । जीवा० । पन्न० । अणुत्त० । सम० ।

जम्बूद्वीपस्य लवणसमुद्रस्य धातकीखण्डस्य कालोदस्य पुष्क-  
रवरद्वीपस्य पुष्करोदस्य च दक्षिणद्वारेषु, ठा० ४ ठा० २ उ० । सम०

**वेजयंतकूड-** न० [वैजयन्तकूड]

जम्बूद्वीपे मन्दरस्योत्तरे रुचकवरपर्वतस्यार्द्धकूटे, ठा० ८ ठा० ३ उ०

**वेजयंती-** स्त्री० [वैजयन्ती]

अङ्गारकादीनां महाग्रहाणामग्रमहिष्याम् ठा० ४ ठा० १ उ० । जंबू०  
पताकाविशेषे, सूय० १ श्रु० ६ अ० । चंद० । नाया० १ श्रु० १ अ० ।

रा० । आव० म० । पण्हा० । आव० चू० । सम० ।

पूर्वरुचकवास्तव्यायां दिक्कुमार्याम्, । ठा० । आव० म० ।

**वेड्ड-** त्रि० [वेद्य]

अनुभावनीये । आचा० १ श्रु० ५ अ० ४ उ० ।

**वेज्जमाण-** त्रि० [वेद्यमान]

अनुभूयमाने, विशे० ।

**वेट्टणग-** पुं० [वेष्टनक]

श्रीदेवताध्यासितपट्टे, बुह० ६ उ० ।

कर्णाभरणविशेषे, जंबू० २ वक्ष० ।

**वेट्टणगबद्ध-** पुं० [वेष्टनकबद्ध]

श्रीदेवताध्यासितपट्टो वेष्टनक उच्यते तद्यस्य राज्ञाऽनुज्ञातं स  
वेष्टनकबद्धः । श्रेष्ठिनि, बुह० ६ उ० ।

**वेड-** त्रि० [व्रीड]

व्रीडाऽस्यास्तीति व्रीडः भूमार्थेऽस्त्यर्थं प्रत्ययः । लज्जाप्रकर्षवति  
भग० १५ श० ।

**वेडा-** स्त्री० [व्रीडा]

लज्जायाम्, भग० १५ श० ।

**वेडंबय-** पुं० [विडम्बक]

विदूषके, नानावेषादिकारिणि, अणुओ० ।

**वेढ-** धा० [वेष्ट]

वेष्टने, वेष्टयते कोशिकारकीट इव । पण्हा० ३ अ०

**वेढ-** पुं० [वेष्ट]

वेष्टने, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

छन्दोविशेषे, नं० ।

एकार्थप्रतिबद्धवचनसंकलिकायाम्, सम० ।

**वेढअ-** पुं० [वेष्टक]

एकवस्तुविषयपदपद्धतौ, नाया० १ श्रु० १६ अ० ।

वर्णनार्थानां वाक्यपद्धतौ, नाया० १ श्रु० १६ अ० ।

निक्षेपतिर्युक्त्युपोद्धातनिर्युक्तिलक्षणे सूत्रव्याख्याने, अणुओ० ।

**वेढिम-** न० [वेष्टिम]

वेष्टनं वेष्टस्तेन निर्वृत्तं वेष्टिमम् । ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

वेष्टननिष्पन्ने पुष्पलम्बूसकादौ, । भग० ९ श० ३३ उ० । रा० ।

नाया० । आचा० । दश० ।

यद् ग्रथिनं वेष्टयते यथा पुष्पलम्बूसकः, गेन्दुक । नाया० १ श्रु० १ अ०  
पुष्पवेष्टनकक्रमेण निष्पन्ने आनन्दपुरादिप्रतीतरूपे एकं द्वौ त्रीणि  
वस्त्राणि वेष्टयित्वा उत्थापिते रूपके, अणुओ० । निसि० ।

वस्त्रादिनिर्वर्तितपुत्तलिकादिके, आचा० २ श्रु० २ चू० ५ अ० ।

पुष्पमुकुट इव उपर्युपरि शिखरीकृत्य मालास्थापन, जीवा० ३  
प्रति० ४

**वेढिमा-** स्त्री० [वेष्टिमा]

माषपिष्टपूरितकरोटिकायाम्, पण्हा० ५ अ० ।

**वेणइय- न० [वैनयिक]**

विनय एव वैनयिकम् । दश०९ अ०१ उ० । ठा० ।  
गुरुशुश्रूषायाम्, भग०१२ श०५ उ० ।  
ज्ञानादिविनये कर्मक्षयादिके विनयफले, नं० । भग० ।  
विनयेन चरति वैनयिकः । शिष्ये, दश० ३ अ० ।  
विनयमर्हन्तीति वैनयिकाः । आचार्यादिषु, वव० ३ उ० ।

**वेणइयवाह- पुं० [वैनयिकवादिन्]**

विनयेन चरति स वा प्रयोजनमेषामिति वैनयिकाः, ते च ते  
वादिनश्चेति वैनयिकवादिनः । विनय एव वा वैनयिकं तदेव ये  
स्वर्गादिहेतुतया वदन्त्येवं शीलाश्च ते वैनयिकवादिनः विधृत  
लिङ्गाचारशास्त्रविनयप्रतिप-त्तिलक्षणेषु वादिषु, भग० ३ श० १  
उ० । नं० । ठा० ।

**वेणइया- स्त्री० [वैनयिकी]**

विनयो गुरुशुश्रूषा सकारणमस्यास्तत्प्रधाना वैनयिकी । ठा० ४  
ठा० ४ उ० । आव०म० ।

गुरु विनयलभ्यशास्त्रार्थसंस्कारजन्ये बुद्धिभेदे, नाया० १ श्रु० १ अ०

**वेणा-१ स्त्री० [वेणा]**

आर्यसम्भूतविजयस्य शिष्यायां स्थूलभद्रभगिन्याम्, कल्प०२  
अधि० ८ । आव० । पिंड० ।

**वेणा-२ स्त्री० [वेणा]**

आभीरविषये कृष्णासङ्गते नदीभेदे, आव०म०१ अ० । आव०चू० ।

**वेणी- स्त्री० [वेणी]**

वनिताशिरसः केशबन्धविशेषे, नाया० १ श्रु०९ अ०

**वेणु- पुं० [वेणु]**

वंशे, सूर० १२ पाहु० । पत्र० । निसि० । सूय० । रा० ।  
वेशविशेषे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।  
आतोद्यविशेषे, आचा०१ श्रु०१ अ०५ उ० । निसि० ।

**वेणुदालि- पुं० [वेणुदालि]**

औत्तराह सुपर्णकुमाराणामिन्द्र, ठा० २ ठा० । भग० । पत्र० । सम०

**वेणुदेव- पुं० [वेणुदेव]**

गरुडापरनामके सुपर्णकुमारजाती ये दक्षिणात्यानां सुपर्णकुमा-  
राणामिन्द्रे, ठा० २ ठा० ३ उ० । सूय० । पत्र० । सम० ।

**वेणुफल- न० [वेणुफल]**

वेणुकार्ये करण्डकपेटिकादौ, सूय० १ श्रु० ४ अ० २ उ० ।

**वेणुफलासिया- स्त्री० [वेणुफलासिका]**

वंशात्मिकायां श्लक्ष्णत्वक्-काष्ठिकायाम्, या दन्तैर्वामहस्तेन  
प्रगृह्य दक्षिणहस्तेन वीणावद् वाद्यते । सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ० ।

**वेणुयाणुजाय- पुं० [वेणुकानुजात]**

वंशसदृशे, सूर०१२ पाहु० ।

**वेणुलया- स्त्री० [वेणुलता]**

स्थलवंशलतायाम्, विपा०१ श्रु०६ अ०

**वेणुसलागिया- स्त्री० [वेणुशलाकिकी]**

वेणुर्वशस्य शलाकास्ताभिर्निर्वृता वेणुशलाकिकी । वेणुशलाका  
निष्पन्नयाम्, रा० ।

**वेण्णा- स्त्री० [वेन्ना]**

आभीरविषये अचलपुरासन्ने कृष्णानदीसंगते नदीभेदे, आव०चू०१  
अ० । कल्प० । आव० । आव०म० । नं०

**वेणुह- पुं० [विष्णु]**

व्यापके, परमेश्वरे, अमरः । कल्प० । आव०क० । ठा० । पण्हा० ।

**वेत्त- पुं० [वेत्त]**

जलवंशे, पण्हा० ३ अ० निसि० । पत्र० । सम० ।

**वेत्तग- न० [वेत्ताग्र]**

वेत्ताङ्कुरे, तच्चाङ्गवङ्गेषु भाजीकृतं भक्ष्यते । आचा०२ श्रु०१ अ०८

**वेत्तदण्ड- पुं० [वेत्तदण्ड]**

वेत्तरूपे दण्डे, पण्हा० ३ अ०

**वेत्तपीढय- पुं० [वेत्तपीठक]**

वेत्तासने, निसि० १२ उ० ।

**वेत्तलया- स्त्री० [वेत्तलता]**

जलवंशलतायाम्, विपा० १ श्रु०६ अ० ।

**वेद- पुं० [वेद]**

वेद्यतेऽनेन तत्त्वमिति वेदः । सिद्धान्ते, उक्त० १५ अ० ।

सद्भूतार्थागमे । वव० ।

समस्तदर्शनिनां सिद्धान्ते, बुह० ३ उ० ।

विदन्ति तेन तमिति वा वेदः । निसि० १ उ० ।

वेद्यते जीवादिस्वरूपमनेनेति वेदः । आचाराङ्गाद्यागमे, आचा०१  
श्रु०१ अ०१ उ० ।

वेद्यते सकलं चराचरमनेनेति वेदः । आगमे, आचा०१ श्रु०४ अ०४  
स च लौकिकलोकोत्तरकुप्रावचनिकभेदः श्रुतवद् व्याख्यातव्यः ।

नाया० १ श्रु०१ अ० । रा० ।

विदन्त्यस्माद्धेयोपादे-यपदार्थानिति वेदः । आगमे, स च  
नामस्थापनाद्रव्यभावभेदाच्चतुर्धा, आचा०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।

वेदने, अनुभवे, सूय०१ श्रु०२ अ०१ उ० ।

मैथुनाभिलाषे, सम० ।

**वेदइत्ता- अव्य० [वेदयित्वा]**

परिज्ञाप्येत्यर्थे, सूय० १ श्रु० ६ अ० ।

ज्ञात्वेत्यर्थे, सूय०१ श्रु०५ अ०२ उ० ।

**वेदंग- पुं० [वेदङ्ग]**

इभ्यजातिभेदे, पत्र० १ पद ।

**वेदंत-** पुं० [वेदान्त]

ऋगादिवेदजनिते निर्णये, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

**वेज्यमान-** त्रि० ।

विशेषेण कम्पमाने, ठा० ७ ठा० ६ उ० ।

**वेदयत्-** त्रि० ।

विपाकेनानुभवति, दश० ३ अ० ।

**वेदंतवाइ-** पुं० [वेदान्तवादिन्]

वेदान्तिके, आत्मैक्यवादिनि, आचा० १ श्रु० ५ अ० ६ उ० ।

**वेदंतिय-** पुं० [वेदान्तिक]

ध्यानाध्ययनसमाधिमागानुष्ठानात्सिद्धिमुक्तवति, सूय० १ श्रु० १ अ०  
एकात्म्यवादिनि, विशेष० ।

**वेदग-** पुं० [वेदक]

वेदयति निर्जरयति उपभुनक्तीति वेदकः । दश० १ अ० ।  
वेदयत्यनुभवति सम्यक्त्वपुद्गलानिति वेदकः । अनुभवतिर,  
तदनर्थान्तरभूतत्वात्सम्यक्त्वभेदे । वेद्यत इति वा वेदकम् । विशेष०  
विहितप्रायदर्शनसप्तकक्षयेण जन्तुना वेद्यते चरमतत्पुद्गलग्रास-  
मात्रं तद्वेदकम् । विशेष० ।

**वेदत्थ-** पुं० [वेदार्थ]

वैदिकानुष्ठाने, पण्हा० १ अ०

**वेदपरिणाम-** पुं० [वेदपरिणाम]

स्त्र्यादिभेदात्त्रिधा त्रिधा भिन्ने परिणामभेदे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**वेदपुरिस-** पुं० [वेदपुरुष]

वेदानुभवनप्रधानं पुरुषो वेदपुरुषः, स च स्त्रीपुनपुंसकसंबन्धिषु  
त्रिष्वपि लिङ्गेषु भवतीति । स्त्र्यादिवेदानुभवनप्रधाने पुरुषे, ठा०  
३ ठा० १ उ० ।

**वेदरभी-** स्त्री० [वैदर्भी]

विदभदेशजातायां भीष्मपुत्ररुक्मिपुत्र्याम्, अंत० ४ वर्ग० १ अ० ।

**वेदावेदुद्देशग-** पुं० [वेदावेदोद्देशक]

वेदे वेदने कर्मप्रकृतेरेकेस्या वेदो वेदनमन्यासां प्रकृतीनां  
यत्रोद्देशकेऽभिधीयते स वेदावेदः स एवोद्देशकः । प्रज्ञापनायाः  
पञ्चविंशतितमे पदे, भग० १६ श० ३ उ० ।

**वेदि-** स्त्री० [वेदि]

वितर्दिकायाम्, पण्हा० १ अ०

**वेदिग-** स्त्री० [वैदिक]

जात्यार्यभेदे, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**वेदि-** स्त्री० [वेदी]

देवार्चनस्थाने, भग० ११ श० ९ उ० ।

**वेदेसिय-** त्रि० [वैदेशिक]

विदेशवर्तिनि, वव० ३ उ० ।

**वेभार-** पुं० [वैभार]

राजगृहक्रीडापर्वते, भग० ३ श० ४ उ० । नाया० । पण्हा० ।

**वेभेल-** पुं० [बेभेल]

जम्बूद्वीपे भारते वर्षे विन्ध्यगिरिपादमूले स्थिते सन्निवेशे, भग० ३  
श० २ उ० । गच्छा० ।

**वेमणस्स-** न० [वैमनस्य]

दैन्ये, पण्हा० १ अ०

**वेमवं-** पुं० [वेमवत्]

तन्तुवाये, आव० ।

**वेमाणिणी-** स्त्री० [वैमानिकी]

वेमानिकदेवस्त्रियाम्, जीवा० ४ प्रति० ३ उ०

**वेमाणिय-** पुं० [वैमानिक]

विविधं मन्यन्ते उपभुज्यन्ते पुण्यवद्भिर्जीवैरिति विमानानि, तेषु  
भवाः वैमानिकाः ।  
देवभेदेषु, पत्र० १ पद ।

**वेमाणियदेवित्थिया-** स्त्री० [वैमानिकदेवस्त्रिका]

वैमानिकदेव्याम्, जीवा० २ प्रति० ।

**वेमायट्टित्थिया-** स्त्री० [विमात्रस्थितिका]

विमात्रा विषयमात्रास्थितिरायुर्येषां ते विमात्रस्थितयः । विषमा-  
युष्केषु, भग० ३४ श० १ उ०

**वेमायणिद्धया-** स्त्री० [विमात्रस्निग्धता]

विषमा मात्रा यस्याः सा विमात्रा, सा चासौ स्निग्धता चेति  
विमात्रस्निग्धता । विमात्रस्नेहे, भग० ३४ श० १ उ० ।

**वेमाया-** स्त्री० [विमात्रा]

कदाचित्सातं कदाचिदसातमित्यादिरूपायां विविधमात्रायाम्,  
भग० ६ श० १ उ० ।

विविधा मात्रा परिमाणमासामिति विमात्रा । विचित्र परिणामा-  
याम्, उक्त० २ अ० । आव० । आव० म० ।

**वेयडिय-** त्रि० [वैकटिय]

सुरासन्धानकारिणि, वव० ६ उ० ।

**वेयण-१** न० [वेतन]

मूल्ये, विपा० १ श्रु० ३ अ० । उक्त० ।

**वेयण-२** न० [वेदन]

अनुभवे, ठा० ८ ठा० ३ उ० । आचा० । सूय० ।

अवनं गमनं वेदनमिति पर्यायाः । आव० म० १ अ० । नं० ।

स्थितिक्षयादुदयप्राप्तस्य कर्मण उदीरणाकरणेन चोदयभावमुप-  
नीतस्यानुभवने, ठा० ४ ठा० १ उ० । दश० ।

प्रतिसमय स्वेन रसविपाकेनानुभवन, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

उदय, दश० ४ अ० ।

**वेयणअहियासन-** न० [वेदनाध्यासन]

क्षुदादिपीडासहने, भग० १७ श० ३ उ० ।

**वेयणंतिया-** स्त्री० [वेदनान्तिका]

बाह्या लिपेर्भेदे, सम० १८ सम० ।

**वेयणवेयावच्च-** न० [वेदनावैयावृत्य]

वेदना चक्षुर्वेदना वैयावृत्यं चाचार्यादिकृत्यकरणं वेदनावैयावृत्यम् । वेदनोपशमनार्थं वैयावृत्यकरणे, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।  
वेदनावैयावृत्यार्थं भुञ्जीत तत्र क्षुद्रेदनोपशमेनाय भुञ्जीत यतो नास्ति क्षुत्सदृशी वेदना । गच्छा० २ अधि० ।

**वेयणा-** स्त्री० [वेदना]

वेद्यतेऽनयेति वेदना । योगशास्त्रपरिभाषया स्पर्शनेन्द्रियजे ज्ञाने, यत्प्रकर्षद्विव्यास्पर्शविषयं ज्ञानमुत्पद्यते । आव० ।  
वेदनं वेदना स्वभावेनोदीरणाकरणेन चोदयावलिकाप्रविष्टस्य कर्मणोऽनुभवने, संवरविशेषे चायोग्य वस्थारूपे कर्मणां वेदनैव भवति न बन्ध इति । ठा० ।

**वेयणाखंध-** पुं० [वेदनास्कन्ध]

सुखाः दुःखा अदुःखसुखा चेति वेदनालक्षणे बौद्धपरिभाषिते पञ्चस्कन्धेष्वन्यतमे स्कन्धे, सूय० १ श्रु० १ अ० १ उ० ।

**वेयणाभय-** न० [वेदनाभय]

वेदना-पीडा तद्भयं वेदनाभयम् । भेदे, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**वेयणासमुद्घाय-** पुं० [वेदनासमुद्घात]

असावद्यकर्मश्रये समुद्घातभेदे, सम० ६ सम० । ठा० । पन्न० ।  
तत्र वेदनासमुद्घातगत आत्मा असातवेदनीयकर्मपुद्गलपरिशातं करोति, तथाहि-वेदनापीडितो जीवः स्वप्नप्रदेशान् अनन्तानन्त-कर्मस्कन्धवेष्टितान् शरीराद्वहिरपि विक्षिपति तैश्च प्रदेशैर्वदन-जठरादिरन्ध्राणि कर्णस्कन्धाद्यपान्तरालानि चापूर्यायामतो विस्तरतश्च शरीरमात्रं क्षेत्रमभिव्याप्यान्तर्मुहूर्त्तं यावदवतिष्ठते, तस्मिन् चान्तर्मुहूर्त्ते प्रभूतासातावेदनीय कर्मपुद्गलपरिशाते करोति । पन्न०

**वेयणिज्ज-** न० [वेदनीय]

वेद्यते आह्लादादिरूपेण यदनुभूयते तद्वेदनीयम् । कर्मण्यनीय-प्रत्ययः । वेदनीये कर्मणि, ठा० २ ठा० ४ उ० ।

**वेयद्विया-** स्त्री० [वितर्दिका]

वेदिकायाम्, निर० १ अ० । उव० । नाया० ।

**वेयपय-** न० [वेदपद]

वैदिकशब्दे, 'वेययपयाणं अत्ये, न याणसी तेसिमेयट्' इति इन्द्रभूत्यादीन् प्रति वीरजिनः । आव० म० १ अ० । विशेष० । आव० ।

**वेयपुरिस-** पुं० [वेदपुरुष]

वेदः-पुरुषवेदस्तदनुभवनप्रधानः पुरुषो वेदपुरुषः । पुरुषभेदे, ठा० ३ ठा० १ उ० ।

**वेयबंधय-** पुं० [वेदबन्धक]

वेद्यते अनुभवतीति वेदः, तस्य बन्ध एव बन्धकः ।

कति प्रकृती-वेद्यमानस्य कतिप्रकृतीनां बन्धो भवतीति तत्र निरूप्यते, ततस्तद्वेदस्य बन्ध इति प्रज्ञापनायाः षड्विंशतितमे पदे, पन्न० १

**वेयमाण-** त्रि० [वेद्यत्]

अनुभवति, भग० १८ श० ३ उ० ।

**वेयमुह-** न० [वेदमुख]

वेदानां मुख्यभागे ओंकारे, 'न विजाणसि वेयमुहं, न वि जन्नाणजं मुहं' इति जयघोषविजयघोषसंवादः उत्त० २५ अ० ।

**वेयरणी-१** स्त्री० [वैतरणी]

क्षारोष्णरुधिराकारजलवाहिन्यां नरकनद्याम् सूय० १ श्रु० ५ अ० १ उ० । आचा० । आव० ।

द्वारवत्यां नगर्यां कृष्णवासुदेवस्य विद्यायाम्, 'बारवती नगरी तत्थ कण्हो वासुदेवो तस्स दो विज्जा, धन्नंतरी, वेयरणी य । धन्नंतरी अभवितो एवं वेयरणी भवितो य ।' आव० म० १ अ० ।

आव० चू० ।

**वेयरणी-२** स्त्री० [वैतरणी]

पूरुधिरत्रपुताम्रादिभिरतितपात्कलकलायमानैर्भृतां विरूपं तरणं प्रयोजनमस्या इति वैतरणीति, यथार्थां नदीं विकुर्व्य तत्तारणे- न कदर्थयति नारकानिति । सम० १५ सम० ।

**वेयरणी-३** स्त्री० [वैतरणी]

त्रयोदशे परमाधार्मिके, पुं० । सूय० ।

**वेयवं-** पुं० [वेदवत्]

वेद्यते जीवादिस्वरूपमनेनेति वेदः आचाराङ्गाद्यागमस्तं वेत्तीति वेदवित् । आगमज्ञे, आचा० १ श्रु० ३ अ० १ उ०

**वेयवक्क-** न० [वेदवाक्य]

वैदिकपदसमूहे, त्रिविधानि वेदवाक्यानि ।

कानिचिद् विधिवादपराणि तत्राग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकाम इत्यादीनि विधिवादपराणि, अर्थवादस्तु द्विधास्तुत्यर्थवादो निन्दार्थवादश्चेत्यादि- वेदप्रतिपादितम् । आव० म० १ अ० । विशेष० ।

**वेयवत्त-** न० [वेदव्यक्त]

जृम्भिकग्रामस्य बहिर्ऋजुपालिकाया उत्तरकूले स्वनामख्याते चैत्ये, आचा० २ श्रु० २ चू० ।

**वेयवत्त-** न० [व्यावृत्]

जृम्भिकग्रामस्य बहिः ऋजुपालिकाया उत्तरकूले स्वनामख्याते चैत्ये, आचा० २ श्रु० ३ चू० ।

**वेयवि- पुं० [वेदविदु]**

वेद्यते जीवादिस्वरूपमनेनेति आचाराङ्गाद्यागमस्तं वेत्तीति वेदवित् । आचा० १ श्रु० ३ अ० १ उ० ।

आगमविद तीर्थकर, गणधर, चतुर्दशपूर्वविदि आचा० १ श्रु० ५ अ० ४ उ० । आव० म० ।

सर्वज्ञोपदेशवर्तिनि, आचा० १ श्रु० ४ अ० ४ उ० ।

**वेयवेय- पुं० [वेदवेद]**

कां प्रकृतिं वेदयमानः कति प्रकृतीर्वेदयते इत्यर्थप्रतिपादके प्रज्ञापनायाः सप्तविंशतितमे पदे, पत्र० १ पद

**वेयाईय- पुं० [वेदातीत]**

अवेदके, विशेषे० ।

**वेयागरणी- स्त्री० [वैयाकरणी]**

प्रवव्रजिषुः सन्देहनिराकरणात्प्रव्रज्यायाम्, 'वेयागरणीए सोमिल, पच्छा जल वायरे भगवं' पंच० भा० १ । पंच० चू० ।

**वेयाणुवीइ- स्त्री० [वेदानुवीचि]**

वेदः पुंवेदोदयस्तस्यानुवीचिः-आनुकूल्यम् । मैथुनाभिलाषे, सूय० १ श्रु० ४ अ० १ उ० ।

**वेयारणिया- स्त्री० [वैदारणी]**

विदारणं विचारणं वितारणं वा वैदारणी । क्रियाभेदे, ठा० २ ठा० १ उ० । आव० ।

**वेयाल- पुं० [वेताल]**

विकृतपिशाचे, पण्हा० ३ अ०

**वेयालग- न० [विदारक]**

दृ-विदारणे इत्यस्य..... विदारण, सूय० १ श्रु० २ अ० १ उ० ।

**वेयालण- न० [वेदारण]**

विशेषेण द्वैधीकरणे, सूय० १ श्रु० २ अ० १ उ० ।

**वेयालिय- न० [विदारणीय]**

विदारणकर्मणि, सूय० ।

**वेक्रिय- पुं० ।**

नरके परमाधार्मिकनिष्पादिते पर्वते, सूय० १ श्रु० ४ अ० २ उ० ।

**वैकालिक-**

अपराह्णादौ, विगतकाले जाते, दश० १ अ० ।

**वेयालिया- स्त्री० [वैतालिकी]**

विताले तालाभावे च भवतीति वैतालिकी । देवतायाः पुरतो वाद्यमानायां मङ्गलवीणायाम्, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । जंबू० ।

**वेयाली- स्त्री० [वैताली]**

नियताक्षरप्रतिबद्धे विद्याभेदे, सा च किल कतिभिजेपैर्दण्डमु-त्थापयति । सूय० २ श्रु० २ अ० ।

**वेयावच्च- न० [वैयावृत्य]**

व्यावृतस्य शुभव्यापारवतो भावः कर्म वा वैयावृत्यम्, भक्तादि-भिर्धर्मोपग्रहकारिवस्तुभिरुपग्रहरकरणे ठा० ५ ठा० १ उ० ।

साधूनामाहाराद्यानयनसाहाय्ये, उत्त० २९ अ० । न० । सम० ।

औषधपथ्यादिनाऽवष्टम्भे, । भग० । पण्हा० । गच्छा० । ठा० ।

धर्मसाधननिमित्तं व्यावृतभावे, दश० १ अ० । वव० ।

**वेयावच्चकम्मपडिमा- स्त्री० [वैयावृत्यकर्मप्रतिमा]**

भक्तपानादिभि-रुपष्टम्भक्रियाविषयेषु अभिग्रहविशेषे, सम० ।

**वेयावडिय- न० [वैयावृत्य]**

व्यावृतभावो वैयावृत्यम् । अन्नादिसम्पादने, दश० ३ अ० ।

भक्तपानवेषग्रहणतः साधुभ्यो दाने, ठा० ५ ठा० २ उ० ।

अङ्गमर्दनादिके, आचा० १ श्रु० ८ अ० ३ उ० । आव० ।

**वेयावत्त- त्रि० [व्यावृत्त]**

जीर्णे, 'जंभियगामस्स नगरस्स बहिया उज्जुवालियाए नईए तीरे वेयावत्तस्स चेइयस्स अदूरसामंते ।' कल्प० १ अधि० ६ क्षण० ।

**वेर- न० [वैर]**

वज्रे, कर्मविरोधे च । सूय० २ श्रु० ५ अ० । नाया० । आतु० ।

पूर्वोपार्जितद्वेषबन्धने, उत्त० ४ अ० । पण्हा० ।

अनुशयानुबन्धे, पण्हा० २ अ० ।

परस्परमसहनतया हिंस्यहिंसकभावाध्यवसाये, 'कलुसं ति वा वेज्जं ति वा वेरं ति वा पंको ति वा मलो ति वा एगट्ठा ।' जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । जंबू० । निसि० ।

मातापित्रादिवधोत्थे राज्यापहारादिभवे । आतु० ।

पुरुषादिवधसमुत्थे, । आचा० १ श्रु० ३ अ० २ उ० ।

अभिमानसमुत्थे वा अमर्षविशपरापकाराध्यवसाये, सम० ३४ ।

वैरहेतुत्वाद् गौणमैथुने, पण्हा० ४ अ०

**वेरंगिय- पुं० [वैरङ्गिक]**

संविग्रे, 'आबाल्यादिपि यः प्रसिद्धमहिमा वैरङ्गिकग्रामणीः, पृष्टः शाब्दिकपङ्क्तिषु प्रतिभटैर्जय्यो न यस्ता-किं कैः' कल्प० ३ अधि० ९

**वेरंझाण- न० [वैरध्यान]**

वैरं मातापित्रादिवधोत्थं राज्यापहारादिभवं वा तस्य ध्यानं वैरध्यानम् । पर्शुरामसुभौमादीनामिव दुर्ध्यानि, आतु० ।

**वेरग- न० [वैराग्य]**

तथाविधरागाभावो वैराग्यम् । आव० ४ अ० ।

कषायनिग्रहे, उव० ।

**वेरगकर- न० [वैराग्यकर]**

वैराग्यजनके उत्तराध्ययनादौ, बुह० १ उ० ३ । निसि० ।

**वेरगकहा- स्त्री० [वैराग्यकथा]**

विषयेष्वनभिष्वङ्गकारिकायां कथायाम्, आव० ४ अ० ।



**वेरगभावणा- स्त्री० [वैराग्यभावना]**

अनित्यत्वादिभावनारूपायां विषयेष्वरक्तभावनायाम्, आचा०२  
श्रु० ३ चू० ।

**वेरज्ज- न० [वैराज्य]**

विरुद्धराज्ये,  
वेरं जल्य उ रज्जे, वेरं जायं व जल्य रज्जं वा । जं च विरज्जइ रज्जे,  
ण विगयरायं च वेरज्जं । बुह० १ उ० ३ । निसि० । आचा०

**वेरदिट्ठि- स्त्री० [वैरदृष्टि]**

वैरप्रधाना दृष्टिर्वैरदृष्टिः । वैरबुद्धौ, पण्हा०३ अ०

**वेरबहुल- त्रि० [वैरबहुल]**

वैरानुबन्धप्रचुरे, दशा०६ अ० । सूय० ।

**वेरमण- न० [विरमण]**

सामान्येन रागादिविरतौ, उत्त०२ अ० । भग० । सम० ।  
औचित्येन रागादिनिवृत्तौ, भग०२ श०५ उ० ।  
असंयमादिभ्यो निवर्तने, तं० । ।  
सम्यग्ज्ञानश्रद्धानपूर्वकसर्वथा निवर्तने, दश०४ अ० ।  
प्राणेभ्यो जीवस्य व्युपरतौ, पण्हा०१ अ०

**वेरमणकप्प- पुं० [विरमणकल्प]**

द्रव्यतो भावतश्च विरमणस्यैव साध्यतायाम्, पंच०भा० ।

**वेरसेणा- स्त्री० [वैरसेना]**

नन्दनवने सागरचित्रकूटदेव्याम्, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**वेरागर- पुं० [वैराकर]**

वज्र रत्नोत्पत्तिभूमौ, नाया०१ श्रु०१६ अ० ।

**वेराणुगिद्ध- त्रि० [वैरानुगुद्ध]**

येन केन कर्मणा परोपतापरूपेण वैरमनुबध्यते जन्मान्तर  
शतानुयायि भवति । तत्र गृद्धे, सूय० १ श्रु० १० अ० ।

**वेराणुबन्धि- त्रि० [वैरानुबन्धिन्]**

वैरमनुबध्नन्ति तच्छीलानि च वैरानुबन्धीनि । जन्मशतसहस्र-  
दुर्मोचेषु, सूय०१ श्रु०१० अ० ।

**वेराणुबद्ध- त्रि० [वैरानुबद्ध]**

पूर्वोपार्जितद्वेषबन्धनबद्धे, उत्त०४ अ० ठा०

**वेरायतण- न० [वैरायतन]**

वैरानुबन्धे, सूय० २ श्रु०२ अ० ।

**वेरि- त्रि० [वैरिन्द्र]**

वैरमस्यास्तीति वैरी । ....  
सजीवोपमर्दकारिणि, सूय०१ श्रु०८ अ० । सानुबन्धशत्रुभावे,  
नाया०१ श्रु०२ अ० ।

**वेरियता- स्त्री० [वैरिकता]**

शत्रुभावानुबन्धयुक्ततायाम्, भग० १२ श० ८ उ० ।

**वेरुलिय- न० [वैडूर्य]**

नीलमणि, उत्त०३४ अ० । कल्प० । सूय० । आव०म० । पन्न० ।  
उव० । रा० । संथा० । आव० ।

वैडूर्यरत्नमये, त्रि० । रा० ।

वैडूर्यरत्नमया रुचिराः स्तम्भा यस्य तद् । वैडूर्यरत्नरुचिरस्तम्भम्,  
जीवा०३ प्रति ०४ अधि० ।

वैडूर्यमणिमयानि स्फाटिकपटलमयानि प्रत्यवतटानितटसमीप-  
वर्तिश्रोऽभ्युन्नतप्रदेशा यासां ता वैडूर्य मणिस्फटिकपटलप्रत्य  
वतटाः । जीवा० ३ प्रति०४ अधि० ।

**वेरुलियकंड- न० [वैडूर्यकाण्ड]**

रत्नप्रभायाः पृथिव्या वज्रमये प्रथ-मकाण्डे, ठा० १० ठा० ३ उ०

**वेरुलियकूड- न० [वैडूर्यकूट]**

महाहिमवतो वर्षधरपर्वतस्य वैडूर्यमये कूटे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**वेरोयण- पुं० [वैरोचन]**

बलिपालिते भवनपतिविशेषे, आव०म०१अ

**वेरोवरय- पुं० [वैरोपरत]**

अभिमानसमुत्थोऽमर्षविशपरापकाराध्यवसायो वैरं तस्माद् उप-  
रतः वैरोपरतः । शत्रुभावमती ते, आचा०१ श्रु०३ अ०१ उ० ।

**वेल्धर- पुं० [वेलन्धर]**

वेलां लवणसमुद्रशिखामन्तर्विशन्तीं बहिर्वा यान्तीमग्नशिखां च  
धारयन्तीति संज्ञात्वाद् वेलन्धराः । लवणसमुद्रशिखापातनिवार-  
केषु नागराजेषु, ठा० ४ ठा० २ उ० ।

**वेल्धरोववाय- पुं० [वेलन्धरोपपात]**

संक्षेपितदशानां नवमेऽध्ययने, ठा० १० ठा० ३ उ० ।  
यत्परावर्तयतः श्रमणस्य वेलन्धरनागराज उपतिष्ठते, वरदानाभि-  
मुखश्च भवति । अरुणोपपातशब्दवदत्र भावयितव्यम् । वव० ।

**वेल्ब- स्त्री० [वेलम्ब]**

दाक्षिणात्यानां वायुकुमाराणामिन्द्रे, भग० ३१० ८ उ० । ठा० । सम०  
यूपकाख्यमहापातालकलशदेवे, ठा० ४ ठा० २ उ० ।

**वेल्बग- पुं० [विडम्बक]**

विदूषके, उव० । नाया० । कल्प० । निसि० पण्हा० । रा० ।

**वेल्बगलिङ्ग- न० [विडम्बकलिङ्ग]**

भण्डादिलक्षणे, आव०३ अ० ।

**वेल्बसुहय- पुं० [वेलम्बसुखद]**

वेलम्बस्य वायुकुमारेन्द्रस्य संबन्धिनि मानुषोत्तरपर्वतस्य दक्षिणा-  
परस्यां दिशि रत्नोच्चयकूटे, ठा० ४ ठा० २ उ० ।

**वेलणअ- पुं० [व्रीडनक]**

व्रीयति लज्जामुत्पादयतीति लज्जनीयवस्तु दर्शनादिमभवे मनो-  
व्यलीकतादिस्वरूपे काव्यरसे, अणुओ० ।

**वेलवण-** न० [वेलपन]

आक्रीडने, वव०५ उ० ।

**वेलवासि-** पुं० [वेलवासिन्]

समुद्रवेलासन्निधिवासिनि वानप्रस्थे, भग०११ श०९ । निर० । उव०

**वेला-** स्त्री० [वेला]

जलवृद्धिलक्षणायाम् । नं० । ठा० ।

उदकशिखायाम्, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

लवणसमुद्रशिखायाम्, उत्त०२ अ० । पत्र० ।

स्वाध्यायकरणप्रस्तावे, उत्त० २ अ० ।

उचिते काले, निसि०१ उ० । अवसरे, विपा०२ श्रु०१ अ० ।

मर्यादायाम्, सूय०१ श्रु०९ अ० । आचा० ।

**वेलागय-** पुं० [वेलागत]

लोमपक्षिभेदे, जीवा० १ प्रति० ।

**वेलू-** पुं० [वेणु]

स्थलवंशे, निसि०१ उ० । आव०चू० । पत्र० ।

**वेलोचिय-** त्रि० [वेलोचित]

पाकातिशयतो ग्रहणकालोचिते, दश० ७ अ० । आचा० ।

**वेव-** पुं० [वेप]

वातसमुत्थे शरीरावयवानां कम्पे, आचा०१ श्रु०६ अ०१ उ० ।

**वेवंत-** त्रि० [वेपमान]

कम्पमाने, पिंड० ।

**वेविय-** त्रि० [वेपित]

कम्पिते, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**वेवियंसी-** स्त्री० [वेपिताङ्गी]

कम्पितगात्रायाम्, नाया०१ श्रु०१ अ०

**वेस-१** पुं० [वेश]

नेपथ्ये, उव० । रा० ।

**वेस-२** त्रि० [वेश]

वेशे साधौ, उव० ।

**वेस-३** पुं० [वैस्य]

ऋषभदेवोपदेशादश्रुत्युत्तावयस्कारादिशिल्पवाणिज्यवृत्त्या वेश-  
नाद् वैश्यः । वाणिज्यवृत्तौ तृतीयवर्णे, आचा० ६ श्रु०१ अ०१ उ० ।

**वेस-४** पुं० [वेष]

वस्त्राभरणादिभोगे, । ठा० ।

धवलाकारे, उव० । नेपथ्ये, नाया०१ श्रु०१ अ०नि० ।

निर्मलवस्त्रधारणे, जीवा०१ प्रति० ।

**वेस-५** पुं० [व्येष्य]

विशेषतोऽभिलषणीये, वव०३ उ० ।

वेषोचिते, भग०२ श०५ उ० ।

**वेस-६** त्रि० [द्वेष्य]

अप्रीतिकरे, विशेष० । आव०म० ।

**वेसइय-** पुं० [वैषयिक]

विषयरूपे आधारभेदे, मोक्षे इच्छास्तीत्यादीन्यस्योदाहरणानि ।

आव०म०१ अ० ।

**वेसण-** न० [वेशन]

चणकपिष्टे, बृह०१ उ०२ ।

**वेसता-** स्त्री० [द्वेष्यता]

शत्रुभावे, भग०१२ श०७ उ० ।

**वेसमण-** पुं० [वैश्रमण]

इन्द्रादीनामुत्तरदिग्लोकपाले, जीवा०३ प्रति० ४ अधि० । भग० ।

यक्षनायके कुबेरे, अणुओ० । आव०म० । नाया० सम० ।

ब्रह्मदत्तचक्रिभार्यायाः श्रीमत्याः पितरि, उत्त० १३ अ० ।

चतुर्दशेऽहोरात्रमुहूर्ते, सम०३० सम० । जंबू० । चंद० । ज्यो० ।

**वेसमणकाइय-** पुं० [वैश्रवणकायिक]

वैश्रवणस्याज्ञावर्तिनि देवे, भग० ३ श० ७ उ० ।

**वेसमणकुंडधारि-** पुं० [वैश्रवणकुण्डधारिन्]

वैश्रवणस्य धनदस्य कुण्डम्-आयतता तां धारयन्तीति । कुबेर  
स्वामिकेषु जृम्भकदेवेषु, कल्प० १ अधि०४ ।

**वेसमणकुमार-** पुं० [वैश्रवणकुमार]

कनकपुरराजस्य प्रियचन्द्रस्य पुत्रे, विषा०२ श्रु०६ अ० ।

**वेसमणकूड-** न० [वैश्रवणकूट]

वैश्रवणलोकपालनिवासभूतं कूटं वैश्रवणकूटम् । जंबू०१ वक्ष० ।  
क्षुद्रहिमवद्वर्षधरपर्वतस्य वैश्रवणदेवावासे अष्टमकूटे, ठा० २  
ठा० ३ उ० । जंबू० ।

जम्बूद्वीपे सीताया महानद्या दक्षिणकूले वक्षस्कारपर्वते, ठा० ४  
जम्बूद्वीपे मन्दरस्य दक्षिणे रुचकवरपर्वतकूटे, ठा० ८ ठा०३ उ०  
भरतैरवतविजयक्षेत्रदीर्घवैताल्यानां वैश्रवणदेवावासकूटा ठा० ९ ।

**वेसमणदत्त-** पुं० [वैश्रवणदत्त]

रोहीडकनगरराजे पुष्पनन्दीकुमार-पितरि, विषा०१ श्रु०९ अ० ।

**वेसमणदास-** पुं० [वैश्रवणदास]

सिंहसेनाचार्यदाहकरिष्टामात्यसेविते उज्जयिनीराजे, संथा० ।

**वेसमणदेवकाइय-** पुं० [वैश्रवणदेवकायिक]

वैश्रवणसामानिकदेव-परिवारभूतेषु देवेषु, भग०३ श०७ उ० ।

**वेसमणप्पभ-** पुं० [वैश्रवणप्रभ]

रतिकरपर्वतसमवक्तव्याके वैश्रवणदेवावासपर्वते, ठा० ।

**वेसमणभद्र-** पुं० [वैश्रवणभद्र]

स्वनामख्यातेऽनगारे यं प्रतिलाभ्य कौशाम्ब्यां धनपाल उत्तरभवे  
विजयपुरे वासवदत्तस्य नृपस्य पुत्रो भूत्वा सिद्धः । विषा०२ श्रु०४

**वेसमणोववाय-** पुं० [वैश्रवणोपपात]

संक्षेपिकदशानां दशमेऽध्ययने, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**वेसवण-** पुं० [वैश्रवण]

यक्षनायके कुबेरे, नाया० १ श्रु० ८ अ० । रा०

**वेसवडियगण-** पुं० [वैश्यपाटिकगण]

स्थविरशाखाया अर्द्धनिर्गते गणे, कल्प० २ अधि० ८ क्षण ।

**वेसविहार-** पुं० [वैश्याविहार]

वेश्यामन्दिरे, नाया० १ श्रु० १६ अ० ।

**वेससामंत-** पुं० [वैश्यासामन्त]

गणिकागृहसमीपे, दश० ५ अ० ।

**वेसागार-** न० [वैश्यागार]

वेश्याभवने, नाया० १ श्रु० २ अ० ।

**वेसाणिय-** पुं० [वैषाणिक]

लवणसमुद्रमध्येऽन्तर्द्वीपभेदे, नं० । ठा० । पन्न० । जीवा० । उत्त० ।

**वेसायण-१** पुं० [वैश्यायन]

वैश्यनामर्षिगोत्रापत्ये, कल्प० ।

**वेसायण-२** पुं० [वैश्यायन]

‘पुव्वासाढा वेसायणसगोत्ता’ चंद० १० पाहु० ।

**वेसालिय-** त्रि० [वैशालिक]

विशाल एव वैशालिकः । बृहच्छरीरे, सूय० ।

वीरजिने, सूय० १ श्रु० २ अ० ३ उ० ।

**वेसालियसावग-** पुं० [वैशालिकश्रावक]

भगवतो महावीरस्य श्रावक, भग० १ श० १० उ० ।

**वेसाली-** स्त्री० [वैशाली]

नगरीभेदे, यत्र वीरजिनेन्द्र एकादशं वर्षारात्रं कृतवान् ।

आव० म० १ अ० । आव० चू० । कल्प० ।

**वेसासिय-** न० [वैश्यासिक]

विश्वासः प्रयोजनमस्येति वैश्वासिकम् । उव० ।

विश्वासस्थाने, भग० ९ श० ३३ उ० । नाया० । तं० ।

विश्वासस्थानीकृते, विश्वासे भवानि योग्यानि वैश्वासिकानीति व्युत्पत्तेः । वव० ३ उ० ।

विश्वासप्रयोजने, ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

विश्वसनीये, नि० १ श्रु० १ वर्ग० १ अ० । विपा० । नाया० ।

अत्र लप्स्येऽहमिति विश्वासप्रयोजने । निश्चिते, कल्प० ३ अधि० ९

**वेसाहट्टाण-** न० [वैशाखस्थान]

योधस्थानेभेदे, यद्धि पाष्णी अभ्यन्तराभिमुखे कृत्वा समश्रेण्या करोति अग्रिमतले बहिर्मुखे ततो युध्यते तत् । वव० १ उ० । निसि०

**वेसाहिल-** पुं० [वैशाखिल]

काव्यसाहित्यशास्त्रकारे लौकिकर्षी, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**वेसिथी-** स्त्री० [वैश्यास्त्री]

सर्वसाधारणवनितायाम्, बृह० ४ उ० ।

**वेसिय-** त्रि० [व्येषित]

विशेषेण विविधैर्वा प्रकारैरेषितं व्येषितम् । ग्रहणैषणाप्राणेषणा विशोदिते, भग० ७ श० १ उ० ।

**वेसिय-** त्रि० [वैषिख]

वेषो-मुनिनेपथ्यं स हेतुर्लाभो यस्य तद् वैषिकम् । भग० ७ श० १ रजोहरणादिवेषमात्राल्लब्धे उत्पादनादिदोषरहिते, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ३ उ० । आव० म० । सूय० ।

**वेसिय-** पुं० [वैशिक]

मायाप्रधाने कलोपजीविनि वणिजे, सूय० १ श्रु० ९ अ० । आचा० ।

**वेसिया-** स्त्री० [वैश्या]

गणिकायाम्, आव० म० १ अ० ।

**वेसियाकरंडग-** पुं० [वैश्याकरण्डक]

वैश्यासत्कजतुपूरितस्वर्णाभरणादियुक्ते करण्डके, ठा० ४ ठा० ४

**वेस्स-१** पुं० [वैश्य]

वाणिज्योपजीविनि तृतीयवर्णे, सूय० १ श्रु० ९ अ०

**वेस्स-२** त्रि० [वैश्य]

वेषोचिते, सूय० २० पाहु० ।

**वेस्स-३** त्रि० [वैश्य]

अनिष्टे, बृह० ६ उ० । ठा० ।

**वेस्साउर-** न० [वैश्यापुर]

गणिकावासे, आव० १ अ० ।

**वेहम्म-** न० [वैधर्म्य]

विपरीतभावे, आव० ४ अ० ।

विपक्षे, विशेषे

**वेहल्ल-** पुं० [विहल्ल]

राजगृहे श्रेणिकस्य राज्ञः पुत्रे, अणुत्त० । ठा०

**वेहाणस-** न० [वैहायस]

विहायस्याकाशे भवं वृक्षशाखाद्युद्धन्धनेन यत्तन्निस्तवशाद् वैहायसम् । बालमरणभेदे, भग० २ श० १ उ०

**वेहाणस-** न० [वैहानस]

बालमरणभेदे, निसि० ११ उ० ।

**वेहाणसिग-** त्रि० [वैहायसिक]

विहायसि आकाशे तरुशाखादावाउल्लम्बनेन यन्मरणं भवति तद्वैहानसम् । तत्र भवाः वैहानसिकाः । उव० ।

**वेहास-** न० [विहायस्]

आकाशे, भग० १३ श० ३ उ० । ठा० ।

अन्तराले, नाया० १ श्रु० ८ अ० ।

**वेहासमरण- न० [वैहायसमरण]**

वृक्षशाखाद्युद्धत्वेन मरणे, सम० १७ सम० ।  
ऊर्ध्वं वृक्षशाखादौबन्धनमुद्धन्तं तदादिर्यस्य तरुगिरिभृगुप्रपाता-  
देरात्मजनितस्य मरणस्य तदुद्धन्नादि । उत्त० ४ अ० ।

**वोड- न० [वोण्ड]**

अविकासितावस्थे कमल, विशेष० । आव० म० ।  
कार्पासीकफल, नाया० १ श्रु० १७ अ० ।  
फल, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । तं० । । उव० ।

**वोडकपास- न० [वोण्डकार्पास]**

वोण्ड-वनी तस्य फलं पक्ष्माणि कल्पनीयानि कार्पासः । रूत,  
निसि० ३ उ० ।

**वोडय- त्रि० [वोण्डज]**

वोण्डं वनीफलं तस्माज्जातं वोण्डजम् । कार्पासिकसूत्रादौ,  
विशे० । अणुओ० ।, नाया० १ श्रु० १७ अ० ।

**वोक्स- पुं० [वोक्स]**

अनार्यदेशभेदे, तत्र जाते म्लेच्छभेदे । सूय० १ श्रु० ९ अ० । पत्र० ।

**वोक्सिजमाण- त्रि० [व्यपकृष्यमाण]**

अपकर्षेण गच्छति, भग० ५ श० ६ उ० । आचा० ।

**वोगडा- स्त्री० [व्याकृता]**

प्रकटार्थायाम्, पत्र० ११ पद ।  
लोकप्रतीतशब्दार्थायां भाषायाम्, भग० १० श० ३ उ० ।

**वोच्छिन्न- त्रि० [व्यवच्छिन्न]**

त्रुटिते, कल्प० १ अधि० ६ । आचा०  
खण्डिते, आचा० २ श्रु० १ चू० ७ अ० २ उ० ।  
अनुदिते, भग० ७ श० १ उ० । निसि० ।  
जीवरहिते, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० १ उ० ।  
सिद्धे, संथा० ।

**वोच्छिण्णदोहला- स्त्री० [व्यवच्छिन्नदोहदा]**

त्रुटितवाञ्छायाम्, भग० ११ श० ११ उ० ।

**वोच्छिण्णमडंब- न० [व्यवच्छिन्नमडम्ब]**

ग्रामाभ्यन्तरवर्त्ति ग्रामघोषादिरहिते, निसि० १ उ० ।

**वोच्छित्तिणय- पुं० [व्यवच्छित्तिनय]**

व्यवच्छित्तिप्रतिपादनपरो नयो । पर्यायास्तिकनय, नं० ।

**वोत्तु- अव्य० [वकुम्]**

गदितुमित्यर्थे, जीवा० १४ अधि० ।

**वोदान- न० [व्यवदान]**

विशेषेण अवदानं कर्म शुद्धिर्व्यवदानम् । उत्त० २९ अ० ।  
कर्मकचवरशोधने भग० २ श० ५ उ० । ठा० ।  
कर्मनिर्जरणे, भग० २ श० ५ उ० । उत्त० ।

**वोम- न० [व्योमन्]**

विशेषेणावनात् व्योम । भग० २० श० २ उ० ।  
आकाशे, विशेष० । आव० ।  
अम्बरे, अणुओ० । आव० क० ।

**वोलट्टमाण- त्रि० [व्युल्लठत्]**

विशेषत उल्लठतीव । अत्युल्लण्ठे, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**वोलित्ता- अव्य० [अतिक्रम्य]**

उल्लङ्घयेत्यर्थे, 'अडविं सपच्चवायं वोलेत्ता देसओवएसेण'  
आव० १ अ० ।

**वोसट्ट- त्रि० [व्युत्सृष्ट]**

त्यक्ते, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**वोसट्टकाय- पुं० [व्युत्सृष्टकाय]**

विविधैरुपायैः, विशेषेण वा परीषहोपसर्गसहिष्णुलक्षणेनोत्सृष्ट-  
स्त्यक्तः-कायः शरीरमनेनेति व्युत्सृष्टकायः । उत्त० १२ उ० ।  
परिकर्मवर्जनतस्त्यक्तशरीरे, ठा० ९ ठा० ३ उ० । आव० म० ।  
भग० । कल्प० । सूय० । आचा० । वव० ।

**वोसट्टतिट्ठाण- त्रि० [व्युत्सृष्टतिस्थान]**

व्युत्सृष्टानि परित्यक्तानि त्रीणि स्थानानि ज्ञानादिरूपाणि येन स  
व्युत्सृष्टतिस्थानः । पार्श्वस्थ, गच्छा० १ अधि० ।

**वोसट्टदेह- पुं० [व्युत्सृष्टदेह]**

व्युत्सृष्टो-भावप्रतिबन्धाभावेन त्यक्तश्च विभूषाकरणेन देहः-शरीरं  
यस्य स तथा । परीषहोपसर्गसहने कल्पितकाये, उत्त० १२ अ० ।

**वोसट्टमाण- त्रि० [व्युत्सृजत्]**

जलप्राचुर्यादेव विकसति स्फारीभवति वर्द्धमाने, भग० १२ श० ९  
परिपूर्णभूततया उल्लुठति, जीवा० ३ प्रति० ४ ।

**वोसरिय- त्रि० [व्युत्सृष्ट]**

कृतपुरीषप्रश्रवणोत्सर्गे, ओह० ।

**वोसिरण- न० [व्युत्सृजन]**

परित्यागे, आव० ४ अ० । दशा० ।  
संस्कारादिव्यापारकारणेन परित्यागे, आव० चू० ५ अ० ।  
आत्मनो दुष्टकर्मकारिणस्तदनुमतित्यागे, आव० ३ अ० ।  
मुहुर्मुहुः पुरीषोत्सर्गविधाने, ओह० ।

**वोसरियव्व- त्रि० [व्युत्सृष्टव्य]**

त्यक्तत्वे, बुह० ३ उ० ।

**व-कारादि शब्द-परिभाषा: समाप्ता:**

## स-कारादि शब्द-परिभाषा:

**स-** पुं० [स]

समासे साहित्यार्थस्य सहशब्दस्य स्थाने साऽऽदेशः । सूय०१ श्रु०२ उ० ।

तच्छब्दस्य प्रथमैकवचने स इति निर्देशे, निसि०१ उ० । दश

**सअंग-** न० [स्वाङ्ग]

शिरोऽधरादिषु स्वकीयेष्वङ्गेषु, सूय०१ श्रु०८ अ० ।

**सअंड-** त्रि० [साण्ड]

सह अण्डैर्वर्त इति साण्डम् । कीटिकादी, दशा०२ अ० ।

**सअट्ट-१** पुं० [स्वार्थ]

स्वप्रयोजन, 'इह खलु गाहावई अप्पणोसअ ट्टाए अगणिकायं उज्जालेज्ज वा ।' आचा०२ श्रु०१ चू०२ अ०१ उ० ।

**सअट्ट-२** त्रि० [सार्थ]

अर्थसहिते, सूय०२ श्रु०३ अ० ।

सप्रयोजने, कल्प०३ अधि० २

**सइ-** अव्य० [सकृत्]

एकवारे, । निसि० ।

सकृद्-एक वारम् । आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०१ उ० । वव० ।

स इति संसार्यसुमानसकृदनेकश उच्चैर्गोत्रमान् सत्कारार्ह उत्पन्न इति । आचा०१ श्रु०२ अ०३ उ० ।

सर्वेष्वपि विशेषावगमेषु द्रष्टव्ये, न० ।

**सइ-** अव्य० [सदा]

अनेनाकारस्येत्वम् । सर्वस्मिन् काले, आव०चू० ।

**सइ-** स्त्री० [सदा]

**स्मृति-** स्त्री० [स्मृति]

पूर्वाऽनुभूतार्थालम्बनप्रत्ययविशेष, न० । विशेष० ।

उपयोगलक्षणे, आव०६ अ० ।

संस्कारप्रबन्धसम्भूतमनुभूतार्थविषयं तदित्याकारवेदनं स्मृतिः ।

ठा० २ ठा० ३ उ० ।

स्मृतिरवबोध इत्यनर्थान्तरम् । आचा०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।

सइ ति वा मति ति वा पन्नति वा सव्वमेयं आभिणिबोहियं एतेहिं एगट्ठिएहिं भणितं ति । आव०चू०१ अ० ।

वासनानन्तरं कुतश्चित्तादृशार्थदर्शनादि कारणात् संस्कारस्य प्रबोधे यज्ज्ञानमुदयते तदेवेदं यन्मया प्रागुपलब्धमित्यादिरूपं सा स्मृतिः । न० ।

**सइअंतरद्धा-** स्त्री० [स्मृत्यन्तर्द्धा]

स्मृतेर्भ्रंशे यद्वर्तनं तत्स्मृत्यन्तर्द्धानम् । किं मया परिगृहीतं कया वा मर्यादया व्रतमित्येवमनुस्मरणमित्यर्थः । आव० ।

**सइअकरण-** न० [स्मृत्यकरण]

स्मृत्यन्तर्द्धाने, स्मृतेः स्मरणस्य सामायिकविषयाया अकरणमनासेवनं स्मृत्यकरणम् । । उत्त० ।

**सइआभास-** पुं० [स्मृत्याभास]

स्मरणाऽऽभासे, रत्ना० ।

**सइगाल-** न० [साङ्गार]

चारित्रेन्धनधूमाङ्गारमिव यः करोति भोजनविषयरागाग्नि सोङ्गार एवोच्यते तेन सह यद्वर्तते पानकादि तत् साङ्गारम् ।

अङ्गारदोषविशिष्टे, भग०६ श०७ उ० ।

'रागेकण सइगालं दोषेण सधूमगंति नेयव्वं' महानि० ३ अ० ।

**सइदिय-** पुं० [सेन्द्रिय]

इन्द्रियपर्याप्ति, ठा० २ ठा० २ उ० ।

संसारिणि च । ठा० २ ठा० १ उ० ।

**सइकरण-** न० [स्मृतिकरण]

स्मृत्युत्पादे, बुह०१ उ०३ ।

**सइकाल-** पुं० [स्मृतिकाल]

स्मर्यते यत्र भिक्षाकालः स स्मृतिकालः दश०५ अ०१ उ० ।

**सइज्झिता-** [देशी]

धान्यविशेषे, ठा० ।

**सइण्ण-** न० [सैन्य]

सेनायाः संघः । सेनासमुदाये, न० ।

**सइर-** न० [स्वैर]

स्वच्छन्दे, वव०७ उ० ।

**सइरचारि-** त्रि० [स्वैरचारिन्]

उद्भ्रामके, बुह०१ उ०३ ।

**सइरिन्-** त्रि० [स्वैरिन्]

स्वेच्छाचारिणि, गच्छा०१ अधि० ।

**सइविप्पहूण-** त्रि० [स्मृतिविप्रहीन]

अपगतकर्तव्यविवेके, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।

**सईण-** [देशी]

धान्यविशेषे, ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

**सउज्जोय-** त्रि० [सोद्योत]

सहोद्योतेन वस्त्वन्तरप्रकाशनेन वर्तन्त इति सोद्योतानि । सम० ।

बहिर्विनिर्गतवस्तुस्तोमप्रकाशकरेषु, पन्न०२ पद ।

प्रत्यासनन्वस्तूद्योतके, भग०२ श०८ उ० । जंबू० । रा० । सम० ।

बहिर्व्यवस्थितप्रत्यासन्नवस्तुस्तोमप्रकाशकरोद्योतसहिते, रा० ।

**सउण-** पुं० [शकुन]

लोमपक्षिभेदे, उव० । निसि० । नाया० ।

विवक्षितार्थसूचकनिमित्त, । आव० ।



**सउणग- पुं० [शकुनक]**

पक्षिविशेषे, निसि०५ उ० ।

**सउणरूय- न० [शकुनरूत]**

शकुनविचारे, शकुनरूतम् अत्र शकुनपदं रूतपदं चोपलक्षणं तेन वसन्तराजाद्युक्तसंग्रहः गतिचेष्टादिगुबलादिपरिग्रहश्च । जंबू०२ वक्ष० । सम० । कल्प० । उव० । नाया० । ठा० ।

**सउणि- पुं० [शकुनि]**

पक्षिणि, सूय०२ श्रु०२ अ० । उव० । जंबू० । आव० । तं० । बुह० । शकुनिः पक्षिविशेषो लावकादिकः । सूय०२ श्रु०१ अ० । शकुनिर्वेदोक्ततया गृहचटकवत् प्रतिसेवनां करोति । बुह०४ करण, पंच०भा० । गणि० । बवादिकरणेष्वन्यतमे, उत्त० ४ अ० । कृष्णचतुर्दशीरात्रौ सदावस्थितं शकुनिनामकं करणम् । आव० म० १ अ० । विशे० । जंबू० । सूय० । दुर्योधनराजमन्त्रिणि, नाया० १ श्रु०१६ अ० । शकुनीपारगोऽपि द्विजो गर्हितो भवति शकुनीशब्देन चतुर्दश-विद्यास्थानानि गृह्यन्ते । बुह० ३ उ० । आव० ।

**सउणिगणे- पुं० [शकुनिगण]**

पक्षिसमूहे, कल्प०१ अधि०३ क्षण ।

**सउणिपोस- पुं० [शकुनिपोष]**

पक्षिणो गुदे, शकुनिपक्षिण इव पुरीषोत्सर्गे निर्लेपतया पोसन्ति पोसः-अपानदेशः । पुस उत्सर्गे, पुसन्ति पुरीषमुत्सृजन्तीति त्युत्पत्तेः । ओह० ।

**सउणिय- पुं० [शाकुनिक]**

शकुनेन श्येनादिना मृगयां कुर्वन्ति इति शाकुनिकाः । पक्षिव्याधेषु, पण्हा० २ अ० । शकुनिभिः पक्षिभिश्चरतीति शाकुनिकः । सूय०२ श्रु०२ अ० ।

**सउणिया-स्त्री० [शकुनिका]**

पक्षिण्याम्, शकुनिविकुर्वणात्मिकायां परिव्राजकविद्यायाम्, वव० १ उ० ।

**सउत्तरोट्ट- पुं० [सोत्तरोष्ठ]**

सह उत्तरौष्ठेन सोत्तरौष्ठस्तस्मिन् । सश्मश्रुके, भग० १५ श० ।

**सउदय- त्रि० [सोदक]**

उदकेन सहिते, आचा०२ श्रु०१ चू०२ अ० ३ उ० । सह उदकेन वर्तत इति सोदकम् । उदकं भौमान्तरिक्षभेदाद-नेकप्रकारम् । दशा० १ अ० ।

**सउवक्रोस-स्त्री० [सोपक्रोश]**

अप्रशस्तविनयभेदे, ठा० ७ ठा० ३ उ०

**सउवचार- त्रि० [सोपचार]**

उपचारसहिते, बुह० ।

ततस्ते तासां वसतिं सोपचाराः प्रविशन्ति । सोपचारा नाम त्रिषुस्थानेषु प्रयुक्ता नैषेधिकीशब्दाः, यद्वा-संयतीभिर्येषां वक्ष्यमाण उपचारः प्रयुक्तस्ते सोपचारा उच्यन्ते । बुह० ३ उ० ।

**सउवद्व- त्रि० [सदुपद्रव]**

उपद्रवसहिते, तत्र तैः सदुपद्रवैर्वाऽतिभूतो व्याप्तः । नाया०१ श्रु० १ अ० ।

**सदोपद्रव- पुं०**

सर्वकालीने उपद्रवे, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**सं- अव्य० [सम्]**

समन्तात् प्रकर्षेणेत्यर्थे, उत्त०१ अ० ।

एकीभावे, सूर०१० पाहु० । रा० ।

सम्यगर्थे, सम०१ सम० ।

**संकंत- त्रि० [संक्रान्त]**

प्रविष्टे, ठा० ।

दिवि भवं दिव्यं स्वर्गगतवस्तुविषयं संक्रान्तं तत्र देवे प्रविष्टं भवतीति । ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

**सङ्गमान- त्रि०**

अतिमूढत्वाद् विपर्यस्तबुद्धौ, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ

**संकंति- स्त्री० [संक्रान्ति]**

संक्रमणं संक्रान्तिः । दश०१ अ० ।

**संकट्ट- त्रि० [संकष्ट]**

व्याप्ते, संथा० । रा० ।

**संकट्ट- त्रि० [संकृष्ट]**

विलिखिते, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**संकट्टिय- त्रि० [संकर्षित]**

क्षेत्रादाकर्षिते, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**संकड- त्रि० [संकट]**

संकीर्णे, पण्हा०२ अ० । कल्प० । सम० ।

**संकणिज्ज- त्रि० [शङ्कनीय]**

भयजनके, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**संकप्प- पुं० [संकल्प]**

अध्यवसाये, आव०३ अ० ।

परिणामे, पंच०चू०३ ।

विकल्पे, भग०९ श०३ उ० । नि० । नाया० ।

युक्तायुक्तविवेचने, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

चित्तस्वभावे ठा० ४ ठा० २ उ० ।

‘संकप्पो संरंभो’ भग०३ श०३ उ० । पंच०भा० ।

**संकल्पय- पुं० [संकल्पज]**

सङ्कल्पाज्जाते प्राणातिपाते, आव० ।  
संकल्पजः मनसा संकल्पाद् द्वीन्द्रियादिप्राणिनां मांसास्थिचर्म-  
नखवालदन्ताद्यर्थं व्यापादयतो भवति । आव० ६ अ० ।

**संकल्पिय- त्रि० [संकल्पत]**

आलोचिते, विशेष० ।

**संकम- पुं० [संक्रम]**

संक्रम्यते येन स संक्रमः । काष्ठचारे, निसि० १ उ० ।  
जलगर्तपरिहाराय पाषाणकाष्ठरचिते । दश० ५ अ० १ उ० ।  
विषमोत्तरणमार्गे, पण्हा० १ अ०  
जीवेन बध्यमानायाः कर्मप्रकृतेरनुभावेन प्रकृत्यन्तरस्थवीर्य-  
विशेषेण परिणमने, ठा० ।

**संकमण- न० [संक्रमण]**

असत्तादेः सत्तादौ क्षेपणरूपे संक्रमे, विशेष० ।  
संक्रान्तौ, विशेष० । आव० । निसि० । संथा० ।  
आक्रमणे, आव० ४ अ० ।  
पर्यटने, सूय० १ श्रु० ४ अ० २ उ० ।  
पिपीलिकामत्कुणादीनां स्फुटितस्य गमने, निसि० १३ उ० ।

**संकमणकाल- पुं० [संक्रमणकाल]**

अवान्तरसंक्रान्तिसमये, आव० १ अ० ।

**संकममाण- त्रि० [संक्रामत्]**

गच्छति, ठा० २ ठा० ४ उ० । जंबू० । जीवा० ।  
सम्पूकीभावेन क्रामन् गच्छन् । संगच्छमाने, जीवा० ३ प्रति० १

**संकर- पुं० [संकर]**

भिन्नजातीयानां मीलके, सूय० १ श्रु० १ अ० १ उ० । बुह० । विशेष० ।  
संमीलनशीले, बुह० ४ उ० ।  
संकीर्यते संपिण्ड्य संकरणं वा संपिण्डनं संकरः । गौणपरिग्रहे,  
पण्हा० ५ अ०

**संकरदूष- न० [शङ्करदूष्य]**

संकर इह प्रस्तावात्तृणभस्मगोमयाङ्गारादिमीलक उत्कुरुटिका  
इति यावत्, तत्र दूष्यं वस्त्रं संकरदूष्यम् । अत्यन्तनिकृष्टे  
निरूपयोगिनि लोकैरुत्सृष्टे वस्त्रे, उत्त० १२ अ० ।

**संकरसमय- पुं० [शङ्करसमय]**

भिन्नजातीयानां मीलकस्यैकवाक्यतायम्, यथा-वाममार्गादाव-  
नाचारप्रवृत्तावपि गुप्तिकरणमिति । सूय० १ श्रु० १ अ० १ उ० ।

**संकरसामि- पुं० [शङ्करसामिन्]**

नयनमनसोरपि प्राप्यकारित्ववादिनि दार्शनिकविदुषि, नं० ।

**संकरिसण- पुं० [शङ्करिषण]**

नवमे बलदेवे । सम० ।

**संकरी- स्त्री० [शङ्करी]**

विद्याभेदे, या हि पठितमात्रा एव दासदा-सीसखीपरिवारभूत्वा-  
ऽऽदेशं करोति, अन्तिकमागतं प्रत्यनीकं निवारयति, दूरस्थस्या-  
ऽपि चेष्टितं पृष्टा सती कथयति । उत्त० १३ अ० ।

**संकल- न० [शङ्कल]**

हस्त्यन्दुके, पण्हा० ५ अ०

**संकला- स्त्री० [शङ्कला]**

अयोमयनिगडे, सूय० १ श्रु० ५ अ० २ उ० ।

**संकलिय- त्रि० [संकलित]**

अनुबद्धे, अणुओ० । सूय० ।

**संकलिया- स्त्री० [संकलिका]**

अन्तादिपदयोः सङ्कलनात्सङ्कलिका । आदानपदाख्ये सूत्रकृता-  
ङ्गस्य पञ्चवशे अध्ययने, सूय० ।  
अस्वाध्ययनस्यान्तादिपदयोः संकलनात्संकलिकेति नाम कुर्वते  
तस्या अपि नामदिकश्चतुर्द्धा निक्षेपो विधेयः । सूय० १ श्रु० १५

**संका- स्त्री० [शङ्का]**

शङ्कनं शङ्का । संशयकरणे, आतु० ।  
सन्देहे, । निसि० । उत्त० । वव० ।  
भगवदर्हत्प्रणीतेषु पदार्थेषु धर्मास्तिकायादिष्वत्यन्तगहनेषु  
मतिर्दौबल्यात्सम्यगवधार्यमाणेषु संशये, आव० ६ अ० ।  
शङ्का भगवदर्हत्प्रणीतेषु पदार्थेषु धर्मास्तिकायादिष्वत्यन्तगह-  
नेषु मतिर्दौबल्यात् सम्यगवधार्यमाणेषु संशयः, किमेवं स्या-  
न्नैवमिति । शङ्का द्विविधा-देशशङ्का, सर्वशङ्का च । देशशङ्का-  
देशविषयाः, जीवाद्यन्यतमपदार्थकदेशगोचरेति । सर्वशङ्का-सर्व-  
विषया यथाऽति वा धर्मो नास्ति वेति । इयं च द्विधाऽपि शङ्का  
भगवदर्हत्प्रणीतप्रवचने सम्यक्तत्वं दूषयती-त्यतीचारः । आव० ।

**संकाठाण- न० [शङ्कास्थान]**

शङ्काविषये स्थाने, उत्त० ।

**संक्रामण- न० [संक्रामण]**

प्रस्तुतप्रमेये, ठा० ।  
संक्रामणं प्रस्तुतप्रमेयेऽप्रस्तुतप्रमेयस्य प्रवेशनं, प्रमेयान्तर्गमन-  
मित्यर्थः । अथवा प्रतिवादिमते आत्मनः संक्रामणं, परमताभ्य-  
नुज्ञानमित्यर्थः । तदेव दोष इति । ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**संक्रामणी- स्त्री० [संक्रामणी]**

संक्रमणकारके, विद्याभेदे, नाया० १ श्रु० १६ अ० ।

**संक्रामिय- त्रि० [संक्रामित]**

स्वस्थानात् परस्थानं नीते, आव० ४ अ० । ठा० ।

**संक्रामेजमाण- त्रि० [संक्रम्यमाण]**

हस्तादीनां संक्रमं कार्यमाणे, ठा० ३ ठा० १ उ० ।

**संकावय-** त्रि० [शङ्कापद]

किमेतन्मदारब्धमनुष्ठानं निष्फलं स्यादित्येवंभूतो विकल्पः—  
शङ्का, तस्याः पदं निमित्तकारणम् ।  
आर्हतप्रोक्तेष्वत्यन्त सूक्ष्मेष्वतीन्द्रियेषु केवलागमग्राह्येष्वर्थे  
संशीतौ, आचा०१ श्रु०५ अ०१

**संकास-** त्रि० [संकाश]

सदृशे, ठा० ९ ठा० ३ उ० । उत्त० । पत्र०

**संकासिया-** स्त्री० [शङ्काशिका]

श्रीगुप्ताचार्यान्निर्गतस्य चारणगणस्य तृतीयशाखायाम्, कल्प० ।

**संकिट-** त्रि० [संक्लिष्ट]

संकीर्णो, बुह०१ उ०३ ।

**संकिटवियारभूमि-** स्त्री० [संक्लिष्टविचारभूमि]

संयतानां संयतीनां चैकस्यामेव संज्ञाभूमौ, बुह०१ उ०३ ।

**संकिण्ण-** त्रि० [संकीर्ण]

व्याप्ते, पत्र०२ पद । विशेष० ।

मिश्रत्वे, विशेष० । भग० ।

शबलीकृतचारित्रे, बुह० ३ उ० ।

स्वपक्षपरपक्षव्याकुले क्षेत्रे, । भग० २५ श०७ उ० ।

**संकिंय-** त्रि० [शङ्कित]

एकभावविषयसंशयसंयुक्ते, ठा० ४ ठा० ३ उ० ।

शंसयक्रोडीकृते, बुह०२ उ० ।

शङ्किते, शङ्कायोग्ये वागुरादिके, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ० ।

शङ्कितो देशतः सर्वतो वा । संशयवति, ठा० ३ ठा० ४ उ० । सूय०

सम्भाविताधाकर्मादिदोषयुक्ते भक्तादिके, गच्छा० १ । आचा० ।

आधाकर्मादिशङ्काकलुषितो यदन्नाद्यादत्ते तच्छ्रङ्कितम् । जीवा० ।

शङ्कितं न विद्मः किमिदमुद्गमादिदोषयुक्तं, किं वा—नेत्येवमा-

शङ्कास्पदीभूतम् । दश० ८ अ० । पिंड० ।

**संकिंयपडिसेवणा-** स्त्री० [शङ्कितप्रतिसेवना]

एषणीयेऽप्यनेषणीयतया शङ्किते प्रतिसेवनायाम्, ठा० १० ठा०

**संकलिट-** त्रि० [संक्लिष्ट]

संक्लेशवति, पण्हा०२ अ० स्था

**संकलिटकम्म-** न० [संक्लिष्टकर्मन्]

छेदनभेदनादिके दुष्कर्मणि, जीवा०१ प्रति० ।

**संकलिटकाल-** पुं० [संक्लिष्टकाल]

गीतार्थसंविग्रहरहिते काले, पंच०चू० ४ ।

**संकलिटलेस्सा-** स्त्री० [संक्लिष्टलेश्या]

संक्लेशहेतौ लेश्यायाम्, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

**संकलिट्टायार-** पुं० [संक्लिष्टाचार]

संसर्गवशात् स्थापितादिभोजिनि वव०६ उ० ।

**संकलिस्समाण-** त्रि० [संक्लिश्यमान]

अविशुद्धिं गच्छति, भग० १३ श०१ उ० ।

उपशमश्रेणीतः प्रच्यवमाने, भग०२५ श०७ उ० ।

**संकिलेस-** पुं० [संक्लेश]

रागादिलक्षणे चित्तमालिन्ये, । आव० ।

तीव्ररागादिसंवेदने आरती, । सूय० । ठा० ।

**संकिलेसमाणय-** पुं० [संक्लिश्यमानक]

उपशमश्रेण्याः प्रतिपततः संयमभेदे, ठा० २ ठा० १ उ० ।

**संकु-** पुं० [शङ्कु]

कीलके, आव०म० १ अ० । कल्प० ।

**संकुइय-** न० [संकुचित]

संकुचनं संकुचितम् । गात्रसंकोचकरणे, दश०४अ० । आव०म० ।

शिखरीकृत्य संकोचनमुपगते, जीवा०३ प्रति०१ अधि०२ उ० ।

**संकुइयपसारिय-** न० [संकुचितप्रसारित]

नाट्यभेदे आव०म० १ अ० जंबू० ।

**संकुक-** पुं० [शंकुक]

शङ्कुकाविद्याप्रधाने वेताढ्यपर्वतस्योत्तरश्रेण्यां विद्याधरनिकाये,  
वैताढ्यपर्वतस्योत्तरश्रेण्यां विद्याधरनिकायविशेषाणां विद्यायाम्  
। आव०चू०१ अ०

**संकुचेमाण-** त्रि० [संकुचयत्]

हस्तपादादिसंकोचनतः संकोचं गच्छति, आचा०१ श्रु०६ अ०४

**संकुडिय-** त्रि० [संकुटित]

संकुचिते, जंबू०२ वक्ष० ।

संकुटितं-वलीलक्षणतरङ्गैः परिवेष्टितं च अङ्गं येषां । भग०७ श०

**संकुल-** त्रि० [संकुल]

स्वनामख्याते ग्रामे संकुलो नाम ग्रामः पिंड० ।

ग्रामवर्णकश्चेत्यम्-तत्र च ग्रामे कोद्रवा रालकाश्च  
प्राचुर्येणोत्पद्यते इति तेषामेव कूरं गृहे गृहे भिक्षार्थमन्तः  
साधवो लभन्ते । वसतिरपि स्त्रीपशुपण्डकविवर्जिता समभूत-  
लादिगुणैरतिरमणीया कल्पनीया च प्राप्यते । स्वाध्यायोऽपि  
तत्र वसतामविघ्नमभिवर्द्धते, केवलं शाल्योदनो न प्राप्यते इति  
न केचनापि सूरयो भरेण तत्रावतिष्ठन्ते । पिंड० ।

**संकेय-** त्रि० [संकेत]

केतं—चिह्नं केतेन सह वर्तत इति संकेतम् । सचिह्ने, आव०६  
अ० । ठा० ।

**संकोडना-** स्त्री० [संकोटना]

गात्रसंकोचने, पण्हा०३ अ० विपा० ।

**संकोडिय-** त्रि० [संकोटित]

संकोचिते, पण्हा०३ अ० आव० चू० ।

**संकोच-** पुं० [संकोच]

नमस्कारे, आव०क० ।

द्रव्यभावसंकोचनम् । द्रव्यसंकोचनम्-करशिरःपादादिसंकोचः, भावसंकोचनम्नस एकाग्रता । आव० १ अ० ।

**संख-१** पुं० [शङ्ख]

समुद्रोद्भवे । पत्र०१ पद ।

वृत्ते दीर्घाकृतौ, । निसि०१७ उ० ।

कम्बु निर०, ठा० ९ ठा० ३ उ० । उव० । उत्त० । पण्हा० ।

वासुदेवस्य पाञ्चजन्यः शंखः । उत्त०१० अ० ।

शंखः पाञ्चजन्यो द्वादशयोजनविस्तारध्वनिः । आव०म० । उत्त० ।

रा० । जंबू० । पण्हा० । नं० ।

**संख-२** पुं० [शङ्ख]

जलचरप्राणिविशेषे, निसि०१ उ० ।

**संख-३** पुं० [शङ्ख]

अक्षिप्रत्यासन्नावयवविशेषे नाया०१ श्रु०८ अ० ।

**संख-४** पुं० [शङ्ख]

एकोनविंशतितमे महाग्रहे, ठा० २ अ०३ । कल्प० । चंद० । सूर०

**संखडि-१** स्त्री० [संखडि]

संखड्यन्ते प्राणिनो यस्यां सा । अनेकसत्त्वव्यापत्तिहेतौ, उव० । आचा० । जीत० । ठा० ।

आहाराव-पाकस्थाने, आचा०१ श्रु०९ अ०१ उ० ।

**संखडि-२** स्त्री० [संस्कृति]

ओदनपाके, कल्प०३ अधि०९ क्षण ।

संखडिं दृष्ट्वा न गच्छेत् । दश०७ अ० ।

**संखडिकरण-** न० [संखडिकरण]

परमात्रे उपस्कृते, वव०१ उ० ।

**संखडग-** पुं० [शंखनक]

लघुशङ्खेषु, जीवा०१ प्रति० । पत्र० । निसि०

**संखणाम-** पुं० [शंखनाम]

स्वनामख्याते महाग्रहे, कल्प०१ अधि० ६ क्षण । सूर० ।

**संखतल-** न० [शंखतल]

शंखस्योपरितने भागे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० । रा० ।

शंखतलेन कम्बुरूपेण विमलेन पङ्कादिरहितेन सन्निकाशः शंकाशः सदृशो यः सः । ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

‘संखदलविमलसण्णिगाश्च’ शंखस्य यदलं खण्डलं तलं वा रूपं विमलं तत्सन्निकाशः सदृशो यः स तथा । भग०१५ श० ।

**संखधमग-** पुं० [शंखधमक]

शंखं ध्मात्वा ये जेमन्ति यदन्यः कोऽपि नागच्छतीति । वान-प्रस्थभेदे, उव० । निसि० । भग० ।

**संखपाणिलेह-** पुं० [शंखपाणिरेख]

शंखाङ्कितहस्ततले, जीवा०३ प्रति ०४ अधि० । पण्हा० ।

**संखमाल-** पुं० [शंखमाल]

सुखमसुखमायां जाते कल्पद्रुमजातिविशेषे, जंबू०२ वक्ष० ।

**संखय-** त्रि० [संस्कृत]

संस्कृत्यत इति संस्कृतम् । तद्वर्तयितुं त्रोटयितुं संधातुं वा उत्त० ।

**संखराय-** पुं० [शंखराज]

वाराणस्यां स्वनामख्याते राजनि, यो हि मल्लितीर्थकृता सह प्रव्रजितः । ठा० ७ ठा० ३ उ० । ‘संख-यरिसी’ ती० ।

**संखवण्ण-** पुं० [शंखवर्ण]

विंश महाग्रह, ठा० । कल्प० । सूर० । चंद० ।

**संखवण्णाभ-** पुं० [शंखवर्णाभ]

एकविंशतितमे महाग्रहे, ठा० ।

**संखवर-** पुं० [शंखवर]

द्वीपभेदे, अणुओ० ।

**संखवायण-** न० [शंखवादन]

शंखध्मानकरणे, निसि०१ उ० ।

**संखवाल-** पुं० [शंखपाल]

धरणस्य नागकुमारस्य चतुर्थे लोकपाले भूतानन्दस्य चतुर्थे लोकपाले च । ठा० ४ ठा० १ उ० ।

धरणनागकुमारेन्द्रस्योत्तरदिग्लोकपाले, भग०३ श०८ उ० । ठा० कालोदायिप्रभृतिष्वन्ययूथिकेष्वन्यतमे । भ०७ श० १० उ० । स्वनामख्याते आजीविकोपासके, भग० ८ श०५ उ० ।

**संखा-** स्त्री० [संख्या]

संख्यायन्ते परिच्छिद्यन्ते जीवादयः पदार्था येन तज् ज्ञानं संख्येत्युच्यते । सूय०१ श्रु०१३ अ० ।

सम्यक् ख्याप्यतेप्रकाश्यतेऽनयेति संख्या । प्रज्ञायाम्, आचा०१ श्रु०६ अ०४ उ० । सूय० ।

संख्यानं-संख्या । परिच्छेदे, सूय०१ श्रु० १२ अ० ।

गणनायाम्, आव०चू०१ अ० । आव०म० । अणुओ० । सूय० ।

**संखाईय-** त्रि० [संख्यातीत]

संख्यानं-संख्या तामतीता अतिक्रान्ताः संख्यातीताः । असंख्ये-येषु, विशेष० । आव०म० । विपा० ।

**संखाईयगुण-** त्रि० [संख्यातीतगुण]

संख्यातगुणेषु, विशेष० ।

**संखाण-** न० [संख्यान]

संख्यायते गण्यतेऽनेनेति संख्यानम् । गणिते, ठा० ४ ठा० ३ गुणितस्कन्धे, नि०१ श्रु०३ वर्ग०३ अ० । उव० । विशेष० । नाया० । कल्प० । ठा० ।

**संख्यादत्तिय-पुं० [संख्यादत्तिक]**

संख्याप्रधानाः परिमिता एव दत्तयः सकृद् भक्तादिक्षेपलक्षाद्  
ग्राह्या यस्य स संख्यादत्तिकः । ठा० ५ठा० १३० । भग० । सूय० ।  
परिमितभिक्षाप्रमाणेषु अभिग्रहविशेषधारकेषु साधुषु, ठा० ५

**संखाय- अव्य० [संखाय]**

सम्यग् ज्ञात्वैत्यर्थे, सूय० १ श्रु० २ अ० २ उ० ।  
अवधार्यैत्यर्थे, आचा० १ श्रु० ६ अ० ५ उ० । सूय० ।

**संखायण- पुं० [संखायन]**

शंखर्षिगोत्रापत्ये, सूर० १० पाहु० । चंद० । जंबू० ।

**संखालग- त्रि० [संखालग्र]**

शंखयोरक्षिप्रत्यासन्नावयवविशेषयाः सम्बद्धे, नाया० १ श्रु० ८ अ०

**संखित्त- पुं० [संक्षिप्त]**

ह्रस्वतां गते, चंद० १ पाहु० । भग० ।  
लघु कृते, ठा० ३ ठा० ३ उ० । उव० । जंबू० । रा० ।

**संखित्तविउलतेउलेस्स- त्रि० [संक्षिप्तविपुलतेजोलेश्य]**

संक्षिप्ता शरीरान्तर्गतत्वेन ह्रस्वतां गता विपुलाविस्तीर्णा  
अनेकयोजनप्रमाणक्षेत्राश्रितवस्तुदहनसमर्थत्वात्तेजोलेश्यावि-  
शिष्टतपोजन्यलब्धिविशेषप्रभवा तेजोज्वाला यस्य स तथा ।  
सूर० १ पाहु० । विपा० । रा० ।  
शरीरान्तर्लीनतेजोलेश्याके, भग० ।

**संखिय-पुं० [शांखिक]**

शंखवादनशिल्पमेषामिति शांखिकाः, शंखो वा विद्यते येषां  
माङ्गल्यचन्दनाधारभूतास्ते शांखिकाः । नाया० १ श्रु० १ अ० ।  
चन्दनगर्भहस्तेषु माङ्गल्यकारिषु, शंखवादकेषु च । भग० ९  
श० ३३ उ० । कल्प० । उव० । आव० चू० ।

**संख्या- स्त्री० [शांखिका]**

लघुशंखे, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । निसि० । जंबू० । रा० ।  
हस्तशंखे, भग० ५ श० ४ उ० । रा० ।

**संखुभिय- त्रि० [संक्षुभित]**

महामत्स्यमकराद्यनेकजलजन्तुजातिसम्मर्देन प्रविलोडिते, सम०

**संखेज- त्रि० [संखेय]**

संख्यायत इति संखेयः । आव० म० १ अ० । विशे० । नं० । सम०  
संख्यातवर्षसहस्रे, प्रश्न ०१ अ०

**संखेजकाल- पुं० [संखेयकाल]**

समयादिके शीर्षप्रहेलिकापर्यन्ते काले, जीवा० १ प्रति० ।

**संखेजकालसमय-पुं० [संखेयकालसमय]**

कालः कृष्णोऽपि स्यात् समय आचारोऽपि स्यादतः कालश्चासौ  
समयश्चेति कालसमयः संखेयो वर्षप्रमाणतः स चासौ काल-  
समयश्च संखेयकालसमयः । दशवर्षसहस्रादिके समये, ठा० ।

**संखेजकालसमयट्टिइय- त्रि० [संखेयकालसमयस्थितिक]**

कालः कृष्णोऽपि स्यात् समय आचारोऽपि स्यादतः कालश्चासौ  
समयश्चेति कालसमयः । संखेयो वर्षप्रमाणतः स यस्यां सा  
संखेयकालसमया स्थितिरवस्थानं येषां ते संखेयकालसमय-  
स्थितिकाः । दशवर्षसहस्रादिस्थितिकेषु, ठा० २ ठा० २ उ० ।

**संखेजजीविय- पुं० [संख्यातजीविक]**

संख्याता जीवा येषु सन्ति ते संख्यातजीविकाः । संख्यातजीव-  
परिग्रहीतेषु वनस्पतिषु, भग० ।

**संखेज्य- न० [संखेयक]**

गणनासंख्याभेदे, अणुओ० ।

**संखेजवित्थड- त्रि० [संखेयविस्तृत]**

संखेययोजनप्रमाणं विस्तृतं विस्तारो येषां ते । संखेय  
योजनप्रमाणविस्तृतेषु, जीवा० ३ प्रति० १ अधि० २ उ० ।

**संखेव- पुं० [संक्षेप]**

संक्षेपणं संक्षेपः । विशे० ।  
समासे, ठा० ५ ठा० ३ उ० । आचा० ।  
संग्रहे, उत्त० २८ अ० । ठा० ।

**संखेवपिंडियत्थ- पुं० [संक्षेपपिण्डितार्थ]**

संक्षेपेण समासेन, सामान्यरूपतयेत्यर्थः, पिण्डित एकत्रमीलित  
स्तात्पर्यमात्रव्यवस्थितोऽर्थोऽभिधेयं यस्य सः । पिंड० ।

**संखेवरूइ- स्त्री० [संक्षेपरूचि]**

संक्षेपः संग्रहस्तत्र रूचिः- संक्षेपरूचिः उपशमादिपदत्रय  
विषयिण्यां रूचौ, तद्वति च । त्रि० । । पन्न० ।

**संखेवियदसा- स्त्री० [संक्षेपिकदशा]**

दशाध्ययनप्रतिबद्धे ग्रन्थविशेषे ठा० ।

**संखेसरपासणाह- पुं० [शंखेश्वरपार्श्वनाथ]**

शंखेश्वरपुराधिष्ठिते पार्श्वनाथपरमेश्वरे, प्रति० ।

**संग- पुं० [सङ्ग]**

सज्यन्त इति सङ्गाः । मातृपित्रादिसम्बन्धे कर्मोपादानहेतुषु,  
सूय० १ श्रु० ३ अ० २ उ० ।  
मातापितृपुत्रकलत्रादिजनिते धनधान्यहिरण्यादिजनिते सङ्गे,  
आचा० १ श्रु० ६ अ० ५ उ० ।  
प्राणिनामासक्तौ कर्मानुषङ्गे, आचा० १ श्रु० ५ अ० ६ उ०  
पुत्रपौत्रादिजनिते सम्बन्धे, कामानुषङ्गे च । आचा० १ श्रु० ६ अ० २  
सबाह्याभ्यन्तरसंबन्धे, सूय० २ श्रु० १ अ० । उत्त० । ठा० ।  
परिग्रहे, आव० क० ४ अ० ।  
संगच्छते वशीभवति जीवो यस्मात् स सङ्गः । बन्धने, उत्त० २  
अ० । निसि० ।  
संगतिः । गच्छा० ।



**संगइ- स्त्री० [संगति]**

मित्रत्वे, नाया०१ श्रु०१ अ० । सूय० ।

सम्यक् स्वपरिणामेन गतिर्यस्य यदा यत्र यत्सुखदुःखानुभवनं सासंगतिः । नियति, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ० ।

**संगइय- त्रि० [साङ्गतिक]**

सङ्गतं विद्यते यस्याऽसौ साङ्गतिकः । परिचिते, ठा० ४ ठा० ३ सम्यक् स्वपरिणामेन गतिर्यस्य यदा यत्र यत्सुखदुःखानुभवनं सा सङ्गतिर्नियतिस्तस्यां भवं साङ्गतिकम् । नियतिकृते सुखदुःखादिके, सूय० १ श्रु० १ अ० २ उ०

**संगंझाण- न० [संगध्यान]**

सङ्गे परित्यक्तेऽपि पुनः सङ्गध्याने राजीमत्यां रथनेमेरिव नागिलां प्रति भवदेवस्येव वा ध्याने, आतु०

**संगंथ- पुं० [संग्रन्थ]**

स्वजनस्याऽपि स्वजने पितृव्यपुत्रश्यालादिके, आचा०१ श्रु०२

**संगतअ- पुं० [सङ्गतक]**

दासे, आव०चू०४ अ० ।

**संगपरिण्णा- स्त्री० [सङ्गपरिज्ञा]**

सङ्गः परिग्रहः तस्य परिज्ञा प्रत्याख्यानम् । आव० ।

**संगम- पुं० [सङ्गम]**

नदीमीलके, नाया०१ श्रु० १ अ० । उत्त० । ठा० । शालिभद्रस्यानुत्तरोपपातिकदशोक्तस्य पूर्वभवजीवे वत्सपाले, आव०१ अ० । आव० म० ।

**संगमथेर- पुं० [सङ्गमस्थविर]**

कोलकिनगरे नित्यवासिनि स्थविरे, आव०४ अ० । आव०चू० ।

**संगय- त्रि० [सङ्गत]**

उपपन्ने, चंद० २० पाहु० । ठा० । नाया० । सम्यग् ज्ञानदर्शनचारित्रात्मतया गतं सङ्गतम् । आचा०१ श्रु०१ अ०३ उ० । जीवा० । उव० । उचिते, नाया०१ श्रु०१ अ० । उपपत्तिभिरबाधिते, पण्हा०२ अ० । सम० । रा० । सङ्गतंगमनम् । सविलासे चंक्रमणे, सूर० २० पाहु० ।

**संगयपास- त्रि० [सङ्गतपार्श्व]**

सङ्गतौ देहप्रमाणोचितौ पार्श्वौ येषां ते तथा । जीवा०३ प्रति०४ देहप्रमाणोचितपार्श्वेषु, उव० ।

**संगयय- पुं० [सङ्गतक]**

उज्जयिन्यां नगर्यां देविलसुते, आव०४ अ०

**संगर- न० [संगर]**

समरे, उत्त० । सङ्केते, सङ्केतोऽभिधीयते । ओह० ।

**संगलिया- स्त्री० [सङ्गलिका]**

कलिकायाम्, अणुत्त० ।

**संगह- पुं० [संग्रह]**

संग्रहणं संग्रहः । स्वीकारणे, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

संग्रहो द्विधा-द्रव्यतो, भावतश्च । तत्र द्रव्यतः आहारोपध्या-दीनाम्, भावतः सूत्रार्थौ । वव० ३ उ० ।

**संगहएकय- पुं० [संग्रहैकक]**

एककरूपे संग्रहे, ठा० ४ ठा० २ उ०

**संगहकाल- पुं० [संग्रहकाय]**

संग्रहणं-संग्रहः, स एव कायः संग्रहकायः । कायभेदे, आव०५

**संगहकुसल- पुं० [संग्रहकुशल]**

उपध्यादिना साधूनां संग्रहकरण-निपुणे, वव० ।

**संगहज्झाण- न० [संग्रहध्यान]**

संग्रहोऽत्यर्थमतृष्णया धनमेलनं तस्य ध्यानम् । मध्यमवणिजि इव धनसंग्रहाध्यवसाये, अणुओ०

**संगहट्टया- स्त्री० [संग्रहार्थता]**

संग्रहः-शिष्याणां श्रुतोपादानं स ए-वार्थः प्रयोजनं तद्भाव-वस्तत्त्वम् । संग्रह एवार्थो यस्य स संग्रहार्थः । ठा० ५ ठा० ३

**संगहट्टाण- न० [संग्रहस्थान]**

संग्रहो ज्ञानादीनां शिष्याणां वा तस्य स्थानानि हेतवः संग्रह-स्थानानि ज्ञानशिष्ययोः संग्रहहेतौ, गच्छा० १ अधि० । ठा० ।

**संगहणी- स्त्री० [संग्रहणी] सं**

ग्रहगाथायाम्, सम० ।

**संगहदाण- न० [संग्रहदान]**

दानभेदे, संग्रहणं संग्रहो व्यसनादौ सहायकरणं तदर्थं दानं संग्रहदानम् ।-भेदादानमपि संग्रह उच्यते । ठा० १० ठा० ३ उ०

**संगहपरिण्णा- स्त्री० [संग्रहपरिज्ञा]**

संग्रहः स्वीकरणं- रिज्ञानं । अष्टम्यां गणिसम्पदि, ठा०८, दशा०

**संगहसुत्त- न० [संग्रहसूत्र]**

प्रभूतार्थसंग्राहके सूत्रे, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।

**संगहिय- न० [संगृहीत]**

सामान्याभिमुख्येन ग्रहणे अनुगमे, सर्वव्यक्तिष्वनुगतस्य सामान्यस्य प्रतिपादने, विशेष० । अणुओ० । आव०चू० ।

दृढीकृते, जंबू० ३ वक्ष० ।

शिष्यत्वेनाश्रिते, आभिमुख्येन गृहीते, आव०म०१ । आव०चू० । आश्रिते, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**संगाम- पुं० [संग्राम]**

रणशिरसि, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ० । ठा० आचा० । पण्हा० । महज्जनसमक्षकलहे, तं० । ।

**संग्रामकाल-** पुं० [संग्रामकाल]

परानीकयुद्धावसरे, सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ० ।

**संगामरह-** पुं० [संग्रामरथ]

संग्रामयोग्यरथ, यस्योपरिप्राकारानुकारिणी कटीप्रमाणा फलक मयी वेदिका क्रियते यत्रारूढैः संग्रामः क्रियते । अणुओ० । बुह०

**संगामसंकड-** न० [संग्रामसङ्कट]

संग्रामसहने, पण्हा०३ अ०

**संगामसीस-** न० [संग्रामशीर्ष]

संग्राममूर्धनि, आचा०१ श्रु०९ अ०३ उ० ।

संग्रामशिरसि परानीकनिशिताकृष्टकृपाणानि यत्र प्रभासञ्जलि-  
तोद्यतसूर्यत्विडुद्धृतविद्युन्नयनचमत् कृतिकारिणि कृतकरणेऽपि  
सुभटश्चित्तविकारं न विधत्ते एवं मरणकालेऽपि समुपस्थिते  
परिकर्मतः मतेरप्यन्यथाभावः कदाचित्स्यादतो यो मरणकाले  
न मुह्यते स पारगामी आचा०१ श्रु०६ अ०५ उ० ।

**संगामिय-** त्रि० [संग्रामिक]

संग्रामप्रयोजने, ठा० ५ ठा० १ उ० । भग० । नाया० ।

**संगामिया-** स्त्री० [संग्रामिकी]

या संग्रामकाले समुपस्थिते सामन्तादीनां ज्ञापनार्थं वाद्यते ।  
कृष्णवासुदेवस्य भेर्य्याम्, आव०चू०१ अ० । विशेष० । आव०म० ।

**संगार-** पुं० [सङ्गार]

सङ्केते, सूय० १ श्रु०१ अ०१ उ० । भग० । देविन्द० । आव०म० ।  
बुह० । ठा० । नाया० । आचा० ।

**संगारा-** स्त्री० [सङ्गारा]

प्रव्रज्याभेदे, पंच०भा०१ । पंच०चू० ।

**संगारदत्त-** त्रि० [सङ्गारदत्त]

सङ्गारः-सङ्केतः स दत्तो यस्य शैक्षस्य स संगारदत्तः । कृतसङ्केते  
शिष्यादिके, बुह० ३ उ० ।

**संगारपव्वज्जा-** स्त्री० [सङ्गारप्रव्रज्या]

प्रव्रज्याभेदे, ठा० ।

**संगारसमय-** पुं० [सङ्गारसमय]

सङ्गारः सङ्केतस्तद्रूपः समयः सङ्गारसमयः । सङ्केतरूपे समय  
भेदे, सूय० १ श्रु० १ अ० १ उ० ।

**संगास-** त्रि० [सङ्गाश]

सदृशे, उत्त०३४ अ० ।

छायाविशेषे, आव०म०१ अ० ।

**संगिय-** न० [स्वाङ्गिक]

परिभुक्तप्राये, ठा० ४ ठा० ३ उ० । आचा०

**संगिया-** स्त्री० [सङ्गिता]

सङ्गो यस्यास्ति न सङ्गीतद्भावः । द्रव्यादिषु सत्सङ्गे, भग०२ श०५

**संगिल्ल-** पुं० [सङ्ग]

समुदाये, वव० १ उ० । नाया० ।

**संगिल्लि-** पुं० [संगेल्लि]

अन्योऽन्यं हस्तावलम्बे, नाया०१ श्रु०३ अ०

**संगोवंग-** त्रि० [साङ्गोपाङ्ग]

शिक्षा १ कल्प २ व्याकरण ३ निरुक्त ४ छन्दो ५ ज्योतिष्कानयन  
६ लक्षणानि षडुपाङ्गानि तद्व्याख्यानरूपाणि तैः सह वर्तन्त  
इति साङ्गोपाङ्गाः । अणुओ० ।

**संगोवित्ता-** त्रि० [सङ्गोपयितु]

क्षेमस्थानप्रापयितरि, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**संगोवेमाणी-** स्त्री० [सङ्गोपयन्ती]

वस्त्राच्छादनगर्भगृहप्रवेशनादिभिः क्षेमप्रापिकायाम्, विपा०१  
श्रु०२ अ० ।

**संघ-** पुं० [सङ्घ]

सङ्घाते, वव०३ उ० ।

गुणसंघाते, वव०३ उ० ।

समुदाये, जीवा०३ प्रति०४ । पत्र० । गच्छा० । रा० । उव० ।

कीटिकादिगणसमुदाये, ठा० ५ ठा० १ उ० । भग० ।

सम्यग्दर्शनादिसमुचितप्राणिगणे सत्त्वसमूहे, ठा० ।

**संघट्ट-** पुं० [संघट्ट]

जङ्घार्द्धप्रमाणे उदके, ओह० । गच्छा० ।

यस्मिन् काले उत्तरतां पादतलादारभ्य जङ्घया अर्द्धं वुडति स  
संघट्टः । बुह०४ उ० । ठा० ।

**संघट्टंती-** स्त्री० [संघट्टयन्ती]

षट्कायान् शेषशरीरावयवेनेव स्पृशन्त्याम्, पिंड० ।

**संघट्टण-** न० [संघट्टन]

अविधिना स्पर्शने, आव०४ अ० ।

मनाक् स्पर्शने, गच्छा०२ अधि० ।

अन्योऽन्यं गात्रैः संहतीकरणे, भग०५ श०६ उ० ।

जीवानां संघट्टने प्रायश्चित्तम् । महानि०१ चू० ।

**संघट्टसुमिणसा-** स्त्री० [संघट्टसुमिनसा]

वल्लीभेदे, पत्र०१ पद ।

**संघट्टिय-** त्रि० [संघट्टित]

मनाक् स्पृष्टे, आव०४ अ० ।

संघर्षिते, भग० १९ श०३ उ० । आचा० ।

**संघड-** त्रि० [संघट]

निरन्तरे, आचा०१ श्रु०४ अ०४ उ० ।

**संघडणा-** स्त्री० [संघटना]

रचनायाम्, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।

**संघडदंसिन्-** त्रि० [संघटदर्शिन्]

निरन्तरदर्शिनि, आचा०१ श्रु०४ अ०४ उ० ।

**संघडिय-** त्रि० [संघटित]

सम्यग्घटिते परस्परं स्नेहेन सम्बद्धे, वयस्यादौ । उत्त०१४ अ० ।

**संघडियव्व-** त्रि० [संघटितव्य]

अप्राप्तेषु वस्तुषु कार्ययोगे, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**संघथेर-** पुं० [संघस्थविर]

संघकार्ये आप्रष्टव्ये स्थविरभेदे, पंच०भा० ५ । पंच०चू० ।

**संघदासखमासमण-** पुं० [संघदासक्षमाश्रमण]

पञ्चकल्पभाष्यनिर्मातरि स्वनामख्याते आचार्ये, पंच०भा० ५

**संघधम्म-** पुं० [संघधम्म]

संघधर्मो गोष्ठीसमाचारः, आर्हतानां वा गुणसमुदायरूपश्चतुर्वर्णो वा संघस्तद्धर्मस्तत्समाचारः । धर्मभेदे, ठा० १० ठा० ३

**संघपउम-** न० [सङ्घपद्म]

लोकमध्यवर्तित्वेलोकधर्मासंश्लेषतः पद्मरूपतां गते संघे, नं० ।

**संघपालिय-** पुं० [संघपालित]

स्थविरस्य आर्यवृद्धस्य गौतमगोत्रे स्वनामख्याते शिष्ये, कल्प०२

**संघपाहुणग-** पुं० [संघप्राधूर्णक]

कुलगणसंघथेरा संघपाहुणा भणन्ति । निसि०४ उ० ।

**संघयण-** न० [संहनन]

अस्थिसंचये, वज्रत्ररूपभाद्युपमाने उपमेये शक्तिविशेषे, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**संघयणजुय-** त्रि० [संहननयुत]

विशिष्टशरीरसामर्थ्यरूपेणसंहनेन युते स च व्याख्यानादिषु न श्राम्यतीति तत्त्वम्, पञ्चमः सूरिगुणः । गच्छा० ।

**संघयणणाम-** न० [संहनननामन्]

संहन्यन्ते दृढीक्रियन्ते शरीरपुद्गलाः कपाटादयो लोहपट्टिकादि-  
नेव येन तत्संहननं, तदेव संहनननाम । नामकर्मभेदे, पण्हा० ।

**संघरह-** पुं० [संघरथ]

मार्गागमितया रथरूपकेणोपमिते साधुसाध्वीश्रावकश्राविका  
रूपे समुदाये, नं० ।

**संघरिसममण-** न० [संघर्षगमन]

श्रावकयोः कः शीघ्रगतिरितिस्पर्धया गमने, जीत० ।

**संघरिससमुट्ठिय-** त्रि० [संघर्षसमुत्थित]

अरण्यादिकाष्ठनिर्मथनसमुद्भूते । अग्नौ ।, पत्र०१ पद ।

**संघवेयावच्च-** न० [संघवैयावृत्य]

संघकार्यकरणे, उव० ।

**संघसमुद्द-** पुं० [संघसमुद्र]

अक्षोभ्यतया समुद्ररूपकेण रूपिते, संघे, नं० ।

**संघाइम-** त्रि० [संघातिम्]

संघातेन निर्वृत्तं संघातिमम् परस्परतः पुष्पमालादिसंघाते-  
नोपजायमाने, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

संघातिमंयत् पुष्पं पुष्पेण परस्परं नालप्रदेशेन संयोज्यते ।  
जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

संघातिमं तु यत्परस्परतो नालसंघातनेन संघात्यते । भग०९  
श०३३ उ० । नाया० ।

कञ्चुकवत्बहुवस्त्रादिखण्डसंघातनिष्पन्ने । अणुओ० । दश० । निसि  
चोलकादौ, आचा०२ श्रु०२ चू०४ अ० ।

**संघाइय-** त्रि० [संघाति]

अन्योऽन्यं गात्रैरेकत्र लगिते, आव०४ अ० । आव०चू० ।

**संघाएंत-** त्रि० [संघातयत्]

अन्योऽन्यं गात्रैः संहतान् कुर्वन्ति, भग० ५ श०६ उ० ।

**संघाइ-** पुं० [संघाट]

पुष्पाकीर्णे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० । जंबू० ।

प्रकारे, संघाइ ति वा तय ति वा रागाए ति वा एगट्ठं ति ।  
बुह०१ उ०३ ।

युग्मे, संघाटशब्दो युग्मवाची । यथा साधु संघाट । जंबू०१ वक्ष०

**संघात-** पुं०

संहनने, आव०म०१ अ० ।

समूहे, अणुओ० । विशेषे । आव० ।

ज्ञाताध्ययने, सम०१८ सम० ।

**संघाइकरण-** न० [संघातकरण]

औदारिकवैक्रियाहारकरूपाणां शरीराणां संघाते, । आव०चू० ।

**संघाइग-** न० [संघाटक]

युग्मे, रा० । जीवा० ।

जलजबीजफलविशेषे नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**संघाइगणाय-** न० [संघाटकज्ञात]

संघाटकं श्रेष्ठिचौरयोरेकबन्धनबन्धत्वम् । ज्ञाताधर्मकथाया  
द्वितीयाध्ययने, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**संघाडी-** स्त्री० [संघाटी]

उत्तरीयविशेषे, ठा० ४ ठा० १ उ० । विशेषे

साधूपकरणविशेषे, बुह० ।

**संघाइम-** त्रि० [संघातिम्]

यत्परस्परतो नालसंघातेन संघात्यते । रा० । निसि० ।

**संघाइय-** त्रि० [संघाटित]

सम्यग् घाटिताः परस्परस्नेहेन सम्बद्धाः वयस्यादिषु, उत्त०१४

**संघाटिक-** त्रि०

सहचारिणि, जंबू०२ वक्ष० ।

**संघात- पुं० [संघात]**

वज्रर्षभनाराचलक्षणे संहनने, ठा० ८ ठा० ३ उ० । उव० ।  
उच्छ्रये, आव०५ अ० । अणुओ० ।  
एकीभावेनाधिके गात्रसंकोचने, आचा०१ श्रु०१ अ०५ उ० । ‘

**संघायकरण- न० [संघातकरण]**

आतानवितानीभूततन्तुसंघातेन पटस्येव करणे, सूय०१ श्रु०१  
अ०१ उ० । विशेष० ।

**संघायणा- स्त्री० [संघातना]**

धर्माधर्मास्तिकायनभःप्रदेशानां परस्परं संहत्यावस्थाने, विशेष० ।

**संघायपरिसाडकरण- न० [संघातपरिशाटकरण]**

शकटाद्यवयवसंघातने, अवयवपरिशाटने च । सूय०१ श्रु०१ अ०

**संघायविमोयोग- पुं० [संघातविमोचक]**

रागद्वेषात्मकाद् गुणसंघाताद् विमोचके, वव० ३ उ० ।

**संघार- पुं० [संहार]**

संहारो । बहुजनक्षये, तं० । ।

**संघिल्ल- त्रि० [संघातवत्]**

परस्परं मिलिते, वव०१ उ० । आव०चू० ।

**संचइय-१ त्रि० [सञ्चयित]**

सञ्चयः सञ्जातमेषामिति सञ्चयिताः, वव०१ उ

**संचइय-२ त्रि० [साञ्चायिक]**

घृततैलगुडाख्येषु बहुकालरक्षितुमशक्येषु द्रव्ये, कल्प०३ ।

**संचय- पुं० [सञ्चय]**

संग्रह, तृणकाष्ठतैलघृतमधुवस्त्रादीनामादिशब्दाद् बुसपल्ला-  
लादीनां संग्रहरूपः सञ्चयो बहुधा द्रष्टव्यः । बुह०१ उ०१ । ठा०  
सञ्चये मम्मणवणिगुदाहरणम् । दश०३ अ० ।  
सञ्ची यत इति सञ्चयः । गौणपरिग्रहे, पण्हा०५ अ० ।

**संचयग- न० [सञ्चयाग्र]**

सञ्चितस्य द्रव्यस्योपरि भागे, आचा०१ श्रु०६ अ०२ उ० ।

**संचयमास- पुं० [सञ्चयमास]**

प्रायश्चित्तापत्तितो यावन्तो मासाः शिष्येणासेवितास्तेषु मासेषु,  
निसि० २० उ० ।

**संचरंत- त्रि० [सञ्चरत्]**

भ्रमति, पण्हा०३ अ०

**संचारइ- त्रि० [शक्त]** समर्थे, भग०३ श०२ उ० ।

**संचार- पुं० [सञ्चार]**

द्वारापद्वारैर्जनप्रवेशनिर्गमे, नाया०१ श्रु०२ अ० ।  
सञ्चरके, बुह०६ उ० ।

**संचारसम- पुं० [सञ्चारसम]**

वंशतन्त्र्यादिभिर्गृहीते, स्वरे, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**संचालण- न० [सञ्चालन]**

विघट्टने, निसि०७ उ० ।  
पर्यालोचने, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**संचालिज्जमाण- त्रि० [सञ्चाल्यमान]**

स्थानात् स्थानान्तरनयनेन चाल्यमाने, नाया०१ श्रु०८ अ० ।

**संचितण- न० [सञ्चिन्तन]**

सम्यक्प्रकारेण चिन्तनायाम्, उक्त०३२ अ० ।

**संचिट्टण- न० [संस्थान]**

कालस्थितौ, भग०१२ श०९ उ० ।  
अवस्थितिकाले, भग०८ श०२ उ० ।

**संचिय- त्रि० [सञ्चित]**

राशीकृते, ठा० ३ ठा० १ उ० । आव० ।

**संछण्ण- त्रि० [सञ्छत्र]**

जलेनान्तरिते, जंबू०४ वक्ष० । रा० ।  
संछन्नानि जलेनान्तरितानि विसमृणालानि यासु ताः । इह  
विसमृणालशब्दात् पत्राणि पद्मिनीपत्राणि द्रष्टव्यानि ।  
।जीवा०३ प्रति०४ अधि० । रा० ।

**संछण्णदब्ब- त्रि० [संछन्नद्रव्य]**

परिच्छेदविशेषकलिते, वव० ३ उ०

**संछिण्णासोय- त्रि० [संछिन्नस्रोतस्]**

सम्यक् छिन्नानि अपनीतानि भावस्रोतांसि संवृतत्वात् कर्माश्रव  
द्वाराणि येन स तथा । सूय० १ श्रु० १६ अ० ।

**संछोभ- पुं० [संक्षोभ]**

संक्रामणे, बुह०१ उ०२ ।  
प्रक्षेपे, वव० ९ उ० ।

**संछोभपरंपरय- न० [संक्षोभपरम्परक]**

परम्परया स्थानान्तरसंक्रमणे बुह०३ उ० ।

**संजय- पुं० [संजय]**

मृषावादाद्युपरतिमति मोक्षसाधके, पण्हा०१ अ० ।

**संजई- स्त्री० [संयती]**

साध्व्याम्, बुह०१ उ०३ ।

**संजमकरण- न० [संयमकरण]**

पञ्चाश्रवविरमणादिगुणकरणे, उक्त० १३ अ० ।

**संजमकुसल- पुं० [संयमकुशल]**

पृथिव्यादिसंयमकुशले, वव० ।

**संजमघाइय- त्रि० [संयमघातिक]**

संयमोपघातिके, प्रव०२६७ द्वार

**संजमघायण- त्रि० [संयमघातक]**

संयमविनाशके, आव०४ अ० ।

**संजमचरय-** त्रि० [संयमचरक]

सप्तदशप्रकारसंयमानुष्ठायिनि, दश ०१० अ० ।

**संजमज्जवगुण-** त्रि० [संयमार्जवगुण]

संयमार्जवो गुणो यस्य । संयमऋजुभावप्रज्ञाशुद्धे, दश०६ अ० ।

**संजमजाया-** स्त्री० [संयमयात्रा]

संयमप्रवृत्तौ, पण्हा०१ अ० ।

संयमानुपालने, सूय०२ श्रु०१ अ० ।

**संयमयात्रामात्राप्रत्यय-** त्रि० ।

संयमयात्रामात्राप्रत्ययो यत्र । भग०७ श०१ उ० । सूय० ।

**संजमजीविय-** न० [संयमजीवित]

संयमवत्तया जीवने, आचा० ।

संयमजीवितं तद् दुष्प्रतिवृहणीयं कामानुष्कजनान्तर्वर्तिना दुःखेन निष्प्रत्यूहः संयमः प्रतिपाल्य इति । आचा०१ श्रु०२ अ०५

**संजमजोग-** पुं० [संयमयोग]

चरणव्यापारे, समितिगुप्तिरूपे आचरणे, आव०चू० ।

**संजमऽट्ट-** पुं० [संयमार्थ]

संयमः प्रेक्षोत्प्रेक्षाप्रमार्जनादिलक्षणस्तदर्थम् । ठा० ६ ठा० ३३०

**संजमट्टाण-** न० [संयमस्थान]

संयमः सामायिकच्छेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धिसूक्ष्म सम्प-  
राय यथाख्यातरूपः तदेव स्थानम् । आचा०१ श्रु०२ अ०१ उ० ।  
ज्ञानदर्शनचारित्रपरिणामात्मकध्यवसायविशेष, वव०१३० । पिंड०

**संजमण-** न० [संयमन] सप्तदशप्रकारसंयमकरणे, आचा०१ श्रु०५  
अ०३ उ० । रज्जुनिगडादिभिर्बन्धने, आव०४ अ० ।

**संजमत्तिय-** न० [संयमत्रिक]

परिहारविशुद्धिसूक्ष्मसम्पराययथाख्यातचारित्रलक्षणे कल्प०१

**संजमधुवजोगजुत्तया-** स्त्री० [संयमधुवयोगयुक्तता]

संयमचरणं तस्मिन् ध्रुवो-नित्यो योगः-समाधिस्तद्युक्तता ।  
सन्ततोपयुक्ततायाम्, उत्त०१ अ० । वव० ।

चरणे नित्यं समाध्युपयुक्ततायाम्, ठा० ८ ठा० ३ उ० । दशा० ।

**संजमबहुल-** त्रि० [संयमबहुल]

संयमम्-आश्रवविरमणादिकं बहूनिबहुसंख्यं यथाभवत्येवं  
लाति गृह्णातीति विशुद्धविशुद्धतरं पुनः पुनः संयमं कुर्वन्तीति  
संयमबहुलाः, पृथिव्यादिसंरक्षणप्रचुरेषु, पण्हा० ३ अ० ।

संयमेन पृथिव्यादिसंरक्षणलक्षणेन बहुलः प्रचुरो यः स तथा ।  
संयमो वा बहुलः प्रचुरो यस्य स तथा । ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**संजमब्ध-** त्रि० [संयमभ्रष्ट]

दूरीकृतचारित्रगुणे, गच्छा० २ अधि० ।

**संजमभउव्वेयणकर-** त्रि० [संयमभयोद्वेजनकर]

संयमभयोद्वेजनशीले, भग०१ श०३३ उ० ।

**संजमभारवहणट्टया-** स्त्री० [संयमभारवहमार्थता]

संयम एव भारस्तस्य वहनं-पालनं स एवार्थः संयमभार-  
वहनार्थस्तद्भावस्तत्ता संयमपरिपालननिमित्ते विनयभेदे, भग०७

**संजमलज्जट्ट-** पुं० [संयमलज्जार्थ]

संयमार्थे लज्जार्थः । संयमरूपलज्जार्थे, दश० ।

**संजमविघ्नकर-** पुं० [संयमविघ्नकर]

संयमविघातकारिणि, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ०

**संजमविराहणा-** स्त्री० [संयमविराधना]

मूलोत्तरगुणविराधनायाम्, निसि०१६ उ० ।

**संजमाऽणुट्टायि-** त्रि० [संयमानुष्ठायिन्]

संयमानुष्ठानकर्तारि, आचा० १ श्रु०५ अ०३ उ० ।

**संजमासंजम-** पुं० [संयमासंयम]

द्विःस्वभावात् देशसंयमे, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**संजमिता-** अव्य० [संयम्य]

संयमनं कृत्वेत्यर्थे, सूय०१ श्रु०१० अ०

**संजमुत्तम-** त्रि० [संयमोत्तम]

सर्वविरतौ, सम० ।

प्रधानसंयमे, सम०

**संजमुत्तर-** त्रि० [संयमोत्तर]

संयमेन देशविरतिलक्षणेन धर्मेण उत्तरः प्रधानः । परिपूर्ण  
संयमे, उत्त० ५ अ० ।

**संजमेरिया-** स्त्री० [संयमेर्या]

सप्तदशविधसंयमानुष्ठाने, असंख्येयेषु संयमस्थानेषु एकस्मात्  
संयमस्थानादपरसंयमस्थानगमने, आचा०२ श्रु०१ चू०३ अ०१

**संजमोच्छाहनिच्छिय-** त्रि० [संयमोत्साहनिश्चित]

संयमे उत्साहो वीर्यं निश्चितोऽवश्यंभावी येषां ते संयमोत्साह  
निश्चिताः । सर्वविरतिं प्रति निर्णीत, सम० ।

**संजमोवगरण-** न० [संयमोपकरण]

संयममात्रार्थे साधूपकरणे, आचा०१ श्रु०२ अ०५ उ० ।

**संजय-** त्रि० [संयत]

सम्-एकीभावेन यतः संयतः क्रियायां प्रयत्नवान् । आव०३ ।  
यम उपरमे । संयच्छति स्म सर्वसावद्ययोगेभ्यः सम्यगुपरमते  
स्मेति संयतः । न० । आचा० ।

प्राण्युपमर्दान्निवृत्ते, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ० ।

सावद्यव्यापारेभ्यो निवर्तिते, उत्त०१२ अ० वव० ।

सर्वविरते, ठा० ४ उ० । सम० ।

सम्यग् यतमाने, आचा०१ श्रु०१ अ०२ उ० ।

षट् कायरक्षणोपायरक्षणे सम्यग्यते, बुह०१ उ०२ । आव० म० ।

इन्द्रियनोइन्द्रियसंयमवति, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०९ उ० ।



**संजयभद्र-** पुं० [संजयभद्र]

साध्वनुकूले संयते, निसि० ११ उ० ।

**संजयविरयपच्चक्खायापावकम्म-** पुं० [संयतविरतप्रत्याख्यातपापक-

मन्] सामस्त्येन यतः संयतः सप्तदशप्रकारसंयमोपेतः, विविधमनेकधा द्वादशविधे तपसि रतो विरतः तथा प्रतिहतं स्थितिहासतो ग्रन्थिभेदेन विनाशितं प्रत्याख्यातं हेत्वभावतः पुनर्वृद्ध्यभावेन निराकृतं पापकर्मज्ञानावरणीयादि । दश० ।

**संजयाऽऽभास-** पुं० [संयताभास]

संयतवदवभासमाने असंयते, आचा०१ श्रु०२ अ०१ उ० ।

**संजयासंजय-** पुं० [संयतासंयत]

देशविरते, भग०६ श०३ उ० । न०

**संजलण-** पुं० [संज्वलन]

ईषज्वलनात्संज्वलनाः, सपदि ज्वलनाद् वा संज्वलनाः । परीषहादिसंपाते चारित्रिणमपि ज्वलयन्तीति संज्वलनाः । अल्पतरेषु क्रोधादिषु कषायेषु, विशेष० । ठा० ।

**संजलणा-** स्त्री० [संज्वलना]

ज्ञानादिगुणोद्दीपनायाम्, उत्त०१ अ० ।

**संजाय-** त्रि० [सज्जात]

उत्पन्ने, उव० ।

**संजायसङ्घ-** त्रि० [सज्जातश्रद्ध]

प्रकर्षेण जातश्रद्धे, सूर० १ पाहु० । रा० ।

**संजीवणी-** स्त्री० [सज्जीवनी]

जीवितदात्र्याम्, सूय० १ श्रु०५ अ०२३

**संजुक्त-** त्रि० [संयुक्त]

मिश्रिते उत्त०१८ अ० । संबद्धे, उत्त०१ अ० ।

**संजुतद्वयसम्मत-** न० [संयुक्तद्रव्यसम्यक्त्व]

द्वयोर्द्रव्ययोः संयोगो गुणान्तराधानाय नोपमर्दाय उपभोक्तु-र्मनःप्रीतये पयःशर्करयोरिव तत्संयुक्तद्रव्यसम्यक् । द्रव्यसम्य-त्त्वभेदे, उत्त०२८ अ० ।

**संजुत्ताहिगरण-** पुं० [संयुक्ताधिकरण]

अधिक्रियते नरकादिष्वनेनेत्यधिकरणं वासः उदूखलमुशल-शिलापुत्रकगोधूमयन्त्रादिसंयुक्तमर्थक्रियाकरणयोग्यम्, संयुक्तं च तदधिकरणं चेति समासः आव०६ अ० । उवा० ।

**संजुत्ताहिगरणया-** स्त्री० [संयुक्ताधिकरणता]

अर्थक्रियाकरणक्षमे चतुर्थेऽतिचारे, उवा०१ अ० ।

**संजुय-** पुं० [संयुग]

संग्रामे, वव०१ उ० ।

**संजुय-** त्रि० [संयुत]

बहुविधैर्व्यञ्जनादिभिः सहिते, उत्त० १२ अ० ।

**संजूह-१** न० [संयूथ]

निकायविशेषे, अनुयोगभेदे, भग० १५ श० ।

**संजूह-२** न० [संयूथ]

दृष्टिवादस्याष्टाशीतिसूत्रेषु सप्तमे सूत्रे, सम० प्र० सम० ।

**संजोइत्ता-** अव्य० [संयोज्य]

संयोगं कृत्वेत्यर्थे, ठा० १० ठा० ।

**संजोग-** पुं० [संयोग]

संयुज्यते संयोजनं वा संयोगः । आचा०१ श्रु०२ अ०१ उ० ।

समुचितो योगः । सूय० ।

परस्परोचितपदार्थानां योगे, उव० ।

जीवस्य सम्बन्धे, आचा०१ श्रु०८ अ०१ उ० । उत्त० ।

नानाभवेषु पुत्रकलत्रमित्रशरीरादिसम्बन्धे, आतु० । आचा० ।

सूय० । विशेष० । उत्त० ।

पुत्रकलत्रमित्रादिजनिते सम्बन्धे, आचा०१ श्रु०४ अ०१ उ० ।

केनचित्सह सम्बन्धे, आव०४ अ० ।

ममत्वकृते सम्बन्धे, आचा०१ श्रु०२ अ०६ उ० ।

**संजोगगम-** त्रि० [संयोगगम]

संयोगगमं संयोगतो गमः प्रकारो यस्य तत्तथा । वव०१ उ० ।

**संजोगट्टि-** त्रि० [संयोगार्थिन्]

संयुज्यते संयोजनं वा प्रयोजनं सोऽस्यास्तीति संयोगार्थी । तत्र धनधान्यहिरण्यद्विपदचतुष्पदराजभार्यादिसंयोगस्तेनार्थी तत्प्र-योजनः । वव० ५ उ०

**संजोगदिट्ठपाठि-** पुं० [संयोगदृष्टिपाठिन्]

क्रियाशास्त्रयोर्निपुणे यो ह्यनेकान् संयोगान् व्यापार्यमाणान् दृष्टवान् यश्च तत्पाठं पठितवान् तादृशे, वव० ५ उ० ।

**संजोगमूला-** स्त्री० [संयोगमूला]

संयोगो नानाभवेषु पुत्रकलत्रमित्रशरीरादिसम्बन्धरूपः स एव मूलं यासां ताः संयोगमूलाः । आतु० ।

**संजोगरय-** त्रि० [संयोगरत]

पुत्रकलत्रमित्रादिजनितसम्बन्धरते, आचा०१ श्रु०४ अ०१ उ० ।

**संजोगसंबन्ध-** पुं० [संयोगसम्बन्ध]

संयोगस्य संबन्धोऽभिलाषः । नानाभवेषु पुत्रकलत्रमित्र शरी-रादि सम्बन्धेच्छायाम्, आतु० ।

**संजोणिय-** त्रि० [संयोनिक]

सह योन्युत्पत्तिस्थानेन वर्तते इति संयोनिकः । संसारिणि, ठा० २ ठा० १ उ० ।

**संजोयणा-** स्त्री० [संयोजना]

ग्रासैषणायाः प्रथमे दोषे, यथा-क्षीरदग्धिघृतादि द्रव्यं सम्मील्य रसलौल्येन भुङ्क्ते । उत्त० २४ अ० । जीत० । निसि० । पिंड० ।

**संयोजनादोषदुष्ट-** त्रि० [संयोजनादोषदुष्ट]

संयोजना द्रव्यस्य गुणविशेषार्थं द्रव्यान्तरेण योजनं सैव दोषस्तेन दुष्टं यत् । द्रव्यान्तरसंयोगदोषदुष्टे, भग० ७ श०१ उ० ।

**संयोजनाहिरण्य- स्त्री० [संयोजनाधिकरणिकी]**

संयोजनं हलगरविषकूटयन्त्राङ्गानां पूर्वनिर्वर्तितानां मीलनं तदेवाधिकरणक्रिया संयोजनाधिकरणक्रिया । भग० ३ श०३ उ०

**संज्ञच्छेदावरण-पुं० [संज्ञाच्छेदावरण]**

संज्ञाच्छेदः-संज्ञाविभागः स आव्रियते येन स संज्ञा-च्छेदावरणः । चन्द्रे, वव०७ उ० ।

**संज्ञप्पम- न० [संज्ञाप्रभ]**

शक्रलोकपालस्य सोमस्य विमाने, भग० ३ श०७ उ० ।

**संज्ञभ्राराग- पुं० [संज्ञाभ्राराग]**

वर्षासु संज्ञासमयभाविनि अभ्रारागे, जीवा०३ । जंबू० । पन्न० ।

**संज्ञा- स्त्री० [संज्ञा]**

सायंकाले, पन्न०१७ पद०४ उ० । जीवा० ।

**संज्ञागय- न० [संज्ञागत]**

यत्र नक्षत्रे सूर्योऽनन्तरं स्थास्यति तादृशे नक्षत्रे, आव०म०१ अ०  
यत्र नक्षत्रे सूर्यस्तिष्ठति तस्माच्चतुर्दशं पञ्चदशं वा नक्षत्रं संज्ञागतमित्यन्ये, विशेष० । जीत० । निसि० । गणि० ।

**संज्ञाणुराग- पुं० [संज्ञाणुराग]**

संज्ञाभ्रारागे, 'संज्ञाणुरागवसणा वाउकुमारा मुण्येयव्वा' पन्न०२

**संज्ञाराइ- स्त्री० [संज्ञारात्रि]**

संज्ञा येन राजते-शोभते दीप्यतेऽनेन संज्ञारात्रिः । रजन्याम्, निसि० १६ उ० ।

**संज्ञाविगम- पुं० [संज्ञाविगम]**

रात्रौ, निसि० १६ उ० ।

**संज्ञाविराग- पुं० [संज्ञाविराग]**

संज्ञारूपो विरुद्धस्तिमिररूपत्वाद् रागः संज्ञाविरागः । संज्ञासमये, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**संटक- पुं० [संटङ्क]**

प्रबन्धसम्बन्धे, आचा०१ श्रु०२ अ०१ उ० । विशेष० ।

**संठवण- न० [संस्थापन]**

संस्करणे, विशेष० । सूय० ।

**संठवित्तए- अव्य० [संस्थापयितुम्]**

गृहस्थभावेन द्रव्यलिङ्गाच्यावयितुमित्यर्थे, सूय०१ श्रु०२ अ०१

**संठाण- न० [संस्थान]**

संतिष्ठतेऽनेन रूपेण पुद्गलात्मकं वस्त्विति संस्थानम् । उत्त०१ आकारविशेषे, मुखवृत्त्या पुद्गलरचनाकारे, आव०४ अ० । अत्यद्भुते रचनाविशेषे, आव०म० । सम० । उव० । ठा० । अणुओ० ।

**संठाणगसंकमण- न० [संस्थानकसंकमण]**

पिपीलिकादीनामण्डादिसञ्चलने, संठाणगसङ्क्रमणं पिपीलिय गमक्रोडगादीणं भण्णति । निसि०१३ उ० ।

**संठाणज्झयण- न० [संस्थानाध्ययन]**

अनुत्तरौपपातिकदशानां प-ञ्चमाध्ययने, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**संठाणणाम- न० [संस्थाननाम]**

संस्थानमाकारविशेषस्तेष्वेव गृहीतसंघातितवद्देहेष्वौदारिका-दिषु पुद्गलेषु संस्थानविशेषो यस्य कर्मण उदयात्प्रादुर्भवति तत्संस्थाननाम । । पन्न० ।

**संठाणपरिणाम- पुं० [संस्थानपरिणाम]**

संस्थानरूपे परिणामे, पन्न० २३ पद ।

**संठाणविचय- न० [संस्थानविचय]**

संस्थानं लोकाकाशस्येव धर्माधर्मयोर्जीवानां समचतुरस्रादि, अजीवानां परिमण्डलादि, कालस्य मनुष्यक्षेत्राकृति । उव० ।

**संठावंत- त्रि० [संस्थापयत्]**

अविनाशयति, निसि०१७ उ० ।

**संठिइ- स्त्री० [संस्थिति]**

व्यवस्थायाम्, चंद०१ पाहु० । सूर० । बुह० ।

**संठिय- त्रि० [संस्थित]**

विशिष्टसंस्थानवति, नाया०१ श्रु०१ अ० । उवा० ।

स्वप्रमाणतया स्थिते, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ० ।

व्यवस्थिते, भग०१ श० १ उ० । रा० ।

सम्यक् स्वप्रमाणतया स्थितौ संस्थितौ सुश्लिष्टौ मांसलौ गूढौ गुल्फौ गुलुकौ येषां ते । जीवा०३ प्रति० । तं० । रा० । पण्हा० ।

संस्थाने, आकारे, रा० । जंबू० । पण्हा० ।

**संड- न० [षण्ड]**

स्वण्डे, वने, जंबू०३ वक्ष० ।

**संडंस- पुं० [सन्दंश]**

अयस्कारोपकरणे, ओह० । आव०म० ।

**संडंसतुंड- पुं० [सन्दंशतुण्ड]** सन्दंशाकारं तुण्डं येषां ते तथा । सन्दं-

शाकारमुखेषु पक्षिषु, उत्त०१९ अ० । पण्हा० ।

**संडासग- पुं० [सन्दंशक]**

अयस्कारस्य लोहग्रहणदण्डे, विशेष० । आव०चू० । निसि० । दश० जानुपुतापादरूपकोणत्रयाकलिते जानुसंदंशके, जिनकल्पिक-स्योत्कुटुकनिविष्टस्य जानुसंदंशकादारभ्य पुतादृष्टं च छादयित्वा स्कन्धस्योपरि यावता न प्राप्यते एतावत्तदीयकल्पस्य दैर्घ्यप्रमाणम्, अयं च संदंशक उच्यते । बुह०३ उ० ।

**संडिज्झ- न० [सण्डिज्झ]**

बालक्रीडास्थाने, दश०५ अ०१ उ० ।

**संडिल्ल-** पुं० [शाण्डिल्य]

नन्दिपुरप्रतिबद्धेषु जनपदेषु पत्र०१ पद  
कौशिकगोत्रे श्यामार्यशिष्ये, नं० ।  
दशपुरनगरे स्वनामख्याते ब्राह्मणे, उत्त०१३ अ० ।

**संडेय-** पुं० [षण्डेय]

षण्डपुत्रे, षण्डे च । उव० । नाया० ।

**संडेवग-** पुं० [संडेवक]

पाषाणादेरन्यस्मिन् पाषाणादौ पादविक्षेपे, । ओह० ।

**संड-** पुं० [षण्ड]

सण्डः संस्कृते तु षण्ड इति भावः । बुह०४ उ० । अणुओ० ।

**संड-** न० [षण्ड]

खण्डे, वने, जंबू०३ वक्ष० । आव० ।

**संणद्ध-** त्रि० [सत्रद्ध]

कृतसन्नाहे, उव० । रा० ।  
संनद्धः सन्नाहबद्धः कशाबन्धनतो वर्मितो वर्मतया कृतोऽङ्गे  
निवेशनात् कवचः कङ्कटो येन स तथा । भग०७ श०९ उ० ।  
उव० । जीवा० ।

**संणाहपट्ट-** पुं० [सन्नाहपट्ट]

विहारे उपधेः शरीरेण सह बन्धनार्थे उपधौ, बुह०३ उ० ।

**संणिभ-** त्रि० [सन्निभ]

सदृशे, उत्त० १९ अ० ।

**संण्णत्ति-** स्त्री० [संज्जत्ति]

प्रज्ञप्तौ, प्रतिबोधने, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**संत-** त्रि० [शान्त]

क्रोधविकाररहिते, । नाया० । उत्त० ।  
अन्तर्वृत्त्या । कल्प० १ अधि०६ क्षण ।  
इन्द्रियोन्द्रियैः शमं प्राप्ते, आचा०१ श्रु०९ अ०१ उ० ।।

**संत-** त्रि० [श्रान्त]

सामान्येन श्रमार्ते, नाया०१ श्रु०१ अ० । कल्प० । आव०चू० ।  
देहतः खिन्ने, विशेष० । नाया० ।

**संत-** त्रि० [सत्]

विद्यमाने, सूय०२ श्रु०१ अ० । ठा० ।  
स्वायत्ते, भग० ९ श०३३ उ० ।  
मुनौ, साधौ, विशेष० । ठा० । आव०म० । निसि० । भग० ।  
शोभने, सूय०१ श्रु०१ अ० । नाया० । आव०  
सौम्यमूर्तौ, नाया०१ श्रु०५ अ० ।  
प्रशस्ते, उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सदिति । सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।

**संतअसंतकज्जवाय-** पुं० [सदसद्कार्यवाद]

प्रागुत्पत्तेः कथंचिदसतः कथंचित्सतः कार्यस्योत्पादवादे, सूय०

**संतकज्जवाय-** पुं० [सत्कार्यवाद]

प्रागुत्पत्तेः सत्कार्यमित्येवं वादे, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० । आचा०

**संतगुणनासग-** पुं० [सद्गुणनाशक]

गुणापालके, पण्हा० २ अ०

**संतच्छण-** न० [सन्तक्षण]

समेकीभावेन तक्षणे, सूय०१ श्रु०५ अ० १ उ० ।

**संतज्जण-** न० [संतर्जन]

विग्रहस्य परित्राणं मत्तो भविष्यतीत्यादिरूपे राज्यव्यवहार्यभेदे,  
ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

**संतति-** स्त्री० [सन्तति]

सन्ताने, विशेष० ।

उत्तरोत्तरनिरन्तरोत्पत्तिरूपप्रवाहे, उत्त०१ अ० ।

**संतत्त-** त्रि० [संतत्त]

समन्तात् तप्ते, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ० ।

**संतपय-** न० [सत्पद]

सच्च तत्पदं च सत्पदम् । विद्यमानार्थे पदे, विशेष० ।

**संतपयपरूवणया-** स्त्री० [सत्पदप्ररूपणता]

सच्च तत्पदं च सत्पदं तस्य प्ररूपणं सत्पदप्ररूपणम् । गत्यादि  
द्वारेषु विचारणम् । विशेष० । आव०म० । आव०चू० । नं० । अणुओ० ।

**संतमस-** न० [संतमस]

अन्धकारे, 'संतमसं अंधकारं' उत्त० ४९ गाथा ।

**संतय-** त्रि० [सन्तत]

व्याप्ते, उत्त०२ अ० ।

निरन्तराले, विशेष० । आचा० । उत्त० ।

**संतर-** न० [सान्तर]

सहान्तरेण व्यवधानेन वर्तते इति सान्तरः । सव्यवधाने, उत्त०५  
स्वस्वकृते त्रिकालावस्थाने, बुह० २ उ० ।

**संतरण-** न० [सन्तरण]

नद्यादेः पारगमने, आव०

**संतरित्तए-** अव्य० [सन्तरित्तुम्]

भूयःप्रत्यागन्तुमित्यर्थे, साङ्गत्येन नावादिना तरितुमिति, बुह०४

**संतरुत्तर-** त्रि० [सान्तरुत्तर]

आन्तरः सौत्रकल्पः, उत्तर और्णिकस्ताभ्यां सहितः सान्तरु-  
त्तरः । सौत्रौर्णिकाभ्यां प्रावृते, कल्प० ३ अधि०९ । आचा० ।

**संतसन-** न० [संत्रसन]

त्रासप्राप्तौ, उत्त०२ अ० ।

उद्वेगे, उत्त०२ अ० ।

**संतसार-** त्रि० [सत्सार]

शोभनसारे, सूय०२ श्रु०१ अ० ।

**संतसोय-** त्रि० [शान्तश्रोतस्]

शान्तप्रवाहे, द्वा०११ द्वा० ।

**संताण-** पुं० [सन्तान]

तन्तुजाले, आचा०१ श्रु०८ अ०६ उ० । आव० । आव०चू० ।  
प्रवाहे, आव०४ अ० । उव० ।

**संताणकर-** त्रि० [सत्त्राणकर]

आर्तजनपरित्राणकारिणि, बुह०१ उ० २ ।

**संताभाव-** पुं० [सद्भाव]

सद्भावे सन्ति साधवः परं न धर्मकथादिषु कुशला इत्येवंरूपे  
विद्यमानस्यार्थस्याभावे, वव० ६ उ० ।

**संताव-** पुं० [सन्ताप]

मानसे क्लेशे, आव०म०१ अ० ।  
संतापः एकत्र शोकदिकातोऽन्यत्र चाऽग्निकृतो नित्यं यत्र स  
संतापनित्यकः । पण्हा०३ अ०

**संतावणी-** स्त्री० [सन्तापनी]

सन्तापयतीति संतापनी । नरककुम्भायाम्, सूय०१ श्रु०५ अ०२

**संतासंतसत्ति-** पुं० [सदसच्छक्ति]

सद्भावेनासद्भावेन वाऽशक्ते, तत्र सद्भावो न लब्धमन्नं प्रान्तं तेन  
क्षामीभूतोऽसद्भावो यथा-तृप्ति भक्ष्यस्यैवाभावः स तथा  
क्षामीभूतो विहर्तुमशक्नुवन् । वव०४ उ० ।

**संति-** स्त्री० [शान्ति]

मोक्षे, ठा० ८ ठा० ३ उ० । सूय० ।  
कर्मदाहो-पशमे, सूय०१ श्रु०३ अ०४ उ० ।  
अशेषद्वन्द्वोपरमे, सूय०१ श्रु०१४ अ० ।  
क्रोधजये, सूय०१ श्रु०१६ अ० ।  
द्रोहविरतौ, पण्हा०१ अ० ।  
शमनं-शान्तिः । अहिंसायाम्, आचा०१ श्रु०६ अ०५ उ० ।  
शान्तिः-उपशमप्रशमसंवेग निर्वेदानुकम्पास्तिक्याभिव्यक्ति -  
लक्षणसम्यग् दर्शनज्ञानचरणकलापैः शान्तिरुच्यते । निराबाध-  
मोक्षाख्यशान्तिप्राप्तिकारणत्वात् । आचा०१ श्रु०१ अ०७ उ० ।  
अशेषकर्मापगमे मोक्षे, आचा०१ श्रु०२ अ०४ उ० ।  
मिथ्यात्वादिदाबालनविध्मापनात् सामायिके, आव०म०१ अ० ।  
भरते वर्षे वर्तमानावसर्पिण्यां जाते षोडशे तीर्थकरे, आव०चू०१

**संतिकम्म-** न० [शान्तिकर्मन्]

दुरितोपशमक्रियायाम्, भग०११ श० ११ उ० ।  
अग्निकारिकादिके । पण्हा०२ अ०  
ग्रहोपशमनार्थे बलिकरणादिके, ठा० ५ ठा० ३ उ० ।  
विघ्नोपशमकर्मणि नाया०१ श्रु०१ अ० ।  
होमादिके, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**संतिकम्मन्त-** न० [शान्तिकर्मन्ति]

शान्तिकर्मगृहे, यत्र शान्ति कर्म क्रियते । आचा०२ श्रु०१ चू०२

**संतिगय-** त्रि० [शान्तिगत]

पूर्वोक्तप्रकारां शान्तिं गताः प्राप्ताः शान्तिगताः । ज्ञानदर्शन  
चारित्राख्येषु मोक्षमार्गे स्थितेषु आचा० १ श्रु० १ अ० ७ उ० ।

**संतिगिह-** पुं० [शान्तिगृह]

शान्तिकर्मस्थाने, भग०३ श०७ उ० ।

**संतिघर-** न० [शान्तिगृह]

शान्तिकर्मस्थाने, कल्प०१ अधि०४ ।  
यत्र राज्ञां शान्तिकर्म होमादि क्रियते । ठा० ५ ठा० १ उ०

**संतिगिष्वाण-** न० [शान्तिनिर्वाण]

शान्तिः-कर्मादाहोपशमस्तेन च निर्व्वाणं मोक्षपदं सर्वद्वन्द्व-  
पगमरूपम् । अष्टकर्मक्षयरूपे मोक्षे, सूय०१ श्रु०३ अ०४ उ० ।

**संतिण-** त्रि० [संतीर्ण]

मुक्ते, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ० ।

**संतिणसम-** त्रि० [संतीर्णसम]

सांसारिकसुखस्य दुःखमयत्वद्रष्टरि मुक्तप्राये, सूय०१श्रु०२ अ०३

**संतिविरड-** स्त्री० [शान्तिविरति]

शान्तिरूपशमःक्रोधजयस्तत्प्रधाना प्राणातिपातिभ्यो विरतिः  
शान्तिविरतिः । क्रोधजयार्थं विरमणे सूय०२ श्रु०१ अ० ।

**संतिसेणीय-** पुं० [शान्तिश्रेणिक]

स्थविरस्यार्यशिष्यस्य प्रथमे शिष्ये कल्प०२ अधि०८ क्षण० ।

**संतुयट-** त्रि० [सन्त्वग्वर्त]

शयिते, नाया०१ श्रु०१३ अ० ।

**संतुयट्टण-** न० [सन्त्वग्वर्तन]

सत्यकृत्वग्वर्तने शयने, वव०५ उ० ।

**संतोस-** पुं० [संतोष]

अल्पेच्छायाम्, ठा० १० ठा० ३ उ० ।  
सर्वद्वन्द्वोपरमरूपे, सूय०२ श्रु०६ अ०

**संतोसि-** पुं० [सन्तोषिन्]

येन केनचित् संतुष्टे अवीतरागे, सूय०१ श्रु०१२ अ० ।

**संथड-** त्रि० [संस्तुत]

कृतसंस्तारे, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०३ उ०

**संथडिय-** त्रि० [संस्तुत]

समर्थे, तद्विवसं पर्याप्तभोजिनि च । बुह०४ उ० ।

**संथणण-** न० [संस्तनन]

अत्यर्थं सशब्दनिःश्वासे, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ० ।

**संथरन्त-** त्रि० [संस्तरत्]

विवक्षितानुष्ठानवाहनसमर्थे, वव०२ उ० ।

**संथरण-** न० [संस्तरण]

संस्तारककरणे, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ० ।

**संथरमाण-** त्रि० [संस्तरत्]

विद्यमाने, 'संथरमाणेहिं जणवएहिं' आचा०२ श्रु०१ चू०३ अ०१ प्रतिपन्नप्रतिमापरिपालनक्षमे, संस्तरन् नाम उच्यते-यः सूत्रोक्तविधिना प्रतिमाप्रतिपत्तियोग्यतामुपगतः मासिक्यादीनां च प्रतिमानां मध्ये यां प्रतिमां प्रतिपन्नस्तां सम्यक् परिपालयितुं क्षमस्तस्य संस्तरतो विधिः । बुह०१ उ०२ ।

**संथव-** पुं० [संस्तव]

संस्तवनं संस्तवः । दातुर्गुणविकल्पने, तेन सहात्मनः सम्बन्धविकल्पने च । बुह०१ उ०३ ।  
परिचये, प्रत्यासत्तौ, सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ० ।  
स्नेहे, उत्त०५ अ० । सूय० ।  
स्वरूपज्ञानादुत्पन्ने परिचये, उत्त०२८ अ० ।  
एकासने स्थित्वा परिचये, उत्त०१६ अ० ।  
अभिष्वङ्गे, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ० ।  
कामसम्बन्धे, सूय०१ श्रु०४ अ०३ उ० ।  
सहसंवासे, सूय०१ श्रु०९ अ० । बुह० ।  
संवासजनिते परिचये, सहवासभोजनालापादिलक्षणे स्नेहे, आव०६ अ० । आव०चू० । सूय० ।  
निजपटप्रदर्शनेन लोकावर्जने, पिंड० । प्रव० ।

**संथवदाण-** न० [संस्तवदान]

परिचयकरणे, वव०७ उ० ।

**संथवपिंड-** पुं० [संस्तवपिण्ड]

पूर्वं जननीजनकादिद्वारेण पश्चाच्च श्वश्रूस्वस्नादिद्वारेणात्म परिचयानुरूपं सम्बन्धं भिक्षार्थं घटयता ग्राह्ये पिण्डे, जीत० ।

**संथार-** पुं० [संस्तार]

संस्तारन्ति साधवोऽस्मिन्निति संस्तारः । उपाश्रये, वव०४ उ० ।

**संथारग-** पुं० [संस्तारक]

संस्तार्यते भूपीठे शयालुभिरिति संस्तारः स एव संस्तारकः । पर्यन्तक्रियां कुर्वद्भिर्भादिविस्तरणे तत्क्रियाप्रतिपादनरूपे प्रकीर्णकग्रन्थे, संथा० ।  
अर्द्धतृतीयहस्तमाने । अणुओ० ।  
लघुतरे शयने, नाया०१ श्रु०५ अ० । ठा० ।

**संथारगपङ्कणग-** न० [संस्तारकप्रकीर्णक]

संस्तारकप्रतिपादके प्र-कीर्णकग्रन्थे, संथा० ।

**संथारप्पलोड-** त्रि० [संस्तारप्रलोकिन्]

शिशयिषोर्गुरोः संस्तारप्रेक्षणं कर्तारि, कथं संस्तारः कृतः काऽत्र त्रुटिरितिदृष्टारि शिष्ये, आचा०१ श्रु०५ अ०४ उ० ।

**संथुय-** त्रि० [संस्तुत]

विनयविषयत्वेन परिचिते, सद्भूतगुणोत्कीर्तनादिभिः सम्यक्स्तुते च । उत्त०१ अ० ।  
संयुतकरमुद्रावि- शेषवृन्दे, जंबू०२ वक्ष० । उत्त० ।  
सम्बद्धे, सूय०१ श्रु० १२ अ० ।  
भिक्षोः पुरः संस्तुताः भ्रातृव्यादयः, पश्चात् संस्तुताः श्वशुरकुलसम्बद्धाः । आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०४ उ० ।

**संदन-** पुं० [स्यन्दन]

रथविशेषे, पण्हा०५ अ० ।  
द्विविधो रथः सांग्रामिको, देवयानरथश्च । पण्हा०१ अ०

**संदम्भ-** पुं० [संदर्भ]

सूत्रेण ग्रन्थेन, ठा० ४ ठा० ४ उ० । आव०म० ।

**संदम्भिय-** त्रि० [संदर्भित]

स्नेहरज्जुभिर्ग्रीथिते, ठा० ४ ठा० ३ उ० ।

**संदमाणिया-** स्त्री० [स्यन्दमानिका]

पुरुषस्य स्वप्रमाणावकाशदायिनि दीर्घे जम्पानविशेषे, रा० ।  
जीवा० । भग० । उव० । नाया० । अनु जंबू० । दशा० ।  
शिविकायाम्, उव० । सूय० ।

**संदाणिअ-** त्रि० [संदाणित]

बन्धिते, 'बद्धं संदाणिअं निअलिअं च' उत्त० ।

**संदिट्ठ-** पुं० [संदिष्ट]

गुरुणाऽभिहिते, कथिते, निरूपिते, आव०म० । उत्त० ।  
संदेशिते, 'संदिट्ठं अप्पाहिअं' उत्त० ।

**संदिद्ध-** त्रि० [संदिग्ध]

अनिश्चिते सकलसंशयादिदोषरहिते, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।  
आव०म०१ अ० ।

**संदिसाविय-** अव्य० [संदिश्य]

अनुज्ञाप्येत्यर्थे, पं०व०२ द्वार ।

**संदिहाण-** त्रि० [संदिहान]

संशयान्, विशेष ।

**संदीण-** त्रि० [संदीन]

संदीयते जलप्लावनात् क्षयमाप्नोतीति संदीनः उत्त०४ अ० ।  
यो हि पक्षमासादुदकेन प्लाव्यते तस्मिन् द्वीपभेदे, आचा०१ श्रु० ६ अ० ३ उ० ।

**संदेस-** पुं० [संदेश]

भाषकान्तरेण देशान्तरस्थस्य भणने, नाया०१ श्रु०९ अ० ।

**संदेह-** पुं० [संदेह]

दोलायमानतायाम्, । आचा० ।  
संशये०, आचा०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।



**संदोह-** पुं० [संदोह]

सार, आव० ६ अ० ।

**संधणा-** स्त्री० [संधना]

अभिसन्धनायाम्, प्रार्थनायाम्, सूय०१ श्रु० १ अ०१ उ० ।  
संधानकरणे, वव० ।

**संदोह-** पुं० [संदोह]

निकुरम्बे, 'संदोहो निकुरंबो' उक्त० १९ गाथा ।

**संधाण-** न० [सन्धान]

पाटितसीवने, आचा०१ श्रु०६ अ०३ उ० ।  
मीलने, आचा०१ श्रु०३ अ०३ उ० ।  
अर्द्धे सन्धियोग्ये, पंच०चू० ४ ।

**संधावण-** न० [सन्धावन]

पौनःपुन्येन गमने, आचा०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।

**सन्धि-** पुं० [सन्धि]

सन्धीयते इति वा भवात् भवान्तरमनेनेति सन्धिः । अष्टप्रकारे  
कर्मसन्ततिरूपेऽर्थे आचा०१ श्रु०५ अ०२ उ० ।  
मीलने, नाया० १ श्रु०९ अ० । संथा० ।

**सन्धिकरण-** न० [सन्धिकरण]

खात्रच्छेदे स्थूलमृषावादविरतेरतिचारे उवा० १ अ० ।

**सन्धिच्छेयग-** पुं० [सन्धिच्छेदक]

खात्रखानके, पण्हा०३ अ० आव०म० ।  
सन्धिच्छेदका ये गृहभित्तिसन्धि विदारयन्ति । नाया० १ श्रु०१८

**सन्धिच्छेययत्त-** न० [सन्धिच्छेदकत्व]

सन्धिच्छेदकभावे, खात्रखननत्वे, सूय०२ श्रु०२ अ० । नाया० ।

**सन्धदोष-** पुं० [सन्धिदोष]

विश्लिष्टसंहितत्वे, सन्ध्यभावे च । आव० म०१ अ० । विशेष० ।  
सन्धिप्राप्तौ तं न करोति दुष्टं वा करोति- सन्धिदोषः । अणुओ० ।

**सन्धिबन्धन-** न० [सन्धिबन्धन]

जानुकूर्परादिषु सन्धिषु संयमने, पण्हा०३ अ०

**सन्धिवाल-** पुं० [सन्धिपाल]

राज्यसन्धिरक्षके, नाया०१ श्रु०१ अ० । कल्प० । भग० ।

**सन्धिमग्न-** पुं० [सन्धिमार्ग]

मर्मस्थाने, आव०म०१ अ० ।

**सन्धिमुह-** न० [सन्धिमुख]

खात्रद्वारे, उक्त०४ अ० ।

**सन्धेमाण-** त्रि० [सन्धधान]

सन्धानं कुर्वाणे, आचा०१ श्रु०६ अ०३ उ० ।

**सन्धेयव-** त्रि० [सन्धातव्य]

जोडनीये, निसि०१ उ० ।

**संपइ-** अव्य० [सम्प्रति]

सम्प्रतिजातत्वात् सम्प्रतिः । स्वनामख्याते चन्द्रगुप्तपौत्रे, बुह० ।

**संपइक्वि-** पुं० [साम्प्रतेक्षिन्]

बाले, अपरिणामद्रष्टरि, सूय०१ श्रु० ५ अ०२ उ० ।

**संपइण्ण-** त्रि० [सम्प्रकीर्ण]

रमणीयतया व्याप्ते, रा० ।

**संपउत्त-** त्रि० [सम्प्रयुक्त]

सम्बद्धे, ठा० ४ ठा० १ उ० ।  
व्यापृते, संगते, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।  
प्रवर्तिते, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।  
समन्विते, सूय०२ श्रु०७ अ० ।  
योजिते, नाया०१ श्रु०१ अ०१ श्रु०१ अ० ।

**संपओग-** पुं० [सम्प्रयोग]

सम्बद्धे, ठा० ४ ठा० १ उ० । सूय० ।  
प्रवर्तने, नाया०१ श्रु०१८ अ० ।  
सम्यगग्रतो वा प्रयोगः सम्प्रयोगः अकल्पिते योगे, दश०१ अ० ।

**संपक्क-** पुं० [सम्पर्क]

सङ्गमे, आव०म०१ अ० ।

**संपक्खालग-** पुं० [संप्रक्षालक]

वानप्रस्थभेदे, मूत्तिकाद्याघर्षणपूर्वक ये अङ्गं क्षालयन्ति ते  
संप्रक्षालका उच्यन्ते । पुष्कि० ३ अ० । उव० ।

**संपक्खालिय-** त्रि० [सम्प्रक्षालित]

क्षालितसर्वपापमले, । भग० ।

**संपगाढ-** त्रि० [सम्प्रगाढ]

अध्युपपन्ने, 'वित्तेसिणो मेहुणसंपगाढा' सूय०२ श्रु०६ अ० ।  
व्याप्ते, सूय०२ श्रु०६ अ० ।  
असह्ये, सूय०१ श्रु०५ अ०२ उ० ।

**संपग्गह-** पुं० [सम्प्रग्रह]

आत्मनो जात्याद्युत्सेकरूपग्रहे, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**संपज्जण-** न० [सम्पज्जन]

रसपुष्टिजनने, सूय०१ श्रु०७ अ० ।

**संपट्ठिय-** त्रि० [सम्प्रस्थित]

सम्प्रयाते, पन्न०१५ पद । उव० ।

**संपडिलेहियव्व-** त्रि० [सम्प्रत्युपेक्षितव्य]

सम्यक् प्रतिलेखितव्ये, दश०१ चू० ।

**संपडिवाइय-** त्रि० [सम्प्रतिपादित]

स्थापिते, 'धम्मे संपडिवाइओ' दश०२ अ० ।

**संपणदिय-** त्रि० [संप्रणदित]

सम्यक् प्रकर्षेण शब्दं कुर्वति, जीवा०३ प्रति०४ अधि० । पन्न० ।

**संपण्ण-** त्रि० [सम्पन्न]

युक्ते, उत्त०१ अ० । सूय० । ठा० । ओह० । आतु० ।

समन्विते, आव०४ अ० ।

उपेते, जंबू०२ वक्ष० ।

**संपण्णदोहला-** स्त्री० [सम्पन्नदौहदा]

विवक्षितार्थभोगसंपद्धानन्दसंप्राप्तयामन्तर्वत्याम्, विपा०१ श्रु०

**संपण्णा-** [देशी]

घृतपूरार्थगोधूमपिष्टे, दे०ना०८ वर्ग०८ गाथा ।

**संपत्त-** त्रि० [सम्प्राप्त]

संलग्ने, आव०म०१ अ० ।

समागते, नाया०१ श्रु०१ अ० । उत्त० ।

शोभनेन प्रकारेण स्वाध्यायकरणादिना प्राप्ते, दश०५ अ०१ उ० ।

**संपत्ति-** स्त्री० [सम्पत्ति]

यथोक्तार्थसम्पादने, भग०३ श०१ उ० ।

‘सम्प्राप्तिश्च विपत्तिश्च, कार्याणां द्विविधा स्मृता । संप्राप्तिः सिद्धिरर्थेषु विपत्तिश्च विपर्ययः । १ ।’ निसि० १५ उ० ।

अपूर्वलाभे । भग० ।

**संपत्थिय-** त्रि० [सम्प्रस्थित]

सम्प्रस्थानकाले प्रयाते, वव०१ उ० ।

**संप्रधारणा-** स्त्री० [संप्रधारणा]

धारणाव्यवहारे, वव० ।

तथा यस्मात्सम्प्रधार्य सम्यक् प्रकर्षेणावधार्य व्यवहारं प्रयुङ्क्ते तस्मात्कारणात्तेन शिष्येण संप्रधारणा भवति ज्ञातव्या । वव० १० उ०

**संपधूमिय-** त्रि० [सम्प्रधूमित]

सौगन्ध्यार्थं धूपैर्वासिते, कल्प०१ अधि० ९ ।

धूपद्रव्येण समन्ततः प्रकर्षेण धूपिते, बुह० १ उ० ३ ।

**संपमज्जिय-** अव्य० [संप्रमृज्य]

प्रक्षाल्येत्यर्थे, कल्प०३ अधि०९ ।

**संपमिज्जमाण-** त्रि० [संप्रिमृजत्]

सम्यग् परिसमन्तात् हस्तपादादीनवयवान् तन्निक्षेपस्थानानि वा रजोहरणादिना मृजति, आचा० १ श्रु०५ अ०४ उ० ।

**संपयं-** अव्य० [साम्प्रतम्]

शब्दनये, अस्य द्वितीयनाम साम्प्रतवस्त्वाश्रयणात् साम्प्रतम् । यथा ह्येषोऽपि ऋजुसूत्रनय इव साम्प्रतमेव वस्त्वभ्युपगच्छति, नाप्यतीतमनागतं, नापि वर्तमानमपि परकीयम् । आव०म०१ आचा० ।

**संपयकालीण-** त्रि० [साम्प्रतकालीन]

वर्तमाने, विशे० ।

**संपयगाहि-** पुं० [साम्प्रतग्राहिन्]

वर्तमानैकलक्षणवस्तुग्राहिणि, विशे० ।

**संपयहीण-** त्रि० [सम्पद्हीन]

सम्पद्रहिते, सम०३ सम० ।

**संपया-** स्त्री० [सम्पदा]

सम्पन्नतायाम्, उत्त०१ अ० ।

ऋद्धि, ठा० ३ ठा० १ उ० । उत्त० । वव० ।

समृद्धि, नाया०१ श्रु०११ अ० ।

**संपयाण-** न० [सम्प्रदान]

सम्यक् सत्कृत्य वा दानं यस्मै तत्सम्प्रदा-नम् । दात्रा कर्मणाऽभिप्रेतघटादिग्रहीतरि, विशे० ।

सत्कृत्य सम्यग्वा प्रदीयते यस्मै तत्संप्रदानम् । तच्च त्रिविधं तद्यथा-दीयतां मह्यं बहुफलं भवतां भविष्यतीत्यादिवचन-प्रपञ्चेन किञ्चित् प्रेरकं यथा वटुर्ब्राह्मणः । अपरं त्वित्यमप्रेरक-मपि दानस्य ग्रहण परिभोगाभ्यामनुमोदकं भवति । यथा मुनिः साधुः । अन्यतु पुष्पाद्यनिषेधकम् यथाऽर्हत्प्रतिमादेः ।

आव०म०१ अ० । आव०चू० ।

सम्यगर्थिभ्यो दाने, आव०म०१ अ० । विशे० । अनु

**संपयावण-** न० [सम्प्रदान]

सत्कृत्य प्रदाप्यते यस्मै उपलक्षणत्वात्सम्प्रदीयते वा यस्मै तत्संप्रदानम् संप्रदानं वा । चतुर्थीकारके, ‘चउत्थी संपयावणे’ चतुर्थी सम्प्रदाने भवति, यथा भिक्षवे भिक्षां दापयति ददाति वा । ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**संपराइय-** त्रि० [सांपरायिक]

संपराया बादरकषायास्तेभ्य आगतं साम्परायिकम् । तज्जीवोपमर्दकत्वेन वैरानुषङ्गितयात्मदुष्कृतकारिभिः स्वपाप-विधायिभिर्बध्यमाने कर्मणि, सूय० १ श्रु० ८ अ०

**संपराइयबंध-** पुं० [सांपरायिकबन्ध]

संपरैति संसारं पर्यटति एभिरिति साम्परायाः कषायास्तेषु भवं साम्परायिकं कर्म, तस्य यो बन्धः स साम्परायिकबन्धः । कषायप्रत्यये बन्धे, भग० ।

**संपराइया-** स्त्री० [साम्परायिका]

सम्परायाः-कषायास्तेषु भवा साम्परायिकी । पुद्गलराशेः कर्मतापरिणतिरूपायां जीवव्यापारस्याविवक्षणादजीवक्रिया-याम्, सा च सूक्ष्मसंपरायात्तानां गुणस्थानकवतां भवति । ठा० २ ठा० १ उ० ।

**संपराय-१** पुं० [सम्पराय]

सम्परायन्ति भृशं पर्यटन्त्यस्मिन् जन्तव इति सम्परायः । संसारे, उत्त०२० अ० । सूय० ।

**संपराय-२ पुं० [सम्पराय]**

कषायोदये, आव०म०१ अ० । ठा० । उत्त० ।  
बादरकषाये, सूय०१ श्रु०८ अ० । विशेष० । अणुओ० ।

**संपराय-३ पुं० [सम्पराय]**

संग्रामे, नाया०१ श्रु० ९ अ० । दश० ।

**संपरिक्खित्त- त्रि० [सम्परिक्षित्त]**

वेष्टिते, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

**संपरिखित्तु- अव्य० [सम्परिक्षिप्य]**

परिवार्येत्यर्थे, ठा० ५ ठा० २उ०

**संपरिवुड- त्रि० [संपरिवृत]**

सम्यक् नायकैकचित्ताराधनपरतया परिवृते, रा० ।  
सम्यक् आराधकभावं विभ्राणैः परिवृते, रा० ।  
सम्यक् परिवाररीत्या परिवृते, रा० । उव० । भग० ।  
सेवागतनानाविधपरिवारोपेते, आव०म०१ अ० । भग० ।  
सम्यक् परिवारिते, परिकरभावेन परिकरिते, भग०२श० । नाया०  
वेष्टिते, सूय०१ श्रु०७ अ० ।

**संपलग- त्रि० [संपलग]**

योद्धुं समारब्धे, विपा०१ श्रु०३ अ० । रा०

**संपलिथालग- न० [सम्पलिस्थालक]**

वल्लादिफलीनां पाके, आचा० २ श्रु०१ चू०१ अ० ।

**संपलिय-१ पुं० [सम्पलित]**

आर्यकालकशिष्ये, कल्प०२ अधि०८ क्षण ।

**संपलिय-२ पुं० [सम्पलित]**

मुद्गादीनां विध्वस्तफले, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०१० उ० ।

**संपलियंक- पुं० [सम्पर्यङ्क]**

पद्मासने, उव० ।

**संपलियंकणिषण्ण- त्रि० [सम्पर्यङ्कनिषण्ण]**

पद्मासनसन्निविष्टे, रा० । भग० ।

**संपवयमाण- त्रि० [सम्प्रव्रजत्]**

सम्यक्प्रव्रज्यामभ्युपगच्छति, आचा०१ श्रु०५ अ० ।

सम्यक् प्रव्रजने, निसि०२ उ० ।

सम्-एकीभावेन प्रव्रजति, निसि०२ उ० ।

**संपवेयण- न० [सम्प्रवेतन]**

कम्पने, आचा०२ श्रु०४ चू० ।

**संपसार- पुं० [सम्प्रसार]**

सम्-एकीभावेन किमप्युद्दिश्य एकत्र मीलने, समवाये,  
आव०म०१ अ० ।

**संपसारण- न० [सम्प्रसारण]**

पर्यालोचने, आचा०१ श्रु०५ अ०४ उ० । सूय० ।

**संपसारय- पुं० [सम्प्रसारक]**

कुशीलभेदे, निसि० ।

**संपहारित्य- त्रि० [सम्प्रहारितवत्]**

विकल्पितवति, 'संपहारित्य गमणाए' नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**संपहारिय- अव्य० [संप्रधार्य]**

ज्ञात्वेत्यर्थे, आचा०२ श्रु०१ चू०२ अ०१ उ० ।

समालोचितवति, सूय०२ श्रु०१ अ० ।

**संपहावण- न० [सम्प्रधावन]**

सम्यगौत्सुक्येन धावने, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०३ उ० ।

**संपहिट्ट- त्रि० [सम्प्रहृष्ट]**

हर्षिते, उत्त०१५ अ० ।

**संपहिता- अव्य० [सम्प्रिधाय]**

स्थगयित्वेत्यर्थे, सम०३० सम० ।

**संपाइन- पुं० [सम्पातिन्]**

सम्पतितुमुत्प्लुत्योत्प्लुत्य गन्तुमागन्तुं वा शीलं येषां ते  
सम्पातिनः जीवाः । मक्षिकाभ्रमरपतङ्गमशकपक्षिवातादिकेषु  
प्राणिषु, आचा०१ श्रु०१ अ०४ उ० ।

**संपाइम- पुं० [सम्पातिम]**

सम्पातनशीलेषु शलभादिषु प्राणिषु, सूय०१ श्रु०७ अ० ।

**संपाउप्पायक- पुं० [सम्पातोत्पादक]**

सम्पातानामनर्थमीलकानामुत्पादकः सम्पातोत्पादकः । अष्टा-  
दशे गौणपरिग्रहे, पण्हा०५ अ०

**संपागड- त्रि० [सम्प्रकट]**

गीतार्थसमक्ष, ठा० ४ ठा० १ उ० । आव०

**संपागडअकिच्च- पुं० [सम्प्रकटाकृत्य]**

सम्प्रकटानि प्रवचनोपघातनिरपेक्षतया समस्तजनप्रत्यक्षाण्य-  
कृत्यानि मूलोत्तरगुणप्रतिसेवनारूपाणि यस्य स तथा । सम्प्रकट  
प्रतिसेविनि, बुह० ३ उ० ।

**संपागडपडिसेविन्- पुं० [सम्प्रकटप्रतिसेविन्]**

सम्प्रकटमेव गीतार्थप्रत्यक्षमेव प्रतिसेवते मूलगुणान् उत्तर-  
गुणान् वा दर्पतः कल्पेन वेति सम्प्रकटप्रतिसेवी । ठा० ४ ठा०  
प्रवचनोपघातनिरपेक्षतयैव मूलोत्तरगुणप्रतिसेवक निसि० ।

**संप्रातर- अव्य०**

प्रातः-प्रभातं तेन समं प्रातः सम्प्रातः । प्रभातसमकाले, ठा०  
३ ठा० १ उ० ।

**संपाविउकाम- त्रि० [सम्प्राप्तुकाम]**

प्राप्तुमना न तु तत्प्राप्तस्याकारणत्वेन विवक्षितार्थानां प्ररूपणा  
संभवात् । प्राप्तुकाम इति च यदुच्यते तदुपचारादन्यथा हि  
निरभिलाषा एव भगवन्तः केवलिनो भवन्ति । भग०१ श० १ उ०

**संपाविय-** त्रि० [सम्प्रापित]

नीते, पण्हा०१ अ०

**संपिडण-** न० [सम्पिडन]

समूहे, उव० ।

मोदकादिबन्धने, पिंड० ।

**संपिडिय-** त्रि० [सम्पिडित]

एकतः पिण्डीभूते, जीवा०२ प्रति०४ । उव० । रा० । जंबू० ।

मिलिते नाया०१ श्रु०१ अ० ।

सम्यक् पुञ्जीकृते, उत्त०१४ अ० ।

**संपुच्छण-** पुं० [सम्प्राश्र]

सम्प्राश्रः सावद्यो गृहस्थविषयः । रागाद्यर्थं कीदृशो वाऽहमित्यादिरूपे साधुना । दश०३ अ० ।

गृहस्थगृहे कुशलादिप्रच्छने, आत्मीयशरीरावयवप्रच्छने च ।

सूय०१ श्रु० ९ अ० ।

नरैरुदन्तवहने, वव०२ उ० ।

**संपुच्छिया-** स्त्री० [सम्प्राच्छिका]

पादादिलूषिकायां सम्मार्जिकायाम् नाया०१ श्रु०७ अ० ।

**संपुडाग-** पुं० [सम्पुटक]

द्वयोर्वस्तुनोरेकत्र समावेशे, वव०७ उ० ।

**संपुडफलय-** पुं० [सम्पुटफलक]

पुस्तकपञ्चकान्तर्गतेऽन्यतमपुस्तके संपुटफलको यत्र द्वयादीनि फलकानि भवन्ति । वणिग्ननस्योद्धारनिक्षेपादिरूपे संपुटकाख्ये करणविशेषे, ठा० ४ ठा० २ उ० । बुह० । आव० । निसि० ।

**संपुडिय-** त्रि० [सम्पुटित]

सम्पुटं संजातमस्येति सम्पुटिताः, तारकादिदर्शनादितः प्रत्ययः आद्यन्तकृतसम्पुटे, वव०२ उ० ।

**संपुण्णगुण-** त्रि० [सम्पूर्णगुण]

सुविशुद्धज्ञानादिगुणे, जीवा०१ प्रति

**संपुण्णघोस-** त्रि० [सम्पूर्णघोष]

सम्पूर्णो घोषः शब्दो यत्र तत्तथा । पूर्णशब्दसहिते, कल्प०१

**संपुण्णदोहला-** स्त्री० [सम्पूर्णदोहदा]

अभिलषितार्थपूरणे, भग०१ श०३ उ० । कल्प० ।

समस्तवाञ्छितार्थपूरणे, परिपूर्णमनोरथायामन्तर्वल्याम्, विपा०

**संपुल-** पुं० [सम्पुल]

दधिवाहननृपकञ्चुकिनि, आव०१ अ० । आव०म० ।

**संपूयण-** न० [सम्पूजन]

वस्त्रपात्रादिना पूजने, सूय०१ श्रु०१० अ०

**संपेहण-** न० [सम्प्रेक्षण]

पर्यालोचने, नाया०१ श्रु०१ अ० । उत्त० । आचा० ।

**संपेहा-** स्त्री० [सम्प्रेक्षा]

पर्यालोचनायाम्, आचा०१ श्रु०२ अ०२ उ०

**संफास-** पुं० [संस्पर्श]

सङ्घ, आचा०१ श्रु०५ अ०४ उ० ।

असकृदनीषद्वा स्पर्शे, दश०४ अ० ।

**संब-** पुं० [साम्ब]

अम्बया पार्वत्या सहित इति । उभया सहिते शिवे, अंत० ।

**संब-१** पुं० [शाम्ब]

कृष्णवासुदेवस्य जाम्बवतीगर्भसम्भूत]पुत्र, अंत० । आव० । निसि

**संब-२** पुं० [शाम्ब]

कुन्थुनाम्नः सप्तदशतीर्थकरस्य प्रथमशिष्ये, । सम० ।

**संबन्ध-** पुं० [सम्बन्ध]

सङ्ग, आचा०१ श्रु०३ अ०१ उ० ।

द्वयोः संश्लेष, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

अनन्तरसूत्रादिभिः सह योजन, वव०५ उ० ।

**संबन्धण-** न० [सम्बन्धन]

सम्बन्ध, उत्त०१ अ० ।

**संबन्धणसंयोग-** पुं० [सम्बन्धनसंयोग]

संबन्धयते प्रायो ममेदमित्यादिबुद्धितोऽनेनास्मिन् वात्माष्टविधेन कर्मणा सहेति संबन्धः स चासौ संयोगश्च सम्बन्धनसंयोगः । संयोगभेदे, उत्त०७ अ० ।

बद्धीकरणे, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**संबन्धसंबन्धि-** त्रि० [सम्बन्धसम्बन्धिन्]

श्वशुरपाक्षिकादिसत्के, विपा० १ श्रु०२ अ० ।

**संबन्धसमकल्प-** पुं० [सम्बन्धसमकल्प]

सम्-एकीभावेन परस्परपकार्योपकारितया च बद्धाः-पुत्र-कलत्रादिस्नेहपाशैः सम्बद्धा गृहस्थास्तैः समस्तुल्यः कल्पो व्यवहारोऽनुष्ठानं येषां ते । सम्बद्धसमकल्पगृहस्थानुष्ठानतुल्या-नुष्ठानेषु साधुषु, सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ० ।

**संबन्धि-** त्रि० [सम्बन्धिन्]

पुत्रपौत्राणां श्वशुरादिषु, कल्प०१ अधि० ५ । विपा० । उव० ।

सम्बन्धिनो मातृपक्षीयाः । भग०३ श०१ उ० ।

संबन्धी स्वजनः । बुह०१ उ०२ ।

देवरादिषु, उव० ।

संबन्धिनस्तासामेव संयतीनां नालबद्धा वा भ्रातृसम्बन्धयुक्ता इत्यर्थः, श्वशुरकुलानां वा । बुह० १ उ० ३ ।

श्वशुरपुत्रश्वशुरादयः । वव०५ उ० । नाया० ।

**संबद्ध-** त्रि० [सम्बद्ध]

सम्-एकीभावेन परस्परपकारितया च बद्धाः सम्बद्धाः ।

पुत्रकलत्रादिस्नेहपाशैः सम्बद्धेषु गृहस्थादिषु, सूय० १ श्रु०१ अ०

**संबद्धसम-** पुं० [सम्बद्धसम]

सम्बद्धा गृहस्थास्तैस्समस्तुल्यः । गृहस्थतुल्ये, सूय०१ श्रु०३ अ०

**संबल-** न० [शम्बल]

पथ्यदने, संथा० । आव०चू० । नाया० ।

**संबलिफालि-** स्त्री० [शाल्मलीफालि]

शाल्मलीशाखायाम्, संथा० ।

**संबाह-** पुं० [सम्बाध]

यात्रासमागतप्रभूतजनविशेषे, वव०१ । जीवा० । पत्र० । निसि० ।  
संबाधो नाम यत्र कृषीबललोकोऽन्यत्र कर्षणं कृत्वा वणिग्वर्णो  
वा वाणिज्यं कृत्वाऽन्यत्र पर्वतादिषु विषमेषु स्थानेषु संवोदु-  
मिति कणादिकं समुद्रा कोष्ठागारादौ च प्रक्षिप्य वसति । बुह०१  
प्रभूतचातुर्वर्ण्यनिवासे, उत्त०३४ अ० ।

पर्वतनितम्बादिदुर्गे, उव० ।

बहुप्रकारलोकसङ्कीर्णस्थानविशेषे, अणुओ० ।

सोभणबाहा संबाहा सा चउव्विहा । निसि०३ उ० । नाया० ।

समभूमौ कृषिं कृत्वा येषु दुर्गमभूमिभूतेषु धान्यादिकृषीवलाः

संहवन्ति रक्षार्थमिति स संबाधः । ठा० १ ठा० । निसि० ।

यात्रासमागतप्रभूतजननिवेश, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**संबाहण-** न० [सम्बाधन]

अङ्गपरिकर्मणि, पण्हा०५ अ०

शरीरस्याऽस्थिसुखत्वादिना नैपुण्येन मर्दनविशेषे, ठा० ४ ठा०

विश्रामणायाम्, उव० ।

आत्मनः पादौ संबाधयति निसि०४ उ० ।

**संबाहिज्जावंत-** त्रि० [सम्बाधयत्]

विश्रामणां कारयति, निसि० १८ उ० ।

**संबाहित-** त्रि० [सम्बाधित]

सम्-एकीभावेन बाधिताः-पीडिताः । संपीडितेषु, सूय०१ श्रु०५

**संबाहिय-** त्रि० [सम्बाधित]

हस्ताभ्यां कृतोपपीडनसेवे, पिंड० ।

**संबिद्ध-** त्रि० [सम्बिद्ध]

सम्यग् ताडिते, आचा०१ श्रु०५ अ०३ उ०

**संबिद्धपह-** पुं० [सम्बिद्धपथ]

सम्यक् बिद्धस्ताडितः क्षुण्णः पन्थाः मोक्षमार्गो ज्ञानदर्शन-  
चारित्राख्यो येन स तथा । दृष्टप्रयातपथे, आचा०१ श्रु०५ अ०३

**संबेल्लिय-** त्रि० [सम्बेल्लित]

संवृत्ते, जंबू०१ वक्ष० ।

संबेल्लिताग्रशिरोजा संबेल्लितं संवृतमग्रं येषां खरकर्मकरणाते  
सम्बेल्लिताग्राः, शिरोजाः केशा यासां तास्तथा । जीवा०३  
प्रति०४ अधि० ।

**संबुक्क-** पुं० [सम्बूक]

शङ्खे, ठा० ४ ठा० २ उ० । पत्र० । उत्त० ।

अवन्तीनामजणवए तत्थ य सम्बुक्के नाम खेडे महानि०२ चू० ।

**संबुक्कवट्टा-** स्त्री० [शम्बूकवृत्ता]

शम्बूकः शङ्खस्तद्वच्छङ्खभ्रमिवदित्यर्थः, या वृत्ता सा शम्बूक  
वृत्ता । गोचरचर्याभेदे, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**संबुज्झमाण-** पुं० [संबुज्झमान]

संसारपाताय प्रमाद इत्येवमवगच्छति, आचा० ।

सम्यक् श्रुतचारित्राख्यं धर्मं वा भावसन्धिं वा बुद्ध्यमाने ।

विहितानुष्ठाने, सूय०१ श्रु०१० अ० ।

सम्बुद्धमानका भवन्ति, तद्यथा-स्वयम्बुद्धाः प्रत्येकबुद्धाः

बुद्धबोधिताश्च । आचा०१ श्रु०८ अ०३ उ० ।

यथोपदिष्टधर्मं सम्यगवबुद्ध्यमाने, आचा०१ श्रु०४ अ०२ उ० ।

**संबुद्ध-** त्रि० [सम्बुद्ध]

विदितविषयस्वभावे सम्यग्दृष्टौ, दश० २ अ०

मिथ्यात्वापगमतोऽवगतजीवाजीवादित्वे, उत्त०२ अ० ।

हेयोपादेयोपेक्षणीयवस्तुतत्त्वं विदितवति, भग०१ श०१ उ० ।

**संबुद्धा-** स्त्री० [सम्बुद्धा]

अपरोपदेशमन्तरेण जायमाने प्रव्रज्याभेदे, पंच०भा०१ ।

**संबेल्लि-** स्त्री० [सम्बेल्लि]

मालायाम्, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**संबेल्लिय-** त्रि० [सम्बेल्लित]

संवृत्ते किञ्चिदाकुञ्चिते, जंबू०१ वक्ष० ।

संकोचिते, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**संबोह-** पुं० [संबोध]

सुप्तस्य प्रबोधे, सूय०१ श्रु०२ अ०१ उ० ।

**संबोहण-** न० [सम्बोधन]

आमन्त्रणे, आह्वाने, आव०म०१ अ० ।

**संबोहि-** स्त्री० [संबोधि]

सम्यग्ज्ञानदर्शनचारित्रावाप्तौ, सूय० ।

**संबोहियव्व-** त्रि० [संबोधयितव्य]

आमन्त्रयितव्ये, ठा० ४ ठा० ३ उ०

**संभंत-** त्रि० [संभ्रान्त]

व्याकुलीभूते, नाया०१ श्रु०१ अ० । आव०म० ।

**संभंति-** स्त्री० [संभ्रान्ति]

सम्भ्रमे, भग०१६ श०५ उ० ।

**संभंतियवंदणय-** न० [सम्भ्रान्तिकवन्दनक]

सम्भ्रान्तिः सम्भ्रमऔत्सुक्यं; तया निर्वृत्तं सम्भ्रान्तिकं यद् वन्दनं  
तत्तथा । औत्सुक्य जवन्दनक्रियायाम्, भग० १६ श०५ उ० ।



**संभग- त्रि० [सम्भग]**

चूर्णिते, उत्त०१९ अ० । नाया० । पण्हा० ।

संभगो मुकुटवितपः शेखरकविस्तारो यस्य स । भग०३ श०३ ।

**संभम- पुं० [सम्भम]**

व्याकुलत्वे, अणुओ० । सूय० ।

प्रमोदवृत्तौत्सुक्ये, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

संक्षोभे, जीत० । पण्हा० ।

भक्तिकृतौत्सुक्ये उव० ।

परचक्रादिभये, अणुओ० ।

सत्कारे, आव०म० १ अ० ।

उदकाग्रिहस्याद्यागमसमुत्थे आकस्मिके संत्रासे, बुह०१ उ०२ ।

**संभयणा- स्त्री० [सम्भयणा]**

संवासे, आव०चू०४ अ० ।

**संभरित्ता- अव्य० [स्मृत्वा]**

अनुचिन्त्येत्यर्थे, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**संभली- स्त्री० [सम्भली]**

दूतिका, वव०५ उ० ।

**संभव-१ पुं० [सम्भव]**

सदा भवने, सूय०२ श्रु०६ अ० । अणुओ० ।

समुत्पत्तौ, सूय०२ श्रु०१ अ० । नाया० ।

सम्भवति प्रकर्षेण भवन्ति चतुस्त्रिंशदतिशयगुणा यस्मिन् स

सम्भवः । आव०म० १ अ० । आव०चू० ।

**संभव-२ पुं० [सम्भव]**

भरतवर्षे जाते तृतीय तिर्थकर, आव०चू० ।

**संभार- पुं० [सम्भार]**

बहुद्रव्यसंयोगे, बुह०२ उ० ।

उपरिप्रक्षेपद्रव्यैस्त्वगलाप्रभृतौ, नाया०१ श्रु०१६ अ० ।

आवश्यकतया कर्मणो विपाकानुभवने, वेदने, सूय०२ श्रु०७

सम्प्रियते धार्यते सम्भरणं वा धारणं । षष्ठगौणपरिग्रह, पण्हा०५

**संभारघय- न० [संभारघृत]**

संभारो बहुद्रव्यसंयोगस्तत्प्रधानं घृतं सम्भारघृतम् । बहुद्रव्य-  
मिश्रिते घृते, बुह०२ उ० ।

**संभावणा- स्त्री० [सम्भावना]**

अर्थालङ्कारभेदे, व्याकरणोक्ते क्रियासु योग्यताध्यवसाये लिङ्गर्थ  
भेदे, उत्कटकोटिकसंशयरूपे ज्ञानभेदे च । आचा० ।

**संभास- पुं० [संभाष]**

परस्परालापे, बुह०१ उ०३ ।

**संभासन- न० [संभाषण]**

उचितकाले स्मरकथाभिर्जल्पे, । दश० ।

**संभासिय- पुं० [संभाषिक]**

समाप्तभाषाव्यवहारिणि, वव०४ उ० ।

**संभिण्ण- त्रि० [संभिन्न]**

सम्-एकीभावेन भिन्ने, विशेष० ।

अबहुभेदमापके, उव० । आव०चू० ।

**संभिण्णवरणाणदंसणधर- पुं० [संभिन्नवरज्ञानदर्शनधर]**

संभिन्ने सम्पूर्णे वरे श्रेष्ठे ज्ञानदर्शने धरन्ति ये ते तथा । केवलिषु,  
कल्प० १ अधि०६ ।

**संभिण्णवित्त-पुं० [संभिन्नवृत्त]**

अखण्डनीयखण्डितचारित्रे, दश०१चू०

**संभिण्णसोय- पुं० [सम्भिन्नश्रोतस]**

सम्भिन्नान् बहुभेदभिन्नान् पृथक् पृथक् श्रुण्वन्तीति सम्भिन्न-  
श्रोतारः । संभिन्नानि-शब्देन व्याप्तानि शब्दग्राहीणि प्रत्येकं वा  
शब्दादिविषयैः श्रोतांसि सर्वेन्द्रियाणि येषां । उव० । रा० । गच्छा०

**संभिय- त्रि० [संभृत]**

संस्कृत, विशेष० ।

सम्यग्भृते, सूय०१ श्रु०९ अ० । आव०म० । ठा० ।

**संभुंजत- त्रि० [सम्भुज्जान]**

एकमण्डल्यां सम्भोगं कुर्वाणे, निसि० १० उ० ।

**संभुंजण- न० [सम्भोजन]**

एकमण्डल्यां भोजनादिव्यवहारे, पंच०भा०१ ।

एकमण्डल्यां सम्-एकीभूय भोजने, बुह०४ उ० ।

संभुंजणा तिविहा-लोड्या, लोउत्तरिया, कुप्पावयणिया पंच०चू०  
साम्भोगिकैः सह भोजने, वव० ३ उ० ।

**संभुंजित- अव्य० [सम्भोक्तुम्]**

एकमण्डलीसमुद्देशादिना व्यवहारयितुमित्यर्थे, बुह०४उ० । ठा०

**संभूत-१ त्रि० [सम्भूत]**

सज्जात, आचा०१ श्रु०६ अ०१ उ० । आव० पण्हा० ।

समुत्पन्ने, सूय०१ श्रु०१ अ०४ उ० ।

सम्यक् प्रतिपालनाय संछन्ने, आचा०१ श्रु०२ अ०३ उ० ।

**संभूत-२ त्रि० [सम्भूत]**

बलदेववासुदेवयोः प्रथमे धर्माचार्ये, सम० ।

**संभूत-३ त्रि० [सम्भूत]**

ब्रह्मदत्तचक्रवर्तिजीवे, उत्त०१३ अ० ।

**संभूत-४ त्रि० [सम्भूत]**

यशोभद्रशिष्ये, 'जसभदसीसो संभूतो० निसि० ५ उ० ।

**संभूत-५ त्रि० [सम्भूत]**

वीरजिनजीवस्य पूर्वभवविश्वभूतेर्नामक्षत्रियस्य दीक्षाग्राहके  
यतौ, आव० म०१ अ० ।

**संभूतविजय- पुं० [सम्भूतविजय]**

भद्रबाहुस्वामिनो गुरुभ्रातरि स्थूलभद्रस्य शकटालपुत्रस्य दीक्षादातरि, ठा० १० ठा० ३ उ० । आव० चू० । नं० । कल्प० ।

**संभूतिविजय- पुं० [संभूतिविजय]**

स्वनामख्यातेऽनगारे अयं पूर्वभवे प्रतिलाभ्य राजपुत्रो धनपतिनामा सुखेन सिद्धः । विपा० २ श्रु० ७ अ० ।

**संभोइत्तए- अव्य० [संभोक्तुम्]**

एकमण्डलीसमुद्देशादिना व्यवहारयितुमित्यर्थे, बुह० ४ उ० । भोजनमण्डल्यां निवेशयितुमित्यर्थे, ठा० २ ठा० १ उ० ।

**संभोइय- पुं० [साम्भोगिक]**

सम्-एकत्र भोगो-भोजनं सम्भोगः, साधूनां समानसमाचारि-तया परस्परमुपध्यादिदानग्रहणसंव्यवहारलक्षणं संविद्यते यस्य स साम्भोगिकः । ठा० ३ ठा० ३ उ०

**संभोएत्ता- अव्य० [सम्भोज्य]**

मिश्रयित्वेत्यर्थे, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ७ उ० ।

**संभोग- पुं० [संभोग]**

सम्-एकीभूय समानसमाचाराणां साधूनां भोजनं संभोगः । सम० ११ सम० । एकमण्डल्यां भोजने, उत्त० १९ अ० ।

**संभोगकप्प- न० [संभोगकल्प]**

एकमण्डल्यां सह भोजनाचारे, पंच० भा०

**संभोगपच्चक्खाण- न० [संभोगप्रत्याख्यान]**

स्वपरलाभमीलनात्मकेन भोगः सम्भोगः, एकमण्डलीभोक्तृत्वम् योर्थस्तस्य यत् प्रत्याख्यानजिनकल्पादिप्रतिपत्त्या परिहारः । उत्त०

**संभोगवत्तिया- स्त्री० [सम्भोगप्रत्यया]**

सम्भोगनिमित्ते कर्मसम्बन्धे, निसि० ५ उ० ।

**संमज्जग- पुं० [सम्मज्जक]**

उन्मज्जनस्थैवासकृत्करणेन य लान्ति तेषु वानप्रस्थेषु, भग० ११ श० ९ उ० ।

**संमज्जन- न० [सम्मार्जन]**

दण्डप्रच्छादिना । अणुओ० । जलेन वा शोधने, भग० ११ श० ९ उ० । सम्मार्जन्या कचवरापनयने वसति प्रतिकर्मणि वव० ४ उ० ।

**संमज्जणी- स्त्री० [सम्मार्जनी]**

कचवरापनयनकारिकायाम्, वव० ४ उ०

**संमज्जिअ- त्रि० [सम्मार्जित]**

प्रमार्जितिकादिना । भ० ९ श० ३३ उ० । अपहतकचवरे, पत्र० १ पद । कल्प० । नाया० । जीवा० । वस्त्रादिनाद्रतामपनयनीये, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ४ उ० ।

**संमज्जिया- स्त्री० [सम्मार्जिका]**

गृहस्यान्तर्बहिश्च बहुकरिकावाहिकायाम्, नाया० १ श्रु० ७ अ० ।

**संमट्ट- त्रि० [संमृष्ट]**

कचवरापनयनेन । नाया० १ श्रु० १ अ० । उव० । प्रमार्जिते, गच्छा० १ अधि० । भूमिकर्मादिना संस्कृते, आचा० २ श्रु० १ चू० २ अ० १ उ० ।

**संमुड- पुं० [संमुचि]**

जम्बूद्वीपे आगामित्सर्पिण्यां भविष्यति षष्ठे कुलकरे, ठा० १०

**संमुच्छिममणुस्स- पुं० [संमुच्छिममनुष्य]**

मनुष्यभेदे, पत्र० १ पद ।

**संमुत्त- पुं० [संमुक्त]**

माण्डवगोत्रावान्तरगोत्रविशेषप्रवर्तके पुरुषे, ठा० ७ ठा० ३ उ०

**संमुसमाण- त्रि० [संमुशत्]**

सामस्त्येन स्पृशति, भग० ८ श० ३ उ० ।

**संमुह- त्रि० [संमुख]**

अभिमुखे, सूय० १ श्रु० १५ अ० ।

**संमुहागय- त्रि० [संमुखागत]**

संमुखं स्थिते, जंबू० १ वक्ष० ।

**संमुहीभूय- त्रि० [संमुखीभूत]**

अभिमुखीभूते, सूय० १ श्रु० १५ अ०

**संमूढ- त्रि० [संमूढ]**

मोहजालेन मोहं गतेषु, तं० । ।

**संरंभ- पुं० [संरम्भ]**

विनाशसंकल्पे, भग० ३ श० ३ उ० । ठा० । विशेष० । परजीवस्य विनाशनसमर्थे दुष्टविद्यानां गुणने, उत्त० २४ अ० । इष्टानिष्टप्राप्ति परिहाराय प्राणातिपातादिसंकल्पावेशे, आचा० १ श्रु० २ अ० ५ उ० । विषयादिषु तीव्राभिलाषे, आतु० । क्रोधे, 'संरंभो अमरिसो मन्त्र' उत्त० १६१ गाथा ।

**संरंभज्झाण- न० [संरम्भध्यान]**

संरम्भो विषयादिषु तीव्राभिलाषस्तस्य ध्यानम् । आतु० ।

**संरक्खण- न० [संरक्षण]**

सर्वोपायैः परित्राणे रौद्रध्यानभेदे, ठा० ४ ठा० १ उ० । आपदः संगोपने, नाया० १ श्रु० १४ अ० । परिपालने, आव० १४ अ० ।

**संरक्खय- पुं० [संरक्षक]**

नानाव्यसनेभ्यः सङ्गोपके, नाया० १ श्रु० १ अ०

**संरोहणी- स्त्री० [संरोहणी]**

संरोहणकारिकायामौषध्याम्, आव० म० १ अ० ।

**संलवण-** न० [संलपन]

मिथो भाषणे, ठा० ४ ठा० २ उ० ।

**संलवमाण-** त्रि० [संलपत्]

मिथो भाषमाणे, ठा० ४ ठा० २ उ० ।

**संलवित्तए-** अव्य० [संलपितुम्]

पुनः पुनः संलापं कर्तुमित्यर्थे, । उवा० ।

**संलाव-** पुं० [संलाप]

भिन्नकथाद्यालापे, सूय० १ श्रु० ४ अ० १ उ० ।

पुनः पुनर्जल्पने, नाया० १ श्रु० १६ अ० । आव० ।

संलापः पुनः पुनः संभाषणम् । भग० ३ श० १ उ० ।

प्रीत्या सह सकामसुहृत्प्रत्यर्पणक्षमे परस्परसम्भाषणे, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । उव० । नाया० । जंबू० ।

प्रियेण सह सप्रमोदं सकामं परस्परं संकथायाम्, चंद० २० पाहु० । बुह० । सूर० ।

**संलावकीव-** पुं० [संलापकलीव]

सम्भाषणनपुंसके, संलावकीवो जो अवस्संलवियव्वे परम्मुहो संलवति । निसि० ४ उ० ।

**संलिहण-** न० [संलेखन]

ईषल्लेखने, दश० ८ अ० ।

**संलिहणकप्प-** पुं० [संलेखनकल्प]

पात्राणां संलेखनपूर्वक धावन, उव० ।

**संलिहित्ताणं-** अव्य० [संलिख्य]

प्रदेशिन्या निरवयवं कृत्वेत्यर्थे, दश० ५ अ० २ उ० ।

**संलिहिय-१** अव्य० [संलिख्य]

निरवयवं कृत्वेत्यर्थे, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ४ उ० ।

**संलिहिय-२** त्रि० [संलिखित]

संलेखनविधिना शोषिते, तच्च त्रिधा-आहाराः, शरीरम्, उपधिश्च । बुह० ३ उ० ।

**संलीणया-** स्त्री० [संलीनता]

अङ्गोपाङ्गादि संवृत्य प्रवर्तने, उत्त० ३० अ० दश० । नं० । सम० ।

**संलुचमाण-** त्रि० [संलुच्यमान]

इतश्चेतश्च भक्ष्यमाणे, आचा० १ श्रु० ८ अ० ३ उ० ।

**संलेह-** पुं० [संलेख]

कवलत्रयप्रमाणे शरीरावशोषणार्थमाहारे, बुह० ५ उ० ।

**संलेहणा-** स्त्री० [संलेखना]

उद्वलने, आचा० १ श्रु० १ अ० ३ उ० ।

संलिख्यतेऽनया शरीरकषायादीति संलेखना । तपोविशेषे, ठा० २ ठा० २ उ० । सूय० ।

कषाय-शरीरकृशतायाम्, नाया० १ श्रु० १ अ० । उव० ।

**संलेहणाङ्गुसिय-** त्रि० [संलेखनाङ्गोषित]

संलेखना-शरीरस्य तपसा कृशीकरणं तथा वा 'ङ्गुसिय'ति जुष्टाः सेविता ये ते तथा । संलेखनाख्यतपःकारिषु, ओह० ।

**संलेहणाङ्गोसणाङ्गुसिय-** त्रि० [संलेखनाजोषणाजुष्ट]

संलेखनायां-कषायशरीरकृषीकरणे या जोषणा प्रीतिः सेवा वा तथा तां वा ये जुष्टाः सेवितास्ते तथा ङ्गुषिताः क्षीणा ये ते तथा । संलेखनातपःकारिषु, भग० ३ श० ७ उ० । उव० ।

**संलोग-** पुं० [संलोक]

संलोक्यत इति संलोकः । चतुर्दशरज्ज्वात्मके लोके, आव० २ संदर्शने, आचा० १ श्रु० १ अ० ३ उ० ।

**संवर्ग-** पुं० [संवर्ग]

संवर्ग्यते इति संवर्गः । गुणिते, वव० ९ उ० ।

गुणने, निसि० १ उ० ।

**संवच्छर-** पुं० [संवत्सर]

द्वादशमासात्मके वर्षे, आव० म० १ अ० ।

'दो अयणा संवच्छरो' जंबू० २ वक्ष० । भग० । ज्यो० । तं० । ठा०

**संवच्छरदान-** न० [संवत्सरदान]

तीर्थकरस्य प्रव्रज्यासमये संवत्सर-पर्यन्तदाने, आचा० ।

**संवच्छरपडिलेहग-** पुं० [संवत्सरप्रतिलेखक]

जन्मदिनादारभ्य संवत्सरमहोत्सवपूर्वकं जन्मदिनमहोत्सवे, यत्र दिने वर्षं वर्षं प्रति संख्याज्ञापनार्थं ग्रन्थिबन्धः क्रियते, नाया० १ श्रु० ८ अ० । रा० ।

**संवच्छरपरियाय-** पुं० [संवत्सरपर्याय]

संवत्सरमेकं यावत् पर्यायः प्रव्रज्यालक्षणो येषां ते संवत्सर-पर्यायाः । वर्षैकप्रव्रजितेषु सम० ५३ सम० ।

**संवच्छरादि-** पुं० [संवत्सरादि]

संवत्सराणामादितिथौ, सूर० १ पाहु० ।

**संवच्छरिय-** त्रि० [सांवत्सरिक]

संवत्सरे भवस्सांवत्सरिकः । वार्षिके विशेषे ।

यद्येकं वर्षं प्रतिदिनं क्रियते, यथा-संवत्सरपर्यन्तं तीर्थकृतः प्रव्रज्यावसरे दीयते दानम् । आव० चू० १ अ० । आव० म० ।

**संवच्छरियपडिक्कमण-** न० [सांवत्सरिकप्रतिक्रमण]

पर्युषणापर्वान्त-प्रतिक्रमणे, कल्प० १ अधि० १ ।

**संवट्ट-** पुं० [संवर्त्त]

नगरोधके, बुह० ३ उ० ।

संवर्त्तो नाम यत्र नग-जलदुर्गादिषु बहूनां ग्रामाणां जनः संवर्त्तीभूय तिष्ठति । नाया० १ श्रु० १ अ० ।

भयत्रस्तजनसमवाये, उत्त० ३४ अ० ।

चौरधाटीभयेन बहवो ग्रामनायकाधिष्ठिता एकत्र स्थिताः । बुह०

**संवट्टइत्ता-** अव्य० [संवर्त्य]

एकत्र स्थाने न्यस्येत्यर्थे, उव० । ठा० ।  
संकोच्ये, ठा० २ ठा० ४ उ० ।

**संवट्टण-** न० [संवर्तन]

विनाशने, अणुओ० ।  
मार्गमिलनस्थान, नाया० १ श्रु० २ अ० ।  
संक्षेपण, आचा० १ श्रु० ८ अ० ६ उ० ।

**संवट्टणिगय-** त्रि० [संवर्त्तिनिर्गत]

मासप्रायोग्यक्षेत्रात्रिर्गत्य संवर्त्ते स्थितेषु, बुह० ३ उ० ।

**संवट्टमेह-** पुं० [संवर्त्तमेघ]

पुष्कलसंवर्त्तके मेघ, आव० १ अ० ।

**संवट्टय-** पुं० [संवर्त्तक]

संवर्त्तनमपवर्त्तनं संवर्त्तः स एव संवर्त्तकः । उपक्रमे, ठा० ।

**संवट्टयवाय-** पुं० [संवर्त्तकवात]

संवर्त्तनस्वभावे, भग० १ श० १ उ० ।  
वायुकायभेदे, भग० १ श० ४ उ० । रा० । आव० म० ।

**संवट्टिअ-** त्रि० [संवर्त्तित]

संवट्टिअं । पिण्डीभूते, निसि० । संकोचिते, ठा० २ ठा० ४ उ०

**संवट्टियावराह-** पुं० [संवर्त्तितापराध]

संवर्त्तिताः पिण्डीभूता अपराधा यत्र तत् संवर्त्तितापराधम् ।  
बह्वपराधे, संचयितमासे, वव० १ उ० ।

**संवट्टिय-** त्रि० [संवर्द्धित]

भोजनादिना संवर्द्धिते अनाथपुत्रके, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**संवर-** पुं० [संवर]

संवरणं संवरः । आच्छादने, विशे० ।  
संत्रियते कर्म कारणं प्राणातिपातादि निरुध्यते येन परिणामेन  
स संवरः । आश्रवनिरोधे, ठा० १ ठा० ।  
प्रश्रव्याकरणेषु अहिंसादिशब्देषु, पण्हा० १ अ०

**संवरण-** न० [संवरण]

सङ्गोपने, ठा० १० ठा० ३ उ० ।  
आच्छादने, प्रच्छदपटे, बुह० १ उ० । बुह० २ उ० ।  
निवारणे, बुह० ४ उ० । कपाटे० बुह० १ उ० ३ ।  
पर्यालोचने, नाया० १ श्रु० १ अ०

**संवरणी-** स्त्री० [संवरणी]

संवरकारिणि विद्याभेदे, नाया० १ श्रु० १ अ० ६ अ०

**संवरबहुल-** त्रि० [संवरबहुल]

प्राणातिपाताद्याश्रवद्वारनिरोधप्रचुरे, पण्हा० ३ अ० ।

**संवरसंवुड-** त्रि० [संवरसंवृत]

प्राणातिपातादिपञ्चमहाव्रतोपेते, सूय० १ श्रु० १ अ० ४ उ० ।

**संवरसमाहिबहुल-** पुं० [संवरसमाधिबहुल]

संवर इन्द्रियविषये समाधिरनाकुलत्वं बहुलं प्रभूतं यस्य स  
तथाविध इति समासः । संवरसमाधिप्रचुरे, दश० २ चू० ।

**संवरिय-** त्रि० [संवृत]

स्थगिते, आव० ५ अ० ।  
संवृतौ हर्षातिरेकादतिस्थूरीभवन्तौ निषिद्धौ वलयैः कटकैर्बाहू  
भुजौ यस्याः सा तथा । भग० ९ श० ३३ उ० ।

**संवरियदार-** त्रि० [संवृतद्वार]

संवृतानि स्थगितानि आश्रवद्वाराणि प्राणातिपातादीनि येन सः ।  
आच्छादितेन्द्रियद्वारे, बुह० ३ उ० । आव० ।

**संवलि-** पुं० [संवलि]

वृक्षविशेषे, ठा० ५ ठा० २ उ० ।

**संवसण-** न० [संवसन]

स्त्रीभिः सार्द्धं परिभोगे, सूय० १ श्रु० ४ अ० १ उ० ।

**संवसमाणी-** स्त्री० [संवसन्ती]

पुरुषेण सह संवासं कुर्वत्याम्, ठा० ५ ठा० २ उ० ।

**संवहण-** न० [संवहन]

क्षेत्रादिभ्यस्तृणकाष्ठधान्यादेर्गृहादावानयने, उवा० १ अ० ।  
वृद्धस्य ग्राम्यभाषायां संबोधनप्रयोज्यशब्द, आचा० १ श्रु० १ दश०

**संवहणिय-** त्रि० [सांवहनिक]

संवहणं क्षेत्रादिभ्यस्तृणकाष्ठधान्यादेर्गृहादावानयनम्, तत्प्रयो-  
जनकं सांवहनिकम् । भारवहनगत्र्याम्, उवा० १ अ० ।

**संवाय-** पुं० [संवाद]

धर्मकथाया व्याख्याने, सूय० १ श्रु० १४ अ० ।

**संवास-** पुं० [संवास]

सात्रिध्ये, सूय० १ श्रु० ४ अ० १ उ० ।  
सम्भजनायाम्, आव० चू० ४ अ० ।  
मैथुनार्थे संवसने, ठा० ४ ठा० ४ उ० । उव० ।  
चिरं संवासे, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**संवासभइय-** पुं० [संवासभद्रक]

संवासश्चिरं सह वासस्तस्मिन्भद्र-  
कोऽहिंसकत्वात् संसारकारणनियोजकत्वाद् वेति संवासभद्रकः  
संवासभद्रकारिणि, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**संवासित्तए-** अव्य० [संवासयितुम्]

एकसमीपे आसयितुमित्यर्थे, बुह० ४ उ० । ठा० ।  
संस्तारकमण्डल्यां निवेशयितुमित्यर्थे, ठा० २ ठा० १ उ० ।

**संवाह-** पुं० [संवाह]

समभूमौ कृषिं कृत्वा येषु दुर्गभूमिभूतेषु धान्यानि कृषीवलाः  
संवहन्ति रक्षार्थमिति । कृषीवलानां धान्यरक्षार्थं निर्मितेषु  
समभूमितलेषु, स्थानेषु, ठा० १ ठा० ।

**संविक्खमाण-** त्रि० [संवीक्षमाण]

समतया ईक्षमाणे, उक्त० २४ अ०

**संविग्ग-** पुं० [संविग्र]

मोक्षाभिलाषिणि, बुह०३ उ० । आव० । उव० । आव०म० । वव०

सामाचार्या सम्यगुद्युक्ते, वव० ४ उ० ।

सम्यग् व्याप्ते वशीभूते, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ० ।

उद्यतविहारिणि, निसि० ४ उ० । बुह० । आव० ।

**संविग्गभाविय-** त्रि० [संविग्रभावित]

उद्यतविहारिसंभाविते, निसि० ४ उ० ।

**संविग्गविहार-** पुं० [संविग्रविहार]

संविग्रानुष्ठाने, भग०१ श०६ उ०

**संविग्गविहारि-** पुं० [संविग्रविहारिण]

संविग्रानुष्ठानकर्त्तरि उद्यतविहारिणि, भग०११ श०१२ उ० ।

**संवित्ति-** स्त्री० [संवित्ति]

ज्ञाने, आव०म०१ अ० । ठा० ।

**संविधुणिय-** अव्य० [संविधूय]

प्रमथ्येत्यर्थे, आचा० १ श्रु० ६ अ० ८ उ० ।

**संविभाणि-** पुं० [संविभागिन्]

संविभजति आनीताहारमन्येभ्यः साधुभ्यः प्रार्थयतीत्येवंशीलो यः स संविभागी । परेभ्यो दत्त्वा भोक्तरि, उक्त० ११ अ० ।

**संविभाविऊण-** अव्य० [संविभाव्य]

पर्यालोच्येत्यर्थे, महानि०१ चू० ।

**संविह-** पुं० [संविध]

आजीविकोपासकभेदे, भग०८ श०५ उ० ।

**संवीत-** त्रि० [संवीत]

आकुले, सूय०१ श्रु०३ अ०२ उ० ।

**संवुड-** त्रि० [संवृत]

निरुद्धेन्द्रिये, उव० ।

सामान्येन प्राणातिपाताद्याश्रवद्वारसंवरोपेते, भग० ११ श०११ उ०

विरुद्धाश्रवद्वारे सर्वविरते, भग०१६ श०६ उ० उक्त० । आचा० ।

मनोवाक्कायगुप्ते, सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ० ।

यमनियमरते, सूय०१ श्रु०१ अ०४ उ० ।

त्रिगुप्तिगुप्ते, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ० । उक्त० ।

इन्द्रियनोइन्द्रियैः संयते, सूय०१ श्रु०१ अ०४ उ० ।

समन्तत आवृते, चंद० २० पाहु० ।

**संवुडकम्म-** पुं० [संवृतकर्मन्]

संवृतानि निरुद्धानि कर्माण्यनुष्ठानानि सम्यगुपयोगरूपाणि वा मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाययोगरूपाणि वा यस्य स तथा ।

निरुद्धकर्मणि, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ०

**संवुडचारि-** पुं० [संवृतचारिन्]

यमनियमाद्युपेते शब्दमनस्के, सूय० १ श्रु०१ अ०२ उ० ।

**संवुडबहल-** त्रि० [संवृतबहुल]

प्राणातिपाताद्याश्रवद्वारनिरोधप्रचुरे, पण्हा०३ अ० ।

**संवुडवियडा-** स्त्री० [संवृतविवृता]

संवृतविवृतोपमरूपे योनिभेदे, ठा० ३ ठा० १ उ० । पत्र० ।

**संवुडा-** स्त्री० [संवृता]

घटिकालयवत् योनिभेदे, ठा० ३ ठा० १ उ० पत्र० ।

**संवुडासंवुड-** न० [संवृतासंवृत]

संवृतासंवृताः स्थगितास्थगिताः परित्यक्तापरित्यक्ताः सावद्य-  
योगाः यस्मिन् सामायिके तत्संवृतासंवृतम् । देशविरति-  
सामायिके, विशे० । आव०म० ।

**संवुड्ड-** पुं० [संवृद्ध]

अव्युत्क्रान्ते, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०८ उ०

**संवेग-** पुं० [संवेग]

संवेजनं संवेगः । भग०१७ श०३ उ० ।

मोक्षोत्कण्ठे, आव०चू०४ अ० । वव० ।

नरसुरसुखपरिहारेण मोक्षसुखाभिलाषे, दश०१ अ० । संथा० ।

विरतिप्रतिपत्तिकारणभूते मोक्षाभिलाषाध्यवसाये, दश० ।

जीवा० । बुह० । उक्त० । आव० ।

भवभये, भग०१ श०७ उ० । दश० । सम० ।

**संवेगकरणत्थ-** पुं० [संवेगकरणार्थ]

संवेगहेतुषु भावेषु, सम० प्र० सम०

**संवेगभावियमइ-** पुं० [संवेगभावितमति]

मोक्षाभिलाषत्वासितमतिके, । जीवा० ।

**संवेध-** पुं० [संवेध]

संयोगे, वव०१ उ० ।

**संवेयण-** न० [संवेदन]

नाणं ति वा संवेदणं ति वा अहिगमं ति वा वेयण ति वा भावो

ति वा एगट्ठा । आव०चू० १ अ० । नं० । आचा० ।

**संवेयणी-** स्त्री० [संवेजनी]

संवेगयति संवेगं करोतीति संवेद्यते वा संवेज्यते वा संवेगं  
ग्राह्यते श्रोता अनयेति संवेगनी संवेदनी संवेजनी वेति । कथा-  
भेदे, ठा० ४ ठा० २ उ० ।

**संवेल्लिअ-** त्रि० [संवेष्टित]

संवर्त्तिते, भग०१६ श०६ उ० ।

**संसइय-** त्रि० [संशयित]

कथमिदं स्यादित्येवं संशयशीले, आव०म० १ अ० ।

संशयविषये, सूय०२ श्रु०२ अ० ।



**संसइय- त्रि० [संशयिक]**

संदिग्धे, 'सदिद्धं संसइअं' उक्त० ।

**संसग- पुं० [संसर्ग]**

सम्यक् सर्गो योगः संसर्गः सम्यक् संबन्धे, विशेष० । सूय० ।  
सांगत्ये, सूय०१ श्रु०२ उ० । आव० । उक्त० । पण्हा० । '।

**संसग्नि- पुं० [संसर्गि]**

संगतौ, उक्त०१ अ० ।

संसक्तौ, बुह०४ उ० । आव०चू० ।

कुशीलादिसंसर्गिनिषिद्धाः । वव०७ उ० ।

मैथुनसम्पर्क स्त्रीपुंससंसर्ग विशेषरूपत्वात्संसर्गजत्वात् संसर्गि-  
रित्युच्यते । पण्हा०४ अ०

**संसट्ट- त्रि० [संसृष्ट]**

खरण्टितेन हस्तादिना दीयमाने, सूय० २ श्रु० २ अ० ।

अन्यदीयपिण्डैः सह सम्मीलिते, बुह०२ उ० ।

संसृष्टं नाम भोक्तुकामेन गृहीतं कूरादौ हस्तः क्षिप्तौ न तावन्मुखे  
क्षिपति तच्च लेपालेपकरणस्वभावमिति । ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

**संसट्टकल्पिय- पुं० [संसृष्टकल्पिक]**

संसृष्टेन खरण्टितेनेत्यर्थो हस्तभाजनादिना दीयमानं कल्पिकं  
कल्पवत् कल्पनीयमुचितम्-अभिग्रहविशेषाद्भक्तादि यस्य सः  
तथाविधाभिग्रहविशेषधारके साधौ, ठा० ५ ठा० १ उ० । सूय० ।

**संसट्टचरय- पुं० [संसृष्टचरक]**

संसृष्टेन खरण्टितेन इत्यादिना दीयमानं संसृष्टमुच्यते; तच्चरति  
यः स तथा । संसृष्टकल्पिके, उव०

**संसट्टा- स्त्री० [संसृष्टा]**

भिक्षाभेदे, निसि०१६ उ० ।

**संसट्टुसिणोदग- न० [संसृष्टोष्णोदक]**

लवङ्गादिरसभाजनस्थे उष्णोदके, निसि० ।

**संसत्त- त्रि० [संसक्त]**

संबद्धे, नाया०१ श्रु०८ अ० ।

संकीर्णे, सम०८ सम० ।

सप्रतिबन्धे, उक्त०२५ अ० ।

द्वीन्द्रियादिजन्तुमिश्रे भक्तपाने, बुह०३ उ० ।

**संसत्तणिज्जुत्ति- स्त्री० [संसक्तनिर्युक्ति]**

अग्रायणीयाख्यद्वितीयपूर्वादुद्धृते सम्मूर्च्छिमजीवसंसक्तिमद्भो-  
ज्याभोज्यप्रदर्शके पूर्वधररचिते निर्युक्तिग्रन्थे, । निसि० ।

**संसत्ततव- पुं० [संसक्ततपस]**

आहारादिपूजासु नित्यं परिणतभावे, बुह० ।

**संसत्ततवोकम्म- न० [संसक्ततपःकर्मन्]**

आहारोपधिशय्यादिप्रतिबद्धभावतपश्चरणे, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**संसद्गण- न० [संशब्दन]**

उत्कीर्तने, आव०४ अ० ।

**संसप्पग- पुं० [संसर्पक]**

संसर्पन्तीति संसर्पकाः । आचा०१ श्रु०९ अ०२ उ० ।

संसर्पणशीलेषु, अहिनकुलादिषु, बुह०१ उ०१ ।

पिपीलिकाकोष्ट्रादिषु, आचा०१ श्रु०१ अ०८ उ० । निसि० ।

**संसय-१ पुं० [संशय]**

एकतरविशेषनिश्चयचिकीर्षोः किमिदमिति विमर्शरूपे, । ठा० ।

अनवधारितार्थज्ञाने, चंद० १ पाहु०

दोलायमानमानसात्मके, उक्त०१ अ० । निसि० । आव०म० ।

अनिर्द्धारितार्थमुभयवस्त्वाशावलम्बितया प्रवृत्ते ज्ञाने, नाया० १  
श्रु० १ अ० । उव० । रा० । न० ।

**संसय-२ पुं० [संश्रय]**

आश्रयणे, सूय० १ श्रु० १० अ० ।

**संसयकरणी- स्त्री० [संशयकरणी]**

संदेहजनिकायां भाषायाम्, संशयकरणी या एका वागनेका-  
र्थाभिधायितया परस्य संशयमुत्पादयति, यथा-सैन्धवमानीय-  
तामित्यत्र सैन्धवशब्दो लवणवस्त्रपुरुषवाजिषु वर्तमान इति ।  
पत्र०११ पद । दश० । संथा० । भग० ।

**संसरंत- त्रि० [संसरत्]**

परिभ्रमति, आतु० ।

**संसरण- न० [संस्मरण]**

सकल्पिकस्त्र्यादिदर्शनतः स्मरणरूपे असंप्राप्तकामभेदे, दश०६

**संसार- पुं० [संसार]**

संसारं संसारः । आव०म०४ अ० ।

भवाद्भवान्तरगमने, विशेष० ।

दुर्गतिभ्रमणे, सूय०१ श्रु०५ अ०२ उ० । आव० ।

तेषु तेषु उच्चावचेषु कुलेषु पर्यटने, उक्त० ३ अ० ।

चतसृषु गतिषु सर्वावस्थासु संसरणे, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

चतुर्गतिकभेदेन संसृतौ, सूय०१ श्रु०६ अ० । दश० । सम० ।

गतिषूत्पादे, आचा०१ श्रु०१ अ०७ उ० ।

**संसारकंतार- पुं० [संसारकान्तार]**

संसार एव कान्तारः-निर्जलः समयस्त्राणरहितोऽरण्यप्रदेशः ।

संसाराटव्याम्, सूय० २ श्रु० ३ अ०

**संसारकलंकलीभाव- पुं० [संसारकलङ्कलीभाव]**

असमञ्जसत्वे, उव०

**संसारचक्रवाल- पुं० [संसारचक्रवाल]**

संसार एव चक्रवालः, चक्रवालशब्दः समूहार्थे । भवसमूहे,  
आतु० । सूय० ।

**संसारण-** न० [संसारण]

ईषत्स्वस्थानात्स्थानान्तरनयेन चालने, नाया० १ श्रु०४ अ० ।

**संसारतरु-** पुं० [संसारतरु]

कषायमूलके संसाररूपे वृक्षे, आचा० ।

**संसारतरुबीज-** न० [संसारतरुबीज]

भववृक्षकारणे, आव०४ अ० ।

**संसारपडिगह-** पुं० [संसारप्रतिग्रह]

दृष्टिवादान्तर्गतसिद्धश्रेणिकापरिकर्मभेदे, सम० प्र० सम० ।

**संसारपडिवण-** पुं० [संसारप्रतिपत्र]

संसारं चतुर्गतिक्षपणं प्रतिपत्रे आचा०१ श्रु०४ अ०२ उ० ।

**संसारपारकंखि-** त्रि० [संसारपारकाङ्खिन्]

मोक्षाभिलाषुके, सूय०१ श्रु०१ अ०३ उ० ।

**संसारमंडल-** न० [संसारमण्डल]

संसारजीवचक्रवाले, संसारमण्डलशब्देन परिभाषितसंज्ञेह सूचिता । भग० ५ श० ५ उ० ।

**संसारविउस्सग-** पुं० [संसारव्युत्सर्ग]

ज्ञानावरणादिकर्मबन्धहेतूनां ज्ञानप्रत्यनीकत्वादीनां त्यागे, उव० नारकायुष्कादिहेतूनां मिथ्यात्वादीनां त्यागे, भग० २ श० ५ उ० ।

**संसारवेइ-** पुं० [संसारवेदिन्]

यथावस्थितसंसारतत्त्वज्ञातरि, आचा० १ श्रु०५ अ०१ उ० ।

**संसारसंचिद्वणकाल-** पुं० [संसारसंस्थानकाल]

संसारस्य भवाद् भवान्तरसञ्चरणलक्षणस्य संस्थानं भवस्थिति-क्रिया तस्य कालः-अवसरः संसारसंस्थानकालः । अमुष्य जीवस्यातीतकाले कस्यां कस्यां गताववस्थाने, भग० ।

**संसारसमावण-** न० [संसारसमापत्र]

संसरणं संसारो नारकतिर्यग्र-रामरभवानुभवलक्षणस्तं सम्यग् एकीभावेनापत्रः संसारसमापत्रः । संसारवर्ति, पत्र०१ पद । ठा० संसारभवं समापत्रकाः-आश्रिताः, संसारिषु, ठा० २ठा० १ उ० संसारं-चतुर्गतिभ्रमणरूपं सम्यग्-एकीभावेनापत्रा, संसारिषु जीवेषु, पत्र० १२ पद ।

**संसारानुपेहा-** स्त्री० [संसारानुप्रेक्षा]

संसारस्य चतसृषु गतिषु सर्वावस्थासु संसरणलक्षणस्यानुप्रेक्षा संसारानुप्रेक्षा । ठा० ३ ठा० ०१ उ० । भग० ।

संसारस्यचतसृषु गतिषु सर्वावस्थासु संसरणलक्षणस्यानुप्रेक्षा संसारानुप्रेक्षा इति । धर्मध्यानभेदे, स्था० ४ ठा० १ उ० ।

**संसाराभिणंदि-** पुं० [संसाराभिनन्दिन्]

भवाभिनन्दिनि मुमुक्षौ, आव०म० १ अ० ।

**संसारावेस-** पुं० [संसारावेश]

संसरणे, सूय० ।

**संसारि-** पुं० [संसारिन्]

संसरणं संसारः, संसरणं ज्ञानावरणादिकर्मयुक्तानां गमनं स एषामस्तीति संसारिणः । दश०२ अ० । विशेष० ।

**संसारिय-** पुं० [सांसारिक]

परस्परसंसरणशीलेषु, सूय०२ श्रु०७ अ० ।

संसारो विद्यते येषु ते सांसारिकाः । संसारिषु, सूय०२ श्रु०७ अ०

**संसारुत्तारणी-** स्त्री० [संसारोत्तारणी]

संसारादुत्तारयति मुक्तिप्रापकत्वेन निस्तारयतीति संसारो-त्तारणी । तथाविधायां धमश्रुतौ, उत्त०३ अ० ।

**संसाहग-** पुं० [संसाधक]

दोलायके पृष्ठतः कुतश्चिदागते साधौ, बुह० ४ उ० ।

**संसाहण-** न० [संसाधन]

गच्छतोऽनुव्रजने, दश०९ अ०१ उ० ।

वदन्तं प्रति ह्येतत्साधूक्तं साध्वित्येवं प्रशंसाकरणे, नाया०१ श्रु०

**संसिच्यमाण-** त्रि० [संसिच्यमान]

आपूर्यमाणे,

गर्भाद् गर्भान्तरमुपयाति संसारचक्रवालेऽरघट- घटीयन्नन्यायेन पर्यटति, आचा० १ श्रु०३ अ०२ उ० ।

**संसिद्ध-** त्रि० [संसिद्ध]

सम्यग् निष्पादिते, सूय०२ श्रु०३ अ० ।

सर्वैः प्रत्यक्षानुमानागमप्रमाणैः प्रतिष्ठिते, विशेष० ।

**संसिय-** त्रि० [संश्रित]

प्रतिबद्धे रूपकादिद्रव्ये, अणुओ० ।

आश्रिते, पण्हा०३ अ०

**संसिलेस-** पुं० [संश्लेष]

परस्परं सम्बन्धे, ठा० १० ठा० ३ उ० । आचा० ।

**संसिलेसिया-** स्त्री० [संश्लेषिकी]

कर्मश्लेषजनन्याम्, आचा०२ श्रु० २ चू०६ अ० ।

**संसीइ-** स्त्री० [संशीति]

संदेह, आचा०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।

चित्तभ्रान्तौ, सूय०१ श्रु०१२ अ० ।

**संसुद्ध-** त्रि० [संशुद्ध]

सम्-समस्तं शुद्धं संशुद्धम् । आव०चू०५ अ० ।

निर्दोषे । उवा०२ अ० ।

सामस्येन शुद्धे, भग०११ श०९ उ० । नाया० । आव० । सूय० ।

कषायादिभिः शुद्धे सुवर्णवन्निर्दोषे, उव० ।

अशबलचरणे, ठा०

**संसुद्धणाणदंसणधर-** पुं० [संशुद्धज्ञानदर्शनधर]

केवलज्ञानदर्शनधा-रिणि, भग०२५ श०६ उ० ।

**संसेइम- न० [संसेकिम]**

संसेकेन निर्वृत्तमिति संसेकिमम्, अरुणिकादिपत्रशाकमुत्काल्य  
येन शीतलजलेन संसिच्यते। तस्मिन्, ठा० ३ ठा० ३ उ०।  
अरुणिकादिसंस्वित्रधावनोदके, गच्छा०२ अधि०।  
तिलधावनोदके, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०७ उ०।  
पिष्टोदके, दश०५ अ०१ उ०।  
तिलाति संसेतिमं ति नायव्वं। निसि०१५ उ०।

**संसेय- पुं० [संसेक]**

जलसेके, ठा० ३ ठा० ३ उ०।

**संसेय- पुं० [संस्वेद]**

शरीरप्रस्वेदे, ठा० ७ ठा० ३ उ०। आचा०।

**संसेयय- पुं० [संस्वेदज]**

संस्वेदज्जाताः संस्वेदजाः। यूकमत्कुणकृम्यादिषु, सूय० १ श्रु०  
७ उ०। दश०। आचा०।  
करीषादिष्विन्धनेषूपद्यमानेषु घुणपिपीलिकाकृम्यादिषु, सूय०१  
श्रु०७ अ० ठा०।

**संसोहण- न० [संशोधन]**

गात्रस्य सम्यक् शोधने, आचा०१ श्रु०९ अ०४ उ०।

**संसोहिय- त्रि० [संशोधित]**

सम्यक् शोधिते, सम्यक् शोधितं पूर्वोत्तराविरुद्धं प्रश्नमुदाहरन्ति।  
सूय० १ श्रु० १४ अ०।

**संहणमाण- त्रि० [संहन्यमान]**

उत्सार्यमाणे, निसि०२० उ०।

**संहत- त्रि० [संहत]**

पिण्डतामापन्ने, उत्त०१ अ०।  
मिलिते, भग०१ श०९ उ०। आव०म०।  
अविरले, ओह०।

**संहरण- न० [संहरण]**

भारनयने, ठा० ४ ठा० ३ उ०।  
क्षेपणायाम्, पिंड०।

**संहरणचरियणिबद्ध- न० [संहरणचरितनिबद्ध]**

संहरणं चरमभरतक्षेत्रावसर्पिणीतीर्थकरजन्माभिषेकचरमबाल-  
भाव चरमयौवनचरमभोगचरमनिष्क्रमणचरमतपश्चरणचरम-  
ज्ञानोत्पादचरमतीर्थप्रवर्तनचरमपरिनिर्वाणनिबद्धे नाट्य, रा०

**संहरिय- न० [संहत]**

दानपात्रं सचित्तेषु कृत्वा दत्तेऽत्रे, पिंड०।  
येन हस्तपात्रा कणदात्री साधोरशनादिकं दास्यति तत्र  
शिष्यादिकं वा यदि स्यात् तदन्यत्र सचित्ते अचित्ते वा क्षिप्त्वा  
तेन यद्दाति तत्संहतम्। जीत०। आचा०। उत्त०।

**संहरिस- पुं० [संघर्ष]**

स्पर्द्धायाम्, ठा० ३ ठा० ३ उ०। आव०चू०।

**संहार- पुं० [संहार]**

पूर्वपर्यायात् प्रच्याव्य पर्यायान्तरेणस्थापने, न०  
व्यापारान्निवर्तने, सूय० १ श्रु०८ अ०।

**संहिच- अव्य० [संहत्य]**

सह सम्भूयेत्यर्थे, नाया०१ श्रु०३ अ०।

**संहिय- त्रि० [संहित]**

अविरले, पण्हा०४ अ० तं०।।

**संहिय- त्रि० [संहत]**

संक्षिप्तमध्ये, जंबू०२ वक्ष०। उव०।

**संहिया- स्त्री० [संहिता]**

अस्त्रलितपदोच्चारणे, आव०म०। दशा०। अणुओ०। उत्त०।

**सकंकडावडेंसग- पुं० [सकङ्कटावतंसक]**

सकङ्कटैः कवचैरवतंसैश्चशेखरकैः शिरस्त्राणभूतैर्यः स तथा।  
कवचशेखरकाभ्यां युक्ते, भग०७ श०९ उ०। जीवा०।

**सककस्स- त्रि० [सकार्कश्य]**

कर्कशभावोपेते, गच्छा०१ अधि०।

**सकज्जमूढ- त्रि० [स्वकार्यमूढ]**

स्वस्वार्थमौढ्यगते, न०।

**सकटलेव- पुं० [सकटलेप]**

चक्रनाम्नि लेपभेदे, बुह० १ उ० १

**सकणुय- त्रि० [सकणुक]**

कणुकेन त्वगाद्यवयवेन यद्वर्तते तत्तथा। सत्वचि, आचा० २ श्रु०  
१ चू० १ अ० ८ उ०।

**सकण्ण- त्रि० [सकर्ण]**

श्रवणशक्तिसहिते, आव०१ अ०।

**सकम्म- न० [सकर्मन्]**

बाल, सूय०१ श्रु०८ अ०।  
ब्राह्मणस्य यजनादिकं षड्विधं कर्म स्वकर्म। उत्त०१४ अ०।  
आत्मना बद्धे ज्ञानावरणीयादिकर्माणि, सूय०१ श्रु०११ अ०।

**सकम्मफलभोयण- न० [स्वकर्मफलभोजन]**

स्वोपात्तकर्मफलभोगे, दश० ४ अ०।

**सकम्मवीरिय- न० [स्वकर्मवीर्य]**

स्वकर्मणां बालानां वीर्यम्। बालवीर्ये, सूय०१ श्रु०११ अ०।

**सकल- न० [शकल]**

खण्डे, जंबू०२ वक्ष०।

**सकवाड- त्रि० [सकपाट]**

कपाटसहिते, वव०४ उ०। निसि०।

**सकसाय-** त्रि० [सकषाय]

सचित्तपृथिव्याद्यवगुण्डिते, आचा०२ श्रु०१ अ०७ उ० ।

**सकहा-१** न० [सक्थि]

अस्थि, सम०३५ सम० ।

तीर्थकराणां मनुजलोकनिर्वृत्तानां सक्थीनिअस्थीनी । सम०३५ ।

**सकहा-२** स्त्री० [सकथा]

याज्ञिकसमयप्रसिद्धे उपकरणविशेषे, निर०१ वर्ग० । भग० ।

**सकाइय-** पुं० [सकायिक]

काययोगयुक्ते, पत्र०३ पद ।

**सकाम-** पुं० [स्वकाम]

स्वकीयायामिच्छायाम्, बुह०३ उ० ।

**सकामकिच्च-** न० [सकामकृत्य]

स्वेच्छाचारितायाम्, सूय०२ श्रु०६ अ० ।

**सकाममरण-** न० [सकाममरण]

पण्डितमरण, उत्त०५ अ० ।

**सकाय-** पुं० [सकाय]

सह कायो यस्य येन वा सकायः । पत्र०१५ पद ।

पृथिव्यादिषड्विधकायविशिष्टे, ठा० २ ठा० ४ उ० ।

**सकिरिय-** त्रि० [सक्रिय]

कायिक्यादिक्रियायुक्ते, उव० । गच्छा० ।

सावच्चानुष्ठाने, सूय०२ श्रु०४ अ० ।

प्रशस्तमनोविनयभेदे, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

सह क्रियया अनर्थदण्डप्रकृतिलक्षणया वर्तते इति सक्रिया ।

अनर्थदण्ड प्रवर्तिकायां भाषायाम्, आचा०२ श्रु०१ चू०४ अ०१

**सकिलेस-** पुं० [संकलेश]

विशुद्धिप्रतिपक्षे कालुष्ये आचा० ।

**सकुंत-** पुं० [शकुन्त]

पक्षिणि, अणुओ० ।

**सकुहर-** त्रि० [सकुहर]

गुञ्जद्वंशतन्त्रीसम्प्रयुक्ते, रा० ।

**सकेयपच्चक्खाण-** न० [सकेतप्रत्याख्यान]

केतनं केतश्चिह्नमङ्गुष्ठग्रन्थिगृहादिकं स एव केतकः, सह केतकेन सकेतकम् । तच्च प्रत्याख्यानं चेति । ग्रन्थादिसहिते प्रत्याख्यानभेदे, । ठा० १० ठा० ३ उ० । सम० ।

**सकोरिंटमल्लदाम-** त्रि० [सकोरिंटमाल्यदामन]

स कोरिंटप्रधानैः कोरिंटकाभिधानकुसुमगुच्छैर्माल्यदामभिः पुष्पमालाभिर्यततथा । भग० ७ श० ९ उ० ।

सकोरिंटकानि कोरिंटकपुष्पगुच्छयुक्तानि माल्यदामानि यत्र ततथा । कोरिंटकमाल्यदामयुक्तेषु, भग०११ श०१० उ० ।

**सकोव-** त्रि० [सकोप]

कुपिते, सूय०१ श्रु०५ अ०२ उ० ।

**सक-१** त्रि० [शक्य]

सोढुं योग्ये, दश०९ अ०३ उ० ।

**सक-२** त्रि० [शक्त]

शक्तिमति, निसि०१४ उ० ।

**सक-३** पुं० [शक्र]

शक्रोतीति शक्रः । ठा० १० ठा० ३ उ० ।

सौधर्मकल्पेन्द्रे, विशेषे । उत्त० । अणुओ० । सूय० । चंद० । ठा० । कल्प० । उवा० । आव०म० । सम० ।

**सक-४** पुं० [शाक्य]

बौद्धश्रमणे, न० । ठा० । आचा० । सूय० । अणुओ० । पिंड० ।

**सककड-** त्रि० [सकृत]

सत्कारयुक्ते, उत्त०२ अ० ।

**सकज्झय-** पुं० [शक्रध्वज]

इन्द्रध्वजे, आव०म०१ अ० ।

**सकदूय-** पुं० [सक्रदूत]

शक्रादेशकारिणि, भग०५ श०४ उ० ।

**सकपुत्त-** पुं० [शाक्यपुत्र]

बौद्धे, सूय०१ श्रु०अ०४ उ० ।

**सकप्पभ-** पुं० [शक्रप्रभ]

शक्रस्योत्पादापर्वते, ठा० १ ठा० ३ उ० ।

**सकमह-** पुं० [शक्रमह]

इन्द्रमह, वव०१ उ० । निसि० ।

**सकम्म-१** त्रि० [सकर्मन्]

लोकव्यापारप्रवृत्तेषु, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

**सकम्म-२** न० [स्वकर्मन्]

आत्मीयकर्मणि, सूय०१ श्रु०७ अ० ।

**सकम्मयद्वाण-** न० [सत्कर्मतास्थान]

सत्ताकर्मणि, आचा०१ श्रु० ३ अ०१ उ० ।

**सकय-** न० [संस्कृत]

मलयगिरिप्रभृतिव्याकरणप्रणीतेन संस्कारमापादिते, बुह०१ उ० संस्कारित, आव०चू० १ अ० ।

**सकय-** त्रि० [सकृत]

पूजिते, पण्हा०१ अ०

**सकरप्पभा-** स्त्री० [शर्कराप्रभा]

शर्कराणाम्-उपलखण्डानां प्रभा-प्रकाशनं स्वरूपणावस्थानं यस्यां सा । अणुओ० । गोत्रेण द्वितीय-नरकपृथिव्याम्, ठा० ७ ठा० ३ उ० । जीवा० । पत्र० । भग० । सम० ।

**सकरा- स्त्री० [शर्करा]**

काशादिप्रभवे गुडविकारे, उत्त०१ अ० । जंबू० । जीवा० । सूय० ।  
लघूपलशकलरूपे । जीवा०१ प्रति । पत्र० ।  
कर्करके, जीवा०३ प्रति० ।  
घग्घरट्टे, भग०१६ श०१ उ०

**सकराभ- पुं० [शर्कराभ]**

गौतमगोत्रावान्तरगोत्रविशेषप्रवर्तके ऋषौ तद्गोत्रजेषु पुरुषेषु  
च । ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**सकसिंह- पुं० [शाक्यसिंह]**

गौतमगोत्रे शुद्धोदनपुत्रे सप्तमबुद्धे, गच्छा० १ अधि० ।

**सकार- पुं० [सत्कार]**

वस्त्रादिना सम्माने, कल्प०१ अधि०६ । उत्त० । नाया० । ठा० ।  
वस्त्राभरणादिभिरभ्यर्चने, आव०५ अ०  
भक्तपानवस्त्रपात्रादीनां परतो योगे, आव०४अ० । ठा० । नाया०  
अर्थप्रदानादौ गुणकथने च । उत्त०१ अ० ।  
प्रवरवस्त्रादिभिः पूजने, ठा० १० ठा० ३ उ० ।  
स्तवनवन्दनादौ ठा० ७ ठा० ३ उ० । सम० । निर० । सूय० ।  
अत्यादरकरणेन वस्त्रादिना वा सम्माने, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।  
अभ्युत्थानासनदानवन्दनानुव्रजनादौ, आव०६ अ० । आव०चू०  
विनयार्हेषु वन्दनादिना आदरकरणे प्रवरवस्त्रादिदाने । भग० ।

**सकारकारण- न० [सत्कारकारण]**

वस्त्रादिभिः सम्मानने, । महानि०४ अ० ।

**सकारणिज- त्रि० [सत्कारणीय]**

आदरणीये, उवा०७ अ० ।  
वस्त्रादिना कल्याणं मङ्गलं दैवतं चैत्यमिति बुद्ध्या पर्युपासनीये,  
जीवा०३ प्रति० । भग० । उव० । नाया० । चंद० ।

**सकारत्त- अव्य० [संस्कारत्व]**

संस्कृतादिलक्षणुक्तत्वे, उव० । रा० ।

**सकारपुरस्कारपरीषह- पुं० [सत्कारपुरस्कारपरीषह]**

सत्कारो वस्त्रादिभिः पूजनं, पुरस्कारः—अभ्युत्थानासनादि संपा-  
दनम्, यद्वा—सकलैव याऽभ्युत्थानाऽभिवादनादिरूपा प्रति-  
पत्तिरिह सत्कारस्तेन पुरस्करणं सत्कारपुरस्कारः, ततस्तावेव स  
एव वा परीषहः सत्कारपुरस्कारपरीषहः । उत्त०२ अ० । आव० ।  
पण्हा० । भग० । सम० ।

सत्कारपुरस्काराभावे दैन्यवर्जने, तदनाकाङ्क्षत्वे । सम०२२ सम०

**सकारबंध- पुं० [संस्कारबन्ध]**

बौद्धमतप्रसिद्धे पुण्यापुण्यादिधर्मसमुदाये, सूय०१ श्रु०१ अ०१

**सकारवंत- न० [संस्कारवत्]**

संस्कृतालिक्षणयुक्तत्वे, सम० ३६ सम०

**सकारवत्तिय- न० [संस्कारप्रत्यय]**

संस्कारार्थे, उव० ।

स्तुत्यादिगुणोन्नतिकरणे, सम०२२ सम० ।

**सकारहज्ज- त्रि० [सत्कारभाज्य]**

विद्वज्जनपूज्ये, वव०३ उ० ।

**सकारासंसापओग- पुं० [सत्काराशंसाप्रयोग]**

दशमे आशंसाप्रयोगभेदे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सकारिता- अव्य० [सत्कारयित्वा]**

वस्त्रादिना विनये, ठा० १ ठा० ।

**सकारिय- त्रि० [सत्कारित]**

फलवस्त्रादिदानतः संमानिते, नाया०१श्रु०१ अ० । कल्प० । उव०

**सकुच्छव- पुं० [शक्रोत्सव]**

इन्द्रमह, आव०म०१ अ० ।

**सकुलिया- स्त्री० [सकुलिका]**

पिष्टमयपोलिकायाम्, आचा०१ श्रु० १ अ०५ उ० । दश० ।

**सकुलीकण- पुं० [सकुलीकर्ण]**

हयकर्णादिषु अन्यतमे अन्तर्द्विपे, तत्रत्ये मनुष्ये च । पत्र०१८  
पद । ठा० । जीवा० । नं० । उत्त० । निसि० ।

**सकेंद- पुं० [शक्रेन्द्र]**

सौधर्मदेवलोकेन्द्रे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सक्रोस- त्रि० [सक्रोश]**

क्रोशसहिते, बुह०३ उ० ।

तत्र यत्क्रोशं तत्पूर्वासु दिक्षु प्रत्येकं सगव्यूतमूर्द्धमधश्चा-  
र्धक्रोशार्द्धप्रयोजनेन च समन्ततो ग्रामाः सन्ति । वव०१० उ० ।

**सक्ख- न० [साक्ष्य]**

परप्रत्ययार्थं यथादृष्टवादिनि, पिंड० ।

**सक्खं- अव्य० [साक्षात्]**

समक्षे, उत्त०२ अ० ।

अनुपचारे, द्वा०१० द्वा० ।

परिस्फुटे, उत्त०२ अ० ।

**सक्खिय- त्रि० [साक्षिक]**

सदा परित्यागसाक्षिणि केवलिप्रतिषिद्धे, । दश०५ अ०२ उ० ।

साक्षित्वकारिणि, पण्हा० २ अ०

अध्यक्षे, नाया० १ श्रु० २ अ०

**सखिखिणिय- त्रि० [सकिङ्किणीक]**

क्षुद्रघण्टिकोपेते, उवा०२ अ० ।

**सक्खुडु- त्रि० [सक्षुद्र]**

क्षुद्रैर्मारजारिदिभिः सह वर्तमाने अवबद्धसिंहादौ, आचा०२ श्रु०१  
चू०२ अ०१ उ० ।



**सग-१ पुं० [शक]**

अनार्यदेशभेदे, पत्र०१ पद ।  
शकदेशनिवासिनि म्लेच्छे, पत्र०१ पद । बुह० । सूय० ।  
धूर्ताख्याने प्रतिपादितानां धूर्ता-नामधिपतौ, गच्छा०२ अधि० ।

**सग-२ त्रि० [स्वक]**

आत्मीये, । आव०म० ।  
निजे, सूय० १ श्रु०३ अ०२ उ० ।  
लोकरूढितः सौन्दर्ये, उत्त०१ अ० ।

**सगढभट्टिया- स्त्री० [स्वकार्यभर्तृका]**

लौकिकश्रुतभेदे, अणुओ० ।

**सगड- न० [शकट]**

शक्नोति शक्यते वा धान्यादिकमनेन वोढुमिति शकटम् ।  
गच्छाम्, उत्त०५ अ० । आव० ।  
गच्छादिके, सूय० १ श्रु०७ अ० । विपा० । आव०म० । अणुओ० ।  
पण्हा० । जंबू० । रा० । उव० । भग० ।  
स्कन्धावारनिवेशादिके, आचा०२ श्रु०१ चू०३ अ०२ उ० ।  
सुभद्रस्य गृहपतेर्भद्राकुक्षिसंभवे पुत्रे, । ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सगडभिज्ज- त्रि० [स्वकृतभिद्]**

स्वकृतकर्मणां भेत्तरि । आचा० ।

**सगडमुह- न० [शकटमुख]**

पुरिमतालनगरसमोपधाने, आव०म०१ अ० । आव०चू० ।

**सगडविहिपरिमाण- न० [शकटविधिपरिमाण]**

इयद्विरेव शकटैर्मया गम्यमिति परिमाणकरणे, उवा०१ अ० ।

**सगडवूह- न० [शकटव्यूह]**

शकटाकृतिसैन्यरचनायाम्, नाया०१ श्रु० १ अ० । जंबू० । उव० ।

**सगडाल- पुं० [शकटाल]**

स्थूलभद्रस्वामिपितरिनन्दराजमन्त्रि, आव०४अ० । कल्प० । बुह०

**सगडालनन्दन-पुं० [शकटालनन्दन]**

शकटालपुत्रे स्थूलभद्रस्वामिनि कल्प० २ अधि०८ । आव०चू० ।

**सगडी- स्त्री० [शकटी]**

गच्छाम्, भग० १५ श० । नाया० । रा० ।

**सगणिच्चिया- स्त्री० [सगणीया]**

स्वगच्छवासिन्यां शिष्यायाम्, निसि०१ उ० ।  
स्वगणसम्बन्धिन्यां शिष्यायाम्, ठा० ५ ठा० ३ उ०

**सगर- पुं० [सगर]**

अजितस्वामिकालीन द्वितीयचक्रवर्तिनि, सम० ७२ सम० ।  
आव० । ठा० । उत्त० ।

**सगराय- पुं० [शकराज]**

शकाख्यम्लेच्छजातीये राजनि, । वव० १० उ० ।

**सगल- त्रि० [सकल]**

समस्ते, उत्त०५ अ० ।  
विशेषे, विशेषे । निसि० । पत्र० ।

**सगलजणसमकख- न० [सकलजनसमक्ष]**

समस्तलोकप्रकटे, जीवा० १ प्रति० ।

**सगलसुयणाणि- पुं० [सकलश्रुतज्ञानिन्]**

सकल-समस्तं चतुर्दशपू-र्वात्मकं जानातीति सकलश्रुतज्ञानी ।  
चतुर्दशपूर्वधरे, पंच०भा०१ कल्प० । पंच०चू० ।

**सगलाएस- पुं० [सकलादेश]**

प्रतिपन्नानन्तधर्मत्मकवस्तुना कालादिभिरभेदकृति प्रधान्याद-  
भेदोपचाराद् वा योगपद्येन प्रतिपादके वचसि, ठा० ।

**सगीय- त्रि० [स्वकीय]**

आत्मीयलाभादौ, आव०४ अ० । आचा० ।

**सग्ग-१ पुं० [स्वक]**

आत्मीये, उत्त० २० अ० ।

**सग्ग-२ पुं० [स्वर्ग]**

देवलोक, आव०६ अ० ।

**सग्गइ- स्त्री० [सद्गति]**

मोक्षगति, उत्त० २ अ० ।

**सग्गंथ- पुं० [सद्ग्रन्थ]**

संश्वासौ ग्रन्थश्च सद्ग्रन्थः । शोभनग्रन्थे, उत्त०२५ अ० ।  
परिग्रहग्रहिले, । बुह०१ उ०२ ।

**सग्गकंखिय- पुं० [स्वर्गकाङ्क्षिक]**

स्वर्गे देवलोक काङ्क्षा यस्यासौ स्वर्गकाङ्क्षिकः । स्वर्गगमना-  
सक्तेषु, तं० ।

**सग्गकामय- पुं० [स्वर्गकामक]**

स्वर्गे देवलोक कामो यस्य स स्वर्गकामः । स्वर्गगमनेच्छी, तं० ।

**सग्गपिपासिय- पुं० [स्वर्गपिपासित]**

स्वर्गदेवलोक पिपासा प्राप्तेऽतृप्तिर्यस्यासौ स्वर्गपिपासितः ।  
स्वर्गगमनसतृष्णे, तं० ।

**सग्गह- न० [सग्रह]**

ग्रहाधिष्ठिते नक्षत्रे, विशेषे ।  
यत् क्रूरग्रहेणाक्रान्तं तत्सग्रहम् । वव० १ उ० ।  
भौमादिक्रूरग्रहोपयुक्ते नक्षत्रे, जीवा० ।  
क्रूरग्रहेणाक्रान्तं सग्रहम् । निसि० २० उ० ।

**सग्गुण- त्रि० [सद्गुण]**

सन्तो विद्यमाना गुणा यस्यासौ सद्गुणः । शोभनगुणे । बुह० । ठा०

**सग्घ- त्रि० [श्लाघ्य]**

प्रशस्ते, सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ० । विशेषे । निसि० ।

**सघर-** त्रि० [सगृह]

सह गृहेण वर्तते इति सगृहः । गृहसहिते, निसि०१ उ० ।

**सघर-** न० [स्वगृह]

स्वकीयगृहे, निसि०१ उ० ।

**सघरमीसय-** त्रि० [स्वगृहमिश्रक]

गृहस्य साधूनां चार्थाय निर्मापिते बुह०१ उ०२ ।

**सचक्र-** त्रि० [सचक्र]

चक्रयोधिनि वासुदेव, आव०१ अ० ।

**सचक्र-** न० [स्वचक्र]

स्वकीयराज्यसैन्ये, सम०३१ सम० । आचा० ।

**सचाव-** त्रि० [सचाप]

सह चापं येषां ते सचापाः । जीवा०४ प्रति०३ अधि० । रा० ।  
चापसहिते, सह चापैः शरैश्च यानि प्रहरणानि कुन्तादीनि  
आवरणानि च स्फुरकादीनि तेषां भरिता युद्धसज्जाश्च युद्धप्रगुणा  
ये ते तथा तेषाम् । भग० ९ श० ३३ उ०

सह चापं शरैर्यानि प्रहरणानि-खड्गादीनि आवरणानि च-  
स्फुरकादीनि तेषां भृतोऽत एव योद्धानां युद्धसज्जश्च युद्धप्रगुणो  
यः स तथा तम् । भग० १७ श० १९ उ० ।

**सचिद्-** त्रि० [सचेष्ट]

सव्यापारे, आव०३ अ० ।

**सचित्त-** त्रि० [सचित्त]

सह चित्तेन वर्तत इति सचित्तम् । जीवति, आव० ४ अ० ।  
चित्तं चेतना संज्ञानमुपयोगोऽवधानमिति पर्यायाः । सह चित्तेन  
वर्तत इति सचित्तम् । आव०१ अ० ।

सचेतने, सूय०२ श्रु०१ अ० ।

‘जीवजुतं दव्वं सचेयणं ।’ निसि०१ उ० ।

सचेतनद्रव्ये, । आव० । सूय० । अणुओ० । भग० ।

विद्यमानचैत्ये, पृथिव्यादिषु जीवेषु, आतु०

**सचित्तकम्म-** त्रि० [सचित्तकम्मन्]

चित्रकर्मणा संयुक्ते, बुह०१ उ०३ ।

**सचित्तचूडा-** स्त्री० [सचित्तचूडा]

कुक्कुटचूलायाम्, निसि०१ उ० ।

**सचित्तनिक्षेप-** न० [सचित्तनिक्षेपण]

सचित्तेषु ब्रीह्यादिषु निक्षेपणम् अन्नादेरादानबुद्ध्या मातृस्थानतः  
अन्यत्र स्थापने, उवा० २ अ० । आव० ।

**सचित्तद्वयकम्प-** पुं० [सचित्तद्वयकल्प]

सचित्तद्वयसामाचार्याम्, पंच० भा० १ ।

**सचित्तपङ्क्ति-** त्रि० [सचित्तप्रतिष्ठित]

सचित्तद्रव्येषु वर्तमाने, निसि० १ उ० ।

**सचित्तपरिणाम-** स्त्री० [सचित्तप्रतिज्ञा]

सचित्ताहारपरित्यागे, आव० चू० ४ उ० ।

सचेतनाहारप्रतिज्ञातः श्रावकः सप्तमीप्रतिमा । सम०११ सम० ।

**सचित्तपेहण-** न० [सचित्तपिधान]

सचित्तेन फलादिना स्थगने, । उत्त० । आव० ।

**सचित्तरजस-** न० [सचित्तरजस]

सचित्तधूलौ, सचित्तरजोनामव्यवहारसमन्विता वातोद्धृता श्ल-  
क्षणधूलिस्तच्च सचित्तरजो वर्ण्यते । वव०७ उ० ।

**सचित्तरुक्ख-** पुं० [सचित्तवृक्ष]

हरितवृक्षे, अशुष्कवृक्षे, निसि०१२ उ० ।

प्राणहरानागच्छतो दृष्ट्वा स्तम्भनविद्यया नदीपूरादिकं स्तम्भी-  
यात्, विद्याया अभावं पलायेत्, पलायनासमर्थश्च श्रान्तो वा  
सचित्तवृक्षमप्यारोहेत् दोषः सचित्तवृक्षमधिष्ठाय नाहारः कार्यः  
। जीत० ।

**सचित्तसम्मिस्साऽऽहार-** पुं० [सचित्तसंमिश्राऽऽहार]

सचित्तेन संमिश्रः आहारः सचित्तसंमिश्राहारः । वल्ल्यादि-  
पुष्पादिना संमिश्रे आहारे, आव० ६ अ० ।

**सचित्ताहार-** पुं० [सचित्ताहार]

पृथिव्यप्कायवनस्पतिजीवशरीराणां सचेतनानामभ्यवहरणे,  
उवा० १ अ० । आव० ।

**सचित्ताहारः-**

सचित्तं चेतना संज्ञानमुपयोगोऽवधानमिति पर्यायाः । सचित्त-  
श्चासावाहारश्चेति समासः, सचित्तो वाऽऽहारो यस्य सचित्त-  
माहारयतीति वा मूलकन्दलीकन्दकार्द्रकादिसाधारणप्रत्येकतरु-  
शरीराणि सचित्तानि सचित्तं पृथिव्याद्याहारयतीति भावना ।  
तथा सचित्तप्रतिबद्धाहारो यथा वृक्षे प्रतिबद्धो गुन्दादि पक्व  
फलानि वा । तथा-अपक्वौषधिभक्षणत्वमिदं प्रतीतं सचित्त-  
सन्मिश्राहार इति । आव०६ अ० ।

**सचित्ताहारवज्जण-** न० [सचित्ताहारवर्जन]

सचित्ताभ्यवहरणपरित्यागे, सचित्ताहारवर्जनप्रतिमा सप्तम्युपा-  
सकप्रतिमा । उवा० १ अ० ।

**सचेयण-** त्रि० [सचेतन]

विवेकिनि, आचा०१ श्रु०३ अ०१ उ० ।

**सचेलय-** पुं० [सचेलक]

चेलान्विते, उत्त०२ अ० ।

**सचेलिया-** स्त्री० [सचेलिका]

सवस्त्रायां निर्ग्रन्थ्याम्, ठा० ५ ठा० २ उ० ।

**सच्च-** १ न० [सत्य]

सन्तः प्राणिनः पदार्थाः मुनयो वा तेभ्यो हितं सत्यम् । आव० ।

**सच्च-२ त्रि० [सार्च]**

सपूज्ये, अवितथे, जगत्पूजास्पदत्वात्तस्य । पण्हा० ।

**सच्चइ- पुं० [सत्यकि]**

निर्ग्रन्थीपुत्रे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

यो हि द्वादशस्तीर्थकृद् भविष्यति । सम० ।

स्पर्शलोलुपे स्वनामख्याते पुत्रे, आचा०१ श्रु०३ अ०१ उ० ।

**सच्चणेमि- पुं० [सत्यनेमि]**

समुद्रविजयस्य राज्ञः शिवादेव्यामुत्पन्ने पुत्रे, अंत० ।

**सच्चपइण्ण- त्रि० [सत्यप्रतिज्ञ]**

सत्यसन्धे, अङ्गीकृतपरिपालयितरि, आव०४ अ० ।

**सच्चपरक्कम- त्रि० [सत्यपराक्रम]**

विहितवीर्ये, उत्त०१८ अ० ।

**सच्चपरूवय- त्रि० [सत्यपरूपक]**

अवितथदेशके, जीवा०१ अधि०

**सच्चप्पभा- स्त्री० [सत्यप्रभा]**

सत्यभामानाम्नां कृष्णस्याग्रमहिष्याम् ठा० १ ठा० ३ उ० ।

**सच्चप्पभाव- त्रि० [सत्यप्रभाव]**

प्रत्यक्षतो दृश्यमानप्रभुत्वे, उव० ।

**सच्चप्पवाय- न० [सत्यप्रवाद]**

सत्यं संयमो वचनं प्रकर्षेण सप्रपञ्चं वदन्ति यत्रेति सत्यप्रवादम् । पूर्व, न० ।

सत्यप्रवादं नाम यत्र जनपदसत्यादेः प्रवदनम् । दश०१ । सम०  
तस्य पदपरिमाणमेका कोटी एकपदोना । सम० प्र० सम० ।

**सच्चप्पवायपुव्व- न० [सत्यप्रवादपूर्व]**

षष्ठे पूर्वगतश्रुतभेदे, ठा० ।

**सच्चभामा- स्त्री० [सत्यभामा]**

स्वनामख्यातायां कृष्णाग्रमहिष्याम्, आचा०१ श्रु०४ अ०१ उ० ।

**सच्चमंत- पुं० [सत्यमन्त्र]**

महत्यामप्यापदि अदीने,

‘सच्चं पधानं महंतीए वि आवदीए जो अदीणो भवति-सो सच्चमंतो’ निसि० २ उ० ।

**सच्चमणप्पओग- पुं० [सत्यमनःप्रयोग]**

सद्भूतार्थचिन्तननिबन्धनस्य मनसः प्रयोगे, भग०५ श०४ उ० ।

**सच्चरत- त्रि० [सत्यरत]**

सत्यप्रधाने, ‘अकोहणे सच्चरते तवस्सी ।’ सूय०१ श्रु०१० उ० ।

**सच्चवं- पुं० [सत्यवत्]**

त्रिंशत्तमेऽहोरात्रमुहूर्ते, चंद०१० पाहू० ।

**सच्चवई- स्त्री० [सत्यवती]** दर्शनपुरे दन्तवक्रराजभार्यायाम्, आव० ४ अ० ।

**सच्चवयण- न० [सत्यवचन]**

सद्भ्यो-मुनिभ्यो गुणेभ्यः पदार्थेभ्यो वा हितं सत्यम् । आह च-‘सच्चं हियं सयामिह संतो मुणउ गुणा पयत्था वा’ सत्यं च तद्वचनञ्च सत्यवचनम् । पण्हा०२ अ० ।

मृषावादविरतौ, उव० । रा० । सम० ।

**सच्चवाइ- पुं० [सत्यवादिन्]**

अविरुद्धवक्तरि, दश०९ अ०३ उ० ।

**सच्चवाय- पुं० [सत्यवाद]**

सत्यो वादः सत्यवादः । तथ्यवादे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सच्चसंघ- पुं० [सत्यसन्ध]**

सत्यप्रतिज्ञे, आव०४ अ० । आव०म० ।

**सच्चसंहणणवंध- पुं० [सत्यसंहननबन्ध]**

सर्वेण सर्वस्य संहननलक्षणो बन्धः क्षीरनीरादीनामिवेति । सत्यसंहननबन्धभेदे, भग०८ श०९ उ० ।

**सच्चसेण- पुं० [सत्यसेन]**

ऐरवतवर्षे भविष्यति त्रयोदशे जिने, आव०

**सच्चसेव- त्रि० [सत्यसेव]**

सेवायाः सफलीकरणात् । सेवाफलदे, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**सच्चा- स्त्री० [सत्या]**

भाषाभेदे, विशे० ।

**सच्चामोस- अव्य० [सत्यामृषा]**

यत्र किञ्चित्सत्यं किञ्चिन्मृषेति मिश्रभाषायाम्, आचा०२ श्रु०१ चू०४ अ०१ उ० । उव० । दश०

**सच्चावाइ- पुं० [सत्यावादिन्]**

सत्यं वदितुं शीलमस्येति सत्यवादी । सत्यवदनशीले, आचा०१ श्रु० ८ अ०१ उ० ।

**सच्चोवाय- त्रि० [सत्यावपात्]**

सफलसेवे, नाया०१ श्रु०८ अ० । भग०

सत्याभिलाषे, उव० ।

**सच्छंद- त्रि० [स्वच्छन्द]**

स्वम्-आत्मीयं छन्दः अभिप्रायो यस्याऽसौ । वव०१ उ० ।

स्वाभिप्राये, आव०म०१ अ० । न० । आव० । अणुओ० । नाया० ।

आत्मच्छन्दसि, वव०९ उ० ।

स्ववशे, विपा०१ श्रु०२ अ० । नाया० । अणुओ० ।

**सच्छंदचारि- त्रि० [स्वच्छन्दचारिन्]**

कामरूपिणि, आव०म०१ अ० ।

**सच्छंदमइ- त्रि० [स्वच्छन्दमति]**

स्वच्छन्दास्ववशा स्ववशे वा मतिरस्येति स्वच्छन्दमतिः । निरर्गलबुद्धौ, विपा०१ श्रु०२ । नाया० ।

**सच्छंदया-** स्त्री० [स्वच्छन्दता]

स्वाभिप्रायेण वर्तितायाम्, वव० १३०

**सच्छंदयारिन्-** त्रि० [स्वच्छन्दचारिन्]

स्वच्छन्देन-स्वाभिप्रायेण न तु जिनाज्ञया चरतीति स्वच्छन्द-  
चारी। यथाछन्दे, गच्छा० १ अधि०

**सच्छंदविगणपिय-** त्रि० [स्वच्छन्दविकल्पित]

स्वच्छन्देन स्वाभिप्रायेण विकल्पितम्। स्वेच्छाकल्पिते, वव० १

**सच्छत्त-** त्रि० [सच्छत्र]

छत्रेण सहिते, सम० ३४ सम०। जीवा०। उव०।

**सच्छाय-** त्रि० [सच्छाय]

सती-शोभना छाया निर्मलस्वरूपा येषां ते। रा०।

सच्छायम्। सच्छाहम्। जीवा०।

शोभनच्छायेषु, जीवा० ३ प्रति० ४।

**सजल-** त्रि० [सजल]

जलसम्पूर्णे, कल्प० १ अधि० ३।

**सजाईय-** त्रि० [स्वजातीय]

आत्मीयजातिविशिष्टे, आव० म० १ अ०।

**सजित्वा-** अव्य० [सजित्वा]

शक्तिं गृहीत्वैत्यर्थे, निसि० १ उ०।

**सजीव-** त्रि० [सजीव]

कोट्यारोपितप्रत्यञ्चे, नाया० १ श्रु० १९ अ०। उव०। विपा०।

मृतधात्वादीनां सहजस्वरूपापादने, जंबू० २ वक्ष०। सम०। नाया०

**सजूह-** पुं० [स्वयूथ]

स्वकीयनिकाये, पण्हा० १ अ०

**सजोग-** त्रि० [सजोग]

संसारिणि, ठा० २ ठा० ४ उ०।

मनोवाक्कायात्मकैर्योगैः सह वर्तमानेषु, न०।

**सजोगि-** त्रि० [सजोगिन्]

सह योगैः कायव्यापारादिभिर्यः सः सजोगी। ठा० २ ठा० १ उ०

मनोवाक्कायात्मकैर्योगैर्वर्तमाने, न०।

**सजोगिकेवलिगुणद्वान-** न० [सजोगिकेवलिगुणस्थान]

योगो वीर्यं शक्तिरुत्साहः पराक्रम इति पर्यायाः, स च मनो-  
वाक्कायलक्षणकरणभेदात्तिस्रः संज्ञा लभते मनोयोगो वाग्योगः  
काययोगश्चेति। तत्र भगवतो मनोयोगो मनःपर्यायज्ञानिभि-  
रनुत्तरसुरादिभिर्वा मनसा पृष्ठस्य सतो मन सैव देशनात्, ते हि  
भगवत्प्रयुक्तानि मनोद्रव्याणि मनःपर्यायज्ञानेनावधिज्ञानेन वा  
पश्यन्ति, दृष्ट्वा च ते विवक्षितवस्त्वाकारान्यथानुपपत्त्या लोक-  
स्वरूपादिबाह्यमर्थमवगच्छन्ति, वाग्योग, धर्मदेशनादौ, काय-  
योगो निमेषोन्मेषचङ्क्रमणादौ। योगत्रयेण सह वर्तत इति सजोगी

केवलं-केवलज्ञानं ककेवलदर्शनं च विद्यते यस्य स केवली।  
सजोगी चासौ केवली च सजोगिकेवली तस्य गुणस्थानं सजोगि  
केवलिगुणस्थानम्। आव० चू०।

**सजोगिभवत्यकेवलनाण-** न० [सजोगिभवत्यकेवलज्ञान]

सह योगैः कायव्यापारादिभिर्यः स सजोगी इन् समासान्तत्वात्  
स चासौ भवत्यश्च तस्य केवलज्ञानमिति विग्रहः। काय-  
व्यापारसहितस्य भवत्यस्य केवलज्ञाने, ठा०।

**सजोणिय-** त्रि० [सजोणिक]

सह योन्या उत्पत्तिस्थानेन वर्तन्ते इति सजोणिकाः संसारिणु,  
ठा० २ ठा० १ उ०।

**सज्योति-** त्रि० [सज्योतिष]

सह ज्योतिषा उद्द्योतेन वर्तत इति सज्योतिः। साग्निके सूर्य० १  
श्रु० ५ अ० १ उ०।

सज्योतिः साग्निकमित्यर्थः। दश० ८ अ० २ उ०।

**सज्ज-१** त्रि० [सज्ज]

प्रगुणीभूते, नाया० १ श्रु० १६ अ०। उव०।

**सज्ज-२** अव्य० [सज्जस्]

शीघ्रे, आतु०।

तत्काले, बुह० १ उ० ३

**सज्ज-३** पुं० [सज्ज]

वृक्षविशेषे, नाया० १ श्रु० १६ अ०। विशेषे। ठा०।

**सज्ज-४** त्रि० [षड्ज]

षड्भ्यो जातः षड्जः। अणुओ०।

स्वरभेदे,

‘नासाकण्ठमुरस्तालुजिह्वादन्ताश्च संश्रिताः। षड्भिः संजायते  
यस्मात्तस्मात् षड्ज इति स्मृतः’। अणुओ०।

**सज्जण-** पुं० [सज्जन]

विशिष्टलोके, पण्हा० ३ अ०

**सज्जमरण-** न० [सज्जमरण]

तात्कालिकमरणे, आव० ५ अ०।

**सज्जमाण-** त्रि० [सज्जमान]

सङ्गमं कुर्वति, सूर्य० १ श्रु० १ अ०।

आसितं कुर्वति, सूर्य० १ श्रु० ७ अ०। निसि०।

**सज्जम्मदरिद्-** पुं० [सज्जम्मदरिद्]

आजन्मदरिद्रे, महानि० २ चू०।

**सज्जा-** स्त्री० [शय्या]

वसति, आव० ५ अ०।

शयने, ठा० ५ ठा० २ उ०।

घट्टशालादिरूपायां वसतौ, सम० २० सम०।

**सज्जिय-** त्रि० [सज्जित]

निष्पादिते, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।  
वितानिते, उव० ।

**सज्झ-** त्रि० [साध्य]

शक्य, पिंड० ।  
निवर्त्यस्वभाव, आव०म०१ अ० ।

**सज्झंतिय-** पुं० [साह्यान्तिक]

ब्रह्मचारिणि, बुह०४ उ० ।

**सज्झंतिया-** स्त्री० [साह्यान्तिका]

भगिन्याम्, वव०३ उ० ।

**सज्झंभराग-** पुं० [सन्ध्याभराग]

वर्षासु सन्ध्यासमयभाविनि अभ्र-रागे, रा० ।

**सज्झय-** पुं० [सध्वज]

कल्पपाल, बुह०५ उ० ।

**सज्झवयणणिद्देस-** पुं० [साध्यवचननिर्देश]

साध्यत इति साध्यम्, उच्यत इति वचनम्, अर्थः, यस्मात्स एवोच्यते । साध्यं च तद्वचनं च साध्यवचनं साध्यार्थ इत्यर्थः तस्य निर्देशः-प्रतिज्ञा । अनुमानकोटौ प्रतिज्ञावचने, दश०१ अ०

**सज्झाय-** पुं० [स्वाध्यायिक]

अध्ययनम्-अध्यायः, शोभनोऽध्यायः स्वाध्यायः स एव स्वाध्यायिकः । स्वाध्याये, आव०४ अ०

**सज्झाय-** पुं० [स्वाध्याय]

अध्ययनम्-अध्यायः, शोभनोऽध्यायः स्वाध्यायः, स एव स्वाध्यायः । आव०४ अ० ।

सुष्ठु आमर्यादया अधीयते इति स्वाध्यायः । ठा० २ ठा० २ उ०

**सज्झायजोग-** पुं० [स्वाध्याययोग]

वाचनाद्युपचारव्यापारे, दश०२ चू० ।

**सज्झायज्झाणय-** न० [स्वाध्यायध्यानरत]

स्वाध्याय एव ध्यानं स्वाध्यायध्यानं तत्र रतः । स्वाध्याये ध्याने च रते, दश० ८ अ० ।

**सज्झायभूमि-** स्त्री० [स्वाध्यायभूमि]

विचारभूमौ, स भिक्षुर्बहिर्विचारभूमिं संज्ञाव्युत्सर्गभूमिं तथा विहारभूमिं स्वाध्यायभूमिं तैरन्यतीर्थिकादिभिः सह दोष-सम्भवान्न प्रविशेत् । आचा०२ श्रु० २ चू०३ अ० । निसि०२ उ०

**सज्झायमुक्कजोग-** त्रि० [स्वाध्यायमुक्तयोग]

स्वाध्यायेन मुक्तो योगो व्यापारो यस्य सः स्वाध्यायमुक्तयोगः । स्वाध्यायकारिणि, गच्छा० ३ अधि० ।

**सज्झायवाय-** पुं० [स्वाध्यायवाद]

वि शुद्धपाठकोऽहमित्यादिके वादे, सम०३० सम० ।

**सज्झिल्लग-** पुं० [सज्झिल्लक]

भ्रातरि, पिंड० । बुह० । वव० ।  
भगिन्याम्, सज्झिल्लिका । पिंड०

**सट्ठाण-१** न० [स्वस्थान]

आत्मीये स्थाने, यत्र हि स तिष्ठति, बुह०४ उ० । भग० । चंद० ।  
सगट्ठाणं सट्ठाणं । निसि०१ उ० ।

**सट्ठाण-२** न० [स्वस्थान]

द्वादशसंख्येऽहोरात्रमुहूर्ते, कल्प०१ अधि०६ क्षण ।

**सट्ठाण-३** न० [स्वस्थान]

इहापत्तिरूपं प्रायश्चित्तं स्वस्थानमुच्यते । जीत० ।

**सट्ठाणगसंकमण-** न० [स्वस्थानकसंकमण]

पिपीलिकादीनामण्डादिसंचालने, सट्ठाणगसंकमणं पिपीलिंग-मक्रोडगादीणं भण्णति निसि० १३ उ० ।

**सट्ठाणट्ठाणंतर-** न० [स्वस्थानस्थानान्तर]

स्वस्थानात् पूर्वपूर्वस्थानादुत्तरोत्तरस्य संख्यास्थानस्य उत्पत्ति-स्थानात्संख्याविशेषलक्षणात् गुणनीयादित्यर्थः स्थानान्तराणि । अनन्तरस्थाने, सम० ८४ सम० ।

**सट्ठाणसण्णिगास-** पुं० [स्वस्थानसन्निकर्ष]

स्वम्-आत्मीयं सजीतायं स्थानं पर्यवाणामाश्रयः स्वस्थानं पुलाकादेः पुलाकादिभिरेव, तस्य सन्निकर्षः । स्वस्थान संयोजने, भग० २५ श० ६ उ० ।

**सट्ठाणाऽऽरोवणा-** स्त्री० [स्वस्थानाऽऽरोपणा]

स्वकं स्थानं स्वस्थानं, स्वस्थानस्यारोपणा स्वस्थानारोपणा । प्रतिसेवमानस्य प्रतिसेवनीयस्थानस्यारोपणायाम्, निसि०१ उ०

**सट्ठि-** स्त्री० [षष्टि]

षडावृत्तायां दशसंख्यायाम्, पन्न०२ पद ।

**सट्ठितंत-** न० [षष्टितन्त्र]

कापिलीयशास्त्रे, नाया०१ श्रु०५ अ० । आव० नि० ।

षष्टितन्त्रं संवृतमेवं कुतीर्थं जातं तत्कपिलोपदिष्टम् । आव०चू०१

**सट्ठितंतविसारय-** पुं० [षष्टितन्त्रविशारद]

षष्टितन्त्रं कापिलीयशास्त्रं तत्र विशारदः-पण्डितः । सांख्य-वेत्तरि, कल्प० १ अधि० १ । उव० ।

**सट्ठिभत्त-** न० [षष्टिभक्त]

उपवासविंशतौ, 'सट्ठि भत्ताइं अणसणाइं छेएत्ता' प्रतिदिनं भोजनद्रव्यस्य त्यागात् त्रिंशद् दिनैः षष्टिभक्तानि त्यक्तानि भवन्ति । भग० २ श० १ उ० ।

**सट्ठिय-** त्रि० [सष्टिक]

षष्टिवर्षजाते, न० ।

षष्ट्यहोरात्रेः परिपच्यमानेषु शालिषु, जंबू०३ वक्ष० ।



**सट्टिहायण-** त्रि० [षट्तिहायन]

षट्तिहायनाः सम्वत्सरा यस्य स षट्ति हायनः । षट्तिवर्षजाते,  
जीवा०३ प्रति०१ अधि० २ उ० ।

**सडङ्गविय-** पुं० [षडङ्गविद्]

पूर्वोक्तानि षडङ्गानि विचारयतीति षडङ्गवित् । कल्प०१ अधि०१  
शिक्षादिविचारक, उव० । निसि० ।

**सडण-** न० [सटन]

कुष्ठादिनाऽङ्गुल्यादेर्गलने, नाया०१ श्रु०१ अ० । तं० ।  
स्वत एव विशरणे, पण्हा० १ अ०

**सडुल-** न० [शादुल]

प्रत्यग्रहरिते तृणे, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**सडु-** पुं० [श्राद्ध]

श्रद्धाश्रद्धानं यस्मिन्नस्ति स श्राद्धः । श्रद्धेयवचने । ठा० ३ ठा० ३  
धर्मलिप्सौ, सूय०२ श्रु०१ अ० ।  
दर्शनश्रावके, । आचा० । आव० ।  
श्रद्धया क्रियमाणे मृतेषु पित्रादिषु पिण्डदाने, । ठा० १ ठा०  
। भग० । उव० । नि० ।

**सडुकय-** त्रि० [श्राद्धकृत]

श्रावकविहिते, जीवा०१ प्रति० ।

**सड्वा-** स्त्री० [श्रद्धा]

रुचौ, उत्त०५ अ० ।  
अभिलाषे, नाया०१ श्रु०१ अ० । रा० ।  
इच्छायाम्, नि०१ श्रु०१ वर्ग०१ अ० । नाया० ।  
मोक्षमार्गोद्यमेच्छायाम्, आचा०१ श्रु०३ अ०४ उ० ।  
स्त्रीसङ्गाभिलाषे, दश०६ अ० । आव०क० ।

**सड्वाण-** पुं० [श्रद्धान]

तत्त्वेषु अनुष्ठानेषु वा निजेऽभिलाषे, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**सड्धि-** पुं० [श्राद्धिन्]

श्रद्धा मोक्षमार्गोद्यमेच्छा वर्तते यस्यासौ श्रद्धावान् । आचा० १  
श्रु०३ अ०४ उ० ।  
श्रद्धा-धर्मेच्छा विद्यते यस्यासौ श्रद्धावान् । आचा०१ श्रु०५ अ०५  
उ० । निसि० । ठा०  
श्रद्धावति, सूय०१ श्रु०११ अ० । पिंड० ।  
श्रावक, निसि०२ उ० । सूय० । कल्प० ।

**सड्धिय-** त्रि० [श्राद्धिक]

श्रद्धाश्रद्धानं यस्मिन्नस्ति स श्राद्धः । श्रद्धेयवचने, ठा० ३ ठा० ३

**सड्डी-** स्त्री० [श्रद्धी]

अविरतसम्यग्दृष्टिकायाम्, वव० ३ उ० ।  
श्राविकायाम्, जीवा०१ प्रति० ।

**सढ-** पुं० [शठ]

धूर्ते, उत्त०७ अ० ।  
स्तब्धे, । उत्त० ।  
शठकर्मकारित्वात् । सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ० ।  
मिथ्याभाषिणि, उत्त०३४ अ० ।  
विश्वस्तजनवञ्चके, उत्त०७ अ० ।  
शठानुष्ठाने, सूय०१ श्रु०३ अ०२ उ० । ठा० ।  
मायिनि, पण्हा०२ अ०  
निकृतिमिति मायोपेते, पण्हा० ३ अ० ।  
कैतवयुक्ते, सम०३ सम० । आव०म० ।

**सढवन्दण-** न० [शठवन्दन]

स्वनामख्याते विंशतितमे वन्दनकदोषे, बुह० ।

**सढा-** स्त्री० [शठा]

जटायाम्, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**सण-** पुं० [शण]

वल्कलप्रधाने वनस्पतिविशेषे, नाया०१ श्रु०९ अ० ।  
शणप्रभृतयः सप्तदश धान्यानि । आव०म०१ अ० । पत्र०  
त्वक्प्रधाननाले धान्यविशेषे, भग०६ श०७ उ० । उत्त० । ठा० ।  
तत्तुष्ये । नाया०१ श्रु०१ अ० ।  
सणजातिभेदे, अणुओ० ।

**सणकुमार-** पुं० [सनत्कुमार]

चतुर्थचक्रवर्तिनि, सम० । आव० ।

**सणकुमारमाहिंदकप्प-** पुं० [सनत्कुमारमाहेन्द्रकल्प]

स्वनामख्याते कल्पे, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**सणदिघोस-** त्रि० [सनन्दिघोष]

सह नन्दिघोषो द्वादशतूर्यनिनादो यस्य सः । नन्दिघोषतुल्ये,  
जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**सणकप्पास-** पुं० [शणकर्पास]

शणत्वचि, 'सणी' वणस्सति जातो तस्स वा गोकव्वणिज्जो  
कप्पासो भण्णाति । निसि० २ उ० ।

**सणबंधण-** न० [शणबन्धन]

शणपुष्पवृन्ते, उव० ।

**सणय-** न० [शणज]

शणादिवल्कजे, निसि०१ उ० ।

**सणसत्तरस-** त्रि० [शणसप्तदशन]

शणः सप्तदशो येषां ब्रीह्यादीनां तानि तथा । शणादि-  
सप्तदशसंख्याकेषु धान्येषु, पण्हा०२ अ० ।

**सणहण्णई-** स्त्री० [सनखपदी]

सनखपदपञ्चेन्द्रियतिर्यग्जातिस्त्रियाम्, जीवा०२ प्रति० ।

**सणहप्पय-** पुं० [सनखपद]

नखरेषु सिंहादिषु, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।  
सनखानि दीर्घनखपरिकलितानि पदानि येषां ते श्वादयः ।  
जीवा०१ प्रति० । सूय० । पण्हा० । भग० ।

**सणहमच्छ-** पुं० [सनखमत्स्य]

मत्स्यभेदे, जीवा०१ प्रति० । पत्र० ।

**सणहा-** स्त्री० [सनखा]

नखोपलक्षितायां पिण्डिकायाम्, यस्यां पिण्डिकायां बध्य-  
मानायामङ्गुलीनखा ओष्ठस्याधो लगन्ति सा सनख । भग०१५

**सणाण-** न० [सज्ञान]

ज्ञानेन सहितम् । सम्यग्दृष्टिसहितेषु, ठा० २ ठा० ४ उ० ।

**सणातण-** त्रि० [सनातन]

शाश्वत, द्रव्यार्थतया नित्य, सूय०२ श्रु०६ अ० ।

**सणाह-** त्रि० [सनाथ]

सस्वामिक, नाया० १ श्रु० ८ अ० । आव०म० ।

**सणाभि-** त्रि० [सनाभि]

बान्धवे, 'बन्धू सयणी सणाही य' उक्त० ।

**सणिओग-** पुं० [शनियोग]

परस्य कुबुद्धिसुबुद्ध्यादिदाने शनैश्चरग्रहयोगे, उक्त०३२ अ० ।

**सणिंचर-** पुं० [शनैश्चर]

महाग्रहभेदे, ठा० ।

**सणिंचारि-** पुं० [शनैश्चारिन्]

शनैर्मन्दमुत्सुकत्वाभावाच्चरन्तीत्येवंशीलाः शनैश्चारिणः । भग०  
६ श०७ उ० ।

यत्र सुखमसुखमाकालः तत्रत्यमनुष्यजातौ, जीवा०३ प्रति०४

**सणिच्चर-** पुं० [शनैश्चर]

ताराग्रहभेदे, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**सणिच्छर-** पुं० [शनैश्चर]

चतुर्थे महाग्रहविशेषे, कल्प०१ अधि० ५ । चंद० । ठा० ।  
ज्योतिर्देवे, पत्र० २ पद । सूय० । उव० । पण्हा० । जंबू० ।

**सणिच्छरसंवत्सर-** पुं० [शनैश्चरसंवत्सर]

शनैश्चरनिष्पादितसंवत्सरः शनैश्चरसंवत्सरः । संवत्सरभेदे, चंद० ।

**सणिधण-** त्रि० [सनिधन]

सक्षये, पण्हा०१ अ०

**सणिमित्त-** त्रि० [सनिमित्त]

सह निमित्तेन उपादानकारणेन सहकारिकारणेन वा वर्तत इति  
सनिमित्तम् । सकारणे, सूय०२ श्रु० १ अ० ।

**सणिय-** अव्य० [शनैस्]

मन्दे, अशैघ्रये च । 'सणियं सणियं' आचा०२ श्रु०३ चू० ।

**सणियाण-** त्रि० [सनिदान]

सह निदानेन वर्तत इति सनिदानः । भोगसारूपनिदानसहिते,  
सूय०१ श्रु०१३ अ० ।

**सण्ण-** त्रि० [संज्ञ]

सम्यग् जानाति पश्यतीति संज्ञः । ज्ञानदर्शनयुक्ते, आचा०१  
श्रु०५ अ०६ उ० ।

**सण्ण-** त्रि० [सत्र]

अवसत्रे, मग्ने,  
'सन्नो इह काममुच्छ्रिया, मोहं जंति असंवुडा नरा ।' सूय०१  
श्रु०२ अ०१ उ० ।

**सणक्खर-** न० [संज्ञाक्षर]

संज्ञायतेऽनयेति संज्ञानाम तन्निबन्धनं तत्कारणमक्षरं संज्ञा-  
क्षरम् । अक्षरश्रुतभेदे, बुह०१ उ०१ ।

**सण्णजंघ-** पुं० [स्वर्णजंघ]

ऋषभदेवजीवस्य वज्रजङ्घस्य पितरि, आव० १ अ० ।

**सण्णद्ध-** त्रि० [सन्नद्ध]

कृतसन्नाहे, नाया०१ श्रु०२ अ० । विपा० । उव०  
'सण्णद्धबद्धवर्मियकवया' सन्नद्धबद्धवर्मितकवचाः । कवचं  
तनुत्राणं वर्मलोहमयकुतूलादिरूपं संजातमस्मिन्निति वर्मि-  
तम् । सन्नद्धं-शरीरं आरोपणात् बद्धंगाढतरबन्धनेन बन्धनात्  
वर्मितं कवचं यैस्ते सन्नद्धबद्धवर्मितकवचाः । जीवा०३ प्रति०  
२ उ० । भग० ।

**सण्णप्प-** त्रि० [संज्ञाप्य]

प्रज्ञापनीये, न० । ठा० । आचा० ।

**सण्णय-** पुं० [सन्नय]

समीचीननये, प्रति० ।

**सण्णयपास-** त्रि० [सन्नतपार्श्व]

सम्यग्धोऽधः क्रमेण नतौ पार्श्वौ येषां ते सन्नतपार्श्वः । अधोऽधः  
क्रमावनतपार्श्वेषु, जीवा०३ प्रति ०४ अधि० । जंबू० ।

**सण्णवणा-** स्त्री० [संज्ञापना]

संबोधनायाम्, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**सण्णा-** स्त्री० [संज्ञा]

व्यञ्जनावग्रहोत्तरकालभवे मतिविशेषे, आहारभयाद्युपाधिका-  
यामचेतनायाम्, अभिधाने, ठा० ।

**सण्णाकरण-** न० [संज्ञाकरण]

संज्ञाविशिष्टं करणं संज्ञाकरणम् ।

सङ्केतकरणे, विशेषे । आव० ।

**सण्णाखंध-** पुं० [संज्ञास्कन्ध]

संज्ञानिमित्ताऽवग्रहणात्मके प्रत्यये, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।

**सण्णाण-** न० [संज्ञान]

उपयोगे अवधाने, आव०६ अ० ।  
स्मृतावबोधे, आचा०१ श्रु०१ अ०१ उ०  
संज्ञा व्यञ्जनावग्रहोत्तरकालभवे मतिविशेषे, ठा० १ ठा० ।

**सण्णाणपसंसा-** स्त्री० [संज्ञानप्रशंसा]

संज्ञानप्रशंसनमिति सद् अविपर्यस्तं ज्ञानं यस्य स सज्ज्ञानः  
पण्डितो जनः,  
सतो वा ज्ञानस्य सविवेचनलक्षणस्य प्रशंसनं पुरस्कार इति ।  
विद्वज्जन-प्रशंसायाम्, आव० ।

**सण्णाणादुदय-** पुं० [संज्ञानाद्युदय]

सम्यग्ज्ञानदर्शनादिनिर्वाणकार-णोत्पत्तौ, आव० ।

**सण्णाणिव्वत्ति-** स्त्री० [संज्ञानिव्वत्ति]

संज्ञानिष्पत्तौ, भग०१९ श०८ अ०

**सण्णाभूमि-** स्त्री० [संज्ञाभूमि]

व्युत्सर्गभूमौ, आचा० १ श्रु०१ अ०१ उ०

**सण्णामुह-** न० [संज्ञामुख]

पुरुषोच्चये, आव०००१ अ० ।

**सण्णायग-** पुं० [सन्नायक]

शोभने नायके,  
गृहस्वामिन्, निसि०२ उ० ।

**सण्णास-** पुं० [संन्यास]

परित्यागे, न० ।

**सण्णासिद्धि-** स्त्री० [संज्ञासिद्धि]

संज्ञानं संज्ञा रूढिरिति पर्यायाः । तथा सिद्धिः संज्ञासिद्धिः ।  
संज्ञासम्बन्ध, दश०१ अ० ।

**सण्णासुत्त-** न० [संज्ञासूत्र]

स्वसङ्केतपूर्वकं निबद्धे, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।

**सण्णाह-** पुं० [सन्नाह]

प्रहरणे खङ्गादिके, ठा० ९ ठा० ३ उ० । उव०

**सण्णि-** पुं० [संज्ञिन्]

संज्ञानं संज्ञा भूतभवद्भाविभावस्वभावपर्यालोचनम् ।  
विशिष्ट संवरणादिरूप मनोविज्ञानभाजि प्राणिनि यः सम्यग्  
जानाति ईहापोहादिगुणजुतो त्ति वुत्तं भवति आव०चू० १ अ० ।  
ठा० । आव००० । उव० ।  
विशिष्टस्मरणादिरूपमनोविज्ञान सहितेन्द्रियपञ्चकसमन्विते प्रा-  
णिनि, । न० ।  
संज्ञा गुरुदेवधर्मपरिज्ञानं सा विद्यते यस्य स संज्ञी । बुह०१ उ०३  
समानस्कन्धजीवे, विशेष० । निसि० ।

**सण्णिव्वित्त-** त्रि० [सन्निव्वित्त]

न्यस्ते, ठा० ५ ठा० १ उ० ।

जगत्स्थितिस्वाभाव्येन सम्यग् निवेशिते, रा० ।

**सण्णिकोसलय-** पुं० [संज्ञिकोशलक]

कोशलश्रावक, वव० १० उ०

**सण्णिगम्भ-** पुं० [संज्ञिगर्भ]

मनुष्यगर्भवसत्तौ, भग० १४ श०१० उ०

**सण्णिगरिस-** पुं० [सन्निकर्ष]

संबन्धे, सूय०१ श्रु०१२ अ० ।

संयोगे, 'संजोग सन्निगासो पडुच्च संबन्ध एगट्ठा ।' न० ।

**सण्णिगास-** पुं० [सन्निगाश]

सदृशे, नाया०१ श्रु०१ अ० । आव००० । रा० ।

'सन्निगासो नाम अब्भासो वा अववादो वा' पंच०चू० ४ ।

**सण्णिचय-** पुं० [सन्निचय]

प्राचुर्ये उपभोग्यद्रव्यनिचये, आचा०१ श्रु०२ अ०१ उ० ।

सम्यग् निश्चयेन चीयते इति सन्निचयः ।

विनाशिद्रव्याणाम्- भयासितामृद्वीकादीनां संग्रहे, आचा० १ श्रु०  
२ अ०५ उ० ।

**सण्णिचिय-** पुं० [सन्निचिय]

प्रचयविशेषान्निविडीकृते, अणुओ० ।

**सण्णिणाय-** पुं० [सन्निनाद]

पण्हा० ।  
प्रतिशब्दे, उव० ।

**सण्णिपुव्वजाइसरण-** न० [संज्ञिपूर्वजातिस्मरण]

संज्ञिनां सतां या पूर्वजातिः-प्राक्तनो भवस्तस्या यत्स्मरणं  
तत्तथा ।

संज्ञिनां सतां पूर्वभवस्य स्मरणे, उव० ।

**सण्णिप्पवाय-** पुं० [सन्निप्रपात]

संज्ञिनोऽवपतनस्थाने, ठा० ३ ठा०

**सण्णिभ-** पुं० [सन्निभ]

सदृशे, । तं० । जंबू० ।

**सण्णिभूय-** पुं० [संज्ञिभूत]

संज्ञिनः पञ्चेन्द्रियाः सन्तो भूता नारकत्वं गताः संज्ञिभूताः ।  
पञ्चेन्द्रियेषु सत्सु नारके, भग०१ श०२ उ० ।

**सण्णिर-** त्रि० [सन्निर]

पत्रशाके, दश०५ अ०१ उ० ।

**सण्णिरुद्ध-** त्रि० [सन्निरुद्ध]

सम्यग् निरुद्धं सन्निरुद्धम् । आचा०२ श्रु०२ चू०१ अ० ।

सूत्रकादिना अत्यन्तं नियन्त्रिते, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०४ । उत्त०

**सण्णिवयमाण-** त्रि० [सन्निपतत्]

गच्छति, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०३ उ० ।

**सण्णिवाइय- पुं० [सन्निपातिक]**

संहतरूपतया नाऽतिनियतं पतनं गमनमेकत्र वर्तनं सन्निपातः, कोऽर्थः ? एषामेव द्व्यादिसंयोगिप्रकारस्तेन निर्वृत्तः सान्निपातिकः । ठा० । भग० ।

सन्निपात एषामेवौदयिकादिभावानां द्व्यादिमेलापकः स एव, तेन वा निर्वृत्तः सान्निपातिकः । अणुओ० ।  
पञ्चानामपि भावानां द्विकादिसंयोगनिष्पन्ने भावभेदे, सूय० १ श्रु० १३ अ० । अणुओ० ।

**सण्णिवाय- पुं० [सन्निपात]**

अपरापरस्थानेभ्यो जनानामेकत्र मीलने उव० । नाया० ।  
वातादित्रयसंयोगे, पण्हा० ५ अ० । भग० । उव० ।  
द्वित्रिभावानां संयोगे, आव० म० १ अ० ।  
मेलापके, सूय० २ श्रु० ६ अ० । बुह० । ठा० ।  
औदयिकादिभावानामेव द्व्यादिसंयोगे, उत्त० १ अ० ।  
अनन्तरोक्तादिभावानां मेलके, अणुओ०  
समवाय, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**सण्णिविट्ट- त्रि० [सन्निविष्ट]**

सम्यक् स्वशरीरानाबाधया न तु विषमसंस्थानेन निविष्टाः सन्निविष्टाः । जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।  
अभिनिविष्टे, पण्हा० ५ अ०  
सम्यक् निश्चलता आपत्परिहारेण च निविष्टे, आव० म० १ अ० ।  
पण्हा० । जंबू० । रा० ।  
निवेशिते, विपा० १ श्रु० ३ अ० । नाया० । उव० ।  
सन्निवेशपाटके, रा० ।  
आवसिते, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ३ उ० ।

**सण्णिवेस- पुं० [सन्निवेश]**

यात्रार्थसमागतजनावासे, जनसमागमे च । आचा० १ श्रु० ८ अ० ६ उ० । उत्त० ।  
स्थाने, आचा० १ श्रु० ६ अ० १ उ० ।  
यत्र प्रभूतानां भण्डानां प्रवेशः स सन्निवेशः ठा० ५ ठा० १ उ०  
कटकादीनामावासे, नाया० १ श्रु० ८ अ० । ठा० । सूय० । उव० ।  
घोषादौ, अणुओ० । भग० । उव० ।  
सत्थावासणत्थाणं सण्णिवेसो गामो वा पीडितो संनिविट्ठो जत्तागतो वा लोगो सन्निविट्ठो सो सण्णिवेसं भण्णाति । निसि० १२ उ०

**सण्णिसज्जा- स्त्री० [सन्निषद्या]**

सच्छोभनाः सुखोत्पादकतयाऽनुकूलत्वात्त्रिषद्या इव निषद्याः । स्त्रीभिः कृतायां मायायाम्, स्त्रीवसतौ च । 'तम्हा समणा ण समेति आयहियाए सन्निसेज्जाओ' सूय० १ श्रु० ४ अ० १ उ० ।

**सण्णिसण्ण- त्रि० [सन्निषण्ण]**

सङ्गततया निषण्णम् । सुखासीने, भग० ७ श० १० उ० । रा० ।

**सण्णिसिज्जा- स्त्री० [सन्निषद्या]**

शोभानायां निषद्यायाम्, वव० १ उ०

**सण्णिसिज्जा- स्त्री० [स्वनिषद्या]**

स्वकीयायां निषद्यायाम्, वव० ४ उ०

**सण्णिसेज्जागय- त्रि० [सन्निषद्यागत]**

सती नाम शोभना स्वकीया वा निषद्या सन्निषद्या तस्यां गतः ।  
सन्निषद्योपविष्टे, वव० ४ उ०

**सण्णिह- त्रि० [सन्निभ]**

सदृशे, पन्न० २ पद ।

**सण्णिहाण- न० [सन्निधान]**

सन्निधीयते आधीयते यस्मिंस्तत्सन्निधानम्, अणुओ० ।  
सन्निधीयते क्रियाऽस्मिन्निति सन्निधानम् । आधारे ठा० ८ ठा० ३  
सम्यग् निधीयते नारकादिगतिषु येन तत्सन्निधानम् । कर्मणि,  
आचा० १ श्रु० ८ अ० ३ उ० ।  
सन्निधिः सन्निधानम् । वस्त्रादेर्व्यवस्थाने, सूय० १ श्रु० ४ अ० १

**सण्णिहि- पुं० [सन्निधि]**

सम्यक् प्रकारेण निधीयते स्थाप्यते दुर्गतौ आत्मा येन स  
सन्निधिः । संचये, उत्त० ६ अ० । दश० ।  
विनाशिद्रव्याणां दध्योदनादीनां स्थापने, आचा० १ श्रु० २ अ० ५  
विशिष्टाहारसंग्रहस्य संचये, सूय० १ श्रु० १६ उ० । वव० ।  
गोरसादेः सन्निचये, निसि०  
शायामशनादिधारणे, गच्छा० २ अधि० ।

**सण्णिहिय- त्रि० [सन्निहित]**

अशेषिते विशेषे ।  
दाक्षिणात्यानामाज्ञप्तिकानामिन्द्रे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**सण्णिहियपाडिहेर- पुं० [सन्निहितप्रातिहार्य]**

सन्निहितं प्रातिहार्यं प्र-तिहारकर्म सान्निध्यं देवेन यस्य स  
तथा । भग० १४ श० ८ उ० ।  
विहितदेवताप्रतिहार्ये, उव० ।

**सण्णिहिसण्णिचय- पुं० [सन्निधिसन्निचय]**

सन्निधानं सन्निधिस्तस्य सन्निचयः सन्निधिसन्निचयः, अथवा-  
सम्यग् निधीयते स्थाप्यते उपभोगाय योऽर्थः स सन्निधिस्तस्य  
सन्निचयः, प्राचुर्यमुपभोग्यम् । द्रव्यनिचये, आचा० १ श्रु० २ अ० १  
सम्यगभिधीयत इति सन्निधिः, विनाशितद्रव्याणां दध्योद-  
नादीनां तथा सम्यग् निश्चयेन चीयते इति सन्निचयः । विनाशि-  
द्रव्याणामभयासितामृद्वीकादीनां संग्रहे, । आचा० १ श्रु० २ अ०  
५ उ० ।

**सण्ह-१ स्त्री० [श्लक्ष्ण]**

मसृणे, सं० । सूर० । चंद० ।  
श्लक्ष्णपुद्गलस्कन्धनिष्पन्ने, श्लक्ष्णदलनिष्पन्नपटवत् । पत्र०२  
पद । जीवा० । रा० । जंबू० ।  
श्लक्ष्णपुद्गलनिष्पादितबहिः प्रदेशे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**सण्ह-२ त्रि० [सूक्ष्म]**

मृदुलघुस्पर्शे, पत्र०२ पद ।

**सण्हकरणी- स्त्री० [श्लक्ष्णकरणी]**

श्लक्ष्णनि चूर्णरूपाणि द्रव्याणि क्रियन्ते यस्यां सा श्लक्ष्ण-  
करणी । पेषणशिलायाम्, भग० १९ श० ३ उ० ।

**सण्हपट्ट- पुं० [श्लक्ष्णपट्ट]**

श्लक्ष्णं पट्टवृत्ति पट्टसूत्रम् । श्लक्ष्णपट्टमये, कल्प०१ अधि०२ ।

**सण्हपट्टभक्तिसयचित्तताणगा- स्त्री० [श्लक्ष्णपट्टभक्तिसतचित्तताणगा]**

श्लक्ष्णपट्टसूत्रमयो भक्ति तच्चित्रस्थानको यस्यां सा तथा ।  
घनमसृणविविधचित्रायां शाटिकायाम्, भग० ११ श० ३ उ० ।

**सण्हबायरपुढवीकाइय- पुं० [श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिक]**

पृथ्वीकायिकभेदे, जीवा० ।  
'सण्हबायरपुढविकाइया' जीवा०१ प्रति० ।

**सण्हामच्छ- पुं० [श्लक्ष्णमत्स्य]**

मत्स्यभेदे, विपा० ।

**सतक्का- स्त्री० [सतर्का]**

स्वकीयमिथ्यात्वविकल्पे, बुह०१ उ०

**सतंत- त्रि० [स्वतन्त्र]**

आत्मायत्ते, स्वतन्त्रः कर्त्ता । विशेष० ।  
स्वकार्यकर्तृत्वं प्रत्यपरनिरपेक्षे, सूय०२ श्रु०१ अ० ।  
स्वसिद्धान्ते, निसि०११ उ० ।

**सतंतविरुद्ध- त्रि० [स्वतन्त्रविरुद्ध]**

स्वतन्त्रस्वसिद्धान्तस्तस्मिन्विरुद्धम् ।.....  
स्वसमयाविरुद्धे, निसि० ११ उ० ।

**सतंतविरुद्ध- त्रि० [स्वतन्त्रविरुद्ध]**

स्वसमयविरुद्धे, यथासर्वत्र सर्वकालं नास्त्यात्मेति । अधः सव्व-  
त्थ सव्वकालं नत्थि आयातो सतंतविरुद्धं भवति' निसि०१ उ० ।

**सतत- न० [सतत]**

अविच्छिन्ने, पण्हा०३ अ०  
अनवरते, सूय०१ श्रु०१२ अ० ।

**सतपत्त- न० [शतपत्र]**

दलशतकलिते कमले, जंबू०१ वक्ष० । रा० । भग० ।

**सतवाइया- स्त्री० [सप्तपादिका]**

त्रीन्द्रियजीवभेदे, पत्र०१ पद ।

**सतारुक- न० [शतारुक]**

क्षुद्रकुष्ठभेदे, पण्हा०५ अ० ।

**सति- स्त्री० [स्मृति]**

चिन्तने, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**सतेरा- स्त्री० [शतेरा]**

विदिगुरुचक्रवास्तव्यायां तृतीयकुमारीमहत्तरिकायाम्, जंबू० ५  
वक्ष० । आव० । आव०म० ।

विद्युत्कुमारमहत्तरिकायाम्, आव०१ अ० । उव० । ठा० ।

**सतोरणवर- त्रि० [सतोरणवर]** तोरणवरसहिते, रा० । जीवा० ।

**सत्त- त्रि० [शक्त]**

समर्थे, विशेष० ।  
अहोरात्रस्य द्वितीये मुहूर्ते, सम०३ सम० । आचा० ।

**सत्त- त्रि० [सक्त]**

सुखदुःखेषु बद्धे, आचा०१ श्रु०८ अ०२ उ० । सूय० ।  
गृद्धे, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० । आचा० ।  
अध्युपपन्ने, सूय०१ श्रु०१० अ० ।  
रते, आचा० ।  
तत्परे, आचा०१ श्रु०१ अ०७ उ० ।  
लग्ने, सूय०१ श्रु०१० उ० । उत्त० । रा० ।

**सत्त- न० [सत्त्व]**

उत्पादव्ययधौव्ययुक्ततारूपायां विद्यमानतायाम्, दश०१ अ० ।  
जन्तौ, सूय०१ श्रु०११ अ० । आचा० ।  
सत्तायोगात् सत्त्वाः । ठा० ४ ठा० २ उ० ।  
आसक्तः शक्तो वा समर्थः, सुन्दरासुन्दरासुचेष्टासु । सक्त-  
स्सम्बद्धः शुभाशुभैः कर्मभिरिति । भग०२ श०१ उ० । आव०चू०  
प्राणिनि, नाया०१ श्रु०१६ अ० । सूय० ।  
जीव, विशेष० । आव० ।  
वनस्पति व्यतिरिक्तेषु एकेन्द्रियेषु, ठा० ५ ठा० २ उ० । नाया०  
। जीवा० । आचा० ।

**सत्त- त्रि० [सप्तन्]**

सात संख्याभेदे, निसि० १ उ० । जंबू० । सम० ।

**सत्तंगपइठिय- त्रि० [सप्ताङ्गप्रतिष्ठित]**

सप्ताङ्गानि चत्वारः पादाः करः पुच्छं शिखं चेति, एतानि  
प्रतिष्ठितानि भूमौ लग्नानि यस्य तत्तथा । सप्तभिः पादादि-  
भिर्भूमौ लग्ने, उवा० २ अ० ।

**सत्तकण्य- पुं० [सप्तकल्प]**

सप्तविधकल्पे, पंच०भा० ।

**सत्तग- पुं० [सप्तक]**

सप्तपरिमाणस्य सप्तकः । सप्तावयवे, वव०४ उ



**सत्तगइय-** पुं० [सप्तगतिक]

मृतानां सप्त गतयः-अण्डजादियोनिलक्षणा येषां ते सप्त-  
गतयः । मृत्वा सप्तसु गतिषु उत्पत्त्यमानेषु, ठा० ७ ठा० ३ उ०

**सत्तघर-** न० [सप्तगृह]

जीवानुशासनकारस्य जिनदत्तसूरेर्निवासस्थाने, जीवा०१ प्रति० ।

**सत्तघरंतर-** न० [सप्तगृहान्तर]

सप्तगृहमध्ये, कल्प०३ अधि०९

**सत्तघरंतरिय-** पुं० [सप्तगृहान्तरिक]

सप्तगृहाण्यन्तरं भिक्षाग्रहणे यस्य स सप्तगृहान्तरिकः । सप्त  
गृहाण्यतिक्रम्यभिक्षाग्रहणाभिग्रहे, उव० ।

**सत्तच्छद-** पुं० [सप्तच्छद]

सप्तपर्णवृक्षे, विशेषे ।

**सत्तट्टाणिव्वत्ति-** पुं० [सप्तस्थाननिर्वर्त्तित]

सप्तकारनिष्पादिते, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**सत्तट्टिसट्ठिखंडिय-** त्रि० [सप्तषष्टिखण्डित]

सप्तषष्टिप्रविभागीकृते, ज्यो०९ पाहु० ।

**सत्तणउइ-** स्त्री० [सप्तनवति]

सप्ताधिकायां नवतिसंख्यायाम्, सम० ।

**सत्तणाम-** न० [सप्तनाम]

सप्तानामर्थानामभिधायके, नामनि, अणुओ०

**सत्तंतु-** पुं० [सप्ततन्तु]

यज्ञे, 'अद्धरा सत्तंतुणो जन्ना' उक्त० ।

**सत्तपण्ण-** पुं० [सप्तपर्ण]

सप्तच्छद, अणुओ० ।

सप्तपर्णपर्याये वृक्षविशेषे, उव० । रा० । पत्र० ।

**सत्तपरिगहियत्त-** न० [सत्त्वपरिग्रहीतत्त्व]

ओजस्वितारूपसत्यवचनातिशये, रा० ।

**सत्तपरिवज्जिय-** त्रि० [सप्तपरिवर्जित]

सत्त्वरहिते, पण्हा०१ अ०

**सत्तभङ्गी-** स्त्री० [सप्तभङ्गी]

भज्यन्ते-भिद्यन्ते अर्था यैस्ते भङ्गाः सप्तानां भङ्गानां समाहारः  
सप्तभङ्गी । .....

सप्तभिः प्रकारैर्वचनविन्यासे, । ठा० ।

**सत्तभामा-** स्त्री० [सत्यभामा]

स्वनामख्यातायां कृष्णाग्रमहिष्याम्, अंत० ।

**सत्तभावणा-** स्त्री० [सत्त्वभावना]

सत्त्वविषयायामसंस्मृताभावनायाम्, वव०१ उ० । बुह० ।

**सत्तभूमिय-** पुं० [सप्तभूमिक]

सप्तमालखण्डे प्रासादे, उक्त०१३ अ०

**सत्तम-** त्रि० [सप्तम]

सप्तसंख्यापूरणे, उवा०१ अ० ।

**सत्तमट्टाण-** न० [सप्तमस्थान]

स्थानाङ्गस्य सप्तमेऽध्ययने, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**सत्तमपव्व-** न० [सप्तमपर्वन्]

भाद्रकृष्णपक्षे, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**सत्तमा-** स्त्री० [सत्तमा]

सप्तम्यां नरकपृथिव्याम्, जीवा०३ प्रति०१उ०

**सत्तमासिया-** स्त्री० [सप्तमासिकी]

सप्तमासान् यावत्सप्तादत्तिप्रमाणभिक्षाके साधुप्रतिज्ञाविशेषे,  
आव०चू०४ अ० । उव० ।

**सत्तमी-** स्त्री० [सप्तमी]

सप्तसंख्यापूरके, अहोरात्रे, ज्यो०४ पाहु० । आव०म० ।

सप्तसंख्यापूरके स्त्रीलिङ्गेऽर्थे, । ठा०

**सत्तरस-** त्रि० [सप्तदशन्]

सप्ताधिकेषु दशसु, पत्र०१५ पद ।

**सत्तरसम-** त्रि० [सप्तदश]

सप्तदशसंख्यापूरके, चंद०८ पाहु० ।

**सत्तरह-** पुं० [सप्तरथ]

जम्बूद्वीपे भारते वर्षे भविष्यति दशमे तीर्थकरे, ठा० १० ठा०३

**सत्तरि-** स्त्री० [सप्तरि]

सत्तरि । दशावृत्तायां सप्तसंख्यायाम्, । आव० ।

**सत्तरिसभ-** पुं० [सप्तर्षभ]

एकविंशतितमेऽहोरात्रमुहूर्ते, सम० ३० सम

**सत्तवइय-** पुं० [सप्तपदिक]

सप्तभिः पदैर्व्यवहरतीति साप्तपदिकः । तथाविधे व्यवहारिणि,  
आव०म० १ अ० ।

**सत्तवच्छ-** पुं० [सप्तवत्स]

लोमपक्षिविशेषे, पत्र०१ पद ।

**सत्तसत्तमिया-** स्त्री० [सप्तसप्तमिका]

सप्त सप्तमानि दिनानि यस्यां सा सप्तसप्तकैर्दिनसप्तकैर्यथो-  
त्तरवर्द्धमानदत्तिभिर्निष्पन्ने प्रतिमाभेदे, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**सत्तसत्तिकया-** स्त्री० [सप्तसप्तैकिका]

सप्ताध्ययनात्मिकायां द्वितीयश्रुतस्कन्धस्य द्वितीयचूडायाम्,  
आचा० १ श्रु० १ अ०१ उ० । पण्हा० ।

**सत्तसरसमन्नागय-** त्रि० [सप्तस्वरसमन्वागत]

षड्जादिसप्तस्वरान् सम्यगनुगते, जंबू०१ वक्ष० ।

**सत्तसार-** पुं० [सप्तसार]

दृढांशे, आव०चू०१ अ० ।

**सत्तहत्तरि- स्त्री० [सत्तसप्तति]**

सप्ताधिकायां सप्ततिसंख्यायाम्, सम० ७६ सम० ।

**सत्ता- स्त्री० [सत्ता]**

सामान्ये, विशेषे ।

**सत्तागइय- पुं० [सत्तागतिक]**

सप्तम्य एव अण्डजयोनिभ्यः आगतिः उत्पत्तिर्येषां ते सत्ताग-  
तयः । सप्तस्थानेषु उद्धर्तमानेषु, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**सत्ताणवइ- स्त्री० [सत्तनवति]**

सप्ताधिकायां नवतिसंख्यायाम्, सम० ९६ सम० ।

**सत्ताणुगह- पुं० [सत्त्वानुग्रह]**

जीवदयायाम्, सत्त्वानुग्रहस्य परम्परया मोक्षावाप्तिनिबन्धन  
त्वात् । उक्तं च- 'सर्वज्ञस्योपदेशेन, यः सत्त्वानामनुग्रहम् ।  
करोति बोधबाह्यानां, स प्राप्नोत्यचिरात् शिवम् । ज्यो०१ पाहु० ।

**सत्तावण्णा- स्त्री० [सप्तपञ्चाशत्]**

सप्ताधिकायां पञ्चाशत्संख्यायाम्, सम० ५७ सम० ।

**सत्तावीसा- स्त्री० [सप्तविंशति]**

सप्ताधिकविंशतिसंख्यायाम्, जंबू० ।

**सत्तासुय- पुं० [सत्तासुक]**

उत्तरपूर्वस्यां शुद्धविदिग्वाते, आव० म०१ अ० । आव० चू० ।

**सत्ति- स्त्री० [शक्ति]**

सामर्थ्ये, आव० म०१ अ० । आव० चू० ।

'समर्थं ति वा सत्ति ति वा एगट्ठा' आव० चू०१ अ० ।

शक्तिर्द्विधाधृतिसंहननभेदात् । बुह०१ उ०२ ।

धर्मे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**सत्तिकय- पुं० [सप्तैकक]**

आचाराङ्गस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धस्य द्वितीयचूडारूपेऽध्ययनसप्तके  
'सत्त सत्तिकयं' ठा० ७ ठा० ३ उ० आव० । आचा० ।

महापरिज्ञाध्ययने सप्तोद्देशकास्तेभ्यः प्रत्येकं सप्तैकका निर्व्यूढाः  
। आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०१ उ० ।

पिण्डैषणाध्ययनादारभ्य अवग्रहप्रतिमाऽध्ययनं यावदेतानि  
सप्ताध्ययनानि । प्रथमा चूडा सप्तसप्तैकका, द्वितीया भावना,  
तृतीया विमुक्तिः, चतुर्थी आचारविकल्पः, निशीथः सा  
पञ्चमीचूडेति । आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०१ उ० ।

**सत्तिम- त्रि० [शक्तिमत्]**

सामर्थ्ययुक्ते, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

समर्थे, पञ्चविधकृततुलने, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**सत्तिय- पुं० [सात्त्विक]**

सत्त्वप्रधाने, सात्त्विको नाम यो महत्यप्युदये गर्व नोपयाति, न  
च गरिष्ठेऽपि समापतिते व्यसने विषादम् । वव०३ उ० ।

**सत्तिवण्ण- पुं० [सप्तपर्ण]**

सप्तच्छेदे वृक्षविशेषे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० । ठा० ।

**सत्तु- पुं० [सक्तु]**

भ्रष्टयवक्षोदे, बुह०१ उ०२ । आव० ।

**सत्तु- पुं० [शत्रु]**

अगोत्रजे वैरिणि, उव० ।

'शत्रोरपि गुणा ग्राह्या, दोषास्त्यज्या गुरोरपी'ति । उत्त०१ अ० ।  
। जंबू० ।

**सत्तुग- पुं० [शक्तुक]**

भ्रष्टयवक्षोदे, तद्विवसकताण एव जव भुग्गा पासाणजंतगो  
दलिया महिणा सत्तुगा भण्णति । निसि० १ उ०

**सत्तुचुण्ण- पुं० [सक्तुचूर्ण]**

यवसक्तुषु, दश०१ अ० ।

**सत्तुदाह- पुं० [शत्रुदाह]**

यत्र शत्रवो दहन्ते । तादृशे स्थाने, निसि०३ उ० ।

**सत्तुमदन- पुं० [शत्रुमर्दन]**

तच्छरीरतत्सैन्यकदर्थनादिषु सहस्रमानमथने, सम० ।

**सत्तुय- पुं० [शक्तुक]**

भ्रष्टयवक्षोदे । उत्तरावहे सत्तुया अत्रेसु वा जं विसए दाऊण  
पच्छा अणेगमवक्खा पगारा दिज्जंति । निसि० १ उ० ।

**सत्तुसेण- पुं० [शत्रुसेन]**

नागस्य गृहपतेः सुलसायां भार्यायामुत्पन्ने पुत्रे, अंत० १ श्रु० २  
वर्ग० १ अ० ।

**सत्तुस्सेह- त्रि० [सप्तोत्सेध]**

सप्तकुम्भादिषु स्थानेषून्नते, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

सप्तहस्तप्रमाणशरीरे, चंद० १ पाहु० ।

सप्तहस्तप्रमाण-शरीरोच्छ्रये, सूर०१ पाहु० ।

**सत्थ-१ न० [शस्त्र]**

शस्यन्ते-हिंस्यन्ते अनेन प्राणिन इति शस्त्रम् । आचा०१ श्रु०१  
अ०३ उ० ।

जीवशासनहेतौ, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

उपघातकारिणि, आचा०१ श्रु०२ अ०१ उ० ।

खड्गक्षुरिकाद्यक्षेप्यायुधे, पण्हा०५ अ० । वव० । ठा० ।

प्रहरणे, सूय०१ श्रु०८ अ० । नाया० ।

दात्रादिके, सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ० ।

जं जस्स विणासकारणं तं तस्स सत्थं भण्णति । निसि०१ उ० ।

प्रच्छन्नके नापितोपकरणे, विपा०१ श्रु०६ अ०

**सत्थ-२ त्रि० [सार्थ]**

अर्थयुक्ते, बुह० ।

**सत्य-३ त्रि० [सार्थ]**

अर्थयुक्ते, बुह० ।

**सत्य-४ न० [स्वास्थ्य]**

समाधि, आव०म०१ अ० । नाया० । आव० । ठा० ।

**सत्य-५ न० [शस्त्र]**

शस्त्रं द्रव्यभावभिन्नम् । तत्र द्रव्यशस्त्रस्वकायपरकायोभयरूपम् भावशस्त्रं तु असंयमो दुष्प्रणिहितमनोवाक्कायलक्षणः । आचा० १ श्रु०१ अ०२ उ० ।

द्रव्यशस्त्रमपि समासविभागभेदात् द्विधा तत्र समासो द्रव्य-शस्त्रमष्कायविषयकमुत्सेचन उपक्षेपणादि विभागतस्तु किं चित्स्वकायं परकायं वा शस्त्रम् । आचा०१ श्रु०१ अ०३ उ० ।

**सत्यकोस- पुं० [शस्त्रकोस]**

शिरावेधादिशस्त्रसमुदाये, बुह० १ उ०३ ।

क्षुरनखरदनादिभाजने, नाया०१ श्रु०१३ अ० ।

शस्त्रकोशो नखरदच्छेदनादिभाजनम् । विपा० १ श्रु०१ अ० ।

**सत्यग्रहण- न० [शस्त्रग्रहण]**

शस्त्रं खड्गादि तस्य ग्रहणं स्वीकरणम् शस्त्रादिधारणे तेषां वधार्थं व्यापारणे, गच्छा० २ अधि० ।

**सत्यघायक- त्रि० [सार्थघातक]**

सार्थनाशके, पण्हा०३ अ०

**सत्यजाय- न० [शस्त्रजात]**

आयुधविशेषे, आचा०२ श्रु०१ चू०३ अ०२ उ० ।

**सत्यपणग- न० [सार्थपञ्चक]**

‘सत्य’ शब्दोक्तानां पञ्चानां सार्थानां पञ्चतय्याम्, निसि० १६ उ० ।

**सत्यपत्थावणा- स्त्री० [शास्त्रप्रस्तावना]**

शास्त्रीयोपोद्धाते, ठा० १ ठा० ।

**सत्यपरिणामिय- त्रि० [शस्त्रपरिणामित]**

शस्त्रेण स्वकायपरकाया-दिना निर्जीवीकृतं वर्णगन्धरसादिभिश्च परिणामितम् । सूय०२ श्रु०१ अ० ।

वर्णादीनामन्यथाकरणेनाचिती कृते, भग०७ श०१ उ० ।

कृताभिनवपर्याये, भग०५ श०२ उ० ।

**सत्यपरिण्णा-स्त्री० [शस्त्रपरिज्ञा]**

शस्त्रं द्रव्यभावभेदादनेकविधं तस्य जीवशंसनहेतोः परिज्ञा ज्ञानपूर्वकं प्रत्याख्यानां यत्रोच्यते सा शस्त्रपरिज्ञा । षट्जीव-निकायस्वरूपरक्षणोपायगर्भे आचाराङ्गस्य प्रथमश्रुतस्कन्धस्य प्रथमाध्ययने, ठा० ९ ठा० ३ उ० । पण्हा० । आचा० । आव० ।

**सत्यवाह- पुं० [सार्थवाह]**

सार्थं वाहयतीति सार्थवाहः । निसि०९ उ० ।

सार्थनायके, पत्र०२० पद०५ ।

**सत्यविहान- न० [सार्थविधान]**

गणिमादिभेदाच्चतुर्विधसार्थभेदे, बुह०

तत्र गणिमं यदेकद्वयादिसंख्यया गणयित्वा दीयते यथा हरीत-कीपूगफलादि, धरिमं-यत्तुलायां धृत्वा दीयते यथा खण्डश-र्करादि, मेयं-यत्पलादिना सेतिकादिना वा मीयते यथा घृता-दिकं, परिच्छेद्यं नामयच्चक्षुषा परीक्ष्यते यथा वस्त्ररत्नमौक्ति-कादि । एतच्चतुर्विधमपि द्रव्यं भण्डीसार्थादिषु प्रत्युपेक्षणीयं यथा द्रव्यक्षेत्रकालभावैरपि सार्थः प्रत्युपेक्षणीयः । बुह०१ उ०३

**सत्यब्भास- पुं० [शस्त्राभ्यास]**

शस्त्रयुद्धकलाभ्यासे, कल्प०१ अधि०७ क्षण ।

**सत्या- त्रि० [शास्त्र]**

अनुशासितरि, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० । आचा० ।

तीर्थकरे, निसि०११ उ० ।

**सत्याइ- पुं० [शास्त्रादि]**

शास्त्रप्रारम्भे, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।

**सत्याईय- न० [शस्त्रातीत]**

शस्त्रादग्न्यादेरतीतमुतीर्णं शस्त्रातीतम् । उव० ।

शस्त्रमग्न्यादिकं तेनातीतं प्रासुकीकृतं शस्त्रातीतम् । सूय०२ श्रु०१ अग्न्यादिप्रासुकीकृते, भग०५ श०३ उ० ।

**सत्यापारगय- पुं० [शास्त्रपारगत]**

चतुर्वेदादिशास्त्रपारगामिनि, अणुओ०

**सत्थि- अव्य० [स्वस्ति]**

माङ्गल्ये, ठा० ४ ठा० २ उ० ।

**सत्थिग- पुं० [सार्थिक]**

सार्थो विद्यते यस्येति व्युत्पत्त्या सार्थवाहे, बुह०१ उ०३ ।

**सत्थिग-१ पुं० [स्वस्तिक]**

तस्यैव जिनकल्पस्य वस्त्रधारणे पूर्वोत्तरकरणे, हस्ताभ्यां गृहीत्वा द्वे अपि बाहुशीर्षे यावत्प्राप्येते तद्यथा-दक्षिणेन हस्तेन वामं बाहुशीर्षं, वामेन दक्षिणमेष द्वयोरपि कलाचिकयोर्हृदये यो विन्यासविशेषः स स्वस्तिकाकार इति कृत्वा स्वस्तिक इत्युच्यते । बुह०३ उ० ।

**सत्थिग-२ पुं० [स्वस्तिक]**

महाग्रहे, कल्प०१ अधि०६ क्षण । सूर० ।

**सत्थिवारसम- त्रि० [स्वस्तिद्वादश]**

स्वस्ति द्वादशं यत्र तत्स्वस्तिद्वादशम् । द्वादशसंख्यापूरकस्वस्ति-घटितसमुदाये, रा० ।

**सत्थोवरय- त्रि० [शस्त्रोपरत]**

शस्त्रात् द्रव्यभावभेदादुपरते, ‘एत्थ सत्थोवरए’ आचा० १ श्रु० ३ अ०१ उ० ।

**सत्थोवाडण- न० [शस्त्रावपाटन]**

शस्त्रेणावपाटनं विदारणमात्मनः । शस्त्रेण विदारणे, नाया० १  
श्रु०१६ अ० ।

**सत्थोवाडिय- पुं० [शस्त्रावपाटित]**

खड्गादिना विदारिते, विपा०१ श्रु०६ अ० ।

**सदंसण- पुं० [सददर्शन]**

सह दर्शनेन वर्तते इति सददर्शनः । श्रद्धधाने निसि०१ उ० ।

**सदसत्त- न० [सदसत्त्व]**

स्वपररूपाभ्यां विद्यमानाऽविद्यमानत्वे, नं०

**सदा- अव्य० [सदा]**

सर्वदा शब्दा-र्थे, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ० ।

**सदाजत- त्रि० [सदायत]**

अप्रमादिनि, आचा०१ श्रु०३ अ०२ उ०

**सदाजय- त्रि० [सदाजय]**

सदा सर्वकालं जयो येषु तानि सदाज-यानि । सर्वकालं जयत्सु,  
जीवा०३ प्रति०३ अधि० ।

**सदार- पुं० [सदार]**

सपत्नीके, उत्त०१४ अ० ।

**सदारमंतभेय- पुं० [स्वदारमन्त्रभेद]**

स्वदाराणां विश्रब्धविशिष्टावस्थाभाषितस्यान्यस्मै कथने । आव०

**सदारसंतोष- पुं० [स्वदारसन्तोष]**

स्वदारैः सन्तोषः स्वदारसन्तोषः । स्वदारसन्तुष्टौ, उवा०१ अ० ।

**सदारसंतोषिय- पुं० [स्वदारसन्तोषिक]**

स्वदारैः सन्तोषः स्वदारसन्तोषः, स एव स्वदारसन्तोषिकः,  
स्वदारसन्तोषो वा स्वदारसन्तुष्टिः ।

चतुर्थाणुव्रते, उवा०१ अ० ।

**सदिव्व- त्रि० [सदिव्व]**

सह दिव्यैः सदिव्वम् ।

गन्धर्वनगरादिके । दिव्योपद्रवे, आव०४ अ० ।

**सदेवसूरि- पुं० [सदेवसूरि]**

वटगच्छप्रथमसूरौ, गच्छा०३ अधि० ।

**सदेस- पुं० [सदेश]**

समानदेशजे, वव०३ उ० ।

**सदेस- पुं० [स्वदेश]**

स्वावासमण्डले, पिंड० ।

**सह- पुं० [शब्द]**

शब्दते-प्रतिपाद्यते वस्त्वनेनेति शब्दः । आव०म०१ अ० ।

शब्दयति-भाषत इति शब्दः । विशेष० ।

ध्वनि, दश०१ अ० । रा० ।

**सहंसण- न० [सहर्षण]**

शोभनं दर्शनं सहर्षणम् । सम्यग्दर्शने, आव० ।

**सहकर- पुं० [शब्दकर]**

रात्रौ महता शब्देनोल्लापे, स्वाध्यायादिकारके गृहस्थभाषा  
भाषके, असमाधिस्थानप्राप्ते च । सम०२० सम० । आव०चू० ।

सहं करोति असंखडसहं करोति । आव०४अ

**सहकरण- न० [शब्दकरण]**

शब्दः क्रियते यस्मिन् तत् शब्दकरणम् आव०म०१ अ० ।  
उदात्ताऽऽदिस्वरविशेषे, विशेष० ।

सहकरणं नामजं सद्देहिं पगडत्थं कीरति न पुण गोवितं  
संकेतिगं, तं जधा-उप्पण्णे त्ति वा भूते त्ति वा विगते त्ति वा  
परिणाते त्ति वा । उदात्ता अनुदाताश्च । णिसीहं पच्छण्ण-  
गोवितसंकेतितं । आव०चू०१ अ० । आव०म० ।

शब्दः क्रियते यस्मिन् तत्-शब्द-करणम् । उक्तं च-’उत्ती उ  
सहकरणं, पगासपाढं व सरविसेसो वा । तं निशीथं तं निशीथं  
भवति । इयमत्र भावना-यत् उत्पादाद्यर्थप्रतिपादकः । तथा  
महताऽपि शब्देन प्रतिपाद्यं तत् प्रकाशपाठात् प्रकाशोपदेशाच्च  
शब्दकरणं नाम । आव०म०१अ

**सहज्झयण- न० [शब्दाध्ययन]**

शब्दशक्तिप्रतिपादके आचाराङ्गाध्ययनस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धस्य  
चतुर्थसप्तैककाध्ययने, आचा० २ श्रु०२ चू०४ अ० । आव० ।

**सहणय- पुं० [शब्दनय]**

शप् आक्रोशे, शष्यते अवधीयते वस्त्वनेनेति शब्दः । तमेव  
गुणीभूतार्थमुख्यतया यो मन्यते स नयोऽप्युपचाराच्छब्दः, स  
चासौ नयश्च । अणुओ० ।

शपनं शपति वा असौ शष्यते वा तेन वस्त्विति शब्दः,  
तस्यार्थपरिग्रहादभेदोपचारात् नयोऽपि शब्द एव । ठा० ७ ठा०  
३ उ० ।

सप्तसु नयेषु अन्यतमे नये, नं० ।

**सहत्थ- पुं० [शब्दार्थ]**

वाच्यवाचकयोः, विशेष० ।

**सहदव्वभेद- पुं० [शब्दद्रव्यभेद]**

शब्दद्रव्याणां भेदने, पन्न० ११ पद

**सहपरिणाम- पुं० [शब्दपरिणाम]**

शब्दतया पुद्गलानां परिणामे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

शब्दपरिणामस्ततविततघनशुषिरभेदाच्चतुर्द्धा । सूय० १ श्रु० १  
अ० १ उ० ।

**सहपरियारग- पुं० [शब्दपरिचारक]**

शब्दादेवोपशान्तवेदोपतापे, ठा० २ ठा० ४ उ० ।

**सदपरियारणा-** स्त्री० [शब्दपरिचारणा]

शब्दश्रवणात् वेदोपशमने, पत्र० ।

**सदबंभवाइ-** पुं० [शब्दब्रह्मवादिन्]

शब्दसन्मात्रमिच्छति वैयाकरणे, नं० ।

**सदबुद्धि-** पुं० [शब्दबुद्धि]

शब्दनिश्चये, विशेषे० ।

**सदमहप्पगास-** पुं० [शब्दमहाप्रकाश]

शब्दैर्महान् प्रकाशः प्रसिद्धि र्यस्य स शब्दमहाप्रकाशः । शब्दात् प्रसिद्धे, सूय०१ श्रु०६अ०

**सदमुच्छिय-** त्रि० [शब्दमूर्च्छित]

शब्दगृहे, दश०८ अ० ।

**सदल-** न० [शद्वल]

हरिते, 'हरिअं सदलं' उक्त०

**सद्वनिक्खेवपरिहारि-** पुं० [सद्वनिक्षेपपरिहारिन्]

सद्वस्य निक्षेपः सद्वनिक्षेपस्तत् परिहर्तुं शीलं येषां ते सद्वनिक्षेपपरिहारिणः द्रवाऽग्राहिषु, ओह० ।

**सद्वेहि-** पुं० [शब्दवेधिन्]

शब्दं लक्ष्यकृत्य विध्यति यः स शब्दवेधी । शब्दमनुसृत्य लक्ष्यवेधके, नाया०१ श्रु०१८ अ० । आचा०

**सद्वसत्तिकय-** पुं० [शब्दसत्तैक]

शब्दशक्तिप्रतिपादके आचाराङ्ग द्वितीयश्रुतस्कन्धस्य सत्तैक-कानां चतुर्थे आदितः पञ्चदशे अध्य यने, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**सद्वहण-** न० [श्रद्धान]

सद्वहणं । सद्वहणं । सम्यक्त्वे, । आव०म० ।

सामान्यतः । सूय०१ श्रु०१ अ० । उ० ।

प्रमाणीकरणे, संथा० । ठा० ।

अस्तीत्येवं प्रतिपत्तौ, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

सम्यग्दर्शने, । निसि० । आव०म० । दशा० । विशेषे० ।

**सद्वहणाकम्प-** पुं० [श्रद्धानकल्प]

श्रद्धानसामाचार्याम्, पंच०भा० ।

'सद्वहणा वि य दुविहा ओहनिसीहे तहा विभागे य' पं०भा ५

**सद्वहमाण-** त्रि० [श्रद्धान]

स्वमतावतिशयेन रोचयति, सूय०२ श्रु०१ अ० ।

प्रतीयमाने, आचा०२ श्रु०१ चू०२ अ०२ उ० ।

प्रतिपद्यमाने, । आव०म० । सूय० ।

**सद्वहणसुद्धि-** न० [श्रद्धानशुद्धि]

अवितथमेतदिति श्रद्धानशुद्धे, आव० चू०६ अ० ।

**सद्वहिय-** अव्य० [श्रद्दाय]

सूत्रार्थाभ्यां सामान्येन प्रतिपद्येत्यर्थे, उक्त २९ अ० ।

**सद्वाऽऽउल-** त्रि० [शब्दाकुल]

शब्देनाकुलं शब्दाकुलम् । बृहच्छब्दे ठा० १० ठा० ३ उ० । भग० ।

**सद्वाणुवाई-** पुं० [शब्दानुपातिन्]

शब्दं मन्मनभाषितादिकमभिष्वङ्ग हेतुमनुपतत्यनुसरति इत्येवंशीलः शब्दानुपाती । शब्दानुपतनशीले, ठा० ९ ठा० ३ उ० । आव० ।

**सद्वाणुवाय-** पुं० [शब्दानुपात]

शब्दस्य श्रुतकाशितादेरनुपातनंश्रोत्रेणावतारणं शब्दानुपातनम् यथाविहितस्वगृहवृत्तिमाकारादिव्यवच्छिन्नभूप्रदे शाभिग्रहे, देशावकाशिकव्रतातिचारे, उवा०

'सद्वाणुवाए'ति-

स्वगृहवृत्तिप्राकाराद्यवच्छिन्नभूप्रदेशाभिग्रहे- बहिः प्रयोजनो-त्पत्तौ, तत्र स्वयं गमनायोगात् वृत्तिप्राकारादि प्रत्यासन्नवर्तिनो बुद्धिपूर्वकं तमभ्युत्काशितादिशब्दकरणेन समवसितकान् बोध-यतः शब्दानुपातः, शब्दस्यानुपातनम् उच्चारणं तादृग् येन परकीयश्रवणविवरमनुपतत्यसाविति । उवा०१ अ० ।

**सद्वाऽऽययण-** न० [शब्दायतन]

बौद्धपरिभाषिते शब्दाश्रये, सूय०१ श्रु०१२ अ० ।

**सद्वाल-** त्रि० [शब्दाल]

नूपुरे, 'सद्वालं सिंजिरं कणिरं' उक्त० ।

**सद्वालपुत्त-** पुं० [सद्वालपुत्र]

पोलासपुरवासिनि कुम्भकारे, ठा० ।

'सद्वालपुत्ते'ति-

सद्वालपुत्रः पोलासपुरवासी कुम्भकारजातीयो गोशालको-पासको भगवता बोधितः पुनः स्वमतग्राहणोद्यतेन गोशालकेन क्षोभितान्तःकरणःप्रतिपन्नप्रतिमश्च परीक्षकदेवेन भार्यामारण-दर्शनतो भग्नप्रतिज्ञः पुनरपि कृतालोचनस्तथैव दिवं गत इति वक्तव्यताप्रतिबद्धं सद्वालपुत्र इत्यध्ययनम् । ठा० १० ठा० ३ उ० । उवा० ।

**सद्वावाई-** पुं० [शब्दापातिन्]

हैमवतवर्षवृत्तवैताढ्यपर्वते, ठा० १० ठा० ३ उ० । भग० ।

देवविशेषे, ठा० ।

**सद्वावायवासी-** पुं० [शब्दापातिवासिन्]

देवविशेषे, ठा० ।

**सद्विय-** त्रि० [शब्दित]

शब्दः प्रसिद्धिः संजातो यस्य तच्छब्दितम् । प्रसिद्धे, नाया०१ श्रु०१ अ० । उव० ।

आकारिते, नाया०१श्रु०१अ०



**सदुण्णइय-** त्रि० [शब्दोन्नतिक]

उन्नतशब्दके, नाया०१ श्रु०१ अ० । जीवा० ।

**सदुद्देशय-** पुं० [शब्दोद्देशक]

शब्दोपलक्षित उद्देशकः शब्दोद्देशकः द्विस्थानकस्य तृतीये उद्देशके, ठा० ५ ठा० १ उ० ।

**सदुप्पाय-** पुं० [शब्दोत्पाद]

शब्दोत्पत्तौ, ठा० ।

**सदूल-** पुं० [शार्दूल]

सिंहपर्याये आटव्ये पशौ, आव०१ अ० ।

‘इल्ली पुल्ली वग्धो सदुलो पुंडरीओ य ।’ उक्त० ।

व्याघ्रविशेषे, पण्हा०१ अ०

**सद्ध-** न० [श्रद्ध]

पितृक्रियायाम्, जीवा०३ प्रति०४ अधि० । रा० ।

स्थालीपाकमृतपिण्डनिवेदने, जंबू०२ वक्ष० ।

**सद्धम्मपरंमुह-** त्रि० [सद्धर्मपराङ्मुख]

दुर्गतौ पतन्तमात्मानं वारयतीति धर्मः, संश्रवासौ धर्मश्च सद्धर्मः । क्षान्त्यादिकश्चरणकरण-धर्मो गृह्यते, तत्पराङ्मुखः । धर्मविमुखे, आव०४ अ० । जीवा० ।

**सद्धा-** स्त्री० [श्रद्धा]

इच्छायाम्, ‘ईहा इच्छा वच्छा सद्धा कामो य आसंसा’ उक्त०७० गाथा ।

प्रवर्धमानानुष्ठानकरणे, आचा०१ श्रु०१ अ०३ उ० ।

विशुद्धचित्तपरिणामे, आव०६ अ० ।

तत्सङ्गाभिलाषे, दश०६ अ० ।

तत्त्वश्रद्धाने, संय-मयोगविषये निजाभिलाषे, पण्हा०१ अ० । धर्मकरणाभिलाषे, उक्त०३ अ० ।

**सद्धाजण-** न० [श्रद्धाजनन]

श्लाघने, सद्धाजणं ति वा सलाघणं ति वा एगट्ठा । निसि०१ उ० ।

**सद्धाभंग-** पुं० [श्रद्धाभङ्ग]

भक्तिनाशे, जीवा०१ प्रति० ।

**सद्धिं-** अव्य० [सार्द्धम्]

समानं युगपत् । एकत्रेत्यर्थे, निसि०२ उ०

सहेत्यर्थे, भग०२ श०५ उ० । आचा० । नाया० । उव० ।

**सद्धेअ-** त्रि० [श्रद्धेय]

नान्यथेत्यादीति भावनया ज्ञेये, आव०४ अ०

**सन्तमस-** न० [सन्तमस]

अन्धकारे

‘सन्तमसं अंधयारं धंतं तिमिरं तमिस्सं च’ उक्त० ।

**सन्तय-** न० [सन्तत]

अविरामे,

‘सइ अविरयं अविरामं अणुवेलं संतयं सया निच्चं’ । उक्त०

**सन्दण-** पुं० [स्यन्दन]

रथे, ‘संदणो रथो’ उक्त० ।

**सन्दाणिअ-** त्रि० [सन्दानित]

बद्धे, ‘बद्धं संदाणिअं निअलिअं च’ उक्त० ।

**सन्दिट्ठ-** न० [सन्दिष्ट]

आत्महिते, ‘सन्दिट्ठं अप्पाहिअं’ । उक्त० ।

**सन्दिद्ध-** त्रि० [सन्दिग्ध]

संशयिते, ‘सन्दिद्धं संसइअं’ । उक्त० ।

**सन्दुमिअ-** त्रि० [प्रदीप्त]

उद्दीपिते,

‘उद्दीविअं उज्जालिअं पली-विअं जाण सन्दुमिअं’ उक्त० ।

**सन्दोह-** पुं० [सन्दोह]

गणे, संदोहो निउरम्बो । उक्त०

**सन्धुक्किअ-** त्रि० [प्रदीप्त]

उज्ज्वालिते,

‘सन्धुक्किअं उद्दीविअं उज्जा-लिअं पलीविअं जाण’ । उक्त० ।

**सन्न-** त्रि० [सन्न]

क्लान्ते,

‘सन्नं किन्नं सुठिअं उव्वायं नीसहं किलंतं च ।’ उक्त० ।

**सन्ना-** स्त्री० [संज्ञा]

नामनि, ‘सन्ना गुतं च नामं अहिहाणं’ उक्त० ।

**सपएस-** पुं० [सप्रदेश]

सविभागे, भग० ६ श० ३ उ० ।

**सपंचचूल-** पुं० [सपञ्चचूड]

सह पञ्चभिश्चूडाभिर्वर्तत इति सपञ्चचूडः । चूडापञ्चकसहिते आचाराङ्गे, आचा० १ श्रु०१ अ०१३ उ०

**सपंसुलक-** त्रि० [सपांसुलक]

सपार्श्वास्थि, पण्हा०३ अ०

**सपक्ख-** न० [सपक्ष]

समानाः पक्षाः पार्श्वा दिशो यस्मिन् तत् सपक्षम् । ठा० ४ ठा० ३ उ० ।

समानपक्षे, समपार्श्वे, यथा भवति समश्रेण्या गच्छतीत्यर्थः ।

सम०३२ सम० ।

सर्वेषु पार्श्वेषु-पूर्वापरदक्षिणोत्तररूपेष्वित्यर्थः । सूर०२० पाहु० ।

**स्वपक्ष-** पुं०

निहवपार्श्वस्थादिषु, बुह०१ उ०२ ।

**सपक्वि-** त्रि० [सपक्ष]

समानाः पक्षाः पार्श्वा दिशो यस्मिन् तत्सपक्षम् । इहेकारः प्राकृतप्रभवः । ठा० ४ ठा० ३ उ० ।  
पक्षाणां दक्षिणवामादिपार्श्वानां सदृशता समता सपक्षमित्यव्ययीभावः समपार्श्वतया समे, ठा० ३ ठा० १ उ० ।

**सपचवाय-** पुं० [सप्रत्यपाय]

संभाव्यमानाऽपाये, पिंड० । ठा० ।

**सपज्जवसिय-** त्रि० [सपर्यवसित]

शान्ते, सपर्यवसितो लोको जगत्प्रलये सर्वस्य विनाशसद्भावात् । आचा० १ श्रु० ८ अ० १ उ० ।

**सपज्जाय-** त्रि० [सपर्याय]

नास्तिभावे, सपज्जाय त्ति वा नत्थिभावो त्ति वा अविज्जमाणभावो त्ति वा एगट्ठा । आव० चू० १ अ० ।

**सपडाग-** त्रि० [सपताक]

सह पताकया वर्तत इति सपताकम् । पताकया सहिते, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

**सपडिकम्म-** न० [सप्रतिकर्मन्]

प्रतिकर्मसहितेऽनशने, 'भक्तपरित्राणसणं तिचउविहाहारचायनिष्फन्नं । सप्पडिकम्मं नियमा, जहा समाही विणिद्धिं । १ । । ठा० २ ठा० ४ उ०

**सपडिकमण-** पुं० [सप्रतिक्रमण]

उभयकालकरणीयप्रतिक्रमणसहिते, सहं प्रतिक्रमणेनोभयसन्ध्यामावश्यकेन यः स तथा, अन्येषां तु कारणजात प्रतिक्रमणमिति ।  
उक्तं च—'सपडिकमणो धम्मो, पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणाणं ।' ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**सपडिदिसि-** स्त्री० [सप्रतिदिश]

प्रतिदिशां विदिशां सदृशतायाम्, समप्रतिदिक्तायाम्, ठा० ४ ठा० २ उ० ।

**सपमज्जिय-** अव्य० [सप्रमृज्य]

सम्प्रमार्जनं कृत्वेत्यर्थे, पण्हा० १ अ० ।

**सपरक्रम-** न० [सपराक्रम]

पराक्रमः—सामर्थ्यं सह पराक्रमेण वर्तत इति सपराक्रमः । पराक्रमयुक्ते अनशने, आचा० १ श्रु० ८ अ० १ उ० ।

**सपरिग्रह-** त्रि० [सपरिग्रह]

सह परिग्रहेण द्विपदचतुष्पदधनधान्याऽऽदिना वर्तत इति सपरिग्रहः । सूय० २ श्रु० १ अ० ।  
धनधान्यद्विपदचतुष्पदादिना वर्तमाने, तदभावेऽपि शरीरोपकरणादौ मूर्च्छावति च । सूय० १ श्रु० १ अ० ४ उ० ।

**सपरिमाण-** त्रि० [सपरिमाण]

सह परिमाणेन वर्तत इति सपरिमाणम् । सपरिच्छेदे, सूय० १ श्रु० १ अ० ४ उ० ।

**सपरियण-** त्रि० [सपरिजन]

सह परिजनैर्वर्तत इति सपरिजनः । भृत्यादिवर्गसहिते, उत्त० २० अ० ।

**सपरिवार-** त्रि० [स्वपरिवार]

स्वकीयपरिवारयोग्यासनपरिकरिते, भग० २ श० ४ अ० ।

**सपरियार-** त्रि० [स्वपरिचार]

परिचाराणासहितः । पत्र० ।

**सपरिसाग-** त्रि० [सपर्षत्क]

सह पर्यदो यैर्येषां वा ते सपर्षत्काः । सदस्येषु, आव० म० १ अ० ।

**सपरोवघाय-** पुं० [स्वपरोपघात]

आत्मन्यसंक्लेशे, जीवा० १ प्रति० ।

**सपाउरण-** त्रि० [सप्रावरण]

सप्राच्छादने, गच्छा० १ अधि० ।

**सपाडुगभंडधारि-** पुं० [सप्रादुगभाण्डधारिन्]

यावन्मात्रमुपकरण-मुपयुज्यते तावन्मात्रं धरति शेषं परिष्ठापयति साधौ, वव० ८ उ

**सपाण-** त्रि० [सप्राण]

सह प्राणैर्वर्तते इति सप्राणम् । सचित्ते, दशा० २ अ० ।

**सपाय-** न० [स्वपात्र]

आत्मनः संज्ञामात्रके, अप्पणिज्जो सण्णामत्तओ सपायं भण्णति । निसि० ३ उ० ।

**सपायच्छित्त-** त्रि० [सप्रायश्चित्त]

सह प्रायश्चित्तेन वर्तत इति सप्रायश्चित्तम् । प्रायश्चित्तयुक्ते, ठा० ५ ठा० २ उ० । वव० ।

**सपासंडि-** पुं० [स्वपाषण्डिन्]

जैनपाषण्डिनि, नाणदंसणचारित्ताणि परूवेति जिणवयणं चोरेति सो सपासंडी चेव । निसि० १९ उ०

**सपिसल्लय-** पुं० [सपिसल्लय]

सह पिसल्लयेन पिशाचेन वर्तन्त इति सपिसल्लयाः । पिशाचेन सहितेषु, पण्हा० १ अ०

**सपुरजणजाणवय-** त्रि० [सपुरजनजानपद]

सह पुरजनेन जानपदेन च जनपदसम्बन्धिजनेन वर्तते यः स तथा । पुरजनजनपदजनसमेते, भग० ११ श० ११ उ० ।

**सपुरोहिय-** पुं० [सपुरोहिय]

शान्तकर्मकारिसहिते, पण्हा० ४ अ०

**सपुष्पावर- त्रि० [सपूर्वापर]**

सह पूर्वेण-पूर्वाह्नकर्तव्येन अपरेण वा अपराह्नकर्तव्येन । यदि वा-पूर्वं यत्क्रियते अन्नादिकं तथा अपरं यत्क्रियते विलेपन भोजनादिकं तेन सह वर्तत इति सपूर्वापरम् । दशा०१० अ० ।  
पूर्वेणाऽपरेण च सहिते, चंद०१९ पाहु० ।  
सह पूर्वेण गङ्गादिना यदपरं महागङ्गादि तत्सपूर्वापरम् गोशाल-  
करीत्या पूर्वापरसहिते, भग०१५ श० ।  
सह पूर्व यस्य येन वा सपूर्व, तच्च तदपरं च सपूर्वापरः । जीवा०

**सपेहा- स्त्री० [स्वप्रेक्षा]**

स्वेच्छायाम्, भग० ३ श०३ उ० ।

**सपोगल- पुं० [सपुद्गल]**

कर्मादिपुद्गलवति जीवे, ठा० २ ठा० १उ०

**सप्प-१ पुं० [सर्प]**

सर्पतीति सर्पः । भुजङ्गे, आव०म०१ अ० । विशेष०

**सप्प-२ पुं० [सर्प]**

यथाऽसावेकदृष्टिर्भवत्येवं गोचरगतेन संयमैकदृष्टिना भवित-  
व्यम् । दश०१ अ० ।  
तथा सर्प इति यथाऽसावेकदृष्टिर्भवत्येवं गोचरगतेन संयमैक-  
दृष्टिना भवितव्यमित्यर्थसूचकत्वादिति, अथवा-यथा द्राक् स्पृ-  
शन् सर्पो विलं प्रविशत्येवं साधुनाऽप्यनास्वादयता भोक्त-  
व्यमिति । दश०१ अ० ।

**सप्प-३ पुं० [सर्प]**

अश्लेषानक्षत्राधिपतौ देवे, जंबू० ७ वक्ष० । चंद० । अणुओ० ।  
जीवा० ।

**सप्पच्छत्त- न० [सर्पच्छत्र]**

अहिच्छत्राके, आचा०१ श्रु०१ अ०५उ

**सप्पडक्क- त्रि० [सर्पदृष्ट]**

सर्पदशनमारिते, सप्पडक्को मारितकोटो विसेण भाविस्सति ।  
निसि०१ उ० ।

**सप्पडिदंड- पुं० [सप्रतिदण्ड]**

सद्वितीयदण्डे, पण्हा०४ अ०

**सप्पदट्ट- न० [सर्पदट्ट]**

सर्पदशने, बुह०५ उ० ।

**सप्पभ- त्रि० [सप्रभ]**

सप्रभावे, सम० ।

प्रभायुक्ते, सम० ।

**सप्पभ- त्रि० [स्वप्रभ]**

स्वेन-आत्मना प्रभान्ति शोभन्ते प्रकाशन्ते चेति स्वप्रभाणि ।  
स्वस्वरूपतः प्रभावत्सु, सम० ।

**सप्पभ- त्रि० [सत्प्रभ]**

सती-शोभना प्रभा-कान्तिर्यस्य स सत्प्रभः स्वरूपतः  
प्रभावति, दशा०६ अ० । जंबू० । रा० । पत्र० । जीवा० आव०म० ।  
देवानन्दकत्वादिप्रभावयुक्ते, ठा० ४ ठा० २ उ० ।

**सप्पमाण- त्रि० [शप्यमान]**

आक्रोश्यमाने, पण्हा०२ अ०

**सप्पलोद्धी- पुं० [सर्पलुब्धिन्]**

सर्पग्राहके, बुह०१ उ०३ ।

**सप्पविज्जा- स्त्री० [सर्पविद्या]**

सर्पप्रधानायां परिव्राजकविद्यायाम्, आव०म०१ अ० ।

**सप्पसुगंधा- स्त्री० [सर्पसुगन्धा]**

अनन्तजीववनस्पतिभेदे, पत्र०१ पद ।

**सप्पह- पुं० [सत्पथ]**

सन्मार्गे, सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ० ।

**सप्पहविप्पणट्ट- न० [सत्प्रभविप्रनष्ट]**

त्यक्तजिनशासने, उत्त०४अ०

**सप्पि- न० [सर्पिस]**

घृते, ठा० ४ ठा० १ उ० । सूय० । पण्हा० । दश० । आचा० ।  
उव० । आव०म० ।  
विकृतिभेदे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**सप्पि- पुं० [सर्पि]**

देवे, पुनर्वसुनक्षत्रे, ठा० ।

**सप्पिआसव- पुं० [सर्पिराश्रव]**

सर्पिरतिशायिगन्धादिघृतम् एतत्त्वादोपमानवचना वैरस्वाम्या-  
दिवत्तदाश्रयाः । लब्धिमत्पुरुषविशेषेषु, । उव० ।

**सप्पी- स्त्री० [सर्पी]**

सर्पस्त्रियाम्, दशा०१ अ० । सम० ।

**सप्पुरिस-१ पुं० [सत्पुरुष]**

संश्र्वासौ पुरुषश्च सत्पुरुषः । आप्तपुरुषे, सूय०२ श्रु०६ अ० ।  
तीर्थकरादिके, वव०१० उ० ।  
तं तह दुल्लहलंभं, विज्जुलताचंचलं मणूसत्तं लद्धूण जो पमा-  
यइ, सो कापुरिसो न सप्पुरिसो । आव०म०१ अ० ।

**सप्पुरिस-२ पुं० [सत्पुरुष]**

दाक्षिणात्यानां किं पुरुषाणामिन्द्रे, ठा० २ ठा० ३ उ० । पत्र० ।  
भग० ।

**सफल- त्रि० [सफल]**

सह फलेन कर्मबन्धेन वर्तत इति सफलम् । सकर्मणि, सूय०१  
श्रु०८ अ० ।  
चरितार्थे, जीवा०१ प्रति० । फल वति, षो०८ विव० ।

**सफाय-** न० [सफाय]

अनन्तजीववनस्पतिभेदे, पत्र०१ पद ।

**सफिह-** त्रि० [सस्यूह]

अभिलाषासहिते, द्वा०२२ द्वा० ।

**सबर-** त्रि० [शबर]

अनार्यदेशभेदे, तद्देशवासिनि म्लेच्छे, पण्हा०१ अ० सूय० ।  
नाया० । पत्र० । आव०म० । प्रव० । आचा स्वनामख्याते  
जैमिनिप्रणीतसूत्रोपरिव्याख्याभाष्यकारके प्रधा-नमीमांसके,  
सम्म०२ काण्ड० ।

**सबल-१** पुं० [शबल]

परमाऽधार्मिके, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।

**सबल-२** पुं० [शबल]

प्रायश्चित्तयुक्ते, दशा० ।

**सबल-३** पुं० [शबल]

सबलः-पञ्चदशसु परमाधार्मिकेषु चतुर्थः । उत्त० ।  
सबलः-सदंष्ट्रदेवकृतोपसर्गनिवारकः । आव० ।  
शबलं-कर्बुरं चारित्रं यैः क्रिया-विशेषेण भवति स शबल-  
स्तद्योगात्सुधुरपि । सम० ।  
शबलः-करकर्मकरणादिकः क्रियाविशेषः । आव० ।  
चित्तविचित्तं । निसि० ।  
शबलं-कर्बुरं, द्रव्यतः पटादिभावतः सातिचारं चारित्रम् । ठा०

**सबाहिरिय-** त्रि० [सबाहिरिक]

प्राकारबहिर्वर्तिगृहपद्धतिरूपया बाहिरिकया सहिते बृह०१ उ०२

**सबीय-** न० [सबीज]

बीजैः सह वर्तमाने, दशा० २ अ० ।  
सह बीजैः-शालिगोधूमादिभिर्वर्तन्त इति सबीजकाः । एते  
सर्वेऽपि वनस्पतिकायाः । सूय०१ श्रु०११ अ० ।

**सब्भाव-** पुं० [सद्भाव]

सतां भावः सद्भावः । आव०३ अ० ।  
विद्यमानभावे, न० ।  
सत्त्वे, सम्यग्दर्शने, ओह० ।  
परमार्थे, सूय०१ श्रु०१२ अ० ।  
निष्ठायाम्, आव०चू०१ अ० ।  
पदार्थे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।  
सन्मार्गे, सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ० ।  
सत इव विद्यमानस्येव भावः सद्भावः, स्थाप्यमानस्येन्द्रा-  
देरनुरूपज्ञोपाङ्गचिह्नवाहनप्रहरणादिपरिकररूपो य आकार-  
विशेषो यद्दर्शनात् साक्षात् विद्यमान इवेन्द्रादिलक्ष्यते । पिंड० ।  
हार्द, अन्तश्चित्ताभिप्राये, तं० ।

**सब्भावद्वावणा-** स्त्री० [सद्भावस्थापना]

काष्ठाकर्मादिषु, आवश्यकक्रियां कुर्वतः एकादिसाध्वादि-  
स्थापनायाम्, अणुओ० ।

**सब्भावदर्शन-** न० [सद्भावदर्शन]

सत्-जिनाभिहितं प्रवचनं तस्य भावः सद्भावस्तस्य दर्शनम्-  
उपलम्भः सद्भावदर्शनम् । सम्यक्त्वे, विशेष० ।

**सब्भावण-** त्रि० [सद्भावन]

प्रतिव्रतं पञ्चभिरीर्यासमित्यादिभिर्भावनाभिः सहिते, ठा० ८  
ठा० ३ उ० ।

**सब्भावदावण-** न० [सद्भावदापन]

शल्योद्धरणे, आलोचनायाम्, ओह० ।

**सब्भावपडिसेह-** पुं० [सद्भावप्रतिषेध]

नास्त्यात्मा नास्ति पुण्यं पापं चेत्यादिरूपे मृषावादभेदे, । दश०  
४ अ० ।

**सब्भाविक-** त्रि० [सद्भाविक]

पारमार्थिके, दश०१ अ० । सद्भावज्ञे, बृह० १ उ० २ ।

**सब्भितरबाहिरिय-** न० [साभ्यन्तरबाह्य]

सहाभ्यन्तरं बाह्यं यस्य येन वा तत्साभ्यन्तरबाह्यम् । अभ्यन्तरेण  
बाह्येन च सह वर्तमाने, सर्वाभ्यन्तरान् मण्डलात् परतस्ता-  
वन्मण्डलेषु संक्रमणं यावत्सर्वबाह्यमण्डलं, सर्वबाह्याच्च  
मण्डलादर्वाक् मण्डलेषु तावत् संक्रमणं यावत्सर्वाभ्यन्तरम् ।  
सहाभ्यन्तरेण विभागेन बाह्येन च वर्तमाने, भग०१५ श० ।

**सब्भूकडक्ख-** पुं० [सद्भूकटाक्ष]

चक्षुर्दोषभेदे, महानि०३ अ० ।

**सब्भूय-** त्रि० [सद्भूत]

विद्यमाने वस्तुनि, विशेष० ।  
अननृते, आव०४ अ० । आव०म० । उवा० । सम० ।  
सतां प्रकारेण भूते, नाया०१ श्रु०१३ अ० ।

**सभण्डमत्तोवगरण-** न० [सभाण्डमात्रोपकरण]

स्वकीयभाण्डमात्राभाजनरूपपरिच्छेदे शय्यादि गृहीत्वैत्यर्थे,  
सह भाण्डमात्रया यदुपकरणं तत्तथा इति । भग०१३ श०६ उ० ।

**सभय-** पुं० [सभय]

त्राणरहिते अरण्यप्रदेशे, सूय०२ श्रु०अ० ।

**सभा-** स्त्री० [सभा]

सद्भ्यः स्थानं सभा । निसि०१२ अ० ।  
आस्थायिकायाम्, भग०९ श०३१ उ० ।  
महाजनस्थाने, पण्हा०३ अ० ।  
बहुजनोपवशनस्थाने, पण्हा०५ अ० ।  
चातुर्वेद्यादिशालायाम्, आचा०२ श्रु०१ चू०२ अ०२ उ० ।

**सभाव- पुं० [स्वभाव]**

स्वो भावः स्वभावः । सहजभावे, निसि० १ उ० ।  
‘निर्माय एव भावेन, मायावांस्तु भवेत्कचित् । पश्येत्स्वपरयो-  
र्यत्र, सानुबन्ध हितोदयः । सूय० ।  
सहजभावः । निशी० ।

**सभावओ-** अव्य० [सभावतसु] पुद्गलाननां मूर्तत्ववत्  
स्वकीयाद्भावादित्यर्थे, भग० १२ श० २ उ०

**सभावसंपण्ण- त्रि० [स्वभावसम्पन्न]**

स्वभावेन पाकं विना सम्पन्नः सिद्धः । स्वभावसिद्धे द्राक्षादौ,  
ठा० ४ ठा० २ उ० ।

**सभावहीण- न० [स्वभावहीन]**

यत्र स्वभावोऽन्यथा स्थितोऽन्यथाऽभिधीयते तत्स्वभावहीनम् ।  
सूत्रदोषभेदे, अणुओ० ।  
यस्य योऽयं चात्मीयः स्वभावस्तेन तच्छून्यमभिधीयते यथा  
स्थिरो वायुरिति । बुह० १ उ० १ ।

**सभिक्षुग- न० [सभिक्षुक]**

पञ्चदशे उत्तराध्ययने, सम० ३६ सम० ।

**सम- पुं० [शम]**

रागादिनिग्रहे, विशेष० । सम० ।

**समइकमंत- त्रि० [समतिक्रामत्]**

नानाप्रदेशान् उल्लङ्घयति, उत्त० १४ अ० । कल्प० । भग० ।

**समइमा- स्त्री० [समतिमा]**

शुष्कमण्डके, बुह० १ उ० ३ ।

**समइय- न० [समयिक]**

सम्यक्शब्दार्थे, समित्युपसर्गः सम्यक् अयः समयः सम्यग्-  
दयापूर्वकं जीवेषु प्रवर्तनं सोऽस्यास्तीति, सामायिके, आव०  
म० १ अ० । विशेष० ।

**समइविकण्प- पुं० [समतिविकल्प]**

निजबुद्ध्युत्प्रेक्षणे, पञ्चा० १४ विव० ।

**समउल्ल- त्रि० [समतुल्य]**

सदृशार्थे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**समंजस- त्रि० [समजस]**

समीचीने, आचा० १ श्रु० २ अ० ३ उ० ।

**समंतओ-** अव्य० [समंततसु]

सर्वासु दिक्ष्वित्यर्थे, आव० म० १ अ० । जीवा० । सूय० । पण्हा० ।  
विपा० । रा० । नाया० ।

**समंता- अव्य० [समन्तात्]**

सर्वत इत्यर्थे, भग० ७ श० ६ उ० ।  
विनिश्चितार्थे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**समंस- पुं० [समांश]**

समच्छेदे, सम० ६७ सम० ।

**समंसु- न० [श्मश्रु]**

कूर्चरोमणि, पण्हा० ३ अ०

**समकडग- न० [समकटक]**

स्वनामख्याते नगरे, उत्त० १३ अ० ।

**समकम्म- त्रि० [समकर्मन्]**

कर्मसमे, भग० १ श० २ उ० ।

**समकरण- पुं० [समकरण]**

झोषे, ‘झोसि त्ति वा समकरणं ति वा एगट्ठा’ वव० १ उ० ।

**समकरणी- स्त्री० [समकरणी]**

तुल्यरेखाभेदे,  
यत्र प्रदेशे धरणकसहिता तुला ध्रियमाणा समा भवति तत्र  
प्रदेशे समतापरिज्ञानार्थमेका रेखा भवति । ज्यो० २

**समकिरिय- त्रि० [समक्रिय]**

समानक्रिये, भग० १ श० २ उ० ।

**समक्ख- त्रि० [समक्ष]**

सम्मुखे, आव० म० १ अ० । आव० । ठा० ।

**समक्खाय- पुं० [समाख्यात]**

कथिते, संथा० ।

**समिक्खिय- पुं० [समीक्षित]**

समीहिते, पूर्वं बुद्ध्या पर्यालोचिते, पण्हा० २ अ० ।

**समखुर- त्रि० [समखुर]**

तुल्यशफे, समखुरवालिधानौ तुल्यशफपुच्छौ । उवा० ७ अ० ।

**समखेत- न० [समक्षेत्र]**

समं-स्थूलं न्यायमाश्रित्य त्रिंशन्मुहूर्तभोग्यं क्षेत्रमाकाशलक्षणं  
येषां तानि । ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

यावत्प्रमाणं क्षेत्रमहोरात्रेण गम्यते नक्षत्रैस्तावत् क्षेत्रप्रमाणं  
चन्द्रेण सह योगं यान्ति गच्छन्ति तानि समक्षेत्राणि । चंद० १०  
पाहु० । सूर० १० पाहु० ।

इह यावत्प्रमाणं क्षेत्रमहोरात्रेण गम्यते सूर्येण तावत्प्रमाणं  
चन्द्रेण सह योगं यान्ति गच्छन्ति तानि समक्षेत्राणि । समम-  
होरात्रप्रमितं क्षेत्रं । ज्यो० ६ पाहु० ।

चन्द्रयोगमधिकृत्याऽस्ति येषां तानि समक्षेत्राणि । तथाविधेषु  
ज्योतिष्कचारक्षेत्रेषु सूर० १० पाहु० ।

**समग- न० [समक]**

सार्द्धशब्दार्थे, वव० २ उ० ।

युगपदेककाले, दश० ४ अ० । पन्न० । नाया० । आव० म० ।  
वैताढ्यपर्वतेषु विद्याधरमनुष्येषु, आव० चू० १ अ० ।



**समग- त्रि० [समग्र]**

सम्पूर्ण, तं० ।  
समस्ते, बुह०१ उ०१ ।  
परिपूर्ण, उव० । दश० । पण्हा० । सूर० ।  
समन्विते, उत्त०८ अ० ।  
निरवशेषे, अणुओ० ।

**समचउरंस- न० [समचतुरस्र]**

समंनाभेरुपर्यधश्च सकलपुरुषलक्षणोपेतावयवतया तुल्यम्,  
अन्यूनाधिकाश्चतस्रोऽस्रयो यस्य तच्चतुरस्रं, समं च तच्चतुरस्रं  
च समचतुरस्रम् । तं० ।  
तुल्यारोहपरिणाहे, सम्पूर्णाङ्गावयवस्वाङ्गुलाष्टशतोच्छ्रये, तुल्या-  
रोहपरिणाहत्वेन समत्वात् पूर्णावयवत्वेन चतुरस्रत्वात्तस्य चतु-  
रस्रं सङ्गतमिति पर्यायौ । भग०१४ श०७ उ० । पत्र० । जीवा० ।  
चंद० । अणुओ० ।  
समाः-शरीरलक्षणोक्तप्रमाणाविसंवादिन्यश्चतस्रोऽस्रयो यस्य  
तत्समचतुरस्रम्,  
अस्रयस्त्विह चतुर्दिग्विभागोपलक्षिताः शरीरा-वयास्ततश्च  
सर्वेऽप्यवयवाः शरीरलक्षणोक्तप्रमाणा व्यभिचारिणो यस्य न तु  
न्यूनाधिकप्रमाणाः ।  
तुल्यशरीरलक्षणोपेता वयवयुक्तेषु, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**समचउरंससंठाण- न० [समचतुरस्रसंस्थान]**

समाः-शास्त्रोक्तलक्षणोक्तप्रमाणाविसंवादिन्यश्चतस्रोऽस्रयो यस्य तत्सं-  
स्थानं पर्यङ्कासनोपविष्टस्य जानुनोरन्तरम् । संस्थानभेदे । सम० ।  
चंद० । उत्त० ।

**समचउरंससंठाणसंठिम- त्रि० [समचतुरस्रसंस्थानसंस्थित]**

समचतुरस्रं च तत्संस्थानं च समचतुरस्रसंस्थानं तेन संस्थिताः ।  
सम चतुरस्रसंस्थानवत्सु, जीवा०३ प्रति०४ । रा० । सूर० ।

**समचक्रवालसंठिय- त्रि० [समचक्रवालसंस्थित]**

समचक्रवालं समचक्रवालरूपं संस्थितं संस्थानं यस्य स तथेति  
विग्रहः । वृत्ते, चंद० ४ पाहु० ।

**समच्छेय- पुं० [समच्छेद]**

भङ्गे, आचा०१ श्रु०१ अ०५ उ० ।

**समजोइभूय- पुं० [समज्योतिर्भूत]**

समः-तुल्यो ज्योतिषाऽग्निना भूतो जातो यः स तथा ।  
अग्निक्ल्पीभूते, विपा०१ श्रु०९ अ०भग० । विशे० ।

**समज्जुणिसु- क्रिया० [समार्जिवत्]**

गृहीतवति, भग०२८ श०१ उ० ।

**समज्जिणित्ता- अव्य० [समर्ज्य]**

शुभकर्मोपचयं कृत्वेत्यर्थे, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।

**समज्जिय- त्रि० [समर्जित]**

रागद्वेषाभ्यामुपागते, उत्त०२९ अ० ।  
कचवरापनयने, भग०११ श०१० उ० ।

**समट्ट- त्रि० [समर्थ]**

प्रतिपत्तुं योग्ये, सूय०२ श्रु०४ अ० । चंद० । नाया० ।  
उपपन्ने, जीवा०३ प्रति०१ अधि०२ उ० । भग० ।  
सङ्गते, कर्मपुद्गलानां सातिशये ज्ञानगम्यत्वात् । उव० ।

**समट्टिइ- त्रि० [समस्थिति]**

सममेवोत्पन्ने, भग० ३४ श०१ उ० ।

**समण-१ पुं० [शमन]**

चिकित्सायाम्, आव०४ अ० ।  
रोगप्रशमने, निसि०२० उ० ।  
औषधे, वव०३ उ० ।

**समण-२ पुं० [समण]**

समिति समतया शत्रुमित्रादिषु अणति प्रवर्तते इति समणः  
प्राकृततया सर्वत्र 'समण'ति । ठा० ४ ठा० ४ उ० ।  
अणत्यनेकार्थत्वाद्भातूनां प्रवर्तते इति समणो निरुक्तिवशात् ।  
सर्वत्र तुल्यप्रवृत्तिमति, भग०१ श०१ उ० । ठा० । सूय० । अणुओ०

**समण-३ पुं० [श्रमण]**

श्राम्यतीति श्रमणः । साधौ, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।  
श्राम्यति-श्रममानयति पञ्चेन्द्रियाणि मनश्चेति श्रमणः । पंच०चू०  
श्रमु तपसि खेदे । आव०चू०३ अ० । आव० ।  
श्राम्यतीति श्रमणः । विशे० । उत्त० । ठा० । आचा० । सूय० ।

**समणग- पुं० [श्रमणक]**

श्रमण एव श्रमणकः । साधौ, उव० ।

**समणगपइ- पुं० [श्रमणकपति]**

साधुसंघाधिपतौ, उव० ।

**समणगुण- पुं० [श्रमणगुण]**

श्रमणानां गुणाः श्रमणगुणाः ।  
मूलगुणोत्तरगुणेषु, तत्र पञ्च महाव्रतानि मूलगुणाः उद्गमोत्पाद-  
नैषणादयः अष्टादश शीलाङ्ग-सहस्राणि च उत्तरगुणाः । निसि०  
१६ उ० ।

**समणगुणमुक्कजोगि- पुं० [श्रमणगुणमुक्तयोगिन्]**

श्रमणानां गुणा मूलोत्तरगुणरूपाः श्रमणगुणास्तैर्मुक्ताः परि-  
त्यक्तास्तद्रहिता ये योगा मनोवाक्कायव्यापारास्ते यस्य सन्ति स  
श्रमणगुणमुक्तयोगी । संयमदुर्बले वव० २ उ० ।

**समणगुणविउ- पुं० [श्रमणगुणविद्]**

श्रमणगुणान् वेत्तीति, विद्ज्ञाने, श्रमणगुणविद् । मूलोत्तरगुण-  
ज्ञातरि, निसि०१६ उ० ।

**समणघाय-** पुं० [श्रमणघात]

साधुमारके, 'एस समणघाए' श्रमणघातको । गोशालकः ।  
श्रमणयोस्तेजोलेस्याक्षेपलक्षणघातदानात् । भग० १५ श० ।

**समणच्छण-** पुं० [श्रमणच्छत्र]

श्रमणवेषधारिणि अश्रमणे । निसि० १६ उ० ।

**समणजोगमुक्कधुर-** पुं० [श्रमणयोगमुक्तधुर]

परित्यक्तश्रमणव्यापारे, बुह० १ उ० २ ।

**समणत्त-** न० [श्रमणत्व]

साधुत्वे, उत्त० १९ अ० ।

**समणधम्म-** पुं० [श्रमणधर्म]

श्राम्यन्तीति श्रमणाः साधवस्तेषां धर्मः क्षान्त्यादिलक्षणः आव०  
साधुधर्मे, आव० चू० ४ अ० । ओह० ।

**समणपज्जुवासणा-** स्त्री० [श्रमणपर्युपासना]

श्रमण । साधु । शुश्रूषायाम्, भग० ।

**समणभद्-** पुं० [श्रमणभद्र]

चम्पायां जितशत्रुनृपस्य पुत्रे युवराजे, उत्त० २ अ० ।

**समणभूय-** पुं० [श्रमणभूत]

श्रमणः-साधुः स इव यः सः श्रमण-भूतो भूतशब्दस्योप-  
मानार्थत्वाच्छ्रमणो निर्ग्रन्थस्तद्वद्यस्तदनुष्ठानकरणात् स श्रमण-  
भूतः । साधुकल्पे, सम० ११ सम० ।  
एकादशीमुपासकप्रतिमां प्रतिपत्रे श्रावके, पण्हा० अ० । उवा० ।  
आव० म० ।

**समणमाहणपडिलाभ-** पुं० [श्रमणब्राह्मणप्रतिलाभ]

श्रमणेभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च प्रतिलाभने, भग० ७ श० १ उ० ।

**समणलिङ्ग-** न० [श्रमणलिङ्ग]

साधुलिङ्गे, आव० ३ अ० ।

**समणवरगंधहस्ति-** न० [श्रमणवरगन्धहस्तिन्]

श्रमणगजकलभानां यूथाधिपत्यपदमुद्धरमाने, बुह० १ उ० २ ।

**समणविंदपरिवद्धय-** पुं० [श्रमणवृन्दपरिवर्द्धक]

श्रमणा एव श्रमणकास्तेषां वृन्दस्य परिवर्द्धको-वृद्धिकारी  
श्रमणवृन्दपरिवर्द्धकः । श्रमणसमुदायवर्द्धके, उव० ।

**समणव्वय-** न० [श्रमणव्रत]

साधुव्रते, सूय० १ श्रु० ७ अ० ।

**समणसंघ-** पुं० [श्रमणसंघ]

साधुसंघे, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**समणसीह-** पुं० [श्रमणसिंह]

मुनिपुंगवे, पण्हा० ५ अ० ।

**समणी-** स्त्री० [श्रमणी]

प्रतिन्याम्, निसि० । आर्यिकाया संयत्याम्, जीवा० १ प्रति० ।

**समणुजाणणा-** स्त्री० [समनुज्ञापना]

'समणुजाणेमाणा' आचा० १ श्रु० ८ अ० १ उ० ।

**समणुण्ण-१** त्रि० [समनोज्ञ]

एकसामाचारीप्रतिबद्धे, उव० । आचा० वव० ।

सांभोगिके, निसि० ५ उ० । आचा० । बुह० ।

चारित्रवति, संविग्र, आचा० १ श्रु० ८ अ० २ उ० ।

अनुमोदिते, आचा०

**समणुण्ण-२** पुं० [समनुज्ञ] संविज्ञविहारिभाविते, आचा० १ श्रु० ८

अ० १ उ० । ठा० ।

**समणुण्णया-** स्त्री० [समनुज्ञता]

परस्परपसंपदि, वव० ४ उ० ।

**समणुण्णा-** स्त्री० [समनुज्ञा]

समिति संगता औत्सर्गिकगुणयुक्तत्वेनोचिता आचार्यादितया  
अनुज्ञा समनुज्ञा । आचार्यादित्वेन समनुज्ञापने, ठा० ३ ठा० ३ उ०

**समणुबद्ध-** न० [समनुबद्ध]

अनवच्छिन्ने, ओह० । पण्हा० । रा० ।

**समणुबद्धवैरि-** त्रि० [समनुबद्धवैरिन्]

अव्यवच्छिन्नवैरिभावे, भग० १३ श० ६ उ० ।

**समणुमणिय-** अव्य० [समनुमान्य]

संभाष्येत्यर्थे, निसि० १ उ० ।

**समणुवासणा-** स्त्री० [समनुवासना]

विधाने, आचा० १ श्रु० २ अ० १ उ० ।

सम्यग्विधाने, आचा० १ श्रु० २ अ० ४ उ० ।

**समणुसुविहिय-** त्रि० [समनुसुविहित]

शोभनं विहितमनुष्ठानं येषां ते सुविहिताः, श्रमणाश्च ते  
सुविहिताश्च श्रमणसुविहिताः । श्रमणशब्देन सह विशेषण  
समासः । शोभनानुष्ठानवत्सु साधुषु, वव० १ उ० । दश० ।

**समणोवासग-** पुं० [श्रमणोपासक]

श्रमणानुपास्ते सेवत इति श्रमणोपासकः । दशा० १ अ० ।  
देशविरतेन सह यः श्रमणोपासनमहिम्ना प्रतिदिनं प्रवर्द्धमान-  
संवेगो यावज्जीवं सूक्ष्मबादरादिभेदपरिज्ञानवान् भवति । भग० ८  
श० ५ उ० । सूय० । आव० । ठा० ।

श्रावक, ठा० ।

**समणोवासगधम्म-** पुं० [श्रमणोपासकधर्म]

श्रमणानुपास्ते सेवन्त इति श्रमणोपासकास्ते च श्रमणो-  
पासनतोऽभिगतजीवाजीवस्वभावास्तथोपलब्धपुण्यपापास्तेषां  
धर्मः । श्रावकधर्मे, सूय० २ श्रु० २ अ० ।

**समणोवासिया-** स्त्री० [श्रमणोपासिका]

श्राविकायाम्, ठा० ।

**समण्णागय-** पुं० [समन्वागत]

प्राप्तानां संयुक्ते, गच्छा०१ अधि० । निसि० ।

समनुप्राप्ते, रा० ।

**समण्णाहार-** पुं० [समन्वाहार]

समागमने, ठा० ४ ठा० २ उ० ।

**समण्णिय-** त्रि० [समन्वित]

सहिते, आचा०१ श्रु०३ अ०२ उ० ।

संयुक्ते, । आव० । सूय० ।

**समतल-** न० [समतल]

अविषमे, पण्हा०५ अ० अविषमोन्नते, वाते, जीवा०३ प्रति०४

**समतलपड्या-** स्त्री० [समतलपदिका]

समतले द्वयोरपि भुवि विन्यस्तत्वात्पदे पादौ यस्याः सा सम-  
तलपदिका । द्वाभ्यामपि पादाभ्यां भुवि लग्नायाम्, नाया०१ ।

**समतल-** त्रि० [समतल]

समशब्दः प्रत्येकं संबध्यते तेन समास्ताला हस्तताला उप-  
चारात्तद्वचोऽस्मिंस्तत्समतलम् । तालैः समे, ठा० ७ ठा० ३ उ०  
गीतादिमानकलितानां समोऽन्यूनाधिकमातृकत्वेन यस्माद्  
ज्ञायते तत्समतलविज्ञानम् ।

कलाभेदे, जंबू०२ वक्ष० । सम० ।

**समतिणमणिलेष्टुकंचण-** त्रि० [समतृणमणिलेष्टुकाञ्चन]

समानि तुल्यानि तृणमणिलेष्टुकाञ्चनानि यस्य स तथा ।  
निःस्पृहे, कल्प० १ अधि० ६ ।

**समतीरा-** स्त्री० [समतीरा]

समं-गर्ताभावात् अविषमं तीरं तीरजलापूरितं स्थानं यासां ताः  
समतीराः । अविषमतटासु नद्यादिषु रा० । जीवा० ।

**समत्त-** त्रि० [समस्त]

अत्रासमस्तग्रहणात् समस्तशब्दस्य न स्तस्य थकारः स्यात् ।  
समत्तो । सम्पूर्णे आव०म० । उत्त० । पण्हा० । विशेष० ।

**समत्त-** त्रि० [समाप्त]

सम्यक् प्रकारेण संपूर्णमधीतम् । पूर्णतां नीते उत्त०२९ अ० । ।  
नाया० । सूय० । संथा० ।

**समत्तकप्पिय-** त्रि० [समाप्तकल्पित]

पृथक्कल्पोपेते, वव०४ उ० ।

**समत्तगणिपिडगब्भत्थसार-** पुं० [समस्तगणिपिटकाभ्यस्तसार]

परिपूर्णद्वादशाङ्गज्ञाततत्त्वे, जीवा०१ प्रति० ।

**समत्तगोल-** पुं० [समस्तगोल]

संपूर्णगोले, भग०११ श०११ उ० ।

**समत्तदंसि-** त्रि० [सम्यक्त्वदर्शिन्]

रागद्वेषरहिते, आचा०१ श्रु०२ अ०६ उ० ।

**समत्तपड्ण-** त्रि० [समाप्तप्रतिज्ञ]

समाप्ताभिग्रहे, भग०१५ श० ।

**समत्थ-** पुं० [समर्थ]

शक्ते, आचा०१ श्रु०१ अ०७ । जंबू० । रा० । ठा० । भग० । विशेष०

**समत्थणा-** स्त्री० [समर्थना]

विधि, विशेष० ।

**समदंसि-** त्रि० [समदर्शिन्]

समानदृष्टौ, 'सूय०२ श्रु०५ अ० ।

**समपत्थर-** पुं० [समप्रस्तर]

समपाषाणे, पण्हा०३ अ०

**समपद-** न० [समपद]

द्वयोरपि पादयोः समत्वेन नैरन्तर्येणस्थापने योधस्थानभेदे,  
द्वावपि पादौ समौ नैरन्तर्येण स्थापयति । उत्त० ४ उ० ।

**समपदुक्खेव-** न० [समप्रत्युत्क्षेप]

समः प्रत्युत्क्षेपः प्रति क्षेपो वा मुरजकंसतालाद्यातोद्यानां यो  
ध्वनिस्तल्लक्षणो नृत्यपादक्षेपलक्षणो वा यस्मिंस्तत्समप्रत्युत्क्षेपं  
समप्रतिक्षेपञ्चेति । गेयभेदे, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**समपाद-** न० [समपाद]

युद्धस्थानभेदे, 'समपादद्वितो जुञ्जति तं समपादं । अण्णे  
भणंति जं एतेसिं चैव ठाणाणं जहासंभवं चलिय ठितो पासतो  
पिटुतो वा जुञ्जति । निसि०१ उ० ।

**समपायपुया-** स्त्री० [समपादपुता]

यस्यां पादौ पुतौ च स्पृशतः सा समपादपुता । ठा० ५ ठा० १  
समौ समतया भूलग्नौ पादौ च पुतौ च यस्यां सा । निषद्याभेदे,  
ठा० ५ ठा० १ उ० ।

**समपासि-** पुं० [समदर्शिन्]

समम्-अविपरीतं पश्यतीत्येवं शीले, गच्छा०१ अधि० ।

**समप्पभ-** त्रि० [समप्रभ]

समा-सदृशी प्रभा दीप्तिर्यत्र तत्तथा । सनत्कुमारदेवलोके  
स्वनामख्याते विमाने, सम० ७ सम० । पण्हा०

**समप्पिय-** त्रि० [समर्पित]

दौकिते, पण्हा०३ अ०

**समभरघडता-** स्त्री० [समभरघटता]

समो न विषमो घटकदेशमनाश्रितत्वेन भरो जलसमुदायो यत्र  
स समभरः । सर्वथा भृतो वा समभरः । सर्वथा भृतघटा-  
कारतायाम्, भग०१ श०६ उ० । जीवा० ।

**समभाव-** पुं० [समभाव]

मध्यस्थाध्यवसाये, आव० ।

रागद्वेषमध्यवर्तिनि, आव० ५ अ० ।

**समभिआवन्न- त्रि० [समभ्यापन्न]**

अभिमुखं समापन्ने, सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ० ।

**समभिण्णाण- न० [समभिज्ञान]**

सम्यगाभिमुख्येन परिच्छेदे, आचा० १ श्रु०६ अ०३ उ० ।

गुरुसाक्षिगृहीतप्रतिज्ञानिर्वाहे, आचा० १ श्रु०३ अ०३ उ० ।

**समभिभूय- त्रि० [समभिभूत]**

परिभूते, पण्हा०४ अ०

**समभिरूढ- पुं० [समभिरूढ]**

वाचकं वाचकं प्रति वाच्यभेदं समभिरोहयत्याश्रयति यः स समभिरूढः । ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

पर्यायशब्देनिरुक्तिभेदे भिन्नमर्थं समभिरोहयन् समभिरूढ ठा० पर्यायशब्दानां प्रविभक्तार्थाभिमन्तरि नयभेदे । विशेष० ।

**समभूमि- स्त्री० [समभूमि]**

अविषमक्षितितले, आव०५ अ० ।

**समय- न० [समक]**

सममेव समकम् । सरसविरसादिष्वभिष्वङ्गादिविशेषरहिते, उत्त० १ अ० । सहार्थे, उत्त०४ अ० ।

युगपदर्थे वव०२ उ० ।

एककाले, पत्र०१ पद । विशेष० । जंबू० । नाया० ।

सम्यगवैपरीत्येनायन्ते ज्ञायन्ते जीवादयोऽर्था अनेनेति समयः, सम्यगयन्ति गच्छन्ति जीवादयः पदार्थाः स्वस्मिन् रूपे प्रतिष्ठां प्राप्नुवन्ति अस्मिन्निति समयः । सूय० । आव०म० ।

आगमे, आचा०२ श्रु०२ चू०५ अ० सूय० । अणुओ० ।

सिद्धान्ते, न० । वव० । विशेष० ।

जैनागमे, विशेष० ।

जिनादिसिद्धान्ते, ठा० ३ ठा० ४ उ० । जीवा० । संथा० ।

आत्मीय-प्रवचने, वव०३ उ० ।

सांख्यादीनां सिद्धान्ते, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

अवसरे, आचा०१ श्रु०८ अ०६ उ० । कल्प० । रा० । नाया० ।

विशिष्टकाले, आचा०२ श्रु०३ चू० । चंद० ।

निर्विभागे सर्वसूक्ष्मकालांशे, अणुओ० । विशेष० ।

परमनिकृष्टे काले, आव०म०१ अ० । न० ।

कालविशेषे, निर० १ अ० । ठा० । विशेष० । आव०म० । तं० ।

अहोरात्रादिकालस्य विशिष्टे भागे, भग० १ श० १ उ० । कल्प० ।

विपा० । चंद० । अणुओ०

**समयकल्प- पुं० [समयकल्प]**

सिद्धान्तविचारणायाम्, संथा० ।

**समयकल्पिण्डणाम- न० [समयकृतपिण्डनामन्]**

समयकृतपिण्डनाम्नि, पिंड० ।

**समयखेत्त- न० [समयक्षेत्र]**

समयः कालस्तद्विशिष्टं क्षेत्रं । मनुष्यक्षेत्रे, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

मनुष्यलोके, ठा० ३ ठा० १ उ० । सम० ।

**समयचर्जा- स्त्री० [समयचर्या]**

समयपरिभाषया उपक्रमे, विशेष० ।

**समयज्झयण- न० [समयाध्ययन]**

समयाख्ये सूत्रकृताङ्गस्य प्रथमे अध्ययने, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० । आव०चू० ।

**समयणिबद्ध- न० [समयनिबद्ध]**

मनसा निबद्धे सङ्केते, नाया०१ श्रु० ९ अ० ।

**समयणिबद्ध- त्रि० [समकनिबद्ध]**

सहितैरुपात्ते ज्ञाताङ्गसूत्रे, नाया०१ श्रु०९ अ० ।

**समयणीइ- स्त्री० [समयनीति]**

सिद्धान्तव्यवस्थायाम्, आव०१ अ०

**समयणु- त्रि० [समयज्ञ]**

आगमज्ञ, । आचा० ।

**समयय- न० [समयज]**

अन्वर्थरहिते समय एव प्रसिद्धे नामनि, पिंड ।

**समयलुक्ख्या-स्त्री० [समयरूक्षता]**

कालरूक्षतायाम्, भ० ७ श० ६ उ०

**समयविरुद्ध- त्रि० [समयविरुद्ध]**

स्वसिद्धान्तविरुद्धे, विशेष० ।

यथा सांख्यस्यासत्कारणम्, कार्यं सदैवशोषिकस्येत्यादि । आव० म० १ अ० । अणुओ० ।

यथा वैशेषिको व्रते प्रधानं कारणं जैनो वदति नास्ति जीव इत्यादि । बुह०१ उ०१ ।

**समयसण्णा- स्त्री० [समयसंज्ञा]**

आगमपरिभाषायाम्, बुह०१ उ०३ ।

**समयसम्भाव- पुं० [समयसद्भाव]**

सिद्धान्तार्थ, आव०४ अ० ।

**समयसागर- पुं० [समयसागर]**

समयः-आगमस्तस्य सागर इव रत्नाकरः । ग्रन्थभेदे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**समया- स्त्री० [समता]**

समो रागद्वेषमध्यस्थस्तद्भावस्तत्ता । आव०म० १ अ० ।

समभावे, आचा०१ श्रु०३ अ०१ उ० । सूय० । आव०चू० ।

आत्मपरतुल्यतायाम्, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ० ।

सामायिके, रागद्वेषविरहे सूय०१ श्रु०१४ । आव०चू० । आचा० ।

माध्यस्थे, आचा० १ श्रु०८ अ०२ उ० । यो०बि० ।

**समतानुपेहि-** त्रि० [समतानुप्रेक्षिन्]

समतया प्रेक्षितुं शीलमस्येति समतानुप्रेक्षी। प्रियद्वेष्यरहिते,  
सूय०१ श्रु०१० अ०।

**समयातीय-** त्रि० [समयातीत]

आगमादतिक्रान्ते, सूय०१ श्रु०९अ०

**समयाणुभाव-** पुं० [समतानुभाव]

कालविशेषसामर्थ्ये, भग०७ श० ६ उ०।

**समर-१** पुं० [समर]

जनमरकयुक्ते, पण्हा०३ अ०

संग्रामे, नाया०१ श्रु०१ अ०। उक्त०।

**समर-२** त्रि०।

समत्वेन युक्ते, रकारः प्राकृतत्वात्। उक्त०२ अ०।

**समरवहिय-** त्रि० [समरव्यथित]

संग्रामे हते, भग०७ श०९ उ०।

**समरभड-** पुं० [समरभट]

संग्रामभेदे, पण्हा०३ अ०

**समरीइय-** त्रि० [समरीचिक]

बहिर्विनिर्गतकिरणजालसहिते, जीवा०३ प्रति०। सम०। रा०। उव०

**समल्लीण-** त्रि० [समालीन]

आसन्ने, नाया०१ श्रु०१ अ०। आव०म०

**समलेस्स-** त्रि० [समलेश्य]

लेश्यया तुल्ये, भग०१ श०२ उ०।

**समवण्ण-** त्रि० [समवर्ण]

वर्णतस्तुल्ये, भग०१ श०२ उ०।

**समवतार-** पुं० [समवतार]

सम्यगवतारणे, निसि०१ उ०।

**समवया-** त्रि० [समवयस्]

सवयस्ये, सूय०१ श्रु०१४ अ०।

**समवाइकारण-** न० [समवायिकारण]

सम्-एकीभावे अवशब्दः अपृथक्त्वे, ततश्चैकीभावेन अपृथग्ग-  
मनं समवायः-संश्लेषः स विद्यते येषां ते समवायिनस्तन्तवः,  
यस्मात्तेषु पटः समवैति इति। समवायिनश्चते कारणं च  
समवायिकारणम्, विशेष०। आव०चू०।

**समवाय-** पुं० [समवाय]

समवयनं समवायः। वणिजादीनां संघाते, पिंड०। ओह०।  
गोष्ठीनां मेलापके, आव०म०१ अ०। आचा०।  
समवयन्ति स-मवतरन्ति संमिलन्ति नानाविधा आत्मादयो  
भावा अभिधेय-तया यस्मिन्नसौ समवायः चतुर्थेऽङ्गे, सम०१  
सम०। अणुओ०। न०। सम०।

**समविसम-** त्रि० [समविषम]

अनुकूलप्रतिकूले शय्यासनादौ, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ०।

**समवेयण-** त्रि० [समवेदन]

वेदनया तुल्ये, भग०१ श०२ उ०।

**समसण्ण-** त्रि० [समसंज्ञ]

तुल्यबद्धौ, आव०५ अ०।

**समसहाव-** पुं० [समस्वभाव]

समः-तुल्यः स्वभावः स्वरूपं यस्य तत्तथा। तुल्यरूपे, सम०३३

**समसुहदुक्ख-** त्रि० [समसुखदुःख]

विगतरागे, पंच०चू०३ कल्प०।

**समसेढि-** स्त्री० [समश्रेणि]

अविषमश्रेणौ, न०।

**समस्सा-** स्त्री० [समस्या]

समस्यते-संश्रिप्यतेऽनया। संक्षेपेण उक्तस्य श्लोकपदादेः  
परकृतेन स्वकृतेन वा अवशेषेण भागान्तरेण संघटनार्थं कृते  
प्रश्ने, आव०म०१ अ०।

**समा-** स्त्री० [समा]

संवत्सरात्मक कालविशेषे, वव०३ उ०। ठा०।

समा सामुद्रिकशास्त्रोक्तप्रमाणलक्षणाविसंवादिनी। पत्र०

**समाइण्ण-** त्रि० [समाचीर्ण]

भाद्रपदशुद्धचतुर्थीपर्युषणापर्वदाचरिते, जीवा०१ प्रति०।

**समाउ-** त्रि० [समायुष्]

उदयापेक्षया समकालायुष उदये, भग०२९ श०१ उ०।

**समाउत्त-** त्रि० [समायुक्त]

युक्ते, सूय०१ श्रु०१ अ०३ उ०। उव०।

**समाउय-** न० [समायुष्क]

आयुषा तुल्ये, भग०९ श०१ उ०।

**समाउल-** त्रि० [समाकुल]

सम्मिश्रे, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि०। जंबू०। रा०। उक्त०।

**समाओग-** पुं० [समायोग]

सम्यग् आयोगः समायोगः। आव०१ अ०। तं०।

स्थिरीभावे, ठा० ४ ठा० ४ उ०।

**समागम-** पुं० [समागम]

परस्परं संबद्धतया विशिष्टकपरिणामसमुदाये, अणुओ०।

संयोगे, एकीभवने, समुदाये, अणुओ०।

संपर्के, वव०६ उ०।

प्राप्तौ, सूय०१ श्रु०७ अ०।

**समागय-** त्रि० [समागत]

एकीभूते, ठा०।



**समाण-१ त्रि० [समान]**

समे, निसि०४ उ० । उत्त० । रा० ।

सदृशे, उत्त०३२ अ० । नाया० ।

**समाण-२ त्रि० [सत्]**

विद्यमाने, ठा० ३ ठा० १ उ० । नाया० । आचा० । पण्हा० ।

औत्तराहे आज्ञप्तिकेन्द्रे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**समाणइत्ता- अव्य० [समाप्य]**

समाप्ति नीत्वेत्यर्थे, आव०५ अ० ।

**समाणकप्प- पुं० [समाणकल्प]**

तुल्याध्यवसाये, कल्प०१ अधि०६ क्षण० ।

**समाणी- स्त्री० [सती]**

विद्यमानायाम्, पत्र०१५ पद । जंबू० ।

**समादहमाण- त्रि० [समादहत्]**

शीतस्पर्शे सहमाने, आचा०१ श्रु०९ अ०२ उ० ।

**समादान- न० [समादान]**

ग्रहणे, सूय०२ श्रु०२ अ० ।

**समादाय- अव्य० [समादाय]**

गृहीत्वेत्यर्थे, आचा०१ श्रु०३ अ०१ उ० । सूय० ।

**समादेज्ज- त्रि० [समादेय]**

ग्राह्ये, विशेषे ।

**समाय-१ पुं० [समवाय]**

समवायनं समवायः, सम्यक्परिच्छेदे सङ्घेतौ, ग्रन्थे च । समो रागद्वेषरहितत्वादयो गमनं समायः । आव०म० १ अ० ।

समो रागद्वेषवियुक्तो यः सर्वभूतान्यात्मवत्पश्यति, अयो-लाभः प्राप्तिरिति पर्यायाः । समस्यायः समायः ।

समो प्रतिक्षणमपूर्वज्ञानदर्शनचरणपर्यायैर्निरुपम सुखहेतुभिः अधःकृतचिन्तामणिकल्पद्रुमैर्युज्यते स एव समायः, आव०६ अ० । अणुओ० ।

**समाय-२ पुं० [समवाय]**

सामायिके, आव०६ अ० । सूय० । ठा० ।

**समाय-३ पुं० [समवाय]**

चतुर्थेऽङ्गे, सम०१३९ सूय० ।

**समाय- न० [समाक]**

युगपदित्यर्थे, भग०२९ श०१ उ० ।

मृषावादे, सूय०१ श्रु०८ अ० ।

**समायकरण- न० [समायकरण]**

समतासमागमपरिज्ञाननिमित्तेखा-करणे, ज्यो०२ पाहु० ।

**समायरंत- त्रि० [समाचरत्]**

कुर्वति, ठा०६ ठा० ३ उ० ।

**समायरण- न० [समाचरण]**

करणे, सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ० ।

**समायरित्ता- अव्य० [समाचर्य]**

कृत्वेत्यर्थे, विपा० १ श्रु०१ अ० ।

**समायरियव्व- त्रि० [समाचरितव्य]**

सेव्य, आव०६ अ० ।

**समायाण- न० [समादान]**

ग्रहणे, आचा०१ श्रु०५ अ०३ उ० ।

**समायार- पुं० [समाचार]**

समाचरणं समाचारः । अनुष्ठाने, आचा० १ श्रु०१ अ०५ उ० ।

सूय० । ठा० ।

शिष्टजनाचरिते क्रियाकलापे, अणुओ० । ठा० ।

**समायारग- त्रि० [समाचारक]**

समाचरतीति समाचारकः । कर्त्तरि, न० । आव०म० ।

**समायारी- स्त्री० [समाचारी]**

समाचरणे, वव० । जीवा० । उत्त० । हा० ।

**समारंभ- पुं० [समारम्भ]**

उपादानहेतौ, आचा०१ श्रु०१ अ०१ उ०

परितापकरे व्यापारे, वव०१ उ० ।

व्यापादने, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ० ।

परपीडाकरोच्चाटनादिनिबन्धनध्याने, दशा० ।

त्रिविधः समारम्भः मानसिकवाचिककायिकभेदात्, तत्र मानसिकः मन्त्रादिध्यानम्, परमारणहेतोः प्रथमः समारम्भः परपीडाकरोच्चाटनादिनिबन्धनध्यानम् । वाचिको यथा आरम्भः परव्यापदनसमक्षुद्रविद्यादिपरावर्तना-संकल्पसूचको ध्वनिरेव समारम्भः । परपरितापकरमन्त्रादिपरावर्तनम् । कायिको यथा आरम्भोऽभिघाताय यष्टिमुष्ट्यादिकरणं, समारम्भः परितापकरो मुष्ट्याद्यभिघातः । दशा० ६ अ० ।

अङ्गारकर्मणि, सूय० ।

संकल्पो संरंभो, परितापकरो भवे समारंभो । भग० ३ श०३ उ० । ठा० । निसि० । आचा० । उत्त० । सूय० ।

जीवोपमर्दे, सूय०१ श्रु०११ अ० ।

प्रस्थापने, विशेषे ।

सेवने, सूय०१ श्रु०८ अ० । आचा० ।

ताडने, सूय०१ श्रु०५ अ०२ उ० । आचा० । ठा० ।

**समारंभमाण- त्रि० [समारम्भमाण]**

समारम्भं कुर्वति, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

व्यापादयति, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

संघट्टादीनां विषयीकुर्वति, ठा० ५ ठा० २ उ० ।

**समारंभावण- न० [समारम्भण]**

समनुज्ञाने, आचा०१ श्रु०१ अ०२ उ० ।

**समारंभि- त्रि० [समारम्भि]**

कृतसमारम्भे, कर्त्तरि, आचा०१ श्रु०१ अ०५ उ० ।

**समारंभित्ता- अव्य० [समारम्भ्य]**

प्रज्वालयेत्यर्थे, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।

**समारोह- पुं० [समारोह]**

सम्यक् क्लेशेनोर्ध्वगमने, आव०४ अ० ।

**समालवण- न० [समालपन]**

अतिविषमत्वादल्पाक्षरैरसम्यगवबोधे, सूय०१ श्रु०१४ अ० ।

**समावडिय- त्रि० [समापतित]**

समापत्रे, उव० । पण्हा० ।

**समावण्ण- त्रि० [समापत्र]**

निष्ठानयने, आव०३ अ० । भग० । आचा०

समागते, सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ० ।

सम्यगापत्रे, प्राप्ते, आचा०१ श्रु०५ अ०५ उ० ।

**समावयंत- त्रि० [समापतत्] एकीभावेनाभिमुखं पतति, दश०९ अ०३ उ० ।**

**समविभाग- पुं० [समाविभाग]**

कालविभागे, ज्यो०६ पाहु० ।

**समास- पुं० [समास]**

असुक्षेपणे, असनमासः क्षेप इत्यर्थः, संसाराद्वहिर्जीवात् कर्मणो वा क्षेपणे, आव० म०१ अ० ।

संक्षेपे, सामान्ये, ओह० ।

सामायिके, विशेषे ।

संशब्दः प्रशंसायाम्, शोभनमसनं संसाराद्वहिर्जीवस्य जीवात्कर्मणो वा क्षेपणं अथवा-संशब्दः सम्यगर्थः सम्यगासः समासः । रागद्वेषरहितस्य समस्य वा आसः समासः । विशेषे । महार्थत्वेऽप्यल्पाक्षरत्वात्सामायिकं समास उच्यते ।

अथवा, सच्छोभनमसनं समासः कर्मक्षेपणस्य शोभनत्वादिति । अथवा-सम्यगर्थे समर्थे वा संशब्दः । तत्किमित्याह- 'सम्मं समस्त वाऽऽसो'ति सम्यक् समस्य वा रागद्वेषरहितस्यासः कर्मक्षेप इति कृत्वा सामायिकं समासो भवति । विशेषे । आव०चू० । संक्षेपे, न० । आतु० । आचा० । आव०म० । रा० । विशेषे । उत्त० । ठा० । अणुओ० ।

शोभनमसनम्-संक्षेपेण विस्तरवतः संकोचनं समासः । पदानामेकीकरणे, पण्हा०२ अ० ।

**समासओ- अव्य० [समासतस्]**

संक्षेपणेत्यर्थे, निसि०१ उ० ।

**समासज्ज- अव्य० [समासाद्य]**

प्राप्तेत्यर्थे, आचा०१ श्रु०८ अ०८ उ०

**समासण- न० [समासन]**

समानोपवेशने, आव०४ अ० ।

**समासत्थ- पुं० [समासार्थ]**

संक्षिप्तार्थे, आव०म०१ अ० ।

**समासदोस- पुं० [समासदोष]**

समासव्यत्यये, आव०म०१ अ० ।

यत्र समासविधिः प्राप्तं समासं न करोति, व्यत्ययेन वा करोति, तत्र समासदोषः । अणुओ० । विशेषे ।

**समासिय- त्रि० [समाश्रित]**

अभ्युपगवति, आव०म०१ अ० ।

**समासिय- न० [समासिक]**

द्वयोर्बहूनां वा पदानां समसनं-संलीनं समासस्तन्निवृत्तं समासिकम् । समासजे नामनि, अणुओ० ।

**समाहट्टु- अव्य० [समाहत्य]**

सम्यगुपादायेत्यर्थे, सूय०१ श्रु०८ अ०

**समाहड- त्रि० [समाहत]**

शुद्धे, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०३ उ० ।

अङ्गीकृते, सूय०२ श्रु०२ अ० ।

**समाहय- त्रि० [समाहत]**

परस्परणेपोपहते, पण्हा०३ अ०

अभिभूते, पण्हा०४ अ० रा० ।

अमनोज्ञे, पण्हा०३ अ० ।

**समाहरण- न० [समाहरण]**

गोपने, उपसंहरणे, सूय०१ श्रु०८ अ०

विस्त्रोतसिकाराहित्वेनादाने, सूय०१ श्रु०८ अ० ।

**समाहाण- न० [समाधान]**

विषयाद्यौत्सुक्यनिवृत्तिलक्षणे स्वास्थ्ये, अणुओ० । आव० ।

सम्यगाख्याने, सूय०२ श्रु०२ अ० ।

अनादिकालात्संहत्यावस्थाने, धातूनामनेकार्थत्वात् । विशेषे । वित्तसमाधाने, आव०चू० ।

**समाहार- पुं० [समाहार]**

समानाहारे, पत्र०१७ पद०१ उ० ।

**समाहारा-१ स्त्री० [समाहारा]**

द्वादश्यां रात्रितिथौ, जंबू०७ वक्ष० । ज्यो० ।

**समाहारा-२ स्त्री० [समाहारा]**

दक्षिणचरुकवास्तव्यायां दिक्कुमारीमहतरिकायाम्, आव०चू०१ अ० । आव०म० । द्वी० । जंबू० । आव० । ठा० । चंद० ।

**समाहि-** पुं० [समाधि]

समाधानं समाधिः ।  
सम्यग्मोक्षमार्गावस्थाने सम०२० सम० ।  
रागद्वेषपरित्यागरूपे धर्मध्याने, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ० ।  
चेतः स्वास्थ्ये, सम०३२ सम० । आचा० । आव०चू० । आव० ।  
नीरोगतायाम्, वव० १ उ० । उत्त० ।  
इन्द्रियप्रणिधाने, आचा०१ श्रु०६ अ०४ उ० योगे, उत्त०२ उ० ।  
धर्मध्यानादिके, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ० ।  
सम्यगवस्थाने, सूय०१ श्रु०१४ अ० ।  
सम्यग्दर्शनादिकायां मोक्षपद्धतौ, सूय०१ श्रु०१३ अ० ।  
प्रशमवाहितायां ज्ञानादौ च । ठा० ४ ठा० १ उ० ।  
ज्ञानदर्शनचारित्रात्मके चित्तस्वास्थ्ये, आचा०१ श्रु०५ अ०५ उ० ।  
प्रशस्तभावे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**समाहिन्दिय-** पुं० [समाहितेन्द्रिय]

संयतेन्द्रिये, सूय०१ श्रु०२ अ० २ उ० ।

**समाहिकाम-** त्रि० [समाधिकाम]

समाधिमभिलषति, वव०१ उ० ।

**समाहिजोय-** पुं० [समाधियोग]

समाधिः—धर्मध्यानं तदर्थं तत्प्रधानो योगः—मनोवाक्काय व्यापारः ।

मनोवाक्कायव्यापारेण धर्मध्यान, सूय०१ श्रु०४ अ०१

**समाहिट्टाण-** न० [समाधिस्थान]

प्रशान्ताश्रयेषु, सम० १० सम० । दशा० ।

**समाहिट्टाय-** त्रि० [समाधिष्टाय]

प्रभौ, आचा० ।

गृहपतौ, आचा० २ श्रु०१ चू०७ अ०१ उ० ।

**समाहिपडिमा-** स्त्री० [समाधिप्रतिमा]

समाधिः श्रुतचारित्रं च तद्विषया प्रतिमा—प्रतिज्ञाभिग्रहः समाधिप्रतिमा । प्रतिमाभेदे, ठा० ३ ठा० १ उ० ।

समाधिप्रतिमा दशाश्रुतस्कन्धोक्ता द्विभेदाश्रुतसमाधिप्रतिमा, सामायिकादिचारित्रसमाधिप्रतिमा च । ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**समाहिबहुल-** त्रि० [समाधिबहुल]

चित्तस्वास्थ्यप्रचुरे, पण्हा०३ अ० ।

समाधिस्तु प्रशमवाहिता ज्ञानादि वा । तत्प्रचुरे, ठा० ३ ठा० ४

**समाहिमरण-** न० [समाधिमरण]

भक्तपरिज्ञेयमरणपादपोषगमनानामन्यतमस्मिन् मरणभेदे, आचा० १ श्रु०८ अ०१ उ० ।

**समाहिय-** त्रि० [समाधित]

शोभने, बीभत्से, दुष्टे च । सूय० १ श्रु० ३ अ०१ उ० ।

**समाहिय-** त्रि० [समाहित]

सम्यगाहिते व्यवस्थापिते च । सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।

समापिते, विशेषे ।

शुभाध्यवसायसहिते, सूय०१ श्रु०१ अ०४ उ० ।

सम्यगाख्याते, सूय०१ श्रु०६ अ० ।

धर्मादिध्यानयुक्ते, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ० ।

उपयुक्ते, आचा० ०२ श्रु०४ चू० ।

समाधिं प्राप्ते, सूय०१ श्रु०३ अ०४ उ० । आचा० । वव० । आव०

**समाहिय-** त्रि० [समाहित]

गृहीत, आचा०१ श्रु०८ अ०५ उ० ।

सम्यग्व्यवस्थापिते, आचा०१ श्रु०८ अ०६ उ० । आव०म० ।

**समाहियच्च-** त्रि० [समाहितार्च]

सम्यगाहिता व्यवस्थापिता अर्चा-शरीरं येन स समाहितार्चः । नियमितकायव्यापारे, अर्चालेश्या सम्यगाहिता लेश्या येन स समाहितार्चः । अतिविशुद्धाध्यवसाये, यदि वा—अर्चाक्रोधाध्यवसायात्मिका ज्वाला । समाहिता उपशमिता अर्चा येन तथा । अक्रोधने, आचा० १ श्रु०८ अ०६ उ० ।

**समाहियप्प-** त्रि० [समाहितात्मन्]

सम्यक्चरणे, चारित्र्ये व्यवस्थितः समुद्युक्तः साधुर्मुनिश्च चतुर्ष्वपि भावसमाधिभेदेषु दर्शनज्ञानतपश्चारित्ररूपेषु सम्यगाहितो व्यवस्थापितआत्मा येन स समाहितात्मा । ध्यानापादकगुणेषु उपयुक्तात्मनि, दश०१० अ० ।

**समाहियमण-** त्रि० [समाहितमनस्]

समंतुल्यं रागद्वेषाकलितमाहि-तमुपनीतमात्मनि मनो येन स तथा । समाहितात्मनस्के, पण्हा० १ अ० ।

**समाहिरय-** त्रि० [समाधिरत]

ऐकान्तिकात्यन्तिकसुखोत्पादके समाधौ रते, सूय०१ श्रु०१० अ०

**समाहिवीरिय-** न० [समाधिवीर्य]

मनआदीनां समाधाने, निसि०१ उ० ।

**समि-** त्रि० [शमिन्]

शमोऽस्यास्तीति शमी । जितमनोवेगे, आचा० १ श्रु०५ अ०३ उ०

**समिइ-१** स्त्री० [समिति]

सम् पूर्वस्येण गतावित्यस्य क्तिन्प्रत्ययान्तस्य समितिर्भवति । समेकीभावेनेति—समितिः । शोभनैकाग्रपरिणामस्य चेष्टायाम्, आव०४ अ० । उत्त० । सूय० । दशा० ।  
सम्यक् प्रवृत्तौ, पण्हा० १ अ० । संथा० ।  
सम्यग्वर्जने, प्राणातिपातवर्जने, ओह० । सम० । आचा० । स्था ।  
आव० । नाया० ।

सम्यग्गमने, सम्यक् प्रवर्तने, उत्त०२४ अ० । समागमे, सम० ।

**समिद्ध-१ स्त्री० [समिति]**

चतुर्विंशतिसङ्ख्याके उत्तराध्ययने, सम०३६ सम० । उत्त०

**समिद्ध-१ स्त्री० [समिति]**

समितिरिति पञ्चानां चेष्टानां तान्त्रिकी संज्ञा । निसि० । दश० ।

**समिद्धजोग- पुं० [समितियोग]**

सत्प्रवृत्तिसम्बन्धे, पण्हा०४ अ०

**समिद्धमा- स्त्री० [समितिमा]**

समिता कणिका तथा निष्पन्ना समितिमा । मण्डके, पूपलिकायां च । बुह० १ उ०२ ।

**समिक्ख- अव्य० [समीक्ष्य]**

पर्यालोच्येत्यर्थे, आव०४ अ० । सूय०

केवलज्ञानेनार्थान् परिज्ञायेत्यर्थे, सूय०१ श्रु०६ अ० ।

**समिच्च- अव्य० [समेत्य]**

ज्ञात्वेत्यर्थे, सूय०१ श्रु०१२ अ० ।

मिलित्वेत्यर्थे, आव०म०१ अ० । आचा० ।

**समिद्ध- त्रि० [समृद्ध]**

धनधान्यादिविभूतियुक्ते, चंद० १ पाहु० । नाया० । निर० । वृद्धिमुपगते, पन्न०१ पद । उत्त० । वव० । रा० । पण्हा० । आव०म० चन्द्रगुप्तसमये पाटलिपुत्रनगरे स्थितसुस्थितसूरीणां शिष्य, पिंड०

**समिद्धय- पुं० [समृद्धक]**

पक्षस्य षष्ठे दिवसे, ज्यो०४ पाहु० ।

**समिद्धयर- पुं० [समृद्धतर]**

विशिष्टतरसंपदि, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**समिद्धि- स्त्री० [समृद्धि]**

अहिंसायाम्, समृद्धिहेतुत्वेन समृद्धिरेवोच्य-ते । पण्हा०१ अ० । सम्यक् प्रकारेण ऋद्धौ, संपदि, विभूतौ च । आव०४ अ० । ठा०

**समिय- पुं० [शमिक]**

शम एव शमिकः । शमभावे, पण्हा०५ अ० ।

**समिय-१ त्रि० [समित]**

सम्यगिति-प्राप्तो ज्ञानादिकं मोक्षमार्गमसौ समितः । प्राप्त-ज्ञानादिकं, सूय०१ श्रु०१६ अ० ।

समितिभिः सहिते, सदायत्ने, आचा०१ श्रु०९ अ०४उ० । नाया० ।

संयते, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०१ उ० ।

शुभेतेषु रागद्वेषरहिते, आव०१ अ० ।

सम्यक् प्राप्ते, आव०४ अ० ।

युक्त, आचा०१ श्रु०५ अ०४ उ० ।

सदाचारानुष्ठायिनि, सूय०१ श्रु०१४ अ० ।

समायुक्ते, बुह०६ उ० । उत्त० ।

प्रमाणोपेताङ्गे, पिंड० । नाया० । दशा० । भग० ।

सम्यगिति प्रशंसार्थो निपातस्तेन सम्यक्त्वे व्याकर्तुं वर्तन्ते, अविपर्यासास्त इत्यर्थः, । भग०२ श० ५ उ० ।

समितो णाम पंचहिं समितीहिं समिता । निसि०२ उ० ।

उपयुक्ते, जंबू०२ वक्ष० । पण्हा० ।

सम्यग्वा मोक्षमार्गं गते, आचा०१ श्रु०३ अ०२ उ० । आव० ।

सप्रमाणे, भग०३ श०८ उ० ।

निरन्तरे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**समिय-२ त्रि० [समित]**

गवेषणायामुदाहृते उपशमं नीते । आचा०१ श्रु०६ अ०५ उ० ।

**समिय-३ त्रि० [समित]**

स्वनामख्याते आचार्ये, पिंड० । वज्रस्वामिनां मातुलके, आव०म०

**समिय-४ त्रि० [श्रमित]**

अभ्यासवत्सु, भग०२ श०५ उ० ।

**समियदंसण- पुं० [समितदर्शन]**

सम्यग् इतं-गतं दर्शनं यस्य स समितदर्शनः । सम्यगृह्यौ,

आचा०१ श्रु०६ अ०२ उ० ।

**समिया-१ स्त्री० [शमिता]**

उपशमनतायाम्, आचा०१ श्रु०५ अ०५ उ० ।

सम्यक् समञ्जसे, आचा०१ श्रु०६ अ०२ उ० ।

**समिया-२ स्त्री० [शमिता]**

शमिनो भावः शमिता । शमे, आचा०१ श्रु०८ अ०८ उ० ।

**साम्य- न० ।**

सर्वत्र समरूपतायाम्, आचा०१ श्रु०८ अ०८ उ० ।

**समिका- स्त्री० ।**

उत्तमत्वेन स्थिरप्रकृत्या समवती स्वप्नभोवा कोपौत्सुक्यादि-भावान् शमयत्युपादेयवचनतयेति शमिका । शमिता वा । सर्वेषामिन्द्राणामभ्यन्तरपर्वदि, भग०३ श०१० उ० ।

**समियाचार- पुं० [सम्यगाचार]**

सम्यग्-स्वशास्त्रविहितानुष्ठानादविपरीत आचारः-अनुष्ठानं येषां ते सम्यगाचाराः । सदाचारेषु साधुषु, सूय०२ श्रु०५ अ० ।

**समियाचार- पुं० [समिताचार]**

सम्यग् वा इतो व्यवस्थितः आचारो येषां ते समिताचाराः । सदाचारेषु भिक्षुषु, सूय०२ श्रु०५ अ० ।

**समियापरियाय- पुं० [शमितापर्याय]**

शमिता शमोऽस्यास्तीति शमी तद्भावः शमिता, पर्यायः-प्रव्रज्या शमितया पर्यायः प्रव्रज्याऽ-स्येति बहुव्रीहिः । तथाविधे सुश्रमणे, आचा०१ श्रु० ।

**समियापरियाय- पुं० [सम्यक्पर्याय]**

सम्यक् पर्यायोऽस्येति । साधुपर्यायवति साधौ, आचा०१ श्रु० ।

**समिला-** स्त्री० [समिला]

शकटोपकरणभेदे, आव०म०१ अ० ।

**समिसंगलिया-** स्त्री० [शमीसङ्गलिका]

शमी वृक्षविशेषस्तस्य सङ्गलिकाफलिका । शमीवृक्षफलिका-  
याम्, अणुत्त० ।

**समिहा-** स्त्री० [समिधा]

काष्ठखण्डे, पिंड० ।

काष्ठिकायाम्, भग०११ श०९ उ० ।

इन्धनभूते काष्ठे, अंत० १वर्ग०८अ० । आचा० । निर० । आव०म० ।

**समी-** स्त्री० [शमी]

वृक्षविशेषे, अणुत्त० ।

**समीकत-** त्रि० [समीकृत]

सम्यग् व्यवस्थापिते, सुदेयत्वेन व्यवस्थापिते, सूय०१ श्रु०३ अ०  
२ उ० ।

**समीकरण-** न० [समीकरण]

समानतानयेन, विशेष० ।

**समीखल्लय-** न० [शमीखल्लक]

शमीसम्बन्धिनि पत्रपुटे, बुह०१ उ०३ ।

**समीरण-** न० [समीरण]

सम्यगीरणं समीरणम् । प्रेरणे, आचा०१ श्रु०८ अ०८ उ० ।

**समीरिय-** त्रि० [समीरित]

प्रेरिते, आचा०१ श्रु०८ अ०८ उ० ।

**समीहा-** स्त्री० [समीहा]

सम्यगुद्यमे, सूय०१ श्रु०८ अ० ।

**समीहिय-** त्रि० [समीहित]

इष्टे, सूय०१ श्रु०१४ अ० ।

मीमांसिते, वव०३ उ० ।

**समुद्-** पुं० [समुद्]

स्वभावे, वव०७ उ० ।

**समुद्-** [देशी]

अभ्यासकरणे, बुह०१ उ०२ ।

**समुक्करिसण-** न० [समुत्कर्षण]

उत्सेके, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ० । आव०म० ।

उत्कृष्टताविधाने, ठा० ३ ठा० १ उ० ।

मनने, वव० ४ उ० । ठा० ।

**समुक्कित्त-** न० [समुक्कीर्त्तन]

समुच्चारणे, अणुओ० । आव०चू० ।

**समुक्खित्त-** त्रि० [समुक्खित्त]

निसर्गार्थं समुत्क्षिप्ते, व्याप्ते, विपा०१ श्रु०३ अ० ।

**समुक्खिया-** स्त्री० [समुक्खिका]

प्रातर्गृहाङ्गणे जलच्छटकदायिकायाम् नाया०१ श्रु०८ अ० ।

**समुग्ग-** पुं० [समुद्ग]

पात्रविशेषे, जीवा०३ प्रति०२ उ० ।

पक्षिविशेषे, जीवा०३ प्रति०४ अ० ।

**समुग्गनिमग्गगूढजानु-** त्रि० [समुद्गनिमग्गगूढजानु]

समुद्गस्येव समुद्गकपक्षिण इव निमग्गे-अन्तःप्रविष्टे गूढे  
मांसलत्वादनुद्धते जानुनी अष्टीवन्तौ येषां ते तथा । समुद्गक  
पक्षिण इव निगूढजानुनि पुरुषादौ, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**समुग्गपक्खि-** पुं० [समुद्गपक्षिण]

समुद्गकवत्पक्षौ येषां ते समुद्गकपक्षिणः । प्रत्ययः । पक्षिभेदे,  
ठा० ४ ठा० ४ उ० । पन्न० । सूय० । जीवा० ।

**समुग्गय-** न० [समुद्गक]

अभिन्नावस्थे कार्पासीफले, नाया०१ श्रु०१७ अ० ।

सूतिकागृहे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० । जंबू० । रा० ।

तैलाद्याधारविशेषे, तैलसमुद्गकौ सुगन्धितैलाधारौ । रा० ।

**समुग्घाय-** पुं० [समुद्घात]

वेदनादिभिः सह एकीभावेन प्राबल्यतया निर्जरणे, पन्न० ।

**समुच्चयबन्ध-** पुं० [समुच्चयबन्ध]

संगत उच्चयापेक्षया विशिष्टतर उच्चयः समुच्चयः स एव बन्धः  
समुच्चयबन्धः । अल्लिकापनबन्धभेदे, भग०८ श०९ उ० ।

**समुच्छलिय-** त्रि० [समुच्छलित]

ऊर्ध्वमुत्थिते, आव०म०१ अ० । रा०

**समुच्छित्र-** त्रि० [समुच्छित्र]

क्षीणे, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**समुच्छित्रकिरिय-** त्रि० [समुच्छित्रक्रिय]

समुच्छित्राक्षीणा क्रिया कायिक्यादिका शैलेशीकरणे निरुद्ध-  
योगत्वेन यस्मिंस्तत्तथा । तथाविधे शैलेशीकरणे, ठा० ४ ठा०  
१ उ० । गच्छा० । भग० ।

**समुच्छेय-** पुं० [समुच्छेद]

उत्पत्त्यनन्तरं सं-सामस्त्येन उत्-प्राबल्येन प्रकर्षेण छेदो-  
विनाशः समुच्छेदः । सर्वथा विनाशे, आव०म० १ अ० ।

**समुच्छेयवाइ-** पुं० [समुच्छेदवादिन]

समुच्छेदं प्रतिक्षणं निरन्वयनाशं वदति यः स समुच्छेदवादी ।  
अक्रियावादिभेदे, ठा० ।

**समुज्जलण-** न० [समुज्ज्वलन]

कोपाग्निप्रकटने, आव०म०१ अ० ।

**समुज्जाय-** त्रि० [समुद्घात]

सम्यक् च पुनरावृत्त्या ऊर्ध्वं याते, कल्प०१ अधि०६ । जंबू० ।



**समुद्राड- पुं० [समुत्थायिन्]**

सम्यगुत्थातुमभ्युद्यन्तु, शीलमस्येति समुत्थायी। सम्यगुद्यते,  
आचा०१ श्रु०२ अ०१ उ०।

**समुद्राण- न० [समुत्थान]**

सम्यक् संगतं चोत्तिष्ठतेऽस्मादिति समुत्थानम्। निमित्ते, विशे०  
समुद्राणं नामसमं उद्घाणं सममाचार्यादीनामुपस्थानम्।  
आव०चू०१ अ०।  
समुपस्थापने भूयस्तत्रैवाऽऽवासने, न०।

**समुद्राणसुय- न० [समुत्थानश्रुत]**

सम्यगुत्थानं समुत्थानं समुपस्थापनं भूयस्तत्रैवाऽऽवासनं तद्धेतुः  
श्रुतमुपस्थापनश्रुतम्। समुत्थानहेतौ श्रुतभेदे, । न०।  
ततः कार्ये निष्पन्ने समुत्थानश्रुते परावर्त्यमान ते कुलग्राम  
देशादयः स्वस्थीभूय पुनर्निविशन्ते। वव० १० उ०।

**समुद्राय- अव्य० [समुत्थाय]**

सम्यक्-संयमानुष्ठानेनोत्थायेत्यर्थे, आचा०१ श्रु०४ अ०४ उ०।  
अभ्युपगम्येत्यर्थे, आचा०१ श्रु०१ अ०४ उ०।

**समुद्रिय- त्रि० [समुत्थित]**

आश्रिते, जंबू०४ वक्ष०। रा०।  
उत्पन्ने, ठा० ३ ठा० ३ उ०।  
सत्संयमानुष्ठानेनोत्थिताः समुत्थिताः। सत्साधुषु उद्युक्त  
विहारिषु, सूय०१ श्रु०१४ अ०।  
सम्यगारम्भपरित्यागेनोत्थिते, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ०।  
अनुष्ठिते, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ०। पत्र०।  
संयमक्रियानुष्ठानं प्रत्युद्यत, उत्त०१९ अ०। आचा०  
सम्यक्-सततं संगतं वा संयमानुष्ठानेनोत्थितः। नानाविधशा-  
स्त्रकर्मसमारम्भोपरत, आचा०१ श्रु०२ अ०५ उ०।  
सम्यग्योगत्रिकेणालित, आचा०१ श्रु०३ अ०२ उ०।  
प्राप्ते, सूय०१ श्रु० ३ अ० २ उ०।

**समुण्डय- त्रि० [समुन्नयित]**

गर्विते, पिंड०।

**समुत्तजालाकुलाभिराम- पुं० [समुत्तजालाकुलाभिराम]**

मुक्ताफलयुक्तं यज्जालं गवाक्षस्तेन आकुलो व्याप्तोऽभिरामश्च।  
तस्मिन्, कल्प०१ अधि०३।

**समुत्थ- त्रि० [समुत्थ]**

उद्भूते, आव० ४ अ०।

**समुत्थिय- त्रि० [समुत्थित]**

सम्यगुत्थितः समुत्थिः। चारित्रस्थे, पंच० चू०१ कल्प०।

**समुदय- पुं० [समुदय]**

उदयवर्तितत्वे, पण्हा०३ अ०

**समुदय- पुं० [समुदाय]**

परिवारोदितसमुदाये, उव०।  
पौरादिमीलने, नाया०१ श्रु०१ अ०।  
समूहे, सम० ५५ सम०।

**समुदान-१ न० [समुदान]**

स्पृष्टनिधत्तनिकाचितावस्थया स्वीकरणे, आचा०१ श्रु०२ अ०१  
उ०। आव०।

**समुदान-२ न० [समुदान]**

भिक्षाटने, नि०१ श्रु०३ वर्ग०४ अ०।  
उच्चावचकुलेषु भिक्षाचरणे, बुह०१ उ०२।  
भिक्षासमूहे, सूय०२ श्रु०१ अ०। बुह०। अणुत्त०। आचा०।

**समुदानकर्म- न० [समुदानकर्मन्]**

स्पृष्टनिधत्तनिकाचितावस्थया स्वीकरणं समुदानं तदेव कर्म  
समुदानकर्म, आचा०१ श्रु०२ अ०१ उ०।

**समुदानकिरिया- स्त्री० [समुदानक्रिया]**

कर्मोपादाने क्रियाभेदे, ठा०  
समगमुपादानं समुदानं समुदाओ-अट्ट कम्माणि तेसिं जं  
उपादानं कज्जइ, सा समुदानकिरिया, आव०४ अ०  
समुदानक्रिया तु यत्कर्मप्रयोगगृहीतं समुदायावस्थं सत्प्रकृति-  
स्थित्यनुभावप्रदेशरूपतया यया व्यवस्थाप्यते सा, सा च  
मिथ्यादृष्टेराभ्य सूक्ष्मसंपरायं यावद्भवति। सूय०२ श्रु०२ अ०।

**समुदानचरग- पुं० [समुदानचरक]**

समुदानेन शिक्षया तथाविधाभिग्रहग्रहिले साधौ, सूय०२ श्रु०२

**समुदानिय- पुं० [सामुदानिक]**

समुदानं नाम-उच्चावचकुलेषु भिक्षाग्रहणं तत्र लब्धः  
सामुदानिकः।। बुह०१ उ०२। आव०चू०।  
भैक्षणेयाञ्चायां भवः सामुदानिकः। ठा० ४ ठा० २ उ०।  
इतस्ततो भिक्षाग्रहणे, भग०७ श०१ उ०।

**समुदाय- पुं० [समुदाय]**

स्वाभियोग्यादिसमस्तपरिवारे, रा०।  
इतस्ततो भिक्षायाम्, भग०७ श०१ उ०

**समुदायार- पुं० [समुदाचार]**

यत्किञ्चनानुष्ठाने, विपा०१ श्रु०३ अ० नाया०। सूय०। उव०।

**समुदिण- न० [समुदीर्ण]**

सम्यगुदयं प्राप्ते, वव०६ उ०। विशे०।

**समुद्र- पुं० [समुद्र]**

सह मुद्रया मर्यादया वर्तते इति समुद्रः। अणुओ० सम०।  
लवणादिके सागरे, सम०। पत्र०। जीवा०। सूय०  
जलधि, उत्त०७ अ०। जलराशि। अणुओ०।

**समुद्घोस-** पुं० [समुद्रघोष]

स्वनामख्याते सूरि, पिंड० ।

**समुद्जाणी-** स्त्री० [समुद्रयानी]

अब्धिगायां नावि, समुद्जाणीए चेव णावाए । निसि०१ उ० ।

**समुद्दतरण-** न० [समुद्रतरण]

समुद्रलङ्घने गच्छा०२ अधि० ।

**समुद्दगपूरग-** पुं० [समुद्रदकपूरक]

जलधिवेलावर्धके चन्द्रे, कल्प १ अधि०३ क्षण ।

**समुद्दत्त-१** पुं० [समुद्रदत्त]

शौर्यपुरनगरवासिनि शौर्यदत्तपितरि मत्स्यबन्धके, विपा०१ श्रु०८

**समुद्दत्त-२** पुं० [समुद्रदत्त]

चतुर्थवासुदेवस्य पूर्वभवे जीवे, । सम० ।

**समुद्दत्त-३** पुं० [समुद्रदत्त]

‘माया’ शब्द उदाहृते स्वनामख्याते सर्वाङ्गसुन्दरीभ्रातरि, आव० १ अ० । आव०म० । आव०चू० ।

**समुद्दत्त-४** पुं० [समुद्रदत्त]

धातकीखण्डभरते हरिषेणस्य राज्ञो भार्यायाः समुद्रदत्तायाः सुते, उत्त० ९ अ० ।

**समुद्दपाल-** पुं० [समुद्रपाल]

स्वनामख्याते पालितपुत्रे, उत्त०२१अ

**समुद्दरवभूय-** त्रि० [समुद्ररवभूत]

जलधिशब्दप्राप्त, विपा०१ श्रु०३ अ० । भग० ।

**समुद्दलिक्खा-** स्त्री० [समुद्रलिक्षा]

द्वीन्द्रियजीवभेदे, पत्र०१ पद ।

**समुद्दवायग-** पुं० [समुद्रवाचक]

वाचकवर समुद्राख्य आचार्य, आव०चू०१ अ० ।

**समुद्दवायस-** पुं० [समुद्रवायस]

चर्मपक्षिभेदे, जीवा०१ प्रति० ।

**समुद्दविजय-** पुं० [समुद्रविजय]

सौर्यपुरे दशदशाराणां मध्ये ज्येष्ठे दशारे नेमिनाथस्वामिनः पितरि, उत्त०२२ अ० । आव०चू० । सम० । आव० । आव०म० । अंत० । आव०क० । दश० ।

**समुद्दवीड-** स्त्री० [समुद्रवीचि]

सागरतरङ्गे, तं० । ।

**समुद्दसूरि-** पुं० [समुद्रसूरि]

कस्यचित्प्रतिष्ठाकल्पविशेषस्य कर्ता आचार्य, जीवा०१ अधि०

**समुद्दिस्स-** अव्य० [समुद्दिश्य]

सम्यगुद्दिश्य प्रतिज्ञायेत्यर्थे, आचा० २ श्रु०१ चू०२ अ०१ उ० । आश्रित्येत्यर्थे, आचा०१ श्रु०८ अ०२ उ० ।

**समुद्देश-** पुं० [समुद्देश]

व्याख्यायाम्, वव० १ उ० । आव०म० ।

**समुद्ध्य-** त्रि० [समुद्ध्यत]

एकीभावेनाविप्रतिपत्त्या उद्धृता समुद्धृताः । उत्क्षिप्तेषु, पणहा०४

**समुपविट्ठ-** त्रि० [समुपविष्ट]

सम्यक् परस्परानाबाधया उपविष्टाः । सम्यक्स्थितेषु, जीवा०३ प्रति० ४ अधि० ।

**समुपेहिय-** अव्य० [समुपेक्ष्य]

सम्यग् दृष्टेत्यर्थे, दश०७ अ० ।

**समुप्पण्ण-** त्रि० [समुत्पन्न]

जाते, सूय०१ श्रु०१ अ०३ उ० । निर० ।

**समुप्पत्तुकाम-** त्रि० [समुत्पत्तुकाम]

उत्पत्तुमिच्छौ, ठा० ४ ठा० २ उ० ।

भवितुकामे, ठा० ५ ठा० १ उ० ।

**समुप्पाय-** पुं० [समुत्पाद]

प्रादुर्भावे, सूय०१ श्रु०१ अ०३ उ० ।

**समुप्पेक्खमाण-** त्रि० [समुत्प्रेक्षमाण]

निरूपयति, नाया०१ श्रु०१ अ०

**समुवगय-** त्रि० [समुपगत]

समीपमुपगते, वव०४ उ० ।

**समुब्भव-** पुं० [समुद्भव]

उत्पत्तौ, विशे० । दशा० ।

**समुब्भूय-** त्रि० [समुद्भूत]

अतिप्रबलतयोत्पन्ने, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**समुयाण-** न० [समुदान]

भैक्षणे, याज्ञायाम्, ठा० ४ ठा० २ उ० ।

**समुयाय-** पुं० [समुदाय]

वृन्दे, अणुओ० ।

**समुल्लाव-** पुं० [समुल्लाप]

जल्पे, नाया०१ श्रु०३ अ० ।

प्रमाणिते, विपा०१ श्रु०७ अ० । आव०म० ।

**समुवट्ठिय-** त्रि० [समुपस्थित]

सम्यगुपस्थिते, उत्त०२४ अ० ।

**समुवागय-** त्रि० [समुपागत]

समायाते, भग०११ श०१२ उ० ।

**समुवेहमाण-** त्रि० [समुपेक्षमाण]

पश्यति, आचा०१ श्रु०५ अ० ।

**समुसरण-** न० [समवसरण]

तीर्थकृतां सदेवमनुजासुरायां पर्षदि, पिंड०

**समुस्सय- पुं० [समुच्छय]**

काये, आव०५ अ० । सूय० ।  
कर्मोपचये आचा०१ श्रु०४ अ०४ उ० ।

**समुस्सिय- त्रि० [समुत्सृत]**

सम्यगूर्ध्वीकृते, रा० ।

**समुह- न० [सन्मुख]**

अभिमुखे, रा० ।

**समुहा- स्त्री० [धमुखिका]**

शुनो मुखं श्वमुखं, तस्येवाचरणं श्वमुखिका । नाया०१ श्रु०७

**समुहागय- त्रि० [समुखागत]**

उद्धटवेषवति, 'समुहागयं ओसरिअं' उक्त० ।

**समूसिय- त्रि० [समुच्छित]**

सम्यगूर्ध्वं श्रितः समुच्छितः । ऊर्ध्वं व्यवस्थिते, सूय०२ श्रु०३

**समूसियरोमकूप- त्रि० [समुच्छितरोमकूप]**

समुच्छितानि रोमाणि कूपेषु यस्येति समुच्छितरोमकूपः ।  
रोमाञ्चिते, नाया०१ श्रु०१ अ० । कल्प० ।

**समूह- पुं० [समूह]**

द्वित्रादिपरमाणूनां संयोगे, आव०म०१ अ० ।  
समुदाये, विशेष० ।  
स्कन्धे, अणुओ० ।  
सङ्घे, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

**समेच्च- अव्य० [समेत्य]**

ज्ञात्वैत्यर्थे, आचा०१ श्रु०९ अ०१ उ० ।

**समेमाण- त्रि० [समयत्]**

समागच्छति, आचा०१ श्रु०८ अ० ।

**समोडहमाण- त्रि० [समुपदहत]**

भस्मसात्कुर्वति, भग०८ श० ।

**समोणय- त्रि० [समवनत]**

ईषदवनते, आव०म०१ अ० । रा० ।

**समोयरंत- त्रि० [समवतरत्]**

सर्वतो विस्तरति, तं० ।

**समोयार- पुं० [समवतार]**

सम्यग् अविरोधेन वर्तनं समवतारः । अविरोधवृत्तितायाम्,  
अणुओ० ।

**समोववण्णग- पुं० [समोपपन्नक]**

विवक्षितायुष्कक्षये, समक्रमेव भवान्तरे उपपन्नाः समोपप-  
न्नकाः । भग० २९ श०१ उ० ।

**समोसढ- त्रि० [समवसृत]**

स्थिते, धर्मदेशनार्थं प्रवृत्ते, दश०५अ० २उ० । सूर० । आव०म० ।

**समोसरण- न० [समवसरण]**

सम्यगेकत्र गमनं समवसर-णम् । निचये, सञ्चये, ओह० ।  
समवसरन्त्यवतरन्त्येष्विति समवसरणानि । विविधमतमीलकेषु  
ठा० ४ ठा० ४ उ० । सूय०  
समवसरन्ति नाना परिणामा जीवाः कथञ्चित्तुच्छतया येषु तानि  
समवसरणानि । समवसृतयो वाऽन्योऽन्यभिन्नेषु क्रिया-  
वादादिमतेषु कथंचित्तुल्यत्वेन क्वचित्केषांचिद्वादिनामवताराः  
समवसरणानि । भग०३० श०१ उ० ।

**समोसवेइत्ता- अव्य० [समवसृत्य]**

खण्डशः कृत्वैत्यर्थे, सूय०१ श्रु० ५ अ०२ उ० ।

**समोहय- त्रि० [समवहत]**

कृतसमुद्धाते, भग०१७ श०६ उ० । ठा०

**सम्मअणणुपालणा- स्त्री० [सम्यगननुपालना]**

पोषधव्रतस्य सम्यग-नासेवने, आव०६ अ० ।

**सम्मइ- पुं० [सम्मति]**

मिथ्यात्वकलङ्करहिताशोभना मत्याम्, । आचा० । पण्हा० ।  
विशिष्टाभिनिबोधिकज्ञाने, श्रुतज्ञाने, अवधिज्ञाने । सूय०१ श्रु०

**सम्मग- पुं० [सन्मार्ग]**

सम्यगविपरीते मार्गे, सूय०१ श्रु०११ अ० ।

**सम्मचरणाट्टिय- त्रि० [सम्यक्चरणास्थित]**

सम्यक्चरणे चारित्र्ये व्यवस्थितः समुद्युक्तः । संयमसमुत्थिते,  
सूय०१ श्रु०१० अ० ।

**सम्मत्त- न० [सम्यत्त्व]**

सम्यगित्यस्य भावः सम्यत्त्वम् । सम्यक् शब्दः  
प्रशंसार्थोऽविरुद्धार्थो वा । सम्यग्-जीवः तद्भावः सम्यत्त्वम् ।  
विशे० । आचा० ।

सम्यग्भावे, भग०९ श०३१ उ० ।

तत्त्वार्थश्रद्धाने, आव०६ अ० ।

सम्यग्दर्शने, पण्हा०५ अ० । ठा० ।

मिथ्यात्वमोहनीयक्षयोपशमादिसमुत्थे जीवपरिणामे, पण्हा०४  
अ० । ठा० । उक्त० । आव० ।

ज्ञानदर्शनचारित्राणां यत्परस्यां प्रयोजनं तदात्मकत्वात्  
सामयिके, आव०म०१ अ० । आचा० ।

**सम्मत्तकिरिया- स्त्री० [सम्यक्त्वक्रिया]**

सम्यत्त्वं तत्त्वश्रद्धानं तदेव जीवव्यापारत्वाक्रिया सम्यक्त्वस्य  
क्रिया सम्यक्त्वक्रिया । सम्यग्दर्शने वा सति क्रिया  
सम्यक्त्वक्रिया । ठा० २ ठा० १ उ० ।  
क्रियाभेदे, यया सम्यग्दर्शनयोग्याः कर्मप्रकृतीः सप्तसप्तति  
सङ्ख्याः बध्नाति सा सम्यक्त्वक्रिया अभिधीयते । सूय०२ श्रु०२

**सम्पत्तदंशि-** त्रि० [सम्यक्त्वदर्शिन]

सम्यक् तत्त्वं सम्यक्त्वं तद्दर्शी । परमार्थदर्शिनि, आचा०१ श्रु०२ अ० ६ उ० ।

**सम्पत्तपञ्चव-** पुं० [सम्यक्त्वपर्यव]

सम्यक्त्वपरिणामविशेषे, नाया०१ श्रु०१३ अ० ।

**सम्पत्तपरक्रम-** न० [सम्यक्त्वपराक्रम]

सम्यक्त्वे सति वर्द्धमानगुणैः कर्मशत्रुजयलक्षणः पराक्रमो बलं यस्मिंस्तत् सम्यक्त्वपराक्रम उत्तराध्ययनानामध्ययन, उत्त०१८

**सम्पत्तवाय-** पुं० [सम्यक्त्ववाद]

परस्परसव्यपेक्षकालादिरूपे सम्यग्वादे, सूय०१ श्रु०१२ अ० ।

**सम्पत्तविसुद्ध्या-** स्त्री० [सम्यक्त्वविसुद्धता]

स्थिरत्वे, सम्यक्त्ववि-सुद्धौ, सम० ।

**सम्पत्तसामादय-** न० [सम्यक्त्वसामायिक]

सम्यक्त्वमुक्तरूप मेव सामायिकं सम्यक्त्वसामायिकम् । सामा-यिकभेदे, विशेषे ।

**सम्पत्तसुद्धि-** स्त्री० [सम्यक्त्वशुद्धि]

सम्यक्त्वशौचे, आव० ।

**सम्पद्-** पुं० [सम्पद]

संघर्षे, ठा० ३ ठा० ४ उ० । भग० ।

**सम्पदंसण-** न० [सम्यग्दर्शन]

दर्शनमोहनीयभेदानां क्षयजसम्यक्त्वलक्षणे, ठा० ७ठा० ३उ० मिथ्यात्वमोहनीयकर्माणुवेदनोपशमक्षयक्षयोपशमसमुत्थे आत्मपरिणामे, भग०८ श०२ उ० । आव०म० । तत्त्वार्थश्रद्धान, ठा० ।

**सम्पद्वा-** स्त्री० [सम्पद्वा]

दुष्प्रत्युपेक्षणाभेदे, यत्र च वस्त्रस्य मध्यप्रदेशे सवलिता कोणा भवन्ति यत्र वा प्रत्युपेक्षणीयोपधिवेष्टिकायामेवोपविश्य प्रत्युपेक्ष्यते सा सम्पदति । ठा० ६ ठा० ३ उ० । उत्त० ।

**सम्पद्विद्वि-** पुं० [सम्यग्दृष्टि]

सम्यगिति प्रशंसार्थः दर्शनम् दृष्टिः पदार्थपरिच्छित्तिः । सूय०१ श्रु०१२ अ० । ठा० । पत्र० । आव० ।

सम्यग्-अविपरीता दृष्टिर्जिनप्रणीतवस्तुप्रतिपत्तिर्यस्य स सम्यग् दृष्टि । न० । सम्यग्दर्शनिन्, पण्हा०५ अ० ।

**सम्पद्विद्विगुणद्वान-** न० [सम्यग्दृष्टिगुणस्थान]

द्वितीयगुणस्थाने, अविरतसम्यग् दृष्टिगुणस्थानत्वेनेदं व्याख्या-तम् । आचा०१ श्रु०३ अ०४ उ० ।

**सम्पद्विद्वि-** पुं० [सम्यग्दृष्टि]

सम्यग् अविपरीता दृष्टिः-दर्शनं रुचिस्तत्त्वानि प्रति येषां ते । मिथ्यात्वमोहनीयक्षायोपशमजसम्यग्दृष्टौ, ठा० १ ठा० ।

**सम्पणयिमग-** पुं० [सम्यक्प्रणीतमार्ग]

सम्यग्दृष्टिभिर्गणधरादिभिः सम्यग्वा यथावस्थितवस्तुतया च निरूपणया प्रणीते सम्यग्ज्ञानं दर्शनं चारित्रं चेति त्रिविधे भावमार्गे, सूय०१ श्रु०११ अ० ।

**सम्पमिच्छद्विद्वि-** पुं० [सम्यग्मिथ्यादिष्टि]

सम्यक् च मिथ्या च दृष्टि र्येषां ते सम्यग्मिथ्यादृष्टयः । येषामेकस्मिन्नपि वस्तुनि तत्पर्याये वा मतिर्दौर्बल्यादिना एका-न्तेन सम्यक्परिज्ञानमिथ्याज्ञानाभावतो न सम्यक् श्रद्धानं तथै-कान्ततो विप्रतिपत्तिस्तेषु, न० । सम० । ठा० । आव० ।

**सम्पय-** त्रि० [सम्पत]

अप्रतिषिद्धे, आचा०१ श्रु०८ अ०१ उ० ।

तेषु तेषु कार्येषु प्रयोजनेषु इष्टे, वव०३ उ० ।

**सम्पयसच्चा-** स्त्री० [सम्पतसत्या]

सकललोकसम्पततया प्रसिद्धे भाषाभेदे, । पत्र० ।

**सम्पसुय-** न० [सम्पक्श्रुत]

सम्यग्दृष्टिपरिगृहीते यथावस्थितार्थे वा श्रुतज्ञाने, विशेषे ।

**सम्पान-** पुं० [सम्पान]

स्तुत्यादिभिर्गुणोन्नतिकरणे, आव०५ अ० ।

तथाविधे उचितप्रतिपत्तिकरणे, भग० १४ श०३ उ० । नाया० । ठा० । दशा० ।

वस्त्रपात्रादिपूजने, ठा० ७ ठा० ३ उ० । उव० ।

**सम्पानइत्ता-** अव्य० [सम्पानयित्वा]

प्रतिविशेषेण सम्मानं कृत्वेत्यर्थे, ठा० ३ ठा० १ उ० ।

**सम्पानणिज्ज-** त्रि० [सम्पाननीय]

जिनोचितप्रतिपत्तिविशेषे, भग० १० श० ५ उ० । चंद० ।

बहुमानविशेषे, उव० ।

वस्त्रादिभिर्वा पूजनीये, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**सम्पानवत्तिय-** पुं० [सम्पानप्रत्यय]

स्तुत्यादिगुणोन्नतिकरणं सम्मानः तथा मनसः प्रीतिविशेष सम्माननिमित्ते, । रा० ।

**सम्पानिय-** त्रि० [सम्पानित]

तथाविधया वचनादिप्रतिपत्त्या पूजिते उव० ।

**सम्पानियदोहला-** स्त्री० [सम्पानितदोहदा]

प्राप्तस्याभिलषितार्थस्य भोगात् भ० ११ श० ११ उ० ।

वाञ्छितार्थ सम्माननात् । विपा० १ श्रु० २ अ० ।

**सम्पामिच्छत्त-** न० [सम्यग्मिथ्यात्व]

यदुदयात्युनर्जिनप्रणीत तत्त्वं न सम्यक् श्रद्धते नापि निन्दति मतिर्दौर्बल्यादिना सम्यक् असम्यक् वा एकान्तेन निश्चया-करणतः सम्यक्श्रद्धानैकान्तविप्रतिपत्त्ययोगात् तत् । पत्र० ।

**सम्मामिच्छादंसण-** न० [सम्यग्मिथ्यादर्शन]

सम्यग्मिथ्यात्वरूपे दर्शनभेदे, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**सम्मावाय-** पुं० [सम्यग्वाद]

सम्यग्-रागद्वेषपरिहारेण वदनं वादः सम्यग्वादः । रागादि-परित्यागेन यथार्थवदने, आव०म०१ अ० ।

सामायिके, तस्य तथात्वात् । आव०चू०१ अ० ।

सम्यक् यथास्थितवदनात् । आव० ।

**सम्मिस्स-** त्रि० [सम्मिश्र]

विस्फुटितत्वचि, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०८ उ० ।

**सम्मूढमण-** त्रि० [संमूढमनस्]

तत्त्वान्तरे भ्रान्तचित्ते, आव०४ अ०

**सम्मिस्सभाव-** पुं० [संमिश्रभाव]

अस्तित्वनास्तित्वापगमे, सूय०१ श्रु०१२ अ० ।

**समुच्छ-** पुं० [सम्मूर्च्छ]

सम्मूर्च्छनं सम्मूर्च्छः । गर्भोपपातव्यतिरेकेणैवमेव प्राणिनामुत्पादे, जीवा०१ प्रति० ।

**सम्मूच्छय-** पुं० [सम्मूर्च्छज]

सम्मूर्च्छनाज्जातः सम्मूर्च्छजाः । शलभपिपीलिकामक्षिकाशालिकादिषु, आचा०१ श्रु०१ अ०६ उ० ।

त्रसेषु, दश०४ अ० । ठा० ।

पद्मिनीश्टङ्गाटकपाढाशैवलादिषु वनस्पतिषु, आचा०१ श्रु०१ अ० ५ उ० ।

**सम्मूर्च्छिम-** पुं० [सम्मूर्च्छिम]

‘मूर्च्छा’ मोहसमुच्छ्राययोः सम्मूर्च्छनं सम्मूर्च्छा तेन निर्वृत्ताः सम्मूर्च्छिमाः । न० ।

सम्मूर्च्छन्ति इति सम्मूर्च्छिमाः । प्रसिद्धबीजाभावेन पृथिवीवर्षा दि-समुद्भवास्तथाविधतृणादयः, नचैते न संभवन्ति दग्धभूमावपि संभवात् । दश०४ अ० ।

दग्धभूमौ बीजासत्त्वेऽपि ये तृणादय उत्पद्यन्ते ते सम्मूर्च्छिमाः । ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

सम्मूर्च्छन्ति तथाविधकर्मोदयाद् गर्भमन्तरेणैवोत्पद्यन्ते इति सम्मूर्च्छिमाः । अणुओ० ।

अगर्भव्युत्क्रान्तिजेषु, पत्र०२१ पद ।

सम्मूर्च्छिमानां रूपादिभेदो नास्ति । ठा० ३ ठा० १ उ० । भग० ।

**सम्मेदसेल-** पुं० [सम्मेदशैल]

विन्ध्यगिरिशिखरभेदे, यत्र ऋषभवासुपूजनेमिवीरवर्ज्यास्तीर्थकराः विंशतिः सिद्धाः, आव०म०१ अ० । नाया० ।

**सम्मेल-** न० [सम्मेल]

परिजनसम्मानभक्ते, गोष्ठीभक्ते, आचा०२श्रु०१ चू०१ अ०४ उ० ।

**सम्मोह-** पुं० [सम्मोह]

मूढतायाम्, ठा० ४ ठा० ।

किंकर्तव्यतामूढतायाम्, अणुओ० । विशेष० । आव० ।

संमुह्यतीति सम्मोहः ।

मूढात्मनि देवविशेष, ठा० १ ठा० ।

**सय-** न० [शत]

दशावृत्तदशसंख्यायाम्, तत्संख्येये च । अणुओ० ।

**सय-** त्रि० [स्वक]

आत्मीये, विशेष० । सूय० । नाया० । आचा० । भग०

स्वकीये, विशेष० ।

देहगृहादौ, सूय०१ श्रु०८ अ० ।

**सयओवभोग-** पुं० [सततोपभोग]

नैरन्तर्येणोपभोगे, निसि०१ उ०

**सयं-** अव्य० [स्वयम्]

आत्मनेत्यर्थे, सूय०१ श्रु०१ अ० । आव० । आचा० । उत्त० । ठा० ।

परोपदेशमन्तरेणेत्यर्थे, सूय० १श्रु० १३अ० । सम० । निसि० । भग०

। पण्हा० । विपा० । आचा० ।

**सयंकड-** त्रि० [स्वयंकृत]

आत्मना कृते, भग० ।

**सयंकरण-** न० [स्वयङ्करण]

साक्षात्परेण कारणे, सयंकरणं नामकारवणमित्यर्थः । निसि०१

आत्मनः कस्यचिद्विवक्षितस्य कार्यस्य निर्वर्तने, उत्त०२६ । निसि०

**सयंगहियलिङ्ग-** स्त्री० [स्वयंगृहीतलिङ्ग]

केनाप्याचार्येण अदत्तलिङ्ग आत्मनैवात्तसाधुवेष, आव०४ अ० ।

**सयंग्राह-** पुं० [स्वयंग्राह]

स्वयमात्मना गृह्णातीति स्वयंग्राहः, वव० १ उ० । पण्हा०

**सयंजय-** पुं० [शतंजय]

लोकोत्तररीत्या त्रयोदशे दिवसे, जंबू०७ वक्ष० । कल्प० ।

**सयंजल-१** न० [शतंजल]

ऐरवते वर्तमाने चतुर्दशे जिन, जंबू० ।

**सयंजल-१** न० [शतंजल]

शकलोकपालस्य वरुणस्य विमाने, भग०३ श०७ उ० ।

**सयंत-** त्रि० [श्रयमाण]

प्रतिपदं लभमाने, भग०१३ श०६ उ० ।

**सयंप्रभ-१** त्रि० [स्वयंप्रभ]

स्वयमादित्यादिनिरपेक्षरत्नबहुलतया प्रभाप्रकाशो यस्य स

स्वयंप्रभः । हैमपर्वते, चंद०५ पाहु० । सूर० । जंबू० । सम० ।

**सयंप्रभ-२** त्रि० [स्वयंप्रभ]

षट्षष्टितमे महाग्रहे, ठा० २ ठा० । कल्प० । सूर० । चंद० ।



**सयंपभ-३ त्रि० [स्वयंप्रभ]**

भारतवर्षेऽतीतउत्सर्पिण्यां जाते चतुर्थकुलकर, ठा०७ठा० सम०  
भारते वर्षे भविष्यति चतुर्थे कुलकरे, ठा० ७ ठा० ३ । सम० ।

**सयंपभा- त्रि० [स्वयंप्रभा]**

ऋषभपूर्वभवजीवस्य ललिताङ्गदेवस्य भार्यायाम् । आव०म०१  
अ० । आव० ।

**सयंबुद्ध- पुं० [स्वयंबुद्ध]**

अपरोपदेशेन सम्यग्वरबोधिप्राप्तो मिथ्यात्वनिद्रापगमेन सम्बो  
धनं प्राप्ते, रा० । कल्प० । आव०म० । उव० ।

**सयंबुद्धसिद्ध- पुं० [स्वयंबुद्धसिद्ध]**

स्वयंबुद्धेषु सत्सु सिद्धेषु, । पत्र० । न० ।

**स्वयंभु- पुं० [स्वयंभू]**

स्वयं भवतीति स्वयंभूः । विष्णौ, ब्रह्मणि, सूय०१ श्रु०१ अ०३  
देवेषु, सूय०१ श्रु०६ अ० । न० ।

स्वयं भवनात् स्वयंभूः । जीवे, भग० २० श० २ उ० ।

तृतीयदेवलोकस्थे स्वनामख्याते विमाने, । सम०६ सम० ।

**सयंभुकड- त्रि० [स्वयम्भुकृत]**

स्वयं भवतीति स्वयम्भुर्विष्णुरन्यो वा तत्कृतः । विष्णुकृते,  
'सयंभुणा कडे लोए' सूय०१ श्रु०१ अ० ३ उ० ।

**सयंभुभद्र- पुं० [स्वयम्भूभद्र]**

स्वयम्भुरमणद्वीपदेवे, सूर०१९ पाहु० । चंद० ।

**सयंभुमहाभद्र- पुं० [स्वयम्भूमहाभद्र]**

स्वयम्भूरमणद्वीपदेवे, चंद० २० पाहु० । सूर० ।

**सयंभुमहावर- पुं० [स्वयम्भूमहावर]**

स्वयम्भूरमणसमुद्राधिपतौ देवे, सूर०१९ पाहु० । चंद० ।

**सयंभूरमण- पुं० [स्वयम्भूरमण]**

स्वयं भवन्तीति स्वयंभुवो देवास्ते यत्रागत्य रमन्तीति स  
स्वयम्भूरमणः । उत्त०११ अ० । ठा० । अणुओ० । उत्त० ।  
संथा० । आव० ।

अर्द्धरज्जुप्रमाणे प्रान्तसमुद्रे, । सूर० । जीवा० ।

**सयंभूरमणोद- पुं० [स्वयम्भूरमणोद]**

स्वयम्भूरमणस्वामिनः समुद्रे, जीवा० ।

**सयंभूवर- पुं० [स्वयम्भूवर]**

स्वयम्भूरमणोदसमुद्रस्य स्वनामके देवे, सूर०१९ पाहु० । चंद० ।

**सयंवर- पुं० [स्वयंवर]**

स्वयमात्मना वरो वरणम् । कन्यया आत्मनैव स्वपतेर्वरणे, ।  
आव०म० ।

**सयंवाइ- पुं० [स्वयंवादिन्]**

तृतीयदेवलोकविमानभेदे, सम०६ सम०

**सयंस- पुं० [शतांश]**

शतभागस्य वस्तुनः शततमंशे, सूय०१ श्रु० ७ अ० ।

**सयंसंबुद्ध- पुं० [स्वयंसंबुद्ध]**

स्वयमपरोपदेशेन सम्यग्वरबोधिप्राप्त्या बुद्धा मिथ्यात्वनिद्राप-  
गमसम्बोधेन स्वयंसम्बुद्धाः । जीवा०१ प्रति

तथाभव्यत्वादिसामग्रीपरिपाकतः प्रथमसम्बोधेऽपि स्वयोग्यता  
प्राधान्यात् त्रैलोक्याधिपत्यकारणाचिन्त्यप्रभाव तीर्थकरनाम  
कर्मयोगेन चापरोपदेशेन स्वयम्मात्मनैव सम्यग्वरबोधिप्राप्त्या  
बुद्धा मिथ्यात्वनिद्रापगमसम्बोधेन स्वयंसम्बुद्धाः । उव० । कल्प०

**सयकम्म- न० [स्वककर्मन्]**

स्वानुष्ठिते पापे कर्मणि 'जत्थ पाणा विसन्नासि, किच्चंती  
सयकम्मणा' सूय०१ श्रु०२ अ०१ उ० ।

**सयकम्मकप्पिय- त्रि० [स्वककर्मकल्पित]**

स्वकीयेन ज्ञानावरणीयादिना कर्मणा व्यवस्थापिते, सूय०१  
श्रु०२ अ०३ उ० ।

**सयकित्ति-पुं० [शतकीर्ति]**

भारते वर्षे उत्सर्पिण्यां भविष्यति दशमे शतकजीवे तीर्थकरे,  
। सम० ।

**सयक्रतु-पुं० [शतक्रतु]**

शतक्रतूनांप्रतिमानाम् अभिग्रहविशेषाणां श्रमणोपासकपञ्चम-  
प्रतिमारूपाणां वा यस्याऽसौ शतक्रतुः । भग० ३ श०२ उ० ।  
उवा० । पत्र० ।

शक्रेन्द्रे, शतं क्रतवः श्राद्धपञ्चमप्रतिमारूपा यस्य स शतक्रतुः ।  
इदं हि कार्तिकश्रेष्ठिभवापेक्षया,  
तथाहि-पृथिवीभूषणनगरे प्रजापालो नाम राजा कार्तिकनामा  
श्रेष्ठी । तेन श्राद्धप्रतिमानां शतं कृतं ततः शतक्रतुरिति ख्यातिः ।  
कल्प०१ अधि० । जीवा० ।

**सयग- पुं० [शतक]**

पुष्कलीत्यपरनामके श्रावके, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**सयगसो- अव्य० [शताग्रशस्]**

शतसंख्यभेदैरित्यर्थे, बुह० १ उ० ३ । सूय० ।

शतपरिणामेनेत्यर्थे, भग० २५ श०६ उ० ।

**सयगु- पुं० [शतयु]**

सुरभिनामके वनस्पतिभेदे, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०८ उ० ।

**सयग्वी- स्त्री० [शतग्वी]**

महायष्टौ, महाशिलासु या उपरिष्ठात् पातिताः सत्यः शतानि  
पुरुषाणां घ्नन्तीति । नाया०१ श्रु०१ अ० । उव० । पत्र० । पण्हा० ।  
रा० । जीवा० ।

शतघ्न्यो हि यत्राविशेष-रूपाः । उत्त०९ अ० ।

**सयण-१ न० [शयन]**

शय्यते एष्विति शयनानि । वसतिषु, आचा०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।  
शय्यते स्थीयते उत्कुटुकासनादिभिरस्मिन् । आश्रयस्थाने,  
आचा० १ श्रु०१ अ०१ उ० ।  
खट्वायाम्, आचा० १ श्रु०१ अ०५ उ० ।  
पर्यङ्कादौ, ठा० ८ ठा० ३ अ० ।  
शय्यायाम्, उत्त०१ अ० । पण्हा० ।  
वातूलीपर्यङ्के, प्रवरपटोपधानयुक्ते, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ० ।  
तूलादिशयनीये, नाया०१ श्रु०१ अ० ।  
संस्तारके, सूय०२ श्रु०१ अ० । ठा० । आव० ।  
स्वापे, पण्हा०४ अ० । उत्त० । तं० ।

**सयण-२ पुं० [स्वजन]**

मातापितृभ्रात्रादिके, आचा०१ श्रु०१ अ०७ उ० । आव०म० ।  
पुत्रपितृव्यादौ, नाया०१ श्रु०१ अ० । उव० । सम० । आचा० ।  
पूर्वापरसंस्तुते मातापितृव्यश्वशुरादिके, आचा० १ श्रु० २ अ०१  
पितृमातृपत्नीपक्षोद्भावाः पुंसां स्वजनाः । सूय० । पण्हा० ।

**सयणकाल- पुं० [शयनकाल]**

स्वापावसरे, सूय०२ श्रु०१ अ० ।

**सयणकिङ्ग- पुं० [स्वजनक्रीडक]**

स्वजनादिना क्रीडाकारके, सूय० १ श्रु०४ अ०१ उ० ।

**सयणविरहिय- त्रि० [स्वजनविरहित]**

भ्रात्रादिबन्धुविवर्जिते, पंच०चू० ४ ।

**सयणविहि- पुं० [शयनविधि]**

शयनं स्वापः तद्विषयको विधिः । स्वप्नविधौ, जंबू० ।

**सयणासन- न० [शयनासन]**

पल्यङ्गादीनि शयनानि पीठिकादीनि आसनानि । पल्यङ्क  
पीठिकादिषु, बुह० १ उ०२ । पण्हा० । जीत० ।

**सयणिज्ज- त्रि० [शयनीय]**

पर्यङ्के, कल्प०१ अधि०२ । सूर० । जंबू० । विपा० ।

**सयदुबार- न० [शतद्वार]**

जम्बूद्वीपे भारतवर्षे वैताढ्यगिरिपादमूले पुण्ड्रजनपदप्रधान  
नगरे, यत्र महापद्मस्तीर्थकृदुत्पस्यते । ठा० ९ ठा० ३ उ० ।  
अंत० । भग० ।

**सयधणु- पुं० [शतधनुष]**

जम्बूद्वीपे ऐरवते वर्षे आगमिष्यन्त्यामुत्सर्पिण्यां भविष्यति  
अष्टमे कुलकरे, सम० ।  
जम्बूद्वीपे भारते वर्षे उत्सर्पिण्यां भविष्यति नवमे कुलकरे, ठा०  
१० ठा० ३ उ० ।  
बलदेवस्य रेवत्यां जाते पुत्रे, नि०१ श्रु०५ वर्ग० १० अ० ।

**सयपइया- स्त्री० [शतपदिका]**

स्वेदजजन्तुभेदे, आचा०१ श्रु०१ अ० ५ उ० ।

**सयपत्त- न० [शतपत्र]**

पत्रशतसंख्योपेते पद्मे । चंद० १ पाहु० । आव०म० । जंबू० ।  
रा० । ओह० । पन्न० ।  
शत्रुञ्जय, । सूर० । पन्न० । सम० । उव० । रा० ।

**सयपव्व- न० [शतपर्वन्]**

बहुपर्वे वंशजातीये वनस्पति, आचा०१ श्रु०१ अ०५ उ० ।

**सयपाग- न० [शतपाक]**

शतकृत्वो यत्पक्वं परावरौषधै रसेन सह शतेन वा कार्षापणानां  
पक्त्रिमे, नाया०१ श्रु०१ अ० । उव० ।  
शतं पाकानामौषधिकाथानां वा पाको यस्य, औषधिशतेन वा  
सह पच्यते यत् शतकृत्वः पाको यस्य, शतेन वा रूपकाणां  
मूल्यतः पच्यते यत्र तच्छतपाकम् । ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**सयपोरागकिमिय- पुं० [शतपर्वकृमिक]**

इक्षुपर्वकृमिषु, जीवा०३ प्रति०१ अधि०२ उ० ।

**सयबल- पुं० [शतबल]**

ऋषभपूर्वभवजीवस्य वैताढ्यपर्वते गान्धारविषये जातस्य  
महाबलस्य राज्ञः पितामहे, आव०चू०१ । आतु० । आव०म० ।

**सयभिसय- स्त्री० [शतभिषज्]**

शततारे वरुणदेवताके स्वनामख्याते नक्षत्रभेदे, जंबू०७ वक्ष० ।  
ठा० । सूर० । सम० ।

**सयमाण- त्रि० [स्वपत्]**

शयान, दश०४ अ० । आचा० ।

**सयमारंभवज्जण- न० [स्वयमारम्भवर्जन]**

अष्टम्यां प्रतिमायां श्रावककर्तव्ये, साक्षादारम्भनिषेधे, । उवा०१

**सयमास- पुं० [स्वकमास]**

स्वकीयमासे, निसि०२० उ० ।

**सयमुह- न० [शतमुख]**

नगर, यत्र गुणचन्द्रः श्रेष्ठी आसीत् । पिंड० ।

**सयय- न० [शतत]**

अनवरते, आचा०१ श्रु०८ अ०४ उ० । उत्त० ।

**सयय- पुं० [शतक]**

उत्सर्पिण्यां भविष्यतो दशमतीर्थकृतः पूर्वभवजीव श्रावक,  
सम० ८४ सम० ।

**सयरह- पुं० [शतरथ]**

भारते वर्षेऽतीतायामवसर्पिण्यां जाते दशमे कुलकरे, सम० ।

**सयराह- [देशी]**

झटित्यर्थे, अणुओ० । आव०म० । पण्हा० ।

**सयरि-** स्त्री० [ससति]

सप्तावृत्तदशसंख्यायाम्, 'सयरिं मासाणं' महानि०१ चू० ।

**सयरिसह-** पुं० [शतवृषभ]

त्रयोविंशतितमे अहोरात्रमुहूर्ते, चंद० १० पाहु० ।

**सयल-** त्रि० [शकल]

सम्पूर्ण, विशेष, कल्प ०१ अधि०५ क्षण० ।

**सयवसह-** न० [शतवृषभ]

अहोरात्रस्य त्रयोविंशे मुहूर्ते, कल्प०१ अधि०६ । जंबू० । ज्यो० ।

**सयसहस्र-** न० [शतसहस्र]

लक्ष, नाया०१ श्रु०५ अ० । ठा० । नाया० जंबू० । अणुओ० ।

**सयसहस्रपत्त-** न० [शतसहस्रपत्र]

लक्षदलोपेते पद्मे, उव० ।

**सयसाहस्रिय-** त्रि० [शतसाहस्रिक]

लक्षप्रमाणे, कल्प०१ अधि०५ क्षण ।

**सया-** अव्य० [सदा]

सर्वकाले, आचा०१ श्रु०१४ अ०१ । ठा० । दश० । सूय० । आव० ।  
नित्यं शब्दार्थे, भग०३ श०३ उ० । ठा० ।

सातत्ये, चंद० २० पाहु० ।

प्रवाहतोऽपर्यवसिते काले ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सयाउ-** पुं० [शतायुष]

जम्बूद्वीपे भारते क्षेत्रे अतीतायामुत्सर्पिण्यां जाते द्वितीये  
कुलकरे, ठा० १० ठा० ३ उ० । सम० ।

सुराविशेषे, शतबारानपि शोधिताऽपि या स्वरूपं न जहाति ।

जीवा०३ प्रति०४ अधि० । जंबू० ।

**सयागुत्त-** त्रि० [सदागुत्त]

सर्वकालं प्रहरणादिभी रक्षिते, जीवा०३ प्रति०३ अधि० ।

**सयाजय-** त्रि० [सदायत]

सर्वकालं प्रयत्नपरे, दश०४ अ० । आचा० । दश० । आचा० ।

**सयाजला-** स्त्री० [सदाजला]

सदा-सर्वकालं जलम् उदक यस्यां सा तथा । सदा  
जलाभिधानायां नरकनद्याम्, सूय०१ श्रु०५ अ०२ उ० ।

**सयाणिय-** पुं० [शतानीक]

कौशाम्ब्या नगर्याः स्वनामख्याते राजनि उदयनपितरि, विपा०१  
श्रु०५ अ० । आचा० । विशेष० ।

**सयाथिमिय-** स्त्री० [सदास्तिमित]

अविरहितं प्रशान्ते, सूय० ।

**सयालि-** पुं० [सदालि]

भारते आगमिष्यन्त्यामुत्सर्पिण्यां भविष्यतोऽष्टादशतीर्थकरस्य  
संवरस्य पूर्वभवजीवे, । सम० ।

**सयावरी-** त्रि० [शतावरी]

त्रीन्द्रियजीवभेदे, उत्त० ३६ अ० ।

**सयावियडभाव-** पुं० [सदाविकटभाव]

सर्वकालं प्रकटभावे, दश०८ अ० ।

**सयासव-** त्रि० [सदाश्रव]

आश्रवतीषत्क्षरति जलं यैस्ते आश्रवाः-सूक्ष्मरन्ध्राणि सन्तो  
विद्यमानाः सदा वा-सर्वदा वा आश्रवा यस्य स सदाश्रवः ।  
आश्रवैः सदा सहिते, भग०१ श०६ उ० ।

**सयासव-** त्रि० [शताश्रव]

शतसंख्या आश्रवा यस्य सः । शतसंख्यकाश्रवोपेते, भग०१  
श०६ उ० ।

**सयामोक्ख-** न० [सदासौख्य]

नित्यसुखे, अपवर्गे, आव०६ अ० ।

**सयोग-** पुं० [सयोग]

योगेन सहितः । संसारी जीवभेदे, ठा० २ ठा० ४ उ० ।

**सर-१ पुं० [शर]** बाण, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ० ।

अस्त्र, । संथा० । आव०म० । उव० । सूय० । सम० ।

**सर-२ न० [सरस्]**

स्वयं सम्भूते जलाशये, अणुओ० । ठा० । पत्र० । निसि० । भग० ।  
उव० । रा० । पण्हा० । उत्त० । नाया० ।

बहूनि केवलानि पुष्पावकीर्णानि सरांसीत्युच्यन्ते, पत्र०२ पद ।

**सर-३ पुं० [स्वर]**

शुद्धेष्वकाराद्यक्षरेषु, 'अक्षराणां व्यञ्जनानां स्वरणेन संशब्दनेन  
स्वरा अकारादयः प्रोच्यन्ते । अथवा-अक्षरस्य चैतन्यस्य स्वर-  
णात् संशब्दनात् स्वराः, शब्दोच्चारणमन्तरेणाऽन्तर्विज्ञानस्य  
बोद्धुमशक्यत्वात्, शब्दे च स्वरसद्भावादिति । विशेष० ।

**सरउ-** स्त्री० [सरयु]

जम्बूद्वीपे मन्दरस्य दक्षिणस्यां भारते वर्षे गङ्गा सङ्गतायां  
महानद्याम् । ठा० १० ठा० ३ उ० ।

या अयोध्यायाः सन्निकटे वहति । ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

**सरक्ख-** त्रि० [सरजस्क]

सक्षारे, बुह०३ उ० ।

सभस्मनि, ओह० ।

रजसोपगुण्ठिते, उत्त० ०१७ अ० ।

**सरक्ख-** त्रि० [सरक्ष]

रक्षा-भस्म, सह रक्षया वर्तत इति सरक्षम् । सभस्मनि, पिंड० ।  
आव०म० ।

**सरक्खधूलि-** स्त्री० [सरक्षधूलि]

सह रजसा श्लक्ष्णधूलिरूपेण वर्तत इति सरजस्का, सा चासौ  
धूलिश्चेति । रजः सहितधूलौ । आव०म० ।

**सरक्खामोस- पुं० [सरजस्कामर्श]**

सह पृथिव्यादिरजसा युक्तं यद्वस्तु तस्य आमर्शः—तत् संस्पर्शः ।  
रजोयुक्तवस्तुस्पर्शे, आव०४ अ० ।

**सरग- पुं० [शरक]**

अग्निनिर्मन्थनदारुणि, नाया०१ श्रु०१९ अ० ।  
शरिकाभिः कृते शूर्पादौ, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०११ उ० ।

**सरगय- न० [स्वरगत]**

गीतमूलभूतानां षड्जऋषभादिस्वराणां ज्ञाने जंबू० २ वक्ष० ।  
नाया० । सम० ।

**सरघ- पुं० [सरघ]**

मधुमक्षिकायाम्, सूय०२ श्रु०३ अ० ।

**सरद्गाण- न० [स्वरस्थान]**

नाभिसमुत्थस्वरोऽधिकारी आभोगेन अनाभोगेन वा यं प्रदेशं  
प्राप्य विशेषमासादयति तत् स्वरस्योपकारकमिति स्वरस्थानम्  
स्वराणां विशेषापादके स्थाने, ठा० ८ ठा० ३ उ० । अणुओ०

**सरड- पुं० [शरट]**

कृकलाशे, ओह० । पत्र० । आव० । पण्हा० ।  
शरटैः कृकलाशैः कृता माला स्रग् मुण्डे वक्षसि वा येन  
तत्तथा । उवा० २ अ० ।

**सरडुअ- न० [सरडुक]**

अबद्धास्थिके फले, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०८ उ० । बुह० ।

**सरडुफल- न० [सरडुफल]**

अबद्धास्थिकफले, । आचा० । निसि० ।

**सरण- न० [शरण]**

आश्रये, उक्त०१ अ० ।  
रागादिपरिभूताश्रितसत्त्व वात्सल्ये, आचा०२ श्रु०१ चू०३ अ०३  
उ० । तं० । । पण्हा० ।  
नानाविधोपद्रवोपद्रुतानां रक्षास्थाने, त्राणे, भग०१ श०१ उ० ।  
कल्प० । पण्हा० । सूय० ।  
संसारकान्तरगतानामतिप्रबलरागादिपीडितानां समाश्वासन  
स्थानकल्पे तत्त्वचिन्तारूपेऽध्यवसाने, रा० । आचा० ।  
जन्मजरामरणभयैरभिभूते व्याधिवेदनाग्रस्ते जिनवरवचनादन्य-  
त्रास्ति शरणं क्वचिल्लोके । ठा० ४ ठा० १ उ० । जीवा० ।  
तृणमयवासरिकादौ, अणुओ० । भग० । पण्हा०  
गृहे, आचा०१ श्रु०५ अ०५ उ० । सूय० ।

**सरण- न० [सरण]**

गमने, उक्त०१९ अ० । आचा० ।

**सरण- न० [स्मरण]**

पूर्वोपलब्धार्थानुस्मृतौ, । सूय० । नाया० ।

**सरणय-पुं० [शरणद]**

शरणं त्राणमज्ञानोपद्रवोपद्रुतानां तद्रक्षास्थानं तच्च परमार्थतो  
निर्वाणं तद्वदातीति शरणदः । तीर्थकृत्, सम० १ सम० । रा० ।  
भग० । जीवा० ।

**सरणिज्ज- त्रि० [स्मरणीय]**

क्षुद्रोपद्रवविद्रावणादिकृते तद्गुणानुचिन्तनादिनोपबृंहणीये ।  
आव०म० ।

**सरणी- स्त्री० [सरणी]**

मार्गे, 'पंथो मग्गो सरणी' । उक्त०

**सरण्ण- त्रि० [शरण्य]**

शरणे साधुः शरण्यः । शरणदातरि, आव०म० ।

**सरतल- न० [सरस्तल]**

पानीयेन भृतं तडागं सरस्तस्य तलम् उपरितनोभागः  
सरस्तलाम् । जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।  
उपरिभागावच्छिन्ने सरसि, भग०६ श०७ उ० ।  
'पुक्खरेइ वा सरतलेइ वा करतलेइ वेति' वृत्तवर्णकः । निर्वातं  
जलपूर्णं सरो ग्राह्यमन्यथा वातोद्ध्वयमानो वा जलत्वेन  
विवक्षितः समभावो न स्यादित्यर्थः । जंबू०१ वक्ष० । रा० ।

**सरद- पुं० स्त्री० [शरद]**

कार्तिकमार्गशीर्षयोः, भग० ७ श०३ उ० । अणुओ० । नाया० ।

**सरदहतलायसोसणया- स्त्री० [सरोहदतडागशोषणता]**

सरसः—स्वयं सम्भूतजलाशयविशेषस्य हृदस्य—नद्यादिषु निम्न-  
तरप्रदेशलक्षणस्य तडागस्य कृत्रिमजलाशयविशेषस्य परि-  
शोषणं यत्तत्तथा सरोहदतडागपरिशोषणता उवा० । भग० ।  
गोधूमादिवापनार्थं सरआदिशोषणरूपे करणेन उपभोगपरिभोग  
व्रतातिचारलक्षणे कर्मादाने, आव०६ अ० ।

**सरपंति- स्त्री० [सरःपङ्क्ति]**

एकपङ्क्त्या व्यवस्थितेषु बहुषु सरःसु, रा० । आचा० । भग० । पत्र०  
सरसां पद्धतौ, नं० ।  
यत्रैकस्मात् सरसोऽन्यस्मिन् अन्यस्मादन्यत्र संचारकपाटक-  
नोदकं संचरति सा सरःपङ्क्तिः । पण्हा०५ अ० । निसि० । जीवा० ।  
जंबू० । अणुओ० । ठा० । नाया० ।

**सरपणी- स्त्री० [सरपणी]**

मुञ्जे, ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

**सरपाय- पुं० [शरपात]**

शरा इषवः पात्यन्ते क्षिप्यन्ते येन इति शरपातः । धनुषि, सूय०१  
श्रु० ४ अ० २ उ० ।

**सरपाहुड- न० [स्वरप्राभृत]**

पूर्वगते स्वराधिकारप्रतिपादकेऽधिकारविशेषे, ठा० ७ ठा० ३ उ०

**सरप्पमाण- न० [सरःप्रमाण]**

सर एवोक्तलक्षणं प्रमाणं महाकल्पादेर्मानं सरःप्रमाणम् ।  
गोशालकमतप्रसिद्धे कालमानभेदे, भग० १५ श० ।

**सरभ- पुं० [शरभ]**

परासरेति पर्याये अष्टापदे महाकायाटव्यपशुविशेषे, यो हस्ति-  
नमपि पृष्ठे समारोपयति । पण्हा० १ अ० रा० । जंबू० । पण्हा० ।  
कल्प० । भग० । नाया० । वव० ।

**सरभस- त्रि० [सरभस]**

सहर्षे, पण्हा० ३ अ०

**सरमंडल- न० [स्वरमण्डल]**

षड्जादिस्वरसमूहे, अणुओ० । ठा० ।

**सरमह- पुं० [सरोमह]**

विशिष्टे काले सरसः पूजायाम्, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ३ उ० ।

**सरमाण- त्रि० [स्मरत्]**

अयमीदृश इति जानान, वव० ४ उ० । आचा० ।

**सरय- पुं० [सरक]**

गुडधातकीसिद्धे मद्ये, पण्हा० ५ अ० ।

**सरय- पुं० [शरक]**

निर्मन्यनकाष्ठे, पुफ्फि० ३ अ० ।

**सरय- स्त्री० [शरद]**

कार्तिकमार्गशीर्षयोः, नाया० १ श्रु० ९ अ० । ज्यो० । भग० ।  
ठा० । सूर० ।

सरयरयणीकरसोमवयणा, कल्प० १ अधि० ३ क्षण ।

**सरल- त्रि० [सरल]**

देवदारुवृक्षे, जंबू० २ वक्ष० । आचा० । पन्न० । भग० ।  
अवक्रे, आव० १ अ० ।

**सरलवर्ण- न० [स्वरलक्षण]**

यथास्वरफलं प्रति प्रापणाव्यभिचारिणि स्वरस्वरूपे, ठा० ६  
ठा० ३ उ० ।

**सरवण- न० [शरवन]**

स्वनामख्याते शरप्रधाने सन्निवेशे, यत्र गोबहुलस्य ब्राह्मणस्य  
गोशालायां गोशालको जन्म लेभे । भग० १५ श० । संथा० ।  
आव० म० । आव० चू० । ठा० ।

**सरवत्त- न० [शरपत्र]**

बृहदिषिकायाम्, आचा० १ श्रु० १ अ० ५ उ०

**सरविजय- पुं० [स्वरविजय]**

स्वरः पादकीशिवादीकृतरूपस्य विजयस्तत्सम्बन्धीशुभाशुभ-  
निरूपणाभ्यासः । स्वरविद्यायाम्, 'सरस्स विजयं जो विज्जाहिं  
न जीवइ से भिक्खू ।' उक्त० १५ अ० । आव० ।

**सरव्व- त्रि० [शरव्य]**

शरलक्ष्ये, । उक्त० । उव० ।

**सरस- त्रि० [सरस]**

रुधिरादियुक्ते, पण्हा० ३ अ० । रा० ।

रसोपेते, सम० ।

रक्तचन्दनविशेषे, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

'सरसचंदणाणुलित्तगते,' सरसेन सुरभिणा च गोशीर्षचन्दनेन  
च अनुलिप्तं गात्रं यस्य स तथा । कल्प० १ अधि० ३ क्षण ।  
सद्यस्के, कल्प० १ अधि० १ क्षण । आव० ।

सरसरुहिरमंसावलित्तगते' सरसाभ्यां रुधिरमांसाभ्यामवलित्तं  
गात्रं यस्य तत्तथा । उक्त० २० अ० ।

**सरसंचित- त्रि० [शरसञ्चित]**

शरजालसंचिते, शरशताकुले, सूय० १ श्रु० ३ अ० १ उ० ।

**सरसपारिजायग- न० [सरसपारिजातक]**

अम्लानसुरद्रुमविशेषकुसुमे अंत० १ श्रु० ३ वर्ग० ८ अ० ।

**सरसय- त्रि० [शरशत]**

शराणां शतं प्रत्येकं येषु ते शरःशतानि । प्रत्येकं शराणां शतेन  
परिपूर्णे, रा० ।

'सरसयवत्तीसतोरणपरिमंडिया' शराणां शतं प्रत्येकं येषु तानि  
शरशतानि तानि च तानि द्वात्रिंशत्तोरणाणि च बाणाश्रयाः शर-  
शतद्वात्रिंशत्तोरणानि तैर्मण्डिताः शरशतद्वात्रिंशत्तोरणमण्डिताः  
। जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । भग० ।

**सरसर- पुं० [सरसर]**

सर्पगतेरनुकरणे, भग० १५ श० । नाया० ।

लौकिकानुकरणभाषायाम्, उवा० २ अ० ।

**सरसरपंति- स्त्री० [सरःसरःपङ्क्ति]**

परस्परं संलग्नेषु बहुषु सरस्सु, आचा० २ श्रु० १ चू० ३ अ० ३ उ० ।  
येषु सरस्सु पङ्क्त्या व्यवस्थितेषु एकस्मात् सरसोऽन्यस्मिन्  
तस्मादन्यत्रैवं संचारकपाटकेनोदकं सञ्चरति । जंबू० १ वक्ष० ।  
जीवा० । निसि० । पन्न० । अणुओ० । भग० ।

**सरसी- स्त्री० [सरसी]**

महति सरसि, उव० ।

महान्ति सरांसि सर-सीत्युच्यते । उव० । पिंड० ।

**सरस्सई-१ स्त्री० [सरस्वती]**

भद्रनन्दीकुमारमातरि, ऋषभपुरनगरराजस्य धनवाहस्य भार्या-  
याम्, विपा० २ श्रु० २ अ० ।

भणिति, उवा० २ अ० । दश० ।

'यस्याः संस्मृतिमात्राद्, भवन्ति मतयः सदृष्टपरमार्थाः । वाचश्च  
बोधविकलाः, सा जयतु सरस्वती देवी । ठा० ४ ठा० १ उ० ।



**सरस्वई-२ स्त्री०** [सरस्वती]

गीतरतेर्नामगन्धर्वेन्द्रस्याग्रमहिष्याम्,

**सरस्वईकंठाभरण-** न० [सरस्वतीकण्ठाभरण]

विंशतिव्याकरणेष्वन्यतमे व्याकरणे, कल्प०१ अधि०१ क्षण ।

इन्द्रभूतिसहगते विदुषि, । कल्प०१ अधि०६ क्षण ।

**सरस्वईलङ्घ्यसाय-** पुं० [सरस्वतीलङ्घ्यप्रसाद]

इन्द्रभूतिसहगते पण्डिते, कल्प०१ अधि०६ क्षण ।

**सरहस्स-** नि० [सरहस्य]

रहस्ययुक्ते, 'सरहस्साणं वेयाणं' कल्प०१ अधि०१ क्षण ।

**सरहा-** स्त्री० [सरघा]

मधुमक्षिकायाम्, । ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**सराहि-** पुं० [शरधि]

तूणीर, नाया०१ श्रु०१८ अ० ।

**सराग-** पुं० [सराग]

सह रागेणाभिष्वङ्गलक्षणेन यः स सरागः । ठा० ८ ठा० ३ उ०

अनुपशान्तक्षीणमोहे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

मायालोभलक्षणेन रागेण सहिते, । भग० १७ श० २ उ० ।

अपरिपाकप्राप्तयोगे, । सूय० ।

**सरागल्य-** पुं० [सरागल्य]

सह रागेण वर्तत इति सरागः स्वभावस्तस्मिन् तिष्ठतीति तत्तथा । स्वभावस्थे, सूय० १ श्रु० ३ अ० ३ उ०

**सरागदंसणाऽऽरिय-** पुं० [सरागदर्शनार्य]

सह रागेणाभिष्वङ्गलक्षणेन यः स सरागः, स एव संयमः सरागस्य वा साधोः संयमो यः स तथा कर्मधारयः । ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

सरागदर्शनिनि, पण्हा०१ अ०

**सरागसंजम-** पुं० [सरागसंयम]

सकषायचारित्रे, ठा० ४ ठा० ४ उ०

**सरागसम्मदंसण-** पुं० [सरागसम्यग्दर्शन]

सरागस्य अनुपशान्ताक्षीणमोहस्य यत्सम्यग्दर्शनं तत्त्वार्थ-श्रद्धानं तत्तथा । अथवा सरागं च तत्सम्यग्दर्शनं चेति विग्रहः । सरागं सम्यग्दर्शनमस्येति वेति । सम्यग्दर्शनभेदे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सराव-** पुं० [शराव]

मल्लके, बुह०३ उ० । आव० ।

**सरासण-** पुं० [शरासन] न० ।

शरा अस्यन्ते क्षिप्यन्ते अस्मिन्निति शरासनः । इषुधौ, जीवा०४ प्रति०१ उ० ।

धनुषि, रा० । उव० । जंबू० ।

**सरासणपट्टिया-** स्त्री० [शरासनपट्टिका]

धनुर्यष्टौ, बाहुपट्टिकायां च विपा०१ श्रु०२ अ० ।

**सरिआ-** स्त्री० [सरित्]

नद्याम्, 'सरिआ तरंगिणी णिणया णई' उक्त० ।

**सरिउं-** अव्य० [स्मृत्वा]

अनुचिन्त्येत्यर्थे, । जंबू० । निसि०

**सरिकप्प-** पुं० [सट्कल्प]

समानस्थितकल्पस्थापनाकल्पादिविविधकल्पकर्तारि, बुह०६ उ०

**सरिच्छ-** त्रि० [सट्क्ष]

समाने, 'सरिसो समो सरिच्छो' उक्त० ।

**सरिच्छंद-** पुं० [सट्क्छन्द]

समानसामाचारीके, बुह० ६ उ० ।

**सरित्तय-** त्रि० [सट्त्तयच्]

सट्शी सट्गवर्णा त्वग् येषान्ते तथा । रा० ।

सट्शच्छविषु, भग०११ श०११ उ० ।

सट्गुचिषु, अंत० १ श्रु०३ वर्ग०८ अ० ।

**सरित्ता-** त्रि० [स्मृत्]

चिन्तयितरि, 'नो पुव्वरयं पुव्विन्दकीलियं सरित्ता भवइ ।' ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सरिक्कय-** त्रि० [सट्क्कयस्]

सट्क्-समानं वयो येषां ते तथा । रा०

सवयस्के, अंत०१ श्रु०३ वर्ग०१ अ० ।

**सरिस-** त्रि० [सट्श]

समाने, सूय०२ श्रु०५ अ० । विशेष० । भग० । निसि० । उव० । समानाकारे, रा० । तुल्ये, उक्त० १ अ० । अणुओ० ।

वृत्तिहेतुसामान्यरूपे, ठा० २ ठा० २ उ० । जंबू०

सट्शी भण्डमात्रा प्रहरणा शोकादिरूपा उपकरणं च कड्ढ-कादिकं यस्य स तथा । भग०७ श०९ उ० ।

**सरिसय-** पुं० [सट्शक]

समाने, भग० ७ श०८ उ० । अंत० ।

**सरिसव-** पुं० [सरीसृप]

उरःपरिसर्पभुजपरिसर्पभेदाद् द्विविधे पञ्चेन्द्रियतिरश्चि, सम०३४

**सरिसव-** पुं० [सर्षप]

सिद्धार्थके, भग०६ श०७ उ० । ठा० । नाया० । पत्र० । निर० ।

**सरिसवमाणचलण-** त्रि० [सट्शोपमानचरण]

सट्शं युक्तमुपमानं ययोस्तौ सट्शोपमानौ एवंविधौ चरणौ यस्य स तथा । तुल्योपमानपदे, कल्प० १ अधि० २ ।

**सरिसवय-** पुं० [सर्षपक]

सिद्धार्थके, नाया० ।

**सरिसिया-** स्त्री० [सटशी]

समानायाम्, भग० ११ श० ११ उ० ।

**सरिसु-** पुं० [देशी]

वृक्षविशेषे, कल्प० १ अधि० ३ ।

**सरिहा-** स्त्री० [सरिका]

मुक्तावल्याम्, पण्हा० ४ अ०

**सरिहा-** स्त्री० [शरिका]

लघुशरपत्रे, शरपत्रात्रे च । आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ११ उ० ।

**सरीर-** न० [शरीर]

शीर्यते प्रतिक्षणं विशारुभावं विभक्तीति शरीरम् पत्र० २१ पद ।

आव० म० १ अ० ।

देहे, आव० म० १ अ० ।

काये आव० चू० ५ अ० ।

शरीरपर्यायाः शरीरं वपुः कायो देहः कलेवरमित्यादयः । विशेषे

बोन्दिस्तनुः शरीरमित्यनर्थान्तरम् । आव० म० १ अ० । पण्हा० ।

पत्र० । आव० ।

**सरीरकाय-** पुं० [शरीरकाय]

कायभेदे, आव० १ अ० ।

**सरीरग-** न० [शरीरक]

शरीरमेव शरीरकं स्वार्थे कः । आत्मनो भोगायतने, ठा० १ ।

अनुकम्पितादिधर्मोपेते शरीरे, ठा० १ ठा० । भग० । अणुओ० ।

**सरीरजड-** पुं० [शरीरजड]

शरीरक्रियायामनिपुणे, वव० १० उ० । आव० । भग० । अणुओ० ।

**सरीरणाम-** न० [शरीरनामन्]

शरीरनिबन्धने नामकर्मभेदे, यदुदयादौदारिकादिशरीरं करोति ।

तच्च पञ्चधा औदारिकवैक्रियाहारकतैजसकर्मणशरीरभेदात् ।

। सम० ।

शरीरपर्याप्त्यैव सिद्ध, सम० ।

**सरीरणिव्वत्ति-** स्त्री० [शरीरनिवृत्ति]

औदारिकादिपञ्चविधशरीरनिष्पत्तौ, भग० १९ श० ८ उ० ।

**सरीरथामावहारविजड-** त्रि० [शरीरस्थामापहाररहित]

शरीरस्य स्थामप्राणस्तथाऽपहारोऽपलपनं तेन विजडो रहितः

शरीरस्थामा-पहाररहितः । दैहिकबलवियुक्ते, वव० ३ उ० ।

**सरीरपओगबंध-** पुं० [शरीरप्रयोगबन्ध]

औदारिकादिशरीराणां वीर्यान्तरायक्षयोपशपादिजनितव्यापारेण

शरीरपुद्गलोपादाने शरीरप्रयोगस्य बन्धे च । भग० ८ श० ९ उ० ।

**सरीरपच्चवखाण-** न० [शरीरप्रत्याख्याण]

शरीरस्याभिष्वङ्गपरीवर्जन-प्रतिज्ञाने, भग० १७ श० ३ उ० ।

प्रस्तावे समागते शरीरस्यापि व्युत्सर्जने, उक्त० ।

**सरीरपज्जति-** स्त्री० [शरीरपर्याप्ति]

यया शीतीभृतमाहारं रसासृग्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्रलक्षण-

सप्तधातुरूपतया परिणमर्यात्, । पत्र० । । न० ।

**सरीरबंध-** पुं० [शरीरबन्ध]

समुद्रघाते सति विस्तारितसङ्कोचितजीवप्रदेशसम्बन्धविशेष-

वशातैजसादिशरीरप्रदेशानां बन्धविशेषे, भग० ८ श० ९ उ० ।

**सरीरबन्धणाम-** न० [शरीरबन्धनामन्]

औदारिकशरीरपुद्गलानां पूर्वबद्धानां बध्यमानानां च सम्बन्ध

कारणे नामकर्मभेदे, सम० ४२ सम० ।

**सरीरभेय-** पुं० [शरीरभेद]

शरीरस्य भेदो विनाशः । शरीरविनाशे, उक्त० ३६ अ० । आचा० ।

**सरीरवक्कंति-** स्त्री० [शरीरव्युत्क्रान्ति]

दिव्यशरीरत्यागे, ‘भववक्कंतीए सरीरवक्कंतीए कुच्छिसि

गम्भत्ताए वक्कंत’ कल्प० १ अधि० १ ।

**सरीरविउस्सग-** पुं० [शरीरव्युत्सर्ग]

नारकायुष्कादिहेतूनां मिथ्यादृष्टित्वादीनां त्यागे, उव० ।

**सरीरवोच्छेयण-** न० [शरीरव्यवच्छेदन]

देहत्यागे, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**सरीरसंघायण-** न० [शरीरसंघातन]

औदारिकादिशरीरपुद्गलानां गृहीतानां शरीररचनायाम्, सम० ४२

**सरीरसंपया-** स्त्री० [शरीरसंपद]

विशिष्टशरीरतारूपे गणिसंपद्वेदे, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**सरीरसक्कारपोसह-** पुं० [शरीरसत्कारपौषध]

देशतः शरीरसत्कारस्यैकतरस्याकरणे, सर्वतस्तु सर्वस्यापि

तस्याकरणे, आव० ।

**सरीराणुगय-** त्रि० [शरीरानुगत]

व्यञ्जनादिजन्ये शरीराश्रये वायुकाये ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

**सरीरि-** पुं० [शरीरिन्]

शरीरमस्यास्तीति शरीरी । संसारिजीवभेदे, ठा० २ ठा० ४ उ०

**सरीरोगाहणा-** स्त्री० [शरीरावगाहना]

शरीराणामाधारभूतैकक्षेत्रे, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

येषु प्रदेशेषु शरीरमवगाढम्, सम० । भग० ।

**सरीरोवहि-** पुं० [शरीरोपधि]

शरीररूपायामुपधौ, ठा० १ ठा० ।

**सरीसिव-** पुं० [शरीसृप]

गोधादिषु भुजोरुभ्यां सर्पणशीलेषु तिर्यक्षु नाया० १ श्रु० १ अ० ।

आचा० । सूय० ।

**सरूप-** त्रि० [स्वरूप]

आत्मरूपे, स्वभावे, । आव० ।

**सरूवि-** पुं० [सरूपिन्]

सह रूपेण मूर्त्या वर्तत इति समासान्त इन् प्रत्यये सरूपी ।  
संस्थानवर्णादिमति सशरीरे जीवे, ठा० २ ठा० १ उ० । भग० ।

**सरोरुह-** [सरोरुह]

कमले, 'सरोरुहं पुंडरीअं' उत्त० १० गाथा

**सरोस-** त्रि० [सरोष]

क्रुद्धे, सूय० १ श्रु० ५ अ० २ उ० ।

**सलक्खण-** न० [स्वलक्षण]

लक्ष्यते तदन्यव्यपोहेनावर्धायते वस्त्वनेनेति लक्षणम् । स्वञ्च  
तल्लक्षणं च स्वलक्षणम् । असाधारणधर्मे, यथा जीवस्यो-  
पयोगः, यथा वा प्रमाणस्य स्वपरावभासकज्ञानत्वम् । ठा० १०  
ठा० ३ उ० ।

**सलक्खण-** पुं० [सलक्षण]

लक्षणज्ञे कवि, दश० २ अ० ।

**सलक्खणकारणहेउदोस-** पुं० [स्वलक्षणकारणहेतुदोष]

हेतुदोष-विशेषे, ठा० ।

**सलभ-** पुं० [शलभ]

पतङ्गे, ठा० ६ ठा० ३ उ० । आचा० ।

**सलभपईवबाइ-** पुं० [शलभप्रदीपवादिन्]

वादिनः शलभतुल्यान् कुर्वति प्रदीपकल्पे प्रतिवादिन, यथैक  
एतन्नामेन्द्रभूतिना सह गतः । कल्प० १ अधि० ७ क्षण० ।

**सललिय-** न० [सललित]

यत् स्वरघोलनाप्रकारेण ललतीव तत् सह ललितेने सललि-  
तम् । यदिवा- यत् श्रोत्रेन्द्रियस्य शब्दस्पर्शनमतीव सूक्ष्म  
मुत्पादयति सुकुमारमिव च प्रतिभासते तत् सललितम् ।  
जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । रा० ।  
समाधुर्ये, ।। ओह० ।  
लालित्योपेते, उव० ।  
सुप्रसन्नतोपेते, विपा० १ श्रु० २ अ० ।

**सलह-** पुं० [शलभ]

पतङ्ग, उत्त० २६२ गाथा ।

**सलोगा-** स्त्री० [शलाका]

नेत्रादौ । निसि० १ उ० ।

नन्नतरकट्टघटिता सलागा । गच्छा० २ अधि० । सम० । निसि० ।

अञ्जनार्थवर्त्तो सूय० १ श्रु० ४ अ० २ उ० ।

शल्ये, प्रथमा शलाका एकः सर्षपः प्रक्षिप्यते । अणुओ० ।

**सलाघण-** न० [श्लाघण]

प्रशंसायाम्, 'उवबूहण ति वा पसंस ति वा सद्भाजणण ति वा  
सलाघण ति वा एगट्ठा' निसि० १ उ०

**सलाहणिज्ज-** त्रि० [श्लाघनीय]

श्लाघ्ये, प्रशस्ये, विपा० १ श्रु० ९ अ०

**सलिंग-** न० [स्वलिङ्ग]

रयहरणमुहपुत्तियापडिग्गहादिधारणं सलिंगं भण्णाति । निसि०  
१ उ०

**सलिंगसिद्ध-** पुं० [स्वलिङ्गसिद्ध]

स्वलिङ्गे रजोहरणादिरूपे व्यवस्थिताः सन्तो ये सिद्धास्ते  
स्वलिङ्गासिद्धाः । न० ।

**सलिल-** न० [सलिल]

उदके, सूय० १ श्रु० १२ अ० । उत्त० ।

जले, नाया० १ श्रु० ४ अ० । पण्हा० । उव० ।

**सलिलकुंड-** न० [सलिलाकुण्ड]

गङ्गादिनदीनां प्रपातकुण्डेषु, प्रभवकुण्डेषु च । ठा० ।

**सलिलरासि-** पुं० [सलिलराशि]

समुद्रे, 'रयणायरो सलिलरासि' उत्त० ।

**सलिलविल-** न० [सलिलविल]

निर्झरे, भग० ७ श० ६ उ० ।

**सलिला-** स्त्री० [सलिला]

गङ्गादिमहानदीषु, सम० १३८ सम० ।

**सलिलावई-** स्त्री० [सलिलावती]

जम्बूद्वीपे मन्दरस्य पश्चिमे सीतोदाया महानद्या दक्षिणे  
चक्रवर्तिविजये, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

जम्बूद्वीपे अपरविदेहे सलिलावतीविजये वीतशोकायां राजधा-  
न्यां महाबलराजा । ठा० ७ ठा० ३ उ० । नाया० । आव० म०

**सलिलुच्छय-** पुं० [सलिलोत्सव]

प्लाविते, पव्वालिअं आउं वालिअं च सलिलुच्छयं जाण उत्त०

**सलिलोदगवासि-** पुं० [सलिलोदकवर्षि]

सलिलाः शीतादिमहानद्यस्तासामिव यदुदकं रसादिगुण साध-  
म्यात् तस्य वर्षः । महानदीजकल्पे वृष्ट्युदके, दिव्वं सलिलो-  
दगं वासं वासइ । भग० १५ श० ।

**सलेस-** त्रि० [सलेश्य]

लेश्यया सहितः । संसारिणि, ठा० २ ठा० ४ उ० ।

**सल्ल-** न० [शल्य]

शल्यते बाध्यतेऽनेनेति शल्यम् । द्रव्यतस्तोमरादौ, भावतो  
मायादौ, ठा० ।

**सल्लइ-** स्त्री० [सल्लकी]

स्कन्धबीजवनस्पतिभेदे, सूय० १ श्रु० १ अ० ३ उ० । ठा० ।

आचा० । आव० म० । उत्त० ।

गजप्रियाख्ये वृक्षविशेषे, पन्न० १ पद ।

**सल्लइपत्त-** न० [सल्लकीपत्र]

शल्लक्याख्यवृक्षविशेषदले, नाया०१ श्रु०७ अ० ।

**सल्लकत्तण-** न० [शल्यकर्त्तन]

कृन्ततीति कर्त्तनं शल्यानिमायाशल्यदीनि तेषां कर्त्तनं शल्य-  
कर्त्तनम् । मायादिशल्यच्छेदके, आव०४ अ० ।

तद्भावितानां हि भावशल्यानि व्युच्छेदमायान्तीति । उव० ।  
आव०म० । भग० । नाया० । उवा० । ध० ।

शल्यं-पापानुष्ठानं तज्जनितं वा कर्म तत्कर्त्तयति छिनत्ति तच्छ-  
ल्यकर्त्तनम् । सूय०१ श्रु०१४ अ० ।

**सल्लग-** न० [सल्लग]

रगे लगे संवरणे । शोभनं लगनं संवरणमिन्द्रियसंयमरूपं  
सल्लगस्तद्भावः । इन्द्रियसंवरणे, सूय०२ श्रु०२ अ० ।

**सल्लग-** न० [शल्यग]

शल्यवच्छल्यं मायानुष्ठानकार्यं गायति कथयति शल्यगम् ।  
मायापरिज्ञाने, सूय०२ श्रु०२ अ० । आव०म० पण्हा० ।

**सल्लगहत्त-** न० [शल्यकहत्य]

शल्यस्य हत्या हननमुद्धारइत्यर्थः शल्यहत्या तत्प्रतिपादकम्  
शल्यहृत्यम् । शल्योद्धारवैद्यकशास्त्रे विपा०१ श्रु०७ अ० । ठा०

**सल्लुद्धरण-** न० [शल्योद्धरण]

शल्यकर्त्तने, कण्टकाद्युद्धारे, । गच्छा० ।  
आलोचनायाम्, ओह० ।

**सव-** न० [शव]

मृतशरीर, 'कुणवं सवं च मडयं' उक्त० ।

**सवण-** न० [शपन]

अभिधाने, आक्रोशे, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

**सवण-** न० [श्रवण]

वाच्यवाचकभावपुरस्सरीकारेण शब्दसंसृष्टार्थग्रहणरूपे उपल-  
ब्धिविशेषे, आव०म०१ अ० ।

अभिलापप्लावितार्थग्रहणस्वरूपे उपलब्धिविशेषे, अणुओ० ।  
आव०म० ।

कर्णे, 'सवणा कण्णा' उक्त० ।

साधुसमीपे जिनागमाकर्णने, । सूय० । उक्त० ।

**सवणया-** स्त्री० [श्रवणता]

श्रूयतेऽनेनेति श्रवणमेकसामयिकः । सामान्यार्थावग्रहरूपोऽर्था-  
वग्रहरूपो बोधपरिणामस्तद्भावश्च श्रवणता । श्रवणभावे, श्रव-  
णार्थे, भग०९ श०३१ उ० । ठा० । उव० ।

**सवणसंवच्छर-** पुं० [सवनसंवत्सर]

सवनं कर्मसु प्रेरणम् । तत्प्रधानः संवत्सरः सवनसंवत्सरः ।  
कर्मसंवत्सरापरनामके संवत्सरभेदे, । सूर०१० पाहु० ।

**सवण-** त्रि० [सवर्ण]

सदृशे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सवती-** स्त्री० [सपत्नी]

समानः-साधारणः पतिरस्याः सां सपत्नी । स्वपत्युर्द्वितीय-  
भार्यायाम्, ठा० ४ ठा० ३ उ० ।

**सवयणणिराकय-** त्रि० [स्ववचननिराकृत]

आत्मीयवचनैरेव खण्डिते वाक्ये, यथा यदहं वच्मि तन्मिथ्येति ।  
संथा० १० । ठा० ३ उ० ।

**सवस-** त्रि० [स्ववश]

स्वतन्त्रे, पण्हा०१ अ०

**सवसयण-** न० [शवशयन]

श्मशाने, निसि०१२ उ० ।

**सवह-** पुं० [शपथ]

वाक्यविशेषे, नाया०१ श्रु०१ अ०

**सवहसाविय-** त्रि० [शपथश्रापित]

शपथान् देवगुरुद्रोहिका भविष्यसि त्वं यदि विकल्पं नाख्यासी-  
त्यादिकान् वाक्यविशेषान् श्रापिता श्रोत्रेन्द्रियोपसमभिहिताः,  
शपथैर्वा श्रापिताः शपथ-श्रापिताः, नाया० १ श्रु० १अ०

**सवाय-** पुं० [सवाद]

सह वादेन सवादः । वादसहिते, सूय०२ श्रु० ७ अ० ।

**सवाय-** पुं० [सद्वाद]

शोभनभारत्याम्, सूय०२ श्रु०७ अ० ।

**सवाय-** स्त्री० [सद्वाच्]

शोभनवचने, सूय०२ श्रु०७ अ० ।

**सवार-** न० [सवार]

प्रभाते, बुह०१ उ०२ ।

**सवित-** त्रि० [शपयत्]

इदं चेदं परुत्परारि वा भविष्यति इत्थं भूतवचांसि श्रावयति, उव०

**सविज्जविज्जाणुगय-** पुं० [स्वविद्यविद्यानुगत]

स्वा आत्मीया विद्या स्वविद्या परलोकोपकारिणी केवलश्रुतरूपा  
तया स्वविद्यया अनुगताः युक्ताः न पुनः परविद्यया इहलोको-  
पकारिण्येति । लोकोत्तरागमयुक्तेषु, । दश०६ अ० ।

**सविट्ठा-** स्त्री० [श्रविष्ठा]

धनिष्ठापरपर्याये नक्षत्रभेदे, चंद० १० पाहु० । सूर० ।

**सवित्तिय-** त्रि० [सवृत्तिक]

चैत्यप्रतिबद्धगृहक्षेत्रादिवृत्तिभागिषु, बुह० १ उ०२ ।

**सविया-** पुं० [सवित्]

आदित्ये, आव०म०१ अ० ।

हस्तनक्षत्रे,

हस्तनक्षत्रस्य सविता देव इति हस्तोऽपि सविता । अणुओ० ।

**सवियार-** पुं० [सविचार]

विचरणं विचारः। अर्थाद् व्यञ्जने व्यञ्जनादर्थे मनः प्रभृति-  
योगानां चान्यस्मादन्यस्मिन् विचरणम्। भग० २५ श० ७ उ०।  
सह विचारेण वर्तत इति सविचारः। अर्थव्यञ्जनयोगसंक्रमे,  
आव० ४ अ०।

सवियारो त्ति विलिङ्गो' बुह० १ उ० २

**सवियार-** त्रि० [सविकार]

भ्रूचेष्टादिसहिते, तं०।।

**सवियारि-** न० [सविचारिन्]

सविचारेण वर्तत इति सविचारि। सर्वधनादित्वादिन् समा-  
सान्तः। अर्थव्यञ्जनयोगसंक्रान्ते, ठा० ४ ठा० १ उ०। गच्छा०।

**सविसाण-** त्रि० [सविषाण]

सशृङ्गे, निर्ग्रन्थीभिः सविषाणे आसने नोपवेष्टव्यम्। तत्र  
सविषाणं नाम, यथा कपाटस्योभयतः शृङ्गे भवतः यत्र  
मिसिकादौ पीठफलके वा विषाणं शृङ्गं भवति। बुह० ५ उ०।

**सविसेस-** त्रि० [सविशेष]

सह विशेषेण वर्तते इति। सोत्तरगुणे, उत्त० ७ अ०। निसि०।

**सविसेसतर-** त्रि० [सविशेषतर]

बृहत्तरे, निसि० १ उ०।

**सविहोड-** त्रि० [सविहोड]

सजुगुप्सनीय, बुह० १ उ० २।

**सवीरिय-** त्रि० [सवीर्य]

वीर्यशक्त्युपेते, सूय० १ श्रु० ८ अ०।

**सर्वेण-** त्रि० [सर्ववृत्तक]

नालयुक्ते, बुह० ५ उ०।

**सवेयग-** पुं० [सवेदक]

स्त्र्यादिवेदयुक्ते, भग० १७ श० २ उ०।

स्त्रीवेदाद्युदयवति, ठा० २ ठा० ३ उ०।

संसारिणि, ठा० २ ठा० ४ उ०।

**सव्व-** त्रि० [सर्व]

अशेषे, सूय० १ श्रु० ११ अ०। उत्त०।

अपरिशेषे, निसि० १ उ०। आचा०।

समस्ते, । दश०। उव०। पण्हा०। आव० म०।

विश्वशब्दार्थे, ठा० १० ठा० ३ उ०।

**सव्वअंजणमय-** त्रि० [सर्वाञ्जनकमय]

अञ्जनकः कृष्णरत्नविशेषस्तन्मयाः सर्व एवानन्यमयत्वेन सर्वथै-  
वाञ्जनमयाः सर्वाञ्जनमयाः। परमकृष्णेषु, ठा० ४ ठा० २ उ०।

**सव्वउय-** त्रि० [सर्वतुक्]

सर्वतुसम्भवे, उव०। सम०।

**सव्वओ-** अव्य० [सर्वतस्]

सर्वैः प्रकारैरित्यर्थे, ठा० ३ ठा० ४ उ०। आचा०। सूय०।  
जीवा०। दशा०। कल्प०। रा०। विपा०।

सर्वतः सर्वासु दिक्षु समन्तात् सर्वैवात्मप्रदेशैः सर्वैवा  
विशुद्धस्पर्द्धकैः, । नं०।

**सव्वओगुत्त-** त्रि० [सर्वतो गुप्त]

सर्वप्रकारतयेन्द्रियनोइन्द्रियरूपयोः गुप्तागुप्ते, आचा० १ श्रु० ५ अ०  
५ उ०।

**सव्वओभद्द-** न० [सर्वतोभद्र]

सर्वावस्थसुखे, 'बहूणि सव्वओ इह परलोए भद्दं वो सव्वओ  
भद्दो' पंच० चू० १ कल्प०।

दशमदेव कल्पेन्द्रस्याच्युतस्य पारियानिके विमाने, ठा० १०  
ठा० ३ उ०। जंबू०। उव०।

महाशुक्रदेवलोके स्वनामख्याते यक्षभेदे, । पत्र० १ पद।

दृष्टिवादस्य स्वनामके सूत्रे, सम०।

प्रतिष्ठादौ पूज्यदेवतानां मण्डलभेदे ज्योतिषोक्ते स्वनामख्याते  
भारतवर्षीये पुरे यत्र बृहस्पतिदत्तनामा ब्राह्मणकुमार आसीत्।

विपा० १ श्रु० ५ उ०।

**सव्वओभद्दपडिमा-** स्त्री० [सर्वतोभद्रप्रतिमा]

दशसु दिक्षु प्रत्येकमहोरात्रकायोत्सर्गे अहोरात्रदशकप्रमाणे,  
प्रतिमाभेदे, ठा० २ ठा० ३ उ०। उव०।

**सव्वओसहाययण-** न० [सर्वोपधायतन]

देहे, रोगादावस्मिन् सर्वोपधायतनं। तं०।।

**सव्वंकस-** त्रि० [सर्वङ्कष]

सर्वङ्कषति। पापे, आव० १ अ०

**सव्वंग-** न० [सर्वाङ्ग]

सर्वशरीरे, सर्वशरीरव्यापी दाहः। तं०।।

**सव्वंगसुंदर-** न० [सर्वङ्गसुन्दर]

निखिलावयवप्रधाने, सम०।

**सव्वंगसुंदरी-** स्त्री० [सर्वाङ्गसुन्दरी]

सर्वेष्वङ्गेषु सुन्दरीति। गजपुरे शङ्खश्राद्धस्य सुतायाम्, आव० म० १  
अ०। आव० चू०।

**सव्वंगिय-** त्रि० [सर्वाङ्गीण]

सर्वाङ्गाणि व्याप्नोति। सर्वावयवव्यापके 'तत्थ य सव्वंगियो  
पुरिसो दीसइ'। आव० म० १ अ०।

**सव्वभंंतरय-** पुं० [सर्वाभ्यन्तरक]

सर्वात्मना सामस्त्येनाभ्यन्तरः सर्वाभ्यन्तरः। स एव सर्वाभ्य-  
न्तरकः। सर्वात्मनाऽभ्यन्तरे, 'एस णं जंबूदीवे सव्वदीवस-  
मुद्दाणं सव्वभंंतरए।' जीवा० ३ प्रति० ४ अधि०।



**सव्वकणगामय-** त्रि० [सर्वकनकमय]

सर्वात्मना कनकमये, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**सव्वकम्म-** पुं० [सर्वकर्मन्]

पक्षस्य सप्तमतिथिदिवसे, जंबू०१ वक्ष०

**सव्वकम्मावह-** पुं० [सर्वकर्मवह]

सर्वपापोपादानभूते आचा०१ श्रु०९ अ०१ उ० ।

**सव्वकाम-** त्रि० [सर्वकाम]

सर्वाभिलाषे, आव०चू०१ अ० ।

**सव्वकामगुणिय-** त्रि० [सर्वकामगुणित]

सर्वे कामगुणाः कमनीयपर्यायाः विकृत्यादयो विद्यन्ते यत्र तत्तथा ।

रूपरसगन्धस्पर्शलक्षणाः सन्तः संजाता वा यत्र तत्सर्व-  
कामगुणितम् । नाया०१ श्रु०८ अ० ।

सर्वे कामगुणा अभिलाषविषयभूता रसादयः संजाता यत्र  
तत्सर्वकामगुणितम् । भग०१५ श० । आव०म० । आव० ।

सर्वाभिलषणीयरसादिसम्पन्ने, उव० ।

**सव्वकामविरत्तया-** स्त्री० [सर्वकामविरत्ता]

सर्वाभिलाषनिवर्तने, आव०चू०१ अ० ।

समस्तविषयवैमुख्ये, सम०३२ सम० । आव०

**सव्वकामविरय-** त्रि० [सर्वकामविरत]

समस्तशब्दादिविषयेभ्यो नि-वृत्ते, उव० ।

**सव्वकामसमिद्ध-** त्रि० [सर्वकामसमृद्ध]

पक्षस्य पञ्चदशानां दिवसानां षष्ठे दिवसे, जंबू०७ वक्ष० ।  
रुचकपर्वतदेवे, चंद०१ पाहु० ।

**सव्वकामसमप्पिय-** पुं० [सर्वकामसमर्पित]

सर्वे कामा अभिलाषा अर्पिताः सम्पन्ना यस्य स सर्वकाम  
समर्पितः । इच्छामात्रेऽभिलषितोपार्जके, स हि यान्यान् कामान्  
कामयते तेऽस्य सर्वे सिद्ध्यन्तीति यावत् । सूय०१ श्रु०१ अ०३

**सव्वकाल-** पुं० [सर्वकाल]

अतीतानागतवर्तमानकालेषु, रा० । पण्हा० ।

**सव्वकालिया-** स्त्री० [सर्वकालिका]

अतीतादिना कालेन निर्वृत्तायाम्, आव०३अ०

**सव्वक्कसुद्धि-** स्त्री० [सद्वाक्यशुद्धि]

शोभनायामात्मीयायां वाक्यशुद्धौ दश० ८ अ० ।

**सव्वक्खरसण्णिवाइ-** पुं० [सर्वाक्षरसन्निपातिन्]

सर्व च ते अक्षरसन्निपाताश्च तत्संयोगाः, सर्वेषां वाऽक्षराणां  
सन्निपाताः सर्वाक्षरसन्निपाताः । ते अनन्ताः अभिलापानन्तत्वात्  
यस्य ज्ञेयतया सन्ति स सर्वाक्षरसन्निपाती । सर्वाक्षर-  
संयोगविधि, भग० १ श० १ उ०

**सव्वक्खरसण्णिवाइ-** पुं० [श्रव्याक्षरसन्निपादिन्]

श्रव्याणि श्रवणसुखकारीणि अक्षराणि साङ्गत्येन नितरां वदितुं  
शीलमस्येति श्रव्याक्षरसन्निवादी । भग०१ श०१ उ० । ठा० ।  
विदितसकलवाङ्मये, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

सकलप्रज्ञापनीयभावपरिज्ञानकुशले, जंबू०१वक्ष० । रा० । उव० ।

**सव्वक्खरसण्णिवाइया-** स्त्री० [सर्वाक्षरसन्निपातिका]

सर्वाक्षराणां सन्निपातोऽवतारो यस्यामस्ति, सर्वे चाऽक्षरसन्नि-  
पाताः संयोगाः सन्ति यस्यां सा सर्वाक्षरसन्निपातिका । सकल-  
वाङ्मय श्रीजिनवाण्याम्, उवा०२ अ० । उव० ।

**सव्वखुड्डाय-** त्रि० [सर्वक्षुद्रक]

सर्वेभ्यः क्षुद्रकः सर्वक्षुद्रकः । सर्वलघौ, उव० । जीवा० ।

**सव्वगुणसंपण्णया-** त्रि० [सर्वगुणसम्पन्नता]

ज्ञानादिगुणसहितत्वे, उत्त०२९ अ० ।

**सव्वगुणसमिद्ध-** स्त्री० [सर्वगुणसमृद्ध]

शौर्योपशमादिभिः सर्वैर्गुणैः स्फीते, रा० ।

**सव्वगा-** स्त्री० [सर्वगा]

उत्तररुचकवरपर्वतस्य रुचकोत्तमकूटवास्त-व्यायां दिक्कुमार्याम्,  
ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**सव्वगोत्तावगय-** त्रि० [सर्वगोत्रापगत]

सर्वस्मादुच्चैर्गोत्रादेरपगते, सूय०१ श्रु०१३ अ० ।

**सव्वग्ग-** न० [सर्वाग्र]

सर्वसंख्यायाम्, ज्यो०२ पाहु० । आचा० ।

**सव्वघाइ-** त्रि० [सर्वघातिन्]

सर्वघात्यं केवलज्ञानादिलक्षणं गुणं सर्वथा घातयन्तीत्येवं  
शीलानि सर्वघातीनि । ज्ञानदर्शनावरणीयरसस्पृद्धकेषु, । सम०

**सव्वजंबूणयामय-** त्रि० [सर्वजाम्बूनदमय]

सर्वात्मना जाम्बूनदमय, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**सव्वजगवच्छल-** त्रि० [सर्वजगद्वत्सल]

पृथिव्यादीनां सर्वभूतानां रक्षणादना वात्सल्यकर्तारि, पण्हा०५

**सव्वजगहिय-** पुं० [सर्वजगद्धित]

सर्वस्मिन् जगति ये जीवास्तेभ्यो हितं पथ्यम् तद्रक्षणत-  
स्तदुपदेशदानतो वा । सूय०१ श्रु०११ अ० ।

**सव्वजगुज्जोयग-** पुं० [सर्वजगदुद्योतक]

सर्व समस्तं जगत् लोकाऽलोकात्मकगुद्ध्योतयति प्रकाशयति  
केवलज्ञानदर्शनाभ्यामिति सर्वजगदुद्योतकः । जिने, न० ।

**सव्वजिणसासणग-** त्रि० [सर्वजिनशासनक]

सर्वैर्जिनैः शिष्यन्ते प्रतिपाद्यन्ते यानि तानि सर्वजिनशासनानि  
तान्येव सर्वजिनशासनकानि ।

सर्वतीर्थकरप्रज्ञपेसु, पण्हा०१ अ० ।

**सव्वजोणिय-** त्रि० [सर्वयोनिक]

सर्वा योनय उत्पत्तिस्थानानि येषां सत्त्वानां ते सर्वयोनिकाः ।  
सर्वगतिभाक्षु, आचा०१ श्रु०९ अ० १ उ० ।  
सर्वा हि योनयः-संवृतविवृतोभयशीतोष्णोभयसचित्ताचितो  
भयरूपाः । सूय०२ श्रु०४ अ० ।

**सव्वज्जुइ-** स्त्री० [सर्वद्युति]

आभरणादिसम्बन्धिन्यां समस्तद्युतौ, विपा०१ श्रु०९ अ० ।

**सव्वजुइ-** स्त्री० [सर्वजुति]

उचितेष्टवस्तुघटनायाम्, विपा०१ श्रु०९ अ० । कल्प० । रा० । भग०

**सव्वज्जुय-** पुं० [सर्वजुक्]

सर्वैः प्रकारैः ऋजुः प्रगुणो विवक्षितमोक्षगमनं प्रत्युत्कुटिलः ।  
सर्वजुसंयमे, सद्धर्मे च । सूय०१ श्रु०९ अ०२ उ० ।

**सव्वट्ठ-** पुं० [सर्वार्थ]

सर्वे च तेऽर्थाश्च सर्वार्थाः । आचा०१ श्रु०८ अ०८ उ० ।  
अशेषप्रयोजनेषु, आचा०२ श्रु०२ चू० ।  
बाह्याभ्यन्तरे धनधान्यकलत्रममत्वादौ अशेषप्रयोजनीयवस्तुनि,  
सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ० ।  
एकोनत्रिंशत्तमेऽहोरात्रमुहूर्ते, ज्यो० २पाहु० । जंबू० । सूर० । कल्प०

**सव्वट्ठसिद्ध-१** पुं० [सर्वार्थसिद्ध]

पञ्चानामनुत्तरविमानानां मध्यमे, अणुत्त० । सम० । ठा० । पन्न०

**सव्वट्ठसिद्ध-२** पुं० [सर्वार्थसिद्ध]

एकोनत्रिंशेऽहोरात्रमुहूर्ते, सम० ३ सम० । कल्प० ।

**सव्वट्ठसिद्धिय-** पुं० [सर्वार्थसिद्धिक]

सर्वार्थसिद्धविमानवासिनि देवे, सम० । उव० ।

**सव्वट्ठाण-** न० [सर्वस्थान]

शय्याभोजनमन्त्रादिस्थानेषु, विशेष० ।

**सव्वणट्ठ-** त्रि० [सर्वनष्ट]

सर्वप्रकारैर्विनाशमापन्ने, विशेष० ।

**सव्वणय-** पुं० [सर्वनय]

सर्वेषु नैगमादिनयेषु, उत्त०२ अ० ।

**सव्वणयविसुद्ध-** त्रि० [सर्वनयविशुद्ध]

सर्वे निरवशेषास्ते च ते नयाश्च सर्वनयास्तेषां विशुद्धं निर्दोषतया  
संमतम् । उत्त०२ अ०  
सर्वनयसम्पत्ते, दश०१ अ० ।  
'तं सव्वणयविसुद्धं, जं चरण-गुणट्ठिओ साहइ' आव०६ अ० ।

**सव्वणाडय-** पुं० [सर्वनाटक]

समस्तनाट्यकर्तृषु, कल्प०१ अधि० ५ क्षण ।

**सव्वणाण-** न० [सर्वज्ञान]

सर्वं जानातीति । केवलज्ञाने, सर्वपरिपूर्णज्ञानम् । विशेष० ।

**सव्वणाणावरणिज्ज-** न० [सर्वज्ञानावरणीय]

सर्वज्ञानं केवलाख्यमावृणोतीति सर्वज्ञानावरणीयम् । केवल-  
ज्ञानावरणे, आदित्यकल्पकवलज्ञानरूपस्य जीवस्याच्छादक-  
तया सान्द्रमेघवृन्दकल्पं हि तत् । ठा० २ ठा० ४ उ० ।

**सव्वणास-** पुं० [सर्वनाश]

सर्वात्मना नाशे, विशेष० । पण्हा० ।

**सव्वण्णुदंसण-** न० [सर्वज्ञदर्शन]

सर्वज्ञागमे, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ०

**सव्वण्णुप्पवाय-** पुं० [सर्वज्ञप्रवाद]

सर्वज्ञवाक्ये, आचा०१ श्रु०५ अ०६ उ० ।

**सव्वण्णुवयण-** न० [सर्वज्ञवचन]

सत्यवक्तृवीतरागवचने, दश० ४ अ०

**सव्वतंतसिद्धंत-** पुं० [सर्वतन्त्रसिद्धान्त]

सर्वतन्त्राऽविरुद्धे स्वतन्त्रेऽधिकृतेऽर्थे, सूय०१ श्रु०१२ अ० ।

**सव्वतवणिज्जमय-** त्रि० [सर्वतपनीयमय]

सर्वात्मना तपनीयरूपसुवर्णमये, जीवा०३ प्रति०४ अधि० । रा० ।  
दशा० ।

**सव्वतुरियसद्वसण्णिणाय-** पुं० [सर्वतूर्यशब्दसन्निनाद]

सर्वतूर्यशब्दानां मीलने महाघोषे, भग०१ श०१ उ० ।

**सव्वतूवर-** पुं० [सर्वतूवर]

समस्तकषायद्रव्ये, रा० ।

**सव्वत्तया-** स्त्री० [सर्वात्मता]

सर्वेष्व्वात्मनः परिणामेषु, उवा०२ अ०

सर्वसामर्थ्ये, सूय०२ श्रु०१ अ० ।

**सव्वत्थ-** अव्य० [सर्वत्र]

समस्तकाले, सर्वस्यामवस्थायामपीत्यर्थे, सूय०१ श्रु०३ अ०४

**सव्वत्थविसम-** न० [सर्वत्रविषम]

सर्वपादेषु विषमाक्षरे वृत्ते, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**सव्वदंसण-** न० [सर्वदर्शन]

सर्वं सम्पूर्णं दर्शनं सर्वदर्शनम् । क्षायिकसम्यक्त्वे, विशेष० ।

**सव्वदंसि-** पुं० [सर्वदर्शिन्]

सर्वं जगत् चराचरं सामान्येन द्रष्टुं शीलं मस्येति सर्वदर्शी ।  
सूय०१ श्रु०६ अ० । भग० । रा० ।  
अनाकारोपयोगासामर्थ्यात् । उवा० ७ अ० ।  
सर्वस्य वस्तुस्तामस्य सामान्यरूपतया द्रष्टरि, भग०१ श०१ उ० ।  
ठा० । कल्प० ।  
केवलदर्शनेन एकेन्द्रियद्वीन्द्रियजीवादिज्ञातरि, अणुओ० । सूय०  
सर्वं प्राणिगणमात्मवत्पश्यतीति सर्वदर्शी । आत्मसाम्यदर्शिनि,  
उत्त०१५ अ० ।

**सव्वदव्व-** न० [सर्वद्वय]

धर्मास्तिकायादिषु भग० १२ श० ५ उ० ।

**सव्वदा-** स्त्री० [सर्वदा]

सर्वकाल इत्यर्थे, ल० । भग० ।

**सव्वदिसाग-** त्रि० [सर्वदिक्]

सर्वा दिशो यत्र तत्सर्वदिक्कम् । सर्व-दिगवच्छिन्ने, विशेष० ।

**सव्वदीवसमुद्द-** पुं० [सर्वद्वीपसमुद्र]

अशेषद्वीपसमुद्रेषु, सूर० १ पाहु० ।

**सव्वदुक्खप्पहीण-** पुं० [सर्वदुःखप्रहीण]

प्राकृतत्वात्प्रकर्षेण हीनानिहानि गतानि प्रक्षीणानि वा सर्वदुःखानि यस्मिन्, यद्वा सर्व-दुःखानां प्रहीणं प्रक्षीणं वा यस्मिंस्तत्तथा । सिद्धक्षेत्रे, उक्त० २८ अ० ।

दुःखानि शरीरमानसानि तानि प्रहीणानि यस्य स तथा । कल्प० १ अधि० ६ क्षण ।

मुक्ते, मोक्षे च । । आतु० । जंबू० ।

**सव्वदुक्खप्पहीणमग्ग-** पुं० [सर्वदुःखप्रहीणमार्ग]

सर्वदुःखप्रहीणो मोक्षस्तत्कारणं मार्गः पन्थाः । आव० । उव० । सकलाशर्मक्षयोपाये, भग० ३३ श० ९ उ० ।

**सव्वदुक्खविमोक्ष-** पुं० [सर्वदुःखविमोक्ष]

सर्वाण्यशेषाणि बहुभिर्भवैरुपचितानि दुःखकारणत्वाद् दुःखानि कर्माणि तेभ्यो विमोक्षोविमोक्षणं, विमोचनम् । सूय० १ श्रु० ११ निर्वाणे, सूय० १ श्रु० २ उ० ।

कर्मक्षये, सम० ।

**सव्वदुह-** न० [सर्वदुःख]

समस्तशारीरमानसदुःखे, दश० २ चू० ।

**सव्वदूरमूल-** न० [सर्वदूरमूल]

सर्वथा दूरं विप्रकृष्टं मूलं च निकटं सर्वदूरमूलं तद्योगाच्छब्दोऽपि सर्वदूरमूलः । अत्यर्थदूरवर्तिनि अत्यर्थासन्ने च । ‘सव्व-दूरमूलमणितियं सव्वं जाणइ पासइ ।’ भग० ५ श० ४ उ० ।

**सव्वदेवसूरि-** पुं० [सर्वदेवसूरि]

वृद्धगच्छप्रथमसूरौ, गच्छा० ३ अधि० ।

**सव्वद्धा-** स्त्री० [सर्वद्धा]

अतीतानागतवर्तमानकालस्वरूपे अद्धा-कालभेदे, अणुओ० ।

**सव्वधत्ता-१** स्त्री० [सर्वधत्ता]

सर्वजीवाजीवाख्यं वस्तु धत्तं निहितमस्यां विवक्षायामिति सर्वहिता । ननु दधातेहीति शब्दादेशाद् हितं भवितव्यं कथं धत्तमित्युच्यते प्राकृते देशीपदस्याविरुद्ध-त्वान्न दोषः । अथवा-सर्वं दधातीति सर्वधं निरवशेषवचनं सर्वधमात्तमागृहीतं यस्यां विवक्षायां सा सर्वधत्ता । सर्वग्राहके, सर्वग्रहीतरि, आव० १ अ०

**सव्वधत्ता-२** त्रि० [सर्वधातु]

सर्वधमात्ता सर्वधात्ता । निरवशेषे, आव० १ अ० । आव० म० ।

**सव्वधत्तासव्व-** पुं० [सर्वधत्तासर्व]

जीवाजीवविवक्षारूपे सर्वशब्दार्थे विशेष० । आव० म० ।

**सव्वधम्म-** पुं० [सर्वधर्म]

समस्तेषु अनुष्ठानरूपेषु स्वभावेषु, सूय० १ श्रु० ८ अ० ।

सर्वेषु क्षान्त्यादिषु धर्मेषु, उवा० १ अ० ।

**सव्वधम्मपरिभ्रष्ट-** त्रि० [सर्वधर्मपरिभ्रष्ट]

सर्वधर्मेभ्योक्षान्त्यादिभ्यः आसेवितेभ्योऽपि यावत् प्रत्यननु-पालनात् लौकिकेभ्योऽपि गौरवादिभ्यः परिभ्रष्टः-सर्वतश्च्युतः । कृतधर्मात्परिच्युते, दश० १ चू० ।

**सव्वधम्माणुवत्तण-** त्रि० [सर्वधर्माणुवर्तन]

सर्वं धर्मं क्षान्त्यादिरूपमनुवर्तत इति तदनुकूलाचारतया स्वी-कुरुत इत्येवंशीलो यः स तथा । समस्तक्षमादिधर्माऽऽचरण-शीले, उक्त० ७ अ० ।

**सव्वपगइ-** स्त्री० [सर्वप्रकृति]

राज्ञोऽष्टादशसु नैगमादिनगरवास्तव्यप्रजायाम्, कल्प० १ अधि०

**सव्वपत्थार-** पुं० [सर्वप्रस्तार]

समस्तसङ्घापद्रवीभूते, वव० १ उ० ।

**सव्वपरिण्णाचारि-** पुं० [सर्वपरिज्ञाचारिन्]

सर्वतः सर्वकालं सर्वप-रिज्ञया द्विविधयापि चरितुं शीलमस्येति सर्वपरिज्ञाचारी । वि-शिष्टज्ञानान्विते, सर्वसंवरचारित्रोपेते च । आचा० १ श्रु० २ अ० ६ उ० ।

**सव्वपाणभूयजीवसत्तसुहावह-** त्रि० [सर्वप्राणभूतजीवसत्त्वसुखावह]

सर्वे विश्वे ते प्राणाश्च द्वीन्द्रियादयो भूताश्च तरवो जीवाश्च पञ्चेन्द्रियाः सत्त्वाश्च पृथिव्यादयः, ततस्तेषां सुखं शुभं वा आवह-तीति सर्वप्राणभूतजीवसत्त्वसुखावहम् । सर्वेषां प्राणादीनां संयमप्रतिपादकत्वात्सुखहेतौ, आव० ४ अ० । ठा० ।

**सव्वपावपरिवज्जिय-** त्रि० [सर्वपापपरिवर्जित]

सर्वाऽमङ्गलै रहिते, कल्प० १ अधि० ३ क्षण ।

**सव्वपुष्फवत्थगंधमल्लालङ्कार-** पुं० [सर्वपुष्पवत्त्रगन्धमाल्यालङ्कार]

गन्धाः-वासा माल्यानि पुष्पदामानि अलङ्कारा आभरणविशेषाः सर्वशब्देन सह विशेषणसमासः । समस्तपुष्पादौ, रा० ।

**सव्वप्पग-** पुं० [सर्वात्मिक]

सर्वत्राप्यात्मा यस्यासौ सर्वात्मकः । लोभे, सूय० १ श्रु० १६ अ० । सर्वस्वरूपे, सूय० १ श्रु० १ अ० २ उ०

**सव्वप्पभा-** स्त्री० [सर्वप्रभा]

उत्तररुचकपर्वतवास्तव्यायां दिक्कुमा-र्याम्, आव० १ अ० । जंबू० । आव० चू० । आव० म० ।

**सव्वफलिहमय-** त्रि० [सर्वस्फटिकमय]

सर्वात्मना स्फटिकमये, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**सव्वफाससह-** त्रि० [सर्वस्पर्शसह]

परीषहरूपाणां सर्वेषां शीतोष्ण-दंशमशकतृणादिस्पर्शानां सहिष्णौ, सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ० ।

**सव्वबंध-** पुं० [सर्वबन्ध]

सर्वात्मना बन्धे, यथा क्षीरनीरयोः । भग०७ श०१ उ० ।

**सव्वबल-** न० [सर्वबल]

समस्तहस्त्यादिसैन्ये, जीवा०६ प्रति०४ अधि० । भग० । रा० । कल्प० । विपा० ।

**सव्वबुद्ध-** त्रि० [सर्वबुद्ध]

सर्वतीर्थकरे, दश०६ अ० ।

**सव्वब्भन्तर-** त्रि० [सर्वाभ्यन्तर]

सर्वमध्यवर्तिनि, सूर०१ पाहु० । उव० । न० ।

**सव्वभक्ति-** स्त्री० [सर्वभक्ति]

सर्ववस्तुप्रकारे, सर्वा भक्तयः प्रकारा येषां तानि तथा । सर्वप्रकारोपेतेषु, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**सव्वभाव-** पुं० [सर्वभाव]

सर्वपरिणामे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

शक्त्यनुरूपे स्वरूपसंरक्षणादौ, दश०८ अ० ।

सर्वप्रकारे स्पर्शरसगन्धरूपज्ञाने, 'सव्वभावेण जाणइ पासइ' ठा० १० ठा० ३ उ० ।

केवलज्ञान साक्षात्कारे, भग०८ श०२ उ० । ठा० ।

**सव्वभावविउ-** पुं० [सर्वभाववित्]

भारते वर्षे आगमिष्यन्त्यामुत्सर्पिण्यां भविष्यति द्वादशे तीर्थकरे सम० ।

**सव्वभासाणुगामि-** त्रि० [सर्वभाषानुगामिन्]

सर्वभाषा आर्याऽनार्या अमरवाचोऽनुगच्छन्ति अनुकुर्वन्ति तद् भाषाभाषित्वात् स्वभाषयैव वा लब्धिविशेषात् तथाविध प्रत्ययजननात् । अथवा-सर्वभाषाः संस्कृतप्राकृतमागध्याद्या अनुगमयन्ति व्याख्यान्तीत्येवं शीला ये ते तथा । समस्त भाषाविशारदेषु, उव० । रा० ।

**सव्वभियार-** त्रि० [सव्यभिचार]

सह व्यभिचारेण वर्तते इति सव्यभिचारः । व्यभिचाराख्य-हेतुदोषसहिते, दश०१ अ० ।

**सव्वभूइ-** स्त्री० [सर्वभूति]

सर्वसम्पदि, विपा०१ श्रु०९ अ० ।

**सव्वभूमिया-** स्त्री० [सर्वभूमिका]

सर्वप्रासादभूमिकासु, विपा०१ श्रु०६ अ० ।

**सव्वभूय-** पुं० [सर्वभूत]

सर्वेषु त्रसेषु स्थावरेषु च जीवेषु, उत्त०२० अ० । आतु० ।

**सव्वभूयप्पभूय-** त्रि० [सर्वभूतात्मभूत]

सर्वभूतेष्वात्मभूतः सर्वभूतात्मभूतः । सर्वभूतानामात्मवद्दर्शके, दश०४ अ० ।

**सव्वभूयसुहावह-** त्रि० [सर्वभूतसुखावह]

सर्वप्राणिहिते, दश०६अ

**सव्वमंगलभेय-** पुं० [सर्वमङ्गलभेद]

सकलकल्याणप्रकारे, कल्प०१ अधि०३ क्षण ।

**सव्वय-** पुं० [सद्व्रत]

शोभनव्रते, ठा० ३ ठा० २ उ० ।

**सव्वरयण-** पुं० [सर्वरत्न]

महानिधिभेदे, ठा० ९ ठा० ३ उ० । जंबू० । आव०चू० ।

**सव्वरयणकूड-** न० [सर्वरत्नकूट]

मानसोत्तरपर्वतस्य स्वनामख्याते तृतीये कूटे, ठा० ४ ठा० २ उ०

**सव्वरयणा-** स्त्री० [सर्वरत्ना]

उत्तरपाश्चात्यस्य रतिकरपर्वतस्य पश्चिमदिशि ईशानाग्रमहिष्या बसुमित्रायाः राजधान्याम्, ठा० ४ ठा० २ उ० । जीवा० ।

**सव्वरयणामय-** त्रि० [सर्वरत्नामय]

सर्वरत्नाः सामस्येन रत्नमया न-त्वेकदेशे इति सर्वरत्नमयाः ।

समस्तरत्नमयेषु, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

सर्वात्मना रत्नमये, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**सव्वराग-** पुं० [सर्वराग]

समस्तविषयाभिमुख्यहेतुभूतात्मपरिणामविशेषे, उव० ।

**सव्वरी-** स्त्री० [सर्वरी]

रात्रौ, बुह०१ उ०३ ।

**सव्वल-** पुं० [षड्बल]

भल्ले, पण्हा०१ अ०

**सव्वलोय-** पुं० [सर्वलोक]

सर्वः-खल्वधस्तिर्यगूर्ध्वभेदभिन्नः सर्वश्चासौ लोकश्च सर्वलोकः । त्रैलोक्ये, । आव० ।

त्रस स्थावरभेदैर्भिन्ने प्राणिगणे, सूय०१ श्रु०५ अ०२ उ० ।

सर्वजने सम० ३० सम० ।

**सव्वलोयपर-** पुं० [सर्वलोकपर]

सर्वजनात्प्रकृष्टे, 'सव्वलोयपरे तेणं महामोहं पकुव्वइ' सम० ३० सम० ।

**सव्वलोयपरियावण्ण-** त्रि० [सर्वलोकपर्यापन्न]

उपपातसमुद्घातस्व-स्थानैः सर्वलोके वर्तमाने, । भग० ३४ श० १ उ० ।

**सर्वलोयसारंग-** न० [सर्वलोकसारङ्ग]

सर्वस्मिन्नपि लोके सारमङ्गं स्वरूपं यस्य तत् सर्वलोकसारङ्गम् ।  
चतुरङ्गे, तस्य सर्वलोकसाररूपत्वात् ।  
'नासेइ अगीयत्थो, चउरंगं सर्वलोयसारंगं ।' वव० ३ उ० ।

**सर्ववज्रमय-** त्रि० [सर्ववज्रमय]

सर्वात्मना वज्रमये, जीवा०३ प्रति० ४ अधि० ।

**सर्ववाइ-** पुं० [सर्ववादिन्]

कपिलकणादाक्षपादसौद्धोदनिजैमिनिप्रभृतिमतानुसारिषु सम-  
स्तवादिषु, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।

**सर्ववाय-** पुं० [सर्ववाद]

सर्वस्मिन् बौद्धादिके वादे, सूय०१ श्रु०६ अ० ।

**सर्ववार-** न० [सर्ववार]

बहुशः शब्दार्थे, सूय०१ श्रु०६ अ० ।

**सर्वविग्रहिय-** पुं० [सर्वविग्रहिक]

विग्रहो वक्रं लघु इत्यर्थस्तद-स्यास्तीति विग्रहिकः । सर्वथा  
विग्रहिकः सर्वविग्रहिकः । सर्वसंक्षिप्ते, भग०१३ श०४ उ० ।

**सर्ववित्थाराणंतय-** न० [सर्वविस्तारानन्तक]

सर्वाकाशास्तिकायरूपेऽनन्तकभेदे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सर्वविभूइ-** स्त्री० [सर्वविभूति]

समस्तस्वस्वाभ्यन्तरवैक्रियकरणादिबाह्यरत्नादिसंपदि, । रा० ।  
कल्प० । भग० । जीवा० ।

समस्तशोभायाम्, कल्प०१ अधि०५ ।

**सर्वविभूसा-** स्त्री० [सर्वविभूषा]

यावच्छक्तिस्फारोदारशृङ्गारकरणे, रा० ।

**सर्वविमुक्क-** पुं० [सर्वविमुक्त]

सिद्धे, आचा०२ श्रु०४ चू० ।

**सर्वविरइवाइ-** पुं० [सर्वविरतिवादिन्]

आत्मानं सर्वविरतिमत्त्वेन ख्यापके, विशेषे ।

**सर्वविरइसामाइय-** न० [सर्वविरतिसामायिक]

सर्वविरतिरेव सामायिकमिति । सामायिकभेदे, विशेषे ।

**सर्वविसनिवारणी-** स्त्री० [सर्वविषनिवारणी]

सर्वप्राणातिपातविरतिप्रभृतिसंपूर्णपापनिवारिण्यां विद्यायाम्,  
'सर्वं पाणाइवायं पच्चक्खाइ अलियवयणं च । सर्वमदिन्ना-  
दाणं, अब्बंभपरिगहं स्वाहा । इति तन्मत्रः, आव०४ अ० ।

**सर्ववेइ-** पुं० [सर्ववेदिन्]

सर्वज्ञे, न० ।

**सर्ववेरामय-** त्रि० [सर्ववज्रमय]

सर्वात्मना वज्रमये, रा० ।

**सर्वस-** न० [सर्वस्व]

सर्वसारे, । निसि० ।

**सर्वसंका-** स्त्री० [सर्वशङ्का]

सर्वविषये शङ्काभेदे, यथाऽस्ति वा धर्मो नास्ति वा यथा वा सर्व  
मिदं प्राकृतनिबद्धत्वात्सर्वमिदं शास्त्रमसमञ्जसमादि । निसि०

**सर्वसंगम-** पुं० [सर्वसङ्गम]

समस्तस्वजनमेलापके, कल्प०१ अधि०५ ।

**सर्वसंगातीत-** त्रि० [सर्वसङ्गातीत]

वीतरागे, उव० ।

**सर्वसंगावगय-** त्रि० [सर्वसङ्गापगत]

अपगतद्रव्यभावसङ्गे, दश०१ अ० ।

**सर्वसंजम-** पुं० [सर्वसंयम]

सर्वात्मना मनोवाक्कायसंयमने, रा० ।

'सर्वसंजमतवसुचरियफलनिष्वाणमग्गेणेति' सर्वसंयमः सर्वा-  
त्मनामनोवाक्कायसंयमनं तस्य सुचरितस्य वा आशंसादि-  
दोषरहितस्य तपसो यत्फलं निर्वाणं तन्मार्गेण । किमुक्तं  
भवति-सर्वसंयमेन सुचरितेन च तपसा निर्वाणग्रहणमनयोः  
निर्वाणफलत्वख्यापनार्थम् । रा० ।

**सर्वसंभम-** पुं० [सर्वसम्भ्रम]

सर्वोत्कृष्टे सम्भ्रमे, सर्वोत्कृष्टसम्भ्रमश्च स्वनायकविषयकबहु-  
मानख्यापनपरा स्वनायकसंपादनायवावच्छक्तिप्रत्वरिता त्वरित  
वृत्तिः । जीवा०३ प्रति०४ अधि० । रा० ।  
समस्तप्रमोदकृतौत्सुक्ये, भग०८ श०३३ उ० । कल्प० ।

**सर्वसमण्णागयपण्णाण-** पुं० [सर्वसमन्वागतप्रज्ञान]

सर्वाणि समन्वागतानि प्रज्ञानानि यस्यात्मनः स सर्वसमन्वागत-  
प्रज्ञानः ।

सर्वावबोधविशेषानुगते सर्वेन्द्रियज्ञानैः पटुभिर्यथावस्थितविषय  
ग्राहिभिरविपरीतैरनुगते, आचा०१ श्रु०१ अ०७ उ० । रा० ।

**सर्वसमुदय-** पुं० [सर्वसमुदय]

स्वस्वाभियोग्यादिसमस्तपरिवारे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० । रा०  
पौरादिमीलने, भग०९ श०३३ उ० ।

महाजनमेलके, कल्प०१ अधि०५ क्षण । विपा० ।

**सर्वसव्वणुसंमय-** त्रि० [सर्वसर्वज्ञसंमत]

सर्वेषां सर्वज्ञानां सम्मतम् इष्टं स सर्वसर्वज्ञसम्मतम्, सर्वं च  
तत् सर्वज्ञसम्मतं च सर्वसर्वज्ञसम्मतम् । प्रवचनतत्त्वे, सम० ।

**सर्वसह-** त्रि० [सर्वसह]

परिषहोपसर्गसहिष्णौ, आचा०२ श्रु०४ चू० ।

**सर्वसावज्जविरय-** त्रि० [सर्वसावद्यविरत]

सर्वसपापयोगनिवृत्ते, सूय० ।

**सर्वसाहणणाबंध-** पुं० [सर्वसंहननाबन्ध]

सर्वेण सर्वस्य वा क्षीरनीरादीनामिव बन्धे, भग०८ श०९ उ० ।



**सव्वसाहु-** पुं० [सर्वसाधु]

स्थविरकल्पिकादिभेदभिन्नेषु मोक्षसाधकेषु मुनिषु, आव०चू० ।

**सव्वसाहुवन्दन-** न० [सर्वसाधुवन्दन]

समस्तसाधुवन्दने, पर्युषणायां सर्वसाधुवन्दनं कर्तव्यम् ।

कल्प०१ अधि०१ ।

**सव्वसिणेह-** पुं० [सर्वसिंह]

मात्रादिसम्बन्धहेतौ स्नेहे, उव० ।

**सव्वसिद्ध-** पुं० [सर्वसिद्ध]

सर्वे च ते सिद्धाश्च, सर्वं वा सिद्धं साध्यं येषां ते सर्वसिद्धाः ।

तीर्थङ्करसिद्धादिभेदभिन्नेषु सिद्धेषु, आव० ५ अ० । आव०चू० ।

। दश० । जंबू० । आचा० । सूर०

**सव्वसिद्धा-** स्त्री० [सर्वसिद्धा]

पञ्चम्यां दशम्यां च रात्रितिथौ, ज्यो० ४ पाहु० । चंद० ।

**सव्वसिरी-** स्त्री० [सर्वस्री]

वीरतीर्थे अपश्चिमश्राविकायाम्, 'दुप्पसहो सूरी, फग्गुसिरी अज्जा, नाइलो सावओ, सव्वसिरी साविया, एस अपच्छिमो सङ्घो । आव०चू० ।

**सव्वसुइ-** त्रि० [सर्वशुचि]

सर्वतःशुचौ, आव० ४ अ० ।

**सव्वसुण्णया-** स्त्री० [सर्वशून्यता]

सर्वेषां भावानामभावे, सा च बौद्धानां संमता । अणुओ० ।

**सव्वसुविण-** पुं० [सर्वस्वप्न]

समस्तस्वप्नमहास्वप्नोभयेषु, भग० १६ श०६ उ० । कल्प० ।

**सव्वसुहप्पभव-** पुं० [सर्वसुखप्रभव]

सर्वस्य सुखस्योत्पादकारणे, वव०१० उ० ।

**सव्वसूयग-** पुं० [सर्वसूचक]

सूचकानुसूचकादिकथितस्य स्वयमुपलब्धस्य च अमात्यकथके सामान्तराजपुरुषे, वव० १ उ० ।

**सव्वसुहुम-** त्रि० [सर्वसूक्ष्म]

सर्वथा सूक्ष्मे, भग०१९ श०३ उ० ।

**सव्वसुहुमतर-** त्रि० [सर्वसूक्ष्मतर]

सर्वेषां मध्ये अतिशयेन सूक्ष्मे, सूक्ष्मतरकोऽप्यत्र । भग० १९ श० ३ उ० ।

**सव्वसेट्ठ-** त्रि० [सर्वश्रेष्ठ]

सर्वप्रधाने, सूय०१ श्रु०६ अ० ।

**सव्वसेय-** त्रि० [सर्वश्वेत]

सर्वात्मना श्वेते, रा० ।

**सव्वसो-** अव्य० [सर्वशस्]

सर्वैः प्रकारैरित्यर्थे, उत्त०६ अ० । निसि० । आचा० । सूय० ।

**सव्वसोक्ख-** त्रि० [सर्वसौख्य]

आनन्दे, पण्हा०३ अ०

**सव्वस्स-** न० [सर्वस्व]

समस्तद्रव्ये, ठा० ३ ठा० १ उ० ।

सव्वस्सहरणं कयं । निसि०१ उ० ।

**सव्वहा-** अव्य० [सर्वथा]

सर्वैः प्रकारैरित्यर्थे, विशेषे० । पण्हा० ।

**सव्वहाकयकिच्च-** पुं० [सर्वथाकृतकृत्य]

सर्वथा सर्वैः प्रकारैः कृतं कृत्यं येन स तथा । निष्ठितार्थे । सूय० ।

**सव्वागास-** पुं० [सर्वाकाश]

सर्वं च तदाकाशं च सर्वाकाशम् । लोकाऽलोकाऽऽकाशे, विशेषे० । नं० ।

**सव्वागासपएसग्ग-** न० [सर्वाकाशप्रदेशाग्र]

सर्वाकाशस्थलोलोकाकाशस्य प्रदेशाः—निर्विभागा भागाः सर्वाकाशप्रदेशाः तेषामग्रं परिमाणं सर्वाकाशप्रदेशाग्रम् । सर्वाकाशप्रदेशैरनन्तशो गुणिते, नं० ।

**सव्वागाससेट्ठि-** स्त्री० [सर्वाकाशश्रेणि]

सर्वाकाशस्य बुद्ध्या चतुरस्रप्रतरीकृतस्य प्रदेशपङ्क्तौ, भग० १२ श० १ उ० ।

**सव्वाणुभूइ-** स्त्री० [सर्वानुभूति]

भारतवर्षे भविष्यति पञ्चमतीर्थकरे, पढमोदढाउजीवो सव्वाणुभूई' गोशालेन भस्मसात्कृते श्रीवीरजिनशिष्ये, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सव्वाणुलोमया-** स्त्री० [सर्वानुलोमता]

गुरोः सर्वेषूपदेशेषु अप्रतिकूलतायाम्, वव०१ उ० ।

**सव्वातिहि-** पुं० [सर्वातिथि]

साधौ, अणुओ० ।

**सव्वादर-** पुं० [सर्वादर]

समस्तयावच्छक्तितोलने, रा० । जीवा० ।

सर्वोचितकृत्यकरणे, विपा०१ श्रु०९ अ० ।

**सव्वादि-** पुं० [सर्वादि]

समस्तवस्तुस्तोममूले, निसि०११ उ० ।

**सव्वादि-** पुं० [सद्वादिन्]

सन् शोभनोवादी सद्वादी । आत्मास्तित्ववादिनि, निसि०११ उ०

**सव्वामगंध-** पुं० [सर्वामगन्ध]

आमं च गन्धश्च आमगन्धं समाहार-द्वन्द्वः सर्वं च तदामगन्धं च सर्वामगन्धम् । कार्त्स्न्येनापरिशुद्धे, पूतिदोषेण दुष्टे च । 'सव्वा-मगंधं परिण्णाय णिरामगंधे परिवएज्जा ।' आचा० १ श्रु० २ अ० ५ उ० ।

**सव्वाय-** पुं० [सद्वाद]

सन् शोभनो वादः सद्वादः । परैः सह शोभने वादे, 'काऊण पोतणम्मि सव्वायं णिवुत्तो भगवं' बुह०६ उ०

**सव्वारक्खिय-** पुं० [सर्वारक्षिक]

सर्वाः प्रकृतयो रक्षति यः स सर्वारक्षिकः । राज्ञः कुम्भकारादीनां प्रकृतीनां रक्षके, निसि० ४ उ०

**सव्वावत्ति-** स्त्री० [सर्वापत्ति]

सर्वेणातपेनापत्तिर्व्यापत्तिर्यस्य क्षेत्रस्य सा सर्वापत्तिः । सर्वात-पव्याप्ते, सर्वापत्तिं स्पृशन् किं क्षेत्रं स्पृशति । भग० ।

**सव्वाऽवरोह-** पुं० [सर्वाऽवरोध]

सर्वान्तःपुरे, उव० । कल्प० ।

**सव्वासि-** पुं० [सर्वाशिन]

सर्वमश्राति इत्येवंशीलः सर्वाशी । बहुभक्षके, वव०१ उ० ।

**सव्वाहिवइ-** पुं० [सर्वाधिपति]

स्वदेशेऽन्यत्र वा सर्वत्र प्रभवति ।

सार्वभौमे, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**सर्व्विंदियकायजोगजुंजणया-** स्त्री० [सर्व्वेन्द्रियकाययोगयोजनता]

सर्व्वेन्द्रियाणां काययोगस्य च योजनता प्रयोजनव्यापारणं सर्व्वेन्द्रियकाययोगयोजनता । कायविनयभेदे, गच्छा०१ अधि० ।

**सर्व्विंदियगायपल्हायणिज्ज-** त्रि० [सर्व्वेन्द्रियगात्रप्रह्लादनीय]

सर्वाणीन्द्रियाणि गात्रं च प्रह्लादयतीति सर्व्वेन्द्रियगात्रप्रह्लादनीयम् । वैशद्यहेतौ, जंबू०२ वक्ष० । जीवा० ।

समस्तेन्द्रियशरीरव्यापारकारिणि, कल्प०१ अधि०३ क्षण ।

**सर्व्विंदियजोगजुंजणया-** स्त्री० [सर्व्वेन्द्रिययोगयोजनता]

सर्व्वेषामिन्द्रियाणां योगा व्यापाराः सर्व्वे वा ये इन्द्रिययोगास्तेषां योजनता करणं सर्व्वेन्द्रिययोगयोजनता । कायविनयभेदे, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

सर्व्वेषामिन्द्रियाणां प्रयोगे, भग० ३५ श० १ उ० ।

**सर्व्विंदियणिव्वत्ति-** स्त्री० [सर्व्वेन्द्रियनिर्व्वृत्ति]

सर्व्वेषामिन्द्रियाणां निष्पत्तौ, भग० १९ श० ८ उ० ।

**सर्व्विंदियसमाहिय-** त्रि० [सर्व्वेन्द्रियसमाहित]

शब्दादिभिरनाक्षिप्ते, दश०५ अ०१ उ० ।

शब्देषु रागद्वेषावगच्छति, दश०८ अ० ।

**सर्व्विंदियाभिणिव्वुड-** पुं० [सर्व्वेन्द्रियाभिनिर्व्वृत्त]

सर्वाणि च तानि इन्द्रियाणि च स्पर्शनादीनिरभिनिर्व्वृत्तः । संवृतेन्द्रिये, जितेन्द्रिये च । सूय०१ श्रु०१० अ० ।

**सर्व्विड्ढि-** स्त्री० [सर्व्विर्द्धि]

समस्तच्छत्रादिराजचिह्नरूपायामाभरणादिसंबन्धिन्यां वा कान्तौ कल्प०५ अधि०५ । भग० । रा० । उव० ।

**सव्विया-** स्त्री० [सर्व्विका]

सर्वाशब्दार्थे, विशेष० ।

**सव्वुक्कड-** पुं० [सर्व्वोत्कट]

प्रकृष्टदण्डराज्यस्तेनदेशादिके सर्व्वोत्तमे, ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

**सव्वुक्किट्ठ-** त्रि० [सर्व्वोत्कृष्ट]

स्वभावेन सुन्दरे, दश०७ अ० ।

**सव्वेय-** त्रि० [सर्व्वेजस्]

सर्व्वतश्चले, भग०२५ श०४ उ० ।

**सव्वेसणा-** स्त्री० [सर्व्वेषणा]

सर्वाहाराद्युद्गमोत्पादनग्राहैषणायाम्, आचा०१ श्रु०६ अ०२ उ० ।

**सव्वोउय-** न० [सर्व्वर्तुक]

कुसुमसंछन्ने, विपा० १ श्रु० १ अ० ।

सव्वोउयसुरभिकुसुमपरिवरियसिरया' सर्व्वर्तुकसुरभिकुसुमैर्वृता वेष्टिता शिरोजा यस्याः सा तथा । भग० ९ श० ३ उ० । जीवा० । पत्र० ।

**सव्वोदग-** न० [सर्व्वोदक]

सर्व्वतीर्थनद्याद्युदके, जीवा०३ प्रति०४

सर्व्वतीर्थसम्भवे जले, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**सव्वोसह-** न० [सर्व्वोषध]

सर्व्वस्मिन् विष्णुमूत्रादिके औषधे, न० ।

**सव्वोसहि-** पुं० [सर्व्वोषधि]

सर्व्वे विष्णुमूत्रकेशनखादयः 'मोव' शब्दः पढमानस्थो दृष्टव्वः । उक्ताऽनुक्ताश्च औषधयो यस्य स तथा । गच्छा०२ अधि० ।

सर्व्व एव विष्णुमूत्रकेशनखादयोऽवयवाः 'मोव' शब्दः पढमानस्थो दृष्टव्वः । सुरभयो व्याध्यपनयनसमर्थत्वादौषधयो यस्या-सौ सर्व्वोषधिः । अथवा सर्वा आमर्षौषध्यादिका औषधयो यस्यैकस्यापि साधोः स तथा । ऋद्धिविशेषशालिनि विशेष० ।

आव०म० । आव०चू० ।

सर्व्वोषधिः सिद्धार्थकः । जीवा० ।

**सस-** पुं० [शश]

शशनं शशः । । चंद० २० पाहु० । सूर० ।

आटव्ये चतुष्पदजातिविशेषे, पण्हा० २ अ० रा० । नाया० ।

**ससंक-** पुं० [शशाङ्क]

चन्द्रे, बुह०१ उ०३ ।

**ससंकिय-** त्रि० [सशङ्कित]

शङ्कनं शङ्कितं सह शङ्कितं यस्य येन वा स तथा । किं ब्रजामि किं वा नत्येवंरूपशङ्कोपेते, वव० २ उ० ।

**ससंधिय-** त्रि० [ससंधित]

उपहते सीविते, कृतथिगले वस्त्रे, आव० म०१ अ० ।

**ससंभमोवत्तिया- स्त्री० [ससम्भ्रमोपवर्तिका]**

ससंभ्रमं व्याकुलचित्त-तया प्रवर्ततयाऽपवर्तयति क्षिपति या सा तथा । सत्त्वरकार्यकारिण्यां चेट्याम्, भग० ९ श० ३३ उ० ।

**ससग- पुं० [शशक]**

खरगोश इति ख्याते आटव्यपशौ, पत्र० १ पद ।  
अस्मिन् भरताद्धे वनवासिन्यां नगय्यां जितशत्रोः राज्ञः पुत्रे सुकुमालिकाभ्रातरि, बृह० ४ उ० । निसि० ।

**ससण- पुं० [श्वसन]**

श्वसिति प्राणित्यनेनेति । श्वसनः । वायौ, न० ।  
निश्वासे, न० ।  
नाशिकायाम्, । उव० ।

**ससणिद्ध- त्रि० [सस्त्रिग्ध]**

शीतोदकादिस्तिमिते, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ६ उ० ।  
बिन्दुरहिते आर्द्रे हस्तादौ, उव० ।  
ईसिं उल्ला ससणिद्धा । निसि० १३ उ० ।

**ससबिन्दु- पुं० [शशबिन्दु]**

वल्लीवनस्पतिभेदे, पत्र० १ पद ।

**ससमय- पुं० [स्वसमय]**

अर्हन्मतानुसारिशस्त्रात्मके । उत्त० १ अ० ।  
सिद्धान्ते, । अणुओ० ।

**ससमयकुसल- पुं० [स्वसमयकुशल]**

स्वसिद्धान्तनिपुणे, पण्हा० ५ अ० ।

**ससमयण- पुं० [स्वसमयज्ञ]**

स्वसमयं जानातीति स्वसमयज्ञः । गीतार्थे, तादृशेनैव भिक्षायां प्रवेष्टव्यं गोचरप्रदेशादौ पृष्ठः सन् सुखेनैव भिक्षादोषानाचष्टे ।  
आचा० १ श्रु० २ अ० ५ उ० ।

**ससमयपरसमय- पुं० [स्वसमयपरसमयिक]**

स्वसिद्धान्तपरसिद्धान्तौ यत्र स्तः स स्वसमयपरसमयिकः ।  
स्वपरसमयनिबद्धे, ठा० १० ठा० ३ उ० । रा० ।

**ससमयपरसमयविय- पुं० [स्वसमयपरसमयवित्]**

स्वसमयं परसमयं वेति इति स्वसमयपरसमयवित् । स्व-  
परशास्त्रज्ञे, स हि परेणाक्षिप्तः सुखेन स्वं पक्षं परपक्षं च निर्वाहयति । आचा० १ श्रु० १ अ० १ उ० ।

**ससमयपय- न० [स्वसमयपद]**

जीवाद्यर्थप्रतिपादके पदे, अणुओ० ।

**ससमयवज्ज- त्रि० [स्वसमयवर्ज]**

स्वसिद्धान्तशून्ये, दश० ३ अ० ।

**ससमयसुत्त- त्रि० [स्वसमयसूत्र]**

स्वसमयसूत्रं 'करेमि भंते' इत्यादि । बृह० ।

**ससय- पुं० [शशक]**

लोमटकाकतौ आटव्यजीवे, पत्र० १ पद । विपा० ।  
सुकुमालिकाभ्रातरि जराकुमारपौत्रे जितशत्रोः स्वनामख्याते पुत्रे, निसि० ७ उ० ।

**ससरक्ख- त्रि० [ससरजस्क]**

सचित्तरजोयुक्ते, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ६ उ० ।  
तापसविशेषे, जीवा० १ प्रति० ।

**ससरक्खपाणिपाय- पुं० [ससरजस्कपाणिपाद]**

सचेतनादिरजोगुण्ठिपादे, दशा० १ अ० । आव० ।  
'ससरक्खपाणिपाओ भवइ ससरक्खपाणिपाए सह सरक्खेणं ससरक्खे अथंडिल्ला थंडिल्लं संकमतो न पमज्जइ थंडिल्लाओ वि अथंडिल्लं कण्हभोमादिसु विभासा । ससरक्खपाणिपाए ससरक्खेहिं हत्थेहिं भिक्खं गेण्हइ । अहवा-अणंतरहियाए पुढवीए निसीयणाइ करंतो ससरक्खपाणिपादो भवति ।' आव० ४ अ० ।

**ससरक्खमोस- पुं० [ससरजस्कामर्ष]**

अप्रमृज्य रजोयुक्तस्य स्पर्शने, आव० ४ अ० ।

**ससरीरि- पुं० [सशरीरिन्]**

सह यथासम्भवं पञ्चविधशरीरेण ये ते । सशरीरिणः । संसारिषु,  
ठा० २ ठा० ४ उ० । भग० ।

**ससलोमय- न० [शशलोमज]**

शशलोमो जाते सूत्रे, ठा० ४ ठा० ३ उ०

**ससल्ल- त्रि० [सशल्य]**

शल्यसहिते, 'अहो भयवं सव्वलक्खणसम्पन्नो किं तु ससल्लो पलोयंतेण दिट्ठो कण्णेसु तेण वाणिएण भन्नइ । आव० म० १ अ०

**ससहर- पुं० [शशधर]**

चन्द्रे, उत्त० ।

**ससा- स्त्री० [स्वसु]**

भगिन्याम्, सूय० १ श्रु० ३ अ० २ उ० ।

**ससागरंता- स्त्री० [ससागरान्ता]**

समुद्रान्तायाम्, पण्हा० ५ आश्र० द्वार

**ससागरिय- त्रि० [ससागरिक]**

सस्त्रीके, आचा० २ श्रु० १ चू० २ अ० ३ उ० ।

**ससार- त्रि० [ससार]**

सज्जातसारे, 'ससाराओ ओसहीओ' इत्यालपेत् । सारारः संजाततन्दुलादिसारा इत्येवमालपेत् । दश० ७ अ० ।  
ज्ञानदर्शनचारित्रसारवति, ओह० ।

**ससि- पुं० [शशिन्]**

चन्द्रे, आव० म० १ अ० । पण्हा० । दश० । ठा० । नाया० । उव० ।

**ससिकूड-** न० [शशिकूट]

जम्बूद्वीपे दक्षिणरुचकवरपर्वतस्य पञ्चमकूटे, ठा० ९ ठा० ३ उ०

**ससिणिद्ध-** त्रि० [ससिग्ध]

सह स्निग्धेन वर्तत इति ससिग्धः। स्निग्धता चेह बिन्दुरहिता ननु रोहितोदक्रमेण सम्मिश्रिता। दश० ४ अ०।

अगलदुदकबिन्दुक, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ७ उ०

**ससिया-** स्त्री० [शशिका]

शशस्त्रियाम्, पण्हा० १ अ०।

**ससिराय-** पुं० [शशिराज]

राजन्, यो हि मनोवाकायैः खेदं कृत्वा नरकं गतः। न०।

चन्द्र, उव०।

**ससिरिय-** त्रि० [सश्रीक]

सशोभे, नाया० १ श्रु० १ अ०। जीवा०। जंबू०। रा०। सूर०। सम०

**ससिसयल-** न० [शशिशकल]

चन्द्रखण्डे, उव०। तं०। जीवा०।

**ससिसोमाकार-** त्रि० [शशिसौम्याकार]

शशिवत् सौम्याकारे, भग० ११ श० ११ उ०। नाया०।

शशिवदरौद्राकारे, शशीवत् सौम्य आकारः कान्तं कमनीयं प्रियं प्रेमावहं च दर्शनं च येषां ते तथा। तं०।

**ससिह-** पुं० [सशिख]

केशानां धारके, वव० ४ उ०।

अमुण्डितशिरस्के, वव० १ उ०। पिंड०।

**ससुइय-** पुं० [सश्रुतिक]

हेयोपादेयपरिहारप्रवृत्तिज्ञे, आचा० १ श्रु० ५ अ० ३ उ०।

**ससुय-** त्रि० [ससुत]

पुत्रसहिते, उत्त० १४ अ०।

**ससुर-** पुं० [शशुर]

पत्नीपितरि, पतिपितरि च। अणुओ०।

**ससुरकुलरक्खिया-** स्त्री० [शशुरकुलरक्षिता]

शशुरकुले पालितायां स्त्रियाम्, उव०।

**ससोहगगुणसमूसिय-** त्रि० [ससौभाग्यगुणसमुच्छ्रित]

ससौभाग्यं गुणसमुच्छ्रितं च ससौभाग्यगुणसमुच्छ्रितम्। सौभाग्यगुणयुक्ते भग० ९ श० ३३ उ०।

**सस्स-** न० [शस्य]

खलकवर्तिनि शालिब्रीह्यादिधान्ये, सूय० २ श्रु० २ उ०। बुह०। ठा०।

**सस्सवई-** स्त्री० [शस्यवती]

शस्यं यस्यां भूमौ विद्यते सा शस्यवती शस्यसंपन्नायां धरित्र्याम्, निसि० २० उ०।

**सस्सामिवायण-** न० [स्वस्वामिवाचन]

स्वम्-आत्मीयं सचित्तादि स्वामी राजा तयोर्वचनम्। स्वस्वामिनो सम्बन्धप्रतिपादने, अणुओ०। ठा०।

**सस्सिय-** पुं० [सास्यिक]

सस्येन चरतीति सास्यिकः। कृषीवले, बुह० ३ उ०।

**सस्सिरीय-१** त्रि० [सश्रीक]

सह श्रिया वचनार्थशोभया यत्तत्सश्रीकम् ठा० ८ ठा० ३ उ०। शोभायुक्ते, भग० ९ श० ३३ उ०। उव०। नाया०। जीवा०। कल्प०। अनुप्रासाद्यलङ्कारोपेतत्वात्सशोभे, जंबू० २ वक्ष०। अंत०।

**सस्सिरीय-२** त्रि० [स्वश्रीक]

स्वश्रीः आत्मसम्पद्। भग०।

**सस्सिरीयरूपग-** त्रि० [सश्रीकरूपक]

सश्रीकाणि रूपकणियत्र तानि सश्रीकरूपकाणि। जीवा० ३ प्रति० ३ अधि०।

सशोभरूपकेषु, भग० ९ श० ३३ उ०।

**सह-** अव्य० [सह]

सार्द्धं शब्दार्थे, । उत्त०। आचा०। आव०। ठा०। जीवा०। युगपच्छब्दार्थे, सम०।

सम्बन्धेन सह शब्दः सम्बन्धवाची। आचा० १ श्रु० १ अ० १ उ०।

सर्व प्रकारैः समर्थे जीत०। सूय०। उव०।

युगलिकमनुष्यजातिभेदे, भग० ६ श० ७ उ०। जंबू०।

**सहआसित-** न० [सहासित]

स्त्रीभिः सहैकासने निषदने, निसि० १ उ०।

**सहकर-** पुं० [सहकर]

संघाते, रा०।

**सहकार-** पुं० [सहकार]

चूते, कल्प० १ अधि० ३ क्षण।

**सहकारि-** पुं० [सहकारिन्]

कारणसहायके, । आव०।

**सहजबुद्धिपरिणाम-** पुं० [सहजबुद्धिपरिणाम]

स्वभावसम्पन्नेऽकुसमयश्रवणसंपन्ने मतिस्वभावे, सम०।

सहजात् स्वभावसम्पन्नात्र कुसमयश्रवणसम्पन्नाद् बुद्धिपरिणामान्मतिस्वभावात् संशयो जातो येषां ते सहजबुद्धिपरिणामसंशयिताः सन्देहजाताश्च सहजबुद्धिपरिणामसंशयिताश्च ये ते तथा। तेषां श्रमणानामिति प्रक्रमः। सम० १३७ सम०।

**सहण-** न० [सहन]

भयाभावान्मर्षणे, नाया० १ श्रु० १ अ०।

**सहत्थ-** पुं० [स्वहस्त]

स्वकीय करे, ठा० २ ठा० १ उ०।

**सहस्रपाणाइवायकिरिया- स्त्री० [स्वहस्तप्राणातिपातक्रिया]**

स्वहस्तेन स्वप्रमाणात्रिवेदादिना परप्राणान् वा क्रोधादिना निपात- यतः स्वहस्तप्राणातिपातक्रिया । स्वहस्तेन प्राणिघात- क्रियायाम् ठा० १ ठा० ।

**सहस्रपारियावणिया- स्त्री० [स्वहस्तापरितापनिकी]**

स्वहस्ते न स्वस्य परस्य तदुभयस्य वा परितापना दशा वोदीरणाद्या क्रिया परितापनाकारणमेव वा सा स्वहस्तपारि- तापनिकी । भग० ।

स्व हस्तेन स्वदेहस्य परदेहस्य वा परितापनं कुर्वतः स्वहस्त- पारितापनिकी । पारितापनिक्याः क्रियाया भेदे, भग० ३ श०३ उ० । ठा० । आव०चू० ।

**सहदेव- पुं० [सहदेव]**

माद्रयां जाते पाण्डुपुत्रे, नाया०१ श्रु०१६ अ० ।

**सहदेवी- स्त्री० [सहदेवी]**

अवसर्पिण्यां जातस्य चतुर्थचक्रिणः सनत्कुमारस्य मातरि, सम० । आव० ।

**सहभुक्त- न० [सहभुक्त]**

स्त्रीभिः सहैकभाजने भुक्ते, निसि०१उ०

**सहमाण- त्रि० [सहमान]**

गुरुके, अनतिपातिनि च । 'सहमाणेषु य क्रमेण कायव्यं' । वव० १ उ० ।

**सहम्म- पुं० [सधर्म]**

समानधर्मशीलतायाम्, वव० ५ उ० ।

**सहय- त्रि० [सहज]**

स्वभावसम्पन्ने, सम० ।

उत्पत्त्या सहैव जाते, आचा०१ श्रु०२ अ०३ उ० । नाया० ।

**सहयर- पुं० [सहचर]**

सहाये, ठा० ४ ठा० ३ उ० ।

स्त्रियाम् सहचरी । नाया०१ श्रु०९ अ० ।

**सहरिय- त्रि० [सहरित]**

सह हरितैर्वर्तत इति सहरितम् । दूर्वाप्रवालादिसहिते, दशा० २ अ० । आचा० ।

**सहवासिय- त्रि० [सहवासिक]**

एकगृहवासिनि, सूय०२ श्रु०२ अ०

**सहसंभवण- न० [सहस्राग्रवन]**

समस्तचूतवृक्षसमुदाये, मथुराया नगर्या बहिः सहस्राऽऽग्र- वनमुद्यानम्, नाया०२ श्रु० १६ अ० ।

नागपुरस्य बहिः सहस्राग्रवनमुद्यानम् । नाया० २ श्रु० ५ वर्ग० १६ अ०

‘काम्पिल्यपुरे सहसंभवणे उज्जाणे’ उवा०६ अ० ।

‘पालासपुरं नगरं सहसंभवणं उज्जाणं’ उवा०७ अ० । अंत० । वीरजिनवर्जाः सर्वे तीर्थकराः सहस्राग्रवने उद्याने निष्क्रान्ताः ।

आव०म० १ अ० । आव०चू० ।

**सहसंबुद्ध- पुं० [सहसंबुद्ध]**

सह आत्मनैव सार्द्धमनन्योपदेशत इत्यर्थः, सम्यक् यथावद् बुद्धः । हेयोपादेयापेक्षणीयवस्तुतत्त्वविदितवादिनि जिने, भग० १ श०१ उ० ।

**सहसंमइ- स्त्री० [सहसंमति]**

सहात्मना या सगता मतिः सा सहसंमतिः । परोपदेश- निरपेक्षायां जातिस्मरणप्रतिभादिरूपायां मातै पत्र०१ पद ।

‘सह संमइयाए’ आचा०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।

**सहसंमइ- पुं० [सहसंमति]**

आकस्मिकक्रियायाम्, भग० २५ श० ८ उ० ।

अविमृश्य कारित्वे, । वव० । ठा० ।

**सहसकारपडिसेवणा- स्त्री० [सहसाकारप्रतिसेवना]**

प्रतिसेवनाभेदे, निसि०१ उ० ।

**सहसम्भक्खाण- न० [सहसाभ्याख्यान]**

सहसाऽनालोच्य अभ्याख्यानम् । असद्बोधाध्यारोपणं चौरोऽय- मित्याद्यभिधानं सहसाभ्याख्यानम् । आव० ।

अविमृश्य कलङ्कनरूपे मृषावादविरते द्वितीयेऽतिचारे । उवा०

**सहसा- अव्य० [सहसा]**

अकस्मादर्थे, नाया०१ श्रु०९ अ० । गच्छा० । ठा० ।

अनुपयोगे, वव०१ उ० ।

पूर्वापरमपर्यालोच्ये-त्यर्थे, वव०१ उ० ।

**सहसागर- पुं० [सहसाकार]**

अकस्मात्करणे, ठा० १० ठा० ३ उ० । आव० ।

‘आलुपसहसाकारे विणिवट्टचित्ते एत्थ सत्थे पुणो पुणो आचा०१ श्रु० ३ अ० १ उ० ।

**सहसुद्धाह- पुं० [सहसोद्धाह]**

सहसा-अकस्मादुद्धाहः प्रकृष्टोद्धाहः सहसोद्धाहः । सहस्राणां वा लोकस्योद्धाहः सहस्रोद्धाहः । अक-स्मादुत्पन्ने बहुलोकोद्धाहे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सहस्स- न० [सहस्र]**

दशशतसंख्यायाम्, तत्संख्येयेषु । अणुओ० । निसि० । पत्र० । जंबू० प्राचुर्ये, ठा० ८ ठा० ३ उ० । कल्प०

सहस्रात्परं यावदनन्तसंख्यायाम्, आव०म०१ अ० ।

**सहस्संतरिय- त्रि० [सहस्रान्तरित]**

सहस्रेण कृतान्तरे, सूय०१ श्रु०१ अ०३ उ० ।



**सहस्रव- पुं० [सहस्राक्ष]**

सहस्रमक्षणां यस्यासौ सहस्राक्षः ।  
शक्रे, इन्द्रे, इन्द्रस्य हि किल मन्त्रिणां पञ्च शतानि सन्ति  
तदीयानां चाक्ष्णामिन्द्रप्रयोजन व्यावृत्ततया इन्द्रसम्बन्धित्वेन  
विवक्षणात् सहस्राक्षत्वमिन्द्रस्य । पन्न० २ पद । आव०म० ।  
कल्प० । भग० । उवा० ।

**सहस्रजोहि- पुं० [सहस्रयोधिन्]**

मल्लानां सहस्रेण सहैकाकिन्येव युद्धकारके, आव०४ अ० ।

**सहस्रपत्त- न० [सहस्रपत्र]**

सहस्रदलकलिते महापद्मे, जंबू० १ वक्ष० । रा० । कल्प० ।  
आव०म० । जीवा० । पन्न० । उव० ।

**सहस्रपाग- न० [सहस्रपाक]**

सहस्रं कृत्वोऽपरापरौषधीरसेन सह शतेन वा कार्षापणानां पके  
तैलघृतादौ, उव० । उवा० ।

**सहस्ररस्मि- पुं० [सहस्ररश्मि]**

यद्यपि सहस्रशब्दो दशशतसङ्ख्यायां वर्तते तथापीहानन्त  
संख्यायां वर्तते । आव०म०१ अ० ।  
सहस्रं रश्मयो यस्य । सूर्ये, अणुओ० । नाया० । रा० ।

**सहस्राउल- त्रि० [सहस्राकुल]**

सहस्रेषु मन्मथभावेन परिभ्रममाणे, तं० ।

**सहस्राणीय- पुं० [सहस्रानीक]**

स्वनामख्याते कौशाम्बीनगरीराजे, विशेष० ।

**सहस्रार- पुं० [सहस्रार]**

सहस्रमुखे, आव०चू०६ अ०  
स्थानशब्दोक्तसमस्तवक्तव्यताके अष्टमदेवलोके, ठा० १० ठा०  
तदिन्द्रे च । विशेष० । पन्न० ।  
उत्तराहाणां सहस्रारकल्पस्येन्द्रे, ठा० २ ठा० ३ उ० । अणुओ० ।  
उव०

**सहस्रारविंसय- न० [सहस्रारवतंसक]**

अष्टमदेवलोकस्थे स्वनामख्याते विमाने, सम० १८ सम० ।

**सहस्रिक- पुं० [साहसिक]**

सहसा-अवितर्क्य भाषणे ये वर्तन्ते ते साहसिकाः । अविमृश्य  
कारिषु, पण्हा०२ अ०

**सहा- स्त्री० [सभा]**

ग्रामजनसमवायस्थाने, वव०१ उ० ।

**सहाय- त्रि० [सहाय]**

शिष्ये, उत्त०३२ अ० ।  
सहचारिणि, नाया०१ श्रु०२ अ० ।  
परलोकसाधनद्वितीये, दश०२ चू० ।

**सहायकिच्च- न० [सहायकृत्य]**

मित्रादिकृते सहायकर्मणि, नाया०१ श्रु०१५ अ० ।

**सहायग- पुं० [सहायक]**

परस्परेण साहाय्यकारिणि, भग०१० श०४ उ० ।

**सहायपच्चक्खाण- न० [सहायप्रत्याख्यान]**

साहाय्यकारिणां परिहारे उत्त०२९ अ० ।

**सहाव-पुं० [स्वभाव]**

स्वो भावः । आत्मीये भावे, नं० सूय० । निसि० ।  
धम्मो त्ति सहावो त्ति एगद्धा । निसि०२० उ० । अणुओ०  
धर्म, ठा० ६ ठा० ३ उ० । आव० । विशेष० ।  
स्वकीयोत्पत्तौ, सूय०१ श्रु०१ अ०३ उ० ।  
उत्पादव्ययध्रौव्यपरिणामे, विशेष० ।  
निसर्गे, ठा० २ ठा० १ उ० । सूय० ।  
सहभावे धर्मे, । ठा० ।  
'वत्थू वसइ सहावे, सत्ताओ वे-यण व्व जीवम्मि । न  
विलक्खणम्मि तणओ, भिन्ने छायातवे चेव । ठा० ३ ठा०२ उ०

**सहावफुल्ल- त्रि० [स्वभावफुल्ल]**

स्वभावसिद्धे विकसिते, दश०१ अ० ।

**सहाववाइ- पुं० [स्वभाववादिन]**

अस्त स्वभावः करणत्वेनाशेषस्य जगतः स्वभावः, स्वभाव इति  
कृत्वा; तेन हि जीवाजीवभव्यत्वमूर्तत्वादीनां स्वरूपानुविधानात्  
इत्येवं स्वभावकारणिकवा-दिषु, सूय०१ श्रु०११ अ० । ठा० ।

**सहावहीण- न० [स्वभावहीन]**

वस्तुनः प्रत्यक्षादिप्रसिद्धे स्वभावमतिरिच्यान्यथावचने, यथा  
शीतोऽग्निर्मूर्तिमदाकाशमित्यादि । आव०म०१ अ० । विशेष० ।

**सहिण- त्रि० [श्लक्ष्ण]**

सूक्ष्मे, निसि०७ उ० । आचा० ।  
मसृणे, निसि०२० उ० ।

**सहिणकल्लाण-न० [श्लक्ष्णकल्याण]**

श्लक्ष्णानि सूक्ष्माणि च तानि वर्णच्छव्यादिभिश्च कल्याणानि  
शोभनानि वा सूक्ष्मकल्याणानि । सूक्ष्मे शोभने च वस्त्रे, आचा०  
२ श्रु० १ चू० ५ अ० १ उ०

**सहिणहु- पुं० [सहिष्णु]**

सोढुं समर्थे, निसि० ४ उ० । आव० ।

**सहिय-१ त्रि० [सहित]**

मिलिते, आचा०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।  
समन्विते, आचा०१ श्रु०५ अ०४ उ० । नाया० । आचा० ।  
युक्ते, सूय०१ श्रु०१३ अ० । ठा० । भग० ।  
सह हितेन वर्तत इति सहितः । परमार्थभूतैर्हितैः । सूय०१ श्रु०१६

**सहिय-२ त्रि० [सहित]**

ज्ञानादिभिः समन्विते, सूय०२ श्रु०१ अ० । आचा० । आव०चू० ।

**सहिय-३ त्रि० [सहित]**

इन्द्रियचतुष्टयोपेते, पण्हा०१ अ० आचा०,

**सहिय-४ त्रि० [सहित]**

त्रयोदशे महाग्रहे, ठा० । चंद० । कल्प० । सूर० । जंबू० । सूय० ।

**सहिय-५ त्रि० [स्वहित]**

स्वस्मै हितः स्वहितः । परमार्थानुष्ठानविधायी, सूय०१ श्रु०४ अ०  
आत्महिते, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ० ।

**सहियव्व- त्रि० [सोढव्य]**

मर्षणीय, आचा०१ श्रु०२ अ०६ उ० ।

**सहिबाय- पुं० [सखिवाद]**

सखेत्येवंवाद, सूय०१ श्रु०९ अ० ।

**सहिहेउ- पुं० [सखिहेतु]**

मित्रनिमित्त, सम०३० सम० ।

**सहु- त्रि० [सह]**

समर्थ, निसि०१ उ० ।

**सहेउ- त्रि० [सहेतु]**

सह हेतुनाऽन्वयव्यतिरेकरूपेण वर्तत इति सहेतुः । सूय०२ श्रु०१  
सकारणे, निसि० २० उ० ।

**सहेउ- अव्य० [सहित्वा]**

समर्थो भूत्वेत्यर्थे, दश०३ अ० ।

**सहेउ- अव्य० [सोढुम्]**

समर्थो भवितुमित्यर्थे, 'सक्का सहेउ' दश० ९ अ० ३ उ० ।

**सहोढ- त्रि० [सहोढ]**

सदृशे, निसि०१५ उ० ।

समोषे, नाया०१ श्रु० २ अ० । बुह० ।

**सहोयर- पुं० [सहोदर]**

समातृक भ्रातरि, जीवा०३ प्रति०४ अधि० । अंत० । आव०म० ।

**सहोयरी- स्त्री० [सहोदरी]**

समातृकायां भगिन्याम्, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**सा- पुं० [श्रा]**

श्राति-पचति तत्त्वार्थश्रद्धानं निष्ठां नयतीति श्राः । श्राद्धिनि,  
'श्रद्दालुतां श्राति पदार्थचिन्तनाद्धनानि पात्रेषु वपत्यनारतम् ।'  
ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**सा- स्त्री० [स्वा]**

स्वकीयायाम्, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**साइ- पुं० [साति]**

सातिशयद्रव्येण परहीनगुणस्य द्रव्यसंयोगे, सूय० २श्रु० । भग०

**साइ- न० [सादि]**

आदिरहोत्सेधाख्यनाभेरधस्तनो देहभागो गृह्यते सहादिना  
नाभेरधस्तनकायलक्षणेन वर्तते इति सादि । अणुओ० ।

उत्सेधबहुले संस्थानभेदे, न० । ठा० ।

यद्धि नाभितोऽधश्चतु-रस्रलक्षणयुक्तमुपरि च तदनुरूपं न  
भवति । भग०१४ श०७ उ० ।

इह यद्यपि सर्वशरीरमादिना सह वर्तते तथाऽपि सादि-  
त्वविशेषणान्यथाऽनुपपत्त्या विशिष्ट एव प्रमाणलक्षणोपपन्न  
आदिरह लभ्यते, तत उक्तम्-उत्सेधबहुलमिति । इदमुक्तं  
भवति-यत्संस्थानं नाभेरधः प्रमाणोपपन्नमुपरि च हीनं तत्सा-  
दीति । जीवा० १ प्रति० ।

**साइ- न० [साचि]**

अपरे तु साचीति पठन्ति, तत्र साचीति प्रवचनवेदिनः  
शाल्मलीतरुमाचक्षते, ततः साचीव यत्संस्थानम्, यथा शाल्म-  
लीतरोः स्कन्धकाण्डमतिपुष्टमुपरि च न तदनुरूपा महाविशा-  
लता तद्वदस्यापि संस्थानस्याधोभागः परिपूर्णो भवति उपरितन  
भागस्तु हीन इति । जीवा० १ प्रति० ।

**साइ-१ पुं० [स्वाति]**

वायुदेवताक । जीवा० १ प्रति० ।

**साइ-२ पुं० [स्वाति]**

नक्षत्रभेदे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**साइ-३ पुं० [स्वाति]**

हारीतगोत्रे बलिसहशिष्ये श्यामार्यगुरौ, तं० ।

**साइ-४ पुं० [स्वाति]**

हैमवतनामकर्मभूमिवृत्तवैताढ्य पर्वतस्य श्रद्धावतीनाम्नोऽधिष्ठा-  
यके देवे, ठा० ३ ठा० १ उ० ।

**साइयोग- पुं० [सातियोग]**

अविश्रम्भसम्बन्धे सातिशयेन वा द्रव्येण निरतिशयस्य योगे  
तत्प्रतिरूपकरणे, भग० १२ श० ५ उ० ।

**साइज्जणा- स्त्री० [स्वादना]**

सेवायाम्, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

अभिव्यञ्जने, प्रतिबन्धविधाने, विशेष० ।

अभ्युपगमे, आचा०२ श्रु० १ चू०३ अ०३ उ० ।

कर्मबन्धास्वादने, सातिज्जणा दुविहा-अणुमोयणे, कारावणे,  
य । निसि० १ उ० ।

**साइज्जत्तए- अव्य० [स्वादयितुम्]**

भोक्तुमित्यर्थे, उव० ।

**साइज्जमाण- त्रि० [स्वादमान]**

अनुमानने, वव०१ उ० ।

**साइजिया- स्त्री० [स्वादिता]**

साइज धातुरास्वादाने, ततः उपभुज्यमानो यस्तत्सम्बन्धिन्यां प्रमार्जनायाम्, 'साइजिया पमज्जण' ति० । कल्प०३ अधि०९

**साइणी- स्त्री० [शाकिनी]**

व्यन्तरीभेदे, । सूय० ।

**साइदत्त- पुं० [स्वातिदत्त]**

चम्पावास्तव्ये स्वनामख्याते ब्राह्मणे, आव०म०१ । आव०चू० ।

**साइपुत्त- पुं० [स्वातिपुत्र]**

शौद्धोदनिं ध्वजीकृत्यासन्मार्गप्रकाशके आचार्ये, आचा० १ श्रु० २ अ० ५ उ० ।

**साइबहुल- त्रि० [सातिबहुल]**

सातिशयेन द्रव्येण परस्य हीनगुणस्य द्रव्यसंयोगः सातिस्त-  
द्वहुलः । तत्करणप्रचुरे, सूय० २ श्रु० २ अ० ।

**साइबुद्ध- पुं० [सातिबुद्ध]**

भरतवर्षे उत्सर्पिण्यां भविष्यति चतुर्विंशे तीर्थकरे, सम० ।

**साइम- त्रि० [स्वादिम]**

स्वद आस्वादन इत्यस्य च स्वाद्यते इति स्वादिमम् । आव०६ अ०  
स्वदनं स्वादस्तेन निर्वृतं तथैवेदमिति स्वादिमम् । एलाफल-  
कर्पूरलवङ्गपूगीफलहरीतकीनागरादिके आहारभेदे । पिंड० । ठा०  
। आचा० । आव०चू० ।

**साइय- न० [सादिक]**

सहाऽऽदिना वर्तत इति सादिकम् । आदिना सहिते, उत्त०४ अ०  
सादिको लोक इति प्रपञ्चना ।  
तस्मिन्नेकार्णवीभूते, नष्टे स्थावरजङ्गमे । इत्यादि । आचा० १ श्रु०  
८ अ०१ उ० ।

**साइरेग- त्रि० [सातिरेक]**

साधिके, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**साइसंपओय- पुं० [सातिसंप्रयोग]**

सातिशयेन द्रव्येण कस्तूरिकादिना अपरस्य द्रव्यस्य संप्रयोगः ।  
रा० । सहातिशयेन संप्रयोगो योगः । यदिवा-सातिशयेन द्रव्येण  
कस्तूरिकादिनाऽपरस्य द्रव्यस्य संप्रयोगः सातिसम्प्रयोगः ।  
दशा०६ अ० । नाया० ।  
लोकवञ्चनार्थे द्रव्यान्तरसंयोगे, रा० । दशा० ।

**साइसपज्जवसिय- त्रि० [सादिसपर्यवसित]**

सहादिना वर्तत इति सादि । तथा पर्यवसानं पर्यवसितं । सह  
पर्यवसितेन वर्तन्त इति सपर्यवसितम् । न० ।  
आद्यन्तसहिते श्रुतभेदे, न० ।

**साइसुय- न० [सादिश्रुत]**

पर्यायास्तिकनयमते सादिसहिते श्रुतभेदे, विशेषे० ।

**साउ- त्रि० [स्वादु]**

रसनासुखदे, उत्त०३२ अ० ।

**साउणिय- पुं० [शाकुनिक]**

शकु नान् हन्तीति शाकुनिकः । शकुनिबधोपजीविनि, पण्हा०  
अणुओ० । ठा० ।

**साउफल- त्रि० [स्वादुफल]**

स्वादूनि फलानि येषां ते स्वादुफलाः । रा० ।  
मिष्टफलेषु, नाया०१ श्रु०१ अ० । उव० । जीवा० ।

**साउय- त्रि० [स्वादुक]**

स्वादुभोजनवति, सूय०१ श्रु०७ अ० । अणुओ०

**साउय- पुं० [सायुष्]**

सहायुषा वर्तन्त इति सायुषः । संसारिजीवेषु, ठा० २ ठा० १  
उ० ।

**साएय- पुं० [साकेत]**

अयोध्यायाम्, ठा० १० ठा० ३ उ० ।  
'कोसलासु साकेयं नगरं ।' पत्र०१ पद । आव०क० । आव०म०  
साकेतं नगरं कोशलाजनपदः । आव०म० । सूय० ।

**साक्खिण्- पुं० [साक्षिन्]**

गौणादित्वादूपनिष्पत्तिः । प्रा० । अनुभवकारिणि, उत्त० ।

**साग- पुं० [शाक]**

पूर्वदेशप्रसिद्धे पक्ववस्तुलादिके, सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ० । ठा० ।  
निसि० । सूर० ।  
शाकस्तक्र सिद्ध इति, भग० ७ श० १० उ० ।

**सागडायण- पुं० [शाकटायन]**

शकटर्षिगोत्रापत्ये, न० । कल्प० ।

**सागडि- पुं० [शाकटि]**

शकटनन्दने स्थूलभद्रे, बुह० १३ उ० ३

**सागडिय- पुं० [शाकटिक]**

शकटानां गन्त्रीविशेषाणां समूहे, भग० १५ श० ।  
शकटैश्चरति शाकटिकः । शकटवहनोपजीविनि, आव०चू०६ अ०  
गन्त्रीवाहके, उत्त०५ अ० । ठा० ।

**सागणिउवस्सय- पुं० [साग्रिकोपाश्रय]**

अग्निसहिते उपाश्रये, आचा ०२ श्रु०१ चू०२ अ०१ उ० ।

**सागपत्त- न० [शाकपत्र]**

वृक्षविशेषपत्रे, पण्हा०१ अ०

**सागपाग- पुं० [शाकपाक]**

मूलादिशाकपचने, सूय० १ श्रु० १ अ०१ उ० ।

**सागय- न० [स्वागत]**

शोभनमागमने, भग०२ श०१ उ० । आव०म० आव०चू० ।

**सागर-१ पुं० [सागर]**

समुद्र, तं० । उव० । पण्हा० । अंत० । ओह० । आव० ।  
एगं च णं महं सागरमि वीईसहस्सकलियं । ठा० १० ठा० ३ उ०

**सागर-२ पुं० [सागर]**

अन्धकवृष्णेर्धारण्यां जाते पुत्रे, अंत० । ठा० ।  
धातकीखण्डभरतक्षेत्रजे हरिषेणस्य राज्ञः समुद्रदत्तासम्भवे पुत्रे,  
उत्त० ९ अ० ।  
जिनदत्तस्य भद्रायां भार्यायां जाते आत्मजे, नाया० १ श्रु० १६ अ०

**सागर-३ पुं० [सागर]**

जम्बूद्वीपे मालवद्वक्षस्कारपर्वतस्य पञ्चमकूटे, जंबू० ४ वक्ष० ।  
सप्तमवलदेववासुदेवयोः पूर्वभवधर्माचार्ये, सम० ।

**सागरकूड- न० [सागरकूट]**

जम्बूद्वीपे मन्दरपर्वतस्य नन्दनवनस्य सप्तमे माल्यवतश्च पञ्चमे  
कूटे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सागरचंद-१ पुं० [सागरचन्द्र]**

द्वारवत्यां नगर्यां निषधस्य पुत्रे बलदेव पौत्रे, विशेष० । आव०  
म० । आव०चू० । रा० ।  
साकेतनगरे चन्द्रावतंसकराज्ञः सुदर्शनागर्भजे पुत्रे, आव०म० १

**सागरचंद-२ पुं० [सागरचन्द्र]**

मुनिचन्द्रपुत्रे स्वनामख्याते साधौ, ठा० ४ ठा० ४ उ०

**सागरदत्त-१ पुं० [सागरदत्त]**

चम्पायां नगर्यामुदुम्बरदत्तस्य पितरि स्व नामख्याते सार्थवाहे,  
विपा० १ श्रु० ७ अ० । ठा० ।

**सागरदत्त-२ पुं० [सागरदत्त]**

कौशाम्ब्यां कुर्कुटयुद्धदर्शके श्रेष्ठिपुत्रे, उत्त० १३ अ० ।

**सागरदत्त-३ पुं० [सागरदत्त]**

जिनदत्तसार्थवाहमित्रे सार्थवाहे, नाया० १ श्रु० २ अ० ।

**सागरदत्त-४ पुं० [सागरदत्त]**

सुकुमालिकापतौ श्रेष्ठिन्, पिंड० ।

**सागरदत्त-५ पुं० [सागरदत्त]**

साकेते नगरेऽशोकदत्तस्य स्वनामख्याते पुत्रे, आव० १ अ० ।

**सागरदत्त-६ पुं० [सागरदत्त]**

तृतीयबलदेवस्य पूर्वभवजीवे, सम० ।

**सागरदत्ता- स्त्री० [सागरदत्ता]**

पञ्चदशस्य तीर्थकरस्य निष्क्रमणशि-विकायाम्, सम० ।

**सागरपविभक्ति- न० [सागरप्रविभक्ति]**

सागराकाराप्रविभागदर्शके नाट्यभेदे, रा० ।

**सागरपोय- पुं० [सागरपोत]**

स्वनामख्याते सार्थवाहे, आव० ६ अ० आव०चू० ।

**सागरमह- पुं० [सागरमह]**

सागरोद्देशके उत्सवे, आचा० १ श्रु० १ अ० १ उ० ।

**सागरय- पुं० [सागरक]**

अग्निकपर्वतकसहचरदारके, आव० ४ अ० । आव०चू० ।

**सागरवट- पुं० [सागरवड]**

मत्स्यविशेषे, जीवा० १ प्रति० ।

**सागरवर- पुं० [सागरवर]**

स्वयम्भूरमणे, आव० २ अ० ।

**सागरवरगम्भीर- पुं० [सागरवरगम्भीर]**

सागरवरः-स्वयम्भूरमणाख्यसमुद्रः परीषहोपसर्गाद्यक्षोभ्यत्वा-  
त्तस्मादपि गम्भीरः ।

परीषहाद्यक्षोभ्ये सागरवद्रम्भीरे, 'सागरवर-गम्भीरा, सिद्धा  
सिद्धिं मम दिसंतु ।' । दश० ।

**सागरवरमेहलाहिवड- पुं० [सागरवरमेखलाधिपति]**

सागर एव वरा मेखला काञ्ची यस्याः सा सागरवरमेखला पृथ्वी  
तस्या अधिपतयो ये ते तथा । राजसु, भग० १२ श० ९ उ० ।

**सागरसेन- पुं० [सागरसेन]**

मुनिसेनभ्रातरि स्वनामके मुनि, आव० चू० १ अ० ।

**सागरोपम- न० [सागरोपम]**

सागरेणोपमाऽस्मिंस्तत् । ठा० २ ठा० ४ उ० ।

दशभिः कोटिकोटिभिर्गुणिते पल्योपमकाले, आव० म० १ अ० ।

विशे० । ठा० । जीवा० । पण्हा० । जंबू० ।

उद्धाराऽद्धाक्षेत्रभेदात् त्रिधा । ज्यो० । भग० । अणुओ० । ठा० ।

**सागवच्च- न० [शाकवर्चस]**

यत्र शाकः शटित्वा वर्चोरूपं बिभर्ति तस्मिन् स्थाने, निसि० ३  
उ० । आचा० ।

**सागविहि- पुं० [शाकविधि]**

शाकप्रकारे, उवा० १ अ० ।

**सागार- न० [साकार]**

विशेषग्रहणप्रवणे ज्ञाने, सागारे से नाणे अणागारे दंसणे । भग०

**सागार- पुं० [सागार]**

सह अगारेण गृहेण वर्तत इति सागारः । गृहस्थे, आव०म० १  
अ० । ठा० ।

सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानभेदे, भग० ७ श० २ उ० ।

**सागारकड- त्रि० [साकारकृत]**

प्रत्याख्यानभेदे, आव० ।

**सागारिओगह- पुं० [सागारिकावग्रह]**

सहागारेण गेहेन वर्तत इति सागारः स-एव सागारिकः  
तस्यावग्रहः । वसतिदातुर्गेहे, भग० १६ श० ३ उ० । आचा० ।

**सागारिय-** पुं० [सागारिक]

अगारं-गृहं सह तेन वर्तते, स सागारिकः। शय्यातरे, ठा० ५  
ठा० ३ उ०। निसि०।

‘नामस्थापनाद्रव्यभावभेदाच्चतुर्विधः सागारिकनिक्षेपः, मैथुने,  
आचा०१ श्रु०९ अ०३ उ०।

**सागारियपिंड-** पुं० [सागारिकपिण्ड]

सह अगारेण-गृहेण वर्तत इति सागारः, स एव सागारिकः  
सागारिकः-शय्यातरस्तस्य पिण्ड आहारः। शय्यातरपिण्डे,  
सूतकगृहपिण्डे च। सूय०१ श्रु०९ अ०।

‘सागारिकः शय्यातरः तस्य पिण्डं जुगुप्सितं हीनं वर्णयितुं वा  
तदेतत्सर्वं विद्वान् परिहरेत्। सूय०१ श्रु०९ अ०।

सागारियपिंडं भुंजमाणे अणुग्वाइओ भवइ। ठा० २ ठा० १ उ०  
। सम०

**सागारोवओग-** पुं० [साकारोपयोग]

आकारसहिते, पत्र०२८ पद।

**साडग-** न० [शाटक]

परिधानवस्त्रे, नाया०१ श्रु०१६ अ०।

वस्त्रमात्रे, विपा०१ श्रु० ७ अ०। भग०। नाया०।

**साडण-** न० [सातन]

अङ्गोपाङ्गानां विशरणे, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०

**साडण्णा-** स्त्री० [साटना]

उत्सर्गे त्याजने, आव०५ अ०।

**साडिया-** स्त्री० [साटिका]

परिधानवस्त्रे, अणुओ०।

**साडीकम्म-** न० [शाकटिककर्मन्]

शकटानां घटनविक्रयवाहनरूपे, उवा०१ अ०। भग०।

शाकटिकत्वेन जीवने, तत्र गवादीनां बन्धबधादयो दोषा इति  
कर्म न उपभोगपरिभोगव्रतातिचारत्वं तस्य। भग०। आव०।

**साडोल्लय-** न० [शाटोल्लक]

उत्तरीयवस्त्रे, नाया०१ श्रु०१८ अ०।

**साण-** पुं० [श्वन्]

श्वन् शब्दस्य साणादेशः। कुकुरे, उत्त० १ अ०। आचा०। उत्त०।

अणुओ०। दश०। निसि०। भग०। आचा०।

**साण-** पुं० [साण]

छुरिकादितैक्ष्ण्योत्तेजके मसृणापाषाणे, आव०म०। उत्त०।

**साणय-** न० [शाणक]

शणवल्कनिष्पन्ने, आचा०२ श्रु०१ चू०५ उ०१ उ०। ठा०। बुह०

**साणि-** स्त्री० [शाणी]

शणसूत्रमय्यां शाटिकायाम्, दश० ५ अ० १ उ०

**साणुक्रोस-** त्रि० [सानुक्रोश]

सहानुक्रोशेन वर्तत इति सानुक्रोशः। सदये, उत्त०२२ अ०।

**साणुक्रोसया-** स्त्री० [सानुक्रोशता]

सदयतायाम्, उव०। ठा०।

सानुकम्पतायाम्, भग० ८ श० ९ उ०। विशेष०।

**साणुणाय-** पुं० [सानुनाद]

यत्र जल्पतां प्रतिशब्द उत्तिष्ठते तस्मिन् प्रदेशे, विशेष०।

**साणुप्पग-** न० [सानुप्रग]

प्रत्यूषवेलायाम्, बुह० १ उ० २।

चतुर्भागावशषचरमायां पौरुष्याम्, निसि०१० उ०।

**साणुप्पगभिक्षा-** स्त्री० [सानुप्रगभिक्षा]

सानुप्रगे प्रत्यूषवेलायां या लभ्यते भिक्षा सा सानुप्रगभिक्षा।

प्रातः कालिक्यां भिक्षायाम् बुह० १ उ० २।

**साणुप्पास-** त्रि० [सानुप्रास]

अनुप्राससहिते, अणुओ०।

**साणुराग-** पुं० [सानुराग]

अनुरक्ते, तथाविधानुरागयुक्तत्वेनाप्रशस्तदृष्टौ, महानि० ३ अ०।

**साणुलट्टियागाम-** पुं० [सानुयष्टिकाग्राम]

स्वनामख्याते ग्रामे, यत्र छद्मस्थविहारेण विहरन् वीरजिनः

भद्रप्रतिमया तस्थौ। आव० म० १ अ०। आव०चू०।

**सात-** न० [सात]

सौख्य, चंद० २० पाहु०। सूर०।

सुख, उत्त० १ अ०।

सुखहेतु, उत्त० २ अ०। पण्हा०।

**सातत्त-** न० [सातत्य]

नैरन्तर्ये, ठा० १० ठा० ३ उ०।

**सातवाहण-** पुं० [सातवाहन]

स्वनामख्याते नृपभेदे, आव०चू०।

**साता-** स्त्री० [साता]

सुखरूपायां वेदनायाम्, पत्र०३५ पद।

**साताकम्म-** न० [सातकम्मन्]

बन्धदशानां दशमेऽध्ययने, ठा० १० ठा० ३ उ०।

तच्च विच्छिन्नमिदानीं नोपलभ्यते ठा० १० ठा० ३ उ०।

**सातागारव-** न० [सातगौरव]

सुखशीलतायाम्, सूय०१ श्रु०८ अ०

**सातागारवणिहुय-** त्रि० [सातगौरवनिभृत]

सुखशीलतार्थमनुद्युक्ते, सूय०१ श्रु०८ अ०।

**सातासाता-** स्त्री० [सातासाता]

सुखदुःखात्मिकायां वेदनायाम्, पत्र० ३५ पद।



**सातासायपरितावणमय-** त्रि० [सातासातपरितापनमय]  
सातं च सुखमसातं परितापनं च दुःखजनितोपताप एतन्मयमे-  
तदात्मकम् सुखदुःखमये, पण्हा० ३ अ०

**सातासौख्य-** न० [सातसौख्य]  
आह्लादरूपे सौख्य, जीवा०४ प्रति०३ उ० ।

**सातिजोग-** पुं० [सातियोग]  
मायाविशेषे, सम० ।

**सातिजोगजुत्त-** त्रि० [सातियोगयुक्त]  
अशुभमनोयोगयुक्ते, आव० ४ अ०

**सातिज्जणा-** स्त्री० [स्वादना]  
कर्मबन्धास्वादे, निसि०१ उ० ।

**सातिणक्खत्त-** न० [स्वातिनक्षत्र]  
वायुदेवताक नक्षत्रभेद, सम० ।

**सातोवभोग-** त्रि० [सातोपभोग]  
सातस्य सातवेदनीयस्य कर्मणो भोगो यत्र तत्सातोपभोगम् ।  
सुखस्थाने, कल्प०१ अधि० ३ ।

**सादंडी-** स्त्री० [सादण्डी]  
कन्दविशेषे, भग०७ श०३ उ० ।

**सादि-** त्रि० [सादि]  
आदियुक्ते, उक्त०१ अ० ।

**सादिय-** त्रि० [सादिक]  
सहादिना मायया वर्तत इति सादिकम् ।  
समाया, सूय० १ श्रु०८

**सादिवीससाकरण-** न० [सादिविश्रसाकरण]  
रूपिद्रव्याणां च द्व्यणुकादिप्रक्रमेण भेदसंघाताभ्यां स्कन्धत्वा-  
पत्तौ, सूय०१ श्रु० १ अ० १ उ० ।

**सादीणगंगा-** स्त्री० [सादीनगङ्गा]  
गोशालकपरिभाषित सप्तमहागङ्गात्मकपरिमाणभेदे, भग०१५

**सापाणि-** पुं० [स्वकपाणि]  
स्वहस्ते, । भग० १४ श० ८ उ० ।

**साबर-** पुं० [शाबर]  
शबररूपधारिशिवप्रोक्ते मन्त्र, आव०म०१ अ० ।

**साभरग-** [साभरक]  
देशीवचनात्, बुह०१ उ०१ ।  
सुराष्ट्राया दक्षिणस्यां दिशि समुद्रद्वीपे प्रचलिते रूपके,  
द्वावुत्तरापथे एको रूपकः । बुह० ३ उ० ।

**साभाविय-** त्रि० [स्वाभाविक]  
स्वस्मिन् भावे भवः स्वभाविकः । प्राकृत, सूय०१ श्रू०१अ०१ उ०  
अकैतवकृते, नाया० १ श्रु०१६ अ० । आव०म० ।

**साभिग्रह-** त्रि० [साभिग्रह]  
अभिग्रहे, अभिग्रहन्त इत्यभिग्रहाः प्रतिज्ञाविशेषाः, सहाभि-  
ग्रहेण वर्तन्त इति साभिग्रहाः । गृहीताभिग्रहेषु । आव०६ अ० ।  
निसि० ।

**साम-१** न० [सामन्]  
सर्वेषामपि जीवानां प्रिये, विशेष० । आव०म० ।  
प्रियवचनादौ, ठा० ३ ठा० ३ उ० । नाया० । विपा० ।  
प्रेमोत्पादने विपा०१ श्रु०३ अ० ।  
साम मित्ति । सर्वजीवेषु मैत्री साम भण्यते । विशेष० । ठा० ।  
सामनि, ठा० ।

**साम-२** त्रि० [श्याम]  
कृष्ण, आचा०१ श्रु०२ अ०३ उ० । पत्र० ।  
श्यामवर्णत्वाच्छ्यामम् । आकाशे, भग०२० श०२ उ० ।  
परमाधार्मिकविशेषे, यो हि रज्जुहस्तप्रहारादिभिः शातन-  
पातनादि करोति, वर्णतश्च श्याम इति । सम०१४ सम० ।

**सामइय-१** पुं० [सामयिक]  
समयः-सांख्यादीनां सिद्धान्तस्तदाश्रितः सामयिकः । समय-  
सिद्धान्तिते, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

**सामइय-२** पुं० [सामयिक]  
मगधजनपदे वसन्तपुरग्रामे स्वनामख्याते कुटुम्बिनि, सूय०२  
श्रु०६ अ० ।

**सामइयसण्णा-** स्त्री० [सामयिकसंज्ञा]  
सिद्धान्तसङ्केतितभाषायाम्, निसि०१ उ० ।

**सामंत-** पुं० न० [सामन्त]  
समीपे, ठा० १० ठा० ३ उ० । नाया० । निर० ।  
संनिकृष्टे, चंद०१ पाहु० । भग० ।

**सामंतकिरिया-** स्त्री० [सामन्तक्रिया]  
सामन्तोपनिपातिन्यां क्रियायाम्, सा च द्विधा-देशसामन्त-  
क्रिया, सर्वसामन्तक्रिया चेति । प्रेक्षकान् प्रति यत्रैकदेशेनागमो  
भवति असंयतानां सा देशसामन्तक्रिया ।  
सर्वसामन्तक्रिया यत्र सर्वतः-समन्तात् प्रेक्षकाणामागमो  
भवति सा सर्वसामन्तक्रिया । आव०चू०४ अ० ।  
अहवा समन्तादनुपतन्ति पमत्तसंजयाणं अन्नपाणं प्रति अवंगु-  
रिते संपात्तिमा सत्ता विणस्संति । आव०४ अ० ।

**सामंतभद्रसूरि-** पुं० [सामन्तभद्रसूरि]  
चन्द्रकुलमूलस्य चन्द्रसूरेः शिष्ये, 'पूर्वगतश्रुतजलधिस्तस्मात्  
चन्द्रगुरोः सामन्तभद्रसूरी-न्द्रः ।' गच्छा०३ अधि० ।

**सामंतोवनिवाइय-** न० [सामन्तोपनिपातिक]  
अभिनयभेदे, रा० । ठा० ।

**सामंतोवणिवाइया- स्त्री० [सामन्तोपनिपातिकी]**

समन्तात् सर्वत उपनिपातौ जनमीलकस्तस्मिन् भवा सामन्तो-  
पनिपातिकी । क्रियाभेदे, ठा० २ ठा० १ उ० । आव०चू० ।  
सामन्तोवनिवाइया किरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-  
जीवसामंतोवनिवाइया, अजीवसामंतोवनिवाइया ।  
सामंतोवणिवाइया सम्मंतादणुपततीति सामंतोवणिवाइया सा  
दुविधा अजीवजीवसामन्तोवणिवाइया । जधा एगस्स संडो तं  
जणो पालेएति । जधा जधा पलो एति, तहा तहा सो हरिसं  
गच्छति, एवं अजीवे विरहकम्मादिसु । आव०चू०४ अ० । आव०

**सामकरिल्ल- न० [श्यामकरील]**

प्रियङ्गोः प्रत्यग्रे कन्दले, अणुत्त० ।

**सामग- त्रि० [श्यामक]**

सोमा । धान्य, आचा०१ श्रु०८ अ०६ उ० । सूय० ।

**सामगिय- न० [सामग्र्य]**

समग्रतायाम्, 'तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामिगियं जं  
सव्वट्ठेहिं समिते सया जए' । आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०१ उ० ।  
सामग्र्यं समग्रता यदुद्गमोत्पादनग्रहणैषणा संयोजनाप्रमाणा-  
ङ्गारधूमकारणैः सुपरिशुद्धस्य पिण्डस्योपादानं सम्पूर्णो भिक्षु-  
भावः । आचा० २ श्रु०१ चू०१ अ०१ उ० ।

**सामच्छ- न० [सामर्थ्य]**

शक्ति, वीर्य, आव०चू०१ अ० ।

**सामच्छण- [देशी]**

पर्यालोचने, बुह०१ उ०३ । आव०म० । निसि० ।

**सामज्ज- पुं० [श्यामार्य]**

स्वातिशिष्ये हारीतगोत्रे स्थविरे, न० ।

**सामण- त्रि० [श्रामण]**

श्रमणानामयं श्रामणः । श्रमणसंबन्धिनि, आव०१अ० । आव०म०

**सामणि- पुं० [श्रामणि]**

श्रमणस्यापत्यं श्रामणिः । श्रमणेन परस्त्रियामुत्पादिते पुत्रे, सूय०  
१ श्रु०४ अ०२ उ० ।

**सामणिय- त्रि० [श्रामणिक]**

श्रमणानां सम्बन्धिनि, दश०१ अ० ।

**सामण्ण- न० [श्रामण्य]**

श्रमणस्य भावः श्रामण्यम् । संपूर्णसमये, सूय०२ श्रु०६ अ० ।  
चारित्र्ये, उत्त०१८ अ० । दश० । साधुत्वे, उत्त०२ अ० ।  
षड्जीवनिकायरूपे श्रमणभावे, दश०४ अ० ।  
श्रमणत्वे, कल्प०३ अधि०१ ।  
सकलयतिसमाचारे, । उत्त० ।  
अवद्यहेतुत्यागो हि व्रतम् । रागद्वेषावेव तत्त्वस्तद्धेतु । उत्त०२

**सामण्णओविणिवाइस- न० [सामान्यतोविनिपातित]**

अभिनयभेदे, आव०म०१ अ० । जंबू० ।

**सामण्णकिरिया- स्त्री० [सामान्यक्रिया]**

अस्ति भवति विद्यते इत्यादिरूपायां क्रियायाम्, आचा० १ श्रु०२  
अ०१ उ० ।

**सामण्णगुण- पुं० [सामान्यगुण]**

सर्वद्रव्यवर्तिषु गुणेषु, अथ रूपरसगन्धस्पर्शा रूपिद्रव्य वृत्ते-  
विशेषगुणास्तथा संख्यापरिमाणानि णे पृथक्त्वं संयोगविभागौ  
परत्वापरत्वे इत्येते सामान्यगुणाः । सूय० १ श्रु०१२ अ० ।

**सामण्णपरिपाग- पुं० [श्रामण्यपरिपाक]**

सर्वचारित्रपरिपाके, उव० ।

**सामण्णपुब्बिया- स्त्री० [श्रामण्यपूर्विका]**

श्रामण्यस्य पूर्वं कारणं श्रामण्यपूर्वं तदेव श्रामण्यपूर्वकमिति  
संज्ञायां कन् । श्रामण्यकारणं च धृतिस्तन्मूलत्वात्तस्य तत्प्रति-  
पादकं चेदमध्ययनम्, दश० ।  
दशवैकालिकस्य द्वितीयेऽध्ययने, दश० ।

**सामण्णभाव- पुं० [सामान्यभाव]**

सामान्यरूपतायाम्, विशेष० ।

**सामण्णलक्खण- न० [सामान्यलक्षण]**

लक्षणभेदे, विशेष० ।

**सामाण्णविसेस- पुं० [सामान्यविशेष]**

पृथिवीत्वं जलत्वं कृष्णत्वं नीलत्वमित्याद्यवान्तरसामान्यरूपे,  
आव०म० १ अ० ।  
सामान्यानि विजातीयेभ्यो व्यावर्तनाच्च विशेषाः इति सामान्य-  
विशेषाः । स्वस्वाधाराविशेषेषु अनुगताकारप्रत्ययवचनहेतुषु  
द्रव्यत्वादिषु, आव०म०१ अ० । सूय० ।  
अनुवृत्तव्यावृत्तावबोधहेतुभूते सामान्य, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**सामत्थ- न० [सामर्थ्य]**

समर्थस्य भावः सामर्थ्यम् । वीर्ये, आव०म० १ अ० ।

बल, नाया०१ श्रु०१६ अ० ।

'बलं ति वा वीरियं ति वा सामत्थं ति वा एगट्ठा । निसि०११  
उ० । आव०चू० ।

वीर्येणापि वीर्यस्य सामत्थं समत्थशब्दो वा युक्तवाचकः वीर्य-  
युक्त इत्यर्थः । निसि०२ उ० ।

पर्यालोचने, वव०६ उ० ।

**साममुही- स्त्री० [श्याममुखी]**

श्यामलकान्तिमुख्यां स्त्रियाम्, आव० म०१ अ० ।

**सामलय- पुं० [श्यामलक]**

वनस्पतिविशेषे, जीवा०३ प्रति०४ अधि

**सामलया- स्त्री० [श्यामलता]**

प्रियङ्गुलतायाम्, नाया०१ श्रु०१७ अ० पत्र० । पिंड० । जंबू० ।

**सामलि- स्त्री० [शाल्मलि]**

सेमरनामके वृक्षविशेषे, सूय०१ श्रु०६ अ० । जीवा० । आचा० । ठा० । तं० । ।

शाल्मली वृक्षविशेषः । स च प्रतीत एव तस्य वोण्डफलं तद्वत् छेदिता अपि अतिशयेन नमिताः शाल्मलीवोण्डघननिचित-  
छेदिताः । जीवा०३ प्रति०४ अधि० । तं० । ।

**सालमेर- पुं० [शाबलेय]**

शबलाया गोरपत्ये, अणुओ० ।

**सामवेय- पुं० [सामवेद]**

गानप्रतिबद्धे वेदे, उत्त०२२ अ० ।

**सामहत्वि- पुं० [श्यामहस्तिन्]**

श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य अनगारे, भग०१० श०४ उ० ।

**सामा- स्त्री० [श्यामा]**

षोडशवार्षिक्यां, श्यामवर्णायां वा स्त्रियाम्, 'सामागायइ महुरं'  
ठा० ७ ठा० ३ उ० । अणुओ० ।

शक्रलोकपालस्य सोममहाराजस्याग्रमहिष्याम्, ठा० ४ ठा० १  
रात्रौ, सूय०२ श्रु०१ अ० ।

सिन्धुदत्तपुत्र्यां ब्रह्मदत्तचक्रिभार्यायाम्, उत्त० १३अ० । अणुओ०  
प्रियङ्गुवल्ली विशेषे, पत्र०१ पद । नाया० ।

विमलस्य त्रयोदशतीर्थकरस्य मातरि, सम० ।

सम्भवस्य जिनस्य प्रवर्तिन्याम्, सम० । आव० ।

सुप्रतिष्ठितनगरे सिंहसेनराज्ञो भार्या, ठा० १०ठा० ३उ० । आचा०

**सामाड्य- न० [सामायिक]**

रागद्वेषविरहितः समस्तस्य प्रतिक्षणम- पूर्वापूर्वकर्मनिर्जराहेतु-  
भूताया विशुद्धेरायोलाभः समायः स एव सामायिकम् । विशेष० ।  
'सामायिकम्' इति समानां ज्ञानदर्शन चारित्राणां आयः-  
समायः, समाय एव सामायिकं, सावद्ययोगविरतिरूपं ततश्च  
सर्वमप्येतच्चारित्रम् अविशेषतः सामायिकम् । आव०१ अ० ।

**सामाड्यउवक्कम- पुं० [सामायिकोपक्रम]**

सामायिकम् आवश्यक प्रथमाध्ययनम्, तस्यानुक्रमः-परि-  
पाटीविशेषः सामायिके वा अनुक्रमः सामायिकानुक्रमः ।  
सामायिकस्य सामायिके वाऽनुक्रमणे, दश०१ अ० ।

**सामाड्यकड- पुं० [सामायिककृत]**

सामायिकं सावद्ययोगपरिवर्जननिरवद्ययोगासेवनस्वभावं कृतं  
विहितं देशतो येन स सामायिककृतः । तदेवमप्रतिपत्र पौष-  
धस्य दर्शनव्रतापेतस्य प्रतिदिनमुभयसन्ध्यं सामायिककरणं  
मासत्रयं यावत्तृतीयामुपासकप्रतिमां प्रतिपत्रे, सम०११ सम० ।

**सामाड्यकण्टिडि- स्त्री० [सामायिककल्पस्थिति]**

सामायिकम् संयमविशेषस्तस्य तदेव वा कल्पः करणम्-  
आचारः सामायिककल्पः स च प्रथमचरमतीर्थयोः साधू-  
नामल्पकालच्छेदोपस्थापनीयसद्भावात्, मध्यमतीर्थेषु महावि-  
देहेषु च यावत्कथिकच्छेदोपस्थापनीयाभावाभावात्, तदेवं  
तस्यावस्थितिः मर्यादा सामायिककल्पस्थितिः कल्पस्थितिभेदे,  
ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

**सामाड्यचरित्त- न० [सामायिकचरित्र]**

सावद्ययोगविरतिरूपचारित्रभेदे, भग० ८श० २उ० । आतु० । उव०

**सामाड्यचरित्तलद्धि- स्त्री० [सामायिकचरित्रलब्धि]**

सावद्ययोगविरतिरूपस्य चारित्रस्य लब्धौ, भग० ८ श० २ उ० ।

**सामाड्यज्झयण- न० [सामायिकाध्ययन]**

आवश्यकश्रुतस्कन्धस्य सामायिकप्रतिपादके प्रथमे अध्ययने,  
विशे० । अणुओ० । आव०म० । आव०चू० ।

**सामाड्यपडिमा- स्त्री० [सामायिकप्रतिमा]**

'वरदंसणवयजुत्तो, सामाड्यं कुणइ जो उ संझासु । उक्कोसेण  
तिमासं, एसा सामाड्यप्पडिमा' इत्येवं रूपायां तृतीयायामु-  
पासकप्रतिमायाम्, उवा०१ अ० ।

**सामाड्यपय- न० [सामायिकपद]**

सामायिकप्रतिपादके पदे अणुओ०

**सामाड्यसंजय- पुं० [सामायिकसंयत]**

सामायिकं सर्वसावद्यविरतिरूपं तत्प्रधानाः संयताः सामायिक-  
संयताः । सामायिकाख्यचारित्रप्रधानेषु साधुषु, बुह०६ उ० ।

**सामाग- पुं० [श्यामाक]**

जृम्भकग्रामस्य बहिः ऋजुपालिकाया नद्यास्तटे उषिते गृहपतौ,  
यस्य क्षेत्रे वीरजिनस्य केवलज्ञानमुत्पन्नम् । कल्प०१ अधि० ६ ।  
आव०म० । आव० चू० ।

**सामाणिय- पुं० [सामानिक]**

सकारस्य प्राकृतत्वाद् दीर्घः । सन्नितिकृते, आव०म०१ अ० ।  
सन्निहिते, अप्रोषिते, 'जस्स सामाणिओ अप्पा, संजमे नियमे  
तवे । तस्स सामाड्यं होइ, इइ केवलिभासियं ।' विशेष० ।

समानतया इन्द्रतुल्यतया ऋद्ध्या चरन्तीति सामानिकाः । इन्द्र-  
समानर्द्धिषु देवेषु, भग०३ श०१ उ० । ठा० ।

सामानेद्युतिवै-भवादौ भवाः सामानिकाः । विमानाधिपति  
सूर्याभदेवसदृशद्युतिविभवादिकेषु देवेषु, रा० । आव०म० ।

**सामाणियपरिसोववण्णग- पुं० [सामानिकपर्षदुपपत्रक]**

अभ्यन्तरादिपर्षदुपगते, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**सामाय- पुं० [श्यामाक]**

धान्यविशेषे, जंबू०१ वक्ष० ।

**सामाय-** पुं० [सामाय]

साममेति सर्वेषु जीवेषु मैत्री साम भण्यते तत्र साम्नि आयो गमनं साम्ना वा यो गमनं वर्तनं स सामायः ।

अथवा साम्न आयोलाभः सामायः ।

सामायिके, विशेष० । आव० म० । रा० ।

**सामायारी-** स्त्री० [सामाचारी]

सामाचरणं समाचारः, तद्भावः सामाचार्यं तदेव सामाचारी ।

संव्यवहारे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

आगमोक्ताहोरात्रक्रियाकलापे, गच्छा० १ अधि० ।

उत्तराध्ययनेषु षट्त्रिंशतितममध्ययनम् । उत्त० ।

**सामायारीउपक्रमकाल-** पुं० [सामाचार्युपक्रमकाल]

सामाचार्या उपक्रमणमुपरितनाच्छ्रुतादिहानं यत्र स सामाचार्युपक्रमकालः । उपक्रमकालभेदे, विशेष० ।

**सामायारीविराहग-** पुं० [सामाचारीविराधक]

सामाचारी साधूनामहोरात्रक्रियारूपा सद्गच्छमर्यादा तस्या विराधकः । सामाचारीखण्डके, गच्छा० १ अधि० ।

**सामायारीसीयंतचोयणा-** स्त्री० [सामाचारीसीदचोदना]

सामाचार्या यथायोगं सीदतः शिथिलीभवतश्चोदनायाम् । वव० १ उ० ।

**सामालियपोंड-** न० [शात्मलीपौण्ड] शात्मलीपुष्पे, 'एगं सालिय-पोंडं, बद्धो आमोलतो होइ ।' उत्त० ३ अ० ।

**सामास-** पुं० [श्यामास]

श्यामा-रजनी तस्यामाशनमाशः । रात्रिभोजन, आचा० १ श्रु० २ अ० ५ उ० ।

**सामासाए-** पुं० [श्यामाश]

श्यामा-रजनी तस्यामशनं श्यामाशः तदर्थम् । आचा० ।

**सामासिया-** स्त्री० [सामासिकी]

मेतार्यमातुर्मातङ्ग्याः प्रतिवेशिन्याम् आव० म० १ अ० ।

**सामि-** पुं० [स्वामिन्]

स्वमस्यास्तीति स्वामी । नायके, आव० म० १ अ० ।

प्रभू, उपकर्तारि, आश्रये, पिंड० । नाया० ।

प्रभुः स्वामीत्यनर्थान्तरम् । आव० ४ अ० ।

राजन, अणुओ० ।

जगद्गुरौ, सूर० १ पाहु० ।

**सामिकत्तिय-** पुं० [स्वामिकार्तिक]

कृतिकात्मजे स्कन्द, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० २ उ० ।

**सामिणी-** स्त्री० [स्वामिनी]

भर्तृकायाम् । दश० ७ अ० ।

मरुदेवी सामिणी य । आव० म० १ अ० ।

**सामित्त-** पुं० [स्वामित्व]

स्वमस्यास्तीति स्वामी तद्भावः । नायकत्वे, जंबू० १ वक्ष० ।

पन्न० । जीवा० । विपा० ।

स्वस्वामिसम्बन्धमात्रे, विपा० १ श्रु० २ अ० । उव० ।

स्वामिभावत्वे, सम० ७८ सम० ।

स्वस्वामिभावे, भग० ३ श० १ उ० । नाया० । विशेष० । आव० चू० ।

**सामिय-** पुं० [स्वामिक]

अधिपति, नाया० १ श्रु० ९ अ० ।

**सामिल-** पुं० [सामिल]

स्वनामख्याते बटुकब्राह्मणे, वव० २ उ० ।

**सामिस-** त्रि० [सामिष]

सहाऽऽभिषेण पिशितरूपेण वर्तत इति सामिषम् । सस्पृहे भोजनाद्यर्थं लुब्धे, उत्त० ।

‘सामिसं कुजलं दिस्स, वज्झमाणं निरामिसं ।’ उत्त० १४ अ० ।

**सामीविय-** पुं० [सामीप्यक]

सामीपाधारे, यथा गङ्गायां घोषः । आव० म० १ अ० ।

**सामुच्छेय-** पुं० [सामुच्छेद]

समुच्छेदो-वस्तुविनाशः समुच्छेदमधीयते तद्विदन्तीति वा सामुच्छेदिकाः । तद् वेत्ति । क्षणक्षयिभावप्ररूपकेषु अश्वमित्र-मतानुसारिषु निह्वेषु, उव० । आव० म० । आव० चू० । विशेष० ।

**सामुदाय-** त्रि० [सामुदायिक]

समुदाये भवं सामुदायिकम् । उत्त० १७ अ० ।

जनमीलकप्रयोजने, नाया० १ श्रु० ५ अ० ।

**सामुदाणिय-** न० [सामुदानिक]

भिक्षा तत्र भवं सामुदानिकम् । सूय० १ श्रु० १६ अ० । आचा० ।

भिक्षापिण्डे, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ४ उ० ।

समुदाने लब्धः सामुदानिकः । उच्चावचेषु कुलेषु अटित्वा लब्धे पिण्डे, बुह० १ उ० २ ।

**सामुदिय-** पुं० [सामुद्रिक]

समुद्रस्यैते सामुद्रिकाः । भग० ५ श० २ उ० ।

समुद्रयात्रिषु निर्या मकेषु, आव० १ अ० । आव० म० ।

सन्ति सामुद्रिका वाता ईषद्वाता हन्त सन्ति । भग० ५ श० २ उ० ।

**सामूहिय-** पुं० [सामूहिक]

समूहार्थके प्रत्यये, विशेष० ।

**साय-** न० [सात]

सुख, ठा० ।

**साय-** पुं० [स्वाद]

स्वादं स्वादः । ठा० ३ ठा० १ उ० ।

हरितवनस्पतिविशेषे, पन्न० १ पद ।

**साय-** अव्य० [सायम्]

प्रदोषे, आव०५ अ० ।

संध्यासमय, सूर० २ पाहु० । चंद० । उत्त० । सूय० ।

सत्य, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सायंकार-** पुं० [सायंकार]

शुद्धवागनुयोगभेदे, ठा० ।

सायमिति निपातः सत्यार्थस्तस्माद्वर्णात्कारप्रत्ययः करणं वा कारस्ततः सायंकार इति ।

तदनुयोगो यथा-सत्यं तथा वचनसद्भावप्रश्लेषिति । ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सायंभुव-** पुं० [स्वायंभुव]

स्वयंभुवोऽपत्ये प्रथममुनौ स्या० ।

**सायंसमय-** पुं० [सायंसमय]

दिवसावसानरूपे समये, सूर० १० पाहु०

**सायणा-** स्त्री० [शातना]

खण्डनायाम्, सम०३२ सम० ।

**सायणा-** स्त्री० [स्वादना]

अभिलाष, आचा० १ श्रु०८ अ०५ उ० ।

**सायणी-** स्त्री० [शायनी]

शाययति-निद्रावन्तं करोति सा शायनी । शेते वा यस्यां सा शायिनी शयिनी वा । ठा० १० ठा० ३ उ० ।

शतायुषपुरुषस्य नवतिवर्षात्परतो दशवर्षात्मिका दशायाम्, तं०

**सायत्त-** त्रि० [स्वायत्त]

स्वाधीन, नाया०१ श्रु०९ अ० ।

**सायबंध-** पुं० [सातबन्ध] सुखसंबन्धे, द्वा०२५ द्वा० ।

**सायय-** पुं० [सायक]

बाण, उत्त० ।

**सायरसइडिहेउ-** त्रि० [सातरसऋद्धिहेतु]

सातं-सुखं रसोमाधुर्यादिर्य ऋद्धिरूपकरणादिसंपदो हेतवो यस्मिन् प्रयोजने तत्सातरसर्द्धिहेतुकम् । रसाद्यर्थे, गच्छा० २

**सायवडिया-** स्त्री० [सातप्रतिज्ञा]

सुखार्थे, आचा०२ श्रु०१ चू०३ अ०२ उ० ।

**सायवाइ-** पुं० [सातवादिन्]

सातं-सुखमभ्यसनीयमिति वदतीति सातवादी । अक्रियावादि-भेदे, ठा० ।

अक्रियावादिता चास्य संयमतपसोः पारमार्थिकप्रशमसुख-रूपयोदुःखत्वेनाभ्युपगमात् कारणानुरूपकार्याभ्युपगमस्य च विषयसुखादनुरूपस्य निर्वाणसुखस्याभ्युपगमेन बाधितत्वात् इति । ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**सायसोक्खपडिबद्ध-** पुं० [सातसौख्यप्रतिबद्ध]

सातात्पुण्यप्रकृतेः सकाशाद्यत्सौख्यं सुखं गन्धरसस्पर्शलक्षण-विषयसंपाद्यं तत्र प्रतिबद्धस्तत्परः सातसौख्यप्रतिबद्धः । सुखप्रतिबद्धे । ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**सायाउल-** त्रि० [साताकुल]

भावसुखार्थव्याक्षिप्ते, दश०४ अ० ।

**सायागारव-** न० [सातागौरव]

सातया गौरवं सातागौरवम् । सम०३ सम० ।

सातं-सुखं तेन गौरवम्-गर्वः । अहमेव सुखीत्यभिमाने, आतु० ।

**सायागारवंझाण-** न० [सातगौरवध्यान]

सातं-सुखं तेन गौरवं गर्वस्तस्य ध्यानम् । 'नीरपठो ससिराये'ति गाथाज्ञशशिराजस्येव गर्वोद्धरे दुर्ध्यानि, आतु० ।

**सायागारवणिस्सिय-** त्रि० [सातगौरवनिश्चित]

सुखशीलतायामासक्ते सूय०१ श्रु०१ अ० ।

**सायाणुग-** पुं० [सातानुग]

सातं-सुखमनुगच्छतीति सातानुगः ।

सुखशीले, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ० ।

**सायावेयणिज्ज-** न० [सातावेदनीय]

सातं-सुखं तद्रूपेण यद् वेद्यते तत्सातवेदनीयम् । वेदनीयभेदे, । सम० । ठा० ।

**सायासुक्ख-** न० [सातासौख्य]

आह्लादप्रधाने सौख्ये, जीवा०३ प्रति०१ अधि०२ उ० ।

**सार-** पुं० [सार]

प्रधाने, विशेष० ।

सामर्थ्ये, विभवे, सूय०२ श्रु०१ अ० ।

परमार्थे, सूय०१ श्रु०११ अ० । आव० ।

काष्ठमध्ये, ठा० ४ ठा० १ उ० । आचा० ।

निष्पन्द, । भग० । आव०चू० ।

परमार्थप्रधान, सूय०१ श्रु० ११ अ० । ठा० । निर० । आचा० ।

नाया० । पन्न० । जीवा० । भग० । सम० ।

न्याये, । सूय०१ श्रु०१ अ०४ उ० । उत्त० ।

प्रकर्षे, आचा०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।

सफले, आव०म०१ अ० । सम० ।

शुभ पुद्गलोपचयजन्ये धनुर्विशेषे, जंबू०३ वक्ष०

सारो द्विधा बाह्यः, आन्तरश्च । आव० ४ अ० ।

ज्ञानादि । आव०४ अ० ।

सद्भावे, निष्ठायाम्, आव०चू०१ अ० आव०म० ।

विवक्षितकर्मणः परमार्थे, न० । आव०म० ।

विषयण्यस्य प्राप्तौ, आचा०१ श्रु०३ अ०२ उ० ।



**सारंग-** पुं० [सारङ्ग]

चतुरिन्द्रियजीवविशेषे, जीवा०१ प्रति० । पन्न० ।  
मृगे । उत्त० ।

**सारंग-** न० [साराङ्ग]

प्रधानकारणे । जंबू० ।

**सारंगी-** स्त्री० [सारङ्गी]

हरिण्याम्, उत्त०४५ गाथा ।

**सारंभ-** त्रि० [सारम्भ]

सहाऽऽरम्भेण जीवोपमर्दादिकारिणा व्यापारेण वर्तत इति तद-  
भावेऽप्यौद्देशिकादिभोजित्वात्सारम्भः । सूय०१ श्रु०१ अ०४ उ० ।  
गृहस्थेषु । सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ० ।  
जीवोपमर्दादिकारिषु, सूय०२ श्रु०१ अ० ।  
पृथिव्यादीनां परितापकरे आरम्भ, ठा० ।

**सारंभ-** पुं० [संरम्भ]

बहुकल्पे, भग०८ श० ।

**सारक्खणानुबन्धि-** त्रि० [संरक्षणानुबन्धिन्]

संरक्षणे सर्वोपायैः परित्राणे विषयसाधनस्य धनस्यानुबन्धो यत्र  
तत्संरक्षणानुबन्धि । आर्तध्याने, भग० २५ श० ७ उ० । उव० ।

**सारक्खणा-** स्त्री० [संरक्षणा]

संगोपनायाम्, आव०म०१ अ० ।

**सारक्खणोपघाय-** पुं० [संरक्षणोपघात]

संरक्षणेन शरीरादिविषये मूर्छयोपघातः परिग्रहविरतेरिति संर-  
क्षणोपघातः । उपघातभेदे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सारक्खमाणी-** स्त्री० [संरक्षन्ती]

अपायेभ्यः संरक्षणं कुर्वत्याम्, विपा०१ श्रु०२ अ० ।

**सारक्खित्ता-** त्रि० [संरक्षयितृ]

चौरादिभ्यो रक्षणं कुर्वति, ठा० ७ ठा० ३ उ० । गच्छा० ।

**सारय-** त्रि० [स्मारक]

अन्येषां विस्मृतार्थस्मरणकर्तारि, कल्प० १ अधि० १ ।

**सारय-** त्रि० [शारद]

शरदि ऋतौ जातं शारदम् । उत्त०१० अ० ।  
शरत्कालजाते, नाया०१ श्रु०५ अ० । जीवा० । आव०म० ।  
आव० । उवा० । बुह० ।

**सारचिय-** त्रि० [सारचित]

संमार्जिते, सारचितः—संमार्जितः प्रतिश्रयो यैस्ते सारचित-  
प्रतिश्रयाः । बुह०१ उ०२ ।

**सारणा-** स्त्री० [सारणा]

विस्मृतस्मारणायाम्, विस्मृते क्वचित्कर्तव्ये भवतेदं न कृतमिति  
सारणा । गच्छा०२ अधि० ।

**सारवंत-** त्रि० [सारवत्]

गोशब्दादिवद्बहुपर्यायक्षमे । विशेष० ।  
अर्थेन युक्ते, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।  
सामायिकशब्दवत् बहुपर्याये गुण वत्सूत्रे, आव०म० १ अ० ।

**सारवणा-** स्त्री० [सारापना]

संगोपनायाम्, 'होही पत्तीति सारवणा' आव० १ अ० ।

**सारवय-** न० [सारपद]

ज्ञानादिके सारसहिते पदे, आचा० १ श्रु० ५ अ०१ उ० ।

**सारविज्जंत-** त्रि० [सार्यमाण]

ध्रियमाणे, वव०४ उ० ।

**सारस-** त्रि० [सारस]

दीर्घजानुके लोमपक्षिविशेषे, तं० । जीवा० । ठा० । पन्न० ।  
कल्प० । उव० । रा० । पण्हा० । नाया० ।

**सारसार-** पुं० [सारसार]

सारस्यापि सारभूते, आचा०१ श्रु०५ अ०१ उ० । आव०म० ।

**सारसावण्ज-** न० [सारसापतेय]

प्रधानद्रव्ये, कल्प०१ अधि०४ क्षण ।

**सारसी-** स्त्री० [सारसी]

षट्जग्रामस्य षष्ठ्यां मूर्छनायाम्, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**सारस्सय-** त्रि० [सारस्वत]

सरस्वतीप्रोक्तव्याकरणे । कल्प०१ अधि० २ ।  
कृष्णराज्यन्तरालवर्तिविमानवासिनि लोकान्तिकदेवे, । ठा० ९  
ठा० ३ उ० । नाया० । आव०म० ।

**सारह-** न० [सारघ]

मधुनि, उत्त०२२४ गाथा ।

**सारहि-** पुं० [सारथि]

नतरि, दश०८ अ० । आव०म० ।

**सारिक्ख-** त्रि० [सादृश्य]

साधर्म्यं, ठा० १ ठा०

**सारिणी-** स्त्री० [सारिणी]

दीर्घिकाख्ये जलाशयविशेषे, अणुओ० ।

**सारिय-** त्रि० [सारित]

शिक्षित, वव० ७ उ० ।

**सारिया-** स्त्री० [सारिका]

कोशलविषये देवराजस्य कुटुम्बिनो भार्यायाम्, पिंड० ।  
मैनापक्षिणि, आचा०१ श्रु०१ अ०६ उ० ।

**सारिस-** अव्य० [सादृश्य]

यथाऽस्मिन् देशे घटा ऊर्ध्वग्रीवा अधस्तात्परिमण्डला विपुल-  
कुक्षयस्तथा अन्येष्वपि देशेष्वित्यादिसाधर्म्यं, आव०म०१ अ० ।

**सारीर-** त्रि० [शारीर]

शरीरसंभवे, । आव० ।

**सारीरमाणसाणेगदुक्खमोक्ख-** पुं० [शारीरमाणसानेकदुःखमोक्ष] स-  
कलदेहदुःखक्षये, पं० व० ३ द्वार ।

**सारीरसम-** न० [शारीरसम]

कलाभेदे, कल्प० १ अधि० ७ क्षण

**सारूवि-** पुं० [सारूपिन्]

सारूपिके, जीवा० १ प्रति० ।

**सारूविय-** पुं० [सारूपिक]

समानं रूपं-सरूपं तेन चरतीति सारूपिकः । रजोहरणवर्ज-  
साधुवेषधारिणि, गृहस्थे, 'सारूवी धारेइ निसिज्जं च एगं  
ओलंबगं चेव' यस्तु सारूपिकः स एकनिषद्यम्- एकनिषद्योपेतं  
रजोहरणमवलम्बकदण्डकमुपलक्षणमेतत् पात्रादिकं च धार-  
यति शिरश्च मुण्डयति । वव० ४ उ० । निसि० ।

मुण्डितशिराः शुक्लवासः परिधायी कच्छामवघ्नानोऽभार्यको  
भिक्षां हिण्डमानः सारूपिक उच्यते । बुह० ४ उ० ।

**सारूवियसिद्धपुत्त-** पुं० [सारूपिकसिद्धपुत्र]

मुण्डितशिरस्के रजोहरणरहिते अलघुपात्रेण भिक्षामटति  
सभार्ये अभार्ये वा गृहस्थे, वव० ८ उ० ।

**सारूह-** त्रि० [सरूह]

मनसा इष्ट, भग० ७ श० ९ उ० ।

**साल-** पुं० [साल]

अशीतितमे महाग्रहे, ठा० २ ठा० ३ उ० । सूर० । चंद० ।

साखू । वृक्षविशेषे, ठा० ४ ठा० ४ उ० । अणुओ० । पत्र० । जंबू० ।  
आचा० । सम० ।

शाखायाम्, नाया० १ श्रु० १ अ० । जीवा० ।

पृष्ठचम्पानगर्याः स्वनामख्याते राजनि, उत्त० ९ अ० । आव० ।

**साल-** पुं० [श्याल]

भार्याभ्रातरि, अणुओ० ।

**सालंकायण-** पुं० [सालंकायन]

कौशिकगोत्रान्तर्गते पुरुषविशेषे, तत्प्रवर्तिते गोत्रविशेषे च ।  
ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**सालकल्लाण-** पुं० [सालकल्याण]

वृक्षविशेषे, भग० ८ श० ३ उ० ।

**सालंब-** त्रि० [सालम्ब]

आलम्बनमवलम्बमाने, निसि० १ उ० ।

ज्ञानादिपुष्टालम्बनयुक्ते, दशा० १ अ० । आव० । निसि० ।

विकृतिभिः प्राणितः सन् क्षिप्रज्ञानादि ग्रहीष्यामीत्यालम्बनस-  
हिते, वव० ४ उ० । निसि० ।

**सालंबसेवि-** त्रि० [सालम्बसेविन्]

पुष्टालम्बनप्रतिषेविणि, 'काहं अछितिं अदुवा अधीहं,  
तवोवहाणेसु य उज्जमिस्सं । गणं च नीती अणुसारविस्सं,  
सालंबसेवी समुवेति मोक्खं । आव० चू० ३ अ० ।

**सालंबहत्थाभरण-** त्रि० [सालम्बहस्ताभरण]

सह आलम्बनेनप्रलम्बेन वर्तते सालम्बं तानि च हस्ताभरणानि  
यस्याधामुखं गमनवशादसौ सालम्बहस्ताभरणः । हस्तयोः  
परिहिताभरणे, भग० ३ श० २ उ० ।

**सालकोट्टय-** न० [सालकोष्टक]

मेण्डग्रामस्य बहिरुत्तरपूर्वदिग्भागे स्वनामख्याते चैत्ये, भग० ३  
श० २ उ० ।

**सालग-** पुं० [शालक]

अवष्टम्भसमन्विते आसनविशेषे, दश० ६ अ० ।

दीर्घशाखायाम्, आव० १ अ० ।

रस, आचा० २ श्रु० १ चू० ७ अ० २ उ० ।

अङ्गं भिन्नं बाहिरा छल्ली सालं भण्णइ । निसि० १५ उ० ।

**सालगिह-** न० [शालागृह]

शालागृहबद्धे, तत्र अकुट्टा साला सकुट्टं गिहं । अस्सादि-  
अवाहणाणं सालगिहं । निसि० ८ उ० ।

**सालघरय-** न० [सालगृहक]

शालाः-शाखाः । अथवा शालावृक्ष-विशेषस्तत्प्रधानं गृहकम् ।  
शालाप्रधाने गृहके, नाया० १ श्रु० १ अ० । नाया० । जीवा० ।  
पट्टशालाप्रधाने गृहे, रा० ।

**सालज्जा-** स्त्री० [सालार्जा]

बहुशालकनामग्रामसमीपवर्तिशालवनोद्यानवास्तव्यायां व्यन्त-  
र्याम्, आव० म० १ अ० ।

**सालपरियाय-** पुं० [सालपर्याय]

सालस्येव पर्याया धर्माबहुलच्छायात्वासेव्यत्वादयो यस्य स  
सालपर्यायः । सालसधर्मिणि पुरुषजाते, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**सालभंजिया-** स्त्री० [शालभञ्जिका]

स्तम्भपुत्रिकायाम्, आव० म० १ अ० । नाया० ।

**सालरुक्ख-** पुं० [शालवृक्ष]

शालाख्ये वृक्षविशेषे, भग० १४ श० ८ उ०

**साललट्ठिया-** स्त्री० [शालयष्टिका]

शालवृक्षस्तम्भे, भग० १४ श० ८ उ०

**सालवण-** न० [शालवन]

बहुशालकनामग्रामसमीपवर्तिनि उद्याने, आव० म० १ । आव० चू०

**सालवाहन-** पुं० [शालवाहन]

स्वनामख्याते महाराजे, कल्प० ३ अधि० ९ । वव० ।

**सालहिआ- स्त्री० [देशी]**

‘मेना’ इति ख्याते पक्षिविशेषे, उक्त० २३६ गाथा ।

**साला-१ स्त्री० [शाला]**

वृक्षस्कन्धे, नाया०१ श्रु०१ अ० ।  
शाखायाम्, नाया०१ श्रु०४ अ० । ठा० । सूय० । रा० । जंबू० ।  
जल्य भंडं विक्रिणाइ सा साला । अहवा-सकुट्टिमं गिहं ।  
अकुट्टिमा साला । निसि० १२ उ० ।

**साला-२ स्त्री० [शाला]**

अशीतितमे महाग्रहे, ठा० ।

**सालाइयतंत- न० [शालाक्यतत्र]**

शलाकायाः कर्म शालाक्यं तत्प्रतिपादकं तत्रं शालाक्यतत्रम् ।  
ठा० ८ ठा० ३ उ० । विपा० ।  
आयुर्वेदाङ्गे तद्धि ऊर्ध्वयतिगतानां रोगाणां श्रवणवदननयनघ्रा-  
णादिसंश्रितानामुपशमनार्थमिति । ठा० ८ अ०३ उ० ।

**सालाडवि- स्त्री० [शालाटवी]**

विजयचौरसेनापतिपालितायां चौरपल्ल्याम्, विपा०१ श्रु०३ अ०

**सालाहण- पुं० [सातवाहन]**

गोदावरीतटवर्त्यप्रतिष्ठाननगरराजे, बुह०६ उ० ।

**सालि- पुं० [शालि]**

कलमादिके धान्ये, ठा० ३ । आचा० । सूय० । पन्न० । बुह० । रा० ।  
ब्रीहिविशेषे, नाया०१ श्रु०१ अ० ।  
कलमशाल्यादिकूरे, वव०६ उ० । भग० । जंबू० । आचा० ।  
तथ पुव्वणे साली चुप्पइ । अवरणे जेम्मति । आव०म०१ अ०

**सालिउद्देस- पुं० [शाल्युद्देश]**

षष्ठशतस्य सप्तमोद्देशके, भग० ११ श० ११ उ० ।

**सालिगणवट्टिय- त्रि० [सालिङ्गनवर्तित]**

शरीरप्रमाणेनोपधानेन वर्तमाने, सूय०१ श्रु०१ अ०३ उ० ।

**सालिखेत्त- न० [शालिक्षेत्र]**

धान्यक्षेत्रे, कल्प० १ अधि० १ क्षण ।

**सालिखंडण- न० [शालिखण्डन]**

शालिधान्यखण्डने, तत्कलायाम्, कल्प० १ अधि०७ क्षण ।

**सालिगाम- पुं० [शालिग्राम]**

मगधजनपदेषु स्वनामख्याते ग्रामे, आव०क० १ । आव०चू० ।

**सालिपिट्ट- न० [शालिपिट्ट]**

शालिचूर्णे, जंबू० १ वक्ष० ।

**सालिपिट्टराशि- पुं० [शालिपिट्टराशि]**

शालिक्षोदपुञ्जे, रा० ।

**सालिवाहन- पुं० [शालिवाहन]**

स्वनामख्याते प्रतिष्ठानपुरराजे, विशेष० ।

**सालिभंजिया- स्त्री० [शालिभञ्जिका]**

पुत्तलिकायाम्, रा० ।

**सालिभद्र-१ पुं० [शालिभद्र]**

राजगृहे स्वनामख्याते गोभद्रश्रेष्ठिनः पुत्रे, ठा० ।  
‘शालिभद्र’ इति यः पूर्वभवे सङ्गमनामा वत्सपालोऽभवत्,  
सबहुमानं च साधवे पायसमदात्,  
राजगृहे गोभद्रः श्रेष्ठिनः पुत्रत्वेनोत्पन्नो देवीभूतगोभद्रश्रेष्ठि-  
समुपनीतदिव्य-भोजनवसनकुसुमविलेपनभूषणादिभिर्भोगाङ्गै-  
रङ्गनानां द्वात्रिंशतां सह सप्तभूमिकरम्यहर्म्यतलगतो ललति  
स्म ।

वचनश्रवणादस्माकमप्यन्यः स्वामीति भावयन् वैराग्यमुपज-  
गाम वर्धमानस्वामिसमीपे च प्रव्रज्वाज, विकृष्टतपसा क्षीणदेहः  
शिलातले पादपोषगमनविधिनाऽनुत्तरसूरेषु पन्नवानिति सोऽय-  
मिह संभाव्यते । ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सालिभद्र-२ पुं० [शालिभद्र]**

कपिलमहर्षेः स्वगृहे भोजयितरि श्रावस्तीवास्तव्ये व्यवहारिणि,  
उत्त० ८ अ० ।

**सालिभसेल- पुं० [शालिभसेल]**

ब्रीहिकणिकशूके, उवा० २ अ० ।

**सालिया- स्त्री० [शाटिका]**

परिधानवस्त्रे, विशेष० । आव० ।

**सालिका- स्त्री० [शालिका]**

सम्मूर्च्छजक्षुद्रजन्तुविशेषे, आचा० १ श्रु० १ अ० ६ उ० ।

**सालिसच्छियामच्छ- पुं० [शालिसाक्षिकामत्स्य]**

मत्स्यभेदे, भग० १ श०२ उ० ।

**सालिसय- त्रि० [सटशक]**

समाने, रा० । ठा० । नाया० ।

**सालिसीस- पुं० [शालिशीर्ष]**

स्वनामख्याते ग्रामे, ठा० ।

ग्रामाक-सन्निवेशात् शालिशीर्षग्रामे उद्याने प्रतिमास्थस्य स्वा-  
मिनो माघमासे तिष्ठभवापमानिता अन्तःपुरि मृत्वा व्यन्तरी  
भूत्वा तापसीरूपं कृत्वा जलभृतजटाभिरन्यदुःसहं शीतोपसर्गं  
चक्रे, कल्प० १ अधि० ६ ।

**सालुजाण- पुं० [शालोद्यान]**

बहुशालकग्रामाद्वहिरुद्याने, आव०चू० १ अ० ।

**सालुय- पुं० [शालूक]**

उत्पलकन्दे, भग० ११ श० २ उ० ।

**सालेइयापिया- पुं० [शालेयिकापितृ]**

स्वनामख्याते गृहपतौ, उवा०

**सावइत्ता-१ स्त्री० [श्रावयित्वा]**

श्रावणं कृत्वेत्यर्थे, स्वकीयं नाम श्रावयित्वा यदुताहं भदन्त !  
शक्रोदेवराजो भवन्तं वन्दे नमस्यामि चेत्येवम् । भग० १६ श० २

**सावइत्ता-२ त्रि० [श्रावयितृ]**

श्रावणं कारयितरि, सूय० २ श्रु० ३ अ० ।

**सावएज्ज- न० [स्वापतेय]**

धन, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।  
द्रव्य, भग० ८ श० ५ उ० । आचा० ।

**सावकंख- न० [सावकाङ्ख]**

सह अवकाङ्ख्या वर्तत इति सावकाङ्खम् घटिद्वयाद्यनन्तरमहं  
भोजनं विधास्यामीति वाञ्छासहितेऽनशने उक्त० ३० अ० ।

**सावग- पुं० [श्रावक]**

शृणोति जिनवचनमिति श्रावकः ।  
अथवा-श्रन्तिपचन्ति तत्त्वार्थश्रद्धानं निष्ठां नयन्तीति श्राः, तथा  
वपन्ति गुणवत् सप्तक्षेत्रेषु धनबीजानि निक्षीपन्तीति वाः तथा  
किरन्ति क्लिष्टकर्मरजो विक्षिपन्तीति काः, ततः कर्मधारये  
श्रावका इति भवति । जिनवचनश्रद्धाने, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।  
शृणोति साधुसमीपे साधुसामाचारीमिति श्रावकः । गच्छा० २  
अधि० ।

**सावग- पुं० [श्वापद]**

प्रायो मांसाहारादिविशेषणविशिष्टे व्याघ्रादौ, जंबू० २ वक्ष० ।  
मकरग्रहादौ, सम० ।  
जलचरक्षुद्रसत्त्वे, नाया० १ श्रु० ९ अ० ।  
सिंहादिषु, नाया० १ श्रु० १ अ० । आव० म० ।  
व्याघ्रादिषु, सम० १ सम० । पण्हा० ।

**सावगकुल- न० [श्रावककुल]**

श्रावकान्वये, 'वंसाणं जिनवंसो सव्वकुलाणं च सावयकुलाइं'  
संथा० ।

**सावगणंदण- पुं० [श्रावकनन्दन]**

श्रावककुमारे, आव० १ अ० ।

**सावगधम्म- पुं० [श्रावकधर्म]**

श्रावकाणामुक्तशब्दार्थानां दुर्गतिगर्तनिपतज्जन्तुधरणप्रवण  
परिणामस्तत्पूर्वकमनुष्ठानं श्रावकधर्मः । आव० ।

**सावगपाठण- न० [श्रावकपाठन]** श्रा

वकेभ्यः सूत्रप्रदान, जीवा० १ प्रति० ।

**सावगभज्जा- स्त्री० [श्रावकभार्या]**

श्रावकपत्न्याम्, अणुओ० ।

**सावगवय- न० [श्रावकव्रत]**

सम्यक्तत्वाणुव्रतादिप्रतिपत्तौ । महानि० ।

**सावज्ज- न० [सावद्य]**

अवद्यं-पापं सहावद्येन वर्तत इति सावद्यम् । सपापे, विशेषे ।  
ठा० । दश० । पण्हा० ।  
सहावद्येन दोषेण वर्तत इति सावद्यम् । उक्त० ६ अ० ।  
सहावद्येन गर्हितकर्मणाहिंसादिना वर्तत इति सावद्यम् ।  
हिंसादिदोषयुक्ते, उव० । आचा० । आव० । उक्त० । आव० चू० ।  
विशे०

**सावज्जकडा- स्त्री० [सावद्यकृता]**

सावद्यभाषायाम्, आव० १ अ० ।

**सावज्जकिरिया- स्त्री० [सावद्यक्रिया]**

पञ्चविधश्रमणाद्यर्थकृतवसतौ, स्थानादिकुर्वतस्तथाविधे उपा-  
श्रये, आचा० ।

**सावज्जजोग- पुं० [सावद्ययोग]**

सकलनित्यकर्मणि, । आव० म० ।

**सावज्जबहुल- त्रि० [सावद्यबहुल]**

पापभूयिष्ठे, दश० ६ अ० ।

**सावज्जा- स्त्री० [सावद्या]**

श्रमणसाधुनिश्राभेदेन सपापायां वसतौ, आचा० २ श्रू० १ चू० २  
अ० २ उ० ।

**सावज्जायरिय- पुं० [सावद्याचार्य]**

कुवलयप्रभाचार्ये, गच्छा० ।

**सावण- त्रि० [श्रावण]**

श्रावणयुक्तपौर्णमासी घटिते मासे, । ज्यो० १ पाहु० ।

**सावणमास- पुं० [श्रावणमास]**

त्रिंशद्वात्रिन्दिवात्मके कर्ममासे, ज्यो० १ पाहु० ।

**सावणसंवच्छर- पुं० [सावनसंवत्सर]**

ऋतुसंवत्सरे, ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

**सावतेय- न० [स्वापतेय]**

शुद्ध द्रव्यजात, सूय० २ श्रु० १ अ० ।

**सावत्थिया- स्त्री० [श्रावस्तिका]**

उडुपाटिकगणस्य प्रथमशाखायाम्, कल्प० २ अधि० ८ ।

**सावत्थी- स्त्री० [श्रावस्ती]**

कुणालजनपदप्रधाननगर्याम्, पत्र० १ पद । भग० । नाया० ।  
एकं श्रावस्त्याम् । कल्प० १ अधि० ६ । उक्त० । नाया० । आव० ।  
भग० । ठा० । आव० । आव० म० ।

**सावसेस- त्रि० [सावशेष]**

अनस्तमिते, कल्प० ३ अधि० ९ । पण्हा० ।

**सावा- स्त्री० [शाया]**

भुजपरिसर्विणीविशेषे, जीवा० २ प्रति० ।

**सावासग-** पुं० [स्वावासक]

स्वनीडे, सूय०१ श्रु०१४ अ० ।

**सावित-** त्रि० [श्रावयत्]

इदं चेदं भविष्यतीत्येवंभूतवचांसि श्रवणपथमानयति, भग० ९ श० ३३ उ० ।

**साविक्ख-** पुं० [सापेक्ष]

सह अपेक्षा गच्छत्येति गम्यते येषां ते सापेक्षाः । गच्छवासिषु, वव० १ उ० ।

आचार्यस्य शिष्यैः प्रातीच्छिकैश्च सर्वं कर्तव्यं ते च तथा कुर्वन्तः सापेक्षा उच्यन्ते । वव० ४ उ० ।

**सावि-** पुं० [स्वापिन्]

स्वप्रशीले, बुह०१ उ०२ ।

**सास-** पुं० [श्वास]

प्राणने, अतिशयत ऊर्ध्वश्वासरूपे रोगभेदे, नाया० १ श्रु० १३ अ० । जीवा० । जंबू० । विपा० ।

**सासंत-** त्रि० [शासत्]

शिक्षां ददति, उत्त०१ अ० ।

आज्ञापयति, उत्त०१ अ० ।

**सासग-** पुं० [शश्यक]

रत्नविशेषे, कल्प०१ अधि०३ क्षण ।

**सासन-** न० [शासन]

शास्यन्तेऽनेन जीवा इति शासनम् । द्वादशाङ्ग, आव०१ अ० । प्रवचन, पण्हा०५ अ० ।

आज्ञायाम्, जंबू० ३ वक्ष० । सूय० । बुह० ।

प्रतिपादने, न० ।

शिक्षणे, अणुओ० । नाया० ।

शिष्यते प्रतिपाद्यते इति शासनम् । शिक्षणीय, पण्हा० १ अ० । सूय० ।

**सासय-१** त्रि० [शाश्वत]

शश्वद् भवतीति शाश्वतम्, सूय०१ श्रु०५ अ०२ उ० ।

शश्वद्भावावच्छाश्वतम् । सततोपयोग, आव०म० । न० । आचा० नित्य, सूय०२ श्रु०१ अ० । आव० । विशेष० ।

ध्रुव, विशेष० ।

अनादौ, ठा० ५ ठा० ३ उ० । सूय० । नाया० ।

प्रतिक्षणसत्तालिङ्गत्वादवस्थिते, ठा० ५ ठा० ३ । सूय० । आचा० शश्वद्भवनस्वभावे, जीवा०३ प्रति० ४ ।

अविनाशिनि, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।

शश्वद्भाविनि पत्र० ३६ पद ।

शश्वद् भवनस्वभावे, न० ।

प्रतिक्षणं सद्भावात् । भ० २ श० १ उ० ।

अनादिनिधने, ठा० १ ठा० ३ उ० ।

दश अपुनरागामिनि, दश०९ अ०४ उ० ।

साद्यपर्यवसिते, पण्हा०४ अ० ।

सर्वकालभाविनि, आव०म०१ अ० ।

सदाभाविनि, सम० । आव०म० । सूय० ।

द्रव्यार्थतयाऽविच्छेदेन प्रवृत्ते, सम० ।

**सासय-२** पुं० [स्वाशय]

स्वकीये आशये, स्वदर्शनाभ्युपगमे, सूय०१ श्रु०१ अ०३ उ० ।

**सासय-३** पुं० [स्वाश्रय]

स्व-आत्मीय उत्पत्तिप्रत्ययो यासु ताः स्वाश्रयाः । अविनष्ट-योनिषु, आचा० २ श्रु० १ अ०१ उ० ।

**सासय-** पुं० [स्वासक]

दर्पणाकारे अश्वालङ्कारविशेषे, जंबू०३ वक्ष० ।

**सासयचेइय-** न० [शाश्वतचैत्य]

नन्दीश्वरादिव्यवस्थिते चैत्ये, जीत०

**सासयदुक्खधम्म-** पुं० [शाश्वतदुःखधर्म]

शश्वद्भवतीति शाश्वतं यावदायुस्तच्च तद् दुःखं च शाश्वतदुःखम् तद्धर्मः स्वभावो यस्मिन् स । नरके, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।

**सासया-** स्त्री० [शाश्वती]

अविनश्चर्याम्, उव० ।

**सासयाणंतय-** न० [शाश्वतानन्तक]

अक्षये जीवादिद्रव्ये, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सासयाऽसासय-** त्रि० [शाश्वताऽशाश्वत]

शाश्वतं-नित्यं सर्ववस्तुजातं द्रव्यास्तिकनयाश्रयादशाश्वतं वा नित्यं प्रतिक्षणविनाशरूपं पर्यायनयाश्रयणात्, द्रव्यास्तिक-पर्यायास्तिकनयाश्रयणेन नित्या नित्ये, सूय०१ श्रु० १२ अ० ।

**सासयासाऽसयाणुओग-** पुं० [शाश्वताऽशाश्वतानुयोग]

शाश्वतं च अशाश्वतं च शाश्वताऽशाश्वतम् । तदनुयोगः । द्रव्या-नुयोगभेदे, तत्र जीवद्रव्यमनादिनिधनत्वात् शाश्वतं तदेवापरा-परपर्यायाप्राप्तितोऽशाश्वतमित्येवमतो द्रव्यानुयोगे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सासवणाल-** न० [सर्षपनाल]

सर्षपभर्जिकायाम्, आतु० ।

सर्षपकन्दल्याम्, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०८ उ० ।

**सासिउ-** अव्य० [सासितुम्]

उपदेष्टुमित्यर्थे, सूय० १ श्रु० १ अ० २ उ० ।

**सासित-** त्रि० [शासयत्]

शिक्षयति, उव० ।



**सासु-** त्रि० [सासु]

प्राणाः सहासवो यस्य येन वा तत्सासु सचित्ते, वव० ६ उ० ।

**सासु-** स्त्री० [श्वश्रु]

श्वशुरस्य स्त्रियाम्, 'घरे सासुयाए कहियं' आव० म०१ अ० ।

**साहइत्ता-** अव्य० [साधयित्वा]

सम्यगाराध्येत्यर्थे, सूय०१ श्रु०१४ अ० ।

**साहंजणी-** स्त्री० [शाखाञ्जनी]

स्वनामख्याते नगरीभेदे, यत्र सुभद्रा सार्थवाहपुत्रः सनत्कुमार आसीत् । ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**साहग-** त्रि० [साधक]

सिद्धिजनक, बुह० ३ उ० ।

**साहतगम-** न० [साधकतम]

क्रियां प्रति करण, 'साधकतमं करणम् ।' आव० म० १ अ० ।

**साहज्ज-** न० [साहाय्य]

सहायतायाम् आव० म० १ अ० ।

'अणगारे रससाहिज्जे दिन्ने ।' अंत० १ श्रु० ३ वर्ग० ८ अ० ।

**साहट्ट-** अव्य० [संहत्य]

शरीराभिमुखमाक्षिप्येत्यर्थे, आचा० २ श्रु०१ चू०३ अ०१ उ० । विपा० । दश० ।

विधयेत्यर्थ, उवा० २ अ०

अपनीयेत्यर्थ, सूय०१ श्रु०६ अ० ।

जिनमुद्रया संहतौ कृत्वेत्यर्थे, दशा० ७ अ० ।

**साहट्ट-** त्रि० [संहट्ट]

उद्धृषिते, संहट्टरोमकूपैरुद्धृषितरोमभिरित्यर्थः । सम० ।

**साहण्ण-** न० [साधन]

साध्यन्ते मोक्षादयोनेन साधनम् । ज्ञानदर्शनचारित्रादिक । विशेषे कारणे, आव०४ अ० ।

उपकरणे, उत्त०२३ अ० । आव० म० ।

निष्पादने, संथा० ।

प्रमाणे, विशेषे ।

**साहण्ण-** न० [संहनन]

संघाते, संयोगे, भग० १२ श० ४ उ० ।

**साहण्णाबंध-** पुं० [संहननबंध]

संहननमवयवानां संघातमनन्तमेतद्रूपो यो बन्धः स संहनन बन्धः । भग० ८ श०९ उ० ।

अल्लिपनबन्धभेद, भग० ८ श० ९ उ० ।

**साहण्णाभेदानुवाय-** पुं० [संहननभेदानुपात]

संघातो भेदश्च वियोजनमूतयोरनुपातोयोगः संहनन भेदानुपातः । सर्वपुद्गलद्रव्यैः सह परमाणूनां संयोगे, भग० १२ श०४

**साहण्य-** न० [साधनक]

प्रकृष्टोपकारकेषु ज्ञानदर्शनसंयमतपस्सु, आचा०१ श्रु०५ अ०१

**साहण्णंत-** त्रि० [संहन्यमान]

संघातमापद्यमाने, ठा० २ ठा० ३ उ०

**साहत्य-** पुं० [स्वहस्त]

साक्षादर्थे, उवा० ७ अ० ।

**साहत्थिया-** स्त्री० [स्वाहस्तिका]

स्वहस्तेन निर्वृत्ता स्वाहस्तिका । स्वहस्तगृहीतजीवादिना जीवं मारयतः क्रियाभेदे, ठा० ५ ठा० २ उ० । आव० ।

**साहम्म-** न० [साधर्म्य]

सादृश्ये, ठा० १ ठा० । विशेषे ।

**साहम्मता-** स्त्री० [सधर्मता]

समानधर्मतायाम्, निसि० ५ उ० ।

**साहम्मिउग्गह-** पुं० [साधर्मिकावग्रह]

समानेन धर्मेण चरन्तीति साधर्मिकाः, साधर्मापेक्षया साधव एव तेषामवग्रहस्तदाभाव्य पञ्चक्रोशपरिमाणक्षेत्रमृतुबद्धे मासमेकं वर्षासु चतुरो मासान् यावदिति साधर्मिकावग्रहः । अवग्रहभेदे, भग० १६ श० २ उ० । आचा० ।

**साहम्मिणी-** स्त्री० [साधर्मिणी]

संयत्याम्, बुह०३ उ० ।

**साहम्मिय-** पुं० [साधर्मिक]

समानेन धर्मेण चरतीति साधर्मिकः । भग०१६ श०२ उ० । साम्भोगिके, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०९ उ० । वव० । निसि० । ठा० । पण्हा० ।

समानधर्मयुक्ते साधौ, ठा० ६ ठा० ३ उ० । बुह० । वव० ।

**साहम्मियचेइय-** न० [साधर्मिकचैत्य]

चारित्तकसाध्वादीनां प्रतिकरूपे चैत्ये, जीत० ।

**साहम्मियत्तविणय-** पुं० [साधर्मिकत्वविनय]

सम्मतत्वग्रहणे, वव० १० उ० ।

**साहम्मियवेयावच्च-** न० [साधर्मिकवैयावृत्य]

साध्याः साधोर्वा वैयावृत्ये, उव० ।

**साहम्मिया-** स्त्री० [साधर्मिकी]

साधर्मिण्यां संयम्याम्, बुह०३ उ० ।

**साहय-** त्रि० [संहत]

संक्षिप्ते, त० । आव० म० ।

**साहयसोणंद-** न० [संहतसौनन्द]

संहतसौनन्दं नाम ऊर्द्धीकृतमुद्गलाकृतिकाष्ठम्-तच्च मध्ये तनु उभयोः पार्श्वयोर्बृहत् मुशलं प्रतीतम् दर्पणशब्देनेहावयवे समुदायोपचारादर्पणगण्डो गृह्यते । जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**साहर-** धा० [संवृ]

नयन, ठा० ३ ठा० ३ उ० । आचा० ।

**साहरग-** पुं० [साहरक]

रूपक, निसि० २ उ० ।

**साहरण-** न० [संहरण]

देवेन नयन, भग० ९ श० ३१ उ० ।

**साहरमाण-** त्रि० [संहरत]

अन्यत्र नयति, भग० ५ श० ४ उ० ।

**साहरावित्तए-** अव्य० [संहर्तुम्]

मोचयितुमित्यर्थे, कल्प० १ अधि० २ क्षण ।

**साहरिज्जमाण-** त्रि० [संहियमाण]

नीयमान, जंबू० १ वक्ष० । जीवा० । आचा० ।

यत्करादिकं शीतलीकरणार्थं पटहादिषु विस्तारितं तन्मुनर्भाजने क्षिप्यमाणं संहियमाणमुच्यते । उव० ।

**साहरिज्जमाणचरय-** पुं० [संहियमाणचरक]

संहियमाणस्यैव पिण्डस्य तथाविधाभिग्रहविशेषाद् । भिक्षाचर, उव० ।

**साहरित्तए-** अव्य० [संहर्तुम्]

प्रवेशयितुमित्यर्थे, भग० ५ श० ४ उ० ।

**साहरिय-** त्रि० [संहत]

नीत, सम० ।

तस्मादन्यत्र क्षिप्ते, गच्छा० १ अधि० । ठा० । आचा० ।

**साहस-** न० [साहस]

अकार्यकरणे, सूय० १ श्रु० ४ अ० १ उ० ।

**साहस-** त्रि० [साहस]

सहस्रमूल्ये, बृह० ३ उ० ।

**साहसकारि-** त्रि० [साहसकारिन्]

साहसं कर्तुं शीलमस्येति साहसकारी । अकार्यकारिणि, सूय० १ श्रु० १० अ० ।

**साहसविवर्जिय-** त्रि० [साध्वसविवर्जित]

अविमृश्य प्रवृत्तिः साध्वसं तद्विवर्जितः । सम्मुखीभूय युद्ध-प्रदानलक्षणसाध्वसरहिते, वव० १ उ० ।

**साहसिय-** पुं० [साहसिक]

सहसाऽविमर्शात्मकेन बलेन वर्तते इति साहसिकः । भाविन-मर्थमविभाव्य प्रवर्तमाने, ठा० ।

अवितर्कितकारिणि, नाया० १ श्रु० २ अ० ।

धैर्यवति, पण्हा० ३ अ०

सात्त्विके, उव० ।

अविमृश्य पापकर्मनिवृत्ते, दशा० ६ अ० ।

अकृत्यकरणपरे, दश० ९ अ० २ उ० ।

असमीक्षितकारिणि, नाया० १ श्रु० १८ अ० ।

सहसाऽवितर्क्य प्रवर्तते इति साहसिकः पुरुषः, तत्प्रवर्तितत्वा-त्साहसिकः । साहसिकप्रवर्तिते प्राणातिपाते, पण्हा० १ अ०

**साहसिय-** पुं० [साहसिक]

सहस्रयोधिनि मल्ले, वव० १ उ० ।

**साहस्सी-** स्त्री० [साहसी]

सहस्र, भग० १ श० १ उ० ।

**साहा-** स्त्री० [शाखा]

एकाचार्यसंततावेव पृथक् पृथगन्वये विवक्षिताद्यपुरुषसंततौ, यथा अस्मदीया वड्रस्वामिनाम्नी 'वड्री' शाखा । विशेष० ।

एकदेशे, कल्प० १ अधि० ६ ।

पल्लवे, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ७ उ० ।

वृक्षडाले, दश० ४ अ० ।

वृक्षभुजायाम्, दश० ९ अ० २ उ० । ठा० ।

स्थूलाः शाखाः सूक्ष्माः प्रशाखाः । । उत्त० । निसि० ।

वेदस्य ऋषिभेदाद्भिन्नपाठे, आव० म० १ अ० ।

वशीकरणादिप्रयोगः श्लाघाहेतोः सखिहेतोर्मित्रनिमित्तम् ।

सम० ३० सम० ।

**साहाणुसाह-** पुं० ।

अयं पारसीकः शब्दः । राज्ञामपि राजनि, निसि० १ उ० ।

**साहाभंग-** पुं० [शाखाभङ्ग]

वृक्षडालैकदेशभङ्गे, दश० ४ अ० ।

**साहामय-** पुं० [शाखामृग]

वानर, उत्त० ।

**साहारग-** त्रि० [साधारक]

साधार, आव० म० १ अ० ।

**साहारण-** न० [साधारण]

सामान्य, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० १ उ० ।

द्रव्यकारण, 'कारणं ति वा कारणं ति वा साहारणं ति वा एगद्वा'

आव० चू० १ अ० । आव० । आव० म० ।

संकीर्णे, विशेष० । आचा० । सम० ।

साधारणशरीरनामकर्मोदयवर्तिनि, पण्हा० १ अ०

अनन्तकायिके, । निसि० ।

उपकारे, सम० ३० सम० ।

**साहारणकप्प-** पुं० [साधारणकल्प]

शय्योपध्यादिसाधारणसामाचार्याम्, पंच० भा० ।

**साहारणट्टिय-** त्रि० [साधारणस्थित]

साधारणावग्रहस्थिते, वव० ४ उ०

**साहारणशरीर-** न० [साधारणशरीर]

अनेकजीवसामान्ये शरीरे, भग० २ श०१ उ० ।

**साहारमाण-** त्रि० [संहियमाण]

स्वस्थानादचलति तेन हियमाणे, वव० ।

**साहाविय-** त्रि० [स्वाभाविक]

अकृत्रिम, आव०४ अ० । विशेष० ।

सहज, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**साहित-** त्रि० [साधयत्]

प्रतिपादति, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ० । पण्हा० ।

**साहिगरण-** त्रि० [साधिकरण]

साहाधिकरणेन साधिकरणः । युद्धार्थमुपस्थिते, ठा० ५ ठा०२ कलहयति, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

सह अधिकरणेन वर्तते इति साधिकरणः । कषायभावशुभ भावाधिकरणसहिते, निसि० १० उ० ।

**साहिगरणि-** त्रि० [साधिकरणिन्]

सह भावनाऽधिकरणे न शरीरादिना वर्तते इति समासान्तविधेः साधिकरणी । शरीरादिसहिते साधिकरणी-संसारजीवस्य शरीर इन्द्रियरूपाधिकरणस्य सर्वदैव सहचारित्वात्साधिकरणत्वमुपदिश्यते शस्त्राद्यधिकरणापेक्षया तु स्वस्वामिभावस्य तदविरतिरूपस्य सह वर्तित्वाज्जीवः साधिकरणुच्यते । भग०१६ श०१ उ० ।

**साहिय-** त्रि० [स्वाहित]

सुष्ठु आहित-उपलब्धः स्वाहितः । स्वजातज्ञानादौ, 'अयंस अवरे धम्मे, नायपुत्तेण साहिए ।' आचा० १ श्रु० ८ अ० ८ उ० ।

**साहिज्ज-** न० [साहाय्य]

सहायकृत्यकरणे, वव० ३ उ० ।

**साहिया-** स्त्री० [साहिका]

गृहपङ्क्तौ, बुह० १ उ०३ ।

**साही-** स्त्री० [साही]

गृहपतौ, निसि० ३ उ० । आव० ।

**साहीण-** त्रि० [स्वाधीन]

अपरायत्ते, दश०२ अ० । तं० । आचा० ।

स्वायत्ते, नाया० १ श्रु०९ अ० ।

**साहीणभोगचागि-** पुं० [स्वाधीनभोगत्यागिन्]

स्वजनक्रियमाणमद्याङ्गनारागाद्यनास्वादाने, वव० २ उ० ।

**साहु-** न० [साधु]

शोभन, सूय०२ श्रु०१ अ० । आचा० । उव० ।

साधयति सम्यग्दर्शनादियोगैर-पवर्गमिति साधुः । दश०१ अ० ।

साधयति पोषयति विशिष्टक्रियाभिरपवर्गमिति साधुः । उत्त०१ अ० । विशेष० ।

साधयति ज्ञानादिशक्तिभिर्मैक्षमिति साधुः । समतां च सर्वभूते ध्यायतीति निरुक्तन्यायात् साधुः । साहायको वा संयमकारिणं साधयतीति वा साधुः । दश० १ अ० । भग० ।

अभिलषितमर्थं साधयतीति साधुः । आव०म०१ अ० ।

निर्वाणसाधकान् योगान् साधयतीति साधुः । आव०४ अ० ।

निर्वाणसाधकयोगसाधनात्साधुः । दश०१० अ० ।

मुक्तिसाधके, विशेष० ।

यथावस्थित यति, आचा०२ श्रु०३ चू० ।

ज्ञानदर्शनचारित्रक्रियोपेते मोक्षमार्गव्यवस्थितसाधौ, सूय०२ श्रु०५ अ० ।

ज्ञानादिक्रियाभिर्मुक्तिसाधनप्रवणे साधौ, चंद० १ पाहु० ।

श्रेष्ठ, सूय०२ श्रु०२ अ० । आचा० । विशेष० । भिक्षौ, सूय०१ श्रु०१३ अ० । सदाचारे, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ० ।

ब्रह्मचर्यादिगुणान्विते, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**साहुकार-** पुं० [साधुकार]

साधु कृतं तत्सुष्ठु कृतमिति विद्वद्भ्यः प्रशंसायाम्, आव०म० १ अ० । पिंड० । नं० ।

**साहुजणाचरिय-** न० [साधुजनाचरित]

साधुजनैरासेविते, पण्हा०४ अ० ।

**साहुजीवि-** पुं० [साधुजीविन्]

साधु-शोभनं परोपकारपूर्वकं जीवितुं शीलमस्य स साधुजीवी । सूय०२ श्रु०५ अ० ।

साधुना विधिना जीवितुं शीलं यस्य स साधुजीवी । सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ० ।

**साहुजोणिय-** पुं० [साधुयोनिक]

साधुपक्षके, निसि०१ उ० ।

**साहुणिकखेवण-** न० [साधुनिक्षेपण]

साधर्मिकाणामशिवादिकारणैर्निक्षिप्तधारक, निसि० १५ उ० ।

**साहुणी-** स्त्री० [साध्वी]

तपस्विन्याम्, । आव०चू० ।

**साहुदासी-** स्त्री० [साधुदासी]

मथुरानगरीवास्तव्यस्य जिनदासस्य श्रावकस्य भार्यायाम्, आव०चू० १ अ० । कल्प० ।

**साहुमग्ग-** पुं० [साधुमार्ग]

मुनिपथ, ठा० १ अधि० ।

**साहुमाणि-** त्रि० [साधुमानिन्]

आत्मोत्कर्षायाऽसदनुष्ठानमानिनि, सूय०१ श्रु०१३ अ० ।

**साहुया-** त्रि० [साधुता]

साधुभावे, उत्त० २ अ० ।

**साहुरक्खिय-** पुं० [साधुरक्षित]

स्वनामख्याते स्थविरे, एष मित्रवाचकक्षमाश्रमणानामादेशः।  
साधुरक्षितक्षमाश्रमणाः पुनरेवं ब्रुवते। वव०१ उ०।

**साहुरयण-** पुं० [साधुरत्न]

सोमसुन्दरगुरुणां शिष्ये, गच्छा०३ अधि०। सम०।

**साहुली-** स्त्री० [देशी]

वृक्षशाखायाम्, निसि०१ उ०।

**साहुलूसय-** त्रि० [साधुलूपक]

साधुमोषके, सूय०१ श्रु०३ अ०१उ०

**साहुवग-** पुं० [साधुवर्ग]

साधूनां वृन्दे, ठा० १ अधि०।

**साहुवयण-** न० [साधुवचन]

असत्यसत्यामृषावचनपरित्यागे, संथा०

**साहुवसण-** न० [साधुव्यसन]

दुष्टराज्यादिजनितायां शिष्टजनानामा-पदि, निसि०१ उ०।

**साहुवाय-** पुं० [साधुवाद]

वर्णवादे, ठा० १० ठा० ३ उ०। आव०म०

**साहुसमिक्खा-** स्त्री० [साधुसमीक्षा]

साध्वी चासौ समीक्षा च साधु समीक्षा। यथावस्थिततत्त्व-  
परिच्छितौ, समतायाञ्च। सूय०१ श्रु०६ अ०।

**साहेमाण-** त्रि० [साधयत्]

प्रतिपादयति, नाया०१ श्रु०१३ अ०। निसि०।

**साहेल्लता-** न० [साहित्य]

सहिततायाम्, दशा०४ अ०।

**सिआ-** अव्य० [स्यात्]

कदाचिदर्थे, कल्प०३ अधि०१ क्षण।

**सिउंठा-** स्त्री० [असिकुण्ठा]

साधारणशरीरवनस्पतिभेदे, पन्न०१ पद। जीवा०।

**सिंग-** न० [शृङ्ग]

विषाणे, विशेषे०। अणुओ०। आचा०। आव०चू०। पण्हा०। आव०म०

**सिंगक्खोड-** न० [शृङ्गक्षोट]

शृङ्गप्रदेशे,। ओह०।

**सिंगणाइय-** न० [शृङ्गनादित]

सर्वेषु कार्येषु शृङ्गभूते कार्ये, 'कज्जे-सु सिंगभूतं कज्जं तु  
सिंगणाइयं होइ।' पंच०भा०३ कल्प०। बुह०। पंच०चू०।

**सिंगधम-** त्रि० [शृङ्गधम]

शृङ्गं धमति शृङ्गधमः। शृङ्गवादके, 'सिंगं धमति। अण्णया वा  
तेणोवासेण चोरा गावीओ हरंति तेण समावतिए धंतं चोरओ  
कुट्ठो आगओ'ति। निसि०१ उ०।

**सिंगपाय-** न० [शृङ्गपात्र]

शृङ्गमये पात्रे, आचा०२ श्रु०१ चू०६ अ० १ उ०।

**सिंगभेय-** पुं० [शृङ्गभेद]

महिषादिविषाणच्छेदे, नाया०१ श्रु०२ अ०।

विषाणविशेषे च। ओह०।

**सिंगमाल-** पुं० [शृङ्गमाल]

द्रुमजातिविशेषे, जंबू०२ वक्ष०।

**सिंगरीडी-** स्त्री० [शृङ्गरीटी]

चतुरिन्द्रियजीवभेदे, उत्त०३६ अ०।

**सिंगवन्दण-** न० [शृङ्गवन्दन]

शृङ्गेन उत्तमाङ्गकदेशेन वन्दनम् इति शृङ्गवन्दनम्। शिरसा  
वन्दने, आव०३ अ०। आव०म०। आव० चू०।  
कुम्भकशब्देनेह ललाटमुच्यते तस्य वामपार्श्वयोर्निपातो हस्ता-  
भ्यां स्पर्शनं तद्युक्तं वन्दनं शृङ्गमुच्यते। एतदुक्तं भवति-अहो  
कायं इत्याद्यावर्तान् कुर्वन् कराभ्यां ललाटस्य मध्यदेशं स्पृशति  
किं तु वामपार्श्वं दक्षिण पार्श्वं वा न स्पृशतीति। बुह० ३ उ०

**सिंगवेर-** न० [शृङ्गवेर]

आर्द्रक, उत्त०३६ अ०। सूय०। जीवा०। पन्न०। आचा०।

**सिंगार-** पुं० [शृङ्गार]

शृङ्गं सर्वरसेभ्यः परमप्रकर्षकोटिलक्षणमियति गच्छतीति।  
कमनीयकामिनीदर्शनादिसंभवे रतिप्रकर्षात्मके सर्वरसप्रधाने  
रसविशेषे, अणुओ०।

**सिंगारमइ-** स्त्री० [शृङ्गारमति]

मूलपिण्डे उदाहृतस्य सिन्धुराजस्य भार्यायाम्, पिंड०।

**सिंगाररस-** पुं० [शृङ्गाररस]

मन्मथदीपके, दश०३ अ०।

**सिंगाररसोवेय-** त्रि० [शृङ्गाररसोपेत]

कामोत्कोचके, नाया०१ श्रु०९अ

**सिंगारागार-** न० [शृङ्गारागार]

शृङ्गारस्य रसविशेषस्यागारमिवागारम् शृङ्गाररसोपेते, नाया० १  
श्रु०१ अ०।

**सिंगारागार-** त्रि० [शृङ्गाराकार]

शृङ्गारो मण्डनभूषणादिस्तत्प्रधान आकारः-आकृतिर्यस्येति।  
मण्डनप्रधानाकृतिसहिते, नाया०१श्रु०१अ०। भग०। जीवा०। उव०

**सिंगारागारचारुवेसा-** त्रि० [शृङ्गारागारचारुवेसा]

शृङ्गारो मण्डनभूषणाटोपस्तत्प्रधान आकारो यासां तास्तथा  
चारुवेसा मनोहरवेसाः मनोहरनेपथ्याः। शृङ्गारस्य प्रथमरसस्या-  
गारमिवगृहमिव चारुवेसो यासां तास्तथा। जंबू०१ वक्ष०।  
कृतसुन्दरवेषायाम्, रा०। पण्हा०। सूर०। विशेषे०। चंद०। उव०

**सिंगारिय-** पुं० [शृङ्गारिक]

शृङ्गारिरसवति, उवा० ८ अ० ।

**सिंगि-** पुं० [शृङ्गिन्]

शृङ्गमस्येति शृङ्गी । विषाणिनि पशौ, अणुओ० । आव० म० ।

**सिंघली-** पुं० [देशी]

म्लेच्छदेशविशेषे, तद्वासिनि जने च । भग० ९ श० ३३ उ० ।

**सिंघाङग-** न० [शृङ्गाटक]

त्रिकोणे जलजफलविशेषे, ठा० ३ ठा० ३ उ० । पत्र० ।  
शृङ्गाटकाकृतिपथयुक्ते, त्रिकोणस्थाने, आव० म० १ । अणुओ० ।  
नाया० । ठा० । पण्हा० । कल्प० । रा० ।  
चन्द्रं सूर्यं वा गह्वतो राहोः कृष्णपुद्गले, चंद० २० पाहु० । भग० ।  
कल्प० । उव० । दशा० । रा० । जंबू० । सूर० । आचा० । बुह० । आव० ।

**सिंघाण-** न० [सिङ्गाण]

नाशिकाश्रेष्मणि, ठा० ९ ठा० ३ उ० । सम० । तं० । उत्त० ।  
नाशिकोद्धवेश्रेष्मणि, ठा० ५ ठा० ३ उ० कल्प० । नाया० । तं० ।

**सिंच-** घा० [सिच्]

क्षरणे, । आचा० ।

**सिंदी-** स्त्री० [सिन्दी]

खर्जूर्याम्, आव० म० १ अ० ।

**सिंदुवार-** पुं० [सिन्दुवार]

निर्गुण्डीवृक्षे, जंबू० २ वक्ष० । पत्र० । नाया० आचा० ।

**सिंधव-** न० [सैन्धव]

सिन्धुदेशोद्धवेश्रेष्मणे, अश्वे, । सूय० १ श्रु० ५ अ० । ठा० । आचा० ।

**सिंधु-** पुं० [सिन्धु]

वीतिभयनगरप्रतिबद्धे जनपदभेदे, पत्र० १ पद । सूय० ।  
आव० म० । आव० क० ।  
जम्बूद्वीपे मन्दरस्य दक्षिणेन पश्चिमलवणसमुद्रगामिन्यां महा-  
नद्याम्, ठा० ८ ठा० ३ उ० । उत्त० । आव० चू० । सम० ।

**सिंधुकुंड-** न० [सिन्धुकुण्ड]

यतः सिन्धुमहानदी प्रवहति तत्रत्ये कुण्डं, जंबू० ४ वक्ष० ।

**सिंधुकूट-** न० [सिन्धुकूट]

हिमवद्बर्षधरपर्वतस्य सिन्धुदेव्यधिष्ठिते स्वनामख्याते कूटे, ठा०  
२ ठा० १ उ० ।

**सिंधुणिक्बुड-** न० [सिन्धुनिष्कुट]

सिन्धुकूले, आव० म० १ अ० ।

**सिंधुदत्त-** पुं० [सिन्धुदत्त]

ब्रह्मदत्तचक्रिभार्याया धनराज्याः पितरि, उत्त० १३ अ० ।

**सिंधुदेवी-** स्त्री० [सिन्धुदेवी]

सिन्धुनद्यधिष्ठात्र्यां देव्याम्, आव० म० १ अ० । जंबू० ।

**सिंधुदेवीकूट-** न० [सिन्धुदेवीकूट]

क्षुद्रहिमवद्बर्षधरपर्वतस्य सिन्धुदेव्यावासीभूते अष्टमकूटे, जंबू०  
४ वक्ष० ।

**सिंधुष्पवायदह-** पुं० [सिन्धुप्रपातहद]

यतः सिन्धुः प्रपतति तस्मिन् हृदविशेषे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**सिंधुराय-** पुं० [सिन्धुराज]

संयुगनामनगरस्य स्वनामख्याते राजनि, पिंड० ।

**सिंधुवर्द्धन-** न० [सिन्धुवर्धन]

स्वनामख्याते नगरभेदे, आव० ४ अ

**सिंधुसेवण-** पुं० [सिन्धुसेवन]

वानरीनाम्न्याः ब्रह्मदत्तचक्रिभार्यायाः पितरि, उत्त० १३ अ० ।

**सिंधुसौवीर-** पुं० [सिन्धुसौवीर]

सिन्धुनद्या आसन्नाः सौवीरा जनपदविशेषाः सिन्धुसौवीराः ।  
वीतिभयनगरप्रधानेषु जनपदविशेषेषु, भग० १३ श० ६ उ० । ठा०

**सिंभ-** न० [श्लेष्म]

श्लेष्मणि, बुह० १ उ० २ ।

कफे, तं० ।

**सिंभिय-** त्रि० [श्लेष्मिक]

श्लेष्मभवे, तं० ।

**सिंवली-** स्त्री० [शाल्मली]

बल्ल्यादिफलौ, दश० ५ अ० १ उ० ।

वज्रमयभीषणकण्टकाकुलायां नरकपालविकुर्वितायां शाल्म-  
ल्याम्, सूय० १ श्रु० ५ अ० १ उ० ।

वृक्षविशेषे, भग० १५ श० ।

**सिंह-** पुं० [सिंह]

मृगराज, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

स्वनामख्याते वीरानगारे, यो हि गोशालकतेजोलेश्यया रुग्णस्य  
वीरजिनस्य दुःखादिव दुःखित वनं गत्वा प्रारोदीत्, प्रैषि च  
रेवत्यन्तिके कुक्कुटमांसकाहरणाय । पण्हा० ५ अ० ।

ऋषभदेवस्य दानवतितमे पुत्रे, कल्प० १ अधि० ७ क्षण ।

**सिंहकणी-** स्त्री० [सिंहकर्णी]

औषधिविशेषे, आचा० १ श्रु० १ अ० ५ उ० । पत्र० ।

**सिंहकेसर-** पुं० [सिंहकेशर]

सिंहस्य सटायाम्, सिंहसटासदृशेषु, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**सिंहगइ-** पुं० [सिंहगति]

अमृतगतेरमृतवाहनस्य च पश्चिमोत्तरदिग्व्यवस्थित लोकपा-  
लयोः, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**सिंहगिरि-** पुं० [सिंहगिरि]

श्रीवज्रस्वामिनां गुरौ, ठा० ४ ठा० ३ उ० आव०



**सिंहगुहा-** स्त्री० [सिंहगुहा]

वङ्कचूडपालिते चौरपल्लीविशेषे, विशेषे०

**सिंहपुर-** न० [सिंहपुर]

सिंहरथराजपालिते स्वनामख्याते नगरे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सिंहल-** पुं० [सिंहल]

अनार्यदेशविशेषे, तद्वासिनि जने च । नाया० १ श्रु० १ अ । कल्प० ।

**सिंहलदीव-** पुं० [सिंहलद्वीप]

जम्बूद्वीपे स्वनामख्याते भारतवर्षीये दक्षिणसमुद्रमध्यवर्तिनि भूखण्डे, आचा० १ श्रु० ६ अ० ६ उ० ।

**सिंहलय-** पुं० [सिंहलक]

सिंहलदेशोद्भवे मनुष्ये, जंबू० ३ वक्ष० । आव० चू० ।

मानुष्यां सिंहली । रा० ।

**सिंहविक्रमगड-** पुं० [सिंहविक्रमगति]

अमितगत्यमितवाहनेन्द्रस्य लोकपाले, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**सिंहसेन-** पुं० [सिंहसेन]

सहस्रोद्वाहपूर्वभवजीवेषु प्रतिष्ठनगरराजे, यो हि श्यामाख्यायाः स्वभार्या अर्थाय ५०० स्वराज्ञीर्दग्ध्वा नरकं गतः । ठा० १० ठा० चम्पाया नगर्याः स्वनामख्याते राजनि, यन्मन्त्री रोहगुप्तः धर्म-विचाराय समस्यां ददौ । आचा० १ श्रु० ४ अ० २ उ० ।

स्वनामख्याते आचार्यो, यो वादे पराजितेन रिष्टामात्येन दह्यमानोऽमशनं प्रतिपद्य स्वर्गतः । संथा० ।

**सिक्क-** त्रि० [सेक्य]

सेवनीये, आव० ६ अ० ।

**सिक्कग-** न० [सिक्क]

आकाशे दध्यादिभाजनावलम्बनाय दवरकमयेऽवलम्बनके, उवा० २ अ० । निसि० । रा० । आव० ।

**सिक्कयणंतय-** न० [सिक्ककानन्तक]

सिक्ककपिधाने, निसि० १ उ० ।

**सिक्खग-** पुं० [शैक्षक]

नूतनप्रव्रजिते, दश० १ अ० । सूय० ।

**सिक्खमाण-** त्रि० [सिक्खमाण]

शिक्षां कुर्वाणे, सम्यग्यासेव माने, सूय० १ श्रु० १४ अ० ।

**सिक्खा-** स्त्री० [शिक्षा]

अभ्यासे, सूय० १ श्रु० ५ अ० १ उ० । आव० नाया० ।

व्यापारणे, आचा० १ श्रु० २ अ० ३ उ० ।

आसेवने, आचा० १ श्रु० ८ अ० ८ उ० ।

उद्यमेन ग्रहणे, सूय० १ श्रु० १ अ० ।

**सिक्खण-** न० [शिक्षण]

आचारग्रन्थे, कल्प० १ अधि० १ क्षण ।

**सिक्खावण-** न० [शिक्षण]

अश्वदीनां चतुष्पदानां परिकर्मणि, निसि० १ उ० ।

**सिक्खावणा-** स्त्री० [शिक्षापणा]

ग्रहणासेवनारूपशिक्षाग्रहणे, पंच० भा० १ कल्प० ।

शिक्षापणा त्रिविधा-लोइया, लोउत्तरिया, कुप्पावयणिया । लोइया ताव व्याकरणनाटकादिषु शिक्षादि कुप्पावचनिकार-क्तपटादीनां या शिक्षा, त्रिपटिकादिषु द्रव्यशिक्षा लोकोत्तरा द्विविधा-ग्रहणशिक्षा, आसेवनाशिक्षा च । ग्रहणसिक्खा सुत्तस्य तदुभयाणं आसेवणा पडिलेहणा, पप्फोडणा य उवट्टावणा लोइया लोउत्तरा कुप्पावयणिया । लोइया राया रायमच्चठवणा कुप्पावयणिया भिक्खु माइयाणं उवसंपदा लोउत्तरा असंयत-त्वात्, व्रतेषु स्थापना उपस्थापना । पंच० चू० १

**सिक्खावय-** न० [शिक्षाव्रत]

चत्वारि शिक्षाव्रतानि भवन्ति, तद्यथा-सामायिकम् देशावकासिकं पौषधोपवासः अतिथिसंविभागः । आव० ६ अ०

**सिक्खावयव्वय-** न० [शिक्षापदव्रत]

सप्त शिक्षाप्रधानानि व्रतानि, गुणव्रतानामपि नित्यमभ्यसनीय-तया शिक्षाव्रतत्वेन सप्त शिक्षाव्रतान्युक्तानि । आतु० ।

**सिक्खाविअ-** त्रि० [शिक्षित]

आप्तोपदेशदाने, भग० ८ श० २ उ० ।

**सिक्खावित्तए-** अव्य० [शिक्षयितुम्]

प्रत्युपेक्षादिसामाचार्यं ग्राहयितुमित्यर्थे, ठा० ३ ठा० ४ उ० । ग्रहणशिक्षापेक्षया सूत्रार्थं ग्राहयितुमासेवनाशिक्षापेक्षया तु प्रत्युपेक्षणादि शिक्षयितुमित्यर्थे, ठा० ३ ठा० २ उ० ।

**सिक्खासमावन्न-** त्रि० [शिक्षासमापन्न]

शिक्षयाव्रतासेवनया समापन्नो युक्तः । शिक्षिते, उत्त० ५ अ० ।

**सिक्खिऊण-** अव्य० [शिक्षित्वा]

अधीत्येत्यर्थे, 'सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहिं संजयाणं बुद्धा सगासे' दश० ५ अ० २ उ० ।

**सिक्खिय-** त्रि० [शिक्षित]

शिक्षा जाताऽस्येति शिक्षितः । उत्त० ४ अ० ।

शिक्षाग्रहिते, उत्त० ४ अ० ।

अभ्यस्ते, उव० । उत्त० ।

पठनक्रिययान्तं नीते, गच्छा० २ अधि० । विशेष० ।

गृहीते, चंद० २० पाहु० । अणुओ० । सूय० । आव० म० ।

**सिक्खिवंत-** त्रि० [शिक्षवत्]

सिक्खावतो दुविहा ग्रहणे आसेवणे, शिक्षयन्नपि द्विविधः, यः शिक्षाशास्त्रं ग्राहयति पाठ्यत्यपरस्तु तदर्थं दशविध-चक्रवाल सामाचार्यनुष्ठानतः सेवयति सम्यगनुष्ठानं कारयति । सूय० १ श्रु०

**सिगया-** स्त्री० [सिकता]

वालुकायाम्, सूर० १८ पाहु० ।

**सिगाल-** पुं० [शृगाल]

जम्बूके, आचा० ।

**सिगाली-** स्त्री० [शृगाली]

शिवायाम्, अणुओ० ।

**सिगु-** पुं० [सिगु]

वृक्षविशेषे, आव० १ अ० ।

**सिग-** [देशीयपदमेतत्]

परिश्रमे, वव० ४ उ० ।

**सिग्घ-** न० [शीघ्र]

आशुशब्दार्थे, स्वल्पकाल, आव० ४ अ० । आव० म० । रा० ।

वेगवंता मध्येऽतिशीघ्रे, उव० ।

**सिग्घ-** त्रि० [श्लाघ्य]

श्लाघ्यं प्रशंसास्पदभूतं निःशेषं प्रशंसास्पदभूतम् । दश० १ चू० ।

**सिग्घगङ्-** त्रि० [शीघ्रगति]

शीघ्रा गतिरस्त्यस्य । द्रुतगमनयुक्ते, सूर० १ पाहु० ।

**सिग्घगमन-** [शीघ्रगमन]

सूर्याभदेवस्य वैकुर्विके विमाने, रा० ।

**सिचय-** पुं० [सिचय]

वस्त्र, वव० ५ उ० ।

**सिजंभव-** पुं० [शय्यम्भव]

प्रभवस्वामिनां शिष्ये चतुर्दशपूर्वधरे दशवैकालिककर्तारि

आचार्ये, दश० १ अ० । कल्प० । न० । महानि० । ठा० । निसि० ।

**सिजंस-१** त्रि० [श्रेयस्]

परमप्रशस्ये, जीवा० १ प्रति० ।

**सिजंस-२** पुं० [श्रेयांस]

भारते वर्षेऽस्यामवसर्पिण्यां जाते एकादशेजिने, सम० ७९

सम० । अणुओ० । आव० चू० । कल्प० ।

**सिज्जा-** स्त्री० [शय्या]

शेरतेऽस्यां साधव इति शय्या । बुह० २ उ० ।

शयनं शय्या । आव० ४ अ० ।

बृहत्संस्तारके, भग० २ श० ५ उ० ।

शयने, अणुओ० । आव० । ओह० । सम० । दशा० । नाया० । उत्त० ।

श्रमणोपाश्रये, वव० ४ उ० । आचा० । उत्त० ।

शून्यगृहादिकायां वसतौ, आचा० १ श्रु० १ अ० ।

शयनीय, नाया० १ श्रु० १ अ० । ठा० । आचा० । आव० । सूय० । भग०

यत्र वा प्रसारितपादैः सुप्यते सा शय्या संस्तारको वा । आसने,

निसि० १३ उ० । पण्हा० । आव० म० । आव० चू० । आव० । बुह० । वव०

**सिज्जाकप्पविहिण्णु-** पुं० [शय्याकल्पविधिज्ञ]

आचाराङ्गे शय्यायां संस्तारग्रहणं, येन स सूत्रतोऽधीतोऽर्थतश्च

शय्याकल्पविधिज्ञः शय्याकल्पसूत्रार्थज्ञे, निसि० २ उ० ।

**सिज्जाकप्पिय-** पुं० [शय्याकल्पिक]

शय्याया ग्रहणारक्षणधारणप्र-वणे, बुह० १ उ० ।

**सिज्जाकर-** पुं० [शय्याकर]

शय्यां प्रतिश्रयं करोतीति शय्याकरः । निसि० ८ उ० ।

वसतिस्वामिनि, बुह० २ उ० ।

**सिज्जादाता-** त्रि० [शय्यादातु]

शय्याया वसतेर्दानात् शय्यादाता सागारिके, बुह० २ उ० ।

**सिज्जाधर-** पुं० [शय्याधर]

शय्यां पतन्ती छादनलेपनाभ्याम् आदिशब्दात्-स्थूणादाना-

दिभिश्च धारयति अतः शय्याधरः । यद्वा-तथा शय्यया साधूनां

विस्तीर्णया नरकादत्मान धारयतीति श-य्याधरः । सागारिके,

बुह० २ उ० । निसि० ।

**सिज्जापडिमा-** स्त्री० [शय्याप्रतिमा]

शय्यते यस्तां सा शय्या संस्तारकस्तस्याः प्रतिमा अभिग्रहाः

शय्याप्रतिमाः । वसतिविषयकाभिग्रहे, ठा० ।

**सिज्जापरिसह-** पुं० [शय्यापरिषह]

शय्या-वसतिस्तत्परिषहणं च तज्जन्यदुःखदिरुपेक्षा । भग० ८

श० ८ उ० ।

**सिज्जाभंड-** न० [शय्याभाण्ड]

शय्योपकरणे, भग० ११ श० ९ उ० ।

**सिज्जायर-** पुं० [शय्यातर]

शय्या-वसतिस्तया तरति संसारमिति शय्यातरः । साधूनां

वसतिदातरि, दश० ३ अ० ।

**सिज्जायरपिण्ड-** पुं० [शय्यातरपिण्ड]

शय्यातरो वसतिस्वामी तस्य पिण्डः । सागारिकेण दीयमाने

अशनादिद्वादशविधे पिण्डे, दश० ३ अ० ।

**सिज्जायरभत्त-** न० [शय्यातरभक्त]

शय्यातरपिण्डे, निसि० ११ उ०

**सिज्जावाली-** स्त्री० [शय्यापालिका]

शय्यारक्षिकायां शयनीयस्तरि-कायाम्, आव० म० १ अ० ।

**सिज्जासंथार-** पुं० [शय्यासंस्तार]

शिरतेऽस्यामिति शय्या वसतिः सैव संस्तारकः, यद्वा-शय्या

वसतिरेव संस्तारको द्विधा-परिशाटी, अपरिशाटी । शय्योपल-

क्षितस्संस्तारकः शय्यासंस्तारकः । अथवा-शय्यायां वसतौ

संस्तारकाः शय्यासंस्तारकाः । नाया० १ श्रु० १ अ० ।

शय्यासंस्तारकोभये, बुह० १ उ० ३ । आचा० । आव० । निसि० । सम०

**सिञ्ज- न० [सिध्मन्]**

क्षुद्रकुष्ठविशेषे, भग० ७ श० ६ उ० । जंबू० ।

**सिञ्जिया- स्त्री० [साध्यापिका]**

प्रातिवेश्मिकस्त्रियाम्, बुह० १ उ० २

**सिद्ध- न० [सृष्ट]**

एकीभूते, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

**सिद्ध- न० [श्लिष्ट]**

मिलिते, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

**सिद्धत- न० [शिष्टत्व]**

शिष्टभावे, वक्तुः शिष्टत्वसूचने,.....

अभिमतसिद्धान्तोक्तार्थतायां वक्तुः शिष्टतासूचकत्वे च । सम० ३५ सम० ।

दशमे सत्यवचनातिशये, रा० ।

**सिद्धि- पुं० [श्रेष्ठिन्]**

नगरमुख्यव्यवहारिणि, कल्प० १ अधि० ३

श्रेष्ठी-श्रीदेवताध्यासितसौवर्णपट्टभूषितोत्तमाङ्गः । पत्र० ।

**सिद्धिल- त्रि० [शिथिल]**

‘मन्दवीर्य, आचा० १ श्रु० ५ अ० ३ उ० ।

श्लथ, भग० १ श० १ उ०

**सिद्धिलतया- स्त्री० [शिथिलता]**

शैथिल्ये, भग० १६ श० ४ उ० ।

**सिथिलत्वच्- स्त्री० ।**

श्लथचर्म्मणि, भग० १६ श० ४ उ० ।

**सिद्धिलीकय- त्रि० [श्लिष्टीकृत]**

सूत्रबद्धाग्नितप्तलोहशलाकाकलापवन्निधत्ते, भग० ६ श० १ उ० ।

**सिद्धिलीकय- त्रि० [शिथिलीकृत]**

मन्दपिपाकीकृते, भग० ६ श० ३ उ० ।

**सिणाण- न० [स्नान]**

सोत्तमाङ्गशौचे, आचा० २ श्रु० १ चू० २ अ० १ उ० ।

स्नानं च देशसर्वभेदभिन्नं देशस्नानमधिष्ठानशौचातिरे-केणा-क्षिपक्षमप्रक्षालनमपि । सर्वस्नानं प्रतीतम् ।

‘राड्भते सिणाणे य गंधमल्ले य वीयणे ।’ अनाचरितम्, दश० ३ अ० । जीत० ।

अभ्यङ्गपूर्वकेऽङ्गप्रक्षालने, तच्चायतनयाऽत्र संसक्तभूम्यां संपा-तिमसत्त्वाकुले वा काले वस्त्रापूतजलेन वा यत् कृतम् । आचा० १ श्रु० ९ अ० ४ उ० ।

**सिणाय-पुं० [स्नात]**

घातिकर्ममलक्षालनावाप्तशुद्धस्नानस्वरूपे निर्ग्रन्थभेदे, ठा० ३ ठा० २ उ० । भग० ।

**सिणायग- पुं० [स्नातक]**

जिनगृहे स्नपनं स्नात्रं तदपि प्रत्ययं पर्वसुवा, करणाशक्तेनापि प्रतिवर्षमेकैकं साडम्बरसमग्रसामग्रीमेलनादिपूर्वं कार्यम् । ठा० ४ ठा० १ उ० ।

पर्वसु जिनगृहे स्नपनं कार्यम् । देवस्नातको देवश्रेष्ठः । सूय० २ श्रु० २ अ० ।

बोधिस-त्वे, सूय० २ श्रु० ६ अ० ।

घातिकर्ममलक्षालनावाप्तशुद्धज्ञानस्वरूपे निर्ग्रन्थभेदे, ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

**सिणिद्ध- त्रि० [स्निग्ध]**

आर्द्रं, आचा० २ श्रु० २ चू० १ अ० १ उ० । ठा० ।

घन, उव० ।

अरूक्ष, नाया० १ श्रु० ९ अ० ।

शुभकान्ति, रा० ।

**सिणेह- पुं० [स्नेह]**

स्वजनादिषु प्रेमणि, उत्त० १ अ० । सूय० ।

स्निग्धभावे, सूय० २ श्रु० ३ अ० । ठा० ।

‘छेदणे भेदणे चेव, घंसणे पीसणे तहा । अभिघाते सिणेहे य, कारे स्वारेति यावरे । निसि० १ उ० ।

तैलघृतादौ, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

मात्रादिसंबन्धहेतौ, उव० ।

रागस्नेहयोः कः प्रतिविशेषइच्युच्यते, रूपाद्याक्षेपजनितः प्रीतिविशेषो रागः, सामान्यतस्त्वपत्यादिगोचरः स्नेहः । आव० १ अ०

**सिणेहकाय- पुं० [स्नेहकाय]**

अप्कायविशेष, भग० १ श० ९ उ० ।

**सिणेहज्जवसाण- न० [स्नेहाध्यवसान]**

स्नेहहेत्वध्यवसानभेदे, आव० क० ४ अ० ।

**सिणेहद- न० [स्नेहार्द्र]**

अभिष्वङ्गेनार्द्रं जीवभेदे, सूय० २ श्रु० ६ अ०

**सिणेहपयवज्जिय- न० [स्नेहपयोवर्जित]**

स्नेहेन घृतादिना पयसा क्षीरेण वर्जितं भक्तम् । घृतपयोवर्जिते भक्ते, ओह० ।

**सिणेहपाण- न० [स्नेहपान]**

द्रव्यविशेषपक्वघृतादिपाने भैषज्यविषये नाया० १ श्रु० १३ अ० ।

**सिणेहराग- पुं० [स्नेहराग]**

सिणेहरागो नाम यो यस्मिन् विषये मूर्च्छितस्तस्य तद्विषय-मूर्छायाम्, आव० चू० १ अ० ।

**सिणेहविगइ- स्त्री० [स्नेहविकृति]**

स्नेहरूपासु विकृतिषु, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**सिणेहसुहुम-** न० [स्रेहसूक्ष्म]

अवश्यायहिममिहिकाकरकहरतनुरूपे सूक्ष्मभेदे, ठा० ८ ठा० ३

**सिणेहायन-** न० [स्रेहायतन]

जलाऽऽवाहनस्थाने, कल्प० ३ अधि ०९ ।

**सिण्हाय-** पुं० [स्रानीय]

स्नानकरणयोग्यजलाधारे, उत्त० १२ अ० ।

शुचिभूते, उत्त० १२ अ० ।

**सित-** त्रि० [सित]

बद्ध, न० ।

**सित्त-** त्रि० [सित्त]

केवलोदकेवार्दीकृते, गच्छा० १ अधि० । नाया० । भग० रा० ।

उदकच्छण्टने कृतसेवन, उव० । जीवा० ।

**सित्त-** पुं० [सित्ति]

ऊर्ध्वमधो वा गच्छतः सुखोत्तारावतारहेसौ काष्ठादिमये पथि, वव० १० उ० ।

**सित्थ-** न० [सित्थ]

संयुक्तवर्णसंबन्धिनामूर्ध्व स्थितानां लुष्मवति । सित्थं सित्थं । कणे, । गच्छा० । आव० म० । अणुओ० पण्हा० । विपा० ।

**सिद्ध-** पुं० [सिद्ध]

ये येन गुणेन निष्पन्नाः परिनिष्ठिताः सिद्धौदनन्नद् न पुनः साधनीया इत्यर्थः । कल्प० ।

**सिध्म-** पुं०

कुष्ठभेदे, पण्हा० ५ अ० ।

**सिद्धन्त-** पुं० [सिद्धान्त]

सिद्धं प्रमाणप्रतिष्ठितमर्थमन्तं संवेदनं निष्ठा रूपं नयतीति सिद्धान्तः । आगमे, अणुओ० । विशेष० ।

समय० जीवा० १ प्रति० । बुह० ।

**सिद्धन्तपरम्मुह-** पुं० [सिद्धान्तपराङ्मुख]

आगमोक्तानुष्ठानशून्य, गच्छा० २ अधि० ।

**सिद्धन्तरहस्स-** न० [सिद्धान्तरहस्य]

आगमगुप्तार्थे, न० ।

**सिद्धन्तामयपडिपुण्णकण्णपुडअ-** ० [सिद्धान्तामृतप्रतिपूर्णकर्णपुटक]

आगमसुधासम्भृतश्रवणच्छदपत्रे, जीवा० २४ अधि० ।

**सिद्धन्तियवयण-** न० [सैद्धान्तिकवचन]

आगमभणिते, जीवा० १ प्रति

**सिद्धकूड-** पुं० न० [सिद्धकूट]

महाहिमवतः प्रथमकूटे, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

शिखरिवर्षधरपर्वतस्य प्रथमकूटे, ठा० २ ठा० ३ उ०

जम्बूद्वीपे सौमनसे वक्षस्कारपर्वतस्य गन्धमादनस्य पर्वतस्य

प्रथमकूटे, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

रुक्मिवर्षधरपर्वतस्य प्रथमकूटे, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

निषधवर्षधरपर्वतस्य प्रथमकूटे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

दक्षिणभरतदीर्घवैताढ्यस्य प्रथमकूटे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

कच्छादिविजयक्षेत्रदीर्घवैताढ्यानां प्रथमकूटे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

विद्युत्प्रभवक्षस्कारपर्वतस्य प्रथमकूटे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

नीलवद्वक्षस्कारपर्वतस्य प्रथमकूटे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

ऐरवते दीर्घवैताढ्यस्य प्रथमकूटे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**सिद्धकेवलनाण-** न० [सिद्धकेवलज्ञान]

सिद्धकेवलज्ञाने, ठा० ।

**सिद्धगइ-** स्त्री० [सिद्धगति]

सिद्ध्यन्ति निष्ठितार्था भवन्ति यस्यामिति सिद्धिः लोकान्त क्षेत्रलक्षणा सैव गम्यमानत्वाद् गतिः । रा० दश० । सम० ।

सिद्धैर्गम्यमानायामीषत्प्राग्भारा पृथिवि, भग० १ श० १ उ० । ठा०

**सिद्धगइनामधेज्जा-** न० [सिद्धगतिनामधेय]

सिद्धगतिरितिनामधेयं यस्य तत्सिद्धगतिनामधेयम् । सिद्धस्थाने, सम० १ सम० । रा० ।

**सिद्धगंडिया-** स्त्री० [सिद्धगण्डिका]

सिद्धान्तव्यताप्रतिबद्धायां ग्रन्थ पद्धतौ, भग० ११ श० ९ उ० ।

**सिद्धजत्त-** पुं० [सिद्धयात्र]

सुरभिपुरपार्श्वे स्वनामख्याते नाविके, आव० १ अ० । आव० म० ।

**सिद्धठाण-** न० [सिद्धस्थान]

स्थायतेऽस्मिन्निति स्थानमित्यधिकरणसाधनोऽयं शब्दस्ततश्च सिद्धस्य स्थानं सिद्धस्थानम् । सिद्धपत्तने, विशेष० ।

निश्चितप्रामाण्ये, सम० २५ सम० ।

**सिद्धत्थ-** पुं० [सिद्धार्थ]

सर्षपे, अणुओ० ।

श्वेतसर्षपे, कल्प० १ अधि० ३ । गच्छा० । रा० ।

श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य पितरिक्षत्रियकुण्डग्रामराजे,

सम० । आव० । आचा० । आव० म० । कल्प० ।

अस्थिग्रामे वीरं प्रत्युपसर्गं कुर्वतः शूलपाणेर्यक्षस्य निग्राहके स्वनामख्याते यक्षे, ठा० १० ठा० ३ उ० । आव० क० ।

पाटलिखण्डनगरराजनि, विपा० १ श्रु० ६ अ०

मण्डिकग्रामे स्वनामख्याते वणिजि, आव० चू० १ अ० ।

दशमकल्पविमानभेदे, सम० ६० सम० ।

जम्बूद्वीपे ऐरवते वर्षे उत्सर्पिण्यां भविष्यति द्वितीये तीर्थकरे, सम० ।

**सिद्धत्थग-** पुं० [सिद्धार्थक]

सर्षपे, । भग० । नाया० । अणुओ० । ठा० ।

**सिद्धत्यमजाल-न० [सिद्धार्थजाल]**

सिद्धार्थाः-सर्षपाः येन जालेन गृह्यन्ते तस्मिञ्जाले, निसि०११ उ०

**सिद्धत्यगाम- पुं० [सिद्धार्थग्राम]**

सिद्धार्थप्रधाने ग्रामे, यत्र वीरप्रभु गोशालेन सह विहृतवान् । भग० ६ श० १ उ० ।

**सिद्धत्यपुर- न० [सिद्धार्थपुर]**

सिद्धार्थग्रामे,  
‘ततो अणारियदेसातो निगगया पढमसरए सिद्धत्यपुरं गया’  
आव०म०१ अ० । कल्प० ।  
यत्र गोशालस्तिलसतम्बं दृष्टवान् । आव०चू०१ अ० । आव०म० ।

**सिद्धत्यवण- न० [सिद्धार्थवन]**

ऋषभदेवस्य निष्क्रमणवने, आव० म०१ अ० । कल्प० ।  
आव०चू० ।

**सिद्धत्यसारहि- पुं० [सिद्धार्थसारथि]**

सिद्धार्थनरेन्द्रसारथी, सिद्धार्थ-सारथिदेवेन गृहीतहरिशवो बलदेवः प्रतिबोधित इति । सूय० १ श्रु०१ अ०१ उ० ।

**सिद्धत्या- स्त्री० [सिद्धार्था]**

‘तिन्नेव सयसहसा, अभिनंदनजिनवरस्स सीसाणं । सव्व-  
वीरियधयस्स, सिद्धत्या संवर सुयस्स’ । आव० ।  
अभिनन्दनजिनस्य निष्क्रमणशिविकायां सर्षपप्रमाणसुवर्णक-  
रणरचितसुवर्णमणिमयकण्टिकायाम्, उव० ।

**सिद्धपाहुड- न० [सिद्धप्राभृत]**

स्वनामख्याते सिद्धाधिकारप्रतिपादके ग्रन्थे, नं० ।

**सिद्धपुत्त- पुं० [सिद्धपुत्र]**

मुण्डे सशिखाके सभार्यके गृहस्थे, बुह०३ उ० । गच्छा० ।  
सभार्यकोऽभार्यको वा णियमासुक्कंवरधरो खुरमुंडो ससिही  
असिही वा णियमा अडंडगो अपत्तगो य सिद्धपुत्तो भवति ।  
निसि०१ उ० । जीवा० । नं० । आव०म० ।

**सिद्धभूमि- पुं० [सिद्धभूमि]**

ईषत्प्राग्भारायां पृथिव्याम्, आव०म०१अ

**सिद्धमग्न- पुं० [सिद्धमार्ग]**

हितप्राप्तिपथे, उवा०२ अ० ।  
सिद्धिशब्देन श्रमणधर्मस्य वशीकारस्तस्य मध्यं लक्षणया  
प्रकर्षः । कल्प०१ अधि०५ ।

**सिद्धमणोरम- पुं० [सिद्धमनोरम]**

द्वितीयदिवसे, जंबू०७ वक्ष० ।

**सिद्धवरसासन- न० [सिद्धवरशासन]**

सिद्धानां निष्ठितार्थानां वरशासनं प्रधानाज्ञा सिद्धवरशासनम् ।  
सर्वज्ञाऽऽज्ञायाम्, पण्हा० १ अ० ।

**सिद्धसरण-न० [सिद्धशरण]**

सिद्धाश्रयणे, ‘कम्मट्ठक्खयसिद्धा, सहट्ठिया नाणदंसणसमिद्धा ।  
सव्वट्ठलट्ठसिद्धा, ते सिद्धा सतु मे सरणं । चउ० ।

**सिद्धसेणदिवागर- पुं० [सिद्धसेनदिवाकर]**

सम्मत्यादिविविधग्रन्थकारके स्वनामख्याते आचार्ये, । नं० ।  
आव०म० । निसि० । आव० ।

**सिद्धसेणिय- पुं० [सिद्धसेनीय]** सिद्धसेनदिवाकरशिष्ये, आव०म०१  
अ० ।

**सिद्धसेणियापरिकम्म- न० [सिद्धश्रेणिकापरिकर्मन्]**

दृष्टिवादान्तर्गतपरिकर्मसूत्रभेदे, सम० । ठा० ।  
‘एगट्ठियपयसिद्धसेणियापरिकम्म’ श्रुतविशेषे, सम० ।

**सिद्धसोक्ख- न० [सिद्धसौख्य]**

मुक्तस्य सुखे, उव० ।

**सिद्धहेमचंद्र- न० [सिद्धहेमचन्द्र]**

हेमचन्द्रविरचिते व्याकरणभेदे, कल्प०१ अधि०१ क्षण ।

**सिद्धाङ्गुण- पुं० [सिद्धादिगुण]**

आदौ गुणाः आदिगुणाः युगपद्भाविनो, न क्रमभाविनः,  
सिद्धानामादिगुणाः सिद्धादिगुणाः ।  
आभिनिबोधिकावरणादिक्षयस्वरूपेषु सिद्धत्वप्रथमसमयेषु सि-  
द्धसहभाविगुणेषु, सम०३४ सम० । आव०चू० ।

**सिद्धाबद्ध- न० [सिद्धाबद्ध]**

सिद्धश्रेणिकापरिकर्मभेदे, सम० ।

**सिद्धाययणकूड- न० [सिद्धायतनकूट]**

सिद्धानि शाश्वतानि सिद्धानां वा शाश्वतानामार्हत्यतिमाना-  
मायतनं स्थानं सिद्धायतनं तदाधारभूतं कूटं सिद्धायतनकूटम् ।  
भरतवैताह्यप्रथमकूटे, जंबू०१ वक्ष० ।  
क्षुल्लहिमवद्वर्षधरे पर्वतकूटे, जंबू०४ वक्ष० ।  
हिमवद्वर्षधरपर्वतस्य पूर्वस्यां दिशि कूटे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।  
चित्रकूटवक्षस्कारपर्वतस्य प्रथमकूटे, जंबू०४ वक्ष० ।  
गन्धमादनवक्षस्कारपर्वतस्य प्रथमकूटे, जंबू०४ वक्ष० ।  
महाविदेहे ब्रह्मकूटवक्षस्कारपर्वतस्य प्रथमकूटे, जंबू०४ वक्ष०

**सिद्धालय- पुं० [सिद्धालय]**

सिद्धावस्थिते क्षेत्रे, विशेषे । सिद्धानामाश्रयत्वात्सिद्धालयः ।  
ईषत्प्राग्भारायां पृथिव्याम्, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।  
सिद्धिमार्गे, सम०१४५ सम० ।

**सिद्धालयमग्नणिगय- त्रि० [सिद्धालयमार्गनिर्गत]**

सिद्धालयमार्गान्निर्गताः । ज्ञानादेर्निर्गतेषु, सम०१४५ सम० ।

**सिद्धावास- पुं० [सिद्धावास]**

मोक्षवासनिबन्धनत्वादहिंसायाम्, पण्हा० ६ अ० ।



**सिद्धि- स्त्री० [सिद्धि]**

सिद्ध्यन्ति-कृतार्था भवन्ति यस्यां सा सिद्धिः लोकाग्रे ईषत्प्राग्भारायां पृथिव्याम्, ठा० १० ठा० ३ उ० । दशा० । रा० । आव०म० । सम० । भग० । संथा० ।

**सिद्धिगइ- स्त्री० [सिद्धिगति]**

सिद्धौ गमनं निर्विशेषणत्वाच्चा नेन सामान्या सिद्धिगतिः । ठा० १० ठा० ३ उ० ।

गमनं गतिर्गम्यते इति वा गतिः क्षेत्रविशेषो गम्यतेऽनया कर्मपुद्गलसंहत्येति गतिर्नाम कर्मोत्तरप्रकृतिरूपा सिद्धौ गतिः सिद्धिश्चासौ गतिश्चेति सिद्धिगतिः । ठा० ५ ठा० ३ उ० । मोक्षगमने, पण्हा० ९ अ० ।

‘वंसाणं जिणवंसा, सव्वकुलाणं च सावगकुलाइं । सिद्धिगई वि गईणं, मुत्तिहुं, सव्वसुक्खाणं । संथा० । ठा० ।

पञ्चम्यां गतौ, सूय० १ श्रु० ६ अ० ।

**सिद्धिगइनामधेज- त्रि० [सिद्धिगतिनामधेय]**

सिद्ध्यन्ति निष्ठितार्था भवन्त्यस्यां प्राणिनः इति सिद्धिः- लोकान्तक्षेत्रलक्षणा सैव गम्यमानत्वाद्गतिः सिद्धिगतिरेव नामधेयं यस्य स तथा । सिद्धि गत्याख्ये, जीवा० । कल्प० ।

**सिद्धिगइपज्वसाण- त्रि० [सिद्धिगतिपर्यवसान]**

मोक्षान्ते सिद्धिगतिः पर्यवसानं संसरणपर्यन्तो यस्य स सिद्धिगति पर्यवसानः । जीवे, ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

**सिद्धिगंडिया- स्त्री० [सिद्धिगण्डिका]**

सिद्धिस्वरूपप्रतिपादनपरायां वाक्यपद्धतौ, उव० । भग० ।

**सिद्धिणगर- न० [सिद्धिणगर]**

मोक्षपुर, जीवा० ११ अधि० ।

**सिद्धिपडागा- स्त्री० [सिद्धिपताका]**

सिद्धिसुखहेतुत्वादायाः पताकेव पताका, सिद्धिरेव पताका । मोक्षपताकायाम्, संथा०

**सिद्धिपत्त- पुं० [सिद्धिप्राप्त]**

मोक्षं गते, उत्त० १९ अ० ।

**सिद्धिपत्तण- न० [सिद्धिपत्तन]**

निर्वाणपुरे, आव० ४ अ० ।

**सिद्धिपह- पुं० [सिद्धिपथ]**

सिद्धानां सम्बन्धनीयेयमनन्तरं गतिरुक्ता सैवेह सिद्धिभिप्रेता, तस्या यः पन्थाः-ज्ञानदर्शनचारित्रलक्षणः स सिद्धिपथः । विशेष० ।

पञ्चमगतिरूपायाः सिद्धिमर्गि, आव०म० १ अ० ।

**सिद्धिपहण्णसय- पुं० [सिद्धिपथप्रदेशक]**

सिद्धिपदस्य प्रधानादेशकाः । सिद्धिहेतुभूत सामायिकादि प्रति-

पादकेषु तीर्थकृत्यु, आव०म० १ ।

**सिद्धिपुर- न० [सिद्धिपुर]**

मोक्ष, आव०चू० १ अ० । आव०म० ।

**सिद्धिपुरवासि- पुं० [सिद्धिपुरवासिन्]**

सिद्धिपुरे लोकान्ते वस्तुं शीलं येषां ते तथा । मुक्तिवासिषु, सूय० ।

**सिद्धिबहूवरसंगलालस- पुं० [सिद्धिबहूवरसङ्गलालस]**

मुक्तिकान्ताप्रधानताभिष्वङ्गलम्पटे, जीवा० २४ अधि० ।

**सिद्धिमग- पुं० [सिद्धिमार्ग]**

साधनं सिद्धिः-हितार्थप्राप्तिस्तस्या मार्गः सिद्धिमार्गः । आव० ४ अ० । सूय० ।

क्षपकश्रेणिकेवलोत्पत्यादिरूपे मार्गे, बुह० १ उ० २ ।

सम्यग्दर्शनादिरूपे दश० ३ अ०

हितार्थप्राप्त्युपाये, भग० ९ श० ३३ उ० । आव०चू० ।

**सिद्धिया- स्त्री० [सिद्धिका]**

जितशत्रोर्मथुराराजस्य दुहितरि, आव० चू० १ अ० । आव०म० ।

**सिद्धिविग्रहगइ- स्त्री० [सिद्धिविग्रहगति]**

सिद्धावविग्रहेण अवक्रेण गमनं सिद्धिविग्रहगतिः । विशिष्ट- सिद्धगतौ, ठा० १० ठा० ३ उ०

**सिद्धिसुगइगिहुत्तम- न० [सिद्धिसुगतिगृहोत्तम]**

सिद्धिलक्षणासुगतिः सिद्धिसुगतिः । अथवा-सिद्धिश्च सुगतिश्च सुदेवत्वसुमानुषत्वलक्षणा सिद्धिसुगती, तल्लक्षणं यद् गृहाणा- मुत्तमं गृहोत्तमं वर प्रासादः । सिद्धिस्वरूपसुगतिगृहे, सम० ८३ सम० ।

**सिधु- पुं० [सीधु]**

गुडधातकीसम्भवे मद्ये, विपा० ८ अ० ।

**सिण- न० [सिण]**

अनाचार्यके, कर्मणि, नित्यव्यापारे । ठा० ४ ठा० ४ उ० । भग० चित्रादिविज्ञाने, ठा० ५ ठा० ३ उ० । पिंड०

क्रियासु कौशले, आव०म० १ अ० ।

अङ्गमर्दनादिक, उव० । कल्प० । दश० ।

शिल्पशतम् । शिल्पानि कुम्भकारक्रियादीनि नैपुण्यानि वा लेख्यादिकलालक्षणानि । दश० ९ अ० २ उ० ।

शिल्पशतं च कालनिधौ वर्तते, तथा च-घट १ लो २ चित्र ३ वस्त्र ४ नापितशिल्पानां प्रत्येकं विंशतिभेदात् । ठा० ९ ठा० ३ चित्रादिके, पण्हा० ६ अ० क्रियाकौशले, रा० ।

सातिशये आचार्योपदेशजे ग्रन्थनिबद्धे व्यापारे, आव०म० १ अ० । आव०चू० ।

अनाचार्यकं कर्म, साचार्यकं शिल्पम् । न० ।

**सिप्पसत्य-** न० [शिल्पशास्त्र]

यः शिल्पनिमित्तादिशास्त्राणि ग्राहयति स इहोपचारतः शिल्पशास्त्रम् । शिल्पशास्त्रग्राहके, विशेषे

**सिप्पसय-** न० [शिल्पशत]

भगवत आचार्योपदेशजं शिल्पमिति । तच्छ्रुते, कल्प०१ अधि०७

**सिप्पसिद्ध-** पुं० [शिल्पसिद्ध]

शिल्पभेदे, आव०म० ।

**सिप्पा-** स्त्री० [शिप्रा]

स्वनामख्यातायामुज्जयिन्यां महानद्याम्, आव० म०१ अ० । आव०चू० ।

**सिप्पाजीव-** पुं० [शिल्पाजीव]

शिल्पं तूर्णनादि साचार्यकं वा कर्म तेन जीवति जीविकां कल्पयतीत्यर्थः । शिल्पोपजीविनि, ठा० ५ ठा० १ उ० । पन्न० ।

**सिप्पायरिय-** पुं० [शिल्पाचार्य]

तुन्नकादिषु शिल्पिषु, पन्न०१ पद ।

**सिप्पि-** पुं० [शिल्पिन्]

चित्रकारसूत्रधारलोहकारस्वर्णकारस्थपतिप्रभृतिषु, उत्त० १५ अ० । उव० । रा० । नाया० ।

**सिप्पि-** स्त्री० [शुक्ति]

द्वीन्द्रियजीवविशेषे, पन्न०१ पद ।  
'सिप्पि-पुडगसठाणसंठिय' उवा०२ अ० ।

**सिप्पिय-** न० [शिल्पिय]

तृणविशेषे, पन्न०१ पद ।

**सिप्पिसंपुड-** त्रि० [शुक्तिसंपुट]

संपुटरूपासु शुक्तिषु, पन्न०१ पद । उव० । निसि० । जीवा० ।

**सिप्पोवडय-** त्रि० [शिल्पोपगत]

शिल्पं क्रियासु कौशलमुपगतः प्राप्तः । रा० ।  
शिल्पसमन्विते, 'निउणसिप्पोवगए' अणुओ० ।

**सिप्पोवदेसमइ-** स्त्री० [शिल्पोपदेशमति]

आचार्यस्य शिल्पोपदेशदातुरूप देशाज्जायमानायां बुद्धौ, उव० ।

**सिप्पिअं-** [देशी]

भूतगृहीते, दे०ना०८ वर्ग०४० गाथा ।

**सिम्बाडी-** [देशी]

नासिकानादे, दे०ना०८ वर्ग०२९ गाथा ।

**सिय-** त्रि० [सित]

अतितेजिते, रा० ।  
बद्ध परिग्रहेच्छारम्भेष्वसक्त, सूय०१ श्रु०१ अ०४ उ० । ठा० ।  
पुत्रकलत्रादिभिर्बद्धे, आचा० । सूय० । भग० ।  
चामरे, दश०४ अ० । आचा० । सूय० ।

**सिय-** त्रि० [सित]

शुक्ले, चंद०१८ पाहु० । सूय० । संथा० । आचा० ।  
सितवर्णे, । सितपट्टे, पण्हा०३ अ० आव०म० । आव०चू० ।  
सम० ।

**सिय-** त्रि० [श्रित]

सम्बद्धे, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ० ।  
आश्रिते, सम०३३ सम० ।

**सिय-** अव्य० [स्यात्]

प्रशंसास्तिवविवादविचारणानेकान्तसंशयप्रश्नादिषु, पन्न०५ पद ।  
। अनेकान्तद्योतने, ठा० । भग० ।

**सियंबर-** पुं० [श्वेताम्बर]

जैन, आव०६ अ० ।

**सियंबुज-** न० [श्वेताम्बुज]

पुण्डरीक, आव०म०१ अ० ।

**सियकमल-** न० [सितकमल]

पुण्डरीक, उव० ।

**सियवाय-** पुं० [स्याद्वाद]

स्यादित्यव्ययमनेकान्तद्योतके ततः स्याद्वादः । अनेकान्तवादे, नित्यानित्याद्यनेकधर्मशबलैकवस्त्वभ्युपगमे, । उत्त० ।  
स्यादस्तीत्यादिको वादः, स्याद्वाद इति गीयते । नयौ न च विमु-  
च्यायं, द्रव्यपर्यायवादिनौ । अतश्चैतत् द्वयोपेतं, स्वमतं समुदा-  
हृतम् । सञ्जाततत्त्वसंविद्धिः स्याद्वादः परमेश्वरैः । उत्त०१ अ० ।  
जिनागमे, । अणुओ० ।

**सिया-** अव्य० [स्यात्]

आशङ्कायाम्, आशङ्का नाम विभाषा, स्यादिति कोऽर्थः—  
कदाचिद्भवेत्, कदाचिन्न भवेत् । वव०१ उ० । उत्त० । दश० ।  
अवधारणे, निसि०१ उ० ।  
भवत्यर्थे, आशङ्कायां भजनायां वा । तत्र भवत्यर्थे सुप्रसिद्धः,  
आशङ्कायां, भजतायां यथा—'सिया तिभागे सिय तिभागे  
तिभागे' इत्यादि । बुह० १ उ०२ ।

**सिया-** स्त्री० [सिता]

मृद्विकादीनां संग्रहे, आचा०१ श्रु०२ अ०५ उ० ।

**सियाणकरण-** न० [श्मशानकरण]

श्मशानस्थापनायोग्यप्रत्युपेक्षणे, बुह०१ उ०२ ।

**सियाल-** पुं० [शृगाल]

गोमाय, पन्न०११ पद । बुह० ।  
जम्बुक, पण्हा०१ अ० बुह० ।  
शृगालो वै एष जायते यस्सपुरीषा दह्या । आव०म०१ अ० ।  
नरकपालविकुर्विते जम्बुके, सूय०१ श्रु०५ अ०२ उ० । पन्न० ।

**सियालखाइत्ता- स्त्री० [शृगालखादिता]**

शृगालस्तु न्यग्वृत्त्योपात्तस्या व्यान्यस्थानमक्षणेन वा खादिता तत्त्वभावो वेति । प्रत्रज्याभेदे ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**सियालता- स्त्री० [शृगालता]**

दीनवृत्तौ, ठा० ४ ठा० ३ उ० ।

**सियाली- स्त्री० [शृगाली]**

शृगालभार्यायाम्, पत्र० ६ पद० ।

**सिर- न० [शिरस्]**

उत्तमाङ्गे, तं० । । सूय० । दश० । उव० ।

उपचाराच्छिरोबन्धने, उव० ।

**सिरमुंड- पुं० [शिरोमुण्ड]**

शिरसा मुण्डे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सिरय- पुं० [शिरोज]**

मस्तककेशे, पत्र० १ पद ।

**सिररुह- पुं० [शिरोरुह]**

केशे, पत्र० १ पद ।

**सिरसंभूया- स्त्री० [श्रीसम्भूता]**

पक्षस्य षष्ठ्यां रात्रौ, ज्यो० ४ पाहु०

**सिरसावत्त- पुं० [शिरसावर्त]**

शिरसा आवर्त आवृत्तिरावर्तनं परिभ्रमणं यस्याऽसौ ।

सप्तम्यलोपाच्छिरस्यावर्तः । भग० २ श० १ उ०

शिरसिमस्तके आवर्तः प्रदक्षिणभ्रमणं यस्येति । कृतिकर्मणि क्रियमाणे आवृत्तेऽञ्जलौ, । जीवा० । उव० । रा० ।

**सिरा- स्त्री० [शिरा]**

धमन्याम्, जीवा० १ प्रति० । तं० । ।

**सिरि- स्त्री० [श्री]**

लक्ष्म्याम्, नाया० १ श्रु० १ अ० । उवा० ।

सम्पदि, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

शोभायाम्, नाया० १ श्रु० १ अ० । कल्प० । नि० ।

जम्बूद्वीपे पद्महृदाधिष्ठातृदेव्याम्, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

अन्तरङ्गिकानगरीराजे, यत्र त्रैराशिकनवाचार्यस्य रोह-गुप्तस्य परिव्राजकेन सह शास्त्रार्थोऽभवत् । विशेष० ।

सौधर्मकल्पे स्वनामख्याते विमाने, तद्व्याञ्च । नि० ।

**सिरिअभिसेय- पुं० [श्यभिषेक]**

लक्ष्म्यभिषेके, जंबू० २ वक्ष० ।

**सिरिउववेय- त्रि० [श्रियुपपेत]**

लक्ष्म्योपगते, दश० १ चू० ।

**सिरिकंत-१ पुं० [श्रीकान्त]**

षष्ठे देवलोके विमाने, सम० १४ सम० ।

**सिरिकंत-२ पुं० [श्रीकान्त]**

श्रीकान्तानगरीवास्तव्ये व्यवहारिणि, कल्प० १ अधि० १ ।

**सिरिकंता-१ स्त्री० [श्रीकान्ता]**

मरुदेवस्य षष्ठ-कुलकरस्य भार्यायाम्, आव० म० । ठा० । सम०

**सिरिकंता-२ स्त्री० [श्रीकान्ता]**

स्वनामख्यातायां सार्थवाह्याम्, आव० ४ अ० । आव० म० । आव०

**सिरिकंता-३ स्त्री० [श्रीकान्ता]**

स्वनामख्यातायां नगर्याम्, यत्र विजयसेनो नाम राजा श्रीका-न्ताख्यश्च व्यवहार्यासीत् । कल्प० १ अधि० १ ।

**सिरिकंता-४ स्त्री० [श्रीकान्ता]**

जम्बूवाः सुदर्शनाया अपरस्यां दिशि नन्दापुष्करिण्याम्, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । जंबू० ।

**सिरिकंता-५ स्त्री० [श्रीकान्ता]**

पुरिमतालनगरराजस्य उदितोदयस्य भार्यायाम् नं० । आव० म० । आव० चू० ।

**सिरिकंता-६ स्त्री० [श्रीकान्ता]**

चम्पायां नगर्यां दत्तराजस्य पुत्रमहाचन्द्रराजभार्यायाम्, विपा० २ श्रु० १ अ० ।

**सिरिकंदल- पुं० [श्रीकन्दल]**

एकखुरजीवविशेषे, पत्र० १ पद ।

**सिरिकूड- पुं० न० [श्रीकूट]**

श्रीदेवतानिवासभूते हिमवद्वर्षधरस्य षष्ठे कूटे, ठा० २ ठा० ४ उ० । जंबू० ।

**सिरिखंड- न० [श्रीखण्ड]**

मलयजे, आव० म० १ अ० । ठा० ।

**सिरिगुप्त- पुं० [श्रीगुप्त]**

आर्यसुहस्तिनः शिष्ये अन्तरङ्गिकायां नगर्यां त्रैराशिकाचार्यस्य रोहगुप्तस्य गुरौ दशपूर्विण्याचार्ये, विशेष० । उत्त० । आव० म० । आव० चू० । कल्प० ।

**सिरिवर-१ न० [श्रीगृह]**

भाण्डागार, नाया० २ श्रु० २ अ० । विशेष० । भग० । आव० म० ।

**सिरिवर-२ न० [श्रीगृह]**

पार्श्वनाथस्य षष्ठे गणधरे, ठा० ८ ठा० ३ उ०

**सिरिघरपडिरूवय- त्रि० [श्रीगृहप्रतिरूपक]**

रत्नयत्वाद्भाण्डागारतुल्ये, भग० ११ श० ११ उ० ।

**सिरिघरिय- पुं० [श्रीगृहिक]**

श्रीगृहं भाण्डागारं तदस्यास्तीति आव० म० १ अ० ।

भाण्डागारिक, विशेष०

भाण्डागारनियुक्ते, वव० ३ उ० । आव० म० ।

**सिरिचंद-** पुं० [श्रीचन्द्र]

ऐरवते वर्षे उत्सर्पिण्यां भविष्यति षष्ठे तीर्थकरे, सम० ।

**सिरिचंदा-** स्त्री० [श्रीचन्द्रा]

जम्बाः सुदर्शनाया अपरोत्तरस्यां दिशि नन्दापुष्करिण्याम्, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**सिरिङ्ग-** पुं० [श्याङ्ग]

स्थविरस्यार्यमहागिरेरेलापत्यसगोत्रस्य स्वनामख्याते शिष्ये, कल्प० २ अधि० ८ क्षण ।

**सिरिणाभिज्जजिन-** पुं० [श्रीनाभेयजिन]

नाभेरपत्यं नाभेयः । श्री-युतो नाभेयः श्रीनाभेयः स चासौ जिनश्च श्रीनाभेयजिनः । ऋषभदेवे, कल्प० ७ अधि०

**सिरिणिलया-** स्त्री० [श्रीनिलया]

जम्बाः सुदर्शनाया अपरोत्तरस्यां दिशि नन्दापुष्करिण्याम्, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । जंबू० । ठा०

**सिरिदाम-** न० [श्रीदामन्]

शोभावन्मालायाम्, नाया० १ श्रु० ८ अ० ।  
अनेकरत्नस्वचिते दर्शनसुभगे आभरणविशेषे, आव० म० १ अ० ।  
मथुरायां नन्दिवर्द्धनस्य नन्दिषेणस्य विपाकश्रुतोक्तस्य पितरि, ठा० १० ठा० ३ उ० । विपा० ।  
एकादशदेवलोकविमाने, सम० २१ सम० ।

**सिरिदामगण्ड-** पुं० [श्रीदामकाण्ड]

श्रीदाम्नां शोभावच्चित्ररत्नमालानां गण्डं गोलवृत्ताकारत्वात्, काण्डं वा समूहः श्रीदामगण्डम् श्रीदामकाण्डं वा । अथवा-  
गण्डो दण्डस्तद्वद् यत्तद् एवोच्यते श्रीदाम्नां गण्डः श्रीदामगण्डः । श्रीदामसमूहे, जंबू० ५ वक्ष० । ठा० । नाया० ।

**सिरिदेवी-** स्त्री० [श्रीदेवी]

दीर्घदशानां चतुर्थाध्ययनोक्तायां सौधर्म-कल्पदेव्याम्, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सिरिद्धही-** [देशी]

पक्षिपानपात्रे, दे० ना० ८ वर्ग० ३२ गाथा ।

**सिरिधम्म-** पुं० [श्रीधर्म]

स्थविरस्यार्यसुहस्तिनः काश्यपगोत्रशिष्ये दशपूर्विणि स्थविर, कल्प० २ अधि० ८ ।

**सिरिमुह-** [देशी]

मन्दमुखे, दे० ना० ८ वर्ग० ३२ गाथा ।

**सिरियक-** पुं० [श्रीयक]

स्थूलभद्रस्वामिभ्रातरि सकटालसुते, आव० ४ अ० ।

**सिरिवओ-** [देशी] हंसे,

दे० ना० ८ वर्ग० ३२ गाथा ।

**सिरिवच्छ-** न० [श्रीवत्स]

माहेन्द्रकल्पस्य स्वनामख्याते पारियानिके विमाने, ठा० ८ ठा० ३ उ० । जंबू० । उव० ।

एकादशे देवलोकविमाने, सम० २१ सम० ।

माङ्गलिकचिह्नभेदे, जंबू० १ वक्ष० । रा० ।

महापुरुषाणां वक्षोऽन्तर्वर्तिनि अभ्युन्नताऽवयवे लाञ्छनविशेषे, जंबू० ३ वक्ष० ।

**सिरिवच्छंकियवच्छ-** पुं० [श्रीवृक्षाङ्कितवक्षम्]

श्रीवृक्षेणाङ्कितं लाञ्छितं वक्षो येषां ते श्रीवृक्षाङ्कितवक्षसः । श्रीवत्सचिह्नाङ्कितेषु, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । उव० । अंत० ।

**सिरिवडिंसय-** न० [श्रयवतंसक]

सौधर्मकल्पविमानभेदे, नि० १ श्रु० ३ वर्ग० १० अ० ।

**सिरिवण-** न० [श्रीवन]

पोलासपुरे नगरे स्वनामख्याते उद्याने, अंत० ।

**सिरिवण्ण-** न० [श्रीपर्ण]

भद्रिलपुरस्योत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे स्वनाम-ख्याते विमाने, अंत० १ श्रु० ३ वर्ग० १ अ० ।

**सिरिवण्णी-** स्त्री० [श्रीपर्णी]

लोकप्रतीतौषधिविशेष, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० । पन्न० ।

**सिरिवर-** पुं० [श्रीवर]

शोभाप्रधान, कल्प० १ अधि० ३ क्षण० ।

**सिरिविजय-** पुं० [श्रीविजय]

रामविजयपण्डितशिष्य कल्पसुबोधिकावृत्तिकरणाद्यर्थक सूरि, कल्प० ३ अधि० ९ ।

**सिरिस-** पुं० [श्रीरीष]

वृक्षविशेषे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सिरिसंभूया-** स्त्री० [श्रीसंभूता]

षष्ठ्यां रात्रितिथि, चंद० १ पाहु० । कल्प० । जंबू० ।

**सिरिसमुदाय-** पुं० [श्रीसमुदाय]

शोभासमूहे, कल्प० १ अधि० ३ क्षण० ।

**सिरिसही-** स्त्री० [श्रीसखी]

विजयसेनस्य चन्द्रकान्तानगरीराजस्य भार्यायाम्, श्रीकान्ताख्य व्यवहारिणो भार्यायां च । कल्प० १ अधि० १ क्षण० ।

**सिरिसिद्धंतमहोदधि-** पुं० [श्रीसिद्धान्तमहोदधि]

शोभनागमबृहत्समुद्रे जीवा० १ प्रति० ।

**सिरिहर-१** त्रि० [श्रीधर]

शोभावति, नाया० १ श्रु० ६ अ० ।

**सिरिहर-२** त्रि० [श्रीधर]

पार्श्वनाथस्य षष्ठे गणधरे, कल्प० १ अधि० १ ।

**सिरिहर-३** त्रि० [श्रीधर]

द्वीपसमुद्रविशेषाधिपतौ । ठा० ।

**सिरिहर- न०** [श्रीगृह]

रत्नादिस्थाने, निसि० १ उ० । आव०क० ।

**सिरिहरय- न०** [श्रीगृहक]

भाण्डागारे, वव० ६ उ० ।

**सिरिहरिसपुर- न०** [श्रीहर्षपुर]

स्वनामख्याते नगरे, यत्र हर्षपुरीयगच्छः समजनि 'ज्ञानादि कुसुमनिचितफलितः श्रीमन्मुनीन्द्रफलवृन्दैः । कल्पद्रुम इव गच्छः, श्रीहर्षपुरीयनामास्ति । अणुओ० ।

**सिरिहल- न०** [श्रीफल]

बिल्व, उत्त० १४८ गाथा ।

**सिरि-१** स्त्री० [श्री]

अनन्यसाधारणतपस्तेजोविभूतौ, विपा० २ श्रु० १ अ० ।

लक्ष्याम्, दशा० १० अ० । ठा० ।

कमला सिरि य लच्छी' उत्त० । सम० । आव० ।

विभवे, सम्पत्तौ उत्त० ।

**सिरि-२** स्त्री० [श्री]

शोभायाम्, रा० । जंबू० ।

देहकान्ति, आव० १ अ० ।

**सिरि-३** स्त्री० [श्री]

जम्बूद्वीपे मन्दरस्य पश्चिमे पद्महृदाधिष्ठातृदेवतायाम्, ठा० ३ ठा० ४ उ० । अणुओ० ।

**सिरि-४** स्त्री० [श्री]

उत्तररुचकपर्वतवास्तव्यायां दिक्कुमारीमहत्तरिकायाम्, ठा० ८ ठा० ३ उ० । आव०म० । आव०क० । जंबू० ।

**सिरि-५** स्त्री० [श्री]

पोलासपुरनगरराजस्य विजयस्य भार्यायामतिमुक्तककुमार-मातरि, ठा० १० ठा० ३ उ० । अंत० ।

**सिरीस- पुं०** [शिरीष]

वृक्षविशेषे, रा० । जंबू० ।

**सिरोरुह- न०** [शिरोरुह]

केश, उत्त० १०९ गाथा ।

**सिरोवत्थी- स्त्री०** [शिरोवस्ति]

शिरसि बद्धस्य, चर्मकोषस्य संस्कृत-तैलापूरलक्षणे वैद्यकर्मणि, नाया० १ श्रु० १३ अ० । विपा० ।

**सिरोविसुद्ध- न०** [शिरोविसुद्ध]

यदा स्वरः शिरःप्राप्तः सन् सानुनासिको भवति ततः शिरो-विसुद्धम् । करणविसुद्धे गेये, रा० ।

**सिरोवेदना- स्त्री०** [शिरोवेदना]

शिरःपीडायाम्, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**सिरोवेह- पुं०** [शिरोवेध]

नाडीवेधेन रुधिरमोक्षणे, नाया० १ श्रु० १३ अ० ।

**सिरोहरा- स्त्री०** [शिरोधरा]

ग्रीवायाम्, उत्त० ११० गाथा ।

**सिलओ- [देशी]**

उच्छ, दे० ना० ८ वर्ग० ३० गाथा ।

**सिलग्घ- त्रि०** [श्लाघ्य]

कथनीय, आव०म० १ अ० ।

**सिलप्पवाल- न०** [शिलाप्रवाल]

शिलारूपं प्रवालं श्रिया युक्तं वा प्रवालं श्रीप्रवालम् । वर्णादि-गुणोपेते विद्रुमे, सूय० २ श्रु० १ अ० । जीवा० । शिलाप्रवालानि विद्रुमाणि । अन्ये त्वाहुः शिला राजपट्टादिरूपाः प्रवालविद्रुमम् । दशा० ६ अ० । भग० । रा० । उव० । तं० । ।

**सिला- स्त्री०** [शिला]

राजपट्टे, गन्धपेषशिलायाम्, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

घट्टनयोग्ये देवकुलपीठाद्युपयोगिनि महति पाषाणविशेषे, जीवा० १ प्रति० । पन्न० । दशा० । दश० । विपा० ।

स्फटिकादिके, ठा० ९ ठा० ३ उ० । बुह० । कल्प० ।

तीर्थकृजन्माभिषेकसिंहासनाधारभूतायां शिलायाम्, सूय० २ श्रु० १ अ०

राजपट्टके, गच्छपट्टे इत्यन्ये । अणुओ० ।

कात्यायनगोत्रस्य वृषभस्य दुहितरि ब्रह्मदत्तचक्रवर्तिनो भार्या-याम्, उत्त० १३ अ० ।

पाषाणे, उत्त० ११३ गाथा ।

**सिलागहत्थ- पुं०** [शलाकाहस्त]

अयःशलाकादिरूपे । शलाकासङ्गातरूपे सहित्पर्णादिशलाका-हस्तके, रा० ।

**सिलागा- स्त्री०** [सलाका]

वेत्रादौ, निसि० १ उ० ।

अयः-शलाकादि, दशा० ४ अ० ।

**सिलाघा- स्त्री०** [श्लाघा]

गुणोद्धट्टने, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

श्लोक, यशशि, आव० ४ अ० । सूय० ।

**सिलाणिहिय- त्रि०** [शिलानिहित]

शिलाप्राप्ते, जंबू० ३ वक्ष० ।

**सिलापट्टय- पुं०** [शिलापट्टक]

मसृणशिलायाम्, आव०म० १ अ० । नाया० ।



**सिलावुट्ट-** न० [शिलावृष्ट]

शिलाशब्देन करका गृह्यन्ते वृष्टं वर्षणम् करकादिवृष्टौ, । दश०  
८ अ० ।

**सिलावुट्टि-** स्त्री० [शिलावृष्टि]

पाषाणनिपतने, करकादिशिलावर्षणे च । वव० ।

**सिलिंद-** पुं० [शिलिन्द]

मुकुष्टधान्यविशेषे, गच्छा०२ अधि० । दश० ।

**सिलिंध-** पुं० [शिलीन्द्र]

छत्रक, नाया०१ श्रु०१ अ० । पत्र० ।

भूमि-स्फोट, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

भूमिस्फोटकछत्रक, उव० ।

इषद्रक्तवनस्पतिविशेषः । पत्र० ।

**सिलिंधपुष्पगास-** त्रि० [शिलीन्द्रपुष्पप्रकाश]

शिलीन्द्रकुसुमप्रभे ईषत्सित, उव० ।

**सिलिंब-** [देशी]

शिशि, दे०ना०८ वर्ग०३० गाथा ।

**सिलिष्ट-** त्रि० [श्लिष्ट]

रुचिर, विशिष्ट, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

सुसंहतावयव, आव०म०१ अ० ।

संगते, उव० ।

सुदृ जुत्तं श्लिष्टमित्यनर्थान्तरम् । आव०चू०१ अ० ।

**सिलिपड-** त्रि० [श्लीपदिन्]

श्लीपदनाम्ना रोगेण यस्य पादौ शूनौ शिलावन्महाप्रमाणौ  
भवतः । तस्मिन्, बुह०१ उ०२ ।

**सिलिय-** पुं० [सिलिक]

प्रतलपाषाणरूपशस्त्रतीक्ष्णीकरणार्थे, किराततित्तकादितृणे च ।

नाया०१ श्रु०१३ अ० । विशेष० ।

किराततित्तकादितृणरूपा । नाया० १ ।

शिलिका-किराततित्तप्रभृतिका । विपा० ।

**सिलीमुह-** पुं० [शिलीमुख]

बाण, उत्त०३६ गाथा ।

**सिलीवय-** न० [श्लीपद]

पादादौ काठिन्यरूपे रोग, आचा०१ श्रु०६ अ०१ उ० ।

**सिलेलियमच्छ-** पुं० [शिलेलिकामत्स्य]

मत्स्यभेद, जीवा०१ प्रति० ।

**सिलेष-** पुं० [श्लेष]

श्लेषयतीति श्लेषः । सर्जरसादौ, आचा०१ श्रु०१ अ०५ उ० ।

समाश्रयणे, सूय०२ श्रु०२ अ०

वज्रलेपे, भग०८ श०९ उ० ।

**सिलोग-** पुं० [श्लोक]

आत्मश्लाघायाम्, सूय०१ श्रु०१३ अ० । विशेष० ।

श्लाघायाम्, सूय०१ श्रु०१३ अ० । अणुओ० । नाया० ।

कीर्ति, ठा० ७ ठा० ३ उ० । आचा० ।

अनुष्टुप्छन्दसि सम० । जंबू० । नाया० ।

गुणवचनैर्वर्णनायाम्, निसि०१ उ० । सम०

**सिलोगगामी-** त्रि० [श्लोककामिन्]

आत्मश्लाघाभिलाषिणि, सूय० १ श्रु०१२ अ० ।

**सिलोलगामी-** त्रि० [श्लोकगामिन्]

श्लोकः—श्लाघा कीर्तिस्तद्वामी यः । यशोऽभिलाषुके, सूय०१  
श्रु०१३ अ० ।

**सिलोगाणुवाइ-** त्रि० [श्लोकानुपातिन्]

श्लोकं ख्यातिमनुपतति इति श्लोकानुपाती । यशोऽर्थिनि, ठा०  
९ ठा० ३ उ० ।

**सिलोच्चय-** पुं० [शिलोच्चय]

शिलानां पाण्डुशिलादीनामूर्ध्वशिरस उपरि च यत्र सम्भवो स  
शिलोच्चयः । जंबू०४ वक्ष० ।

मेरुपर्वते सूर०५ पाहु० । चंद० ।

पर्वतमात्रे, उत्त० ।

**सिल्हग-** न० [सिल्हक]

गन्धद्रव्यविशेषे, आव०म०१ अ० ।

**सिव-१** न० [शिव]

व्यन्तरकृतोपद्रवाभावे, बुह०१ उ० । भग० । कल्प० । ठा० । वव०  
मन्त्रादिसामर्थ्यादुपशमितोपद्रव, अणुओ०

सकलद्वन्द्ववर्जितत्वात् । पण्हा०१ अ० ।

उपद्रवोपशमहेतुत्वात् । नाया०१ श्रु०१ अ० ।

सर्वोपद्रवरहितत्वात् । उव० । रा० । ल० । भग० । नाया० ।

सर्वोपद्रवभावतानाबाधे, उत्त०२३ अ० । सम० । भग० ।

उपद्रवहर, कल्प०१ अधि० २ क्षण ।

निरुपद्रवकारिणि, कल्प०१ अधि०३ ।

तस्योपद्रवकारित्वाभावात् । आव०म०१ अ० ।

**सिव-२** न० [शिव]

मोक्षपद, सूय०१ श्रु० १ अ० । विशेष० । आव०म० । सम० ।

अबाधके, सर्वदुःखमोक्षे, निर्वाणे, सम० । आव०म० ।

सौम्ये, सुखकारिणि, कल्प०१ अधि०३ ।

शिवहेतु, पण्हा०२ अ०

शान्ति, रा० ।

सदा मङ्गलोपेते, जंबू० १ वक्ष० । जीवा० ।

कल्याणकरे, । रा० ।

**सिव-३ न० [शिव]**

सामायिक, आव०चू०१ अ० । आव० ।

**सिव-४ न० [शिव]**

पञ्चमबलदेववासुदेवयोः पितरि, सम० । आव० । ठा० ।

**सिव-५ न० [शिव]**

श्रावणादिगणनया पौषमासे, जंबू०७ वक्ष० । सूय० ।

**सिव-६ न० [शिव]**

आकारविशेषधरे देवताविशेषे, रा० । जीवा० । भग० । अणुओ० ।

व्यन्तरविशेषे, गच्छा०२ अधि०

महादेवे, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

महादेवशब्देनार्हन्त एव, तेषामेव महादेवत्वात् । उत्त० ।

**सिव-७ न० [शिव]**

तगरायां नगर्यां कस्यचिदाचार्यस्याष्टानां शिष्याणां तृतीये

सुशिष्ये, वव०१० उ० । भग० । ठा० । आव०चू० । आव० म० ।

वीरेण सह प्रव्रजिते स्वनामख्याते हस्तिनापुरनगरराजे, भग० ।

**सिवंकर- न० [सिवंकर]**

शिवं-मोक्षपदं तत्करणशीलम् । शैलैश्वर्यवस्थागमने, सूय०१

श्रु०११ अ० ।

**सिवकोट्टग- पुं० [सिवकोट्टक]**

तगरायां नगर्यां सुव्यवहारित्वेन प्रसिद्धे, स्वनामख्याते

पुष्पमित्रादीनां सुव्यवहारिणामन्यतमे, वव० ३ उ० ।

**सिवग- पुं० [सिवग]**

महादेवे, निसि०१ उ० ।

**सिवगङ्- स्त्री० [सिवगति]**

सिद्धगति, सिद्धगतिप्राप्ते, विशेषे ।

**सिवदत्त- पुं० [सिवदत्त]**

इन्द्रपुरवास्तव्ये स्वनामख्याते ब्रह्मदत्तपितरि, उत्त०१३ अ० ।

श्रावस्त्यां नगर्यां स्वनामख्याते नैमित्तिके आव०म० २ अ० ।

**सिवदेव- पुं० [सिवदेव]**

‘पामिच्च’ शब्दे उदाहृते सम्मतसाधुभागन्यै तैलारूपऋणप्रदे वणिजि, पिंड० ।

**सिवपह- न० [सिवपथ]**

शिवो-मोक्षः पारमार्थिकनिरुपमद्रव्यस्थानं तस्य पन्था-मार्गः

शिवपथः । मोक्षाध्वनि, आव०म० २ अ० ।

**सिवभद्र- पुं० [सिवभद्र]**

एकादशशतनवमोद्देशकाभिहिते देवराजर्षिपुत्र, भग०७श०३ उ०

**सिवभूइ-१ पुं० [सिवभूति]**

स्थविरस्यार्यधनगिरेः वासिष्ठगोत्रस्य स्वनामख्यातेऽन्तेवासिनि

कौत्सगौत्रे आचार्ये, कल्प०१ अधि०४ ।

**सिवभूइ-२ पुं० [सिवभूति]**

स्वनामख्याते रघुवीरपुरवास्तव्ये साहस्रिकमल्ले, यः प्रव्रज्य

बोटिकनिह्वानस्थापयत् । आव०म०१ अ० ।

**सिवमग- पुं० [सिवमार्ग]**

दर्शनज्ञानचारित्रलक्षणे मोक्षमार्गे, विशेषे

**सिवय- पुं० [सिवक]**

उदकाभासवेल्धरनागराजस्य आवासपर्वते, ठा० ४ ठा० २उ०

**सिवलिया- स्त्री० [सिवलिका]**

कलायाभिधानधान्यफलिकायाम्, भग०७ श०१ उ० ।

**सिववत्त- न० [सिववर्त्मन्]**

शैवानां परिभाषया मोक्षे, द्वा०२४ द्वा०

**सिवहृत्- पुं० [सिवहृत्]**

आरोग्यकरहस्ते, विपा०१ श्रु०७ अ० ।

**सिवा-१ स्त्री० [शिवा]**

सौर्यपुरे नगरे दशदशाराणां मध्ये ज्येष्ठसमुद्रविजयस्य राज्ञो

भार्यायाम्, ठा० ८ ठा० ३ । उत्त० । कल्प । आव०म० । सम०

उज्जयिनीराजस्य प्रद्योतस्य भार्यायाम् चेटकराजदुहितरि,

आव०चू०४ अ० ।

‘लोहजंघो लोहहारी अग्निभीरुस्तथा रथः । स्त्रीरत्नं च शिवा देवी

गजोऽनलगिरिः पुनः । आव० ४ अ० ।

**सिवा-२ स्त्री० [शिवा]**

पञ्चदशतीर्थकरस्य प्रथमप्रवर्तिन्याम्, सम० ।

**सिवा-३ स्त्री० [शिवा]**

शक्रस्य देवेन्द्रस्याग्रमहिष्याम्, भग० १० श०५ उ० । ठा० ।

**सिवा-४ स्त्री० [शिवा]**

शृगाल्याम्, शृगाली अशिवाप्यमाङ्गलिकशब्दपरिहारार्थं शिवा

भण्यते । अणुओ० ।

**सिवाणंदा- स्त्री० [शिवाणन्दा]**

आनन्दश्रमणोपासकस्य भार्यायाम्, उवा० १ अ० । आव०चू०

**सिविण- पुं० [स्वप्न]**

स्वपावस्थायां गजादिदर्शने, आव०१ अ० ।

**सिविया- स्त्री० [सिविका]**

उपरिच्छादिते, कोष्ठाकारे जम्पानविशेषे, जीवा०३ प्रति०४ ।

नाया० । सूय० । अणुओ० । उव० । आव०म० । जंबू० । दशा० । भग० ।

रा० । आचा० । अंत० ।

**सिव्वण- न० [सीवण]**

परिकर्मणि, निसि०१६ उ० ।

**सिव्विणी- [देशी]**

सूच्याम्, दे०ना०८ वर्ग०२९ गाथा ।

**सिसिर-** पुं० [शिशिर]

लोकोत्तरसंज्ञया माघे मासे, ज्यो०४ पाहु० । चंद० । जंबू० । सूर०  
शीतकाले, निसि०१ उ० । दध्नि, दे०ना०८ वर्ग०३१ गाथा ।

**सिसिरकाल-** पुं० [शिशिरकाल]

शीतकाले, पण्हा०५ अ० ।

**सिसिररत्त-** पुं० [शिशिररात्र]

पौषमाघमासद्वयात्मके ऋतुभेदे, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**सिसिरली-** स्त्री० [शिशिरली]

अनन्तकायकन्दभेदे, भग०५ श०८ उ० ।  
साधारणवनस्पतिकायविशेषे, जीवा०१ प्रति० ।

**सिसु-** पुं० [शिशु]

बालक, विशेष० । निसि० ।

**सिसुनाग-** पुं० [शिशुनाग]

अलस, सर्पकृतौ मृद्वक्षके वर्षाजन्तौ, शिशुनागो गण्डूपदः ।  
उत्त०५ अ० ।

समाहि शब्दे उदाहृते सुदर्शनपुरवास्तव्ये गृहपति, आव० ४ अ०

**सिसुपाल-** पुं० [शिशुपाल]

वसुदेवसुतायां माद्र्यां दमघोषेण जाते पुत्रे, सूय० ।

**सिसुमारिया-** स्त्री० [शिशुमारिका]

वाद्यविशेष, रा० ।

**सिस्स-** पुं० [शिष्य]

प्रव्रज्यां शिक्षां च ग्राहित, सूय०२ श्रु०७ अ० आचा० । जंबू० ।  
आव० । आव०चू० ।

शिक्षणायोपाध्यायस्योपासक, जंबू०२ वक्ष० ।

**सिस्स-** न० [शीर्षन्]

उत्तमाङ्ग, न० ।

**सिस्सिणी-** स्त्री० [शिष्या]

स्वहस्तदीक्षितायाम्, वव०२ उ० । आव०

**सिहंडइल्लो-** [देशी]

बालदधिसरमयूरेषु, दे०ना०८ वर्ग०२४ गाथा

**सिहंडि-** त्रि० [शिखण्डिन्]

शिखाधारिणि, भग०९ श०३३ उ० । दशा० ।

**सिहर-** न० [शिखर]

पर्वतोपरिवर्तिकूटेषु, नाया०१ श्रु०१ अ० । ठा० निसि० ।

‘चूलं ति वा विभूषणं ति वा सिहरं ति वा एते एगट्ठा’ निसि०१  
उ० । जीवा० । सूर० ।

उपरितन भाग, आव०म० १ अ० ।

शिखराणि ऋतुपक्षे वृक्ष सम्बन्धीनि पर्वतपक्षे कूटानि । नाया०१  
श्रु०९ अ० । पण्हा० ।

**सिहरभूअ-** त्रि० [शिखरभूत]

शिखरकल्प, पण्हा०५ अ० ।

**सिहरि-** पुं० [शिखरिन्]

जम्बूद्वीपस्य षष्ठवर्षधरपर्वत, जंबू० ।

दो सिहरिकूडा । ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**सिहरिकूड-** न० [शिखरिकूट]

जम्बूमन्दरस्योत्तरे कूट, ठा० ६ ठा० ३ उ० । जंबू० ।

**सिहलि-** स्त्री० [शिखा]

चूडायाम्, आव०४ अ० ।

**सिहा-** स्त्री० [शिखा]

शिरसि, वव०२ उ० ।

शिरसि सर्वबद्धानां केशानां समूहे, वव० ३ उ० । अणुओ० ।

ठा० । सूय० ।

**सिहाचारण-** पुं० [शिखाचारण]

अग्निशिखामुषादाय तेजःकायिकानविराधयति स्वयमदह्यमाने  
पादविहारनिपुणे चारणभेद, गच्छा०३ अधि० ।

**सिहि-** पुं० [शिखिन्]

शिखाऽस्यास्तीति शिखी । अणुओ० ।

मयूर, भग० ७ श०६ उ० । कल्प० । जंबू० । विशेष० ।

निर्धूमेऽग्नौ, कल्प०१ अधि०१ क्षण । वव० ।

अग्निमात्रे, आव० ५ अ०

**सिहंडिणी-** स्त्री० [शिखण्डिनी]

शिखाधारिण्याम्, उव० ।

**सिहिणा-** [देशी]

स्तनयोः दे०ना०८ वर्ग०३० गाथा ।

**सिही-** [देशी]

कुक्कुटे, दे०ना०८ वर्ग०२८ गाथा ।

**सीअप्पवायदय-** पुं० [शीताप्रपातहृद]

हृदविशेषे, ठा० ।

यत्र नीलवतः शीता निपतति यश्च चत्वार्यशीत्यधिकानि योजन  
शतानि आयामविष्कम्भाभ्यां पञ्चदशाष्टादशोत्तराणि विशेष न्यू-  
नानि परिक्षेपेण यस्य च मध्ये शीताद्वीपः चतुष्पष्टियोजना-  
यामविष्कम्भो द्व्युत्तरयोजनशतद्वयपरिक्षेपः जलान्ताद् द्विक्रो-  
शोच्छ्रित शीतादेवीभवनेन विभूषितोपरितनभागः स शीता-  
प्रपातहृदः । ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**सीअवेयमहण-** न० [शीतवेगमथन]

आतपेन शीतवेगनिवारणात्, सूर्ये, कल्प०१ अधि०३ ।

**सीईभूय-** त्रि० [शीतीभूत]

सुखे, आचा०१ श्रु०३ अ०१ उ० ।

**सीउण्ह- न० [शीतोष्ण]**

शीतं च उष्णं च शीतोष्णम् । अनुकूलप्रतिकूलपरीषहे, सूय० १  
श्रु० २ अ० २ उ० ।

**सीओअगकूड- पुं० न० [शीतोदककूट]**

विद्युत्प्रभवक्षस्कारपर्वते स्वनामख्याते कूटे, जंबू० ४ वक्ष० ।

**सीओअप्पवाय- पुं० [शीतोदाप्रपात]**

शीतोदामहानदीप्रवाहे हृदनिर्गमे, यत्र निषधात् शीतोदा  
निपतति स शीतोदानिपातः । ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**सीओदग- न० [शीतोदक]**

शीतं शीतलं स्वरूपस्थतोयोपलक्षणमेतत् स्वकायादिशस्त्रानु-  
पहतमप्राशुकमित्यर्थः, तच्च तदुदकं शीतोदकम् । उत्त० २ अ० ।  
अप्रासुकजले, उत्त० २ अ० । सूय० ।

‘नदीतडागावटवापी पुष्करिण्यादिषु शीतपरिणामे, जीवा० १  
प्रति० । निसि० ।

सचित्तपानीय, दश० १० अ० । निसि० । पत्र० ।

**सीओदगदुगंछि- पुं० [शीतोदकजुगुप्सिन्]**

अप्राशुकोदकपरिहारिणि जंबू० २ वक्ष० ।

**सीओदगवियड- न० [शीतोदकविकृत]**

शीतोदकं च तद्विकृतं च शीतोदकावकृतं तदेव विकटं-  
विगतजीवम् । शीतोष्णादिशस्त्रेण विकारं प्रापिते प्राशुकीकृते,  
बुह० २ उ० । निसि० । आचा० । दशा० ।

**सीओदा- स्त्री० [शीतोदा]**

जम्बूद्वीपे पूर्वापरेण लवणसमुद्रं समुत्स-पन्त्यां महानद्याम्,  
सम० १४ सम० ।

**सीओभास- त्रि० [शीतावभास]**

ईषच्छीतलाभे, रा० ।

‘सएसीओभास’ ति-शीतस्पर्शपेक्षया कुल्याद्याक्रान्तत्वादिति  
वृद्धाः । नाया० १ श्रु० १ अ० ।

**सीओयष्पवायदह- पुं० [शीतोदाप्रपातहृद]**

शीतोदा नद्याः प्रपात-स्थाने, यत्र निषधाच्छीतोदा निपतति स  
शीतोदाप्रपातहृदः । शीतोदाप्रपातहृदसमानः सीतादेवीद्वीप  
भवन समानः शीतोदादेवीद्वीपभवनश्चेति । ठा० १ ठा० ।

**सीओयाकूड- न० [शीतोदाकूट]**

शीतोदानदीदेवनिवासभूते निषधवर्षधरपर्वतस्य कूटे, ठा० ९  
ठा० ३ उ० ।

**सीओसणिज- न० [शीतोष्णीय]**

शीतं चोष्णं च शीतोष्णे ते अधिकृत्य कृतमध्ययनं शीतोष्णी-  
यम् । शीतोष्णस्पर्शजनितवेदनाप्रतिपादक आचाराङ्गप्रथम-  
श्रुतस्कन्धस्य तृतीये अध्ययने, सम० । ठा० । आचा० ।

**सीओसिणच्चाइन्- त्रि० [शीतोष्णत्यागिन्]**

सुखदुःखानभिलाषुके, शीतोष्णरूपं वा परिसहमसहमाने,  
आचा० १ श्रु० ३ अ० १ उ०

**सीओसिणफाससह- त्रि० [शीतोष्णस्पर्शसह]**

शीतं चोष्णं च शीतोष्ण तयोः स्पर्शस्ते सहते इति शीतोष्ण  
स्पर्शसहः । शीतस्पर्शोष्णस्पर्शजनितवेदनामनुभवति, आचा० १  
श्रु० ३ अ० १ उ० ।

**सीओसिणा- स्त्री० [शीतोष्णा]**

शीतोष्णरूपोभयस्पर्शपरिणामाया वेदनायाम्, पत्र० ९ । पत्र० ।

**सीतंत- त्रि० [सीदत्]**

संयमापसन्ने, ‘सीतंतो नाम जो थिरसंघयणो धितिसंपण्णां हट्टो  
पण उज्जमति खमणादि ।’ निसि० १ उ० ।

**सीधु- न० [सीधु]**

मद्यभेदे, उवा० ८ अ० । जंबू० ।

**सीभर- त्रि० [सीभर]**

मुखेन सी इति शब्दं कुर्वति, वव० ३ उ० ।

**सीमंकर- त्रि० [सीमङ्कर]**

सीमां-मर्यादां करोति यमा एवं वर्तितव्यमेवं नेति सीमङ्करः ।  
रा० ।

मर्यादाकारिणि, ठा० ९ ठा० ३ उ० । सूय० । नाया० ।

जम्बूद्वीपे आगामिन्यामवसर्पिण्यामैरवते वर्षे भविष्यति द्वितीयं  
कुलकरे, सम० ।

जम्बूद्वीपे भारते वर्षेऽस्यामवसर्पिण्यां जाते पञ्चदशानां कुलक-  
राणां चतुर्थे कुलकरे, जंबू० २ वक्ष० ।

जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां भविष्यति प्रथम  
तीर्थकर, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सीमंत- पुं० [सीमन्त]**

प्रथमपृथिव्यां प्रथमप्रस्तट मध्यभागवर्तिनि वृत्त नरकेन्द्र, सम०

**सीमंतगणभ- पुं० [सीमन्तकप्रभ]**

रत्नप्रभायां पृथिव्यां सोममन्तकस्य नरकेन्द्रकस्य पूर्वास्यां दिशि  
नरकेन्द्रके, ‘सीमन्तगणभो खलु निरओ सीमन्तगणस्स पुव्वेण’  
ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**सीमंतगमज्झिमअ- पुं० [सीमन्तकमध्यमक]**

सीमन्तस्य नरकेन्द्रस्योत्तरनरकेन्द्रके, ठा० ।

**सीमंतगावसिट्ठ- पुं० [सीमन्तकावशिष्ट]**

रत्नप्रभायां प्रथमनरकेन्द्र-कस्य दक्षिणपार्श्ववर्तिनि नरकेन्द्रके,  
ठा० ६ ठा० ।

**सीमंतावत्त- पुं० [सीमन्तावर्त]**

सीमन्तस्य नरकेन्द्रकस्य पपश्चिम-दिशि नरकेन्द्रके, ठा० ।

**सीमंतिऊण-** अव्य० [सीमान्तयित्वा]

विक्रीयेत्यर्थे, इति बृहत्कल्प-चूर्णिकारः । बुह०३ उ० ।

**सीमंतिणी-** स्त्री० [सीमन्तिनी]

सीमन्तः पासोऽस्या अस्तीति सीमन्तिनी । प्रवरयोषिति, आचा० १ श्रु०२ अ०४ उ० ।

**सीमंधर-१** त्रि० [सीमन्धर]

सीमां-मर्यादां पूर्वपुरुषकृतां धारयति नात्मना विलोपयति यः स । कृतमर्यादापालक, ठा० ९ ठा० ३ । नाया० । रा० । उव०

**सीमंधर-२** त्रि० [सीमन्धर]

जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां भविष्यति द्वितीय कुलकरे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

जम्बूद्वीपे ऐरवते भविष्यति तृतीयकुलकरे, सम० ।

जम्बूद्वीपे भारते वर्षे जातानां पञ्चदशानां कुलकराणां चतुर्थे कुलकरे, जंबू०२ वक्ष० ।

**सीमंधर-३** त्रि० [सीमन्धर]

महाविदेहस्य पूर्वविदेहे वर्तमाने तीर्थकरे, आव० ४ अ० ।

**सीमच्छेय-** पुं० [सीमाच्छेद]

मर्यादाकरणे, बुह० ।

सीमाच्छेदो नाम-साहिकाग्रामार्द्धवाटकादिविभजनं यथा अस्यां साहिकायां भवद्भिः पर्यटनीयम् अस्यां पुनरस्माभिरित्यादि । यद्वाये तत्र क्षेत्रे समकं प्राप्तास्तैः समच्छेदेन वक्तव्यं यथा युष्माकं सचित्तम् अस्माकम्, अचित्तम् अथवा-युष्माकमन्तः अस्माकं बहिः युष्माकं स्त्रियः अस्माकं पुरुषाः, युष्माकं श्राद्धाः अस्माकम् अश्राद्धाः । बुह० ३ उ० । वव० ।

**सीमा-** स्त्री० [सीमन्]

पूर्वपुरुषकृताया मर्यादायाम्, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

सीमा मेरा मर्यादा इत्यनर्थान्तरम् । आव०चू०१अ० । रा०

**सीमागार-** पुं० [सीमाकार]

ग्राहभेदे, जीवा०१ प्रति० । पत्र० ।

**सीमाधर-** [सीमाधर]

ज्ञानादीनामविराधनाधारके श्रुतधर्मे, आव०५ अ० । आव०चू० ।

**सीमाविक्रंभ-** पुं० [सीमाविष्कम्भ]

पूर्वापरतश्चन्द्रस्य नक्षत्रमुक्तिक्षेत्रविस्तारे, सम०६७ सम० ।

**सीय-** त्रि० [शीत]

शृणातीति शीतम् । उक्त०२ अ० ।

वेशद्यकृत्स्तम्भनस्वभावे, स्पर्शभेदे, ठा० १ ठा० ।

आत्यन्तिकहिमे, ठा० ४ ठा० ४ उ० । सूय० ।

शीतकाले, नाया०१ श्रु०५ अ० । उव० । सूय० उक्त० । रा० ।

अनुकूले, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**सीयघर-** न० [शीतगृह]

चक्रवर्तिनस्तथाविधे गृहे, शीतगृहं वर्द्धकिरत्ननिर्मितं चक्रवर्ति गृहम्, तत्र च वर्षास्वनिर्वातप्रवातं शीतकाले सोष्मं ग्रीष्मकाले शीतलं यथा च तच्चक्रवर्तिनः सर्वर्तुक्षमं तथा द्रमकादेरपि प्राकृतपुरुषस्य तत्सर्वर्तुक्षममेव भवति । बुह०१ उ०३ ।

**सीयच्छाय-** त्रि० [शीतच्छाय]

सर्वाविसंवादितया शीतत्वे, छायाशब्द आतपप्रतिपक्षवस्तुवाची द्रष्टव्यः । रा० ।

**सीयजोणिय-** त्रि० [शीतयोनिक]

शीतां वेदनां वेदयन्ति किं तु- उष्णां वेदना न वेदयन्ति ते हि शीतयोनिकाः । शीतयोनिस्थानिषु नारकेषु, केवलं हिमानी-प्रख्यशीतप्रदेशात्मत्वात्तदुत्पत्तिस्थानानाम् । जीवा० ३ प्रति० १

**सीयपरिसह-** पुं० [शीतपरिषह]

शीते महत्यपि पतति जीर्णवसनः परित्राणवर्जितो नाकल्यानि वासांसि गृह्णाति शीतत्राणाय, आगमोक्तेन विधिना एषणीयमेव कल्यादि गवेषयेत् परिभुञ्जीत वा । नापि शीतार्तो ज्वलनं, ज्वालयेत् अन्यज्वालितं वा नासेवेत एवमनुतिष्ठता शीत परीषहजयः प्रतो भवति । । उक्त० । सम० ।

शीतादिसहनेऽपि यतिस्त्वग्वस्त्रत्राणवर्जितो यासोऽकल्यं न गृह्णीयादग्निं नो ज्वालयेदपि । आव०म० १ अ० ।

**सीयपरिसहविजय-** पुं० [शीतपरिषहविजय]

महत्यपि शतिपतति परित्यक्ताकल्पनीयवाससः प्रवचनोक्तेन विधिना कल्पनीयवासांसि परिभुञ्जानस्य वृक्षवदनवधारितालयविशेषस्य वृक्षमूले पथि शून्यागारेऽन्यत्र वा क्वापि निवसतो हिमानीकणसम्मिश्रशीतानिलसंमिश्रेऽपि तत्प्रतीकारहेतूपादानं प्रति निवृत्तेच्छस्य पूर्वानुभूतशीतप्रतीकारहेतूनस्मरतः सम्यग् भावनागर्भशीतसहने, आव०म० १ अ० ।

**सीयपिंड-** पुं० [शीतपिण्ड]

शीतः शीतलः पिण्ड आहारः, शीतश्चासौ पिण्डश्च शीतपिण्डः । शाल्यादिपिण्डे, 'पंताणि चैव सेविज्जा, सीयपिण्डं पुराणकुम्मासं ।' आचा० १ श्रु०९ अ०४ उ० ।

**सीयप्पवायदह-** पुं० [शीताप्रपातहद]

यत्र नीलवतः शीतानिपतति यत्र चत्वार्यशीत्यधिकानि योजन शतानि आयामविष्कम्भः पञ्च दशाष्टादशोत्तराणि विशेषन्यूनानि परिक्षेपेण यस्य च मध्ये शीताद्वीपः चतुष्पष्टियोजनायाम-विष्कम्भो द्युत्तरयोजनशतद्वयपरिक्षेपः जलान्तात् द्विक्रोशो-च्छ्रितः शीतादेवीभवनेन विभूषितोपरितनभागः स शीताप्रपात हद इति । शीतादेव्या निवासभूते शीतानद्या जलप्रपातस्थाने, ठा० २ ठा० ३ उ० ।



**सीयफास- पुं० [शीतस्पर्श]**

शीतापादितदुःखविशेषे, आचा०१ श्रु० ८ अ०४ उ० ।  
शीतल, आचा०१ श्रु०९ अ०३ उ० ।

**सीयल- त्रि० [शीतल]**

शीतवेदनोत्पादके, ठा० ४ ठा० ४ उ० । आव०म० । उव० ।  
चन्द्रं सूर्यं वा गृह्णतो राहोः कृष्णपुद्गलः एकः शीतलः । चंद०  
२० पाहु० । सूर० २० पाहु० ।  
दशम तीर्थकर । आव०म० ।

**सीयलगत्या- स्त्री० [शीतलगात्रा]**

अङ्गोपाङ्गानां शीतलस्पर्शे, बुह० ३ उ० ।

**सीयलविहारि- पुं० [शीतलविहारिन्]**

नित्यवासित्वादिना शिथिलाचारे, आव०१ अ० ।

**सीयलिया- स्त्री० [शीतलिका]**

शीतस्पर्शायां लूतायाम्, आव०म० १ अ० ।  
नहि लूतादिकं शीतलिकाभिधानान्तरमात्रेणान्यथात्वं भजते ।  
सूय० १ श्रु० ११ अ० ।

**सीयवेगमहण- न० [शीतवेगमथन]**

आतपेन शीतवेगनिवारणे, कल्प० १ अधि० ३ ।

**सीया-१ स्त्री० [सीता]**

जम्बूद्वीपे मेरोरुत्तरे नीलवतो वर्षधरपर्वतस्य केशरहृदात्रिगतायां  
महानद्याम्, ठा० ।  
शीता महानदी केशरहृदस्य दक्षिणतोरणेन विनिर्गत्य कुण्डे  
पतित्वा मेरोः पूर्वतः पूर्वविदेहमध्येन विजयद्वारस्याधः पूर्व-  
समुद्रं शीतोदानामानं प्रविशतीति । ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**सीया-२ स्त्री० [सीता]**

पश्चिमरुचकवास्तव्यायां दिक्कुमारीमहत्तरिकायाम्, जंबू०५ वक्ष०  
। आव० । आव०म० । रा० । उव० । पण्हा० । भग० ।

**सीया-३ स्त्री० [सीता]**

‘ईषत्प्राग्भारायां पृथिव्याम्, आव०म० १ अ० ।

**सीया-४ स्त्री० [सीता]**

लाङ्गलपद्धति, आव०म० २ अ० ।

**सीया-५ स्त्री० [सीता]**

पुरुषोत्तमस्य चतुर्थवासुदेवस्य मातरि, आव० १ अ० ।

**सीया-६ स्त्री० [सीता]**

शिबिकापुरुषसहस्रवहनीय-कूटाकार-शिखराच्छादिते जम्पान  
विशेषे, । भग०

**सीयाकूड-१ पुं०न० [शीताकूट]**

नीलवर्षधरपर्वतस्य चतुर्थे कूटे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।  
जम्बूमन्दरस्य उत्तरे नीलवन्तवर्षधरपर्वतस्य चतुर्थकूट, ठा० २

**सीयाकूड-२ पुं०न० [शीताकूट]**

महाविदेहे माल्यवतो वक्षस्कारपर्वतस्य सीतासरित्सुरीकूटे,  
जंबू० ४ वक्ष० ।

**सीयाण- न० [श्मशान]**

शवदाहस्थाने, वव०७ उ० ।

**सीयायवतत्त- त्रि० [शीतायवतत्त]**

रात्रौ शीतेन दिवाऽऽतपेन रस-शोखं प्रापिते, जंबू०२ वक्ष० ।

**सीयामुहवण- न० [शीतामुखवन]**

महाविदेहे वर्षे शीताया महानद्या उत्तरस्यां नीलवतो वक्षस्कार  
पर्वतस्य दक्षिणे पूर्वलवणसमुद्रस्य पश्चिमे, पुष्कलावतीविजय  
क्षेत्रस्य पूर्वे स्वनामख्याते वने, जंबू० ।

**सीयावण- न० [शीतावन]**

शीतकरणे, निसि०१ उ० ।

**सीरकंता- स्त्री० [सीरकान्ता]**

मूर्च्छनाविशेषे, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**सील-१ न० [शील]**

शील-समाधौ शीलत्वे शीलम् । आव०चू०१ अ० ।

**सील-२ न० [शील]**

समाधाने, विशे० । ठा० । तं० । ।  
व्रतादिसमाधाने, आव०४ अ० । पण्हा० ।

**सील-३ न० [शील]**

यमनियमरूपे, सूय०१ श्रु०६ अ० ।

**सील-४ न० [शील]**

क्रोधाद्युपशमरूप, सूय०२ श्रु०६ अ० ।

**सील-५ न० [शील]**

अनुष्ठान, सूय०२ श्रु०१ अ० ।  
व्रतविशेष, सूय०२ श्रु०२ अ० ।  
शीलमुत्तरगुणाः । नाया०१ श्रु०७ अ० । आव०म० । आव०चू० ।  
शीलान्यणुव्रतानि । उवा०२ अ० ।  
चारित्र्ये, सूय० १ श्रु०१ अ०१ उ० । सूय० । दश० ।

**सील-६ न० [शील]**

परद्रोहविरतौ, दश०९ अ० १ उ० ।

**सील-७ न० [शील]**

उद्युक्तविहारित्वे, सूय०१ श्रु०१३ अ० ।

**सीलंग- न० [शीलाङ्ग]**

पृथिवीकायसमारम्भपरित्यागादिषु, आव०४ अ० ।

**सीलंगायरिय-१ पुं० [शीलाङ्गाचार्य]**

तत्त्वादित्याऽपरनाम्नि आचार्ये, आचाराङ्गटीका वाहरिगणि  
साहा- व्येन कृता । आचा०२ श्रु०४ चू० ।

**सीलंगारिय-१** पुं० [शीलाङ्गाचार्य]

सूत्रकृताङ्गीटीकाऽपि तेनैव बाहरिसाधुसाहाय्येन चक्रे । आचा० ।

**सीलकरण-** न० [शीलकरण]

अनुष्ठानसेवने, पण्हा०४ अ० ।

**सीलकलिय-** त्रि० [शीलकलित]

सुशीलतया परिहारविरते, पण्हा०२ अ०

**सीलखलियपण्णवणा-** स्त्री० [शीलस्खलितप्रज्ञापना]

शीलस्खलितानां व्यामोहितानां यथावस्थितार्थप्ररूपणायाम्, सूय०१ श्रु० ३ अ०१ उ० ।

**सीलगुण-** पुं० [शीलगुण]

शीलं समाधानं तदेव गुणः शीलगुणः । समाधानरूपे गुणे, पण्हा०१ अ० । आचा० ।

**सीलगुणोववेय-** त्रि० [शीलगुणोपपेत]

शीलं चारित्रं तदेव गुणो, यद्वा-गुणः पृथगेव ज्ञानं, ततः शील-गुणेन शीलगुणाभ्यां वा चारित्रज्ञानाभ्यामुपपेताः शीलगुणो-पपेताः । ज्ञानिषु संयतेषु, उत्त० १ अ० ।

**सीलऽऽङ्ग-** त्रि० [शीलाङ्ग]

अष्टादशसहस्रब्रह्मचर्यभेदैः शीलैः पूर्णे, उत्त०१९ अ० ।

**सीलपरिघर-** न० [शीलपरिगृह]

चारित्रस्थाने, पण्हा०२ अ० ।

**सीलभंग-** पुं० [शीलभङ्ग]

ब्रह्मव्रतनाशे, वव०७ उ० ।

**सीलभद्-** पुं० [शीलभद्]

स्वनामख्याते आचार्ये, यच्छिष्येण चन्द्रसूरिणा निशीथचूर्णे-र्विशतितमोदेशकस्य व्याख्या निर्ममे । निसि० २ उ० ।

**सीलभूय-** त्रि० [शीलभूत]

शीलं चारित्रं भूतः प्राप्तो यः स शीलभूतः । शीलयुक्त, उत्त०२७

**सीलमंत-** त्रि० [शीलवत्]

शीलमस्यास्तीति शीलवान् । आव० ३ अ० ।

सदाचारे, उत्त०७ अ० ।

अष्टादशशीलाङ्गसहस्रधारिणि, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०९ उ० ।

सामान्येन लाघवयोगविरतो वा शीलवान् भण्यते । सूय०७ अ०

सः प्राशुकमुद्रमादिदोषरतिमाहारं भुङ्क्ते तं शीलवन्तं वदन्ति तज्ज्ञाः । सूय० १ श्रु० ७ अ० ।

**सीलवाइ-** पुं० [शीलवादिन्]

शीलवन्तमात्मानं वादयितुं शीलं यस्य स शीलवादी । कुशले शीलवत्त्वख्यापके, सूय०१ श्रु०७ अ० ।

**सीलव्वय-** न० [शीलव्रत]

अणुव्रते, आव० १ अ० । सम० । दशा० । भग० । उव० ।

**सीलसागर-** पुं० [शीलसागर]

शीलेन सागर इव शीलसागरः । शीलवतां प्रधाने, आव०म०१

**सीलायार-** पुं० [शीलाचार]

शीलं समाधिस्तत्प्रधानस्तस्य वाऽऽचारोऽनुष्ठानम् । शीलेन वा स्वभावेन वा आचरणे, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**सीलायारसमण्णिय-** त्रि० [शीलाचारसमन्वित]

शीलदोषरहिते, वव० १ उ० ।

**सीलेस-** पुं० [शीलेश]

शीलं समाधानं तच्च निश्चयतः प्रकर्षप्राप्तः समाधानरूपत्वात् सर्वसंवरस्ततस्तस्य सर्वसंवररूपस्य शीलस्येशः शीलेशः । शैलेशीमवस्थां प्रतिपन्ने, विशेष० ।

**सीवण-** न० [सीवन]

सूच्या वस्त्रखण्डनसन्धाने, निसि०१२ उ० । आचा० ।

**सीस-** न० [शीर्षन्]

शिरसि, आव०चू०१ अ० । मस्तके, पत्र० । आचा० । उत्त० ।

**सीस-** त्रि० [शिष्य]

शासितुं शक्यः शिष्यः । उत्त० ।

शिक्षाधारके, उत्त० २० अ० ।

स्वदीक्षिते, वव० ।

उपाध्यायस्योपासके, जीवा० ३ प्रति०४ अधि० ।

शिष्ययोग्यतायां गोण्यादयो दृष्टान्ताः । विशेष० ।

**सीस-** न० [सीस]

धातुभेदे, पत्र०११ पद ।

**सीसउच्चंपिय-** न० [शीर्षोच्चम्पित]

शीर्षम् उत् प्राबल्येन चम्पितं यत्र तच्छीर्षोच्चम्पितम् । तस्मिन्, यद्वा-शीर्षे उत् प्राबल्येन चम्पितमाक्रमितं यत्तत्तथा, तस्मिन्, शीर्षोच्चम्पिते कमलकोष्ठाकारे, तं० ।

**सीसकवाल-** न० [शीर्षकपाल]

दुर्गन्धिमस्तककपरि, तं० ।

**सीसग-** न० [सीसक]

पारदजे धातुभेदे, पत्र०१ पद । आचा० ।

पारदे, जीवा०१ प्रति० । सूय० । सम० । पत्र० ।

**सीसगपाय-** न० [सीसकपात्र]

सीसकधातुमये पात्र, आचा०२ श्रु० १ चू०६ अ०१ उ० ।

**सीसगभम-** पुं० [शिष्यकभ्रम]

शिष्या एव शिष्यकाः तेषां भ्रमो भ्रान्तिर्येषु ते शिष्यकभ्रमाः । विनीततया शिष्यतुल्येषु, विपा० १ श्रु०३ अ० ।

**सीसगभम-** पुं० [शीर्षकभ्रम]

शीर्षकं शिर एव शिरः कवचं वा तस्य भ्रमो व्यभिचारतया शरीररक्षकत्वेन वा येषु ते शीर्षकभ्रमाः । विपा०१ श्रु०३ अ० ।

**सीसगुण-** पुं० [शिष्यगुण]

शुश्रूषादिके शिष्ययोग्यतागुणे, 'सुस्सूसा पडिपुच्छा, सुणणं गहणं च ईहणमवाओ० । उक्त० १ अ० ।

**सीसघडी-** स्त्री० [शीर्षघटी]

शीर्षमेव घटी तदाकारत्वात् शीर्षघटी । मस्तकहड्ड, उवा०२ अ० । तं० ।

**सीसघडीकंजिय-** न० [शीर्षघटीकाञ्जिक]

कपालकर्परखट्टरसे, तं० । ।

**सीसघडीविणिगय-** त्रि० [शीर्षघटीविनिर्गत]

शीर्षमेव घटी तदाकारत्वात् शीर्षघटी, तस्या विनिर्गत इव विनिर्गतम् । शिरोघटीमतिक्रम्य वर्तमाने, उवा०२ अ० ।

**सीसता-** स्त्री० [शिष्यता]

शिक्षणीयतायाम्, भग०१२ श०७ उ० ।

**सीसदुवारिया-** स्त्री० [शीर्षद्वारिका]

शीर्षस्यावरणे, निसि०३ उ०

**सीसपहेलिअंग-** न० [शीर्षप्रहेलिकाङ्ग]

चतुरशीतिलक्षगुणिते चूलिकाकाले, भग०६ श०७ उ० ।

चतुरशीतिलक्षगुणिते महौघे, ज्यो०२ पाहु० । ठा० । अणुओ० ।

**सीसपहेलिया-** स्त्री० [शीर्षप्रहेलिका]

वाचनान्तरेण चतुरशीतिमहौघशतसहस्राण्येक शीर्षप्रहेलिका-ङ्गम् । ज्यो०२ पाहु० । भग० ।

चतुरशीतिलक्षगुणिते शीर्षप्रहेलिकाङ्गे, अणुओ० ।

शीर्षप्रहेलिकाङ्गं चतुरशीत्या लक्षैर्गुणितं शीर्षप्रहेलिका भवति । अणुओ० । कर्म० । ठा० ।

**सीसपूरग-** पुं० [शीर्षपूरक]

मस्तकाभरणे, तं० । ।

**सीसवग्ग-** पुं० [शिष्यवर्ग]

अन्तेवासिवृन्दे, गच्छा०५ अधि० ।

**सीसवेयणा-** स्त्री० [शीर्षवेदना]

सर्वमस्तकवेदनायाम्, तं० । ।

**सीसहिया-** स्त्री० [शिष्यहिता]

हरिभद्राचार्यनिर्मितायामावश्यकवृत्तौ आव०६ अ० ।

**सीसागर-** पुं० [सीसाकर]

सीसकधातूपत्तिखनौ, ठा० ८ ठा० ३ उ० । निसि० ।

**सीसावेढ-** पुं० [शीर्षवेष्ट]

आर्द्रचर्मादिमये शिरोबन्धने, आव०म०१ अ० । सम० । पण्हा० । आव० । दशा० ।

**सीसुकंपिय-** न० [शीर्षोत्कम्पित]

सीसं पकंपमाणो, जक्खा इट्ठ व्व कुणइ उस्सगं । आव०५ अ०

**सीसोवहार-** पुं० [शीर्षोपहार]

पार्श्वदिशिरोवलौ, पण्हा०२ अ०

**सीह-** त्रि० [शीघ्र]

वेगवति, शीघ्रगतिहेतुत्वाच्छीघ्रः गतिविषयो गतिगोचरस्तद्धेतु-त्वात्काल इत्यर्थः । सूय०२ श्रु०३ अ० ।

शीघ्रः शीघ्रगतिविषयः शीघ्रत्वेन तद्विषयोऽप्युपचाराच्छीघ्र उक्तः । भग० ।

**सीह-१ पुं० [सिंह]**

केशरिणि, जीवा०३ प्रति०४ । सूय० । प्रज्ञा जंबू० । पण्हा० ।

**सीह-२ पुं० [सिंह]**

सप्तम देवलोकविमानभेदे, सम०१७ सम० ।

**सीह-३ पुं० [सिंह]**

स्वनामख्याते भगवतो महावीरस्य अनगारे, यो गोशालक-तेजोलेश्यया वीरजिने रोगाक्रान्ते रेवतीगृहे कपोतकशरीरा-नयनार्थमगतम् । भग०१५ श० ।

**सीह-४ पुं० [सिंह]**

‘सीहं कासवगुत्तं धम्मं पि अकासवं वंदे ।’ थेरस्स णं अज्जधम्मस्स सुव्वयगोत्तस्य अज्जसीहे थेरे अंतेवासी कासव-गुत्ते’ कल्प०२ अधि०८ क्षण ।

**सीह-५ पुं० [सिंह]**

कोशालसन्निवेशे ग्रामणीपुत्रे, यो हि विद्युन्मत्या दास्या सह क्रीडन् हसितो गोशालकेन, कुट्टितवाँश्च तम् । कल्प०१ अधि०६ क्षण । आव०म० ।

**सीह-६ पुं० [सिंह]**

श्रेणिकस्य धारण्यां जाते स्वनामख्याते पुत्रे, अंत० २ वर्ग० १० अ० । अनुत्त० ।

**सीहकंत-** न० [सिंहकान्त]

सप्तमदेवलोकस्थे विमाने, सम०१७ सम

**सीहकण्ण-** पुं० [सिंहकर्ण]

स्वनामख्याते अन्तरद्वीपे, पत्र०१ पद ।

**सीहकण्णी-** स्त्री० [सिंहकर्णी]

कन्दविशेषे, भग०७ श०३ उ० ।

**सीहकेसरय-** पुं० [सिंहकेशरक]

तथाविधे मोदकभेदे, धर्मलाभस्थाने सिंहके शरा इति भणनात् तथानाम्ना प्रसिद्धेऽनगारे, पिंड० । आतु० । नाया० ।

**सीहखाइता-** स्त्री० [सिंहखादिता]

सिंहः पुनः शौर्यातिरेकादवज्ञयोपात्तस्य यथारब्धभक्षणेन वा खादिता तथाविध प्रकृतिर्वा सिंहः ।

प्रव्रज्याभेदे, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**सीहगइ-१** पुं० [सिंहगति]

दिक्कुमारेन्द्रस्य अमितगतेः पश्चिमलोकपाले, भग०१ श०१ उ० ।

**सीहगइ-२** त्रि० [शीघ्रगति]

शीघ्रगमनशक्तिसम्पन्ने, भग०३ श०२ उ०

**सीहगिरि-** पुं० [सिंहगिरि]

स्थविरस्यार्यस्य स्वनामख्याते शिष्ये, कल्प०२ अधि०८ क्षण ।  
अस्य द्वौ शिष्यौ धनगिरिरार्यवज्रश्च । आव०म०१ अ० ।  
आव०चू० । गच्छा० । कल्प० । उत्त० । आव० ।

**सीहगुहा-** स्त्री० [सिंहगुहा]

राजगृहनगरस्यादूरे दक्षिणपौरस्त्ये दिग्भागेः व्यवस्थितायां  
चोरपल्ल्याम्, नाया०१ श्रु०१८ अ० ।

**सीहज्झय-** पुं० [सिंहध्वज]

सिंहालेखरूपचिह्नोपेतो ध्वज, रा०

**सीहणाय-** पुं० [सिंहनाद]

सिंहस्येव नादकरणे, पण्हा०३ अ० । उव० । आव०म० । आव०  
सीहस्सेव सरिसं नायं करोति निसि०१७ उ० ।

**सीहणिक्कीलिय-** न० [सिंहनिष्क्रीडित]

सिंहनिष्क्रीडितं सिंहगमनं तदिव यत्तपस्तत्सिंहनिष्क्रीडितमिति  
उच्यते तद्गमनं चातिक्रान्त-देशावलोकनतः, एवमतिक्रान्ततपः  
समोसेवनेनापूर्वतपसोऽनुष्ठानं यत्र तत् सिंहनिष्क्रीडितम् । तपो  
भेदे, तच्च क्षुद्रकं महच्चेति द्विविधम् । उव० । नाया० । अंत०

**सीहणिसाइ-** पुं० [सिंहनिषादिन्]

सिंहवत् निषीदतीत्येवंशीलः सिंहनिषादी । यथा सिंहोऽग्रेतनं  
पादयुगलमुत्तभ्यपश्चात्तनं तु पाद युग्मं संकोच्य पुताभ्यां मनाक्  
लग्नो निषीदति । सिंहोपवेशनेनोपविष्टे, जीवा०३ प्रति०४ ।

**सीहपुच्छ-** पुं० [सिंहपुच्छ]

पृष्टिवर्धे, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।

**सीहपुच्छण-** न० [सिंहपुच्छण]

सेपस्त्रोटने, पण्हा०५ अ० ।

**सीहपुरी-** स्त्री० [सिंहपुरी]

सुपक्षमविजयक्षेत्रराजधान्याम्, जंबू०४ वक्ष० । आव० ।

**सीहमुहदीव-** पुं० [सिंहमुखद्वीप]

लवणसमुद्रस्थान्तर्द्वीपविशेषे, ठा० ४ ठा० २ उ० । पत्र० । नं० ।

**सीहया-** स्त्री० [सिंहता]

ऊर्जवृत्तौ, ठा० ४ ठा० ३ उ० ।

**सीहर-** पुं० [शीकर]

अक्षरादिभिः समे, 'सत्तस्स रसीहरा' ठा० ७ ठा० ३ उ० ।  
म्लेच्छजातिविशेषे, पत्र०१ पद ।

**सीहरह-** पुं० [सिंहरथ]

स्वनामख्याते पुण्ड्रवर्धननगरराजे, उत्त०७ अ० ।

**सीहलिपासग-** पुं० [शिखापाशक]

वेणीसंयमनार्थे ऊर्णामये कङ्कणे सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।

**सीहविअ-** न० [सिंहविद्]

सप्तमदेवलोकस्थे विमानभेदे, सम०१७ सम० ।

**सीहविक्रमगइ-** पुं० [सिंहविक्रमगति]

दिक्कुमाराणाममितगत्यमितामितवाहनयोर्लोकपाले, भग०३  
श०८ उ० । ठा० ।

**सीहसर-** त्रि० [सिंहस्वर]

सिंहस्येव प्रभूतदेशव्यापी स्वरो यस्येति । सिंहनिर्हादवति, तं० ।

**सीहसेण-** पुं० [सिंहसेन]

अनन्त जिनस्य पितरि, । सम० ।

महासेनस्य राज्ञः पुत्रे, विपा०१ श्रु०९ अ० ।

श्रेणिकस्य राज्ञो धारण्यां जाते स्वनामख्याते पुत्रे, अनुत्त० २

**सीहसोया-** स्त्री० [सिंहश्रोतस्]

जम्बूमन्दरस्य पश्चिमे भागे सीतो-दायां महानद्यां संगतायां  
स्वनामख्यातायामन्तर्नद्याम्, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

**सीहा-** स्त्री० [सिंहा]

सिंहगतिसमानायां श्रमाभावे दाढ्ये स्थिरता-याम्, भग०३ श०१  
उ० । पण्हा० ।

**सीहाणुग-** पुं० [सिंहाणुग]

सन्निषद्यास्थिते आचार्ये, निसि०२० उ० ।

**सीहासण-** न० [सिंहासन]

सिंहप्रधानमासनं सिंहासनम् । आव०म० १ अ० ।

सिंहाङ्किते नृपासने, जंबू०३ वक्ष० ।

सिंहाकृतियुक्ते, विष्टरे, । जीवा० । सूय० । उव० । ठा० ।

रजत-मयैः सिंहैरुपशमिते, नृपासने, आव०म०१ अ० । जीवा० ।

पादपीठे, दशा०१० अ०

**सीहासणवरगय-** त्रि० [सिंहासनवरगत]

सिंहासनानां मध्ये यद्वरं तत्सिंहासनवरं, तत्र गतो व्यवस्थितो  
यः स तथा । श्रेष्ठसिंहासनासीने, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सीहासणसंठिय-** त्रि० [सिंहासनसंस्थित]

सिंहासनस्येव संस्थितं संस्थानं यस्य स । सिंहासनाकृतौ, रा० ।

**सीही-** स्त्री० [सिंही]

परिव्राजकप्रयुक्ताया वराहीविद्यायाः प्रतिमथिन्यां सिंहविकु-  
र्वणात्मिकायां विद्यायाम्, आव०म०१ अ० । आव० ।

**सीहु-** न० [सीधु]

तालवृक्षदुग्धोद्भवे । उत्त०१९ अ० । मद्यविशेषे, पण्हा०५ अ० ।

**सु-** अव्य० [सु]

सुष्ठु शोभने, सूय०१ श्रु०१४ अ० । चंद० ।  
अतिशये, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ० ।  
सुरित्ययं निपातः प्रशंसायां शुद्धविषये वर्तते । सूय०१ श्रु०७  
अ० । उत्त० । विशेष० । उव० रा० । आव०म० । सम० । आतु० ।

**सुअ-** पुं० [शुक]

कीर, जंबू०१ वक्ष०१भग० ।

**सुअंग-** न० [श्रुताङ्ग]

श्रुतस्य प्रव्रज्यस्य पुरुषरूपस्याङ्गावयव इति कृत्वा, सम० ।

**सुअक्खायधम्म-** त्रि० [स्वाख्यातधर्मन्]

सुष्ठु आख्यातो धर्मोऽस्येति स्वाख्यातधर्मा । संसारभीरुत्वा-  
द्यथारोपित भारवाहिनि, आचा० १ श्रु०६ अ०३ उ० ।

**सुअणलस-** त्रि० [स्वनलस]

कृतोद्यमे प्रशस्तपुरुषे, गच्छा०३ अधि० ।

**सुअमुह-** न० [शुकमुख]

शुकचञ्चपुटे, कल्प०१ अधि०३ क्षण ।

**सुअलंकिय-** त्रि० [स्वलङ्कृत]

अतिशयेन रमणीयतयाऽलंकृते, जीवा० ३ प्रति०४ । रा० । जंबू०

**सुअहर-** पुं० [श्रुतधर]

पूर्वधरे, आव० १ अ० ।

**सुअहिज्जिय-** त्रि० [स्वधीत]

सुष्ठु कालविनयाद्वाराधनेनाधीते, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

**सुआइक्ख-** त्रि० [स्वाख्येय]

अकृच्छ्राख्येये, ठा० ५ ठा० १ उ० ।

**सुआहिय-** त्रि० [स्वाख्यात]

स्वरूपविविद्धिः प्रतिपादिते, सूय०१ श्रु०१५ अ० ।

**सुइ-** त्रि० [शुचि]

पवित्रे, उव० । ठा० । कल्प० । आव०म० । नाया०  
शुचिनां भवितव्यं संयमवतेत्यर्थः । आव०४ अधि० । सम० ।

**सुइ-** स्त्री० [श्रुति]

श्रूयन्ते इति श्रुतयः । वेदेषु, संथा० ।  
शब्द, भग० १५ श० ।  
योगे, नाया०१ श्रु० १६ अ० । विशेष० ।  
वार्त्तामात्रे, नाया०१ श्रु०२ अ० ।  
श्रवणं-श्रुतिः, अन्यार्थप्रकरणादेः सामान्यशब्दा अपि विशेषेऽ-  
वतिष्ठन्ते इति न्यायात् धर्माकर्णने, उत्त०३ अ० । विशेष० ।  
सुखलक्षणफलबहुलतायाम्, नाया० १ श्रु० ९ अ० ।

**सुइ-२** स्त्री० [श्रुति]

षोडशतीर्थकरस्य प्रवर्त्तिन्याम्, सम० ।

**सुइकरण-** त्रि० [शुचिकरण]

शुचीनि पवित्राणि निरुपलेपानीति । करणानि-चक्षुरादीनि  
इन्द्रियाणि येषां ते शुचिकरणाः पवित्रेन्द्रियेषु, जीवा०३ प्रति०४

**सुइत्ता-** अव्य० [सुत्वा]

शयित्वेत्यर्थे, ठा० ३ ठा० २ उ० ।

**सुइभूय-** त्रि० [शुचिभूत]

शुचिताप्राप्ते, भूतशब्दस्य प्रकृतिमात्रार्थत्वाद् भावप्रत्ययस्त  
लुप्तस्य दर्शनाद्भूतशब्दस्य प्राप्त्यर्थत्वाच्च । अथवा-शुचिश्चासौ  
भूतश्च संवृतः प्राणी वा शुचिभूतः । विशुद्धमते । सूय० । ठा०

**सुइय-** त्रि० [शुचिक]

पवित्रे, नाया०१ श्रु०१ अ० । भग० । शुचीकृत, बुह०१ उ०२

**सुइर-** अव्य० [शुचिरम्]

प्रभूते, आव०४ अ० ।

**सुइसेह-** पुं० [शुचिशैक्ष]

चोक्षशिष्ये, वव०६ उ० ।

**सुउज्जुआर-** पुं० [सुत्तजुकार]

सुष्ठुतिशयेन ऋजुस्तत्करणशीलः । संयते, सूय०१ श्रु०१३ अ० ।

**सुए-** अव्य० [ध्वस्]

प्रभाते आगामिदिने, उत्त०२ अ० ।

**सुओयारा-स्त्री०** [सुखावतारा]

सुखेनावतारो जलमध्ये प्रवेशनं यासु ताः सुखावताराः ।  
अक्लिष्टतीर्थायां वाप्याम्, रा० ।

**सुओयारा-स्त्री०** [सुखोत्तारा]

सुखेनोत्तारो जलमध्याद्धर्हिर्विनिर्गमनं यासु ताः सुखोत्ताराः ।  
अक्लिष्टतीर्थायां वाप्याम्, रा० ।

**सुंक-** न० [शुल्क]

विक्रेयतया भाण्ड, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**सुंकलितण-** न० [शुङ्कलितृण]

तृणभेदे, पन्न०१ पद ।

**सुंग-** पुं० [शुङ्ग]

स्वनामख्याते ऋषौ, जंबू०७ वक्ष० ।

**सुंठ-** पुं० [शुण्ठ]

पर्वकवनस्पतिभेदे, आचा०१ श्रु०१ अ०५ उ० ।

**सुंठय-** न० [शुण्ठक]

मांसपेशीपचनके, ठा० ४ ठा० ४ उ० । सूय०

**सुंठी-** स्त्री० [शुण्ठी]

शुष्कशृङ्गवेरे, आव०क०१ अ० । प्रव० ।

**सुंडा-** स्त्री० [शुण्डा]

हस्तिनासायाम्, आव०म०१ अ० ।



**सुंडिया-** स्त्री० [सुण्डिका]

पिटिकाकारे सुरापिष्टस्वेदनभाजने, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**सुंदर-१** त्रि० [सुन्दर]

शोभन, आव० म० १ अ० ।

मनोहर, सम० । वव० । उव० । नपु० ।

युक्त, पिंड० । जंबू० । पुं० ।

**सुंदर२** त्रि० [सुन्दर]

त्रयोदशजिनस्य पूर्वभव जीव, सम० ।

**सुंदरपास-** त्रि० [सुन्दरपार्श्व]

पार्श्वगुणोपेते पार्श्वे, पण्हा० ४ अ०

**सुंदरबाहु-** पुं० [सुन्दरबाहु]

सप्तमतीर्थकरस्य पूर्वभवजीवे, सम० ।

**सुंदरमंगुलभाव-** पुं० [सुन्दरमङ्गुलभाव]

शुभेतरपदार्थे, आव० म० १ अ०

**सुंदरी-** स्त्री० [सुन्दरी]

ऋषभदेवस्य सुनन्दायां भार्यायाम्, बाहुबलिना सह जनितायां भरतचक्रिस्त्रियाम्, कल्प० १ अधि० ७ । आव० म० । आव० चू० । पश्चात्सा श्रमणी जाता । आव० म० १ अ० ।

**सुंदरीणद-** पुं० [सुन्दरीनन्द]

नासिक्यपुरे सुन्दरीनाम्न्या स्त्रिया भर्तारि नासिकं नगरं नंदो वणिजो सुंदरी से भज्जा । सा तस्स अतीव वल्लहा खणमपि तस्स पासं न मुंचइ त्ति लोणेण सुंदरीनंदो त्ति तस्स नामं पाइयं । आव० म० १ अ० ।

**सुंभ-** पुं० [शुम्भ]

वैरोचनेन्द्रबलिभार्यायाः शुम्भायाः पूर्वभवपितरि, नाया० ।

शुम्भायाः सिंहासने, । नाया० २ श्रु० २ वर्ग० १ अ० ।

**सुंभय-** त्रि० [शुंभक]

शुभ्रवर्णकारिणि, अणुओ० ।

**सुंभवडिंसग-** न० [शुम्भावतंसक]

बलिचञ्चाया राजधान्या बल्यग्रमहिष्याः शुम्भाया आवास विमाने, नाया० २ श्रु० २ वर्ग० १ अ० ।

**सुंभसिरी-** स्त्री० [शुम्भश्री]

बल्यग्रमहिष्याः शुम्भायाः पूर्वभवमातरि नाया० २ श्रु० २ वर्ग० १ उ० ।

**सुंभा-** स्त्री० [शुम्भा]

बलेर्वैरोचनेन्द्रस्याग्रमहिष्याम्, ठा० ५ ठा० १ उ० ।

**सुंव-** न० [सुंव]

वल्कलरज्ज्वाम्, भग० १५ श० ।

वीरततृणे, तज्जनि-तायां दवरिकायाम् । विशे० ।

**सुंवकट-** पुं० [सुंवकट]

वीरणकटे, भग० १३ श० ९ उ० ।

**सुंसुमा-** स्त्री० [सुंसुमा]

राजगृहवास्तव्यस्य धनश्रेष्ठिनः कन्यायाम्, आव० १ अ० । नाया० । आव० चू० । संथा० ।

**सुंसुमार-** पुं० [शिशुमार]

मत्स्यविशेषे, उत्त० ३६ अ० । जीवा० । पन्न० । सूय० । आव० चू० । नगर, यत्रैकरात्रिकीप्रतिमाप्रतिपन्नं वीरजिनं शक्रतिरस्कारार्थं चमरः प्रणनाम । ठा० १० ठा० ३ उ० । आव० म० ।

**सुक-** पुं० [शुक]

कीर, पण्हा० २ अ०

**सुकंत-** पुं० [सुकान्त]

ऋषभदेवस्य पुत्रे, कल्प० १ अधि० ७ ।

सुकान्तः कान्तियोगात्, सम० ।

**सुकच्छ-** पुं० [सुकच्छ]

द्वितीयविजयक्षेत्रयुगले, जंबू० ४ वक्ष० ।

**सुकच्छकूड-** पुं० [सुकच्छकूट]

जम्बूद्वीपे सुकच्छदीर्घवैताढ्यस्य स्वनामख्याते कूटे, ठा० २ ठा० १ उ० । जंबू० ।

**सुकड-** त्रि० [सुकृत]

सुष्ठु निर्वर्तिते, उत्त० १ अ० ।

सुष्ठु कृते, उत्त० १ अ० । आचा० । दश० ।

**सुकडक्खनिरिक्खिय-** न० [सुकटाक्षनिरीक्षित]

सुष्ठु नेत्रविकारनिरीक्षणे, तं० । ।

**सुकडिय-** त्रि० [सुकथित]

यथोक्ताग्निपरितापिते, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**सुकण्ह-** पुं० [सुकृष्ण]

कृणिकस्य महाराजस्य सुकृष्णाया अग्रमहिष्याः पुत्रे, नि० ।

**सुकण्हा-** स्त्री० [सुकृष्णा]

स्वनामख्यातायां श्रेणिकाग्रमहिष्याम्, अंत० ।

**सुकप्प-** पुं० [सुकल्प]

ज्ञानदर्शनादिषूपयोगे, पंच० भा० ।

**सुकय-** त्रि० [सुकृत]

सुष्ठु रचिते, उवा० ।

शोभित, आव० म० १ अ० । कल्प० । पन्न० । उव० । रा० । पण्हा० ।

**सुकर-** त्रि० [सुकर]

कर्तुमलं समर्थे, आचा० १ श्रु० ९ अ० १ उ० ।

**सुकरण-** न० [सुकरण]

बवादिकानामेकादशानामन्यस्मिन् शोभनकरणे, पण्हा० २ अ०

**सुकहिय-** त्रि० [सुकथिक]

शोभनो मध्यस्थः कथकः प्रतिपादका यस्य तत् सुकथिकम् ।  
यथार्थज्ञानिभिः प्रतिपादिते, पण्हा०२ अ० ।

**सुकहिय-** त्रि० [सुकथित]

न्यायाबाधितत्वेन कथिते, पण्हा०१ अ० ।

**सुकाल-** पुं० [सुकाल]

सुकाल्या अयं पुत्रः सुकालः । कूणिकमहाराजाग्रमहिष्याः  
सुकाल्या आत्मजे, अंत० ।

**सुकाली-** स्त्री० [सुकाली]

स्वनामख्यातायां कूणिकस्याग्रमहिष्याम्, अंत० ।

**सुकुमारकोमल-** त्रि० [सुकुमारकोमल]

अत्यन्तकोमल, उव० ।

**सुकुमारया-** स्त्री० [सुकुमारया]

कोमलस्पर्शतायाम्, बुह०१ उ०२ ।

**सुकुमाल-** त्रि० [सुकुमार]

अतिकोमले, नाया०१ श्रु०१ अ० ।  
कोमले बुह०१ उ०३ । उत्त० । ठा० । जीवा० ।  
मृदुत्वं गते, न० । भग० ।  
अकर्कशस्पर्शे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० । ठा० । उव० । रा० ।  
अंत० । न० ।  
सुकुमारश्चासौ भद्रश्च भद्रमूर्तिरिति समासो लकारककारौ  
स्वार्थिकौ । भग०१६ श०१ उ० ।  
सुकुमालपाणिपाया । सुकुमारौ कोमलौ पाणी च पादौ च यस्य  
स सुकुमारपाणिपादः । ठा० ९ ठा० ३ उ० । रा० ।  
सुकुमारः स्वरूपेण विकीर्णो व्याकुलचित्ततया केशहस्तो  
धम्मिल्लो यस्याः सा सुकुमाला वा विकीर्णाः केशा हस्तौ च  
यस्याः सा तथा । भग०९ श०३३ उ० ।

**सुकुमालिया-** स्त्री० [सुकुमारिका]

भारते वर्षे चम्पायां नगर्यां सागर दत्तसार्थवाहपुत्र्याम्, एषैव  
परभवे द्रौपदी नाम दारिका जाता नाया०१ श्रु०१६ अ० ।  
स्पर्शेन्द्रिये उदाहृतायां वसन्तपुरराजस्य जितशत्रोर्भार्यायाम्,  
आव०म०१ अ० । आव०चू० । गच्छा० । बुह० । आचा० ।

**सुकुल-** न० [सुकुल]

इक्ष्वाक्यादिवंशे, ठा० ।  
तथा-सुकुले इक्ष्वा-कादिके प्रत्यायातिर्जन्मतो सुलभमिति ।  
इति । ठा० ८ ठा० ३ उ० ।  
सुकुले इक्ष्वाक्यादौ देवल्लोकात् प्रतिनिवृत्तस्याजातिर्जन्म  
आयातिर्वा आगतिः सुकुलप्रत्याजातिः सुकुलप्रत्यायातिर्वा  
तामिति । ठा० ३ ठा० ३ उ० । आचा० । जंबू० ।

**सुक-१ न० [शुक्र]**

सप्तमे धातौ, नाया०१ श्रु०१ अ० ।  
रेतसि, ठा० २ ठा० ३ उ० । वीर्ये, तं० ।

**सुक-२ न० [शुक्र]**

महाशुक्रस्य सप्तमदेवल्लोकस्य देवे, विशेष० ।  
सप्तमदेवल्लोकविमानभेदे, सम० १७ सम० ।  
सप्तमदेवल्लोकस्येन्द्रे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सुकच्छणिया-** स्त्री० [शुष्कच्छणिका]

शुष्कगोमयपिण्डे, अनुत्त० ।

**सुकच्छेवाडिया-** स्त्री० [शुष्कच्छेवाडी]

आतपशुष्कायां वल्यादिफलिकायाम्, छेवाडी नाम वल्यादि-  
फलिका सा च कचिद्देशविशेषे शुष्का सती अतीव शुष्क-  
वस्तूपमानत्वेन वर्ण्यते । जीवा०३ प्रति०४ अधि० । रा० ।

**सुकजलोया-** स्त्री० [शुष्कजलौका]

जलौकाख्यजलजन्तुविशेषस्यास्त्रि, अनुत्त० ।

**सुकड-** न० [सुकृत]

शुभकर्मणि, सम०१४५ सम० ।  
कल्याणविपाके कर्मणि, सूय०२ श्रु०१ अ० ।  
कृते० । सूय०२ श्रु०१ अ० ।

**सुकणिरोह-** पुं० [शुक्रनिरोध]

मैथुनाकरणाद्वीर्यनिरोधे, पंच०चू० ।  
शुक्रनिरोधे चापुरुषत्वं स्यादिति । पंच०चू०२ कल्प० ।

**सुकपक्ष-** पुं० [शुक्लपक्ष]

ज्योत्स्नावति मासार्द्धे, ज्यो० ४ पाहु० ।  
यत्र ध्रुवराहुः चन्द्रविमानमावृत्तं मुञ्चति तेन ज्योत्स्नाधवलितया  
शुक्लः पक्षः स शुक्लपक्षः । जंबू०७ वक्ष० ।

**सुकपक्खिय-** पुं० [शुक्लपाक्षिक]

शुक्लपक्षसंभव, ठा० ।

**सुकपाल-** पुं० [शुक्लपाल]

राजकरग्रहणस्थाने, ठा० ८ ठा० ३ उ०

**सुकपोगल-** पुं० [शुक्रपुद्गल]

रेतसि, ठा० ५ ठा० २ उ० ।

**सुकमास-** पुं० [शुक्लमास]

लघुमासे, बुह०३ उ० ।

**सुकलेस्सा-** स्त्री० [शुक्ललेश्या]

शुचं क्लमयतीति शुक्ला सा चासौ लेश्या च शुक्ललेश्या ।  
लेश्याभेदे, आतु० । सम० । पा० । उत्त० । उवा० ।

**सुकवडिसग-** न० [शुक्रावतंसक]

शुक्रदेवेनाधिष्ठिते विमाने, नि०१ श्रु०१ वर्ग०६ अ० ।

**सुकसोणियसंभव-** त्रि० [शुक्रशोणितसम्भव]

शुक्रं-रेतः शोणितम्-आर्तवं ताभ्यां संभवो येषां ते तथा ।  
वीर्यरजोभ्यामुत्पन्नेषु, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**सुक्राभिजाइय-** पुं० [शुक्राभिजात्य]

शुक्रप्रधाने तथाविध श्रावक, भग० ४ श० ५ उ० ।  
भिन्नमत्सरता कृतज्ञता सदारम्भहितारम्भप्रधाने, भग० ।

**सुक्किय-** त्रि० [सुक्कीत]

सुष्ठु क्रीते, 'सुक्कियं वा सुविक्रियं' सुक्कीतं चेति केनचित्क्रीत  
सत् दर्शितं सत्सुक्कीतमिति न व्यागृणीयात् दश० ७ अ० ।

**सुक्किल्ल-** त्रि० [शुक्ल]

शुक्लवर्णवति, ठा० १ ठा० । आव० म० । जीवा० । पन्न० ।  
सूर० । आचा० । सम० ।  
लघुमासप्रायश्चित्ते, निसि० १ उ० । ठा० ।

**सुक्कीड-** पुं० [सुक्कीड]

सुक्कीडो देवराजानां सुष्ठु अतिशयेन परमरमणीयतया क्रीड्यते  
इति सुक्कीडः । परमक्रीडास्थाने, ज्यो० १० पाहु० ।

**सुक्खदिय-** पुं० [शुक्कदिति]

शोषमुपगते चर्ममयजलाधारभाजनविशेषे, अनुत्त० ।

**सुक्खोदण-** पुं० [शुक्कोदन]

शुष्ककूरे, बुह० ५ उ० ३ ।

**सुखविवाग-** पुं० [सुखविपाक]

पुण्यकर्मफले, सुखानां वा सुखविपाकहेतुत्वात्पापकर्मणां  
विपाकास्ते यत्राभिधेयतया सन्त्यसौ न्यायात्सुखविपाकाः ।  
विपाकश्रुतस्य द्वितीये स्कन्धे, विपा० १ श्रु० १ अ० ।

**सुखित्त-** न० [सुखेत्र]

शोभने क्षेत्रे, द्विगृह्णितदशानां चतुर्थेऽध्ययने, ठा० १० ठा० ३ उ०

**सुग-** पुं० [शुक]

कीर, जीवा० ३ प्रति० ४ । ठा० । पन्न० । जंबू० । नाया० । अणुओ० ।

**सुगइ-** स्त्री० [सुगति]

स्वर्गापवर्गादिकायां गतौ, । ठा० ।  
शोभनगतौ, उत्त० २ ७ अ० । ठा० ।

**सुगइगइ-** स्त्री० [सुगतिगति]

सुगतयः-सिद्धास्तेषां गतिः सुगतिः-गतिः । पञ्चम्यां मोक्षगति,  
आव० म० १ अ० ।

**सुगइगमण-** न० [सुगतिगमन]

सिद्ध्यादिप्राप्ते, ठा० ५ ठा० १ उ०  
स्वर्गावाप्तौ, सूय० १ श्रु० ७ अ० ।

**सुगइगामि-** पुं० [सुगतिगामिन्]

सुगतिं गमयतीति । भवान्तरे ईश्वरत्वेनोत्पत्त्यमाने, ठा० ४ ठा०

**सुगंध-** पुं० [सुगन्ध]

शोभनगन्धे, सूर० २० पाहु० ।

सुरभि, प्रश्न० २ अ०

सुगन्धीनि यानि वरकुसुमानि चूर्णा एतद्व्यतिरिक्तं तथाविधश-  
यनोपचाराश्च तैः कलितं यत्तत्तथा । भग० ११ श० ११ उ० ।

**सुगन्धि-** त्रि० [सुगन्धि]

शोभनो गन्धो यस्येति सुगन्धिः । जीवा० ३ प्रति० ३ ।

परमगन्धोपेते, जीवा० ३ प्रति० ४ । आव० म० ।

परमगन्धिकलिते, जीवा० ३ प्रति० ४ । तं० । पन्न० ।

विशिष्टगन्धादिवासिते, कल्प० १ अधि० । उव० नाया० । भग० ।

**सुगन्धिय-** त्रि० [सुगन्धिक]

परमगन्धोपेते, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

जलरुहविशेषे, नपुं० । पन्न० १ पद ।

**सुगय-** त्रि० [सुगत]

सुम्ये, ठा० । अणुओ० ।

**सुगिम्ह-** पुं० [सुग्रीष्म]

चैत्रपौर्णमास्याम्, ठा० ४ ठा० २ उ० । आव० ।

**सुगुत्त-** पुं० [सुगुत्त]

कौशाम्बीनगरीराजस्य शतानीकस्यामात्ये, आव० म० १ । कल्प०

**सुगुरु-** पुं० [सुगुरु]

शोभनश्चासौ गुरुश्चेति सुगुरुः । सदाचारगुरौ, दश० ।

**सुगीव-१** पुं० [सुग्रीव]

सुन्दरया ग्रीवया कलिते स्वनामख्याते नगरभेदे, यत्र बलभद्र  
राजभार्याया मृगावत्या मृगापुत्र आसीत् । उत्त० १९ अ० ।

**सुगीव-२** पुं० [सुग्रीव]

भूतानन्दनामकुमारेन्द्रस्य अश्वानीकाधिपतौ, ठा० ५ ठा० १ उ०

**सुगीव-३** पुं० [सुग्रीव]

भविष्यतो नवमवासुदेवस्य प्रतिशत्रौ, सम० ।

नवमतीर्थकरस्य श्रीशीतलनाथस्य पितरि, सम० । आव० ।

**सुघरा-** स्त्री० [सुगृहा]

वयापक्षिण्याम्, पातालवृक्षादिषु, बुह० १ उ० ३ ।

सुघरा नामं सउनिया भन्नति । आव० चू० १ अ० ।

चटकिकाविशेषे, विशे० । आव० म० । नं० ।

**सुघोष-१** पुं० [सुघोष]

स्वनामख्यातायां शक्रघण्टायाम्, आव० म० १ अ० ।

देवप्रसिद्धे घण्टाविशेषे, जीवा० ३ प्रति० १ अधि० २ उ० ।

**सुघोष-२** पुं० [सुघोष]

शक्रेन्द्रस्य हरिनामदेवः सुघोषघण्टापालकः । भग० १६ श० २  
उ० । रा० ।

**सुघोष-३ पुं० [सुघोष]**

जम्बूद्वीपे भरतखण्डे अतीतायामुत्सर्पिण्यां जति स्वनामख्याते  
षष्ठ कुलकरे, ठा० ७ ठा० ३ उ० । सम० ।

**सुघोष-४ पुं० [सुघोष]**

तृतीय देवलोकस्थे स्वनामख्याते विमाने, सम०६ सम० ।

**सुघोष-५ पुं० [सुघोष]**

ऋषभदेवस्य पञ्चसप्ततितमे पुत्रे, कल्प०१ अधि०७ क्षण ।

**सुघोषा- स्त्री० [सुघोषा]**

गीतरतिगीतयशसोर्गन्धर्वेन्द्रयोरग्रमहिष्योः, भग० १०श० ५उ०  
। ठा०

**सुचंद- पुं० [सुचन्द्र]**

जम्बूद्वीपे ऐरवते वर्षे अस्यामवसर्पिण्यां जाते द्वितीयतीर्थकरे,  
सम० ।

**सुचरिय- न० [सुचरित]**

सदाचरणे, कल्प०१ अधि०६ क्षण । तं० । पण्हा० ।  
सुष्ट्वाचरिते, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**सुचिण्ण- त्रि० [सुचीर्ण]**

सुष्ठु चीर्णम् सुचीर्णम् । सूय०१ श्रु०१३ अ० ।  
तीर्थकरदानादिके कर्मणि, ठा० ४ ठा० ३ उ० ।  
सम्यक्प्रकरणे कृते संयमतपःप्रमुख, उत्त० १३ अ० । जीवा०

**सुचिण्णकम्म- न० [सुचीर्णकर्मन्]**

सुचरितायां दानादिक्रियायाम्, उवा०२ अ० ।

**सुचिण्णफल- त्रि० [सुचीर्णफल]**

सुचरितं सुचरितहेतुकत्वात्पुण्यकर्मबन्धादि तदेव फलं येषां  
तानि । तथा । शुभफलेषु, उव० ।  
सुचरिता क्रिया दाना-दिकाः सुचीर्णफलाः-पुण्यफला भवन्ति ।  
उवा०२ अ० ।

**सुचिरकोहण- त्रि० [सुचिरक्रोधन]**

चिरं क्रोधकरणशीले, उत्त० २७ अ० ।

**सुचोइय- त्रि० [सुचोदित]**

आचार्यादिप्रेरिते, उत्त०१ अ० ।

**सुचोयय- त्रि० [सुचोदक]**

शोभनप्रेरयितरि गुर्वादौ, उत्त०१ अ० ।

**सुच्छय- त्रि० [सुच्छद]**

शोभनप्रच्छन्नपटे, उव० ।

**सुच्छिण्ण- त्रि० [सुच्छित्र]**

सुष्ठवाच्छित्रे शाकपत्रादौ, उत्त०१ अ० । दश० ।

**सुच्छेत्ता- स्त्री० [सुक्षेत्रा]**

ग्राम, यत्र छद्मस्थविहारेण गतो भगवान् प्रियं पृष्टः । आव०म०१

सुक्षेत्रायां ग्रामे वीरसहविहतो गोशालो विटरूपं विकुर्वितवान् ।  
आव०म० १

**सुजंपिय- न० [सुजल्पित]**

आशीर्वचने, भग०११ श०२१ उ० ।

**सुजया- स्त्री० [सुजया]**

राजगृहे नगरे श्रेणिकस्य राज्ञः अग्रमहिष्याम्, अंत० ।

**सुजस- पुं० [सुयशस्]**

ऋषभपूर्वभवजीवस्य वज्रनाभस्य सारथि, श्रेयांसपूर्वभवजीवे,  
आव०चू०१ अ० ।  
ऋषभदेवस्य सप्तत्रिंशतितमे पुत्रे, कल्प०१ अधि०७ क्षण ।

**सुजसा-१ स्त्री० [सुयशम्]**

सुदर्शनपुरवास्तव्यस्य शिशुनागस्य भार्यायाम्, आव० ४ अ० ।  
आव०चू० ।

**सुजसा-१ स्त्री० [सुयशम्]**

जम्बूद्वीपे भारतवर्षेऽस्यामवसर्पिण्यां जातस्य धर्मतीर्थकरस्य  
मातरि, सम० आव० ।

**सुजाइ- पुं० [सुजाति]**

ऋषभदेवस्य त्रिनवतितमे पुत्रे, कल्प०१ अधि०७ ।

**सुजाय- त्रि० [सुजात]**

सुनिष्पन्न, नाया०१ श्रु० । उव० । ठा० । पण्हा० । जंबू० । सूर० ।  
परिपाकागते, जंबू०२ वक्ष० ।  
शोभनं जातं यस्य स सुजातः । विशुद्धमणिकनकरत्नमूल्य-  
द्रव्यजनिते जन्मदोषरहिते, जंबू०४ वक्ष० । रा० ।

**सुजायदंत- त्रि० [सुजातदन्त]**

सुजाता जन्मदोषरहिता दन्ता येषां ते सुजातदन्ताः । जीवा० ३  
प्रति० ४ अधि० । जंबू० ।  
सम्यग्निष्पन्नदर्शनेषु, उव० ।

**सुजायपास- त्रि० [सुजातपार्श्व]**

सुनिष्पन्नपार्श्वे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

पार्श्वगुणोपेतपार्श्वे, पण्हा०४ अ०

**सुजायपीवरंगुलिय- त्रि० [सुजातपीवराङ्गुलिक]**

सुजाताः सुनिष्पन्नाः पीवरा अङ्गुलिकाः पदाग्रावयवा येषां ते  
तथा । सुनिष्पन्नचर-णाग्रेषु, तं० ।

**सुजाया- स्त्री० [सुजाता]**

भूतानन्दस्य नागकुमारस्याग्रमहिष्याम्, भग०१० श०५ उ० ।

**सुजेष्ठा- स्त्री० [सुज्येष्ठा]**

चेटकराजदुहितरि, आव०४ अ० । आव० ।  
चेटकमहाराजदुहिता सुज्येष्ठाभिधाना वैराग्येण प्रव्रजिता । ठा०  
९ ठा० ३ उ० ।

**सुजोसिय-** त्रि० [सुज्ञोषित]

सुष्ठु क्षिप्त, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ० ।

**सुज्ज-** पुं० [सूर्य]

रवि, सम०९ सम० ।

रूप्यविशेषे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**सुज्जकंत-** न० [सूर्यकान्त]

स्वनामख्याते ब्रह्मलोकविमाने, सम०९ सम० ।

**सुज्जसिरी-** स्त्री० [सूर्यश्री]

सूर्यशिवस्य दुहितरि, महानि० ।

**सुज्जसिव-** पुं० [सूर्यशिव]

स्वनामख्याते अवन्तीवास्तव्ये धिग्रातौ, महानि० २ चू० ।

**सुज्जावत्त-** न० [सूर्यवर्त]

ब्रह्मलोकस्य स्वनामख्याते विमाने, सम० ९ सम० ।

**सुज्ज-** त्रि० [शोध्य]

शोधनीये, आव०४ अ० ।

**सुज्ज्ञाड्य-** न० [सुध्यात]

सुष्ठु सुविधिना गुरुसकाशाद् व्याख्यानेनार्थतः श्रुत्वा ध्यात-  
मनुपेक्षितं श्रुतमिति गम्यं सुध्यातम् । सुष्ठु अनुपेक्षिते, ठा० ३  
ठा० ४ उ० ।

**सुठिच्चा-** अव्य० [सुस्थाय]

सुष्ठु स्थित्वेत्यर्थे, सूय०१ श्रु०१४ अ० ।

**सुठिय-** त्रि० [सुस्थित]

शोभनं स्थितः सुस्थितः । सुव्यवस्थिते, पंच०चू०२ ।

लवणसमुद्राधिपतिदेवे, आव०४ अ० ।

मुहूर्त्तेभेदे, गणि० । ठा० । नाया० । जीवा० ।

आर्यसुहस्तिशिष्ये कोटिकगच्छीयाचार्ये, गच्छा०३ अधि० ।

पाटलिपुत्रे नगरे चन्द्रगुप्तो राजा चाणक्यो मन्त्री सुस्थित  
आचार्यः । निसि०१३ उ० । कल्प० ।

सुष्ठु अतीव चावृते, बुह०१ उ०३ ।

श्रान्त बुह०१ उ०३ ।

सुविहितक्रियानिष्ठे, कल्प०२ अधि०८ क्षण० ।

**सुठियप्प-** पुं० [सुस्थितात्मन्]

शोभनेन प्रकारेण आगमनीत्या स्थित आत्मा येषां ते सुस्थिता-  
त्मानः । सुविहितेषु, दश०३ अ० ।

**सुठिया-** स्त्री० [सुस्थिता]

सुस्थितस्य लवणसमुद्राधिपते राजधान्याम्, जीवा०३ प्रति०४

**सुहु-** अव्य० [सुष्ठु]

अतिशये, पण्हा० ।

अतीवार्थे, आव०४ अ० । तं० ।

शोभने, बुह०१ उ०३ प्रति० ।

**सुहुतरमायामा-** स्त्री० [सुष्ठुतरायामा]

गन्धारग्रामस्य षष्ठ्यां मूर्छनायाम्, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**सुहुयवर-** त्रि० [सुष्ठुतर]

अतिशोभने, आव०३ अ० । आव०म० ।

**सुढिय-** [देशी]

श्रान्ते, बुह० १ उ०३ ।

**सुण-** धा० [श्रु]

श्रवणे, सुणइ । शृणोति । ठा० ।

**सुणअ-** पुं० [शुनक]

कुक्कुरे, आव० ४ अधि० ।

**सुणइ-** त्रि० [सुनति]

शोभना नतिरवनतावसाने यस्मिन्नसौ सुनतिः शोभननतिके,  
जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**सुणंद-** पुं० [सुनन्द]

ऋषभदेवस्य द्वाविंशतितमे पुत्रे, कल्प०१ अधि०७ । आव०म० ।

चम्पानगरीवास्तव्ये स्वनामख्याते श्रावके, । उत्त० ।

पार्श्वनाथस्य स्वनामख्याते श्रावके, उत्त०२३ अ० ।

भविष्यतः सप्तमतीर्थकृतः पूर्वभवजीवे, सम० ।

सप्तमदेवलोकस्य विमानभेदे, नपुं० । सम०१५ सम० ।

द्वादशतीर्थकरस्य भिक्षादायके, । सम० ।

**सुणंदा-** स्त्री० [सुनन्दा]

पार्श्वनाथस्वामिनः प्रवर्तिन्याम्, आव०म०१ अ० । कल्प० ।

बाहुबलिसुन्दर्योर्मातरि ऋषभदेवभार्यायाम्, आव०चू०१ अ० ।

भूतानन्दनागकुमारेन्द्रस्य लोकपालानामग्रमहिषि, ठा० ४ ठा०

वज्रस्वामिना भातरि धनगिरेर्भार्याया । आव०म० । आव०चू० ।

तृतीयचक्रिणां मघवतो भार्यायाम्, सम० ।

**सुणंदि-** स्त्री० [सुनन्दि]

सत्समृद्धिके, घोषे, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**सुणक्खत्त-** न० [सुनक्षत्र]

पुष्यादौ शोभने नक्षत्रे, पण्हा० २ अ०

काकन्दीनगरीवास्तव्यभद्रायाः सार्थवाह्याः पुत्र, । अनुत्त० ।

**सुणक्खत्ता-** स्त्री० [सुनक्षत्रा]

पक्षस्य द्वितीयायां तिथि, कल्प०१ अधि०६ । जंबू० । चंद० ।

**सुणग-** पुं० [सुनक]

कौलेयक, पण्हा० १ अ० । जंबू० । तं० । आचा० । ठा० ।

उत्त० । अणुओ० ।

मृगदेशे, पत्र०११ पद ।

**सुणण-** न० [श्रवण] श्रो

त्रेन्द्रियविषयीकरणे ठा० ८ ठा० ३ उ० ।



**सुणयण-** पुं० [सुनयन]

शोभने नयने यस्य सः सुनयनः । सुलोचने, आव०म० १ ।

**सुणह-** पुं० [शुनक]

कुक्कुरे, पिंड० ।

**सुणहमड-** पुं० [शुनकमृत]

मृते श्वदेहे, जीवा०३ प्रति०१ अधि०२उ०

**सुणासीर-** पुं० [सुनासीर]

इन्द्र, उत्त० २५ ।

**सुणाइ-** पुं० [सुनाथ]

ऋषभदेवस्य पश्चनवतितगे पुत्रे, कल्प० १ अधि०७ ।

अपरकङ्कानगरीराजस्य पद्मनाभस्य पुत्रे, नाया० १ श्रु०१६ अ० ।

**सुणिउण-** पुं० [सुनिपुण]

सुसूक्ष्मे, सुष्ठु निश्चितगुणे च । सम० प्र० सम० ।

**सुणिष्ठिय-** पुं० [सुनिष्ठित]

सुष्ठुनिष्ठितम् अतिशयेन रस प्रकषपर्वन्तात्मिका निष्ठां गते,

उत्त०१ अ० । दश० ।

**सुणिम्मिय-** त्रि० [सुनिर्मित]

सुष्ठु-अतिशयेन निर्मितं सुनिर्मितम् । सुविरचिते, जीवा०३

प्रति०४ अधि० । कल्प० ।

**सुणिय-** अव्य० [श्रुत्वा]

आकर्ण्येत्यर्थे, आचा०१ श्रु०५ अ०३ उ० । पत्र० । आव०म० ।

**सुणिरुद्धदंसण-** त्रि० [सुनिरुद्धदर्शन]

सुष्ठु-अतिशयेन निरुद्धम् आवृतं दर्शनं सम्यगवबोधरूपं यस्य

स तथा । दर्शनमोहनीयकर्मणे ज्ञानदर्शनावरणकर्मणोर्वोदये

वर्तमाने, । सूय०१ श्रु०२ अ०३उ०

**सुणिविष्ट-** त्रि० [सुनिविष्ट]

सुखोपविष्ट, गच्छा०२ अधि० ।

**सुणासंत-** त्रि० [सुनिशान्त]

परिचित, आचा०१ श्रु०८ अ०१ उ० ।

श्रुते, गते च । आचा०२ श्रु०१ चू०२ अ०२ उ० ।

**सुणिसिय-** त्रि० [सुनिशित]

अतितेजिते, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

अतिनिशिते, पण्हा०३ अ०

उज्ज्वालिते, दश०१० अ०

**सुणी-** स्त्री० [शुनी]

कुक्कुर्याम्, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ० । उत्त० ।

**सुणेवत्थ-** त्रि० [सुनेपथ्य]

सुप्रावृते, बुह०३ उ० ।

**सुण्ण-** न० [शून्य]

शुनः संप्रसारणं दीर्घत्वमिति वचनतो यति प्रत्यये संप्रसारणे दीर्घत्वे च शून्यम् । उद्वसे, उत्त०३ अ० । विशेष०

**सुण्णगिह-** न० [शून्यगिह]

शून्यागारे, निसि० ८ उ० । सूय० । आव० ।

**सुण्णागार-** न० [शून्यागार]

शून्यमुद्वसं तच्च तदाकारं शून्यागारम् । उत्त०२ अ० ।

शून्यगृहे, कल्प०१ अधि०५ । पण्हा० । उत्त० । ठा० । सूय० ।

**सुण्णागारगय-** त्रि० [शून्यागारगत]

शून्यगृहव्यवस्थिते, सूय०१ श्रु० अ०२ उ० ।

**सुतवसिय-** न० [सुतपसित]

सुष्ठु इह लोकस्य प्रशंसारहितत्वेन तपसितम् तपस्यनुष्ठानं

सुतपसितम् । स्वनुष्ठिते, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

**सुतवस्सि-** पुं० [सुतपस्विन्]

सुष्ठु-शोभनं बाह्याभ्यन्तरं तपोऽस्यास्तीति सुतपस्वी । सूय०१

श्रु०९ अ० ।

सुविकृष्टतपोनिस्तप्तदेहे सूय०१ श्रु०१० अ० । सम० ।

**सुतारा-** स्त्री० [सुतारा]

शान्तिजिनस्य मातरि, उत्त०१८ अ० ।

**सुतितिक्ष-** त्रि० [सुतितिक्ष]

सुखेन तितिक्ष्यते-सह्यते इति सुतितिक्षम् । तितिक्षयितुं सुशक्ये

परीषहादिके, ठा० ५ ठा० १ उ०

**सुतरि-** त्रि० [स्वप्ति]

स्वप्नशीले, बुह०१ उ०२ ।

**सुतिहि-** स्त्री० [सुतिथि]

पञ्चानां नन्दादीनामन्यतरस्यां तिथि, पण्हा० २ अ०

**सुत्त-१** त्रि० [सुप्त]

निद्रायुक्त, उत्त०४ अ० ।

बाल्यादव्यक्तचेतने, नाया०१ श्रु०१ अ० । उव० ।

स्वपनं सुप्तम् । निद्रायाम्, नपुं० । बुह०१ उ०१ ।

मदिराखोले देशविशेषप्रसिद्धे द्रव्यविशेषे च । बुह०५ उ० ।

**सुत्त-२** न० [सूत्र]

अर्थानां सूचनात् सूत्रम् । अणुओ० । विशेष० ।

तत्तदर्थसूचनात् सूत्रम् । औणादिकशब्दव्युत्पत्तिः । वव०१ उ० ।

आव०म० । जीत० ।

सर्वद्रव्यपर्यायनयाद्यर्थसूचनात्सूत्रम् । ठा० ४ ठा० १ उ० ।

आगम, ठा० ४ ठा० । बुह० ।

प्रवचन, सूय० १ श्रु०१४ अ० । विशेष० ।

**सुत्तक-** न० [सूत्रक]

कटीसूत्रके, पण्हा०४ अ०

**सुत्तकड-** न० [सूत्रकृत]

सूत्रानुसारेण तत्त्वावबोधः क्रियते अस्मिन्निति। स्वनामख्याते द्वितीयेऽङ्गे, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ०।

**सुत्तकप्प-** पुं० [सूत्रकप्प]

सूत्राध्ययनसामाचार्याम्, पंच०भा०।

**सुत्तकप्पिय-** पुं० [सूत्रकल्पिक]

सूत्रसामाचारीज्ञातरि, बुह०।

**सुत्तणिवाय-** पुं० [सूत्रनिपात]

सूत्रावतारे, बुह०१ उ०२।

**सुत्तत्थ-** पुं० [सूत्रार्थ]

सूत्रं च अर्थश्च निर्युक्तिभाष्यसंग्रहवृत्तिचूर्णपञ्जिकादिरूप इति सूत्रार्थो। शब्दवाच्ययोः, सम० ६ सम०। वव०।

**सुत्तत्थकप्पिय-** पुं० [सूत्रार्थकल्पिक]

स्वार्थतदुभयसामाचारीज्ञातरि, बुह०।

**सुत्तत्थगहियपेयाल-** त्रि० [सूत्रार्थगृहीतपेयाल]

सूत्रार्थयोगृहीतं पेयालं-परिमाणं येन स सूत्रार्थगृहीतपेयालः। सम्यग्विनिश्चित-सूत्रार्थे, वव० ३ उ०।

**सुत्तत्थतदुभयविद-** पुं० [सूत्रार्थतदुभयविद]

सूत्र-अर्थ-तदुभयं च तच्च तत्सूत्रार्थलक्षणम्, उभयं च सूत्रार्थ तदुभयानि विदन्तीति सूत्रार्थतदुभयविदः। सूत्रचिन्तायां अर्थ-चिन्तायाम् तदुभयचिन्तायां तदुभयस्य ज्ञातरि वव० १ उ०।

**सुत्तत्थपडिबद्ध-** त्रि० [सूत्रार्थप्रतिबद्ध]

सूत्रार्थयोः प्रतिबद्धः सूत्रार्थप्रतिबद्धः। गृहीतसूत्रार्थे, निसि०१०

**सुत्तत्थरूवणा-** स्त्री० [सूत्रार्थप्ररूपणा]

सूत्रार्थतदुभयानां कथने, सुतं वा अत्यं वा तदुभयं वा परूवेजा कुलगणसंघवज्जो। महानि० १ चू०।

**सुत्तत्थभासय-** पुं० [सूत्रार्थभाषक]

सूत्रार्थं प्रवचनार्थं भाषते वक्ति इति सूत्रार्थभाषकः। यथाव-स्थितागमार्थप्रज्ञापके सूत्रार्थ-तदुभयस्य च ज्ञापके, पंच०चू०।

**सुत्तत्थविसारय-** पुं० [सूत्रार्थविशारद]

सूत्रार्थयोर्विशारदः सूत्रार्थविशारदः। वव० ३ उ०। सम्यक्सूत्रार्थतदुभयकुशले, वव०२उ०। पंच०भा०। पंच०चू०। सूत्रस्यार्थस्य तदुभयस्य च ज्ञापके, निसि० १ उ०।

**सुत्तदोस-** पुं० [सूत्रदोष]

द्वात्रिंशत्सूत्रदोषे, विशे०। अणुओ०।

**सुत्तधर-** पुं० [सूत्रधर]

सूत्रमात्रपाठके, ठा० ४ ठा० १ उ०।

**सुत्तपरिकुट्ट-** त्रि० [सूत्रपरिकुष्ट]

आगमनिषिद्धे, पण्हा०३ अ०।

**सुत्तपेढिया-** स्त्री० [सूत्रपीठिका]

निशीथकल्पव्यवहारप्रथमपीठिकागाथारूपायां पीठिकायाम्, वव०१ उ०। निसि०।

**सुत्तफासियणिज्जुत्ति-** स्त्री० [सूत्रस्पर्शिकनिर्युक्ति]

सूत्रं स्पृशतीति सूत्रस्पर्शिका, सा च निर्युक्तिश्चेति सूत्रस्पर्शिक-निर्युक्तिः। सूत्र-व्याख्याने, विशे०। आव०म०।

**सुत्तफासियणिज्जुत्तिअणुगम-** पुं० [सूत्रस्पर्शिकनिर्युक्तयनुगम]

सूत्रावयवाना नयैः साक्षेपपरिहारमर्थकथेन, आव०चू० १। अणुओ०।

**सुत्तबंधन-** न० [सूत्रबन्धन]

सूत्रमये मत्स्यादिबन्धेन, विपा०१ श्रु०८ अ०।

**सुत्तभावणा-** स्त्री० [सूत्रभावना]

सूत्रतत्त्वपयालाचन, बुह०।

**सुत्तमभणिय-** न० [सूत्राभणित]

मकारस्याऽलाक्षणकत्वात् सूत्राभणितम्। सूत्राननुज्ञाते सर्वथा-गमनिषिद्धे स्त्रीकरस्पर्शादिके, गच्छा० २ अधि०।

**सुत्तयर-** त्रि० [सूत्रकर]

गणधरे गणधररचितत्वात् सूत्र। सूय० १ श्रु०१ अ०१ उ०। नि०

**सुत्तरज्जुग-** पुं० [सूत्ररज्जुक]

कार्पासिकमये रज्जो, उवा०७ अ०।

**सुत्तरुइ-** स्त्री० [सूत्ररुचि]

सूत्रे-आगमे रुचिः-सूत्ररुचिः। आगमतत्त्वश्रद्धान्, उत्त०२८ अ०

**सुत्तविणय-** पुं० [सूत्रविनय]

सूत्रवाचनादिके, दशा०।

**सुत्तहार-** पुं० [सूत्रधार] वर्द्धकि, ठा० १० ठा० ३ उ०।

**सुत्ताणुगम-** पुं० [सूत्रानुगम]

सूत्रव्याख्याने, अणुओ०। सूत्रानुगमरूपे पदच्छेदरूपे चानुगमे, आचा०१ श्रु०१ अ०१ उ०। उत्त०। आव०चू०।

**सुत्तालावग-** पुं० [सूत्रालापक]

श्रुतं मे आयुष्मन्नित्यादिषु सूत्रपदेषु, ठा० १ ठा०।

**सुत्तालावगणिक्खेण-** पुं० [सूत्रालापकनिक्षेप]

श्रुतं मे आयुष्मन्नित्यादीनां सूत्रपदानां नामादिन्यासे, ठा० १ ठा०

**सुत्तिमई-** स्त्री० [सूक्तिमती]

वेदिजनपदराजधान्याम्, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०।

**सुत्तिय-** त्रि० [सौत्रिक]

सूत्रक्रयविक्रयकारिणी, वव०१ उ०।

**सुत्तिय-** त्रि० [सूत्रित]

सूत्रेण मुख्यतयोपात्त, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ०।

**सुत्तिवत्तिया-** स्त्री० [सूक्तिप्रत्यया]

स्थविरादुतस्वलिसहात्रिर्गतस्य उत्तरबलिसहगणस्य द्वितीय  
शाखायान् कल्प०२ अधि०८ क्षण ।

**सुदंसण-१** पुं० [सुदर्शन]

शोभनं जम्बूनदमयतया रत्नबहुलतया च मनोनिवृत्तिकरं दर्शनं  
यस्यासौ सुदर्शनः । मेरुपर्वत, चंद०४ पाहु० । सूय० । जंबू० । सूर०

**सुदंसण-२** पुं० [सुदर्शन]

चम्पानगरीवास्तव्ये स्वनामख्याते श्रावक, आव०चू०५ अ० ।

**सुदंसणकूड-** न० [सुदर्शनकूट] पाश्चात्यरुक्कवरपर्वतस्य अष्टमे कूटे  
ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सुदंसणपुर-** न० [सुदर्शनपुर]

मालवदेशीये स्वनामख्याते नगरे, उत्त०९ अ० ।

सुदर्शनपुरे शिशुनागो नाम गृहपतिः । आव०४ अ० ।

**सुदंसणा-** स्त्री० [सुदर्शना]

शोभनं दर्शनं दृश्यमानतया यस्याः नयनमनोहारित्वात्, सा  
सुदर्शना । जम्बूनां सुदर्शनायाम्, कल्प०१ अधि०७ । जीवा० ।

ठा० । जंबू० । पण्हा० ।

पृथ्वीपरिणामे उत्तरकुरुषु जम्बूवृक्षे, सम० ।

**सुदाढ-** पुं० [सुदंष्ट्र]

स्वनामख्याते नागकुमारे, यः पूर्वभवे सिंहत्वे मारितः वीर-  
जिनेन्द्रं गङ्गां नावा तरन्तमुपसृष्टवान् कम्बलशम्बलाभ्यां  
निवारितः । आव०चू०१ अ० ।

नागो नागकुमारः सुदंष्ट्रनामा सिंहजीवो भगवत उपसर्गं  
कर्तुमारब्धवानिति । आव० म०१ अ० । आव०क० । निसि० ।

**सुदाम-** पुं० [सुदाम]

जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे अतीतायामुत्सर्पिण्यां जाते कुलकरभेदे,  
ठा० ७ ठा० ३ उ० । सम० ।

**सुदिट्ट-** त्रि० [सुदृष्ट]

सम्यग्दृष्टे, उत्त०१२ अ० । ठा० ।

अतीन्द्रियार्थदर्शिभिः दृढमपवर्गादिहेतुतयोपलब्धे, पण्हा०२ अ०

**सुदिट्टि-** स्त्री० [सुदृष्टि]

सुशब्दः प्रशंसायाम् । शोभना दृष्टिः सुदृष्टिः आव०म०१ अ० ।  
सम्यक्त्वे, विशेषे

**सुदीहनीहारी-** त्रि० [सुदीर्घनिर्हार्दिन्]

अहस्वप्रतिरवे, पण्हा०३ अ०

**सुदुक्कर-** त्रि० [सुदुष्कर]

सुतरां दुष्करे, उत्त०११ अ० ।

**सुदुत्तर-** त्रि० [सुदुस्तर]

दुःखोत्तार्ये, सम०१४५ सम० ।

**सुदुल्लह-** त्रि० [सुदुर्लभ]

अतिशयदुरापे, उत्त०१ अ० । विपा०

**सुदेशिय-** त्रि० [सुदेशित]

पर्षदि नानाविधप्रमाणैरभिहिते, पण्हा०१ अ० ।

**सुहेउं-** अव्य० [सूदयितुम्]

विनाशयितुमित्यर्थे, निसि०१० उ० ।

**सुधोययर-** त्रि० [सुधौततर]

सुविशोधिते, भग०६ श०१ उ० ।

**सुद्ध-१** त्रि० [शुद्ध]

अवदाते, सूय०१ श्रु०१४ अ० ।

निष्कलङ्के, आव० ०६ अ० । सूय० ।

शुद्धादिना उज्ज्वले, कल्प०१ अधि०३

विमले, जीवा०३ प्रति०१ अधि०२ उ० ।

**सुद्ध-२** त्रि० [शुद्ध]

क्षण निर्दोषे, सूय०१ श्रु०११ अ० ।

कषायकालुष्यरहिते, उत्त० ३ अ० ।

**सुद्ध-३** त्रि० [शुद्ध]

केवले, विशेषे ।

जात्यादिना निर्मलज्ञानादिगुणतया कालापेक्षया वा शुद्धे, ठा०  
४ ठा० १ उ० ।

**सुद्ध-४** त्रि० [शुद्ध]

उद्गमादिदोषशुद्धे निरुपाधौ, सूय०१६ अ० ।

अलेपकृते, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

**सुद्ध-४** त्रि० [शुद्ध]

**सुद्ध-५** त्रि० [शुद्ध]

पापानुबन्धरहिते, आचा०१ श्रु०४ अ०१ उ० ।

भक्तदोषवर्जिते, सूर०२० पाहु० ।

पूर्वोक्तवचनदोषरहिते, पण्हा०१ अ० ।

**सुद्धगंधारा-** स्त्री० [शुद्धगन्धारा]

गान्धारग्रामस्य चतुर्थ्यां मूर्छनायाम् ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**सुद्धणय-** पुं० [शुद्धनय]

निश्चयनय, पंच०चू०५ ।

**सुद्धदंत-१** पुं० [शुद्धदन्त]

स्वनामख्याते अन्तर्द्वीपे, तत्स्थे मनुष्ये च ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

**सुद्धदंत-२** पुं० [शुद्धदन्त]

राजगृहे श्रेणिकस्य राज्ञो धारण्याख्यायां भार्यायां जाते पुत्रे, अनुत्त०  
वर्ग०५ अ० ।

**सुद्धपउम-** न० [शुद्धपद्म]

कुसुमान्तरवियुक्ते पुण्डरीके, उवा०१अ०

**सुद्धपरिहार-पुं० [शुद्धपरिहार]**

यत् विशुद्धस्सन् पञ्चयाममनुत्तरं धर्मं परिहरति परिहारशब्दस्य परिभोगेऽपि वर्तमानत्वत्स सुद्धपरिहारः। यदि वायो विशुद्ध-कल्पव्यवहारः क्रियते स सुद्धपरिहारः शुद्धश्चासौ परिहारश्च सुद्धपरिहारः। परिहारभेदे, वव० १ उ०।

जो सो वि सुच्चा पंचयामं अणुत्तरं धम्मं परिहरइ । नि०सि० ।

**सुद्धप्प- त्रि० [शुद्धात्मन]**

शुद्ध आत्मा-अन्तरात्मा यस्य सः। निर्मलान्तःकरणे, सूय० १ श्रु० १५ अ०।

**सुद्धप्पवेस- त्रि० [शुद्धप्रवेश्य]**

शुद्धानि च तानि प्रवेश्यानि च शुद्धप्रवेश्यानि। राजसभाप्रवेशो-चित्तेषु, उव०।

**सुद्धबोहप्पसर- पुं० [शुद्धबोधप्रसर]**

प्रधानमत्यवकाशे, जीवा० ११ अधि०।

**सुद्धभाव- पुं० [शुद्धभाव]**

सुस्वभावे, पण्हा० ५ अ०।

**सुद्धवाय- पुं० [शुद्धवात]**

वायुजीवभेदे, शुद्धा वायवः स्तोकं स्तोकं प्रयान्ति। उत्त० ३६ मन्दस्तिमितवायौ, भग० १५ श०।

वस्तीत्यादिगत इत्यन्ते। जीवा० १ प्रति०।

शीतकालादिषु शुद्धः वातः। आचा० १ श्रु० १ अ० ७ उ०।

**सुद्धवायुण्योग- पुं० [शुद्धवागनुयोग]**

शुद्धा अनपेक्षितवाक्यार्थतया वाक्-वचनं सूत्रमित्यर्थस्तस्या अनुयोगोविचारः शुद्धवागनुयोगः। सूत्रविचारे, अणुओ०।

**सुद्धवियड- न० [शुद्धविकट]**

उष्णोदके, कल्प० ३ अधि० ९। ठा०।

वर्णान्तरादिप्राप्ते शुद्धजले, गच्छा० २ अधि०।

**सुद्धसज्जा- स्त्री० [शुद्धशय्या]**

षड्जग्रामस्य सप्तम्यां मूर्छनायाम्, ठा० ७ ठा० ३ उ०।

**सुद्धसुत्त- त्रि० [शुद्धसूत्र]**

शुद्धमवदातं यथावस्थितवस्तुप्ररूपणतोऽध्ययनतश्च सूत्रं-प्रवचनं यस्यासौ शुद्धसूत्रः। यथावस्थितसूत्रप्ररूपके, सूय० २ श्रु० १४ अ०।

**सुद्धागणि- पुं० [शुद्धाग्न]**

अयःपिण्डानुगतेऽग्नौ, विद्युतादिरूपे वा। जीवा० ३ प्रति० १ अधि० २ उ०।

**सुद्धादान- त्रि० [शुद्धादान]**

शुद्धमवदातमादानं चारित्रं यस्य सः। निर्मलचारित्रे, सूय० १ श्रु० १६ अ०।

**सुद्धापानय- न० [शुद्धापानक]**

हस्तस्पर्शरूपे अपानकभेदे, भग० १५ श०।

**सुद्धेसण- त्रि० [शुद्धैषण]**

दशैषणादोषरहिते आहारादौ, आचा० १ श्रु० ६ अ० २ उ०।

**सुद्धेसणिय- त्रि० [शुद्धैषणिक]**

सुद्धैषणा-शङ्कदिदोषपरिहारतः पिण्डग्रहणं तद्वांश्च शुद्धैषणिक। भग० २५ श० ७ उ०।

शुद्धस्य वा निर्व्यञ्जनस्य कूरादेरेषणा येषामस्ति ते। सूय० २ श्रु० तथाविधाभिग्रहात् एषणाशुद्धग्राहके, उव०। ठा०।

**सुद्धोदन- न० [शुद्धोदन]**

शूपशाकादिवर्जिते ओदने, भग० २ श० १ उ०।

**सुद्धोदय- न० [शुद्धोदक]**

अन्तरिक्षसमुद्धवे नद्यादिगते च जले, पन्न० १ पद। स्वभावनिर्मलोदके, कल्प० १ अधि० ३ क्षण०।

स्वाभाविके जले, नाया० १ श्रु० १ अ०।

तडागसमुद्रनदीह्रदावटादिगते जले, आचा० १ श्रु० १ अ० ३ उ०।

**सुद्धोयणि- पुं० [शुद्धोदनि]**

शाक्यसिंहेनामके गौतमगोत्रोत्पन्ने बौद्धे, आचा० १ श्रु० २ अ० ५ उ०। सूय०।

**सुधीरधम्म- त्रि० [सुधीरधर्मन्]**

धीः-बुद्धिस्तया राजते इति धीरः, धीरः सुप्रतिष्ठितो धर्मः श्रुतचारित्राख्यो येषां ते सुधीरधर्माणः श्रुतचारित्राख्यधर्मवत्सु। सूय० १ श्रु० १३ अ०।

**सुपइट्ठ-१ न० [सुप्रतिष्ठ]**

लोकोत्तरे भाद्रपदे मासे, कल्प० १ अधि० ६। सूर०।

**सुपइट्ठ-२ न० [सुप्रतिष्ठ]**

नगर, यत्र सिंहसेनकुमारपिता महासेननामा राजा अभूत्। विपा० १ श्रु० ६ अ०।

श्रावस्त्यां नगर्यां जाते गृहपतौ, अंत० ६ वर्ग० १० अ०।

**सुपइट्ठ-३ न० [सुप्रतिष्ठ]**

पुष्पपात्रविशेषे जंबू० २ वक्ष०।

**सुपइट्ठग- न० [सुप्रतिष्ठक]**

आधारविशेषे, रा०।

**सुपइट्ठाभ- न० [सुप्रतिष्ठाभ]**

उत्तरयोः कृष्णराज्योर्मध्ये लोकान्तिकविमाने, यत्र आज्ञता देवता निवसन्ति। ठा० ८ ठा० ३ उ०। भग०। सम०।

**सुपइट्ठिय- त्रि० [सुप्रतिष्ठित]**

सुष्ठु मनोज्ञता प्रतिष्ठिताः सुप्रतिष्ठिताः जीवा० ३ प्रति०। जंबू० सत्प्रतिष्ठानवत्सु, तं०। रा०।

**सुपइष्टियजस-** त्रि० [सुप्रतिष्ठितयशस]

आव्याहृतख्यातिके, पण्हा०२ अ० ।

**सुपइय-** पुं० [सुपतित]

सूर्यज्योतिष्केन्द्रस्य श्रावस्तीवास्तव्ये गृहपतौ, पुष्पि० १ अ० ।

**सुपइय-** पुं० [सुप्रतीत]

अहोरात्रस्य पञ्चमे मूहूर्ते, कल्प०१ अधि० ६ क्षण० ।

**सुपक-** त्रि० [सुपक]

सुष्ठु पकं सुपकम् । सुन्दरपरिणते, दश०७अ

**सुपकक्खोदरस-** पुं० [सुपकक्षोदरस]

सुपकः सुपरिपाकागतो यः क्षोदरसः इक्षुरसः तन्निष्पन्न आसवो ऽपि सुपकेशुरसः । मद्यभेदे जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**सुपकक्खोदरसवरसुरा-** स्त्री० [सुपकक्षोदरसवरसुरा]

सुपरिपाकागतो यः क्षोदरसः- इक्षुरसस्तन्निष्पन्ना वरसुरा सुपकक्षोदरसवरसुरा । सुपरिपाकागतेक्षुरसनिष्पन्नायां श्रेष्ठसुरायाम्, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**सुपकल-** त्रि० [सुपक]

शोभनपरिपाके, आव०४ अ० ।

**सुपकक्खुरस-** पुं० [सुपकेशुरस]

सुपकेशुमूलदलनिष्पन्ने रसे, पत्र० १७ पद०४ उ० ।

**सुपडिबद्ध-** त्रि० [सुप्रतिबुद्ध]

सुष्ठु प्रतिबुद्धः सुप्रतिबुद्धः । आचा०१ श्रु०५ अ०२ उ० । सुज्ञाततत्त्वे काकन्दिकापरनामक आर्यस्वहस्तिशिष्ये, कल्प०२

**सुपणिहि-** पुं० [सुप्रणिधि]

प्रणिधानं, प्रणिधिः शोभनः प्रणिधिः सुप्रणिधिः । शोभनप्रणिधाने, दशा०४ अ० ।

**सुपणिहिइंदिय-** त्रि० [सुप्रणिहितेन्द्रिय]

श्रोत्रादिभिः स्वविषयगाढमुपयुक्ते, दश०५ अ०२ उ० ।

**सुपण्ण-** त्रि० [सुप्रज्ञ]

सुष्ठु शोभना वा प्रज्ञाऽस्येति सुप्रज्ञः । स्वसमयपरसमयवेदिनि गीतार्थे, सूय०१ श्रु०९ अ० ।

शोभनप्रज्ञे भाषाद्वयोपेते, सूय०१ श्रु०१४ अ० ।

**सुपण्णत्त-** त्रि० [सुप्रज्ञत]

सुष्ठु प्रकारेण कथिते, आचा०१ श्रु०८ अ० ०१ उ० ।

सुष्ठु प्रज्ञप्ता यथाचारे ख्याता तथैव सुष्ठु सूक्ष्मपरिहारासेवनेन प्रकर्षेण सम्यगासेवितेत्यर्थः । अनेकार्थत्वाद्भातूनां ज्ञपिरासेव-  
नार्थः । दश०४ अ० ।

**सुपभक्त-** पुं० [सुप्रभक्तान्त]

हरिकान्तेन्द्रलोकपाले, हरिसहेन्द्रस्यापि लोकपाले, ठा० ४  
ठा० १ उ० ।

**सुपम्ह-** पुं० [सुपम्ह]

अश्वपुरराजधानीयुक्ते विजयक्षेत्रे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

जम्बूद्वीपे मेरोः पश्चिमभागस्थे सीतोदाया महानद्या दक्षिण-  
भागस्थे चक्रवर्तिविजयक्षेत्रे, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

स्वनामख्याते ब्रह्मलोकविमाने, । सम० ९ सम० ।

**सुपरकंत-** त्रि० [सुपराक्रान्त]

सुष्ठु पराक्रान्तं पराक्रमः तपः प्रभृतिकं येषु तानि । शोभन-  
पराक्रमवत्सु, भग०३ श०१ उ० ।

**सुपरिउड-** त्रि० [सुपरिवृत]

निरुपद्रवस्थाननिवेशिते, गृहस्थावस्थास्थशालिभद्रवपुर्वत् । तं०

**सुपरिच्चाइ-** त्रि० [सुपरित्यागिन]

सुष्ठु शोभनेन प्रकारेण राज्यादि परित्यजतीत्येवंशीलः सुपरि-  
त्यागी । शोभनप्रकारेण परित्यागवति, उत्त० १८ अ० ।

**सुपरिच्छियकारग-** त्रि० [सुपरीक्षितकारक]

सुष्ठु देशकालपुरुषौचित्येन श्रुतबलेन च परीक्षितं तस्य कारकः  
सद्यः न यथाकथंचनकारी । तस्मिन्, वव०३ उ० ।

**सुपरिष्ठिय-** त्रि० [सुपरिस्थित]

शोभनतया परिस्थिते, निसि०१ उ० ।

**सुपरिणिष्ठिय-** त्रि० [सुपरिनिष्ठित]

अतिनिपुण, कल्प० १ अधि० १ क्षण

**सुपसत्थ-** त्रि० [सुप्रशस्त]

अतिशयशुभे, । आव०

**सुपावय-** त्रि० [सुपापक]

पापयुते, उत्त०१२ अ० ।

**सुपास-** पुं० [सुपार्थ]

स्वनामख्याते तीर्थकरे, आव०म० ।

**सुपासा-** स्त्री० [सुपार्था]

पार्श्वपत्नीयायां पार्श्वनाथशिष्यः शिष्यायाम्, ठा० ।

**सुपिवासिय-** त्रि० [सुपिपासित]

सुतरामतिशयेन पिपासितः । अत्यन्तं तृषित, उत्त०२ अ० ।

**सुपीठ-** पुं० [सुपीठ]

पञ्चमेऽहोरात्रमुहूर्त, जंबू०७ वक्ष० ।

**सुपुत्त-** पुं० [सुपुत्र]

सुशिक्षितत्वात् शोभनसूनू, ठा० ९ ठा० ३ उ०

**सुपुरिस-** पुं० [सुपुरुष]

दाक्षिणात्यानां किंपुरुषाणामिन्द्रे, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**सुपुरिसपुर-** न० [सुपुरुषपुर]

स्वनामख्याते नगरे, यत्र नग्नजिद्राजा निवसति । आव०चू० ४  
अ० ।



**सुपेसल-** त्रि० [सुपेशल]

सुतरामतिशयेन पेशलानि मनोहराणि । अत्यन्तमनोहरे, उत्त० १२

**सुप्प-** न० [सूर्प]

धान्यशोधकभाजनविशेषे, नाया० १ श्रु० ८ अ० । सूय० । निसि० ।  
पण्हा० । आचा० ।

**सुप्पअ-** त्रि० [सूर्पक]

सूर्पे कृत्वा त्यज्यमाने बालके, यः शूर्पे कृत्वा त्यज्यते तस्य  
सूर्पक एव नाम स्थाप्यते । अणुओ० ।

**सुप्पइठ्ठ-** पुं० [सुप्रतिष्ठ]

सूर्यदेवस्य पूर्वभवे जीवे, ठा० १० ठा० ३३

**सुप्पइठ्ठग-** न० [सुप्रतिष्ठक]

आधारविशेषे, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**सुप्पइठ्ठिय-** त्रि० [सुप्रतिष्ठित]

शोभनतया श्रेष्ठे, सुष्ठु शोभनं यथा भवति एवं प्रतिष्ठिताः  
कर्मवत् उन्नतत्वेन चारवश्चरणाः पादा येषां ते तथा । जीवा० ३  
प्रति० ४ अधि० ।

**सुप्पइण्णा-** स्त्री० [सुप्रतिज्ञा]

दक्षिणरुचकसंबन्धिकाञ्चनकूटवास्तव्यायां महर्द्धिकदिकुमारि-  
कायाम्, ठा० ८ ठा० ३ उ० । जंबू० ।

**सुप्पउत्त-** त्रि० [सुप्रयुक्त]

सुष्ठु प्रयुक्तं प्रयोगो व्यापारो यस्य स तथा । शोभनव्यापारवति,  
नाया० १ श्रु० १ अ० ।

**सुप्पगय-** न० [सूर्पगत]

सूर्पाकारे व्यजने, 'सुप्पगयकण्णाकारं भण्णति । सव्वजणवय-  
प्पसिद्धं तेण वायं करेति' निसि० १ उ०

**सुप्पडिबुद्ध-** पुं० [सुप्रतिबुद्ध]

आर्यसुहस्तिनः शिष्ये, कल्प० २ अधि ८ ।  
तदनु च सुहस्तिशिष्यौ, कौटिककाकन्दिकावजायेताम् । सुस्थि-  
तसुप्रतिबुद्धौ, कौटिकगच्छस्ततः समभूत । गच्छा० ३ अधि० ।

**सुप्पडियाणंद-** त्रि० [सुप्रत्यानन्द]

उपकृतेन कृतोपकारस्य मन्तरि, ठा० ४ ठा० ३ उ० ।

**सुप्पडियार-** न० [सुप्रतिकार]

सुखेन प्रतिक्रियतेप्रत्युपक्रियते इति सुप्रतीकारम्, भावसाधनो  
ऽयं तद्भवति । प्रत्युपकारकरणे, ठा०

**सुप्पडिलेहिय-** त्रि० [सुप्रत्युपेक्षित]

सुष्ठु प्रत्युपेक्षणे हेयोपादेयतया तीर्थिकवादे सर्वज्ञवादे, आचा० १  
श्रु० ५ अ० ६ उ० ।

सुष्ठु शङ्कादिव्युदासेन प्रत्युपेक्षितम् । सुष्ठु सामीप्येन ज्ञात शुद्ध-  
प्रत्युपेक्षणया प्रत्युपेक्षिते, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० १ उ० ।

**सुप्पणिहाण-** न० [सुप्रणिधान]

प्रणिधानविशेष, ठा० ।

**सुप्पणिहियजोगि-** त्रि० [सुप्रतिहितयोगिन्]

सुप्रणिहितप्रव्रजिते, दश० ९ अ० १ उ० ।

**सुप्पदंत-** पुं० [सूर्पदन्त]

क्षीरवरद्वीपस्य देवे, सूर० १९ पाहु० ।

**सुप्पदत्ता-** स्त्री० [सुप्रदत्ता]

दक्षिणरुचकवास्तव्या दिक्कुमार्याम्, आव० । आव० म० । आव० चू०

**सुप्पबुद्ध-** न० [सुप्रबुद्ध]

उपरितनमध्यमग्रैवेयकविमाने, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**सुप्पबुद्धा-** स्त्री० [सुप्रबुद्धा]

दक्षिणरुचकपर्वतस्य सिद्धायतनकूटवास्तव्यायां दिक्कुमारी-  
महत्तरिकायाम्, जंबू० ५ वक्ष० । आव० म० । आव० क० ।  
सुष्ठु अतिशयेन प्रबुद्धा उत्फुल्लयोगादियमप्युत्फुल्ला । जम्ब्वां  
सुदर्शनायाम्, जंबू० ।

**सुप्पभ-** पुं० [सुप्रभ]

भरतक्षेत्रे आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां भविष्यति तृतीये कुलकरे,  
ठा० ७ ठा० ३ उ० ।  
विद्युतकुमारेन्द्रयोः हरिकान्तहरिशिखरयोर्दक्षिणदिग्लोकपाले  
भग० ३ श० ८ उ० ।

**सुप्पभकंत-** पुं० [सुप्रभकान्त]

विद्युतकुमाराणां देवे, भग० ३ श० ८ उ० ।  
हरिसहहरिकान्तयोरिन्द्रस्य लोकपाले, ठा० ४ ठा० १ उ०

**सुप्पभा-१** स्त्री० [सुप्रभा]

धरणेन्द्रस्य नागकुमारेन्द्रस्य कालमहाकालशङ्खपालशैलपालानां  
लोकपालानामग्रमहिष्याम्, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**सुप्पभा-२** स्त्री० [सुप्रभा]

तृतीयबलदेवस्य मातरि, सम० । आव० ।

**सुप्पभा-३** स्त्री० [सुप्रभा]

अजितस्वामिनः शिबिकायाम्, सम० ।

**सुप्पमज्जिय-** त्रि० [सुप्रमार्जित]

सुष्ठु प्रमार्जिते, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० १ उ० ।

**सुप्पबुद्ध-** पुं० [सुप्रबुद्ध]

उपरितनमध्यमग्रैवेयकविमानप्रस्तटे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

सुष्ठु-अतिशयेन प्रबुद्धेव प्रबुद्धा मणिकनकरत्नानां निरन्तरं  
सर्वतश्चाकचिक्येन सर्वकालमुन्निदे, । जीवा० ३ प्रति० २ उ० ।

**सुप्पबुद्धा-** स्त्री० [सुप्रबुद्धा]

दक्षिणरुचकसम्बन्धिकाञ्चनकूटवास्तव्यायां महर्द्धिकदिकुमारि-  
कायाम्, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**सुप्पसारय-** त्रि०/[सुप्रसारक]

सुखेन प्रसार्यते पिण्डादिग्रहणार्थं प्रवर्त्यते इति सुप्रसारः ।  
सुप्रसार एव सुप्रसारकः । उक्त० २ अ०  
सुखेन प्रसार्ये, उक्त० २ अ० ।

**सुप्पसारय-** त्रि०/[सुप्रसार्य]

सुखेन प्रसारितुं योग्ये, उक्त० २ अ० ।

**सुप्पसिद्धा-** स्त्री०/[सुप्रसिद्धा]

अभिनन्दनस्वामिनः शिबिकायाम्, सम०

**सुप्पाव-** त्रि०/[सुप्राप]

सुलभ, सूय० १ श्रु० २ अ० १ उ० ।  
कृच्छ्रलभ्य, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**सुप्पिय-** पुं०/[सुप्रिय]

अहोरात्रस्य पञ्चमे मुहूर्ते, सम० ३० सम० ।

**सुफणि-** न०/[सुफणिन्]

सुष्ठु सुखेन वा फण्यते-क्वाथ्यते तक्रादिकं यत्र सत्सुफणि ।  
स्थालीपिठरादिके भाजने, सूय० १ श्रु० ४ अ० २ उ० ।

**सुबन्धु-** पुं०/[सुबन्धु]

बिन्दुसारराजस्यामात्ये, दश० ३ अ० ।

**सुबद्ध-** त्रि०/[सुबद्ध]

सुतरां शुद्धे, सुबद्धसन्धिः सुबद्धौ स्नायुभिः संधी यस्य स  
सुबद्धसन्धिः । पण्हा० ४ अ०

**सुबलि-** पुं०/[सुबलिन्]

सुष्ठु बलवति, सूय० १ श्रु० ४ अ० १ उ० ।

**सुबहूत्तरगुणभंसी-** त्रि०/[सुबहूत्तरगुणभंशिन्]

सुबहूत्तरगुणान् पिण्डविशुद्ध्यादीन् भ्रंशयति-विनाशयतीत्ये-  
वंशीलः सुबहूत्तरगुणभंशी । पिण्डविशुद्ध्यादिनाशके, जीत० ।

**सुबहुस्सुय-** त्रि०/[सुबहुश्चुत्]

अतिशयागमज्ञे, जीवा० २० अधि० ।

**सुबाहु-** पुं०/[सुबाहु]

ऋषभपूर्वभवजीवस्य वज्रनाभस्य भ्रातरि, आव० चू० १ अ० ।  
'बाह्वोर्बलं सुबाहुश्च, साधुविश्राणनां व्यधात् ।' आव० १ अ० ।  
भरतपूर्वभवजीवे, आव० चू० १ अ० ।  
महापीठेन सह जातायामृषभदेवस्य कन्यायाम्, आव० चू० १

**सुबाहुकुमार-** पुं०/[सुबाहुकुमार]

धारिण्यां देव्यां जाते अदीनशत्रोः सुते, विपा० २ श्रु० १ अ० ।

**सुबुद्धि-** पुं०/[सुबुद्धि]

इक्ष्वाकुवंशोत्पन्नस्य प्रतिबुद्धिनामराजस्यामात्ये, नाया० १ श्रु० ८  
सागरचक्रवर्त्तिनो महामात्ये, नं० ।  
ऋषभप्रपौत्रश्रेयांसपालितहस्तिनापुरवास्तव्ये श्रेष्ठिनि, कल्प० १

**सुबोहिया-** स्त्री०/[सुबोधिका]

विनयविजयनिर्मितायां कल्पसूत्रटीकायाम्, कल्प० ३ अधि० ९  
'प्रणम्य परमश्रेयस्करं श्रीजगदीश्वरम् । कल्पे सुबोधिकां कुर्वे,  
वृत्तिं बालोपकारिणीम् । कल्प० १ अधि० १ क्षण ।

**सुब्धि-** त्रि०/[सुरभि]

सुरभिगन्धपरिणते, यथा श्रीखण्डादयः । पत्र० १ पद । आचा० ।

**सुब्धिगन्ध-** पुं०/[सुरभिगन्ध]

सौमुख्य कारके गन्धभेदे, ठा० १ ठा० आचा० ।

**सुब्धिगन्ध-** त्रि०/[सुरभिगन्धि]

सुरभिगन्धपरिणते, पत्र० १ पद । ठा० ।

**सुब्धिसद्-** पुं०/[सुरभिषद्]

मनोज्ञशब्दे, शुभशब्दे, ठा० १ ठा० । पत्र० ।

**सुभ-** न०/[सुख]

पुण्यप्रकृतिरूपे, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

कथं सुख-दुःख कारणस्य स्वपर्यायः ? उच्यते-जीवपुण्य  
संयोगः सुखस्य कारणं तस्य च सुखपर्याय एव । विशेष० ।

**सुभ-१ त्रि०/[शुभ]**

मङ्गलभूते, जीवा० ३ प्रति० ४ ।

शोभमाने, कल्प० १ अधि० ३ ।

**सुभ-२ त्रि०/[शुभ]**

पार्श्वस्वामिनः प्रथमगणधरे, पुं० । कल्प० १ ।

नमिनाथस्य प्रथमगणधरे, सम० ।

**सुभंकर-** न०/[शुभंकर]

दक्षिणयोः कृष्णराज्योर्मध्ये वरुणलोकान्तिकदेवानामावासी-  
भूते विमाने, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**सुभकम्म-** न०/[शुभकर्मन्]

शुभवेद्यकर्मणि, सू० १९ पाहु० ।

**सुभक्खण-** पुं०/[सुभक्षण]

षष्ठे ऋषभदेवसूनौ, कल्प० १ अधि० ७ क्षण ।

**सुभखेत्त-** न०/[शुभक्षेत्र]

शुभस्थाने, सू० १९ पाहु० ।

**सुभग-** न०/[सुभग]

पद्मविशेषे, जीवा० ३ प्रति० ४ । आव० म० । पत्र० । रा० । जंबू० ।

वरधनुःपितृमित्रे परिव्राजके, । उक्त० १३ अ० ।

सौभाग्यगुक्ते, । चंद० २० पाहु० । सू० ।

जनवल्लभे, सम० ।

**सुभगजालुज्वाल-** पुं०/[सुभगजालोज्वाल]

सुभगानिदृष्टि कराणि यानि जालानि मुक्तागुच्छस्तिरुज्ज्वालः ।  
नेत्रसुखकारिमुक्तागु-च्छोज्ज्वाले, कल्प० १ अधि० २ ।

**सुभगजोग-** पुं० [सुभगयोग]

सद्व्यापारे, पण्हा०५ अ० ।

**सुभगा-** स्त्री० [सुभगा]

लताभेदे, पत्र०१ पद ।

सुरूपनाम्नो भूतेन्द्रस्याग्रमहिष्याम्, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**सुभगाकारा-** स्त्री० [सुभगाकारा]

सुभगमाकरोतीति सुभगाकारा । दुर्भगवस्तुनः सुभगकारिकायां विद्यायाम्, सूय०२ श्रु०२ अ०

**सुभघोस-** पुं० [सुभघोष]

पार्श्वनाथस्य द्वितीये गणधरे, सम०८ सम

**सुभड-** पुं० [सुभट]

शोभनयोद्धरि, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ० ।

**सुभडपाल-** पुं० [सुभटपाल] त्रि

शतजिनभवनचतुःशतलौकिकप्रसादाष्टादशशतविप्रगृहषट्त्रिं-  
शच्छतवणिग्गेहनवशतारामसप्तशतवापीद्विशतकूपसप्तशतस-  
त्रागारविराजमानस्य अजमेरुनिकटवर्तिनो हर्षपुरस्याधिपतौ,  
यत्र पुरे श्रीप्रियग्रन्थसूरयोऽभ्युपेयुः कल्प०२ अधि०८ ।

**सुभणाम-** न० [सुभनामन्]

तीर्थङ्करादौ पूज्ये च । ठा० ।

नाभेरुपरितनभागादिषु, ठा० २ ठा० ४ उ० ।

**सुभति-** स्त्री० [सुभक्ति]

आन्तरप्रीतौ, जीवा०६ अधि० ।

**सुभदीहआउत्ता-** स्त्री० [सुभदीर्घायुष्कता]

दीर्घायुष्कतायाम्, ठा० ३ ठा० १ उ० ।

**सुभद-१** पुं० [सुभद्र]

अधस्तनमध्यमग्रैवेयकविमानप्रस्तटे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

स्वनामख्याते विमाने, सम० १७ सम० ।

**सुभद-२** पुं० [सुभद्र]

षष्ठयक्षनिकाये, पत्र०१ पद ।

**सुभद-३** पुं० [सुभद्र]

शाखाञ्जनीनगरी-वास्तव्ये स्वनामख्याते सार्थवाहे शकटपितरि,  
ठा० १० ठा० ३ उ० । विपा० ।

कूणिकपुत्रस्य कृष्णकुमारस्य पुत्रे, कप्प० ४ अ० ।

**सुभदा-१** स्त्री० [सुभद्रा]

कोणिकस्य राज्याम्, उव० ।

**सुभदा-२** स्त्री० [सुभद्रा]

अहोरात्रद्वयेन संपाद्यमाने प्रतिमाविशेषे, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**सुभदा-३** स्त्री० [सुभद्रा]

ऋषभदेवस्य प्रथमश्राविकायाम् आव०म० । कल्प० । आव०चू०

**सुभदा-४** स्त्री० [सुभद्रा]

वसन्तपुरवास्तव्यस्य जिनदत्तश्रेष्ठिनस्सुतायाम् आव० ५ अ० ।

चम्पानगरीवास्तव्यजिनदत्तस्य दुहितरि, आव०चू०५अ० ।

भम्भसारपुत्रस्य कोणिकस्य भार्यायाम्, उव०

वाराणसीनगरीवास्तव्यस्य भद्राभिधानसार्थवाहस्य भार्यायाम्,  
सा च वन्ध्या पुत्रार्थिनी भिक्षार्थमागतमार्यासंघाटकं पुत्रलाभं  
पप्रच्छ । स च धर्ममचीकथत् प्रात्राजीच्च सा । ठा० १० ठा०३  
गोशालकमातरि, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

बहुपुत्रिकायाः पूर्वभवजीवे सार्थवाहस्य भार्याम्, नि०१ श्रु०३  
वर्ग०३ अ० ।

बहुपुत्रिकायाः पूर्वभवजीवे सार्थवाहस्य भार्याम्, नि०१ श्रु०३  
वर्ग०३ अ० ।

भरत-चक्रवर्तिनो भार्यायाम्, सम० ।

द्वितीयबलदेवमातरि, आव०१ अ० ।

अवन्तिवास्तव्यायामवन्तिसुकुमालमातरि, आव०४ अ० ।  
सौर्यपुरे वास्तव्यस्य, धनञ्जयश्रेष्ठिनः पत्न्याम्, आव०४ अ० ।

**सुभदा-५** स्त्री० [सुभद्रा]

पूर्वादिदिक्चतुष्टये प्रत्येकं प्रहरचतुष्टये कायोत्सर्गकरणरूपा  
यामहोरात्रद्वयमानायां प्रतिमायाम्, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**सुभदा-६** स्त्री० [सुभद्रा]

भूतानन्दनागकुमारेन्द्रस्य चित्राख्यलोकपालकस्य अग्रमहि-  
ष्याम्, भग० १० श०५ उ० ।

वैरोचनेन्द्रस्य बले राजस्सो मस्य महाराजस्य  
स्वनामख्यातायामग्रमहिष्याम्, ठा० ४ ठा०

भूतानन्दनागकुमारेन्द्रस्य नागकुमारराजस्य कालबालमहाराज-  
स्याग्रमहिष्याम्, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**सुभदा-७** स्त्री० [सुभद्रा]

सुदर्शनायां जम्ब्वाम्, सुभद्रा शोभनकल्याणभागिनी, नह्यस्याः  
कदाचिदुपद्रवसंभवो महर्द्धिकेनाश्रितत्वात् । जंबू० ४ वक्ष० ।

**सुभमइ-** पुं० [सुभमति]

ऋषभदेवस्य नवाशीतितमे पुत्रे, कल्प०१ अधि०७ क्षण ।

**सुभय-** त्रि० [सुभग]

सौभाग्ययुक्ते, भग०१२ श०६ उ० ।

**सुभल-** पुं० [सुभल]

शेखरके मस्तकाभरणविशेषे, नाया०१श्रु०८अ०

**सुभवेयणतर-** त्रि० [सुखवेदनतर]

अतिशयितः सुखेन मोहजन्योन्मादापेक्षया अक्लेशेन वेदनम-  
नुभवनं यस्यासौ सुखवेदनतरः । मोहजनितग्रहापेक्षया अकृच्छ्रा  
नुभवनीयतरे, भग०१श०७उ० ।

**सुभा-** स्त्री० [सुभा]

रमणीयविजयराजधान्याम्, जंबू०१ वक्ष० ।

**सुभाविय-** त्रि० [सुभावित]

तत्त्वभणनात्सुष्ठु भाविते, उव० ।

**सुभासिय-१** न० [सुभाषित]

सुष्ठु-अतिशयेन भाषितम् प्रतिपादितं सुभाषितम् । आतु० ।

शोभनव्यक्तवाग्रूपे, पण्हा०२ अ० ।

**सुभासिय-२** त्रि० [सुभाश्रित]

कल्याणयुक्ते, पण्हा०२ अ० ।

**सुभासिय-३** त्रि० [सुखाश्रित]

सुखसंयुते, पण्हा०२ अ० ।

**सुभासिय-** त्रि० [सुधाश्रित]

अमृतमाश्रिते, पण्हा०२ अ० ।

**सुभासुभ-४** त्रि० [सुभासुभ]

शुभवर्णगन्धादिषु अशुभवर्णगन्धादिषु च । भग०९ श०३२ उ० ।

**सुभिक्ष-** त्रि० [सुभिक्ष]

शोभना शुभा भिक्षा दार्शनिकानां यत्र तत् । रा० । नाया० ।

अन्नादीनां सम्भवे, वव०३ उ० ।

सुकाले, ठा० १ ठा० ।

सुभिक्षसंयुते, नाया०१ श्रु०१ अ० । ठा० । उव०

सुलभे, बुह०१ उ०३ ।

धायंति वा सुभिक्षं ति वा एगट्टा निसि०५ उ० ।

**सुभूम-** पुं० [सुभूम]

भरते वर्षे अस्यामवसर्पिण्यां जाते कौरव्यगोत्रोत्पन्ने अष्टम-

चक्रवर्तिनि तारायां जनिते कार्तवीर्यपुत्रे, । दश० ।

**सुभूमिभाग-** न० [सुभूमिभाग]

पृष्ठचम्पाया बहिरुद्धाने, सूय०१ श्रु०८ अ० । नाया० ।

**सुभैरव-** त्रि० [सुभैरव]

अत्यन्तभयानके, उत्त०१९ अ० ।

**सुभोग-** न० [सुभोग]

शतद्वारस्य नगरस्य बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे स्वनामख्याते

उद्धाने, भग०१५ श० ।

**सुभोगा-** स्त्री० [सुभोगा]

अधोलोकवासिन्यां दिक्कुमार्याम्, आव०म० १ अ० । आव०क० ।

आव०चू० ।

महाविदेहवर्षे माल्यवतो वक्षस्कारपर्वतस्य सागरकूटवासिन्यां

दिक्कुमारीदेव्याम्, जंबू०४ वक्ष० ।

**सुभोदय-** न० [सुभोदक]

तीर्थजले, कल्प०१ अधि०३ क्षण ।

**सुभोम-** पुं० [सुभोम]

जम्बूद्वीपे भरते वर्षे आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां भविष्यति

स्वनामख्याते द्वितीयकुलकरे, ठा० ७ ठा० ३ अ० ।

यत्र ग्रामे छद्मस्थत्वेन विहरन् महावीरस्वामी स्त्रीणामग्रतोऽञ्ज-

लिकरणरूपेण गोशालकदोषेण ताडितः । आव०म०१ अ० ।

**सुब्भि-** पुं० [सुरभि]

शुभे, पण्हा०५ अ० ।

**सुब्भिगंध-** पुं० [सुरभिगन्ध]

मनोज्ञगन्धे, ठा० १ ठा० ।

**सुब्भिसद्-** पुं० [सुरभिषद्]

सौख्यकृच्छ्रदे, ठा० ३ ठा० १ उ० ।

**सुमइसूरि-** पुं० [सुमतिसूरि]

स्वनामख्याते लक्ष्मीसागरसूरिशिष्ये, गच्छा०३ अधि० ।

**सुमउय-** त्रि० [सुमृदक]

सुतरां मृदुकं सुमृदुकम् । अत्यन्तकोमले, कल्प०१ अधि०३

**सुमंगल-** न० [सुमङ्गल]

प्रत्यन्तनगरविशेषे, ऐरवतवर्षे भविष्यति षष्ठतीर्थकरे, । आव०

ग्राम, कृतषण्मासान्तपारणको वीरस्वामी यत्रागतः सन्

सनत्कुमारेण वन्दितः, प्रियं च पृष्टः । आव०चू०१ अ० ।

श्रेणिकमहाराजस्य पूर्वभवजीवे, आव० ४ अ० ।

जम्बूद्वीपे भरतवर्षे आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां भविष्यति प्रथमे

तीर्थकरे, सम० ।

**सुमंगला-** स्त्री० [सुमङ्गला]

भरतब्राह्मीरूपयुगलस्य एकोनपञ्चाशत् पुत्रयुगलस्य च मातरि,

ऋषभपत्न्याम्, कल्प०१ अधि० । आव०चू० । सम० । आव०म०

**सुमगिय-** त्रि० [सुमार्गित]

शोभनमार्गिते, पंच०चू० १ कल्प० ।

**सुमड-** त्रि० [सुमृत]

सुष्ठु मृते, दश० ७ अ० ।

**सुमण-** त्रि० [सुमनस्]

सुखिनि, सूय०२ श्रु०२ अ० ।

रुचकसमुद्रस्य पूर्वार्धाधिपतौ देवे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

गुच्छभेदे, पत्र०१ पद ।

पुष्पे, । बुह०१ उ०२ । अंत० । दश० । सूय० । नाया० ।

**सुमणदाम-** न० [सुमनोदामन्]

पुष्पमालायाम्, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**सुमणभद्-** पुं० [सुमनोभद्र]

स्वनामख्याते श्रावस्तीनगरीवास्तव्ये गृहपतौ, अंत० ।

यक्षनिकायभेदे, पत्र०१ पद ।

**सुमणस-** पुं० [सुमनस्]

नन्दीश्वरसमुद्रस्य पूर्वार्धाधिपतौ देवे, सूर० १९ पाहु० ।

**सुमणा-** स्त्री० [सुमनस्]

शक्राग्रमहिष्याः पद्माया दक्षिणपौरस्त्यरतिकरपर्वते, राजधान्याम्, ठा० ४ ठा० २ उ० । सम० ।

भूतानन्दनागकुमारेन्द्रस्य लोकपालानामग्रमहिष्याम्, भग० १० श० ५ उ० । ठा० ।

स्वनामख्यातायां श्रेणिकमहाराजभार्यायाम्, अंत० ।

शोभनं मनो यस्याः सकाशाद्भवति सा सुमनाः । जम्बवां सुदर्शनायाम्, भवति हि तां पश्यतां महर्द्धिकानामपि मनः शोभनमतिरमणीयत्वात् । जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**सुमरित-** अ० [स्मर्तुम्]

आध्यातुमित्यर्थे, आचा० २ श्रु० ३ चू० ।

**सुमरुता-** स्त्री० [सुमरुत्]

श्रेणिकमहाराजभार्यायाम् अंत० १ श्रु० ६ वर्ग० ७ अ० ।

**सुमहर्ग-** त्रि० [सुमहर्ग]

बहुमूल्ये, कल्प० १ अधि० ३ क्षण । उव०

**सुमागह-** पुं० [सुमागध]

वीरस्वामिनः पितृवयस्यराष्ट्रिके, आव० म० १ अ० । आव० चू० ।

**सुमिडंत-** न० [सुमृडत्]

वाद्यविशेषे, आव० चू० १ अ० ।

**सुमिण-** पुं० [स्वप्न]

सामान्यफले स्वापे, भग० ११ श० ११ उ० ।

‘दुसुमिणं वा कुसुमिणं वा उग्गहएज्जा सएणं ऊसासाण काउ-स्सगं’ महानि० १ चू० ।

**सुमिणजागरिया-** स्त्री० [स्वप्नजागरिका]

स्वप्नसंरक्षणाय जागरिकानिद्रानिरोधः स्वप्नजागरिका । स्वप्नसंरक्षणार्थं निद्रानिरोधे, भग० ११ श० ११ उ० ।

**सुमिणभद्र-** पुं० [स्वप्नभद्र]

माढरसगोत्रस्य संभूतविजयस्य षष्ठे शिष्ये, कल्प० २ अधि० ८

**सुमिणुगह-** पुं० [स्वप्नावग्रह]

स्वप्नानां स्मरणे, कल्प० १ अधि० ३

**सुमित्त-** पुं० [सुमित्र]

मल्लितीर्थकृता सह प्रव्रजिते तद्रणधरे ज्ञातकुमारे, नाया० १

**सुमित्तविजय-** पुं० [सुमित्रविजय]

एकविंशतीर्थकरस्य नमेः पितरि, आव० १ अ० । सम० ।

जम्बूद्वीपे भरतवर्षे अस्या मुत्सर्पिण्यां जातस्य सगरचक्रवर्तिनः पितरि शान्तितीर्थकरस्य प्रथमाभिक्षादायके, सम० ९ सम० ।

**सुमुड्य-** त्रि० [सुमुदित]

अतिहृष्टे, उव० ।

**सुमुह-** पुं० [सुमुख]

स्वनामख्याते काम्पिल्यराजे, आव० चू० ।

संकर्षणबलदेवस्य धारिणीकुक्षिसंभूते पुत्रे, अंत० ३ वर्ग० ९ अ० ।

**सुमुहत्त-** पुं० [सुमुहर्त्त]

सुन्दरमुहर्त्ते, पण्हा० २ अ०

**सुमेरुप्प-** पुं० [सुमेरुप्प]

मेघकुमारस्य तृतीयपूर्वभवजीवे, कल्प० १ अधि० १ ।

**सुमेहा-** स्त्री० [सुमेघा]

ऊर्ध्वलोकवासिन्यां दिक्कुमारि, आव० म० । ठा० । आव० चू० ।

**सुय-१** पुं० [शुक]

व्यासपुत्रे, नाया० १ श्रु० ५ अ० ।

पक्षिविशेषे, पत्र० १७ पद० ४ उ० । उव० । पण्हा० ।

**सुय-२** त्रि० [श्रुत]

आकर्णिते, उत्त० ५ अ० । सूय० ।

अवधारिते, उत्त० २ अ० । सम० ।

श्रोत्रेन्द्रियविषयीकृते, ठा० ८ ठा० ३ उ०

**सुयअण्णाण-** न० [श्रुताज्ञान]

मिथ्यादृष्टेरज्ञाने, आव० चू० १ अ० ।

**सुयआराहणा-** स्त्री० [श्रुताराधना]

सिद्धान्तस्याराधनायाम्, उत्त० ।

**सुयकप्प-** पुं० [श्रुतकल्प]

प्रवचनभणने, बुह० १ उ० १ ।

**सुयकरण-** न० [श्रुतकरण]

बद्धाबद्धादिश्रुतकरणे, आव० चू० १ अ० । सूय० ।

**सुयकेवली-** पुं० [श्रुतकेवलिन]

चतुर्दशपूर्वधरे, जीवा० १४ अधि० ।

**सुयक्खंध-** पुं० [श्रुतस्कन्ध]

द्वादशाङ्गरूपे श्रुतपिण्डे, आतु० ।

दृष्टिवादे श्रुतसमुदायत्वात्तस्य । सम० ।

**सुयक्खाय-** त्रि० [स्वाख्यात]

सुष्ठु आख्यातं स्वाख्यातम् । पूर्वोत्तराविरोधितया युक्तिभिरुप-पन्नतयाऽभिहिते, सूय० १ श्रु० १५ अ०

सुप्रज्ञप्ते, सूय० २ श्रु० २ अ० ।

लोकश्रुतिपरम्परया चिरन्तनाख्यासु वा परिज्ञाते, सूय० १ श्रु० १६

**सुयक्खायधम्म-** त्रि० [स्वाख्यातधर्मन्]

सुष्ठु आख्यातः श्रुतचारित्राख्यो धर्मो येन साधुनाऽसौ स्वा-ख्यातधर्मः । ज्ञानसमाधियुक्ते, सूय० १ श्रु० १० अ० ।

**सुयग्गाहि-** पुं० [श्रुतग्राहिन्]

परमपूरुषप्रणीतागमग्रहणाभिलाषिणि, दश० ९ अ० २ उ० ।



**सुयणजण-** पुं० [सुजनजन]

सर्वपापविरतानां समूहे, पण्हा०४ अ०

**सुयणाण-** न० [श्रुतज्ञान]

ज्ञानविशेष, आव०म०१ अ० । आव० ।

**सुयणाणपमाण-** त्रि० [श्रुतज्ञानप्रमाण]

आगमप्रायाण्ये, पिंड० ।

**सुयणाणारिय-** पुं० [श्रुतज्ञानार्य]

श्रुतज्ञानित्वेनार्ये, पत्र०१ पद ।

**सुयणाणी-** पुं० [श्रुतज्ञानिन्]

श्रुतज्ञानसम्पन्ने, वव० १० उ० ।

**सुयणिघस-** पुं० [श्रुतनिघर्ष]

श्रुतं निघर्षयन्तीति श्रुतनिघर्षाः ।

स्वर्णवच्छ्रुतपरीक्षकेषु, यथा सुवर्णकारस्तापनिकषच्छेदैः सुवर्णं परीक्षते, वव० ३ उ० ।

**सुयणिबद्ध-** त्रि० [श्रुतनिबद्ध]

सूत्रैरुपाते, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।

**सुयणिसिंद-** पुं० [श्रुतनिस्यन्द]

सिद्धान्तोपनिषद्भूते, गच्छा०३ अधि० ।

**सुयणिसिय-** न० [श्रुतनिश्रित]

श्रुतं कर्मतापन्नं निश्रितम् आश्रितम् अनेनेति श्रुतनिश्रितम् । आभिनिबोधिकज्ञानभेदे, यत्पूर्वमेव श्रुतकृतोपकाराश्चेदानीं पुनः तदनुपेक्षमेवानु प्रवर्तन्ते तदवग्रहादिलक्षणं श्रुतनिश्रितमिति । ठा० २ ठा० १ उ० ।

यत्तु पूर्वश्रुतपरिकर्मितमतेर्व्यवहारकाले पुनः पुनः श्रुतानुसारितया समुत्पद्यते तच्छ्रुतनिश्रितम् । ठा० ।

**सुयतुंडपईनिभ-** त्रि० [श्रुततुण्डप्रदीपनिभ]

शुकचञ्चुप्रदीपार्चिः स-दृशे, उत्त०३४ अ० ।

**सुयत्यधम्म-** पुं० [श्रुतधर्मार्थ]

प्राकृतत्वात्तथारूपम् । गीतार्थे, दश० ९ अ०२ उ० ।

**सुयत्येर-** पुं० [श्रुतस्थविर]

श्रुतेनागमेन स्थविरो वृद्धः श्रुतस्थविरः । तृतीयचतुर्थाङ्गधरे साधौ, ठा० ३ ठा० २ उ० ।

**सुयदान-** न० [श्रुतदान]

अङ्गप्रविष्टादिश्रुतोद्देशेने, जंबू०१ वक्ष० ।

**सुयधम्म-** पुं० [श्रुतधर्म]

श्रुतं द्वादशाङ्गं तस्य धर्मः श्रुतधर्मः । स्वाध्यायवाचनादिरूपे धर्मभेदे, तत्त्वचिन्तायां धर्महेतुत्वस्य धर्मत्वम् । दश० १ अ० । आव०म० ।

श्रुतस्वभावः, बोधस्वभावत्वात् श्रुतबोधश्च । आव० ।

**सुतधारय-** त्रि० [श्रुतधारक]

श्रुतज्ञातरि, पण्हा०५ अ० ।

**सुयपज्जवजाय-** न० [श्रुतपर्यवजात]

उद्देशकाध्ययनादिषु श्रुताध्ययनप्रकारेषु, ठा० ५ ठा० २ उ० ।

सूत्रार्थप्रकारे, गच्छा०१ अधि०

**सुयपारायण-** न० [श्रुतपारायण]

अर्थपरिसमाप्त्या पदच्छेदेन सूत्रोच्चारणे संहितायाम्, वव०३ ।

**सुयपिच्छ-** पुं० [श्रुतपिच्छ]

शुकपक्षिश्लक्ष्णपक्षे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० । पत्र० । रा० ।

**सुयबुद्धोवेय-** त्रि० [श्रुतबुद्ध्युपेत]

श्रुतेन बुद्धिभावेन च समन्विते, दश०९ अ०२ उ० ।

**सुयमद-** पुं० [श्रुतमद]

विशिष्टश्रुतनिमित्ते मदभेदे, ठा० ८ ठा० ३ उ० । उत्त० ।

श्रुतेन मदः श्रुतमदः । मदस्थानभेदे, सम० ।

**सुयमाण-** त्रि० [शयान]

शयनं कुर्वति, तं० । ।

**सुयरयण-** न० [श्रुतरत्न]

द्वादशाङ्गीरूपे रत्ने, पत्र०१ पद ।

**सुयरयणभरिय-** त्रि० [श्रुतरत्नभृत]

श्रुतान्येवाचारादीनि निरुपमसुखहेतुत्वाद्गतानि श्रुतरत्नानि तैर्भूतं पूरितम् । परिपूर्णागमे, नं०

**सुयरहस्स-** न० [श्रुतरहस्य]

श्रुतनिष्कर्मे, संथा० ।

**सुयलंभ-** पुं० [श्रुतलाभ]

द्रव्यश्रुतलाभे, बुह० ।

**सुयवग-** पुं० [श्रुतवक्]

तृणवनस्पतिभेदे, पत्र० १ पद ।

**सुयवतार-** त्रि० [श्रुतवक्त्र]

द्वादशाङ्गस्य प्रवचनस्य सूत्रतः प्रवाचके, विशेष० ।

**सुयववहारि-** पुं० [श्रुतव्यवहारिन्]

श्रुतव्यवहारेण व्यवहार्तरि, जीवा० १ प्रति० ।

**सुयविणय-** पुं० [श्रुतविनय]

विनयभेदे, वव० ।

**सुयर्वट-** पुं० [श्रुतवृन्त]

त्रीन्द्रियजीवभेदे, जीवा०३ प्रति०१ अधि० । पत्र० ।

**सुयसंपया-** स्त्री० [श्रुतसंपद्]

श्रुतम्-आगमस्तस्मिंस्तेन वा संपत्समृद्धिः श्रुतसंपत् । ठा० ८

**सुयसंवाय-** पुं० [श्रुतसंवाद]

शुकाख्यपरिव्राजकेन सह वादे, गच्छा०२ अधि० ।

**सुयसद्वहण्या-** स्त्री० [श्रुतश्रद्धधानता]

धर्मशास्त्रश्रवणे, ठ०

‘आ-हच्च सवणलद्धु, सद्धा परमदुल्लहा। सोच्चा नेयाउयं मग्गं, बहवे परिभस्सइ। ठ० ६ ठ० ३ उ०।

**सुयसमाहि-** पुं० [श्रुतसमाधि]

श्रुते श्रुताद्वा समाधिः श्रुतसमाधिः। समाधिभेदे, दश०।

**सुयसागर-** पुं० [श्रुतसागर]

श्रुतकल्पव्यवहारदिरूपं तदेव गम्भीरत्वादिगुणैः सागरः श्रुतसागरः। श्रुतसमुद्रे, गच्छा०१ अधि०।

**सुयसहायया-** स्त्री० [श्रुतसहायता]

श्रुतमेव सहायो यस्याऽसौ श्रुतसहायस्तद्भावस्तत्ता। श्रुतमात्रा-वलम्बने, भग०१७ श०३ उ०।

**सुयसामाइय-** न० [श्रुतसामायिक]

श्रुतमुक्तस्वरूपमेव सामायिकमिति श्रुतसामायिकम्। सामा-यिकभेदे, विशेष०।

**सुयहर-** पुं० [श्रुतधर]

दशपूर्वधरे, आव०म०१ अ०।

**सुया-** स्त्री० [सुता]

आत्मजायाम्, जीवा०३ प्रति०४ अधि०।

**सुयाग-** पुं० [सुयाग]

शोभनयज्ञ, उव०।

**सुर-** पुं० [सुर]

शक्रादिकेषु देवेषु, नं०।

अनिमेषिषु, आव०म०१ अ०। वव०। आव०म०। उव०। आचा०

**सुरइय-** त्रि० [सुरचित]

शोभनं रचितं सुरचितम्। शोभनप्रकारेण निर्मिते, जीवा०३ प्रति०४ अधि०। उव०।

**सुरंगा-** स्त्री० [सुरङ्गा]

उपर्यविदिते भूमिखातमार्गे, आव०क०। आव०।

**सुरंवर-** पुं० [सुरम्बर]

शौर्यपुरपूज्यमाने स्वनामख्याते यक्ष, आव० ४ अ०। आव०।

**सुरक्खिय-** त्रि० [सुरक्षित]

सुष्ठु-अत्यन्तं रक्षितं रक्षण पालनं यस्य स तथा। अत्यन्तं पालिते, पण्हा०४ अ०।

**सुरगण-** पुं० [सुरगण]

चतुर्विधामरनिकाये, पण्हा०। सम०

**सुरगणसुह-** न० [सुरगणसुख]

देवसन्धानसुखे, ‘सुरगणसुहं, सम्मत्तं सव्वथा पिंडिअं अणंत-गुणं’ पन्न० २ पद।

**सुरगिरि-** पुं० [सुरगिरि]

मेरुपर्वते, सूय०१ श्रु०६ अ०।

**सुरगीय-** त्रि० [सुरगीत]

सुरैर्देवैर्गीतस्तद्गुणगानेन। अमरसंकीर्तिते, संथा०।

**सुरगोव-** पुं० [सुरगोप]

इन्द्रगोपकाभिधाने रक्तवर्णे, कीटे, नाया०१ श्रु०९ अ०।

**सुरजाल-** न० [सुरजाल]

इन्द्रजाले, बुह०१ उ०२।

**सुरठ-** पुं० [सुराष्ट्र]

द्वारवतीनगरीप्रतिबद्धे जनपदभेदे, आव०। सूय०। पन्न०।

**सुरठवद्धण-** पुं० [सुराष्ट्रवर्धन]

अवन्तिराजस्य प्रद्योतस्य पौत्रे, आव० ४ अ०।

**सुरणय-** त्रि० [सुरनत]

देवपूजिते, दश०१ अ०।

**सुरणर-** पुं० [सुरनर]

देवमनुष्ये, दश०१ अ०।

**सुरणुचर-** त्रि० [स्वनुचर]

सुखप्रवर्तनीयत्वात् अकृच्छ्रेणानुष्ठातव्ये, ठा० ५ ठा० १ उ०।

**सुरत्तकणवीर-** न० [सुरत्तकरवीर]

अतिरक्तकरवीरपुष्पे, पण्हा०३ अ०

**सुरदत्त-** पुं० [सुरदत्त]

जयन्तीनामनगरीवास्तव्ये स्वनामख्याते गृहपति, पिंड०।

**सुरपूइय-** त्रि० [सुरपूजित]

सुरा देवास्तैः पूजितः। इन्द्रादिदेवैः पूजिते, दश०१ अ०।

**सुरप्पिय-** पुं० [सुराप्रिय]

रैवतकपर्वतस्यादूरे नन्दनवने उद्याने स्वनामख्याते यक्षे, नाया०१ श्रु०५ अ०। आव०म०। अंत०

साकेतपत्तने। चेशानकोणेऽस्ति, मेदिनीमुकुटोपमम्। सुरप्रि-यस्य यक्षस्यायतनं शिखराद्भुतम्। आव०क०१ अ०। आव०चू०।

निर०। आव०म०।

**सुरभि-** पुं० [सुरभि]

सौमुख्यकृति गन्धभेदे, अणुओ०। पन्न०। उव०। रा०। सम०। आचा०। नं०।

गवि, सकलगोमातरि, बुह०।

प्रलम्बभेदे, बुह०१ उ०२।

**सुरभिकुसुममल्लिया-** स्त्री० [सुरभिकुसुममल्लिका]

सुगन्धपुष्पमाल्ये, कल्प०१ अधि०३ क्षण।

**सुरभिगंध-** पुं० [सुरभिगन्ध]

सुगन्धे, रा०।

**सुरभितर-** त्रि० [सुरभितर]

अत्यन्तसुगन्धिनि, कल्प०१ अधि०३ क्षण । पण्हा० ।

**सुरभिपुर-** न० [सुरभिपुर]

गङ्गातटीये नगरभेदे, कल्प०१ अधि०६ क्षण ।

गङ्गाया उत्तरभागस्थे नगर, आव०चू०१ । आव० । आव०म० ।

**सुरम्म-** त्रि० [सुरम्य]

अतिशयरमणीये, जीवा०३ प्रति०४ अधि० । उव० । सम० ।

सुष्ठु-अतिशयेन रम्यं सुरम्यम् ।

मनोरमणीये, चंद०२० पाहु० ।

**सुरम्मा-** स्त्री० [सुरम्या]

वैताढ्यपर्वते उत्तरश्रेण्यां स्वनामख्यातायां नगर्याम्, रा० ।

**सुरलोगभूय-** त्रि० [सुरलोगभूत]

सुरलोकोपमे, रा० ।

**सुरल्लिया-** स्त्री० [सुरल्लिका]

वनस्पतिविशेषे, रा० ।

**सुरवइ-** पुं० [सुरपति]

इन्द्र । आव०म० ।

**सुरवइसंपूइय-** त्रि० [सुरपतिसंपूजित]

इन्द्रमहिते,

सुरपतिसंपूजितानां प्रच्छकनिर्णायकपूजनात् । सम०

**सुरवर-** पुं० [सुरवर]

ऋषभदेवस्याष्टनवतितमे पुत्र, कल्प०१ अधि० ७ ।

देवप्रवर, पण्हा०४ अ०

**सुरवराभिराम-** त्रि० [सुरवराभिराम]

सुरवरैः शोभिते, कल्प०१ अधि०३ ।

**सुरहि-** पुं० [सुरभि]

सुगन्धे, नाया०१ श्रु०९ अ० । जीवा० ।

सेडुकतृणे, निसि०१ उ० ।

तृणभेदे, आचा०१ श्रु०१ अ०५ उ० ।

**सुरहिगन्ध-** पुं० [सुरभिगन्ध]

अनुकूलगन्धे, तेजःपद्मशुक्ललेश्याः सुरभिगन्धाः । पन्न० १७

**सुरभिजणियगंध-** पुं० [सुरभिजनिगन्ध]

मनोज्ञकृतगन्धे, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**सुरा-** स्त्री० [सुरा]

चन्द्रहासाभिधे मद्ये, उत्त०१९ अ० । सूय० ।

काष्ठपिष्टनिष्पन्ने मद्यभेदे । बुह०२ उ० । ठा० । दश० ।

कल्पपालगृहे किलाम्लशब्दसमुच्चारिते सुरा विनश्यति ।

अणुओ०

पश्चिमरुचकपर्वतवासिन्यां दिक्कुमार्याम्, आव०चू० ।

**सुरादेव-** पुं० [सुरादेव]

वाणारसीनगरीवास्तव्ये स्वनामख्याते वणिजि, ठा० १० ठा०

३ उ० । उत्त० ।

**सुरादेवी-** स्त्री० [सुरादेवी]

पश्चिमरुचकवरपर्वतवास्तव्यायां दिक्कुमारीमहत्तरिकायाम्, ठा०

२ ठा० १ उ० । जंबू० । आव० ।

सौधर्मकल्पदेव्याम्, नि०१ श्रु०४ वर्ग०८ अ० । आव०म० ।

**सुरादेवीकूड-** न० [सुरादेवीकूट]

शिखरिवर्षधरपर्वतस्य पञ्चमे कूटे, जंबू०४ वक्ष० ।

सुरादेव्यावासभूते पर्वते, जंबू०४ वक्ष० । ठा० ।

**सुराथालय-** न० [सुरास्थालक]

सुरायाः स्थालकं सुरास्थालकम् । कोशलादिके, सूय०२ श्रु०२

**सुराभ-** न० [सुराभ]

अपरयोः कृष्णराज्योर्मध्ये लोकान्तिकविमाने, तत्र तुषिता

देवाः । ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**सुरालय-** पुं० [सुरालय]

स्वर्गे, सूय०१ श्रु०६ अ० ।

**सुरावियडकुम्भ-** पुं० [सुराविकटकुम्भ]

सुरारूपं यद् विकटं जलं तस्य कुम्भो यः स तथा ।

मद्यभृतघटे, भग० १६ श० ६ उ० ।

**सुरिंद-** पुं० [सुरेन्द्र]

सुष्ठु राजन्ते इति सुरास्तेषामिन्द्रः-प्रभुः सुरेन्द्रः, सुराणां देवानां

वा इन्द्रः सुरेन्द्रः । शक्रे, उवा०२ अ० । सम० ।

द्वात्रिंशत् सुरेन्द्राः । पण्हा०५ अ० ।

**सुरिन्ददत्त-** पुं० [सुरेन्द्रदत्त]

इन्द्रपुरनगरराजस्येन्द्रदत्तस्य स्वामात्यसुताकुक्षिसंभूते पुत्रे,

आव०म०१ अ० ।

**सुरूया-** स्त्री० [सुरूपा]

मध्यमयकवास्तव्यायां दिक्कुमारीमहत्तरिकायाम्, आव०म०१

**सुरूव-** त्रि० [सुरूप]

सुविभक्तावयवचारुदेहे, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ० । चंद० । उत्त० ।

शोभनं रूपं येषान्ते सुरूपाः । अत्यन्तकमनीयरूपेषु, जीवा०३

प्रति०४ अधि० ।

शोभनरूपमाकारो यस्य सः । रा० ।

शोभनमतिशायि रूपमङ्गप्रत्यङ्गावयवसन्निवेशविशिशेषो यस्य

स सुरूपाः । सूर०२० पाहु० ।

शोभनाकारे, विपा०२ श्रु०१ अ० ।

‘एगे सुरूवे’ मनोज्ञरूपे, ठा० १ ठा० ।

दाक्षिणात्यानां भूतानामिन्द्रे, पन्न०१ पद ।

**सुरूवा- स्त्री० [सुरूपा]**

शोभनरूपायां स्त्रियाम्, सम० । ठा० ।  
यशोवतस्तृतीयस्य कुलकरस्य पत्न्याम्, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।  
ति० सूरूपप्रतिरूपयोर्भूतेन्द्रयोरग्रमहिष्याम्, ठा० ४ ठा० १  
उ० । भूतानन्दस्य स्वनामख्यातायामग्रमहिष्याम्, भग० १० श० ५  
उ० मध्यमरुचकवास्तव्यायां दिक्कुमारीमहत्तरिकायाम्, जंबू० ५  
वक्ष द्वी० । ठा० । आव० म० ।

**सुलङ्घ- त्रि० [सुलङ्घ]**

सर्वैः प्रकारैः शोभने, उत्त० १ अ० । पा० ।  
सुन्दरे, दश० ७ अ० ।

**सुलङ्घ- त्रि० [सुलङ्घ]**

सुखेन प्राप्ते, 'तुज्झं सुबल्लं खु मणस्सज-म्मं ।' उत्त० ११ अ० ।

**सुलङ्घिय- त्रि० [सुलङ्घिक]**

अनेकलङ्घिसम्पन्न, वव० १ उ० ।

**सुलभ- त्रि० [सुलभ]**

सुप्राप, ठा० ।

**सुलभबोहिय- त्रि० [सुलभबोधिक]**

सुलभ बोधिर्भवान्तरे जिनधर्मप्राप्तिर्यस्यासौ सः । रा० ।  
सुखेन जिनधर्मे प्राप्ते, ठा० । गच्छा० । रा० ।

**सुलभभिक्ष- त्रि० [सुलभभिक्ष]**

सुलभा भिक्षा यत्र तत् । सुखेन भिक्षालाभस्थाने, वव० ४ उ० ।

**सुललिय- न० [सुललित]**

स्वरघोलनाप्रकारेण शुद्धतिशयेन ललतीव यत्सुकुमालं तत्  
सुललितम् । गेयगुणभेदे, रा० ।

**सुलस- पुं० [सुलस]**

कालसौकरिकसुते, आव० क० ४ अ० । आव० चू० आव० ।

**सुलसद्दह- पुं० [सुलसद्दह]**

जम्बूद्वीपे मन्दरस्य दक्षिणे देवकुरुषु स्व नामख्याते हृदे, ठा०  
५ ठा० २ उ० ।

**सुलसा- स्त्री० [सुलसा]**

श्रेणिकरथिकस्य नागस्य भार्यायाम्, आव० चू० ४ अ० । आव० ।  
आव० म० । कल्प० ।

**सुलसुलायंतमसोड- त्रि० [सुलसुलायमानामांसपुट]**

सुलसुलभूतं मांसपुटं क्षरति, तं० ।

**सुलिङ्घ- त्रि० [सुलिङ्घ]**

संबद्धे, जंबू० १ वक्ष० । सुघटने, उव० ।

**सुलूहजीवि- पुं० [सुरूक्षजीविन]**

सुष्ठु रूक्षमन्तप्रान्तं वल्लचणकादि तेन जीवितुं प्राणधारणं कर्तुं  
शीलमस्यासौ । अन्तप्रान्तादिभक्षिणि, सूय० १ श्रु० १३ अ० ।

**सुलोयणा- स्त्री० [सुलोचना]**

सुनयनायाम्, मानपिण्डे उदाहृतस्य गुणचन्द्राभिधानस्य कौटु-  
म्बिकस्य गृहिण्याम्, पिंड० ।

**सुवङ्ग- न० [सुवङ्ग]**

षष्ठदेवलोकविमानभेदे, सम० १३ सम० ।

**सुवंत- त्रि० [स्वपत्]**

शयाने, बुह० २ अ० ।

**सुवङ्ग- पुं० [सुवङ्ग]**

मन्दरस्य पश्चिमायां शीतोदाया महानद्या उत्तरचक्रवर्ति-  
विजयक्षेत्रयुगले, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

सुवङ्गुर्विजयः खङ्गपुरीराजधानीगम्भीरमालिनीअन्तर्नदी । जंबू०

**सुवच्छ- पुं० [सुवत्स]**

कुण्डलाख्यनगरीयुक्तविजयक्षेत्रयुगले, ठा० २ ठा० ३ उ० ।  
जम्बूमन्दरपूर्वे शीतामहानद्या दक्षिणचक्रवर्तियुगले, ठा० ८ ।  
सुवच्छे विजए कुंडला रायहाणी तत्तजला अजर्द्धणई । जंबू० ४

**सुवच्छा- स्त्री० [सुवत्सा]**

अधोलोकवास्तव्यायां दिक्कुमारीमहत्तरिकायाम्, ठा० ८ ठा०  
मन्दरपर्वते नन्दनवनस्य रजतकूटवर्तिन्यां देव्याम्, ठा० ९ ठा०  
ऊर्ध्वलोकवासिन्यां दिक्कुमारीमहत्तरिकायाम्, जंबू० ५ वक्ष० ।  
आव० । आव० म० । आव० चू० ।

**सुवट्टिय- त्रि० [सुवर्तित]**

सुअतिशयेन वर्तितं सुवर्तितम् । वर्तुलीकृते, तं० ।

**सुवण्ण- न० [सुवर्ण]**

पीतकान्तिहेमनि, रा० । कनक, उवा० । ज्यो० ।  
घटितं हिरण्यम्, अघटितं सुवर्णं, आव० म० १ अ० । कल्प० ।  
आव० । सूय० । पं० व० । पत्र० ।  
मानं च कागणिरयणे, जंबू० ।  
अशीतिगुञ्जाप्रमाणे, कनक, भग० २ श० ५ उ० । तं० ।

**सुवण्ण- पुं० [सुवर्ण]**

गरुड, उत्त० १४ अ० ।

**सुवण्णकार- पुं० [सुवर्णकार]**

सुवर्णकरणशिल्पनि, जंबू० ३ वक्ष० ।

**सुवण्णकुमार- पुं० [सुवर्णकुमार]**

सुपर्णाः सुवर्णाः वा कुमारा इव कुमाराः सुवर्णकुमाराः ।  
भवनवासिदेवभेदेषु, पत्र० १ पद । ठा० ।

**सुवण्णकुमारावास- पुं० [सुवर्णकुमारावास]**

सुवर्णकुमाराणामावासे सम० ।

**सुवण्णकूलप्पवायदह- पुं० [सुवर्णकूलप्रपातहद]**

हैरण्यवतवर्षे शिखरवर्षधरपर्वते सुवर्णकूलानदीप्रपतनहदे, ठा०

**सुवर्णकूला- स्त्री० [सुवर्णकूला]**

हैरण्यवतवर्षे शिखरिवर्षधरपर्वतस्य पुण्डरीक महाहृदात्रिर्ग-  
च्छन्त्यां महानद्याम्,  
'सुवर्णकूला महानई दाहिणेणं णेयव्वा जहा रोहिंसा'  
तस्मात् पुण्डरीकहृदाद् सुवर्णकूला महानदी दक्षिणेन निर्गता  
नेतव्या परिवारादिना च यथा रोहितांशा सा च पश्चिमायां समुद्रं  
प्रविशति इयं च पूर्वस्यामिति जंबू०४ वक्ष० । ओह० । ठा० ।  
रा० । सम० ।

दक्षिणोत्तरवाचालयोर्मध्ये वहन्त्यां नद्याम्, आव०चू०१ अ० ।

**सुवर्णकूलाकूट- न० [सुवर्णकूलाकूट]**

शिखरिवर्षधरकूटस्य चतुर्थे कूटे, जंबू० ३ वक्ष० ।  
सुवर्णकूलानदीसुरासत्के, ठा० २ ठा० ३ उ०

**सुवर्णखल- पुं० [सुवर्णखल]**

ग्राम, यत्र वीर-जिनैः सह विहृतस्य गोशालकस्य भग्नस्थाली-  
दृष्टवादनियतिवादे आग्रहोऽदायि । आव०म०१ अ० ।

**सुवर्णगुलिया- स्त्री० [सुवर्णगुलिका]**

स्वनामख्यातायां रमण्याम्, निसि०१० उ० । सम० ।

**सुवर्णजुति- स्त्री० [सुवर्णयुक्ति]**

सुवर्णस्य यथोचितस्थाने विनियोजने, जंबू०२ वक्ष० ।

**सुवर्णजूहिया-स्त्री० [सुवर्णयूथिका]**

सुवर्णवर्णपुष्पायां यूथिकायाम् जंबू०१ वक्ष० । रा० । पत्र० ।

**सुवर्णतेय- पुं० [सुवर्णतेजस्]**

दृढशक्तिविद्याधरपुत्रे कनकमालाया भ्रातरि, उत्त०१ अ० ।

**सुवर्णदार- न० [सुवर्णद्वार]**

सिद्धायतनानामुत्तरदिशि सुवर्णकुमारावासभूते द्वारे, ठा० ४ ठा०

**सुवर्णपयर- न० [सुवर्णप्रतरक]**

सुवर्णपत्रके, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

'सुवर्णपयरमंडियाणि' सुवर्णप्रतरमण्डितानि सुवर्णप्रतरकेण  
सुवर्णपत्रकेण मण्डितानि सुवर्णप्रतरमण्डितानि । जीवा०३  
प्रति०४ अधि० । रा० ।

**सुवर्णपाग- पुं० [सुवर्णपाक]**

कनकसिद्धि, नाया०१ श्रु०१ अ० । जंबू०

**सुवर्णयार- त्रि० [सुवर्णकार]**

सुवर्णसंग्रथनोपजीविनि, कुमारनन्दी सुवर्णकारः । आव०म०१

**सुवर्णवालुया- स्त्री० [सुवर्णवालुका]**

दक्षिणोत्तरयोश्चाबालजनपदयोर्मध्ये वहन्त्यां नद्याम्, आव० म०  
१ अ० ।

**सुवर्णसूत- न० [सुवर्णसूत्र]**

सुवर्णवर्णे कृमिसूत्रे, बुह०२ उ० । आचा० ।

**सुवर्णसुभ्रयवालुया- स्त्री० [सुवर्णशुभ्ररजतवालुका]**

सुवर्ण पीतकान्ति हेम, शुभ्रं रूप्याविशेषः रजतं प्रतीतं तन्मय्यो  
वालुका यासु ताः सुवर्णशुभ्ररजतवालुकाः । नदीविशेषे, रा० ।

**सुवर्णागर- पुं० [सुवर्णकर]**

सुवर्णखनौ, जीवा०३ प्रति०१ अधि०२ उ० ।

यत्र सुवर्णं ध्माप्यते । ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**सुवत्त- त्रि० [सुव्यक्त]**

स्फुटे, अंत०१ श्रु०६ अ०३ वर्ग० ।

**सुवत्थ- पुं० [सुवत्थ]**

दाक्षिणात्यशक्रेन्द्रे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**सुवप्प- पुं० [सुवप्प]**

शीतोदाया महानद्या उत्तरविजयक्षेत्रयुगले, ठा० ८ ठा० ३ उ०

**सुवम्म- पुं० [सुवर्मन्]**

ऋषभदेवस्य त्रयस्त्रिंशत्तमे पुत्रे, कल्प०१ अधि०७ क्षण ।

**सुवय- त्रि० [सुवचस्]**

शोभनवचने, सूय०२ श्रु०७ अ० ।

**सुवयण- न० [सुवचन]**

श्रोतव्ये वचने, ठा० ३ ठा० १ उ० ।

**सुवया- स्त्री० [सुव्रता]**

तेतलिपुत्रस्य पोद्विलाया द्वारिकायाः प्रव्रजि-काभार्यायाम्,  
नाया०१ श्रु०१४ अ० ।

**सुवाय- न० [सुवात]**

तृतीयदेवलोकविमानभेदे, सम०५ सम० ।

**सुवासव- पुं० [सुवासव]**

वासवदत्तकुमारे, उवा० ।

**सुविअजिय- त्रि० [सुव्यर्जित]**

जिनाज्ञापूर्वकदृढभावेन विशेषेण निरन्तरकरणेनार्जिते, तं० ।

**सुविक्रम- पुं० [सुविक्रम]**

भूतानन्दस्य नागकुमारेन्द्रस्य कुञ्जरानीकाधिपतौ हस्तिराजे,  
ठा० ५ ठा० १ उ० ।

**सुविण- पुं० [स्वप्न]**

स्वप्नक्रियायाम्भग०१ श० ११ उ० ।

निद्राविकृतविज्ञानप्रतिमासार्थविशेषे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

स्वप्नगजवृषभसिंहादिकम् । सूय०२ श्रु०२ अ० ।

स्वप्नगते शुभाऽशुभलक्षणे, । उत्त०१५ अ० ।

स्वप्नगते शुभाशुभकथने, यथा-'गायने रोदनं ब्रूयान्नर्तने वध-  
बन्धनम् । हसने शोचनं ब्रूयोत्पठने कलहं इति । उत्त०१४ अ० ।

**सुविणंत- पुं० [स्वप्नान्त]**

स्वप्नस्य विभागे, अवसाने च । भग०१ श०८ उ० ।



**सुविणंतिय-** त्रि० [स्वप्रान्तिक]

स्वप्रप्रत्यये शाक्यसमये, सूय०१ श्रु०१ अ० ।  
अवियारमणवयणकायवक्कस्स सुविणमवि अप्पसओ पावे कम्मे  
कज्जइ ।' सूय०२ श्रु०४ अ० ।

**सुविणदंसण-** न० [स्वप्रदर्शन]

स्वापक्रियानुगतार्थविकल्पस्यानुभवने, भग०१८ श०९ उ० ।  
स्वप्नालोकने दर्शनभेदे, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**सुविणय-** पुं० [स्वप्रक]

स्वप्रफलप्रतिपादके निमित्तशास्त्रे, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**सुविणलक्खणपाठग-** पुं० [स्वप्रलक्षणपाठक]

स्वप्रलक्षणप्रतिपादके, कल्प०१ अधि०३ ।

**सुविणा-** स्त्री० [स्वप्रा]

स्वप्रात् पुष्पचूलाया इव या स्वप्न प्रतिपद्यते सा स्वप्रा ।  
प्रव्रज्याभेदे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सुविणियप्प-** त्रि० [सुविनीतात्मन्]

विनयवति, जन्मान्तरकृतविनये निरतिचारधर्मारधके, दश०९  
अ०२ उ० ।

**सुविणीय-** त्रि० [सुविनीत]

शिष्येषु सुष्ठु विनियोजिते, उव० ।  
शोभनविनययुक्ते, गच्छा०२ अधि० ।

**सुविणीयसंसय-** त्रि० [सुविनीतसंशय]

सुतराम् अतिशयेन विनीतो दूरीकृतः संशयो यस्य सः सुविनीत  
संशयः । लब्धरहस्येन सुष्ठु अतिशयेन विनीतः सुविनीतः ।  
प्रसादितगुरुणैवशास्त्रपरमार्थसमर्पणेन संशयो दोलायमानमान  
सात्मकोऽस्येति सुविनीतसंशयः । अवगतसंशये, उत्त०१ अ० ।

**सुविणीयसंसय-** त्रि० [सुविनीतसंसत्क]

सुविनीता संसत् परिषदस्येति सुविनीतसंसत्कः । विनीतस्य हि  
स्वयमतिशयविनीतैव परिषद्भवति इति व्युत्पत्तेः । विनय  
युक्तपरिषदुपेते, उत्त०१ अ०

**सुविधि-** पुं० [सुविधि]

प्रसन्नचन्द्रमित्रस्य वज्रसंघजीवानन्दस्य पितरि, आव० १ अ० ।

**सुविभज-** त्रि० [सुविभज]

अकृच्छ्रेण विभजनीये, ठा० ५ ठा० १३

**सुविभक्त-** त्रि० [सुविभक्त]

यथास्थानस्थितसर्वावयवे, कल्प०१ अधि०२ ।  
सुविविक्ते, उव० । रा० । सुप्रकटे, जंबू०२ वक्ष सूर० ।

**सुविभक्तरायमग्गा-** स्त्री० [सुविभक्तराजमार्ग]

सुविभक्तो विविक्तो राजमार्गो यस्यां सा तथा ।  
स्फुटराजमार्गसहितायां नगर्याम् । रा० ।

**सुविभक्तसिंग-** त्रि० [सुविभक्तशृङ्ग]

विभागस्थसमशृङ्गे, 'सेयं सुजायं सुविभक्तसिंगं, जो पासिया  
वसभं गोठमज्जे ।' आव० ४ अ० ।

**सुविभक्तिय-** त्रि० [सुविभक्तिक]

सुविच्छित्तिके, जीवा०३ प्रति०४ अधि०

**सुविभावियप्प-** त्रि० [सुविभावितात्मन्]

सुष्ठु विविधं भावितो धर्मवासनया वासित आत्मा यस्यासौ  
सुविभावितात्मा । धार्मिकमनस्के, सूय०१ श्रु०१० अ० ।

**सुविमुक्क-** त्रि० [सुविमुक्त]

सुष्ठुरागद्वेषात्मकेन स्त्रीसम्पर्केण मुक्ते,  
सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ० ।

**सुविम्हिय-** त्रि० [सुविस्मित]

संजाताश्चर्ये, उत्त०२० अ० ।

**सुविर-** त्रि० [स्वप्र]

स्वप्रशीले, बुह०१ उ०२

**सुविरइय-** त्रि० [सुविरचित]

सुनिर्मिते, जंबू०२ वक्ष० । तं० । आव००० । जीवा० ।  
सुघटिते, उवा०७ अ० ।  
सुष्ठुविरचितं रजस्त्राणमाच्छादनविशेषो परिभोगावस्थायां  
यस्मिंस्तत्तथा । भग०११ श०११ उ० । रा० ।

**सुविवेग-** पुं० [सुविवेक]

सुष्ठु विवेकः सुविवेकः । परिज्ञाने, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ० ।

**सुविसद-** त्रि० [सुविशद]

सुविविक्ते, कल्प०१ अधि०१ क्षण ।

**सुविसुद्धलेस्स-** त्रि० [सुविशुद्धलेश्य]

सुष्ठु विशेषेण शुद्धा स्त्रीसम्पर्कपरिसंहाररूपतया विगतकलङ्का  
लेश्याऽन्तः करणवृत्तिर्यस्येति । शुद्धपरिणतिशालिनि, सूय०१  
श्रु०४ अ०३ उ० ।

**सुविहि-** पुं० [सुविधि]

शोभने विधिः सुविधिः । सदनुष्ठाने, पण्हा०५ अ० । आव० । सम०  
भारते वर्षेऽस्यामवसर्पिण्यां जाते पुष्पदन्तापरनामके नवमे  
तीर्थकरे, । आव००० । कल्प० । अणुओ० ।

**सुविहिय-** त्रि० [सुविहित]

शोभनं विहितः सुविहितः । सुव्यवस्थिते पंच०चू०२ कल्प० ।  
सदनुष्ठानोद्यते, गच्छा०२ अधि० । ओह० ।  
साधौ, बुह० १ उ० ३ । पण्हा० । आव० ।  
शोभनं विहितमाचरितं येषां साधुसाध्वीश्रावकश्राविकाणां ते  
सुविहिताः । संथा० । निसि० ।

**सुवुट्टि-** स्त्री० [सुवृष्टि]

धान्यादिवर्षणहेतौ वृष्टौ, भग०३ श०७ उ० । आव००० ।

**सुव्वय-१ पुं० [सुव्रत]**

शोभनानि सम्यग्ज्ञानाधिष्ठितत्वेन व्रतानि हिंसा विरमणादीनि यस्य सः । उत्त०८ अ० ।

**सुव्वय-२ पुं० [सुव्रत]**

निरतिचारनियमयुक्ते, । ठा० ४ ठा० ३ उ० ।  
शोभनाणुव्रतधारके सुश्रावके, बुह०३ उ० । आव० ।

**सुव्वय-३ पुं० [सुव्रत]**

साधौ, उत्त०८ अ० । आचा० । सूय० । आव० ।

**सुव्वय-४ पुं० [सुव्रत]**

शोभनचित्तवृत्तिकरणे, उव० । पण्हा० ।

**सुव्वय-५ पुं० [सुव्रत]**

षष्ठतीर्थकरस्य पद्मप्रभस्य प्रथमशिष्ये, सम० ।  
पार्श्वनाथस्य प्रथमश्रावके, कल्प०१ अधि०७ क्षण ।

**सुव्वय-६ पुं० [सुव्रत]**

अङ्गारकाद्यष्टाशीतिग्रहेषु एकाशीतितमे ग्रहे, चंद०२० पाहु० ।  
कल्प० । ठा०

**सुव्वय-७ पुं० [सुव्रत]**

लोकोत्तरपरिभाषया दिवसभेदे, यस्मिन् दिवसे वीरस्वामिनः निष्क्रमणं केवलज्ञानं च जातम्, कल्प०१ अधि०५ क्षण ।

**सुव्वय-८ पुं० [सुव्रत]**

शोभनं व्रतमस्य, सुव्रतौ वा मातापितरावस्येति सुव्रतः ।  
सामण्णं सव्वेसिं सुव्वतो विसेसो गम्भगता मातापिता य सुव्वता जाता ।  
सामण्णं सव्वेसिं परीसहानामिता । भारते वर्षेऽस्यामवसर्पिण्यां जाते विंशे तीर्थकरे, आव०चू०२ अ० ।

**सुव्वया-१ स्त्री० [सुव्रता]**

इक्ष्वाकुकुलप्रदीपः पञ्चदशतीर्थपतिर्विजयविमाने देवतीर्थश्री-  
भानुनरेन्द्रवेश्मनि सुव्रतादेवीकुक्षौ तनयतयाऽवततार । सम० ।

**सुव्वया-२ स्त्री० [सुव्रता]**

अरिठ्ठनेमेस्तीर्थकरस्य प्रथमश्राविकायाम्, कल्प० १ अधि०७

**सुव्वया-३ स्त्री० [सुव्रता]**

बहुपुत्रिकापूर्वभवजीवभद्रासार्थवाहीप्रव्राजिकायाम्, पुष्कि० ४

**सुव्ववहारकुशल- त्रि० [सुव्ववहारकुशल]**

सुष्ट्वतिशयेन व्यवहारः सुव्ववहारः । स पञ्चविधस्तत्र कुशलो निपुणः । व्यवहारनिपुणे, गच्छा०१ अधि० ।

**सुसंगोविय- त्रि० [सुसङ्गोप्य]**

सुगोपनीये, तं० । ।

**सुसंजमियमण- त्रि० [सुसंयमितमनस्]**

संवृते चेतनाहेतौ, पण्हा०३ अ० ।

**सुसंजय- त्रि० [सुसंयत]**

सुष्टु संयतः सुसंयतः । कूर्मवत् संयतगात्रे, निरर्थककाय-  
क्रियारहिते, सूय०१ श्रु०१६ अ० ।

**सुसंधि- पुं० [सुसंधि]**

सुष्टु सन्धाने, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**सुसंधिय- त्रि० [सुसंधि]**

सुबद्धे, सूय०२ श्रु०१ अ० ।

**सुसंपग्गहिय- त्रि० [सुसंप्रगृहीत]**

सुष्ट्वतिशयेन सम्यङ्गागप्यचलनने परिगृहीते, जीवा०३ प्रति०४ अधि० । रा० ।

**सुसंपिण्ड- त्रि० [सुसंपिण्ड]**

अतिशयेन बद्धे, सुष्ट्वतिशयेन सम्यक् पिण्डं बद्धमरकमण्डलं धूश्च यस्य स सुसंपिण्डारकमण्डलधूस्तस्य । रा० ।

**सुसंभत- त्रि० [सुसंभ्रान्त]**

अत्यन्तं व्याकुलतां प्राप्ते, उत्त०२० अ०

**सुसंभिय- त्रि० [सुसंभृत]**

सुष्टु अतिशयेन संभृतः—संस्कृतः सुसंभृतः सम्यक् संस्कृते सज्जीकृते, उत्त० १४ अ० ।

**सुसंलिट्ठ- त्रि० [सुसंश्लिष्ट]**

सङ्गते, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**सुसंविद्ध- त्रि० [सुसंविद्ध]**

कृतसद्बोधे, उव० ।

सुष्टु संविद्धे चक्रे यत्र मण्डलावृत्ता च धूर्यत्र तेषां, सुसंविद्ध-  
चक्रमण्डलधुराणाम्, भग०७ श०९ उ० ।

**सुसंवुड- त्रि० [सुसंवृत]**

सुसंवृतः परिगतः तथा सुष्टु संवृतं परिहितं येन सः । नाया०१ श्रु०१ अ० । सन्निरुद्धात्मनि, उत्त०२ अ० ।

परिहितदूष्यरत्ने, कल्प०१ अधि०३ । सूय० ।

सुष्टु संवृतः इन्द्रियसंवरणेन यः स सुसंवृतः । उत्त०२ अ० । सूय०

**सुसंवुय- त्रि० [सुसंवृत]**

सुष्टु संवृतं परिहितं येन सः सुसंवृतः । सुपरिधाने, उव० ।

**सुसंहय- त्रि० [सुसंहत]**

सुष्टु अविरले, उव० ।

**सुसज्ज- त्रि० [सुसज्ज]**

सुष्टु अतिशयेन सज्जः । स्वसामग्रीयुक्ततया प्रगुणीभूतेषु, आव०म०१ अ० ।

सुसज्जाः वर्मणि नियुक्ताः वार्मिकास्तैः सन्नद्धः कृतसन्नाहः  
सुसज्जवार्मिकसन्नद्धः बद्धः कवचिकः सन्नाहविशेषो यस्य सः  
तथोक्तः । भग०७ श०१० उ० । उव० ।

**सुसढ-** [सुसढ]

स्वनामख्याते अनगारे, महानि० ।

**सुसण्णप्प-** त्रि० [सुसंज्ञाप्य]

सुखेन संज्ञाप्यन्ते प्रज्ञाप्यन्ते बोध्यन्त इति सुसंज्ञाप्याः । सुखेन प्रज्ञापनीयेषु, ठा० ३ ठा० ४ उ० । बुह०

**सुसद्-** पुं० [सुशब्द]

शोभने माङ्गलिके वा शब्दे, आचा० २ श्रु० १ चू० ४ अ० २ उ० ।

**सुसमत्थ-** त्रि० [सुसमर्थ]

सुष्ठु समर्थे, सूय० १ श्रु० ४ अ० १ उ० ।

**सुसमण-** पुं० [सुसमन]

युगलिकमनुष्यजातिभेदे, जंबू० २ वक्ष० ।

**सुसमदूसमा-** स्त्री० [सुषमदुःषमा]

दुष्टाः समा अस्यामिति दुःषमा, सुषमा चासौ दुःषमा च सुषमदुःषमा । सुषमानुभावबहुलमल्पदुःषमानुभावे अवसर्पिण्यास्तृतीये उत्सर्पिण्याश्च चतुर्थेऽरके, जंबू० २ वक्ष० ।

**सुसमपलिभाग-** पुं० [सुषमप्रतिभाग]

सुषमायाः-सुषमसुषमायाः प्रतिभागः सादृश्यं यत्र काले स । देवकुरुत्तरकुरुषु सुषमसुषमासदृशे काले, भग० २४ श० ३ उ० ।

**सुसमसुसमय-** पुं० [सुषमसुषमज]

सुषमसुषमजः । प्रथमारकजे मनुष्ये, अणुओ० ।

**सुसमसुसमा-** स्त्री० [सुषमसुषमा]

सुषमा चासौ सुषमा च सुषमसुषमा । द्वयोः ससनार्थयोः प्रकृष्टार्थवाचकत्वादत्यन्तसुखस्वरूपे, जंबू० २ वक्ष० ।

**सुसमा-** स्त्री० [सुषमा]

सुष्ठु समा यस्यां सा सुषमा । आवसर्पिण्यां द्वितीयं उत्सर्पिण्याञ्च पञ्चमारके, ठा० १ ठा० ।

**सुसमाउत्त-** त्रि० [सुषमायुक्त]

सुष्ठेवकीभावेन युक्ते, दश० ५ अ० ।

**सुसमाहरण-** न० [सुषमाहरण]

सुष्ठूद्योगेन ग्रहणे, सूय० १ श्रु० ८ अ० ८ उ०

**सुसमाहि-** स्त्री० [सुसमाधि]

स्वस्थचित्तवृत्तौ, सूय० १ श्रु० ३ अ० ४ उ०

**सुसमाहिइंदिय-** त्रि० [सुसमाहितेन्द्रिय]

सुप्रणिहितेन्द्रिये, दश० ७ अ०

**सुसमाहिय-** त्रि० [सुसमाहित]

दर्शनादिषु सम्यगाहिते, आव० ३ अ० ।

ज्ञानदर्शनचारित्ररूपसमाधिवति, दशा० ५ अ० ।

ज्ञानादिषु यत्नपरे, दश० ३ अ० । उद्युक्ते, दश० ६ अ० ।

सुतराम्-अतिशयेन समाधियुक्ते, उत्त० २० अ० ।

**सुसमाहियप्पण-** त्रि० [सुसमाहितात्मन्]

मनोवाक्कायैः सुविशुद्धे, दश० ९ अ० ४ उ० ।

**सुसमाहियलेस्स-** त्रि० [सुसमाहितलेश्य]

सुष्ठु असावद्यानुष्ठानात् शोभना समाहिताः गृहीता लेश्याः अन्तःकरणवृत्तयस्तैजसी-प्रभृतयो वा येन सः सुसमाहितलेश्यः । अकल्मषवृत्तौ, आचा० १ श्रु० ८ अ० ५ उ० ।

**सुसमिय-** त्रि० [सुसमित]

सुष्ठु पञ्चभिः समितिभिः सम्यग् इतः प्राप्तो ज्ञानादिकं मोक्षमार्गमसौ सुसमितः । समितिसहिते, सूय० १ श्रु० १६ अ० । तं० ।

**सुसवण-** त्रि० [सुश्रवण]

सुष्ठु श्रवण शब्दोपलम्भो येषां ते तथा । शोभनश्रवणेषु, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । पण्हा० ।

**सुसागय-** न० [सुस्वागत]

अतिशयेन स्वागते, भग० २ श० १ उ० ।

**सुसाण-** न० [श्मशान]

पितृवने, शवस्थाने, उत्त० ३४ अ० । आचा० । पण्हा० । आव० म०

**सुसाणकम्मत्त-** न० [श्मशानकर्मन्त]

श्मशानगृहे, यत्र शवदाहः क्रियते । आचा० २ श्रु० १ चू० २ अ० २

**सुसाणगिह-** न० [श्मशानगृह]

पितृवनगृहे, भग० ३ श० ७ उ० ।

**सुसाम-** न० [सुसामन्]

सप्तमदेवलोकविमानभेदे, सम० १७ सम० ।

**सुसामण्णया-** स्त्री० [सुश्रामण्यता]

शोभनः पार्श्वस्थादिदोषवर्जिततया मूलोत्तरगुणसंपन्नतया च स चासौ श्रमणश्च तद्भावस्तत्ता निरतिचारचारित्रे, ठा० १० ठा०

**सुसामण्णरय-** त्रि० [सुश्रामण्यरत]

शोभने श्रामण्ये रते, भग० २ श० १ उ० ।

अतिशयेन श्रमणकर्मशक्ते, उव० ।

**सुसामाइय-** त्रि० [सुसामायिक]

सुष्ठु समभावतया सामायिकं समशत्रुमित्रभावो यस्य स सुसामायिकः । सामायिकस्य शोभनेऽनुष्ठानके, सूय० १ श्रु० १६ अ० ।

**सुसाहिय-** त्रि० [सुसाधित]

सुष्ठु प्रतिपादिते, पण्हा० ४ अ० ।

साधु, पण्हा० ४ अ० ।

**सुसाहु-** पुं० [सुसाधु]

निर्वाणसाधकयोगसाधनपरेः साधौ, पण्हा० ४ अ० ।

**सुसाहुयुत्त-** त्रि० [सुसाधुयुक्त]

सुसाधोरुद्यतविहारिणो ये समाचारास्तैः समायुक्तः स्थानशयनासनादावुपयुक्ते, सूय० १ श्रु० १४ अ० ।

**सुसाधुवाइ-** पुं० [सुसाधुवादिन्]

सुष्ठु शोभनं हितं मितं प्रियं वदितुं शीलमस्येत्यसौ सुसाधुवादी ।  
सम्यग्भाषासमिते, सूय० १ श्रु० १० अ० ।

**सुसिक्खा-** स्त्री० [सुशिक्षा]

ग्रहणासेवनाभ्यां सम्यक्पालने, सूय० १ श्रु० १४ अ० । वव० ।

**सुसिणिद्धदंत-** त्रि० [सुसिग्धदन्त]

अरूक्षदन्ते, तं० । ।

**सुसिर-** न० [सुषिर]

अनतादिषु विमानेषु अन्यतमे विमाने, सम० १९ सम० । उव० ।  
काहलादिवत् कोल्लवाद्ये, ठा० २ ठा० ३ उ० । रा० ।

**सुसिलिङ्ग-** त्रि० [सुसिलिङ्ग]

सुसन्धिके, नाया० १ श्रु० १ अ० । तं० । ।

अत्यन्तसङ्गते, । उव० । कल्प० ।

सुघटिते, प्रश्न ०४ अ० रा० ।

सम्बद्धे, रा० ।

अविशर्वरे, भग० ११ श० ११ उ० ।

**सुसिलिङ्गपरिघट्ट-** त्रि० [सुसिलिङ्गपरिघट्ट]

यथा भवत्येवं परिघट्टे, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**सुसीमा-** स्त्री० [सुसीमा]

मन्दरस्य पूर्वे शीताया महानद्या दक्षिणे वत्सस्य विजयक्षेत्रस्य  
राजधान्याम्, । ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**सुसील-** न० [सुशील]

शोभने समाधाने, चारित्रे च । उत्त० १२ अ०

उद्युक्तविहारिणि, सूय० १ श्रु० १ अ० १ उ० ।

सुष्ठु शीलं स्वभावौ यस्येति । उत्त० २ अ० ।

शोभनाचारवति, उव० ।

**सुसीलभय-** त्रि० [सुशीलभूत]

सुष्ठु शोभनं शीलं समाधानं चारित्रं वा प्राप्ते, उत्त० २२ अ० ।

**सुसीलसंसर्ग-** पुं० [सुशीलसंसर्ग]

शीलवद्धिः सम्बन्धे, दश० १० अ०

**सुसुकुसुक-** न० [सुशुल्कशुल्क]

सुष्ठु शुल्कवच्छुल्के, धान्ये, सूय० १ श्रु० ६ अ० ।

**सुसुज्ज-** न० [सुसूय]

विमानभेदे, सम० ।

**सुसुत्त-** न० [सुसूत्र]

सुष्ठु सत्ये सूत्रे, आव० ५ अ० ।

**सुसुमार-** पुं० [सुसुमार]

जलचरविशेषे, पन्न० ।

**सुसूर-** न० [सुसूर]

चतुर्थदेवलोकविमानभेदे, सम० ।

**सुसेण-** पुं० [सुषेण]

अष्टसप्ततितमे ऋषभदेवपुत्रे, कल्प० १ अधि० ७ क्षण ।

भरतचक्रिणः सेनापतौ, जंबू० ३ वक्ष० । आव० म० ।

शाखाञ्जनीराजस्य महाचन्द्रस्यामात्ये, विपा० १ श्रु० ४ अ० ।

शाखाञ्जन्यां नगर्यो सुभद्राख्यसार्थवाहभद्राभिधानतद्धार्ययोः

पुत्रः शकटः स च सुषेणाभिधानामात्येन सुदर्शनाभिधानगा-

णकाव्यतिकरे, सगणिको विनाशितः । ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सुसेणा-** स्त्री० [सुषेणा]

रक्तामहानदीसङ्गतायां महानद्याम्, ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

**सुस्समण-** पुं० [सुश्रमण]

मुनि, आचा० २ श्रु० ४ चू० ।

**सुस्सर-** त्रि० [सुस्वर]

शोभनषड्जादिस्वरविशेषे० पण्हा० ४ अ० । आव० म० । रा० ।

सुस्वरघोषे, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**सुस्सरणाम-** न० [सुस्वरनामन्]

स्वरनामकर्मभेदे, यदुदयवशाज्जीवस्य स्वरः श्रोतृणां प्रीतिहेतु-

रुपजायते तत्सुस्वरनाम । रा० । जंबू० ।

**सुस्सरपरिवायिणी-** स्त्री० [सुस्वरपरिवादिनी]

वीणाविशेषे, पण्हा० ५ अ० ।

**सुस्सरा-** स्त्री० [सुस्वरा]

गीतरतेर्गन्धर्वेन्द्रस्य स्वनामख्यातायामग्रम-हिष्याम्, ठा० ४

ठा० ३ उ० । नाया० । आव० चू० ।

**सुसुयबहुसुय-** पुं० [सुश्रुतबहुश्रुत]

सुश्रुतम् शोभनमाकर्णितं बहुं च श्रुतं येन स सुश्रुतबहुश्रुतः ।

तथाविधे बहुश्रुते, यस्य बह्वपि श्रुतं न विस्मृतिपथमुपयाति स

सुश्रुतबहुश्रुतः । वव० १० उ० ।

**सुस्स-** स्त्री० [धश्रु]

धश्रुस्त्रियाम्, बुह० २ अ० ।

**सुस्सगुञ्ज-** न० [धश्रुगुहा]

धश्रुवाः सम्बन्धिनि गुह्ये, बुह० २ अ० ।

**सुस्सूषण-** न० [सुश्रूषण]

विधिवदनतिदूरासन्नतया सेवने, दश० ९ अ० १ उ० । वव० । आचा०

**सुस्सूषणाविणय-** पुं० [सुश्रूषणाविनय]

दर्शनविनयभेदे, भग० २५ श० ७ उ० ।

**सुस्सूसमाण-** त्रि० [सुश्रूषमाण]

श्रोतुमिच्छति विनययुक्ते, निर० १ अ० । आव० । आव० म० ।

उव० । सूर० । रा० । नाया० । दश० । भग० । आचा० ।

सुश्रूषां कुर्वाणे, सूय० १ श्रु० ९ अ० ।

धर्मं श्रोतुमिच्छति, आचा० १ श्रु० ६ अ० ५ उ० ।

**सुस्सूमा- स्त्री० [शुश्रूषा]**

गुरोरादेशं प्रति श्रोतुमिच्छा सुश्रूषा । गुवदिर्वैयावृत्त्ये, सूय०१  
श्रवणेच्छायाम्, नाया०१ श्रु०१३ अ० ।

**सुस्सूसावयणकर- त्रि० [शुश्रूषावचनकर]**

पूजाप्रधानवचनकरणशीले, दश०९ अ०२ उ० ।

**सुह- न० [शुभ]**

पुण्ये, आव०४ अ० । उत्त० । सूय० । आव०म० ।

संकलेशविरहिते, उत्त०४ अ० ।

सुकर्मणि, ठा० ६ ठा० ३ उ० उव० ।

शुभगन्धस्पर्शात्मके कर्मणि, जीवा०१ प्रति० ।

शोभने, आव०४ अ० । ठा० । उत्त० ।

कल्याणहेतौ, कल्प०१ अधि०३ । रा० ।

कोमले, रा० ।

प्रधाने, रा० । जंबू० ।

मङ्गलभूते, रा० ।

शुभाध्यवसाये तदात्मकत्वात् सामायिके, न० आव० । उव० ।

**सुह- न० [सुख]**

सुखयतीति सुखम्, शर्मणि, नाया०१ श्रु०१ अ० । जीवा० ।  
दशा० । भग० ।

निर्वृत्तौ, कल्प०१ अधि०३ ।

सातोदय, सूय०१ श्रु०२ अ० ।

यथेप्सितविषये, उत्त०७ अ० ।

तृषितस्य जलपान इवानन्दे, ठा० ३ ठा० ४ उ० । आत्मनो  
विशेषगुणं, सुखयुक्ते, । विशेष० ।

**सुहकामय- त्रि० [सुखकामक]**

सुखमानन्दरूपं तं कामयते इति । सुखेच्छौ, भग०१५ श० ।

**सुहग- त्रि० [सुभग]**

सुरूपे, उव० ।

**सुहजीवि- पुं० [सुखजीविन्]**

सुखेन जीवनशीले, 'मज्झिमस्सरमंताओ, हवंति सुहजीविणो ।

खायइ पिपई देई, मज्झिमस्सर-मिस्सओ । अणुओ० ।

**सुहजोग- पुं० [शुभयोग]**

शुभे संयमव्यापारे, पण्हा०१ अ० ।

**सुहज्झाण- न० [शुभध्यान]**

धर्मशुक्ललक्षणे ध्यानभेदे, आव०५ अ०

**सुहड- त्रि० [सुहृत्]**

सुष्ठु हतं क्षुद्रस्य चित्तमिति सुहृत् । दश०७ अ० ।

सम्यक्हृते, उत्त०१ अ० ।

सुहृत्मुपकरणमशिवोपशान्तये । उत्त०१ अ० ।

**सुहणामा- स्त्री० [शुभनामा]**

लोकोत्तररीत्या पक्षस्य पञ्चमितिथि, जंबू०७ वक्ष० । सूर० । चंद०

**सुहणिसण्ण- त्रि० [सुखनिषण्ण]**

अनाबाधवृत्त्योपविष्टे, पण्हा०१ संव द्वार ।

**सुहृत्- त्रि० [सुखार्थ]**

सुखनिमित्त, रा० ।

**सुहृत्ति- पुं० [सुहृत्तिन्]**

गन्धहृत्तिनि, भग०१५ श० ।

स्थूलभद्रस्वामिनां दशपूर्वधरे शिष्ये, कल्प०२ अधि०८ । ठा०

। नाया० । आव०म० । आव० । न० । आव०चू० ।

राजगृहवास्तव्येषु कालोदाय्यादिष्वन्ययूथिकेषु अन्यतमे, भग०७  
श०१० उ० ।

मन्दरस्य दक्षिणपूर्वे शीतायादक्षिणदिग्हृत्तिनिकूटे, जंबू०४ वक्ष० ।

**सुहृदुक्खसंपओग- पुं० [सुखदुःखसम्प्रयोग]**

सुखदुःखयोरकल्पिते योगे, दश०१ अ० ।

**सुहृदुक्खसमणिय- त्रि० [सुखदुःखसमन्वित]**

सुखमानन्दरूपं दुःख मसातोदयरूपमिति ताभ्यां समन्वितो  
युक्तः । सातासातयुक्ते, सूय०१ श्रु०१ अ०३ उ० ।

**सुहृदुक्खिय- त्रि० [सुखदुःखित]**

सुखदुःखोपसपन्नके, वव०४ उ० ।

**सुहृदुहनिव्विसेस- त्रि० [सुखदुःखनिर्विशेष]**

हर्षशोकादिरहिते, प्रश्न ०५ अ० ।

**सुहृपय- न० [सुखपद]**

जइ वि अवराहं ण पत्तो तहा वि पच्छित्तं भवतीति लक्षणे  
प्रायश्चित्तदाने, निसि०१ उ० ।

**सुहृपरिकम्मणा- स्त्री० [सुखपरिकर्मणा]**

सुखा सुखकारिणी परिकर्मणा कृतविश्रामणं यस्यां सा  
सुखपरिकर्मणा । अङ्गसम्बाधनाभेदे, कल्प०१ अधि०३ क्षण ।

**सुहृपसुत्त- त्रि० [सुखप्रसुत्त]**

सुखेनैव शयाने, आव०म० १ अ० । आव० ।

**सुहृप्पदाया- त्रि० [सुखप्रदातृ]**

सुखद, सूय०१ श्रु०३ अ०४ उ० ।

**सुहृफास- त्रि० [सुखस्पर्श]**

सुखः-कोमलः स्पर्शो यस्य स सुखस्पर्शः । शुभस्पर्शे, रा० ।

चंद० । सूर० । सम० । जंबू० ।

सुख-हेतुस्पर्शे, रा० । आव०म० । चंद० ।

**सुहृभोग- पुं० [शुभभोग]**

शुभो-निन्दितो भोगो विषयेषु भोगक्रिया यस्येति ।  
अनिन्दितक्रियायुक्ते, ठा० १० ठा० ३ उ० ।



**सुहभोग-** पुं० [सुखभोग]

सुखभवे सातोदयसंपाद्यत्वात्तस्य भोगः सुखभोगः । सुखभेदे,  
ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सुहभोगि-** त्रि० [सुखभोगिन्]

सुखम्-आनन्तरूपं भुनक्तीति सुखभोगी । सुखाऽऽस्वादके,  
आचा० १ श्रु० २ अ० ३ उ० ।

**सुहमण-** त्रि० [शुभमनस्]

असंक्लिष्टचेतसि, पण्हा० १ अ० ।

**सुहमोय-** त्रि० [सुखमोच]

सुखेन मोच्यन्ते इति सुखमोचाः । सुखपरित्याज्येषु, बुह० २ उ०

**सुहम्म-** पुं० [सुधर्मन्]

वीरजिनेन्द्रस्य पञ्चमे गणधरे, कल्प० २ अधि० ८ क्षण ।

**सुहम्मा-** स्त्री० [सुधर्म्मा]

चमरादीनामिन्द्राणां सूर्यादीनां च महर्द्धिकदेवानां सभा सुधर्म्मा  
सभा । देवसभायाम्, रा० । जंबू० । आव० म० । पण्हा० ।

**सुहय-** त्रि० [सुभग]

मनोरम, उत्त० ८ वर्ग० ।

**सुहर-** त्रि० [सुभर]

न्यूनोदरतया आहारपरित्यागिनि, दश० ८ अ०

**सुहरासि-** पुं० [सुखराशि]

सुखसंघाते, आव० म० १ अ० ।

**सुहरिणिगा-** स्त्री० [सुहरिण्यिका]

वनस्पतिविशेषे । जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**सुहरूव-** त्रि० [सुखरूप]

सातागौरवस्वभावे, सूय० १ श्रु० ९ अ० ।

**सुहलेस्सा-** स्त्री० [सुखलेश्या]

सुखदतेजसि, जंबू० ७ वक्ष० ।

सुखलेश्याश्चन्द्रमसो न शीतकाले मनुष्यलोक इवात्यन्तशीत-  
रश्मय इत्यर्थः, सूर० १९ पाहु० ।

**सुहवाससुरभिगंध-** पुं० [शुभवाससुरभिगन्ध]

शुभवासैः सुन्दरचूर्णैः सुष्ठु गन्धे, तं० । ।

**सुहविण्णप्प-** त्रि० [सुखविज्ञाप्प]

सुखेनैव प्रबोध्ये, सुहविण्णप्पा सुहण्णो त्ति । निसि० २ उ० ।

**सुहविण्णवणा-** स्त्री० [सुखविज्ञापना]

सुखेन विज्ञापना प्रार्थना यस्यां सा । अनायाससाध्यायां  
सुप्रतिसेव्यायां स्त्रियाम्, बुह० १ उ० ३ ।

**सुहविवाग-** पुं० [शुभविपाक]

शुभकर्मपरिणामे विपाकश्रुते, प्रथमविपाके दर्शितोऽयम् ।  
सम० प्र० सम० । सूय० ।

**सुहविवागोत्तम-** त्रि० [शुभविपाकोत्तम]

शुभविपाक उत्तमो येषां ते शुभविपाकोत्तमाः । सम० प्र० सम० ।

**सुहविहार-** पुं० [सुखविहा]

सुखेनैव वासकल्पविधिना विहर्तुं शक्ये बुह० १ उ० ३ ।

**सुहवेयणतर-** त्रि० [सुखवेदनतर]

सुखेन-अक्लेशेन वेदनम्-अनुभवनं यस्यासौ सुखवेदनतरः ।  
अक्लेशेनैव वेद्ये, भग० १४ श० २ उ० ।

**सुहवेयतर-** त्रि० [सुखवेद्यतर]

अकृच्छ्रानुभवनीये, ठा० २ ठा० १ उ०

**सुहसंकमण-** न० [सुखसंक्रमण]

सुखस्य मुक्तिरूपस्य वा विशिष्टगुणप्रकृतिरूपस्य संक्रमणं-  
संक्रान्तिः सुखसंक्रमणम् । संथा० ।

**सुहसंथरण-** न० [सुखसंस्तरण]

सुखेन निस्तारहेतौ, वव० ४ उ० ।

**सुहसण्णा-** स्त्री० [सुखसंज्ञा]

वेदनीयोदयजे सातानुभवे, आचा० १ श्रु० १ अ० १ उ० ।

**सुहसाय-** पुं० [सुखशात]

सुखस्य वैषयिकस्य शातः सुखशातः । वैषयिकस्य सुखस्य  
स्पृहानिवारणेनापयने, उत्त० ।

संयमादिषु सत्स्वपि सुखशातेन एव प्रवर्तनीयम् ।

**सुहसाय-** त्रि० [सुखास्वाद]

सुखम् आनन्दरूपमास्वादयन्तीति सुखा स्वादाः । सुखभोगिषु,  
सुखैषिषु, आचा० १ श्रु० २ अ० ३ उ० ।

**सुहशील-** त्रि० [शुभ-शील]

सुखं शुभं वा सुखकरत्वाच्छीलं स्वभावो यस्य सः सुखशीलः  
शुभशीलो वा । संथा० ।

सुखेन जीवनशीले, निसि० १ उ० ।

**सुहशीलगुण-** पुं० [सुखशीलगुण]

सुखशीलस्य-शाताभिलाषिणो गुणाः-पार्श्वस्थादिस्थानानि  
सुखशीलगुणाः । पार्श्वस्थादिषु शीललगुणेषु, गच्छा० १ अधि० ।

**सुहशीलवियत्त-** त्रि० [सुखशीलव्यक्त]

सुखे शीलं व्यक्तं येषां ते सुखशीलव्यक्ताः । पार्श्वस्थादि-  
मन्दधर्मसु, निसि० १९ उ० ।

**सुहसुरभिमणहर-** पुं० [सुखसुरभिमनोहर]

गन्धान्तरेभ्यः सकाशान्मनोहरेषु, रा० ।

**सुहसेउकेउबहुल-** त्रि० [शुभसेतुकेतुबहुल]

शुभाः-प्रधानाः सेतवो-मार्गा आलवालपाल्यो वा केतवो ध्वत्ता  
बहुला अनेकरूपो येषां ते तथा । अनेकैः शुभैः सेतुभिः  
केतुभिश्च कलिते, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**सुहहत्थ-१ पुं० [शुभहस्त]**

प्रशस्तकरे, विपा०१ श्रु०७ अ० ।

**सुहहत्थ-२ पुं० [सुखहस्त]**

सुखहेतुस्ते, विपा०१ श्रु०७ अ० ।

**सुहाकम्म-न० [सुधाकर्मन्]**

यत्र सुधापरिकर्म क्रियते तादृशे स्थाने दशा०१० अ० । आचा० ।

**सुहाणुबंधि- त्रि० [शुभानुबन्धिन्]**

कुशलं प्रत्यायाति पुनर्बोधिलाभभोगप्रव्रज्याकेवलशेलेश्य-  
पवर्गानुबन्धिषु, आव०४ अ० ।

**सुहाभिगम- त्रि० [सुखाभिगम]**

सर्वजननयनानां कान्ते, सम० ।

**सुहारूहसुहोत्तार- त्रि० [सुखारोहसुखोत्तार]**

सुखेनारोहणमूर्ध्वगमनं सुखेनोत्तारोऽधस्तादवतरणं यस्य  
सोपानपङ्क्त्यादिभिः स सुखारोहसुखोत्तारः । सुखेनोर्ध्वमध-  
स्ताच्च गन्तरि, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**सुहावह-१ त्रि० [सुखावह]**

सुखं शुभं वा आवहतीति सुखावहः । ठा० १० ठा० ३ । दश० ।

**सुहावह-२ त्रि० [सुखावह]**

उभयलोकसुखकरे, जम्बूद्वीपे मन्दरस्य पश्चिमे शीतोदाया  
महानद्या दक्षिणे स्वनामख्याते वक्षस्कारपर्वते, ठा० ४ ठा० १  
देवकुरुषु विजयक्षेत्रपुद्गल-स्वनामख्यातायां नगर्याम्, ठा० ।

**सुहावासा- स्त्री० [सुखावासा]**

विश्वस्तानां निभ्रयानामनुत्सुकाचा वा सुखः सुखस्वरूपः  
आवासो यस्यां सा सुखावासा । नाया०१ श्रु० १ अ० ।

सुखदवसतौ, रा० । उव० ।

**सुहासणत्थ- त्रि० [शुभासनस्थ]**

शुभे आसने निषण्णे, वव०२ अ०

**सुहासव- पुं० [शुभाश्रव]**

पुण्याश्रवे, आव०४ अ० ।

**सुहि- त्रि० [सुखिन्]**

सुखमस्यास्तीति सुखी । दश०२ अ० ।

सुखं प्राप्ते, उव० । पत्र० । उत्त० ।

**सुहिय- त्रि० [सुहित]**

सुष्ठु हितं ज्ञानादित्रयं येषां ते सुहिताः रत्नाधिकेषु, जीवा० ।  
आचा० ।

**सुहियजण- पुं० [सुहज्जन]**

हितैषिणि, ठा० ४ ठा० ३ उ० ।

**सुहिरणिया- स्त्री० [सुहिरण्यिका]**

वनस्पतिविशेषे, आव०म०१ अ० रा० । पत्र० । न० ।

**सुहिरीमण- त्रि० [सुहीमनस्]**

सुष्ठु हीर्लज्जा तस्यां मनोऽन्तःकरणं येषां ते सुहीमनसः ।  
लज्जालुषु, सूय०१ श्रु०१६ अ० ।

**सुहुत्तमवरिष्ठ- त्रि० [उत्तमसुखवरिष्ठ]**

उत्तमं च तत्सुखं च तेन वरिष्ठा वरतमाः । सुखोत्तमेन श्रेष्ठेषु,  
आचा०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।

**सुहुत्तर- त्रि० [सुखोत्तर]**

सुखेन तीर्यते इति सुखोत्तरः । सुखाल्लङ्घनीय, उत्त०२ अ० ।

**सुहुम-१ त्रि० [सूक्ष्म]**

मन्द, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

अत्यन्तगहने, आव०४ अ० ।

सार, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

मृदुत-स्पर्शे अर्थे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**सुहुम-२ त्रि० [सूक्ष्म]**

सूक्ष्मनामकर्मोदयात् सूक्ष्माश्चैते ये सर्वस्तोकावन्नाः । ठा० २  
ठा० १ उ० ।

येषां परिणामस्सूक्ष्मस्ते सूक्ष्माः । ठा० २ ठा० ३ उ० । उत्त० ।  
लोभाणूनवेदयन् सूक्ष्मो भण्यते सूक्ष्मसम्पराय इत्यर्थः । आव०४  
अ० । सूय० ।

**सुहुम-३ त्रि० [सूक्ष्म]**

सूक्ष्मो ऽसंख्यातकिट्टिकावेदनतः, ठा० २ ठा० १ उ० ।

सूक्ष्मनामर्भोद्धवे । पण्ठा० ।

सूक्ष्मनामकर्मोदयवर्तित्वात्, पृथिव्यादिषु एकेन्द्रियेषु, सम० ।  
न० । ठा० ।

**सुहुमअपज्जत- पुं० [सूक्ष्मापर्याप्त]**

सूक्ष्मनामकर्मोदयवर्तिषु एकेन्द्रियापर्याप्तकेषु, सम०१४ सम० ।

**सुहुमकाय- पुं० [सूक्ष्मकाय]**

हस्तादिके, वस्तुनि, इति वृद्धाः । वस्त्र, भग०१६ श०३ उ० ।

**सुहुमकाल- पुं० [सूक्ष्मकाल]**

यावता वालाग्रसङ्ख्यातखण्डैः स्पृष्टाश्चास्पृष्टाश्चोद्ध्रियन्ते स कालः  
सूक्ष्मः । सूक्ष्मे काले, ठा० २ ठा० ४ उ० ।

**सुहुमकिरिय- न० [सूक्ष्मक्रिय]**

सूक्ष्मा क्रिया यत्र निरुद्धवाङ्मनोयोगत्वं सत्यर्धनिरुद्धयोगत्वा-  
त्तत्सूक्ष्मक्रियम् । शुक्लध्यानन्यतृतीयभेदे, भग०२५ श०७ उ० ।  
ठा० । गच्छा० । आव० ।

**सुहुमतस- पुं० [सूक्ष्मत्रस]**

तेजोवायुषु, द्वीन्द्रियादीनां बादरत्रसत्वात् ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**सुहुमपुढविकाय- पुं० [सूक्ष्मपृथिवीकाय]**

सूक्ष्मनामकर्मोदये वर्त-माने पृथिवीकायिके, पत्र०१ पद ।

**सुहुमबौदिकलेवर-** पुं० [सूक्ष्मबोन्दिकलेवर]

सूक्ष्मबोन्दीनिःसूक्ष्माकाराणि  
कलेवराण्यसंख्यातखण्डीकृतवालुकाकणारूपाणि यत्रोद्गारे स  
तथा गोशालकपरिभाषया उद्धारकालभेदे, भग० १५ श० ।

**सुहुमरयदीहवाल-** त्रि० [सूक्ष्मरजतदीर्घवाल]

सूक्ष्मा रजतमया दीर्घा वाला येषां तानि तथा । सूक्ष्म-  
रजतमयवालवत्सु, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**सुहुमवायुसरी-** पुं० [सूक्ष्मवायुशरीर]

वायुरेव शरीरं येषां ते तथा, सूक्ष्माश्च ते वायुशरीराश्च वायु-  
कायिकाः सूक्ष्मवायुशरीराः । सूक्ष्मवायुकायिकेषु, भग० १९ श० ३

**सुहुमसंपराय-** न० [सूक्ष्मसम्पराय]

सम्पर्येति संसारमनेनेति सम्परायः कषायोदयः सूक्ष्मो लोभा-  
शावशेषः सम्परायो यत्र तत्सूक्ष्मसम्परायम् । चारित्रभेदेषु  
चतुर्थे चारित्रे, आव० म० १ अ० । विशेष० ।

इदमपि द्विविधं विशुद्ध्यमानकम्, संक्लिश्यमानकं च । तत्र  
विशुद्ध्यमानकं क्षपकोपशमश्रेणिद्वयमारोहतो भवति संक्लि-  
श्यमानकं तूपशमश्रेणेः प्रच्यवमानस्य प्राप्तये । विशेष० ।

इह सख्येयानि लोभखण्डानि उपशमयन् बादरसम्पराय  
उच्यते, चरमस्य तु संख्येयखण्डस्यासंख्येयानि खण्डानि प्रति-  
समयमेकैकखण्डमुपशमयन् सूक्ष्मसम्परायः । आव० म० १ अ० ।

**सुहुमसंपरायचरित्तलद्धि-** स्त्री० [सूक्ष्मसम्परायचारित्रलब्धि]

संपरैतिपर्यटति संसारमेभिरिति सम्परायाः-कषायाः । सूक्ष्मा  
लोभां शावशेषरूपाः सम्पराया यत्र तत् तस्य चारित्रस्य  
लब्धिस्तथा चारित्रभेदे, भग० ८ श० २ उ० ।

**सुहुमसल्ल-** न० [सूक्ष्मशल्ल]

सूक्ष्मे गर्वात्मके शल्ले, सूय० ।

**सुहुमुस्सास-** पुं० [सूक्ष्मोच्छ्वास]

अल्पे अल्पपरिमाणे उच्छ्वासे, सूक्ष्मोच्छ्वासमेव यतनया मुञ्च-  
न्ति नोल्बणं मा भूत्सत्त्वघातः । आव० ५ अ० ।

**सुहुय-** त्रि० [सुहुत]

घृतादितर्पिते, नाया० १ श्रु० ५ अ० उव० ।

**सुहुयहुयासण-** पुं० [सुहुतताशन]

घृतादितर्पितवैश्वानरे, सुहुयहुयासणो व्व तेयसा जलंते  
घृतादितर्पितवैश्वानरवत्प्रभया दीप्यमाने, जीवा० ३ प्रति० १ ।

**सुहेसग-** त्रि० [सुखैषक]

सुखस्य एषकः सुखैषकः याजकादित्वा-त्समासः । सुखार्थिनि,  
आचा० १ श्रु० २ अ० ३ उ० ।

**सुहेसि-** त्रि० [सुखैषिन्]

सुखलालसे, । आचा० । सूय०

**सुहोदय-** न० [शुभोदक]

पवित्रस्नानाहते गन्धोदके, नाया० १ श्रु० १ अ० ।  
तीर्थोदके, जंबू० ३ वक्ष० ।

**सुहोदय-** न० [सुखोदक]

नात्युष्णशीते, जले, उव० ।

**सूइअ-** त्रि० [सूचित]

तिरस्कृते, बुह० २ उ० ।

व्यञ्जनादियुक्ते, दश० ५ अ० १ उ० ।

श्लाघिते, बुह० १ उ० ।

**सूई-** स्त्री० [सूची]

वस्त्रसीवनोपकरणे, बुह० ३ उ० । जीत० । सूय० ।

यया वस्त्र सीव्यते, बुह० ३ उ० ।

**सूईतल-** न० [सूचीतल]

ऊर्ध्वमुखसूचीके भूतले, पण्हा० १ अ०

**सूईफल-** [सूचीफलक]

सूचीभिरसंबन्धितेषु फलकप्रदेशेषु, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**सूईमुह-** न० [सूचीमुख]

यत्र प्रदेशे सूची फलकं भित्त्वा मध्ये प्रविशति तत्प्रत्यासन्ने देशे,

जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । रा० ।

द्वीन्द्रियजीवभेदे, पत्र० १ पद ।

पक्षिभेदे, पण्हा० १ आश्र० द्वार ।

**सूकर-** पुं० [शूकर]

वराहे, पण्हा० २ अ०

**सूणत्त-** न० [सूतत्व]

वातपित्तश्लेष्मसन्निपात-रक्ताभिघातजेशोथे, वातपित्तश्लेष्म-  
सन्निपातरक्ताभिघातजोऽयं षोढा, उक्तं च-'शोफः स्यात्  
षड्विधो घोरो, दोषैरुत्सेधलक्षणः । व्यस्तैः समस्तैश्चापीह, तथा  
रक्ताभिघातजः । आचा० १ श्रु० ६ अ० १ उ० ।

**सूणा-** स्त्री० [सूना]

वधस्थाने, तं० । । गच्छा० ।

**सूणारंभपवत्तग-** त्रि० [शूनारम्भप्रवर्तक]

खण्डन्याद्यारम्भकर्त्तरि, गच्छा ०२ अधि० ।

**सूत्तम-** त्रि० [सूतम]

अतिप्रधाने, गच्छा० १ अधि० ।

**सूमालिया-** स्त्री० [सुकुमारिका]

तैलविशेषे, बुह० १ उ० २ ।

चम्पानगर्या सागरदत्तसार्थवाहस्य सुतायाम्, नाया० १ श्रु० १६

**सूय-** न० [सूत्र]

सूचनात्सूत्रं निपातनात् रूपनिष्पत्तिः भावप्रधानश्चायं न० ।

**सूच-** धा०

ज्ञापने, सूएइ । सूचयति । बुह०२ ।

**सूयग-** न० [सूतक]

आशौचे, वव०१ उ० ।

‘जायमजायसूयगेसु निज्जूढा’ वव० १ उ० ।

सूतके विचारः पुत्रजन्मनि तद्देहे दशदिनपर्यन्तं भोजनं न कर्तव्यम् । बुह० ।

‘तस्स परे तिन्नि पक्खी सूयतो प्रयणसलागा कुक्कुडगो’ आव० म० १ अ० ।

**सूयगड-** न० [सूत्रकृत]

प्रवचनपुरुषस्य द्वितीयऽङ्गे, न० ।

**सूयगो-** स्त्री० [सूतगवी]

अभिनवप्रसूतायां गवि, विट्ठतो परिसप्यंति, सूयगो व अदूरए । सूय०१ श्रु०३ अ०२ उ० ।

**सूयपाय-** त्रि० [शूनपाद]

संजातपादशोथे, विपा०१ श्रु०७ अ० ।

**सूयर-** पुं० [शूकर]

पशुविशेषे, विड्वराहे । सूय० । विपा० । आव०म० ।

‘सूणियाभावं साणस्स, सूयरस्स नरस्स य । विणए ठविज्ज अप्पाणं, इच्छंतो हियमप्पणो ।’ उ०१अ

**सूयरिय-** त्रि० [शौकरिय]

शूकरवधार्थं चरन्तीति शोकरिकाः । शूकरमांसोपजीविनि, अणुओ० ।

**सूया-** स्त्री० [शूचा]

व्याज, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

अप्पणो दोसं भासति न परस्स एसा असूया, य अप्पणो फुडमेव दोसं भासति एसा सूया । निसि०१० उ० ।

स्वपरसमयसूचने, सूय०१ श्रु० १ अ०१ उ० ।

स्वव्यपदेशेन परस्वरूपकथने, बुह०१ उ० ३

**सूरकंत-१ पुं० [सूर्यकान्त]**

सूर्यखरकिरणसम्पर्कादन्धकारमोचके सणिभेदे, पन्न०१ पद । उ० । सूय० । भग० ।

**सूरकंत-१ पुं० [सूर्यकान्त]**

चतुर्थदेवलोकस्थे विमानभेदे, । सम०५ सम० ।

**सूरकूड-** न० [सूर्यकूट]

चतुर्थदेवलोकस्थे विमानभेदे, सम०५ सम०

**सूरचरिए-** न० [सूर्यचरित]

रविचरिते, सूर्यचरितं त्विदं सूर्यमण्डलपरिमाणराशि परिभोगो-  
द्घोतावकाशराहूपरागादिकम् । सूय०२ श्रु०२ अ० । सम० ।

**सूरण-** पुं० [शूरण]

अशौघकन्दे, । उव० । आचा० । उ० । जीवा० । पन्न० । भग० । सम०  
स्वनामख्याते एकचत्वारिंशतितमे ऋषभदेवस्य पुत्रे, कल्प०१  
अ०७ ।

**सूरदह-** पुं० [सूर्यहृद]

जम्बूद्वीपे देवकुले स्वनामख्याते महाहृदः ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

**सूरदीव-** पुं० [सूर्यद्वीप]

जम्बूद्वीपगतसूर्यदेवके लवणसमुद्रगते द्वीपे, जीवा०३ प्रति०४

**सूरदेव-** पुं० [सूरदेव]

जम्बूद्वीपे आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां भविष्यति द्वितीये तीर्थकरे, ।  
सम० ।

**सूरपरिवेस-** पुं० [सूर्यपरिवेष]

सूर्यस्य परितो वलयाकारपरिणतौ । अणुओ० । जीवा० ।

**सूरपव्वय-** पुं० [सूर्यपर्वत]

मेरुपर्वतस्य पश्चिमवनखण्डवेदिकान्तविजयस्य दक्षिणस्यां  
दिशि पर्वतभेदे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

सीतोदाया उत्तरे पार्श्वे महावक्रविजयक्षेत्रे वक्षस्कारपर्वते, जंबू  
४ वक्ष० । ठा० ।

**सूरपाणिलेह-** पुं० [सूर्यपाणिलेख]

सूर्य इव सूर्याकाराः पाणौ लेखा येषां ते सूर्यपाणिलेखाः ।  
सूर्याकृतिरेखायुतहस्तेषु, जीवा०३ प्रति ०४ । पन्हा० ।

**सूरपुरंगम-** पुं० [शूरपुरंगम]

शूराणामग्रगामिनि, सूय०१ श्रु०३ अ० ३ उ० ।

**सूरप्पभ-** न० [सूर्यप्रभ]

चतुर्थे देवलोकसत्के विमानभेदे, सम०५ सम० ।

**सूरप्पभा-** स्त्री० [सूर्यप्रभा]

एकादशस्य तीर्थकृतो निष्क्रमणशिविकायात्, सम० । जीवा० ।  
सूर्यस्य ज्योतिष्केन्द्रस्याग्रमहिष्यात्, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**सूरप्पमाणभोइ-** पुं० [सूर्यप्रमाणभोजिन्]

सूर्योदयादस्तमयं यावदशनपानाद्यभ्यवहारिणि, सम० २०  
सम० । आव०चू० । दशा० ।

‘सूर एव पमाणं .....

तस्स उदयमेत्ते आरद्धो जाव ण अत्यमेइ ताव भुंजइ  
सज्झायमादी न करेइ परिचोइओ रुस्सइ अजीरगादी असमाधी  
उप्पज्जति । आव०४ अ० ।

**सूरभह-** पुं० [सूर्यभद्र]

सूर्यद्वीपदेवे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**सूरमंडल-** न० [सूर्यमण्डल]

आदित्यविमानवृत्ते, सम०१० सम० ।

**सूरमग- पुं० [सूर्यमार्ग]**

सूर्यमण्डलचारमार्गे, सूर०१० पाहु० ।  
सूर्यस्य मण्डलगत्या परिभ्रमणे, चंद०१० पाहु० ।

**सूरमहाभद्र- पुं० [सूरमहाभद्र]**

सूर्यद्वीपस्य पश्चार्द्धदेवे, जीवा०३ प्रति ०४ अधि० ।

**सूरमहावर- पुं० [सूरमहावर]**

सूर्यसमुद्रस्य सूर्यवरसमुद्रस्य च परार्द्धाधिपतौ देवे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**सूरमालिया- स्त्री० [सूर्यमालिका]**

दीनाराद्याकृतिमालायाम्, उव० ।

**सूरमरीइ- पुं० [सूर्यमरिचि]**

आदित्यकिरणेषु, सूरमरीइकवयं विणिम्मुयमाणेहिं । पणहा०४ अ०  
सूर्यआदित्यकिरणास्त एव मरीचयः सूर्यमरीचयस्तेषां कवच-  
मिव कवचं परिकरः परितोभावात् तं विनिर्मुञ्चद्विर्विकरद्भिः ।  
पणहा०४ अ०

**सूरलेस्स- न० [सूरलेश्य]**

चतुर्थदेवलोकविमानभेदे, सम०५ सम० ।

**सूरल्लि- पुं० [सूरल्लि]**

वनस्पतिविशेषे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**सूरल्लिमंडवग- पुं० [सूरल्लिमण्डपक]**

सूरल्लिर्वनस्पतिविशेषस्तन्मया मण्डपकाः सूरल्लिमण्डपकाः ।  
सूरल्लिवनस्पतिमयेषु मण्डपकेषु, जीवा० ३ प्रति०४ अधि० ।

**सूरवण्ण- न० [सूर्यवर्ण]**

चतुर्थदेवलोकविमानभेदे, सम०५ सम० ।

**सूरवर- पुं० [सूर्यवर]**

स्वनामख्याते द्वीपे, समुद्रे च । तत्र सूर्यवरे द्वीपे सूर्यवर-  
भद्रसूर्यवरमहाभद्रौ, सूर्यवरे समुद्रे सूर्यवरसूर्यमहावरौ देवौ ।  
सूर०२० पाहु० । जीवा० । चंद० ।

**सूरवरभद्र- पुं० [सूरवरभद्र]**

सूर्यवरद्वीपस्य पूर्वार्द्धाधिपतौ देव, जीवा० ३ प्रति०४ अधि० ।

**सूरवरमहाभद्र- पुं० [सूरवरमहाभद्र]**

सूर्यवरद्वीपस्य परार्द्धाधिपतौ देव, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**सूरवरोभास- पुं० [सूरवरावभास]**

द्वीप, समुद्र । तत्र सूर्यवरावभासे द्वीपे सूर्यवरावभासभद्र  
सूर्यवरावभासमहाभद्रौ देवौ । सूर्यवरावभाससमुद्रे सूर्यवराव-  
भासवरसूर्यवरावभासमहावरौ देवौ । जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।  
सूर्यवरावभाससमुद्रवेष्टिते द्वीपे, सूर० २० पाहु० ।

**सूरवरोभासभद्र- पुं० [सूरवरावभासभद्र]**

सूर्यवरावभासद्वीपस्य पूर्वार्द्धाधिपतौ देवे, जीवा०३ प्रति०४

**सूरवरोभासमहाभद्र- पुं० [सूरवरावभासमहाभद्र]**

सूर्यवरावभासद्वीपस्य परार्द्धाधिपतौ देवे, जीवा०३ प्रति०४

**सूरवरोभासमहावर- पुं० [सूरवरावभासमहावर]**

सूर्यवरावभाससमुद्रस्य पश्चार्द्धाधिपतौ देवे, जीवा०३ प्रति०४

**सूरवरोभासवर- पुं० [सूरवरावभासवर]**

सूर्यवरावभाससमुद्रस्य पूर्वार्द्धाधिपतौ देवे, सूर०१९ पाहु० ।

**सूरवाइ- पुं० [शूरवादिन्]**

शूरमात्मानं वदितुं शीलमस्येति शूरवादी । शूरमन्ये, सूर्य० १ श्रु०  
४ अ० १ उ० ।

**सूरविमाण- न० [सूरविमान]**

सूर्यसत्के विमाने, पन्न०४ पद ।

**सूरसंवच्छर- पुं० [सूरसंवत्सर]**

आदित्यसंवत्सरे, सूर०१० पाहु० ।

**सूरसिंग- न० [सूरशृङ्ग]**

चतुर्थदेवलोकस्य स्वनामख्याते विमाने, सम०५ सम० ।

**सूरसिद्ध- न० [सूरसिद्ध]**

चतुर्थदेवलोकस्य स्वनामख्याते विमाने, सम०५ सम० ।

**सूरसिरी- स्त्री० [सूर्यश्री]**

जम्बूद्वीपे सप्तमस्य चक्रवर्तिनो भार्यायाम्, सम० ।

**सूरसेण-१ पुं० [सूरसेन]**

मथुराप्रतिबद्धेषु जनपदभेदेषु, ठा० १० उ० । पन्न० । सूर्य० ।

**सूरसेण-२ पुं० [सूरसेन]**

उदयसेनस्य राज्ञः स्वनामख्याते पुत्रे, आचा०१ श्रु०४ अ०१ उ० ।

**सूरसेण-३ पुं० [सूरसेन]**

ऐरवतवर्षे चतुर्विंशतितीर्थकृत्सु चतुर्दशे तीर्थकरे, सम० ।

**सूरादिय- त्रि० [सूरादिक]**

सूरः—सूर्य आदिर्यस्य स सूरादिकः । सूरादिकाः—सूरकारणाः,  
तथाहि सूर्योदयमवधिं कृत्वाऽहोरात्रारम्भकः समयो गण्यते  
नान्यथा एवमावलिकादयोऽपि सूरादिका भावनीयाः । चंद० २०  
पाहु० । सूर० ।

**सूराभ- न० [सूर्याभ]**

पञ्चमदेवलोक विमानविशेषे, सम०८ सम० ।

**सूरावत्त- न० [सूर्यावर्त्त]**

स्वनामख्याते चतुर्थदेवलोकस्य विमाने, सम०५ सम० ।

**सूरासूरीया- स्त्री० [शूराशूरीया]**

भोजनेऽयं शूरोऽयञ्च शूरो भुङ्क्तां यथेष्टमित्येवंभूतायां परिवेषण  
क्रियायाम्, नाया०१ श्रु०५ अ० ।

**सूरि- पुं० [सूरिन्]**

सदाचार्ये, गच्छा०१ अधि० ।



**सूरिअ-** पुं० [सूर्य]

आदित्ये, अणुओ० । उत्त० । ठा० ।

**सूरियकंत-** पुं० [सूर्यकान्त]

श्वेताम्बिकानगरीराजस्य प्रदेशिनः पुत्रे, रा० ।

**सूरियकंता-** स्त्री० [सूर्यकान्ता]

श्वेताम्बिकानगरीराजस्य प्रदेशिनोऽग्रमहिष्याम्, रा० ।

स्वनामख्यातायां सूर्यदेवाग्रमहिष्याम्, भग० १४ श० ९ उ० ।

**सूरियपीठ-** न० [सूर्यपीठ]

सूर्यदेवतापूजनस्थाने,

तत्र पूर्वमृषभदेवेन भगवता यत्र यत्र भिक्षा लब्धा तत्र तत्र श्रेयांसेन पीठानि कृतानि, तानि क्रमात् सौरैरायत्तीकृतानि सौरपीठत्वेन पूज्यन्ते स्म । आव० ।

**सूरियमंडलभ्रंश-** न० [सूर्यमण्डलाभ्यन्तर]

सूर्यचारकथने, जंबू०७ वक्ष० ।

**सूरियलेस्सा-** स्त्री० [सूर्यलेश्या]

सूर्यप्रभायाम्, चंद० ।

**सूरियसुद्धलेस्स-** त्रि० [सूर्यशुद्धलेश्य]

सूर्यसदृशे तेजसि, सू०१ श्रु० ६ अ० ।

**सूरियाभ-** न० [सूर्याभ]

स्वनामख्याते विमाने, रा० ।

स्वनामख्याते देवे च । रा० ।

**सूरियावर्त-** पुं० [सूर्यावर्त]

सूर्य उपलक्षणमेतच्चन्द्रनक्षत्रतारकाश्च प्रतिक्षणमावर्तन्ते यस्य स सूर्यावर्तः । मेरुपर्वते, सू०५ पाहु० । सम० । जंबू० । चंद० । चतुर्थदेवलोकस्थे विमानभेदे, सम० ५ सम० ।

**सूरियावरण-** पुं० [सूर्यावरण]

सूर्यरूपलक्षणमेतच्चन्द्रनक्षत्रतारकाभिश्च समन्ततः परिभ्रमण-शीलैरात्रियते आवेष्टयते इति सूर्यावरणः । मेरुपर्वते, चंद० ५ पाहु० । सू० ।

**सूरिल्लि-** पुं० [सूरिल्लि]

वनस्पतिविशेषे, जंबू०१ वक्ष० ।

**सूरीकंता-** स्त्री० [सूरीकान्ता]

स्वनामख्यातायां पुरुषवधकारिकायाम्, तं० ।

**सूरुगमणमुहुत्त-** पुं० [सूर्योद्गमणमुहूर्त]

उदयोपेते मुहूर्ते, जंबू०१ वक्ष

**सूरोगमणपविभक्ति-** न० [सूर्योद्गमणप्रविभक्ति]

नाट्यविधानभेदे, रा० ।

**सूरोदय-** पुं० [सूर्योदय]

प्रथमायां पौरुष्याम्, आव०म०१ अ० ।

**सूरोदयादि-** त्रि० [सूर्योदयादि]

सूर्योदय आदौ यस्याः सा सूर्योदयादिः । सूर्योदयादारम्भेत्यर्थे, आव०म०१ अ० ।

**सूरोपराग-** पुं० [सूर्योपराग]

सूर्यस्यसूर्यविमानस्योपरागो राहुविमानतेजसोपरञ्जनं सूर्योप-रागः । ग्रहणे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

उत्पत्तिविशेषे, भग०३ श०५ उ० । अणुओ० ।

**सूल-** न० त्रि० [शूल]

त्रिशूले, पण्हा०१ अ० उत्त० ।

एकशूले, उव० ।

आयुधभेदे, जंबू०३ वक्ष० । सूय० । आव०म० । पण्हा० ।

रोगभेदे, नाया०१ श्रु०१३ अ० । निसि० ।

**सूलग-** न० [शूलाग्र]

शूलकान्ते, पण्हा०३ अ०

**सूलपाणि-** पुं० [शूलपाणि]

ईशानदेवे तस्य हस्तधृतशूलस्वात् पत्र० २ पद ।

अस्तिग्रामाभिधानसन्निवेशाद्बहिः शूलपाणियक्षायतनम् । ठा०

**सूला-** स्त्री० [शूला]

त्रिशूलिकायाम्, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।

**सूलाइय-** न० [शूलाचित]

शूलप्रोते, नाया०१ श्रु०९ अ० । उव० । सूय० ।

शूलारोपिते, यस्य गुदे प्रोती शूले वदने निर्गच्छति । दशा०१ अ०

**सूलाइय-** त्रि० [शूलायित]

शूलसदृशे, आचरितशूलारूपभृकुटितपरिकत्वात्, नाया०१ श्रु०९

**सूलाभिण्ण-** न० [शूलाभिन्न]

मध्यविक्षते, ठा० ६ अ० ।

**सूलारोवण-** न० [शूलारोपण]

शूलिकाप्रोतने, सूय०१ श्रु०८ अ० ।

**सूलि-** पुं० [शूलिन्]

शिवे, उत्त० ।

**सूलिया-** स्त्री० [शूलिका]

कीलकविशेष, पण्हा०१ अ०

**सूव-** पुं० [सूप]

दालि, सूप उवा०१ अ० । सू० । आचा० ।

पत्र शाक, सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ० ।

**सूवच्छेज-** न० [सूपच्छेद्य]

पत्रशाकच्छेदने, सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ०

**सूवणीय-** त्रि० [सूपनीत]

सुष्ठूपनीते, आचा०१ श्रु०५ अ०२ उ० ।

**सूवविहिपरिमाण-** न० [सूपविधिपरिमाण]

दालिप्रकारपरिमाणे, उवा० १ अ० ।

**सूसरवंटा-** स्त्री० [सुस्वरघण्टा]

सुस्वराभिधानायां घण्टायाम्, रा० ।

**सूसव-** पुं० [सुश्रव]

कर्णसुखशब्दे, आव० ४ अ० ।

**से-** अव्य० [देशी] । से ।

अव्य प्रस्तुतपरामर्शे, जंबू० १ वक्ष० ।

मागधीदेशीप्रसिद्धो निपातः अथ शब्दार्थे, स च वाक्यो-  
पपन्नार्थः । नाया० । उपन्यासे, उत्त० २ अ० ।

निश्चये, से नूनमिति । तन्नूतम् । उत्त० २ अ० ।

से इति मागधदेशीवचनः प्रथमान्तो निर्देशः । आचा० २ श्रु० १  
चू० १ अ० १ उ० ।

से शब्दस्तच्छब्दार्थे स च वाक्योपन्यासार्थः । आचा० १ श्रु० ६  
अ० १ उ० । सूय० । उत्त० । आव० । जीवा० । दश० । निसि० ।  
सेशब्दो मागधदेशीप्रसिद्धो निपातस्तत्रशब्दार्थे अथशब्दार्थे वा  
द्रष्टव्यः स च वाक्योपन्यासार्थः । दशा० ४ अ० ।

निर्देशे, दशा० ५ अ०

से शब्दो मागधदेशीप्रसिद्धोऽथशब्दार्थे । अथशब्दस्तु वाक्योप-  
न्यासार्थः, परिप्रश्नार्थो वा, यदाह-अथ प्रक्रिया प्रश्नानन्तर्यम-  
ङ्गलोपन्यासप्रतिवचनसमुच्चयेषु, भग० १ श० १ उ० ।

क्वचिदसावित्यर्थे, क्वचित्तस्येत्यर्थे, ठा० १० ठा० ३ उ० । भग० ।  
निसि० उव० । रा० । जंबू० ।

से इत्यात्मनिर्देशे, सोऽहमेवमुपलब्ध्वाऽनेकाफ्कायतत्त्ववृत्तान्तो  
ब्रवीमि । आचा० १ श्रु० १ अ० ३ उ० ।

**सेइया-** स्त्री० [सेतिका]

द्वाभ्यां प्रसृतिभ्यां निष्पन्ने धान्यमानविशेषे, तं० । । नाया० ।  
उव० । ठा० । आचा० ।

**सेउ-** पुं० [सेतु]

जलोपरिनिबद्धे मार्गविशेषे, पण्हा० १ अ० जंबू० । आव० चू० ।  
रा० । ठा० । नाया० । जीवा० । उव० ।

अलिबन्धे, उव० ।

आलबालपाल्याम्, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

**सेउगर-** त्रि० [सेतुकर]

सेतुं मार्गपद्धतानां निस्तारणोपायं करोति यः स सेतुकरः । ठा०  
९ ठा० ३ उ० ।

मार्गप्रदर्शके, रा० । सूय० । नाया० । उव० ।

**सेउक्खेत-** न० [सेतुक्षेत्र]

अरघट्टादिसेक्ये क्षेत्रे, आव० ६

**सेंटिय-** न० [सेण्टित]

सेण्टने नासिकाशब्दविशेषकरणे, विशेष० । पत्र० ।

**सेंधव-** न० [सैन्धव]

सिन्धुदेशजे, लवणे अश्वे च । सूय० १ श्रु० ७ अ० ।

**सेखरय-** पुं० [शेखरक]

शिरोवेष्टने, ठा० ५ ठा० १ उ० ।

**सेज्जा-** स्त्री० [शय्या]

संस्तारके, संथा० ।

**सेडसासव-** पुं० [श्वेतसर्षप]

श्वेतवर्णे सर्षपभेदे, चत्वारि मधुरतृणफलानि मधुरतृणतन्दुलाः  
समयविषये सकलजगत्प्रसिद्ध एकः श्वेतसर्षपः । ज्यो० १ पाहु०

**सेडियग-** न० [सेटितक]

तृणभेद, पत्र० १ पद ।

**सेडिया-** स्त्री० [श्वेतिका]

खटिकायाम्, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ६ उ० ।

शुक्लमृत्तिकायाम्, दश० ५ अ० १ उ० ।

**सेडी-** स्त्री० [सेडी]

लोमपक्षिभेदे, पत्र० १ पद ।

**सेडीवह-** पुं० [सेडीवह]

लोमपक्षिभेदे, जीवा० १ प्रति० ।

**सेडुय-** पुं० [सेटुक]

कर्पासे, सेडुओ कप्पासो रूयं उट्टियं रूयं पडलं पिंजयं तमेव  
वलित पेलू भणति । निसि० ५ उ० । बुह० ।

कौशाम्बीनगरीवास्तव्यस्वनामख्याते विप्रे, आव० ४ अ० ।

**सेढी-** स्त्री० [श्रेणि]

पङ्क्तौ, अणुओ० । भग० ।

अङ्गुलप्रमाणे प्रतरक्षेत्रे यः श्रेणिः-राशिस्तत्र किलासंख्येयानि  
वर्गमूलानि तिष्ठन्तीति । अणुओ० ।

**सेढिआयय-** न० [श्रेण्यायत]

प्रदेशिकश्रेणिरूपे आयते, भग० २५ श० ३ उ० ।

**सेढिचारण-** पुं० [श्रेणिचारण]

चतुर्योजनशतोच्छ्रितस्य निषधस्य नीलस्य वा अद्रेष्टङ्कच्छिन्नां  
श्रेणिमुपर्यधो वा पादनिक्षेपोत्क्षेपपूर्वकमुत्तरणावतणनिपुणे  
चारणभेदे, । गच्छा० ।

**सेढितव-** न० [श्रेणितपस्]

श्रेणिः-पङ्क्तिस्तदुपलक्षितं तपः श्रेणितपः चतुर्थादिक्रमेण क्रिय-  
माणे षण्मासान्ते तपोभेद, उत्त० ३० अ०

**सेढिसय-** न० [श्रेणिशत]

ऋज्वायतादिश्रेणिप्रधाने शत, भग० ३४ श० १ उ० ।

**सेण-** पुं० [श्येन]

पक्षिविशेषे, सूय०१ श्रु०२ अ०१ उ० ।

**सेणग-** न० [सेनाङ्ग]

हस्त्यश्वरथपदातिलक्षणे सेनाङ्गे, नाया०१ श्रु०१८ अ० ।

**सेणग-** पुं० [श्येनक]

पक्षिविशेषे, चंद० ४ पाहु० । सूर० ।

**सेणग-** पुं० [सेनक]

प्रत्यन्तनगरराजस्य जितशत्रोरमात्यपुत्रे, आव० ४ अ० ।

कूणिकमहाराजस्य पूर्वभवजीवे, आव० ४ अ० ।

**सेणा-१ स्त्री० [सेना]**

चतुरङ्गकटकसमूहे, उत्त० ३० अ० ।

हस्त्यश्वरथपदातिसन्नाहखड्गकृन्तादिसमुदाये, अणुओ० । विशेषे । बुह० । आव० । आव०म० ।

**सेणा-२ स्त्री० [सेना]**

सम्भवनाथजिनस्य जनन्याम् । आव०

**सेणा-३ स्त्री० [सेना]**

स्थूलभद्रस्वामिनो भगिन्याम्, आर्यसम्भूतविजयस्यान्तेवासिन्याम्, ति० । आव० । आव०चू० ।

**सेणाकम्म-** न० [सेनाकर्मन्]

सेनायाः सैन्यस्य कर्म व्यापारः शत्रुसाधनलक्षणः, सेनाविषयं वा कर्म-इतिकर्तव्यतालक्षणं सेनाकर्म । ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**सेणावइ-** न० [सेनापति]

सेनायाः पतिः सेनापतिः । आव०म० १ अ०

नृपतिनिरूपितचतुरङ्गसैन्यनायके, पत्र०१६ पद । ठा० । भग० कल्प० । जीवा० । ओह० । उव० ।

सकलानीकनायके, पण्हा०४ अ० जंबू० । रा० । सम० । आव० । उव० । आव०म० । सूय० । अणुओ० । नाया० । ठा० ।

**सेणावइरयण-** न० [सेनापतिरत्न]

सेनापतिः-सैन्यनायक स एव रत्नम् । उत्कृष्टसेनापतौ, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**सेणावच्च-** न० [सेनापत्य]

सेनापतिः-सैन्यनायकस्तस्य भावः कर्म वा सेनापत्यम् । सैन्यनायकत्वे, उव० । विपा० । जंबू० ।

**सेणि-** स्त्री० [श्रेणि]

पङ्क्तौ, आचा०१ श्रु०६ अ०३ उ० । रा० । जंबू० ।

कुम्भकाराद्यष्टादश प्रकृतयः श्रेणिशब्देनोच्यन्ते । जंबू०३ वक्ष० आव०म० ।

**सेणिय-** पुं० [श्रेणिक]

स्वनामख्याते राजगृहनगरराजे, ठा० ४ ठा० ३ उ० ।

**सेणिय-** पुं० [श्रेणिक] Conti.....

कूणिकस्य पिता श्रेणिकराजः । ठा० ४ ठा० ३ । आव० । उत्त० ।

राजगृहनगरराजस्य प्रसेनजितः पुत्रे, आव० १ अ० । अंत० ।

अयमुत्तरभवे महापद्मो नाम तीर्थकरो भविष्यति । आव०चू० ४ अ० । अंत० । आव० । सम० । आव०म० । दशा० । निसि० । भग० ।

**सेणी-** स्त्री० [श्येनी]

परिव्राजकप्रयुक्ताया मयूरविकुर्वणात्मिकायाः प्रतिमन्थिन्यां श्येनविकुर्वणात्मिकायां विद्यायाम्, नि० १ अ० ।

**सेण्ण-** न० [सैन्य]

हस्त्यश्वरथपदातिवृषभनर्तकगाथाकजनरूपेऽनीके, उव० ।

**सेण्हग-** पुं० [श्येनक]

पक्षिविशेषे, उवा०७ अ० । जीवा० ।

**सेत्त-** त्रि० [श्वेत]

शुक्ले, पत्र०१७ पद ।

**सेतई-** स्त्री० [श्वेतवी]

स्वनामख्यातायां नगर्याम्, आव०म०१ अ० ।

**सेधा-** स्त्री० [सेधा]

भुजसर्पिणीभेदे, जीवा०२ प्रति० ।

**सेभण्ड-** न० [तद्धान्ड]

तस्य विवक्षितस्य भाण्डे, भग०५ श०६ उ०

**सेमुसी-** स्त्री० [शेमुषी]

बुद्धौ, आव०म०१ अ० । आचा० ।

**सेय-** न० [श्रेयस्]

कल्याणे, भग०२ श०१ उ० । ठा० ।

शोभनतरे, दश०२ अ० । सूय० । अष्ट० । बुह० ।

अहोरात्रस्य त्रिंशन्मुहूर्तेषु द्वितीयो मुहूर्तः श्रेयान् । जंबू० ७ वक्ष

पुण्ये आत्महिते, आचा०१ श्रु०३ अ०३ उ० ।

श्रेयस्करे, सूय० १ श्रु०३ अ०३ उ० । उव० ।

**सेय-** त्रि० [श्वेत]

शुभ्रे, धवले, उव० ।

शक्रस्य देवेन्द्रस्य नाट्यानीकाधिपतौ, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

दाक्षिणात्यानां कुम्भडानामिन्द्र, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य नाट्यानीकाधिपतौ, ठा० ८ ठा०

**सेय-** पुं० [सेक]

सीयन्ते वा बध्यन्ते यस्मिन्नसौ सेकः । .....

कर्दमे, सूय० २ श्रु०२

सजले पङ्के, आव०४ अ० । बुह० ।

**सेय-** पुं० [स्वेद]

श्रमजे शरीरजले, । निसि० । ठा० । तं० । दशा० ।

**सेय-** त्रि० [सेजस्]

सकम्पे, भग०५ श०७ उ० । बुह० । रा० ।

**सेयआसंठिइ-** स्त्री० [श्वेततासंस्थिति]

श्वेततायाः संस्थाने, चंद० ३ पाहु० ।

**सेयई-** स्त्री० [श्वेतवी]

सूर्याभपूर्वभवजीवस्य प्रदेशिनो राज्ञो नगर्याम् ठा० ८ ठा० ३

**सेयंकर-** पुं० [श्रेयस्कर]

अष्टाशीतिग्रहेषु सप्तषष्टितमे महाग्रहे, चंद०२० पाहु० ।

**सेयंकरअणुओग-** पुं० [श्रेयस्करानुयोग]

द्रव्यानुयोगभेदे, ठा० । 'सेयंकरे' ति ।  
इहाप्यकारोऽलाक्षणिकस्तेन सेकार इति तदनुयोगो यथा । 'से  
भिक्षू वा' ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सेयंकाल-** पुं० [श्रेयस्काल]

छान्दसत्वात्सेयंकाल ति । आगामिनि काले, भग०५ श०५ उ० ।  
अणुओ० ।

**सेयंगुली-** पुं० [श्वेताङ्गुली]

भार्याप्रेम्णा चुल्ल्याः भस्मसमाकर्षणेन श्वेतकराग्रे, पिंड० ।

**सेयंबर-** न० [श्वेताम्बर]

श्वेतवस्त्रे, श्वेतमम्बरं यस्येति गच्छवासिनि श्वेतवस्त्रपरिधान-  
कर्त्तरि निर्ग्रन्थसाधौ । निसि० ।

**सेयंबिया-** स्त्री० [श्वेताम्बिका]

केकयजनपदार्धराजधान्याम्, पत्र० १ पद । सूय० । उत्त० ।  
कल्प० । आव०चू० । आव०म० । रा० । आव० ।

**सेयंस-** त्रि० [श्रेयस्]

अतिशयेन प्रशस्ये, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**सेयंस-** पुं० [श्रेयांस]

बाहुबलिसुतसोमप्रभसुते, कल्प०१ अधि० ७ ।  
भगवत्प्रतिमादर्शनेन अस्य सामायिकलाभः । आव० ४ अ० ।

**सेयंसा-** स्त्री० [श्रेयांसा]

विदिशि रुचकनिवासिन्यां तृतीयायां विद्युत्कुमारि महत्तरि-  
कायाम्, ठा० ४ ठा० १ उ० ।

**सेयंकंठ-** पुं० [श्वेतकण्ठ]

भूतानन्दनागकुमारेन्द्रस्य महिषानीकाधिपतौ, ठा० ५ ठा० १ उ०

**सेयकणवीर-** पुं० [श्वेतकणवीर] श्वे

तवर्णपुष्पे कणवीरे, रा० ।

**सेयचंदण-** न० [श्वेतचन्दन] श्री

खण्डे, पण्हा० ५ अ० ।

**सेयण-** न० [स्वेदन]

सप्तधान्यादिभिः स्वेदोत्पादने, नाया०१ श्रु०१३अ

**सेयणग-** पुं० [सेचनक]

चम्पायां कूणिकराजस्य गन्धहस्ति, भग०७ श०९ उ० । निर० ।

**सेयणवह-** पुं० [सेचनपथ]

सिक्तमार्गे, आचा०२ श्रु०२ चू० ।

**सेयपड-** पुं० [श्वेतपट]

श्वेताम्बरे जैन, निसि०३ उ० ।

**सेयप्पभ-** त्रि० [श्वेतप्रभ]

श्वेता-उज्ज्वला श्रेया वा आश्रयणयोग्या प्रभा कान्तिर्यस्य स  
तथा । उज्ज्वलकान्तौ, कल्प०१ अधि०३ क्षण० ।

**सेयबन्धुजीव-** पुं० [श्वेतबन्धुजीव]

श्वेतवर्णपुष्पे वनस्पतिभेदे, रा० ।

**सेयभद्र-** पुं० [श्वेतभद्र]

यक्षभेदे, पत्र०१ पद ।

**सेयमलपुच्चड-** न० [श्वेतमलपुच्चट]

दुर्गन्धिस्वेदमलचिगचिगायमाने शरीरे, तं० । ।

**सेयमाल-** पुं० [श्वेतमाल]

सुषमसुषमाभाविनि कल्पवृक्षभेदे, जंबू०२ वक्ष० ।

**सेयविया-** स्त्री० [श्वेतविका]

केकयजनपदस्य स्वनामख्यातायां प्रधाननगर्याम्, विशेष० ।

**सेयसच्चपरक्रम-** पुं० [श्रेयःसत्यपराक्रम]

श्रेयसि अतिप्रशस्ये सत्ये संयमे पराक्रमः सामर्थ्यं, यस्यासौ  
श्रेयः सत्यपराक्रमः । संयते उत्त० १८ अ० ।

**सेयसरिसव-** पुं० [श्वेतसर्षप]

श्वेतवर्णे सर्षपभेदे, चत्वारि समधुरतृणफलान्येकः श्वेतः  
सर्षपः । सुवर्णमानभेदे, ठा० ८ ठा० ३ उ०

**सेयापीय-** त्रि० [श्वेतापीत]

रजतसुवर्णमये श्वेतपीतवर्णे, भग०९ श० ३४ उ० । विपा० ।

**सेयावंग-** त्रि० [श्वेतापाङ्ग]

सितनेत्रप्रान्ते, नाया०१ श्रु०३ अ० ।

**सेयावण्ण-** त्रि० [स्वेदापत्र]

जातस्वेदे, नाया० श्रु०३ अ० ।

**सेयाल-** पुं० [एष्यत्काल]

ग्रहणोत्तरकाले, भग०१ श०१ उ० ।

**सेयासेय-** न० [श्वेताश्वेत]

कनकपुरनगरे स्वनामख्याते उद्याने, विपा० २ श्रु०६ अ० ।

**सेयाऽसोग-** पुं० [श्वेताशोक]

श्वेतवर्णपुष्पे वृक्षविशेषे, रा० ।

**सेरडी-** स्त्री० [सेरटी]

भुजसर्पिणीभेदे, जीवा०२ प्रति० ।

**सेरपयारि-** पुं० [स्वैरप्रचारिन्]

स्वच्छन्दविहारिणी, नाया०१ श्रु०१८ अ० ।

**सेरिणी-** स्त्री० [स्वैरिणी]

स्वेच्छाचारिण्या नर्तक्याम्, आचा०१ श्रु० २ अ०२ उ० ।

**सेरियय-** पुं० [सेरितक]

गुल्मभेदे, पत्र०१ पद ।

**सेरीस-** पुं० [सेरीश]

नगर, यत्र देवेन्द्रसूरिः कायोत्सर्गभकार्षीत् । वव०२ उ० ।

**सेल-** पुं० [शैल]

शिलाया विकारः शैलः । ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

श्लक्ष्णरूपे पाषाणे, ठा० ४ ठा० ३ उ० । विशेष० ।

शिखरहीनपर्वते, पत्र०२ पद ।

मुण्डपर्वते, भग०५ श०१ उ० । आव० पण्हा० ।

हिमवदादिपर्वतेषु, सम० । विशेष० । नं० ।

कृष्णवासुदेवसमकालिके नन्दिपुरराजे, । नाया० २ श्रु० १ वर्ग० १ उ० ।

पर्वत-गृहे, कल्प०१ अधि०४ क्षण ।

**सेलग-** पुं० [शैलक]

अश्वरूपधारके यक्ष, रत्नद्वीपदेवताक्षुभितमाकन्दीदारकरक्षको हि सः । नाया०१ श्रु०९ अ० ।

शैलकपुरराजे, नाया०१ श्रु०५ अ० । तद् वक्तव्यताप्रतिपादके पञ्चमे ज्ञाताध्ययने च । आव०१ अ० । ठा० । नाया० ।

**सेलगराय-** पुं० [शैलकराज]

नेमिनाथशिष्यस्यान्तिके श्रमणोपासकधर्मप्रतिपत्रे शैलकपुरराजे, गच्छा०१ अधि० ।

**सेलगिह-** न० [शैलगृह]

पर्वतमुल्कीर्यकृते गृहे, भग०२ श०८ उ० ।

**सेलगोलय-** पुं० [शैलगोलक]

वृत्ते पाषाणगोलके, सूय०२श्रु०२अ०

**सेलगर-** न० [शैलगृह]

पर्वतमुल्कीर्यकृते गृहे, ठा० ५ ठा० १ उ० । कल्प० ।

**सेलपाय-** पुं० [शैलपात्र]

पाषाणपात्रे, आचा०२ श्रु०१ चू०६ अ०१ उ० ।

**सेलपुर-** न० [शैलपुर]

स्वनामख्याते नगरभेदे, बुह०१ उ०३ ।

**सेलयपुर-** न० [शैलकपुर]

शैलकराजर्ष्यावासभूते नगरे, नाया०१ श्रु० ५ अ० ।

**सेलयय-** पुं० [शैलकज]

वत्सगोत्रान्तर्गतगोत्रविशेषप्रवर्तके ऋषौ, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**सेलवाल-** पुं० [शैलपाल]

धरणभूतानन्दयोर्नागकुमारेन्द्रयोर्लोकपाले, ठा० ४ ठा० १ उ० कालोदाय्यादिष्वन्यतमे यूथिके, भग०७ श०१० उ० ।

**सेलवियारि-** पुं० [शैलविचारिन्]

ऋषभदेवपुत्राणामेकाशीतितमे पुत्रे कल्प०१ अधि०७ क्षण ।

**सेलसंकड-** पुं० [शैलसंकट]

पर्वतैः संकीर्णे, सम०१४६ सम० ।

**सेला-** स्त्री० [शैला]

सप्तमानां नरकपृथिवीनां मध्ये तृतीयस्यां नरकपृथिव्याम्, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

भुजसर्पिणीभेदे, जीवा०२ प्रति० ।

**सेलियघर-** न० [शैलिकगृह]

पाषाणैष्टकादिभिः कृते गृहे, वव० ४ उ०

**सेलु-** पुं० [शैलु]

श्लेष्मान्तके कफे, पत्र०१ पद ।

**सेलूस-** पुं० [शैलूष]

अन्यथावादि नटे, शैलूषा इवान्यथावादितोऽन्यथाकारिणः । आचा० १ श्रु०२ अ०२ उ० ।

**सेलेस-** पुं० [शैलेश]

मेरौ, विशेष० । ठा० । आव०चू० ।

**सेलेसिपडिवण्णग-** पुं० [शैलेशीप्रतिपत्रक]

अयोग्यावस्थां प्राप्ते, पत्र०२२ पद ।

**सेलेसी-** स्त्री० [शैलेशी]

चतुर्दशगुणस्थानस्थायित्वे, उत्त०२९अ० । विशेष० आचा० । उव० । आव०म० । आव०चू० ।

**सेलेसीमद्धा-** स्त्री० [शैलेश्यद्धा]

शैलेशीकाले, उव० ।

**सेलोदाइ-** पुं० [शैलोदायिन्]

राजगृहनगरस्य शिलापट्टकस्यादूरे सामन्तपरिवास्यन्ययूथिक-भेदे, भग०७ श०१० उ० ।

**सेलोवट्टाण-** न० [शैलोपस्थान]

पाषाणमण्डपे, आचा०२ श्रु०१ चू०२ अ०२ उ० ।

**सेलोवट्टाणकम्मंत-** न० [शैलोपस्थानकर्मान्त]

स्थानविशेषे, यत्र पाषाणपरिकर्म क्रियते । आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ० ११ उ० ।

**सेलोवट्टाणघर-** न० [शैलोपस्थानगृह]

पाषाणमण्डपे, ठा० ५ ठा० १ उ० ।

**सेल्लग-** पुं० [शल्यक]

भुजपरिसर्पजन्तुभेदे, यच्चर्मकर्तलकैरङ्गरक्षका विधीयन्ते, पण्हा०



**सेव-** त्रि० [शैव]

शिवो भक्तिरस्येति । पाशुपते, विशेष० । आचा० । आव०म० ।  
शैवीदीक्षात एव मोक्ष इत्येवं व्यवस्थिताः । सूय०१ श्रु०१ अ०३  
शिवनिर्मिते व्याकरणभेदे, कल्प०१ अधि०१ क्षण० ।

**सेवग-** त्रि० [सेवक]

भजक, पण्हा०२ आश्र०४ द्वार ।  
कारक, निसि०१ उ० ।  
चोरभट्टक, बुह०३ उ० ।  
सेवकोऽशेषकर्ममोचनाय पारगो भवति । सूय०१ श्रु० १३ अ० ।

**सेवण-** न० [सेवन]

पर्युपासने, उत्त०३५ अ० ।  
भजने, ठा० ४ ठा० २ उ० । आव० ।

**सेवणा-** स्त्री० [सेवना]

भजनायाम्, विशेष० । सूय० ।  
उपभोग, आचा०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।  
विशोधि, निसि०१ उ० ।

**सेवणाहिगार-** पुं० [सेवनाधिकार]

सेवनायां चौर्यादिसेवनायामधिकारो नियोगः सेवनाधिकारः ।  
गौणमैथुने, अब्रह्मप्रवृत्तो हि चौर्याद्यनर्थसेवास्वधिकृतो भवति,  
पण्हा०४ अ०

**सेवमाण-** त्रि० [सेवमान]

कुर्वाण, उत्त०१२ अ० । सूय० ।

**सेवा-** स्त्री० [सेवा]

पर्युपासनायाम्, अभ्युत्थानदण्डग्रहणासनदानादौ, निसि०१ उ०  
शक्रस्य देवेन्द्रस्याष्टास्वग्रमहिषीषु द्वितीयायामग्रमहिष्याम्,  
भग० १० श० ५ उ० ।

**सेवाल-** न० [शैवाल]

तन्त्वाकारे जलरुहभेदे, प्रसिद्धं चैतत् जले भवति । पन्न०१ पद ।  
शैवालं जलोपरि मलरूपम् । आचा०१ श्रु०२ अ० । आव०म० ।  
अष्टापदपर्वतस्य द्वितीयमेखलायां पञ्च शतीतापसयूथाधिपतौ  
गौतमप्रव्रजिते तापसे, उत्त०१० अ० ।

**सेवालोदाइ-** पुं० [शैवालोदायिन्]

कालोदाय्यादिषु अन्ययूथिकेष्वन्यतमे यूथिके, भग०७ श०१० ।

**सेविय-** त्रि० [सेवित]

जुष्टे, क्षिप्ते च । ठा० ४ ठा० ३ उ० । पण्हा० ।

**सेवियव्व-** त्रि० [सेवितव्य]

सेवनीय, उत्त०३२ अ० ।

**सेस-** त्रि० [शेष]

उक्तादन्यस्मिन् । पन्न० । उत्त० । ठा० । आव० । आचा० ।

**सेसदव्विया-** स्त्री० [शेषद्रव्या]

गृहोपयुक्तशेषद्रव्येण कृता शेषद्रव्या लेपोपासकस्य गृहपतेः  
सम्बन्धिन्या नालन्दायाः पूर्वोत्तरस्यां दिशि उदकशालायाम्,  
सूय० २ श्रु० ७ अ० ।

**सेसव-** न० [शैशव]

शिशोरवस्थायाम्, आचा०१ श्रु०२ अ०१ उ० । सूय० ।

**सेसव-** न० [शेषवत्]

अनुमानभेदे, अणुओ० ।

**सेसवई-** स्त्री० [शेषवती]

दक्षिणरुचकवास्तव्यायां दिक्कुमारीमहत्तरिकायाम्, ठा० ८ ठा०  
३ उ० । आव०म० । आव० । आव०चू० । जंबू० ।  
सप्तमवासुदेवमातरि, आव०१ अ० । सम० ।  
भगवतो महावीरस्य दौहित्र्यां जमालिपुत्रायाम्, आचा० २ श्रु० ३  
चू० । आव०चू० । कल्प० ।

**सेसिंद-** पुं० [शेषेन्द्र]

दर्वीकरसर्पभेदे, पन्न०१ पद ।

**सेसिय-** त्रि० [शेषित]

अल्पीकृते, ज्ञानावरणाद्यष्टप्रकारैः पूर्वं तस्य सितमित्यर्थः ।  
अथवा अनाभोगनिर्वर्तितयथाप्रवृत्तकरणेन सम्यग्ज्ञानादुपाय-  
तश्च क्रमेण शेषं कृतं स्थित्यनुभवादिभिरल्पीकृतम् विशेष० ।

**सेसीकय-** त्रि० [शेषीकृत]

स्थित्यादिभिरल्पीकृते, आव०म०१ अ० ।

**सेह-१** पुं० [सेध]

सेध्यते-निष्पाद्यते यः स सेधः । शिष्ये, ठा० ३ ठा० २ उ० ।

**सेह-२** पुं० [शैक्ष]

शिक्षां वाऽधीते इति शैक्षः । ठा० ३ ठा० २ उ० ।  
अभिनवप्रव्रजिते, ठा० ५ ठा० १ उ० । सूय० ।  
'तिहि उत्तराहिं रोहिणीहिं, कुज्जा उ सेहनिक्खमणं । सेहोव-  
ट्ठावणं कुज्जा, अणुन्ना गणिवायए । गणि० । आचा० ।  
लघुसाधौ, कल्प०३ अधि०९ क्षण । निसि० ।  
अल्पपर्याये, दशा०३ अ० । शिक्षार्हे साधु । गच्छा० । बुह०

**सेहट्टवणाकप्प-** पुं० [शैक्षस्थापनाकल्प]

अभिनवशिष्यप्रव्रजनायाम्, सेहट्टवणाकप्पो नाम अट्टारसपुरि-  
सेसुं वीसुंइत्थीसुं पुव्वभणियजीवदवियकप्पे एए जो पव्वावेइ  
सो सेहट्टवणाकप्पो । पंच०चू० २ ।

**सेहण-** न० [शिक्षण]

हणासेवनाभ्यासे, सूय०१ श्रु०२ अ०१ उ०

**सेहणिक्खमण-** न० [शैक्षनिष्क्रमण]

शिष्यस्य प्रव्रजने, गणि० ।

**सेहणिफेडण-** न० [शैक्षनिफेटन]

शिष्यापहारे, गच्छा०१।

**सेहणिफेडिया-** स्त्री० [शैक्षनिफेटिका]

शैक्षकस्य दीक्षितुमिष्टस्य निफेटिका-अपहरणम्। तद्योगाद्यो मातापित्रादिभिरननुज्ञातोऽपहत्य दीक्षितुमिष्यते सोऽपि शैक्ष-निफेटिकः। गच्छा०१ अधिदीक्षितुमिष्टस्यापहरणे, निसि०।

**सेहभूमि-** स्त्री० [शैक्षभूमि]

शिष्यस्य महाव्रतारोपणकाले, वव०।

**सेहम्बदालियं-** न० [सिद्धाम्लदालिकाम्र]

सिद्धे आम्लसंस्कृते मुद्गा दिमये दालिपदार्थे, सिद्धे सति यानि अम्लेन तीमनादिना संस्क्रियन्ते तानि सिद्धाम्लानि, यानि दाल्या मुद्गादिमय्या निष्पादितानि अम्लानि च तानि दालि-काम्लानीति संभा-व्यन्ते। उवा० १ अ०।

**सेहय-** पुं० [शैक्षक]

अभिनवप्रव्रजिते, ठा० ८ ठा० ३ उ०।

**सेहर-** पुं० [शेखर]

शिरोभूषणे, लोमपक्षिभेदे च। जीवा०१ प्रति०।

**सेहाविय-** त्रि० [शिक्षायित]

व्रतिसमाचारसेवायाम्, तस्य भगवतो हेतुभूतत्वात्। भग०१५

**सेहिय-** त्रि० [सेधित]

निष्पादिते, आचारविशेषविनयविशेषेषु कुशलीकृते, नाया०। प्रत्युपेक्षणादिक्रियाकलापतो निष्पादिते, भग०२ श०१ उ०।

**सेहिय-** त्रि० [शिक्षित]

गुरुभिः स्वयमेव शिक्षां ग्राहिता, भग०।

**सेहिय-** त्रि० [सैद्धिक]

सिद्धापवर्गलक्षणायां भवे, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ०।

**सेही-** स्त्री० [शैक्षी]

नवशिक्षितायाम्, गच्छा०३ अधि०।

**सेहोवट्टावण-** न० [शैक्षोपस्थापन]

शिष्यस्य उपस्थापनाकरणे, तिहिं उत्तराहिं रोहिणीहिं, कुज्जा उ सेहनिक्रमणं। सेहोवट्टावणं कुज्जा, अणुत्रा गणिवायए। गणि०

**सोअ-** न० [शौच]

परद्रव्यापहारमालिन्याभावे, सम० प्र० सम०।

**सोअणवत्तिया-** स्त्री० [स्वप्नप्रत्यया]

स्वप्ननिमित्तविराधनाया अतिचारभेदे, आव०१ अ०।

**सोअण-** न० [शोचन]

अश्रुपरिपूर्णनयनस्य दैन्ये, आव०४ अ०।

**सोआमिणी-** स्त्री० [सौदामिनी]

विद्युति, जंबू०३ वक्ष०।

**सोइंदिय-** न० [श्रोत्रेन्द्रिय]

श्रूयतेऽनेनेति श्रोत्रं तच्च तदिन्द्रियं च श्रोत्रेन्द्रियम्। शब्दग्राहके इन्द्रिये, आव०म०१ अ०। नाया०। पत्र०। आव०क०।

**सोइंदियणिगह-** पुं० [श्रोत्रेन्द्रियनिग्रह]

श्रवणेन्द्रियस्यावरोधे, उत्त०

**सोइंदियत्य-** पुं० [श्रोत्रेन्द्रियार्थ]

श्रूयतेऽनेनेति श्रोत्रं तच्च तद् इन्द्रियं च श्रोत्रेन्द्रियं तस्यार्थो-ग्राह्यः श्रोत्रेन्द्रियार्थः। शब्दे, ठा० ५ ठा० ३ उ०।

**सोइंदियबल-** न० [श्रोत्रेन्द्रियबल]

श्रोत्रबलसामर्थ्यग्राहके, ठा० १० ठा० ३ उ०।

**सोइंदियमुंड-** पुं० [श्रोत्रेन्द्रियमुण्ड]

श्रोत्रेन्द्रियनिबन्धने मुण्डभेदे, ठा० १० ठा० ३ उ०।

**सोइंदियवसत्त-** त्रि० [श्रोत्रेन्द्रियवशार्त्त]

श्रोत्रेन्द्रियवशेन तत्पारत-च्येण ऋतः-पीडितः। श्रवणेन्द्रिय-परतन्त्रतया दुःखिते, भग० १२ श०२ उ०।

**सोइंदियविसयप्पयार-** पुं० [श्रोत्रेन्द्रियविषयप्रचार]

श्रोत्रेन्द्रियस्य यो विषयेष्विष्टानिष्टशब्देषु प्रचारः स श्रोत्रेन्द्रिय विषयप्रचारः। श्रवणलक्षणाप्रवृत्तौ, भग०२५ श०७ उ०।

**सोइय-** न० [शोक्ति]

मानसे विकारे, अणुओ०।

**सोंड-** न० [शौण्ड]

गर्वे, ठा० १० ठा० ३ उ०।

**सोक्ख-** न० [सौख्य]

आनन्दे, ठा० २ ठा० ३ उ०।

सुखे, नाया०१ श्रु०१३ अ०।

गन्धरसस्पर्शलक्षणविषयसंपाद्ये, ठा० ९ ठा० ३। पत्र०। उत्त०

गन्धोपादाने, ठा० ६ ठा० ३ उ०।

**सोग-** पुं० [शोक]

इष्टवियोगोत्थदुःखे, उव०। पण्हा०। उत्त०। निसि०।

चित्तखेदे, नाया०१ श्रु०१ अ०।

दैन्ये, आव०४ अ०।

मानसे दुःखविशेषे, आव०।

स च सचित्ताचित्तमिश्राणामिष्टानां वियोगेन, अनिष्टानां संयो-गेन च भवति। जीत०। ठा०। पण्हा०। बुह०। उव०।

इष्टाप्राप्तिविनाशोद्भवे। आचा०१ श्रु०३ अ०१। आतु०। सम० नोकषायवेदनीयकर्मभेदे, यदुदयेन शोकरहितस्यापि जीवस्या-क्रन्दनादिः शोको जायते। ठा० ९ ठा० ३ उ०।

शोचनं शोको दैन्यमुपलक्षणत्वादेवास्य सकलमानसदुःखपरि-ग्रहः। भग०१६ श०२ उ०।

**सौगंधिय-** न० [सौगन्धिक]

कह्लारे, जीवा०३ प्रति०४ । आव० म० । पत्र० । रा० । जंबू० ।  
रत्नविशेषे, रा० । पत्र० । आव०म० नाया० । सूय० ।  
यः सुभगं मन्वानः स्वलिङ्गं जिघ्रति स सौगन्धि कः ।  
नपुंसकभेदे, गच्छा०१ अधि० ।  
सौगन्धिको नाम सागारिकस्य गन्धं शुभंमन्यते स च सागारिकं  
जिघ्रति मलयित्वा वा हस्तं जिघ्रति । बुह०४उ० । निसि० ।

**सौगंधिकण्ड-** न० [सौगन्धिककाण्ड]

रत्नप्रभायाः पृथिव्याः सौगन्धिकरत्ननिभे काण्डे, ठा० १० ठा०

**सौगंधिया-** स्त्री० [सौगन्धिकी]

स्वनामख्यातायां नगर्याम्, नाया०१ श्रु०५ अ० ।

**सोगमल्ल-** न० [सोकुमार्य]

अतिसुकुमारतायाम्, दश०२ अ० ।

**सोग्गइ-** स्त्री० [सुगति]

मोक्षमार्ग, सुदेवत्वादिक, । आव०चू०१ अ० ।

**सोज्जोय-** त्रि० [सोद्द्योत]

उद्द्योतभावसहिते, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।  
बहिर्व्यवस्थितवस्तुस्तोमप्रकाशकरे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**सोडसय-** पुं० [षोडशक]

षोडशावयवे समुदाये, । आव०म० १ अ० ।

**सोडसिगा-** स्त्री० [षोडशिका]

मगधदेशप्रसिद्धे रसमानविशेषे, रा०

**सोढ-** त्रि० [सोढ]

अनुभूते, उत्त०१९ अ० ।

**सोण-** न० [शोण]

दन्तकाष्ठिकामध्ये रक्तवर्णे, तं० । ।

**सोणिचक्र-** न० [श्रोणिचक्र]

कटितटे, कल्प०१ अधि०२ क्षण ।

**सोणिय-** न० [शोणित]

पललरुधरे, उत्त०२ अ० । आचा० । नाया० तं० । ठा० ।  
आर्तवे रुधरे, सामान्येन वा रुधरे, नाया०१ श्रु० ८ अ० ।  
शोणितं-रुधिरं, द्वितीयो धातुः । तं० । । आचा० । आव०म० ।

**सोणियानुसारि-** पुं० [शोणितानुसारिन्]

शोणितान्तव्यापके धातौ, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**सोणिसुत्त-** न० [श्रोणिसूत्र]

कटीसूत्रे, भग०९ श०३३ उ० ।  
बालकानां धर्मादिदवरकरूपे कटीसूत्रे, नाया०१ श्रु०१७ अ० ।

**सोणी-** स्त्री० [श्रोणी]

कटेरग्रभागे, जंबू०२ वक्ष० । कटि, पण्हा०४ अ०

**सोण्हग-** पुं० [सोण्हक]

पक्षिविशेषे, उत्त०५ अ० ।

**सोण्हियालिङ्ग-** न० [शोणिकालिङ्ग]

अग्रेराश्रयविशेषे, जीवा०३ प्रति० १ अधि०२ उ० ।

**सोत्त-** न० [श्रोत्र]

श्रूयतेऽनेनेति श्रोत्रम् । शब्दप्राहकेन्द्रिये, ठा० ८ ठा० । पत्र० ।  
अचित्तं जीवरहितं सोत्तं छिद्रं पुणसद्भो भेदप्पदरिसणे तं  
अचित्तसोत्तं तिविहं-देहजुयं, पडिमजुयं, वेरयं । निसि०१ उ० ।

**सोत्तबंधण-** न० [श्रोतोबन्धन]

जलप्रवाहबन्धने, पण्हा०१ अ०

**सोत्तिंदिय-** न० [श्रोत्रेन्द्रिय]

श्रवणेन्द्रिय, आव०म०१ अ० ।

**सोत्तिय-** त्रि० [सौत्रिक]

सूत्रं पण्यमस्येति । सूत्रक्रयविक्रयकारिणि, अणुओ० । जीवा० ।

**सोत्तिय-** पुं० [शौक्तिक]

द्वीन्द्रियभेदे, पत्र०१ पद ।

**सोत्तियमई-** स्त्री० [शौक्तिकवति]

केकयार्द्धजनपदार्द्धराजधान्याम्, पत्र०१ पद ।

**सोत्थिय-१** पुं० [स्वस्तिक]

लोकप्रसिद्धे माङ्गलिके चिह्नभेदे, रा० । पण्हा० । जंबू० । पत्र० ।

**सोत्थिय-२** पुं० [स्वस्तिक]

अष्टासीतिमहाग्रहेषु षष्टितमेग्रहे, ठा० २ ठा० ३ । सूर० । चंद०

**सोत्थियकूड-** न० [स्वस्तिककूट]

जम्बूद्वीपे मन्दरस्य दक्षिणे रुचकवरपर्वतस्य प्रथमकूटे, ठा० ८

**सोदर-** पुं० [सोदर]

एकमातृके, उत्त०२२ अ० ।

**सोदामिन्-** पुं० [सौदामिन्]

चमरस्यासुरेन्द्रस्याश्वानीकाधिपतौ, ठा०५ ठा० १ उ० ।

**सोदामिणी-** स्त्री० [सौदामिनी]

विदिग्रुचक वास्तव्यायां दिक्कुमारीमहत्तरिका, जंबू०५ वक्ष० ।

**सोदास-** पुं० [सौदास]

मांसप्रिय राजा, आव०चू०५ अ० । आव०म० ।  
जिह्वेन्द्रिये उदाहरणम् । आव०चू०१ अ० । आचा० ।

**सोपारग-** पुं० [सोपारक]

स्वनामख्याते समुद्रतटीयनगरे, आव०म०१ अ० । आव०क० ।

**सोभग-** न० [सौभाग्य]

सुभगत्वे, पत्र०३४ पद ।

**सोभगकर-** न० [शौभाग्यकर]

एकचत्वारिंशे कलाभेदे, सम०७२ सम० ।

**सोभण-** न० [शोभन]

सुन्दर, सूर्य०२ श्रु०१ अ० । जीवा० । कल्प० ।

**सोभद्-** पुं० [सौभद्र]

सुभद्रात्मजे चम्पानगरीवास्तव्यस्य कौशिकाचार्यस्य शिष्ये,  
आव०चू०४ अ० ।

**सोभावज्जण-** न० [शोभावर्जन]

विभूषापरित्यागे, दश०६ अ० ।

**सोभिय-** त्रि० [शोभित]

तत्समाप्तौ गुर्वादिप्रदानशेषभोजनासेवनेन शोभां प्रापिते अति-  
चारवर्जनेन कृतशोधे, ठा० ७ ठा० ३ उ० । रा० ।

**सोम-** पुं० [सोम]

चतुर्थबलदेववासुदेवयोः पितरि, आव०१ अ० । ठा० ।  
चन्द्र, जंबू०७ वक्ष ज्यो० । चंद० ।  
मृगशिरोनक्षत्रस्याधिपः सोमः । ज्यो०६, सूर० । अणुओ० । ठा०  
अष्टाशीतिग्रहेषु द्वादशे महाग्रहे, जंबू०७ वक्ष० । सूर० । चंद० ।  
शक्रस्य देवेन्द्रस्येशानस्य च उत्तरदिग्लोकपाले चमरस्यासुरेन्द्र-  
स्येन्द्रे, भग०३ श०७ उ० । आव०म० । गच्छा० । ठा० ।  
पार्श्वस्वामिनः पञ्चमे गणधरे, कल्प०१ अधि०७ क्षण । ठा० ।  
शान्ताकृति, वव०६ उ० ।  
सुभग, जंबू०१ वक्ष० । रा० ।  
अरौद्राकार, रा० । सूर० । विपा० । जंबू० ।  
नीरोगे च । भग०१२ श०६ उ० ।

**सोमंगलग-** पुं० [सौमङ्गल]

द्विन्द्रियजीवभेदे, जीवा०१ प्रति० । पत्र०

**सोमकाइय-** पुं० [सोमकायिक]

सोमस्य कायो निकायो येषामस्ति ते सोमकायिकाः । सोम-  
परिवारभूतेषु देवेषु, भग० ३ श०७ उ०

**सोमचंद-** पुं० [सोमचन्द्र]

भरतक्षेत्रजसुपार्श्वजिनकालिकैरवतजे तीर्थकर, सम० ।  
स्वनामख्याते पोतनपुरराजे, आव०चू०१ अ० ।

**सोमजसा-** स्त्री० [सोमयशस]

सौर्यपुरे यज्ञयशसस्तापसस्य पुत्रसुषायाम् आव० ४ अ० ।  
आव० म० । आव०चू० ।

**सोमणंतिय-** न० [स्वप्रान्तिक]

स्वप्रस्य स्वप्रक्रियाया अन्ते अवसाने भवं स्वप्रान्तिकम् ।  
स्वप्रविशेषे क्रियमाणे प्रतिक्रमणभेदे, ठा०६ ठा० ३ उ० ।

**सोमणस-१** न० [सौमनस्य]

शोभनं मनो यस्यासौ समुनास्तस्य भावः सौमनस्यम् । शोभने  
मनसि, रा० । भग० । जीवा० । आव०म० ।

**सोमणस-२** पुं० [सौमनस]

जम्बूद्वीपे मन्दरस्य दक्षिणतः देवकुरुषु अश्वस्कन्धसदृशे  
वक्षस्कारपर्वते, तदधिपतौ च । ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**सोमणसकूड-** पुं० न० [सौमनसकूट]

सौमनसनामकस्वाधिष्ठातृदेव-भवनोपलक्षिते कूटे, ठा० ७ ठा०

**सोमणसवण-** न० [सौमनसवन]

मेरोट्टितीयमेखलायां स्वनामख्याते वने, ठा० ४ ठा० २ उ० ।

**सोमणसा-** स्त्री० [सौमनसा]

पञ्चमीतिथिरात्रौ, सूर०१० पाहु० ।

**सोमणसी-** स्त्री० [सौमनसी]

पक्षस्य पञ्चदश्यां तिथि, ज्यो०४ पाहु

**सोमदत्त-१** पुं० [सोमदत्त]

चन्द्रप्रभस्वामिनः प्रथमभिक्षादायके, आव०म०१ अ० । सम० ।

**सोमदत्त-२** पुं० [सोमदत्त]

कौशाम्बीनगरीस्वामिशतानीकस्य पुरोहिते विपा०१ श्रु०५ अ० ।

**सोमदत्त-३** पुं० [सोमदत्त]

भद्रबाहुस्वामिनः चतुर्थे शिष्ये, कल्प० २ अधि०८ ।

**सोमदेव-१** पुं० [सोमदेव]

दशपुरनगरवास्तव्ये स्वनामख्याते ब्राह्मणे, यत्पुत्र आर्यरक्षितः  
सूरिरासीत् । विशेष० । आव०म० । आव०क० । आव०चू० । उत्त० ।

**सोमदेव-२** पुं० [सोमदेव]

पद्मप्रभस्य प्रथमभिक्षादायके, आव०म० १ अ० । सम० ।

**सोमदेवयाकाइय-** पुं० [सोमदेवताकायिक]

सोमदेवतास्तत्सामनिकादयस्तासां कायो येषामस्ति ते सोम-  
कायिकाः । सोमसामानिकादिदेवपरिवारभूतेषु देवेषु, भग० ३ श०

**सोमप्पभ-** पुं० [सोमप्रभ]

बाहुबलिपुत्रे, श्रेयांस भ्रातरीति केषांचिन्मतम् । आव०चू०१ अ०  
आवश्यकवृत्त्यनुसारेण बाहुबलिसुतसोमप्रभसुतः श्रेयांसराजा  
। कल्प०१ अधि०७ ।

चमरस्योत्पातपर्वते, आव०म०१ अ० ।

सोमस्स महारण्णे सोमप्पभे उप्पायपव्वए ठा० १० ठा० ३ उ०

**सोमभूइ-** पुं० [सोमभूति]

चम्पानगरीवास्तव्ये स्वनामख्याते ब्राह्मणे नाया०१ श्रु०१५ अ० ।

**सोममिता-** स्त्री० [सोममित्रा]

सौर्यपुरवास्तव्यस्य यज्ञयशसो भार्या-याम्, आव०४ अ० ।  
आव०क० । आव०चू० ।

**सोमय-** पुं० [सोमक]

कौत्सगोत्रान्तर्गते गोत्रविशेषप्रवर्तके ऋषि, । ठा० ७ ठा० ३  
उ० ।

**सोमल- पुं० [सोमल]**

द्वारवतीवास्तव्ये स्वनामख्याते ब्राह्मणे, । अंत० १ श्रु० ३ वर्ग० ८ अ० ।

**सोमलच्छी- स्त्री० [सौम्यलक्ष्मी]**

सौम्या-प्रशस्ता या लक्ष्मीः । प्रशस्तायां लक्ष्म्याम्, कल्प० १ अधि० ३ ।

**सोमलेस्स- त्रि० [सोमलेश्य]**

अनुपतापकारिपरिणामे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**सोमवदन- त्रि० [सोमवदन]**

सोमं-सश्रीकं वदनं येषां ते सोमवदनाः ।....  
सश्रीकास्ये, जंबू० २ वक्ष० ।

**सोमवसु- पुं० [सोमवसु]**

कौशाम्बीनगरीवास्तव्ये जन्मदरिद्रे विप्रे, ध० २० ।

**सोमविजय- पुं० [सोमविजय]**

हीरविजयसूरीणां प्रथमशिष्ये, कल्प ३ अधि० ९ क्षण ।

**सोमसिरि- स्त्री० [सोमश्री]**

द्वारवतीनगरीवास्तव्यस्य सोमलस्य भार्यायाम्, अंत० १ श्रु० ३ वर्ग० ८ अ० । आव० चू० ।

**सोमसुन्दर- पुं० [सोमसुन्दर]**

तपागच्छे स्वनामख्याते देवसुन्दरसूरीणां शिष्ये, । गच्छा० ३ अधि० ।

**सोमा- स्त्री० [सौम्या]**

सोमदेवतादिक् सोमा सौम्या वा । भग० १० श० १ उ० ।  
उत्तरदिशि, ठा० ३ ठा० २ उ० । आव० म० ।  
सोमस्य लोकपालस्याग्रमहिष्याम्, भग० १० श० ५ उ० ।  
सोमलोकपालस्य राजधान्याम्, भग० ।

**सोमागार- त्रि० [सौम्याकार]**

सुन्दराकृतौ, कल्प० १ अधि० २ क्षण ।  
अरौद्रदर्शने, उव० । रा० । नाया० ।

**सोमिल-१ पुं० [सोमिल]**

द्वारवत्यां नगर्यां गजसुकुमारकुमार मारके ब्राह्मणे, आव० चू० १ अ० । अंत० । आव० । आव० म० ।  
कुण्डग्रामनगरे कोडालगोत्रब्राह्मणः सोमिलाभिधानोऽस्ति, तस्य भार्यायामुत्पन्न इति प्रियमित्रप्राग्भव-कथा । आव० म० १ अ० ।

**सोमिल-२ पुं० [सोमिल]**

वाराणसी वास्तव्ये पार्श्वनाथस्वामिशिष्ये, पुष्कि० ३ अ० ।

**सोमिलुद्देश- पुं० [सोमिलोद्देश]**

सोमिलब्राह्मणवक्तव्यताप्रतिपादके भगवत्या अष्टादशशतस्य दशमोद्देशके, भग० २५ श० ७ उ० ।

**सोम्म-त्रि० [सौम्य]**

सर्वजननयनमनोरमणीयगणुशतकलित, आचा० १ श्रु० १ अ०  
नीरोगे, उव० ।

शान्तदृष्टितया प्रीत्युत्पादके, गच्छा० १ अधि० ।

उपशान्त, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

सुखदर्शन, नाया० १ श्रु० ९ अ० ।

अरौद्र, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

शीतल, विशेष० । उव० । ओह० ।

**सोम्मवयण- त्रि० [सौम्यवदन]**

सौम्यं सुन्दरं वदनं मुखं यस्य स तथा । सुन्दरास्ये, पण्हा० ४ अ०

**सोय- न० [शौच]**

शुचेर्भावः शौचम् । शुद्धि, ठा० ।

**सोयकारि- पुं० [श्रोतकारिन्]**

यथोपदेशकारिणि, सूय० २ श्रु० १४ अ०

**सोयगय- त्रि० [स्रोतोगत]**

नद्यादिप्रवाहपतिते, दश० ९ अ० २ उ० ।

**सोयणया- स्त्री० [शोचनता]**

दीनतायाम्, ठा० ४ ठा० १ उ० । भग० । आव० चू० ।

**सोयणवत्तिया- स्त्री० [स्वप्नप्रत्यया]**

स्वप्ननिमित्तविराधनायाम्, आव० ४ अ० ।

**सोयतत्त- त्रि० [शोकतप्त]**

शोकवितप्ते, सूय० १ श्रु० ५ अ० ३ उ० ।

**सोयमय- पुं० [शौचमद]**

स्नानचन्दनादिनां पवित्रत्वविधेये पवित्रत्वा झीकारे, शोचेन  
वस्त्रचन्दनाभरणादिना मदो यत्र स तथा । शौचजमदोपेते, तं० ।

**सोयमादि- त्रि० [शौचादि]**

शौचमाचमनं तदादिर्येषाम् । आचमनप्रभृतिषु, पण्हा० १ अ०

**सोयर- पुं० [सोदर]**

भ्रातरि, सूय० १ श्रु० ३ अ० २ उ० ।

**सोयरंध- न० [स्रोतोरन्ध]**

मुख, सम० ३० सम० ।

**सोयरिय- त्रि० [शौकरिय]**

शूकरेण शूकरवधार्थं चरन्ति शूकरान् वा घ्नन्तीति शौकरिकाः ।  
ठा० ७ ठा० ३ उ० । पण्हा० । सूय० ।

शूकरमृगयोपजीविषु, ठा० ४ ठा० ३ उ० । पण्हा० ।

श्वपचेषु, सूय० २ श्रु० २ अ० ।

**सोयविय- न० [शौच]**

भावशौचे सर्वोपाधिशुद्धतायां व्रतामालन्ये, सूय० २ श्रु० १ अ० ।  
आचा० ।



**सोयामय-** त्रि० [स्रोतोमय]

ऐन्द्रिये विकारे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सोयामिणी-** स्त्री० [सौदामिनी]

विदियुचकवास्तव्यायां दिक्कुमारीमहत्तरिकायाम्, ठा० ६ ठा० ३ उ० । आव० । आव०म० ।

**सोयावणा-** स्त्री० [शोकापना]

दैन्यप्रापणायाम्, भग० ३ श० ३ उ० ।

**सोरट्ट-** पुं० [सौराष्ट्र]

द्वारवतीनगरीप्रतिबद्धे जनपदभेदे, नाया० । अणुओ० । निसि०

**सोरट्टिया-** स्त्री० [सौराष्ट्रिका]

तुवरिकायाम्, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ६ उ० । दश० ।  
सोरट्टिया तुवरमादिया भण्णाति । निसि० ४ उ० ।  
स्थविराद् ऋषिगुप्तात्रिर्गतस्य माणवगणस्य चतुर्थशाखायाम्,  
कल्प० २ अधि० ८ क्षण ।

**सोरहपाहुडिय-** पुं० [षोडशप्राभृतिक]

यज्ञविशेषे, विशेष० ।

**सोरियदत्त-** पुं० [शौर्यदत्त]

स्वनामख्याते मत्स्यबन्धपुत्रे, विपा० ।

**सोरियपुर-** न० [शौर्यपुर]

कुशावर्तजनपदप्रधाननगरे । सूय० । उत्त० । आव० । विपा० । निसि०

**सोलग-** पुं० [सोलक]

तुरगचिन्ताभियुक्ते, बुह० १ उ० २ ।

**सोलस-** त्रि० [षोडशन्]

षडधिकदशसंख्यायाम्, पत्र० १५ पद । रा० । सूय० ।

**सोलसखुत्तो-** अव्य० [षोडशकृत्वस्]

षोडशभेदनाश्रित्येत्यर्थे, भग० ३५ श० १ उ० ।

**सोलसम-** त्रि० [षोडश]

षोडशसंख्यापूरणे, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

**सोलसिया-** स्त्री० [षोडशिका]

माणिकाया एव षोडशभागवर्तित्वात् षोडशपलप्रमाणा  
षोडशिका । अणुओ० ।

षोडशभागमाने मानविशेषे, भग० ७ श० ८ उ० ।

**सोलहविह-** त्रि० [षोडशविध]

षोडशप्रकारे, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**सोल्लिय-** त्रि० [शौल्य]

शूलसंस्कृते, शूलिभिश्च घृतादिनाऽग्नौ संस्कृते, उवा० ८ अ० ।

शूलपक्वे, विपा० १ श्रु० ८ अ० । कुसुमविशेषे । उव० ।

**सोवओग-** पुं० [सोपयोग]

उपयोगसहिते, ठा० २ ठा० ४ उ० ।

**सोवक्रम-** न० [सोपक्रम]

सहोपक्रमेणापवर्तनाकरणाख्येन वर्तत इति सोपक्रमः ।  
कर्मभेदे, उत्त० ५ अ० । आचा० ।

कर्म्मद्विधा सोपक्रमं, निरुपक्रमं च । तत्र यानि वैरादीनि सोप-  
क्रमसाध्यानि तान्येव जिनातिशयादुपशाम्यति सदौषधात्सा-  
ध्यव्याधिवत् । विपा० १ श्रु० ३ अ० ।

**सोवक्लेश-** त्रि० [सोपक्लेश]

सदुःखे गृहवासे, सह सोपक्लेशः—गृहाश्रमः । दश० १ चू० ।

**सोवच्चल-** न० [सौवर्चल]

लवणभेदे, सूय० १ श्रु० ७ अ० । आचा०

**सोवट्टाण-** त्रि० [सोपस्थान]

सहोपस्थानेन धर्मचरणाभासोद्यमेन सह वर्तन्ते इति सोप-  
स्थानाः । वयमपि प्रव्रजिताः । सदसद्धर्मविशेषविकला इति  
सावद्यारम्भतया वर्तमानेषु, आचा० १ श्रु० ५ अ० ६ उ० ।

**सोवणिय-** त्रि० [शौवनिक]

श्वभिश्चरतीति शौवनिकः । क्रूरसारमेयपरिग्रहपुरुष, सूय० २ श्रु०  
श्वपाके, सूय० २ श्रु० २ अ०

**सोवण्ण-** त्रि० [सौवर्ण]

सुवर्णमये आभूषणादौ, ठा० ९ ठा० ३ उ०

**सोवण्णिय-** त्रि० [सौवर्णिक]

सुवर्णमये आभूषणादौ, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० । रा० । ठा०

**सोवत्थिय-** पुं० [सौवस्तिक]

स्वस्तिवादके, उव० ।

मणिलक्षणविशेषे, रा० । जंबू० । जीवा० ।

पञ्चकमित्यन्ये । प्रासादविशेष इत्यपरे, नाया० १ श्रु० १ अ० ।  
त्रीन्द्रियभेदे, जीवा० १ प्रति० १ । पत्र० ।

अङ्गारकादिषु ग्रहेषु षष्टितमे महाग्रहे, चंद० २० पाहु० । पण्हा० ।

**सोवत्थियकूड-** न० [सौवस्तिककूट]

पूर्वरुचकपर्वतस्य षष्ठे कूटे, विद्युत्प्रभस्य वक्षस्कारपर्वतस्य  
तृतीये कूटे, ठा० ९ ठा० ३ उ०

**सोवयार-** पुं० [सोपचार]

वर्णाद्युचितपरिणामे, विशेष० ।

अनिष्टुराविरुद्धालज्जनीयाभिधाने, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

अग्राम्याभिधानमितनियतवर्णादिपरिणामे, आव०म० । अणुओ० ।  
ग्राम्यभणितिरहिते, अणुओ० ।

**सोवरी-** स्त्री० [शाम्बरी]

शम्बरासुरीये विद्याभेदे, सूय० २ श्रु० २ अ०

**सोवहि-** पुं० [सोपधि]

मायाविनि परव्यंसके, दश० १ अ० ।

**सोवहिक-** त्रि० [सोपधिक]

उपधीयते संगृह्यते इत्युपधिः, द्रव्यतो हिरण्यादि भावतो ।  
माया सहोपधिना वर्तत इति सोपधिकः । आचा०१ श्रु०४ अ०१  
द्रव्यभावोपधियुक्ते, आचा०१ श्रु०९ अ०१ उ० ।

**सोवाग-** त्रि० [श्वपाक]

चाण्डाल, ठा० ४ ठा० ४ उ० । वव० । पंच० चू० ।  
मार्जार, आचा०१ श्रु०९ अ०४ उ० ।

**सोवगकरंडय-** पुं० [श्वपाककरण्डक]

चाण्डालपेट्याम्, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**सोवागी-** स्त्री० [श्वपाकी]

स्वपाकजातिप्रसिद्धे विद्याभेदे, सूय०२ श्रु०२ अ० ।

**सोवाण-** न० [सोपान]

उन्नतारोहणमार्गविशेष, सम० ।

**सोवीर-** न० [सौवीर]

सिन्धुनदप्रतिबद्धे जनपदभेदे, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० । पन्न० ।  
काञ्जिके, गच्छा० । पिंड० ।  
आरनाले, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०७ उ० । उत्त० ।  
मध्यमग्रामस्य षष्ठ्यां मूर्छनायाम्, स्त्री० । ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**सोवीरग-** न० [सौवीरक]

मद्यभेदे, बुह०४ उ० ।

**सोवीरिणी-** स्त्री० [सौवीरिणी]

रसिन्यां सुरायाम्, बुह०१ उ०२

**सोस-** पुं० [शोष]

स्नेहविमाने, उव० । संथा० । जीवा० ।  
शरीरस्नेह-शोषणरोगे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**सोसिअ-** त्रि० [शोषित]

नीरसीकृते, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**सोसियकसाय-** त्रि० [शोषितकषाय]

शोषिताः-कृशीकृताः कषायाः सभेदाः क्रोधमानमायालोभा-  
ख्या येन स शोषितकषायः । सूक्ष्मसम्पराये, गच्छा०१ अधि० ।

**सोसियप्पाण-** त्रि० [शोषितप्राण]

शोषिताः म्लानिं प्रापिताः प्राणा इन्द्रियादयो येषां ते शोषित  
प्राणाः । तपः कृशेषु, गच्छा०२ अधि०

**सोह-** पुं० [सोफ]

शरीरादिशोथे, आचा०१ श्रु०६ अ०१ उ० ।

**सोहंत-** त्रि० [शोभमान]

शोभत इति शोभमानः । शोभां बिभ्रति, पन्न०२ पद । कल्प० ।

**सोहग-** न० [सौभाग्य]

सुभगत्व, उव० ।

**सोहण-** न० [शोधन]

निरतिचारकरणे, उवा०१ अ० ।

**सोहणग-** न० [शोधनक]

कर्णशोधने, दन्तशोधने च । बुह०३ उ० ।

**सोहम्म-** पुं० [सौधर्म]

सकलविमानसौधर्मावतंसकाभिधानविमानविशेषोपलक्षितत्वा-  
त्सौधर्मः । शक्रेन्द्रपालितप्रथमदेवलोके, अणुओ० । चंद० । उत्त०  
‘भगवतो महावीरस्य पञ्चमे गणधरे, सम० ।’

**सोहम्मकप्प-** पुं० [सौधर्मकल्प]

प्रथमदेवलोके, रा० ।

**सोहम्मवडिसय-** पुं० [सौधर्मावतंसक]

सौधर्मदेवलोकस्य मध्यभागवर्तिनि शक्रनिवासभूते प्रधान  
विमाने, सम० ।

**सोहम्मिंद-** पुं० [सौधर्मेन्द्र]

शक्र, पन्न० २ पद ।

**सोहि-** स्त्री० [शुद्धि]

शोधनं शुद्धिः । विमलीकरणे, आव० ।

**सोहिकप्प-** पुं० [शोधिकल्प]

शोधिः प्रायश्चित्तं द्रव्यादिपुरुषभावेन कल्पते यत्र स शोधि-  
कल्पः । शुद्धाचारे, निसि० २० उ० ।

**सोहियर-** त्रि० [शोधिकर]

अनन्तानुबन्धक्षयप्रक्रमेण शुद्धिजनके, आचा०१ श्रु०९ अ०१ ।

**स-कारादि शब्द-परिभाषा: समाप्ता:**

## ह-कारादि शब्द-परिभाषा:

**हंडिया-** स्त्री० [हण्डिका]

लघुकुम्भ्याम्, मस्तकन्यस्तदधिहण्डिका । विशेष ।

**हंत-** अव्य० [हन्त]

वाक्योपन्यासे, आचा०१ श्रु०९ अ०१ उ० ।  
प्रत्यवधारणे, कोमलामन्त्रणे, । उव० । अणुओ० ।  
शिष्यामन्त्रणे, । उव० । अणुओ० । आचा ० श्रु०२ अ०३ उ० ।  
अभ्युपगमद्योतने, अणुओ० ।  
संप्रेषणे, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ० ।  
खेदे, सूय०२ श्रु०१ अ० ।  
अष्ट एवमेवेत्यर्थे, उव० ।  
वाक्यारम्भे, जंबू०२ वक्ष०  
हर्षे, अनुकम्पा-याम्, रा० ।

**हंता-** अव्य० [हत्वा]

विनाशयेत्यर्थे, ठा० ३ ठा० २ उ० ।  
लगुडादि-भिरभ्याहार्येत्यर्थे, भग०८ श०५ उ० ।

**हंतुं-** अव्य० [हन्तुम्]

विनाशयितुमित्यर्थे, बुह०१ उ०२ ।

**हंभो-** अव्य० [हम्भो]

आमन्त्रणे, नाया०१ श्रु०१४ अ० ।  
शिष्याऽऽमन्त्रणे, दश०१ चू० ।

**हंस-** पुं० [हंस]

चतुरिन्द्रियजीवविशेषे, अणुओ० ।  
स्वनामख्याते पक्षि भेदे, आव० १ अ० ।  
अनुयोगे हंसोदारणमुक्तम् आव०म०१ अ० । अणुओ० । पण्हा० ।  
रजके, वस्त्रधावकावस्त्रप्रक्षालका हंसा इव रजका इव भवन्ति ।  
सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ० ।  
परिव्राजकमते यतिविशेषेषु, ये पर्वतकुहरपथ्याश्रमदेवकुला-  
रामवासिनो भिक्षार्थं च ग्रामं प्रविशन्ति । उव० ।

**हंसगर्भ-** पुं० [हंसगर्भ]

हंसः-पतङ्गश्चतुरिन्द्रियो जीवविशेषः, गर्भस्तु तन्निर्वर्तितः  
कोसिकारः, हंसस्य गर्भो हंसगर्भः । अणुओ० । जंबू० ।  
रत्नविशेष । जीवा०३ प्रति०४ अधि० । सूय० ।  
रत्नप्रभायाः पृथिव्याः षष्ठे रत्नगर्भकाण्डे, आव०म०१ अ० ।  
नाया० । ठा० । पन्न० ।

**हंसगर्भमय-** न० [हंसगर्भमय]

हंसगर्भाख्यरत्नमये, रा० ।

**हंसतेल्ल-** न० [हंसतैल]

हंसपक्षिपाकतैले, । निसि०१ उ० ।

**हंसलक्षण-** त्रि० [हंसलक्षण]

हंसस्येव लक्षणं स्वरूपं शुक्लता हंसा वा लक्षणं चिह्नं यस्य  
सः । नाया०१ श्रु०१ अ० ।

शुक्ले हंसचिह्ने, भग०९ श०३३ उ० ।

हंसवद्विशदे, जंबू०२ वक्ष० ।

**हंससर-** त्रि० [हंसस्वर]

हंसस्येव मधुरः स्वरः येषां ते । हंससदृशमधुरस्वरयुक्तेषु,  
जंबू०२ वक्ष० । तं० । जीवा० ।

**हंससरिसगङ्ग-** त्रि० [हंससदृशगति]

हंसस्य सदृशी गतिर्येषां ते । हंसतुल्यगतिषु, जीवा०३ प्रति०४

**हंसासन-** न० [हंसासन]

येषामासनानां मध्यभागे हंसा व्यवस्थितास्तानि हंसासनानि ।  
हंसाकृतिव्यवस्थितेषु आसनेषु, जंबू० १ वक्ष० । जीवा० ।

**हंसासनसंठिय-** त्रि० [हंसासनसंस्थित]

हंसासनवत्संस्थिते, जीवा०३ प्रति०२ अधि० ।

**हकार-** पुं० [हाकार]

हा इति हाकारलक्षणा या नीतिः सा हाकारः । आव०म०१ अ० ।  
प्रथमद्वितीयकुलकरदण्डनीतौ, 'हकारे मकारे आव०म०१ अ० ।

**हच्छंकर-** पुं० [हच्छंकर]

वनस्पतिभेदे, आचा०२ श्रु०२ चू०३ अ०

**हट्ट-** पुं० [हट्ट]

आपणे, नानागृहाध्यासिते त्रिकोणे भूभागविशेषे, अणुओ० ।  
पण्यशालायाम्, आचा०१ श्रु०९ चू०२ अ० । आव०म० ।

**हट्ट-** त्रि० [हट्ट]

हर्षिते, उक्त०१८ अ० ।  
विस्मयमापन्ने, यथा-अहो भगवान् तीर्थकरः समुत्पन्न इति ।  
आव०म०१ अ० । जीवा० । भग० उव० । रा० । नाया० ।  
नीरोगे, । भग० । निसि० । ठा० । सम० ।  
तारुण्येन समर्थे, तरुणा अपि केचिद्रागिणो निर्बलशरीराश्च  
भवन्ति । कल्प०३ अधि०९ क्षण ।  
हट्टतुष्टानन्दिताः एकार्थाश्चैते, विपा०१ श्रु०१ अ० ।

**हट्टतुष्ट-** त्रि० [हट्टतुष्ट]

अतितुष्टे, नाया०१ श्रु०१ अ० । आव०म०१ अ०भग० । उव० ।  
विपा० । दशा० । भग० ।  
हट्टतुष्टोऽतीव तुष्टः । अथवा-हट्टो नाम विस्मयमापन्नो यथा  
अहो भगवानास्ते इति तुष्टस्तोषं कृतवान् यथाभव्यमभूत्  
यन्मथा भगवानलोकितः तोषवशादेव चित्तमानन्दितं स्फीती-  
भूतं यस्य स चित्तानन्दितः सु-खादिदर्शनात् पाक्षिको  
निष्ठान्तस्य परनिपातः । रा० । भग० । कल्प० । जीवा० ।

**हडाहड-** न० [हताहत]

अत्यर्थे, 'फुट्टहडाहडसीसे' विपा० १ श्रु० १ अ० । नाया० ।

**हडि-** पुं० [हडि]

खोटके, उव० । विपा० ।

काष्ठघोटके, दशा० ६ अ० ।

काष्ठविशेषे, पण्हा० ३ अ०

**हडिबंधन-** न० [हडिबन्धन]

खोटकक्षेपके, पण्हा० ५ अ० । सूय० ।

**हढ-** पुं० [हढ]

जलरुहवनस्पतिविशेषे, पन्न० १ पद । आचा० ।

**हढकारग-** त्रि० [हढकारक]

हठेन कुर्वन्ति ये ते हठकारकाः । हठपूर्वककर्मकर्तारि, पण्हा० ३

**हणंत-** त्रि० [हणन्]

प्राणवियोगकर्तारि, सूय० १ श्रु० ११ अ० । पण्हा० ।

गोधूमादिदलनेन घातयति । ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**हणन-** न० [हनन]

हिंसने, सूय० २ श्रु० १ अ० । आचा० ।

व्यापादने, सूय० ।

गुणने, विनाशने, नाया० १ श्रु० १८ अ० । पण्हा० ।

पीडने, सूय० १ श्रु० ५ अ० २ उ० ।

**हणावण-** न० [घातन]

घ्नतोऽनुज्ञायाम्, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**हणु-** पुं० स्त्री० [हनू]

चिबुक, तं० । उव० । पण्हा० । अणुत्त० । सूय० ।

**हणुया-** स्त्री० [हनुका]

दंष्ट्राविशेषे, उत्त० २ अ० ।

**हतसंक-** त्रि० [हतशङ्क]

हास्यादिविकारविकलतया भावनीयव्यलीकशङ्के, बुह० ३ उ० ।

**हतसार-** त्रि० [हतसार]

अपहतद्रव्ये, पण्हा० ३ अ०

**हत्ता-** स्त्री० [हत्या]

विघातिते, निसि० १ उ० ।

हनने, विपा० १ श्रु० ७ अ० ।

**हत्थ-** पुं० [हस्त]

हन्यतेनेनेति हस्तः, हसति वा मुखमावृत्येति हस्तः । निसि० १ उ०

आदाननिक्षेपादिसमर्थे शरीरैकदेशे, निसि० १ उ० । सूय० । उत्त०

द्वे वितस्तिः हस्तः । ज्यो० ।

यद्यप्यजादीनां हस्तो न विद्यते तथाप्यग्रे पादौ हस्त इव हस्तौ ।

उवा० ७ अ० ।

**हत्थकम्म-** न० [हस्तकर्मन्]

हन्ति दशति वा मुखमावृत्याऽनेनेति हस्तः, शरीरैकदेशो निक्षे-  
पादानादिसमर्थस्तेन यत्कर्म क्रियते तद्वस्तकर्म । बुह० १ उ० ३ ।

समयप्रसिद्धे । ठा० ५ ठा० २ उ० ।

लिङ्गस्य कर्मदर्दनेन शुक्रपुद्गलनिष्काशने, जीवा० ।

हस्त-कर्म आगमप्रसिद्धम्, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

वेदविकारविशेषे, दशा० २ अ० ।

न संबाधनं कुर्यात् यतस्तदपि हस्तसंबाधनं चारित्रं  
शबलीकरोति । सूय० १ श्रु० ४ अ० २ उ० । सम० ।

**हत्थणिकखेव-** त्रि० [हस्तनिक्षेप]

न्यासः समर्पणं यस्य द्रव्यस्य तद्वस्तनिक्षेपम् करन्यस्तद्रव्ये,  
विपा० १ श्रु० २ अ० ।

**हत्थपाल-** पुं० [हस्तताल]

हस्तेन ताडने, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

**हत्थन्दुय-** न० [हस्तान्दुक]

हस्तयोः काष्ठादिमयबन्धनविशेषे, विपा० १ श्रु० ६ अ० ।

**हत्थपाय-** पुं० [हस्तपाद]

करचरणरूपे युगले, पण्हा० ३ अ० ।

**हत्थपायनिहुय-** त्रि० [हस्तपादनिभृत]

हस्तौ पादौ च निभृतौ पर-धनादानव्यापारादुपरतौ यत्र तत् ।

अदत्तादानबद्धे, पण्हा० ३ अ० ।

**हत्थपायपडिच्छण-** त्रि० [हस्तपादप्रतिच्छन्न]

कृतकरचरणे, दश० ८ अ० ।

**हत्थमालय-** पुं० [हस्तमालव]

अङ्गणेत्रिकाख्ये आभरणविशेषे, उव०

**हत्थलिज्ज-** न० [हस्तलीय]

आर्य्यरोहणनिर्गतस्य उद्देहगणस्य चतुर्थे कुले, कल्प० २ अधि० ८

**हत्थाइधोवण-** न० [हस्तादिधावन]

करचरणप्रभृतिशरीरावयवानां कारणमुद्दिश्य प्रक्षालने, पिंड० ।

**हत्थागय-** त्रि० [हस्तागत]

हन्ति हसति वा मुखमावृत्य अनेनेति हस्तस्तमागताः

हस्तागताः । करगतेषु, उत्त० ५ अ० ।

हस्ते आगताः हस्तागताः । स्वाधीनतया वर्तमानेषु, उत्त० ५ अ०

**हत्थादाण-** न० [हस्तादान]

परस्परहस्तदाने, बुह० ४ उ० ।

**हत्थादान-** पुं० [हस्ताताड]

हस्तेनाताडनं हस्ताताडः । हस्तताडने पूर्वोक्तार्थे, पन्न० २ । बुह०

**हत्थाभरण-** न० [हस्ताभरण]

हस्ताभरणाङ्गुलीयकादिके करभूषणे, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

**हथ्यामास-** पुं० [हस्तामर्ष]

हस्तेन हिरण्यस्यामर्षः-परामर्षो ग्रहो हस्तामर्षः। करेण स्वर्णग्रहे, तत्परिणामे सुवर्णे च। नाया० १ श्रु०८ अ०।

**हथ्यालंब-** पुं० [हस्तालम्ब]

करालम्बने, हस्तालम्ब इव हस्तालम्बस्तं हस्तालम्बं ददत् अशिवपुरोधेनादौ तत्प्रशमनार्थमभिचारकमन्त्रविद्यादि प्रयुञ्जान इत्यर्थः। ठा० ३ ठा० ४ उ०।

**हथि-** पुं० [हस्तिन्]

कुञ्जरे, करिवरे, सूय०१ श्रु०६ अ०। अणुओ०। आचा०।

**हथिकर्ण-** पुं० [हस्तिकर्ण]

लवणसमुद्रस्यान्तर्वर्तिनि स्वनामख्याते अन्तर्द्वीपे, ठा० ५ ठा०

**हथिकम्प-** न० [हस्तिकम्प]

सौराष्ट्रदेशमध्यगे नगरे, यत्र मासिकीं संलेखनां कृत्वा शत्रुञ्जये पर्वते आरुह्य पञ्च पाण्डवाः सिद्धाः। नाया०१ श्रु०१६ अ०।

**हथिगुलगुलाइय-** न० [हस्तिगुलगुलायित]

हस्तिनो गुलगुलशब्दे, रा०।

हस्तिनो यद् गुलगुलायितं शब्दविशेष एव। पण्हा०३ अ०

**हथिजाम-** न० [हस्तिजाम]

नालन्दायाः पूर्वोत्तरस्यां दिशि वनखण्डे, सूय०२ श्रु०७ अ०।

**हथिणाउर-** न० [हस्तिनापुर]

कुरुजनपदे नागपुरनगरे, ठा० १० ठा० ३ उ०। उत्त०। विपा०। आव०चू०।

**हथिणिग्या-** स्त्री० [हस्तिनिका]

करेणुकायाम्, आव०म०१ अ०।

**हथितावस-** पुं० [हस्तितापस]

तापसविशेषेषु, ये हस्तिनं मारयित्वा तेनैव बहुकालं भोजनतो यापयन्ति। भग०११ श० ९ उ०। उव०। निर०।

हस्तिनं व्यापाद्याऽऽत्मनो वृत्तिं कल्पयत्सु बौद्धसाधुषु, सूय०२ श्रु०६ अ०।

**हथिदीव-** पुं० [हस्तिद्वीप]

राजगृहनगरबाहिरिकाया नालन्दाभिधानाया उत्तरपूर्वस्यां दिशि खण्डे, ठा० ९ ठा० ३ उ०।

**हथिपाल-** पुं० [हस्तिपाल]

पापायां मध्यमायां नगर्यां राजनि, यस्य शालायां वीरजिनो निर्वृतः। सम०५ सम०।

**हथिपिप्पली-** स्त्री० [हस्तिपिप्पली]

गजपिप्पल्याम्, उत्त०३४ अ०

**हथिबंधणखंभ-** पुं० [हस्तिबन्धनस्तम्भ]

हस्तिनां बन्धनभूते स्तम्भे, उत्त०।

**हथिभूह-** पुं० [हस्तिभूति]

हस्तिमित्रपुत्रे, उत्त०१ अ०।

**हथिमित्त-** पुं० [हस्तिमित्र]

उज्जयिन्यां स्वनामख्याते गृहपतौ, उत्त० २ अ०।

**हथिमुह-** पुं० [हस्तिमुख]

लवणसमुद्रस्यान्तर्द्वीपे, ठा० ४ ठा० २ उ०। पत्र०। नं०। उत्त०

**हथिरयण-** न० [हस्तिरत्न]

उत्कृष्टे हस्तिनि, ठा० ७ ठा० ३ उ०।

**हथिराय-** पुं० [हस्तिराज]

हस्त्यनीकाधिपतौ, ठा० ४ ठा० २ उ०। सम०।

**हथिलावय-** पुं० [हस्तिलावक]

हस्ती च शालीनां लावकाश्च हस्ति लावकाः। करिणी त्रीहिच्छेदकेषु च व्याक्षेपे, वव० ६ उ०।

**हथिवाउय-** पुं० [हस्तिव्यापृत]

महामात्रे, उव०।

**हथिवाहन-** पुं० [हस्तिवाहन]

नन्दीश्वरद्वीपदेवे, सूय० १९ पाहु०।

**हथिसिक्खा-** स्त्री० [हस्तिशिक्षा]

कलाविशेषे, सम० ७२ सम०।

हस्तिदमने, उव०।

**हथिसीसग-** न० [हस्तिशीर्षक]

स्वनामख्याते नगरे, नाया०१ श्रु०१७ अ०।

‘हथिसीयं नगरं तत्थं दमयन्तो राया’ आव०म०१ अ०।

**हथिसुंडिया-** स्त्री० [हस्तिशुण्डिका]

यत्र पुताभ्यामुपविष्टः सन् एकं पादमुत्पाट्यास्ते सा हस्तिशुण्डिकाः। निषद्याभेदे, ठा० ५ ठा० १ उ०।

**हथिसोंडा-** स्त्री० [हस्तिशुण्डा]

त्रीन्द्रियजीवभेदे, पत्र०१ पद०। जीवा०।

**हथुत्तरा-** स्त्री० [हस्तोत्तरा]

हस्तोपलक्षिता उत्तरा यासां ता हस्तोत्तराः। उत्तराफाल्गुनीषु, ठा० ५ ठा० १ उ०। आचा०। आव० म०। कल्प०।

**हम्ममाण-** पुं० [हन्मयतान]

कशाभिः यष्टिमुष्टि लकुटादिभिः तोद्यमाने, सूय०१ श्रु०१ अ०१

**हम्मियतल-** न० [हर्म्यतल]

अट्टाले, आचा०२ श्रु०१ चू०२ अ०१उ

**हय-** त्रि० [हत]

यष्ट्यादिभिस्ताडिते, उत्त०२ अ०। आचा०। नाया०

हयमहियपरवीरघाइय’भग०७ श०९ उ०।

व्यवच्छिन्ने, विशेषे

मृते, उत्त०३२ अ०।



**हयकंठग-** पुं० [हयकण्ठक]

हयकण्ठप्रमाणे रत्नविशेषे, रा० । जीवा० ।

**हयकण्ण-** पुं० [हयकर्ण]

लवणसमुद्रस्यान्तर्द्वीपविशेषे, । उत्त० । नं० । ठा० ।

**हयगय-** पुं० [हयगत]

अश्वारूढ, उव० ।

**हयजूहियद्वाण-** न० [हययूथिकस्थान]

हयोऽश्वः तेषां परस्परतो युद्धं यत्र पश्चात्सन्धिश्च क्रियते तादृशे स्थाने, निसि० १२ उ० । आचा० ।

**हयजोह-** पुं० [हतयोध]

हता-विनाशिता योधा-अश्वारोहादयो यैस्ते हतयोधाः । विनाशितयोधेषु, पण्हा० ३ अ०

**हयजोहि-** पुं० [हययोधिन्]

हयेन युध्यते इति हययोधी । नाया० १ श्रु० १ अ० । रा० । अश्वारोहेण युध्यमाने, उव० ।

**हयपुव्व-** त्रि० [हतपूर्व]

पूर्वहते, आचा० १ श्रु० ९ अ० ३ उ० ।

**हयमहिय-** त्रि० [हतमथित]

प्रहारतो हते मानमन्थनात् मथिमे, नाया० १ श्रु० १६ अ० ।

**हयमुह-** पुं० [हयमुख]

लवणसमुद्रस्यान्तर्द्वीपविशेषे, उत्त० ३६ अ०

**हयरस्सि-** पुं० [हयरस्मि]

खलीने, दश० १ चू० ।

**हयलक्खण-** न० [हतलक्षण]

दीर्घग्रीवाक्षिकूटेत्यादिके अश्वलक्षणविज्ञाने, जंबू० २ वक्ष० । नाया० । कल्प० ।

**हयलाला-** स्त्री० [हयलाला]

अश्वमुखजले, जंबू० ३ वक्ष० । उव० ।

‘हयलालापेलवाइरेगं’ जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**हयवर-** न० [हयवर]

अश्वानां मध्ये प्रधाने, नाया० १ श्रु० १७ अ० ।

**हयविलंबिय-** न० [हयविलम्बित]

चतुर्विंशतितमनाट्यविधौ, रा० ।

**हयवीहि-** स्त्री० [हयविधि]

शुक्रस्य महाग्रहस्य नागवीथीत्यन्यत्र प्रसिद्धे शुक्रादिग्रहचार-योग्यक्षेत्रभागे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**हयसंघाडग-** पुं० [हयसंघाटक]

अश्वद्वये, संघाटकशब्दो युग्मवाची यथा साधुसंघाटक इत्यत्र, ततो द्वे द्वे हययुग्मे हयसंघाटक इति । रा० । जीवा० । जंबू० ।

**हयसंठिय-** पुं० [हयसंस्थित]

अश्वकारे, भग० १ श० २ उ० ।

**हयहसिय-** न० [हयहसित]

हयशब्दविशेषे, पण्हा० १ अ० उव० । आव० म० । जंबू० ।

**हयाणीय-** पुं० [हयानीक]

घोटककटके, उत्त० १७ अ० ।

**हर-** पुं० [हर]

हाः-कालः स मनुष्यं हरति प्राणिनामायुरिति हरः । दिवसरजन्यात्मके काले, उत्त० १४ अ० ।

रुद्रे, अणुओ० ।

**हरण-** न० [हरण]

हतौ, हारः हतिर्हरणं ह्रियते इति वा एकार्थाः । वव० १ उ० । परद्रव्यस्य हतो, पण्हा० ३ अ०

**हरतणु-** पुं० [हरतनु]

तृणाग्रव्यवस्थिते जलबिन्दौ, सूय० २ श्रु० ३ अ० ।

यो भुवमुद्भिद्य गोधूमा रतुणाग्रादिषु बद्धो बिन्दुरुपजायते । बादरकायभेदे, पन्न० १ पद । कल्प० । दश० । जीवा० ।

**हरय-** पुं० [हद]

महागाधजले, आचा० १ श्रु० ६ उत्त० । भग० । ठा० । जीवा० । रा०

**हरहरा-** स्त्री० [हरहरा]

अतीव भिक्षाप्रस्तावे, विशेषे ।

**हरि-** पुं० [हरि]

वासुदेवे, सूय० १ श्रु० १ अ० १ उ० । ठा० ।

सिंह, ठा० ४ ठा० २ उ० ।

शाखामृगे, आव० ४ अ० । ठा० ।

हरिवर्षक्षेत्रविशेषस्याधिष्ठातृदेवे, ठा० ९ ठा० ३ उ० । जंबू० ।

विद्युत्कुमारन्द्रे, आव० चू० १ अ० । महाग्रह, चंद० २० पाहु० ।

औत्तराहाणामग्निकुमाराणामिन्द्र, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**हरिएस-** पुं० [हरिकेश]

मातङ्ग चाण्डाल, उत्त० ।

**हरिओभास-** पुं० [हरितावभास]

हरितत्वेन अवभासमाने, रा० । जीवा० ।

**हरिकंत-** पुं० [हरिकान्त]

दक्षिणात्यानां कुमारानामिन्द्रे, भग० ३ श० । ठा० । सम० । पन्न०

**हरिकंतप्पवायदह-** पुं० [हरिकान्ताप्रपातहद]

हरिकान्तायाः महानद्याः प्रपातहदे, हरिकान्तोक्तरूपा महानदी यत्र निपतति, यश्च हरिकुण्डसमानो हरिद्वीपसमानेन हरि-कान्तादेवीद्वीपेन सभवेनेन भूषितमध्यभागः स हरिकान्ता प्रपातहद इति । ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**हरिकंता- स्त्री० [हरिकान्ता]**

हरिवर्षे महानद्याम्, रा० । जंबू० । सम० ।  
हरिकान्ता तु महापद्महृदा देवोत्तरेण तोरणेन निर्गतस्य पञ्चोत्तराणि षोडश शतानि सातिरेकाणि उत्तराभिमुखीपर्वतने गत्वा सातिरेकयोजनशतद्वयप्रमाणेन प्रपातेन हरिकान्ताकुण्डे तथैव प्रपति । मकर मुखजिह्विकाप्रमाणं पूर्वोक्तद्विगुणं, ततः प्रपात-कुण्डादुत्तरतोरणेन निर्गत्य हरिवर्षमध्यभागवर्तिनं गन्धापाति-वृत्तवैताह्यं योजनेनासम्प्राप्ता पश्चिमाभिमुखीभूता षट्पञ्चाशता सरित्सहस्रैः समग्रा समुद्रमभिगच्छति, इयं च हरिकान्ता प्रमाणतो रोहित्रदीतो द्वीगुणेति । ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**हरिकंताकूड- पुं० [हरिकान्ताकूट]**

नदीदेवतासत्के कूटे, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।  
जम्बूद्वीपे महाहिमवतः षष्ठे कूटे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**हरिकूड- पुं० [हरिकूट]**

नीलवत्पर्वतस्य नीलवत्कूटादक्षिणतः सहस्रप्रमाणे विद्युत्प्रभवर्तिकूटे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।  
उमाल्यद्वक्षष्कारपर्वतस्य कूटे, निषधवर्षधरस्य पञ्चमे कूटे ।  
जंबू० १ वक्ष०

**हरिकेशीबल- पुं० [हरिकेशीबल]**

स्वनामख्याते साधु, उत्त० १२ अ० ।

**हरिचंद- पुं० [हरिचन्द्र]**

साकेतनगरवास्तव्ये गृहपति, अंत० ६ वर्ग० ५ अ०

**हरिणैगमेसि- पुं० [हरिनैगमेषिन्]**

हरिरिन्द्रस्तत्सम्बन्धित्वात् हरिनैगमेषी । भग० ५ श० ४ उ० ।  
शक्रस्य पदातिकटकनायके, कल्प १ अधि० २ ।  
हरेरिन्द्रस्य नैगममादेशमिच्छतीति हरिनैगमेषी । अथवा-हरेः इन्द्रस्य नैगमेषी नामा देवः यो देवानन्दायाः कुक्षेः वीरजिनमपहृत्य त्रिशलागर्भे प्रावेशयत् । आव० म० २ अ०  
शक्रस्य देवेन्द्रस्य पदात्यनीकाधिपतौ, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**हरितग- पुं० [हरितक]**

नीलके दूर्वादिवनस्पतौ, पण्हा० ३ अ० । पत्र० ।

**हरिप्पवायदह- पुं० [हरिप्पवातहद]**

हरित्रयाः प्रपातहदे, ठा० ।  
हरित्रदीप्रागुक्तलक्षणा यत्र निपतति । यश्च द्वे शते चत्वारिंशदधिके आयामविष्कम्भाभ्यां सप्तशतानि एकोनषष्ट्यधिकानि परिक्षेपेण यस्य च मध्यभागे हरिदेवताद्वीपः द्वात्रिंशद्योजनायामविष्कम्भः एकोत्तरशतपरिक्षेपः जलान्ताद् द्विकोशोच्छ्रितो हरिदेवताभवनभूषितोपरितनभागोऽसौ हरिप्पवातहद इति । ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**हरिभद्र- पुं० [हरिभद्र]**

श्वेताम्बराचार्यजिनभद्रनिगदानुसारं विद्याधरकुलतिलकाचार्यजिनदत्तशिष्ये धर्मतो याकिनीमहत्तरासूनौ स्वनामख्याते आचार्ये, आव० ६ अ० । दश० ।

**हरिमन्थ- न० [हरिमन्थ]**

कृष्णचणके । गच्छा० । निसि० ।

**हरिमहाणई- स्त्री० [हरिमहानदी]**

निषधपर्वते पद्महृदनिर्गते महान-दीभेदे, जंबू० ४ वक्ष० ।

**हरिमिच्छ- पुं० [हरिमिच्छ]**

कृष्णचणके, दश० ६ अ० ।

**हरिमेला- स्त्री० [हरिमेला]**

वनस्पतिविशेषे, उव० ।

**हरिय- त्रि० [हरित]**

शुकपुच्छवद् वर्णविशेषपरिणते, हरितभेदे च इति । उव० ।  
उपरि बीजेषु, सूय० १ श्रु० ९ अ० । नाया० ।  
अङ्कुरोद्भिन्नबीजे, बुह० ।  
मधुरतृणादिविशेषे, ठा० ९ ठा० ३ अ०  
दूर्वादिके, भग० ७ श० ६ उ० । पण्हा० । सूय० । आचा० ।  
शार्दूले, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।  
हरितसूक्ष्ममत्यन्ताभिनवोद्भिन्ने पृथिवीसमानवर्णे, ठा० ८ ठा०  
तन्दुलीयकाध्यारुहवसुलवदरकमार्जारपादिकालिल्लीपालक्यादिषु, आचा० १ श्रु० १ अ० ५ उ० ।

**हरियग- पुं० [हरितक]**

जीरकादिके, चंद० २० पाहु० । भग० । सूर० । ठा० ।  
ह्रस्वतृणे, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

**हरियपणी- स्त्री० [हरितपर्णी]**

केषुचिद्गृहेषु राज्ञो दण्डं दत्त्वा देशतापहारार्थमागन्तुकः पुरुषो मार्यते गृहस्योपरिष्ठात् आर्द्रवृक्षशाखा चिह्नं क्रियते योऽप्यन्योऽविज्ञात आगमिष्यति सोऽप्येवं भविष्यतीति सूचके चिह्ने, बुह० १ उ० २ ।

**हरियकंति- स्त्री० [हरितकान्ति]**

शाकबहुलदेशे शाकभक्षणे, बुह० १ उ० २ । उव० ।

**हरियभद्र- पुं० [हरितभद्र]**

यक्षभेदे, पत्र० १ पद ।

**हरियभोजन- न० [हरितभोजन]**

हरितानि मधुरतृणकटुभाण्डादीनि एव, भुज्यन्ते इति । उव० ।  
मधुरतृणादिविशेषरूपेषु भोजनेषु, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**हरियभोजना- स्त्री० [हरितभोजना]**

हरितानि भोजनानि यस्यां सा हरितभोजना । आव० ४ अ० ।

**हरियवेरुलियवण्णाभ-** पुं० [हरितवैडूर्यवर्णाभ]

हरितश्चासौ वरुलियवर्णाभश्चेति । नीलवर्णे वैडूर्यभेदे, भग० १६ श०६ उ० ।

**हरियसाग-** न० [हरितशाक]

पत्रशाके, विपा०१ श्रु०८ अ० ।

**हरियसुहुम-** न० [हरितसूक्ष्म]

अत्यन्ताभिनवोद्भिन्ने पृथिवीसमानवर्णे हरितके, ठा० ९ ठा० ३ उ० । दश० । कल्प० ।

**हरिया-स्त्री०** [हरिता]

जम्बूद्वीपे पूर्वावरेण लवणसमुद्रं समुत्सर्पन्त्यां स्वनामख्यातायां नद्याम्, सम० १४ सम० ।

**हरियाल-** पुं० [हरिताल]

पृथिवीकायरूपे । जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।  
वर्णकद्रव्ये, नाया०१ श्रु०१ अ० । आचा० ।

**हरियालगुलिया- स्त्री०** [हरितालगुटिका]

हरितालिकासारनिर्वर्तित-गुटिकायाम्, जीवा०३ प्रति०४ । रा० ।

**हरियालभेय-** पुं० [हरितालभेद]

हरितालिकाच्छेदे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० । रा० ।

**हरियालिया- स्त्री०** [हरितालिका]

दूर्वायाम्, नाया० १ श्रु०१ अ० । कल्प० ।  
पृथिवीविकारवर्णकद्रव्ये, रा० । जंबू० ।

**हरियाहडिया- स्त्री०** [हताहतिका]

पूर्वं हतं पश्चादाहतम् आनीतं वस्त्रं हताहतं तदेव हताहतिका ।  
अतिवर्तन्ते । स्तेनैः पूर्वं हते पश्चादानीते, बुह०१ उ०३ ।

**हरिरेणु-** पुं० [हरिद्रेणु]

नीलवर्णपांशौ, नाया०१ श्रु०१६ अ० ।

**हरिल-** पुं० [हरिल]

नागदत्ता यशोमती रत्नवतीनाम्नां ब्रह्मदत्तचक्रिभार्याणां पितरि,  
उत्त०१३ अ० ।

**हरिवंस-** पुं० [हरिवंश]

हरिः-पूर्वभववैरिसुरानीतहरिवर्षक्षेत्रयुगलं तस्य वंशो हरिवंशः ।  
कल्प०१ अधि०२ क्षण ।

हरेः पुरुषविशेषस्य वंशो, हरिवंशः । हरिवर्षजातहरिनाम्नः  
पुरुषजातायां पुत्रपौत्रादिपरम्परायाम्, ठा० १० ठा० ३ उ० ।  
कल्प० ।

**हरिवंसकुलुपत्ति- स्त्री०** [हरिवंशकुलोत्पत्ति]

हरिवंशलक्षणस्य कुल स्योत्पत्तौ, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**हरिवंसग-** पुं० [हरिवंशक]

हरिवंशजे मनुष्ये, ठा० ६ ठा० ३ उ० ।

**हरिवंसगंडिया- स्त्री०** [हरिवंशगण्डिका]

हरिवंशमात्रवक्तव्यतार्थाधिकारानुगतायां वाक्यपद्धतौ, सम० ।

**हरिवास-** पुं० [हरिवास]

जम्बूद्वीपस्य भरतापेक्षया तृतीये वर्षक्षेत्रे, स्वनामख्याते  
तदधिपतिदेवे च । ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**हरिवासकूड-** पुं० [हरिवासकूट]

जम्बूद्वीपे मन्दरस्य दक्षिणे महाहि-मवति वर्षधरपर्वते  
स्वनामख्याते कूटे, ठा० ८ ठा० ३ उ० ।

जम्बूद्वीपे हरिवर्षस्य क्षेत्रविशेषस्याधिष्ठातृदेवेन स्वीकृते निष-  
धवर्षधरपर्वतस्य स्वनामख्याते कूटे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**हरिवासय-** पुं० [हरिवासक]

हरिवर्षे जातो हरिवर्षो वाऽस्य वासः । हरिवर्षे उत्पन्ने,  
अणुओ० ।

**हरिवाहन-** पुं० [हरिवाहन]

नन्दीश्वरद्वीपस्य अपराधादिपतौ देवे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**हरिवेरुलियवण्णाभ- न०** [हरिवैडूर्यवर्णाभ]

हरिः षिङ्गो वर्णो, वैडूर्यं मणिविशेषस्तस्य वर्णो नीलो वैडूर्य-  
वर्णस्ततो द्वन्द्वस्तद्वादाभाति यत्तद्धरिवैडूर्यवर्णाभम् । ठा० १०  
ठा० ३ उ० ।

नीलवैडूर्यवर्णाभे, भग०१६ श०६ उ० ।

**हरिसम्पओसावण्ण-** पुं० [हर्षप्रद्वेषपत्र]

हर्षश्च प्रद्वेषश्च हर्षप्रद्वेषं तदापन्नः । रागद्वेषसमाकुले, सूय०१  
श्रु०३ अ०१ उ० ।

**हरिसह-** पुं० [हरिसह]

आलम्बिकायां वीरजिनस्य प्रियपृच्छके, आव०म०१ अ० ।  
दाक्षिणात्यानामग्निकुमाराणामिन्द्रे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**हरिसहकूड-** न० [हरिसहकूट]

जम्बूद्वीपे वक्षस्कारपर्वते कूटे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।  
उत्तरश्रेणिपतिविद्युत्कुमारेन्द्रस्य माल्यवद्वर्षधरकूटे, जंबू० ४

**हरिसाहु-** पुं० [हरिसाधु]

आचाराङ्गसूत्रकृताङ्गयोष्टीकाकारकस्य शीलाङ्गचार्यस्य टीका-  
करणसहायके साधौ, आचा०१ श्रु०९ अ० ४ उ० ।

**हरिसिह-** पुं० [हरिशिख]

उत्तरश्रेणिपतिविद्युत्कुमारेन्द्रे, ठा० ४ ठा० ०१ उ० ।

**हरिसेण-** पुं० [हरिषेण]

काम्पिल्यनगरे जाते दशमचक्रवर्त्तिनि, । सम० । आव० । ठा०

**हरी- स्त्री०** [हरी]

जम्बूद्वीपे पूर्वाभिमुखेन लवणसमुद्रं समुत्सर्पन्त्यां स्वनाम-  
ख्यातायां महानद्याम्, ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

**हरीडक-** पुं० [हरीतक]

कोङ्कणदेशप्रसिद्धे कषायबहुले पय्याफले, पत्र० १ पद।

**हरीयई-** स्त्री० [हरीतकी]

स्वनामख्याते वृक्षे, हरीतकीफले च। विशेष०।

**हरेणुया-** स्त्री० [हरेणुका]

प्रियङ्गौ, उत्त०३ अ०।

**हल-** पुं० [हल]

लाङ्गले, उव०। पण्हा०। नाया०।

श्रेणिकराजस्य कुक्षिजे पुत्रे, अणुत्त०।

**हलकुद्दाल-** पुं० [हलकुद्दाल]

हलस्योपरितने भागे, उवा०२ अ०।

**हलधर-** पुं० [हलधर]

बलदेवे, । नाया०। पत्र०। जंबू०। रा०। आव०म०।

**हलधरकोसेज-** न० [हलधरकौशेय]

बलदेववस्त्रे, उव०। रा०।

**हलधरवसन-** न० [हलधरवसन]

हलधरो बलदेवस्तस्य वसनम्। बलदेववस्त्रे तच्च किल नीलं भवति। । रा०।

**हला-** अव्य० [हला]

देशविशेषगौरवार्थं स्त्र्यामन्त्रवचने, दश०७अ०

**हलि-** स्त्री० [हली]

पक्षिविशेषे, जंबू०७ वक्ष०।

**हलिद्वपत्त-** न० [हरिद्रपत्र]

चतुरिन्द्रियजीवविशेषे, पत्र०१ पद। जीवा०।

**हलिद्वमच्छ-** पुं० [हरिद्रमत्स्य]

मत्स्यविशेषे, पत्र०१ पद। विपा०

**हलिद्वमत्तिया-** स्त्री० [हरिद्रमृत्तिका]

श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायविशेषे, पत्र०१ पद।

**हलिद्वागुलिया-** स्त्री० [हरिद्रागुटिका]

हरिद्रासारनिर्वर्त्तितायां गुटिका याम्, जीवा०३ प्रति०४ अधि०।

**हलिद्वाभेय-** पुं० [हरिद्राभेद]

हरिद्राच्छेदे, जीवा०३ प्रति०४ अधि०। रा०।

**हलिदुग-** पुं० [हरिद्रुक]

स्वनामख्याते नगरे। यत्र विहारक्रमेण स्वामी गतः। आव०चू०१

**हलिसागर-** पुं० [हरिसागर]

मत्स्यविशेषे, जीवा०१ प्रति०। पत्र०।

**हल्ल-** पुं० [हल्ल]

चम्पायां कूणिकराजभ्रातरि श्रेणिकस्य चेल्लणा गर्भजे पुत्रे, भग०७ श०९ उ०।

**हल्लोहलिआ-** स्त्री० [हल्लोहलिका]

सरट्याम्, । कल्प०३ अधि०९ क्षण।

**हवै-** अव्य० [हवै]

हवै इत्येतदपि निपातद्वयं हिशब्दार्थत्वाद्यस्माद्यर्थे। विशेष०।

**हव्व-** न० [हव्व]

शीघ्रे, अणुओ०। ठा०। आचा०। नाया०। जीवा०। उव०।

नं०। भग०। विपा०। निर०।

**हव्ववाह-** पुं० [हव्ववाह]

अग्रौ, आचा०१ श्रु०४ अ०३ उ०।

**हसंत-** त्रि० [हसत्]

परिहासं कुर्वति, भग० १३ श०६ उ०।

**हसण-** न० [हसन]

हास, ठा० ४ ठा० १ उ०। निसि०।

**हसणिज-** त्रि० [हसनीय]

हसितुं योग्ये, आचा०१ श्रु०२ अ०१ उ०

**हसहसेऊण-** अव्य० [जाज्वलित्वा]

भृशमुद्दीपितो भूत्वेत्यर्थे, बुह०३ उ०।

**हसिय-** न० [हसित]

वक्रोक्तिगर्भे हसने, । दश०।

ईषत् हासे, पण्हा० ४ अ०। उव०।

कपोलविकाशिनि प्रेमसंदर्शिनि च हसने, जंबू० २वक्ष०। जीवा०

हसितं यत् कपोलविकाशमात्रसूचितं नत्वट्टहासादि। रा०।

उद्बुद्धे, विशेष०।

**हस्स-** त्रि० [हस्व]

वामनकादौ, सूय०१ श्रु०१ अ०। आचा०। पण्हा०।

**हा-** अव्य० [हा]

महत्खेदे, उत्त० २१ अ०। तं०। ।

**हाउं-** अव्य० [हापयित्वा]

वञ्चयित्वेत्यर्थे, बुह०३ उ०।

**हांसल-** न० [हांसल]

अर्धचन्द्राकृतिगलाभरणे, अणुओ०।

**हाडहड-** न० [देशी]

तत्काले, वव०५ उ०।

**हाडहडा-** स्त्री० [देशी]

यल्लघुगुरुमासादिकमापन्नत्सत्सद्य एवयस्थां दीयते सा हाडहडा। आरोपणाभेदे, ठा० ५ ठा० २ उ०। निसि०। वव०।

**हाणि-** स्त्री० [हानि]

अवधिज्ञाने, तस्य चतुर्विधा हानिरुक्ता। आव०म० १ अ०। आव०चू०।

**हायण-** पुं० [हायन]

संवत्सरे, नाया० १ श्रु०१ अ० ।

**हायणी-** स्त्री० [हापनी]

हापयति पुरुषमिन्द्रियेष्विति, इन्द्रियाणि मनाक् स्वार्थग्रहणाय पटूनि करोतीति हापनी । स्त्रियाम्, ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**हार-** पुं० [हार]

अष्टादशसरिके, रा० । जंबू० । कल्प० । जीवा० । नाया० । आभरणविशेषे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० । नाया० ।

**हारज्ज्ञायण-** न० [हाराध्ययन]

गृद्धिदशानां नवमाध्ययने, ठा० १ ठा० ३ उ० ।

**हारणिगर-** पुं० [हारनिकर]

पुञ्जीकृतमुक्ताहारे, कल्प०१ अधि०२ क्षण ।

**हारपुडपाय-** न० [हारपुटपात्र]

लोहपात्रे, आचा०२ श्रु०१ चू०६ अ०१ उ० ।

**हारभद्र-** पुं० [हारभद्र]

हारद्वीपे स्वनामख्याते देवे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**हारमहाभद्र-** पुं० [हारमहाभद्र]

हारद्वीपे स्वनामख्याते देवे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**हारमहावर-** पुं० [हारमहावर]

हारसमुद्रे स्वनामख्याते देवे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**हारवर-** पुं० [हारवर]

स्वनामख्याते द्वीपे, समुद्रे च । चंद०२० पाहु० । जीवा० । सूर० ।  
हारवरद्वीपे स्वनामख्याते देवे, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**हारवरोभास-** पुं० [हारवरावभास]

स्वनामख्याते द्वीपे, समुद्रे च, हारवरभासे स्वनामख्याते देवे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**हारवरोभासमहाभद्र-** पुं० [हारवरावभासमहाभद्र]

हारवरावभाससमुद्रे स्वनामख्याते देवे, जीवा०३ प्रति०४ ।

**हारविराड्य-** त्रि० [हारविराजित]

मौक्तिकादिमालया शोभमाने, कल्प०१ अधि०२ । ठा० ।  
हारेण विराजमानं 'वच्छ त्ति' हृदयं यस्य । कल्प०१ अधि०१ ।  
हारैर्विराजितं वक्षा येषां ते हारविराजितवक्षसः । जीवा०३ प्रति०  
'हारविराड्यरड्यवच्छा' हारेण विराजमानेन रचितं शोभितं  
वक्षो यस्य स हारविराजमानरचितवक्षः । रा० । उव० ।

**हारि-** त्रि० [हारिन्]

मनआह्लादकारिणि, आचा० १ श्रु०६ अ०२ उ०

**हारिय-** स्त्री० [हारीत]

कौत्सगोत्रविशेषप्रवर्तके ऋषि, ठा० ७ ठा० ३ उ० । नं० ।  
हारितोऽचलभ्राता । आव०म०१ अ०

**हारिया-** स्त्री० [हारीता]

श्रीगुप्तात्रिर्गतस्य चारणगलस्य प्रथमशाखायाम्, कल्प० २  
अधि० ८ क्षण ।

**हारियायण-** पुं० [हारीतायन]

हारीतर्षिगोत्रापत्ये, कल्प० २ अधि० ८ क्षण ।

**हारीस-** पुं० [हारीश]

म्लेच्छदेशभेदे, तत्र जातेऽनार्यसनुष्ये च । पत्र०१७ पद०२ उ० ।

**हारोत्थय-** त्रि० [हारावस्तुत]

हारेणाऽऽच्छादिते, कल्प०२ अधि०३ ।

हारावस्तुतेन हारावच्छादनेन सुष्ठु कृतरतिक वक्ष-उरो यस्याः ।  
उव० । भग० ।

हारेणावस्तुतमाच्छादितं तेनैव सुष्ठु कृत रतिदं च वक्ष-उरो  
यस्याः । तं०

**हारोद-** पुं० [हारोद]

हारद्वीपस्याभितः समुद्रे, जीवा०३ प्रति०४

**हाला-** [देशी]

कस्मिंश्चिद्देशे पुरुषाद्यामन्त्रणे, नाया०१ श्रु०९ अ० ।

**हालाहल-** पुं० [हालाहल]

श्रावस्त्यां नगर्यामाजीविकोपासके कुम्भकारे, भग०१५ श० ।  
त्रीन्द्रियजीवविशेषे, पत्र० १ पद ।  
स्थावरविषभेदे, गच्छा०२ अधि० ।

**हालिज-** न० [हारीत]

स्थविरात् श्रीगुप्तात्रिर्गतस्य चारणगणस्य तृतीये कुले, कल्प०२  
अधि० ८ क्षण ।

**हालिद-** त्रि० [हारिद्र]

हरिद्रावर्णे पीते, । सूर० । रा० । जीवा० ।

**हालियंड-** न० [हालिकाण्ड]

गृहकोलिकायाः ब्राह्मण्या वा अण्डे, कल्प०३ अधि० ९ ।

**हालिय-** पुं० [हालिक]

हलेन व्यवहरतीति हालिकः । अणुओ० ।  
लाङ्गलिके नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**हालिया-** स्त्री० [हालिका]

गृहकोलिकायाम्, ब्राह्मण्यां च । कल्प० ३ अधि०९ क्षण ।

**हाव-** पुं० [हाव]

मुखविकारलक्षणे स्त्रीणां चेष्टाविशेषे, नाया०१ श्रु०१ अ० । रा० ।

**हास-१** पुं० [हास]

हीभयादिनिमित्ते चेतोविप्लवे, आचा०१ श्रु०३ अ०२ उ० ।  
मोहोदयजनितविकारे, ठा० ३ ठा० १ उ० ।  
स्त्रीभिः सह हसिते, निसि० १ उ० ।



**हास-२** पुं० [हास]

दाक्षिणात्यानां महाक्रन्दव्यन्तराणामिन्द्रे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**हासंज्ञाण-** न० [हासध्यान]

हासो-हास्यं तस्य ध्यानं चण्डरुद्राचार्य शिष्यस्येव मित्र-  
सहितस्य यज्ञबाहुकुमारं प्रति सुन्दरमृषाऽस्य च वा । दुर्ध्यान  
भेदे, आतु० ।

**हासकम्म-** न० [हास्यकर्मन्]

यदुदयेन सनिमित्तनिमित्तं वा हसति तत्कर्म हास्यम् ।  
मोहनीयकर्मभेदे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**हासकर-** पुं० [हास्यकर]

हास्योपजीवितेषु, भग० ९ श० ३३ उ० । उव० । जंबू० ।  
वेषरचनादिना स्वपरहासोत्पादके, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**हासकुहय-** पुं० [हास्यकुहक]

हास्यकारिकुहके, दश० १० अ० ।

**हासणिस्सिय-** न० [हासनिश्चित]

मृषाभेदे, यथा कन्दर्पिकाणां कस्मिंश्चित्संबन्धिनि गृहीते पृष्ठानां  
न दृष्टमित्यादि । ठा० १० ठा० ३ उ० ।

**हासबोलबहुल-** पुं० [हासबोलबहुल]

हासबोलौ च बहलावतिप्रभूतौ येषां ते हासबोलबहुलाः ।  
हास्यकलकलप्रचुरेषु, जीवा० ३ प्रति० ४ अधि० ।

**हासयिता-** त्रि० [हासयितृ]

परिहासकारिणि, पण्हा० १ आश्र० द्वार ।

**हासरइ-** पुं० [हास्यरति]

औत्तराहाणां महाक्रन्दव्यन्तराणामिन्द्रे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

**हासा-** स्त्री० [हासा]

उत्तररुचकपर्वतवास्तव्यायां दिक्कुमार्याम्, आव० चू० १ अ० ।  
जंबू० । आव० ।

**हासुस्सित्त-** पुं० [हासोत्सृत]

हासेन युक्त उत्सृतो हृष्टो हासोत्सृतः । हसितमुखे प्रहृष्टे, वव० २  
उ० । बुह० ।

**हाहक्किय-** त्रि० [हाहाकृत]

धिगिति भणनपूर्वकं थूकृते, बुह० ३ उ० ।

**हाहा-** अव्य० [हाहा]

दुःखार्तलोकवचने, जंबू० २ वक्ष० । विपा० ।  
गन्धर्वविशेषे, पत्र० १ पद ।

**हाहाभूअ-** पुं० [हाहाभूत]

हाहा इत्येतस्य शब्दस्य दुःखार्तलोकेन करणं हाहोच्यते ।  
तद्भूतः प्राप्तो यः कालः स हाहाभूतः । हाहेति शब्दं प्राप्ते  
काले, भग० ७ श० ६ उ० ।

**हियगमणिज्जा-** स्त्री० [हृदयगमनीया]

हृदयप्रह्लादिहृद्गतशोकाद्युच्छेदिकायाम्, कल्प० १ अधि० ३ ।

**हिङ्गुरक्ख-** पुं० [हिङ्गुवृक्ष]

वृक्षविशेषे, यस्य निर्यासो हिङ्गु भवति, भग० ८ श० ३ उ० ।

**हिङ्गुल-** न० [हिङ्गुलक]

वर्णकद्रव्ये, नाया० १ श्रु० १ अ० । सूय० । आचा० । उत्त० ।

**हिङ्गुलसमुगय-** पुं० [हिङ्गुलकसमुद्रक]

हिङ्गुलकरक्षार्थसम्पुटे, जीवा० ३ प्रति० ४ अ० ।

**हिङ्गुसिव-** पुं० [हिङ्गुशिव]

हिङ्गुमयशिवलिङ्गे, ठा० ४ ठा० ३ उ० । दश० ।

**हिङ्गोल-** न० [हिङ्गोल]

मृतकभक्ते, .....

यक्षादियात्राभोजने च । आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ४

**हिङ्ग-** पुं० [हिङ्गक]

पर्यटके साधौ, सूय० १ श्रु० २ अ० ३ उ० ।

हिण्डकत्वेन हिण्डक, जीव, भग० २० श० २ उ० ।

**हिङ्गन्त-** त्रि० [हिण्डमान]

इतस्ततः पर्यटति, बुह० २ उ० २ ।

**हिङ्गमाण-** त्रि० [हिण्डमान]

अधिगच्छति, पण्हा० १ अ०

**हिङ्गिय-** त्रि० [हिण्डित]

विहते, नाया० श्रु० ९ अ० ।

**हिंस-** त्रि० [हिंस]

हिनस्तीत्येवंशीलो हिंसः । स्वभावतः प्राणव्यपरोपणकृति,  
उत्त० ७ अ० ।

हिंसनशीले, उत्त० ७ अ० । ठा० ।

**हिंसग-** त्रि० [हिंसक]

जीवहिंसाकरणशीले, उत्त० १२ अ० । ठा०

**हिंसप्पयाण-** न० [हिंसाप्रदान]

हिंसाहेतुत्वादयुधानलविषादयो हिंसोच्यते,....

कारणे कार्योपचारात्, .....

तेषां प्रदानमन्यस्मै क्रोधाऽभिभूताय अनभिभूताय वा । आव०  
६ अ० ।

हिंसं हिंसाकारि शस्त्र, तत्प्रदानं परेषां समर्पणम् । उवा० १ अ०

**हिंसप्पेहि-** पुं० [हिंसाप्रेक्षिन्]

हिंसां बध्दं साध्वादेः प्रेक्षते गवेषयतीति हिंसाप्रेक्षी । साध्वादि  
बध्दके पाराञ्चितार्हे, ठा० ५ ठा० १ उ० ।

**हिंसविहीसा-** स्त्री० [हिंसविहिंसा]

गौणहिंसायाम्, पण्हा० १ अ०

**हिंसा- स्त्री० [हिंसा]**

हिंसनं हिंसा, हिंसि हिंसायामित्यस्य । दश०१ अ० ।  
प्राण्युपमर्दे, सूय०२ श्रु०१ अ० ।  
व्यापादने उत्त०५ अ० ।  
प्राणवियोगप्रयोजके व्यापारे, सूय० ।  
प्रमादानाभोगाभ्यां व्यापादने, दश०४ अ० ।  
प्रमत्ततद्योगात्प्राणिव्यपरोपण, वधबन्धनादिभिः प्रकारैः पीडा-  
याम्, ठा० ४ ठा० १ उ० सम० । आव०म० । आव०चू० ।  
'पञ्चेन्द्रियाणि त्रिविधं बलं च, उच्छ्वासनिःश्वासमथान्यदायुः ।  
प्राणा दशैते भगवद्भिस्तुक्तास्तेषां वियोजीकरणं तु हिंसा ।  
आचा० १ श्रु०५ अ०५ उ० । विशेष० । आव० । ठा० ।

**हिंसाज्ज्ञान- न० [हिंसाध्यान]**

हिंसा महिषादिजीवमारणं तस्या ध्यानं उपक्षिप्तकालसौकरिक-  
स्येव । मारणाध्यवसाये, आतु० ।

**हिंसाणुबन्धि- न० [हिंसानुबन्धि]**

हिंसा सत्त्वानां वधवेधवन्धनादि-भिः प्रकारैः पीडामनुबध्नाति  
सततप्रवृत्तां करोतीत्येवंशीलं यत् प्रणिधानं, हिंसानुबन्धो वा  
यत्रास्ति तत् हिंसानुबन्धि । आर्तध्यानभेदे, भग०२५श०७ । दश०

**हिंसादंड- पुं० [हिंसादण्ड]**

हिंसामाश्रित्य हिंसितवान् हिनस्ति हिंसि ष्यति वा अयं  
वैरिकादिर्मामित्येवं प्रणिधानेन दण्डो विनाशनं हिंसादण्डः ।  
सम०१२ सम० ।  
हिंसितयान् हिनस्ति हिंसिष्यत्ययमित्यभिसंधे सर्पवैरिकादि-  
वधे, ठा० ५ ठा० २ उ० ।

**हिंसाययण- न० [हिंसायतन]**

व्यापत्तिधामसु, ओह० ।

**हिंसिय- न० [हिंसित]**

हिंसाप्राप्ते, सूय०१ श्रु०१२ अ० ।

**हिच्चा- अव्य० [हिच्चा]**

उपशमे उषित्वेत्यर्थे, आव० ।  
हित्वा गत्वा प्रतिपद्येत्यर्थे, आचा० १ श्रु०४ अ०४ उ० ।

**हिज्ज- अव्य० [ह्यस्]**

कल्ये, दे०ना०८ वर्ग०६९ गाथा ।

**हिठ्ठगइ- स्त्री० [अधस्ताद्रति]**

नरकेषूपपाते, दश०१ चू० ।

**हिठ्ठिमउवरिमगेविज्जग- पुं०**

अधस्तादुपरितनग्रैवेयक ग्रैवेयकदेवभेदे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**हिठ्ठिमगेविज्ज- पुं० [अधस्तनग्रैवेय]**

ग्रैवेयकदेवभेदे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**हिठ्ठिममज्झिमगेविज्जग- पुं० [अधस्तनमध्यमग्रैवेयक]**

ग्रैवेयकदेव-भेदे, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**हिठ्ठिल्ल- त्रि० [अधस्तन]**

नीच, अणुओ० ।

**हिडिंबा- स्त्री० [हिडिम्बा]**

भीमसेनस्य भार्यायां घटोत्कचस्य मातरि राक्षस्याम्, आव० ।

**हित- न० [हित]**

पथ्यान्नवत् । भ०२ श०१ उ० ।

उपकारके, उत्त०२ अ० ।

**हिम- न० [हिम]**

तुषार, 'तुहिणं हिमं तुसारं' उत्त० ।

शीत, बुह०१ उ०३ । ओह० ।

तुहिन, । ठा० ।

स्त्यानोदके, जीवा०१ प्रति० । पन्न० ।

हिमं तु शिशिरसमये शीतपुद्गलसम्पर्काज्जलमेव कठिनीभूत-  
मिति । आचा०१ श्रु०१ अ०३ उ० ।

**हिमग- न० [हिमक]**

हिम एव हिमकम् । तुहिने, ठा० ४ ठा० ।

शिशिरादौ वातेरिते हिमकणे, सूय०२ श्रु०३ अ० ।

संस्त्याने जलबिन्दौ, कल्प०३ अधि०९ । भग० । आचा० । बुह० ।

**हिमयर- पुं० [हिमकर]**

चन्द्र, 'मयलंछणो हिमयरो' उत्त० ।

**हिमवंत- पुं० [हिमवत्]**

वर्षधरपर्वतविशेषे, ठा० ९ ठा० ३ । अंत० । पण्हा० । रा० । नं०  
इह जम्बूद्वीपे भरतस्य हैमवतस्य च क्षेत्रस्य सीमाकारी  
भूमिनिमग्नपञ्चविंशतियोजनो योजनशतोच्छ्रायप्रमाणो भरत-  
क्षेत्राऽपेक्षया द्विगुणविष्कम्भो हेममयः चीनपट्टवर्णो नानावर्ण-  
विशिष्टद्युतिमणिनिकरपरिमण्डितपार्श्वः सर्वत्र तुल्यविस्तारो  
गगनमण्डलोल्लिखितरत्नमयैकादशकूटोपशोभितः तपनीय-  
मयतलविविधमणिकनकमण्डितदशयोजनावाढपूर्वपश्चिम-  
योजनसहस्रयामदक्षिणोत्तरयोजनपञ्चशतविस्तृतपद्महृदोपशो-  
भित शिरोमध्यभागः कल्पपादपश्रेणिरमणीयः पूर्वापरपर्यन्ता-  
भ्यां लवणार्णवजलसंस्पर्शी हिमवन्नामा पर्वतः । नं० ।

**हिमवाय- पुं० [हिमपात]**

तुहिनपाते आचा०१ श्रु०९ अ०२ उ० ।

**हिमसीयल- पुं० [हिमशीतल]**

अत्यन्तशीतले, अत्यन्तशीतलवेदनोत्पादकत्वात् तथाविधे नैर-  
यिकाणामाहारे, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

चन्द्रं सूर्यं च गृह्णतो राहोः कृष्णपुद्गलभेदे, चंद०२० पाहु० ।

**हिय-** न० [हित]

एहिके आमुष्मिके च पथ्ये, उत्त०१ अ० । आव० । नाया० ।  
पण्हा० । ठा० । दशा० । भग० ।  
पथ्यान्नवत् । भ०९ श०३३ उ० ।  
अदोषकरे, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।  
सद्गतिप्रापके, अनर्थनिवारके च । सूय०१ श्रु०१२ अ० ।  
परिणामसुखावहत्वात् सामायिक, आव०म०१ अ० । जीवा० ।

**हियउड्डावण-** न० [हृदयोड्डापन]

चित्ताकर्षणहेतौ, नाया०१ श्रु०१४ अ० ।  
शून्यचित्तकारके, विपा०१ श्रु०२ अ० ।

**हियउप्पाडिय-** त्रि० [उत्पादिहृदय]

आकृष्टकालेज्यकमांसे, उव० ।

**हियकर-** पुं० [हितकर]

निर्वाहाभ्युदयहेतौ, ठा० ९ ठा० ३ उ० ।

**हियकरी-** पुं० [हितकरी]

इह परत्र च तथ्यविधायिन्याम्, उत्त० ३ अ०

**हियकाम-** त्रि० [हितकाम]

सुखनिबन्धनं वस्तु इह हितम् अपायाभावात् तत्र कामोऽस्येति  
हितकामः । भग०१५ श० । प्रति० ।

**हियत्थ-** पुं० [हितार्थ]

हितमनर्थप्रतिघातार्थप्राप्तिरूपं तदेवार्थः प्रार्थ्यमानत्वात् । हित-  
लक्षणेऽर्थे, सम०१४० सूय० । उत्त० ।

**हियभासि-** त्रि० [हितभाषिण]

हितं-परिणामसुन्दरं तद्भाषते इत्येवंशीलो हितभाषीः । हित-  
वक्तरि, वव० १ उ० ।

**हियमियअफरुसवाइ-** पुं० [हितमितापरुषवादिन्]

हितस्याभिमतस्यापरुषस्य च वक्तरि, हितवाक् हितं वक्ति  
परिणामसुन्दरं मितवाग्मितं स्तोकेरक्षरैः अपरुषवाक् अपरुष-  
मनिष्ठुरम् । दश०९ अ०१ उ० ।

**हियय-** त्रि० [हितक]

प्रकृत्यनुकूले, नाया०१ श्रु०१७ अ० ।

**हिययउड्ड-** न० [हृदयोत्थ]

हृदयमांसपिण्डे, विपा०१ श्रु०५ अ० ।

**हिययंगम-** पुं० [हृदयंगम]

किन्नरविशेषे, पन्न०१ पद ।

**हिययगमणिज्ज-** त्रि० [हृदयगमनीय]

अर्थप्राकट्यचातुरी सचिवत्वात्सुबोधे, जंबू०२ वक्ष० । उव० ।  
हृदये ये गच्छन्ति कोमलत्वासुबोधत्वाच्च । नाया०१ श्रु०१ भग० ।  
हृदयगमे, सम०३४ सम० ।

**हिययग्गाहि-** त्रि० [हृदयग्राहिन्]

हृदयं गृह्णाति हृदये सम्यग् निवि-शते इत्येवंशील हृदयग्राही ।  
अन्तरभिनिविष्टे, वव०१ उ० ।

**हियग्गाहित-** न० [हृदयग्राहित्व]

श्रोतमनोहरतायाम्, सम०३५ सम० उव० ।  
दुर्गयस्याप्यर्थस्य परहृदयप्रवेशकरणे, रा० ।

**हिययदइया-** स्त्री० [हृदयदयिता]

वल्लभायाम्, पण्हा०४ अ०

**हिययपल्हावणिज्ज-** त्रि० [हृदयप्रह्लादनीय]

हृदयगतकोषशोकादिग्रन्थिविलयनकारिणि, भग० ९ श० ३३ ।  
उव० । जंबू० ।

**हिययसूल-** पुं० न० [हृदयसूल]

हृदयपीडायाम्, जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

**हिययाणंदजणण-** न० [हृदयानन्दजनन]

मनःसमृद्धिकारके, भग०९ श०३३ उ० ।

**हियाऽकारय-** पुं० [हिताकारक]

जनहितस्याऽकर्त्तरि, नाया०१ श्रु०२ अ० ।

**हियाणुप्पेहि-** त्रि० [हितानुप्रेक्षिण]

हितं पथ्यमनुप्रेक्षते पर्यालोचय-तीत्येवंशीलो हितानुप्रेक्षी ।  
हितपर्यालोचके, उत्त०१३ अ० ।

**हियाहार-** पुं० [हिताहार]

हितं द्विधा-द्रव्यतो, भावतश्च ।.....

द्रव्यतोऽ-विरुद्धानि द्रव्याणि, भावत एषणीयं तदाहारयन्ति ये  
ते हिताहाराः । पिंड० ।

**हिरण्य-** न० [हिरण्य]

अघटिते, । जीवा०३ प्रति०४ अधि० । आव०म० ।

सुवर्णे, । उत्त० ।

रूप्ये, नाया०१ श्रु०१ अ० । उत्त० । निसि० ।

द्रव्यजाते, सूय०१ श्रु०३ अ०२ उ० । आव० ।

अघटितस्वर्णात्मके द्रव्ये, दशा०६ अ० ।

**हिरण्यगब्भ-** पुं० [हिरण्यगर्भ]

हिरण्यं स्वर्णमयाख्यं गर्भ उत्पत्तिस्थानमस्य । चतुर्मुखे ब्रह्मणि,  
हिरण्यगर्भादीनामनाद्विवक्षितभगयोगेऽभ्युपगम्यते । आव०म०

**हिरण्यजुत्ति-** स्त्री० [हिरण्ययुक्ति]

रूप्यस्य यथोचितस्थाने योजने, नाया०१ श्रु०१ अ० । जंबू० ।

**हिरण्यपाग-** पुं० [हिरण्यपाक]

रजतसिद्धौ, नाया०१ श्रु०१ अ० । जंबू० सम० । आचा० ।

**हिरण्यपेडा-** स्त्री० [हिरण्यपेटा]

हिरण्यमञ्जूषायाम् भग०१३ श०९ उ

**हिरण्यवास-** पुं० [हिरण्यवर्ष]

रूप्यस्य अघटितसुवर्णस्य वा वर्षणे, कल्प०२ अधि०८ क्षण ।  
जीवा० । भग० ।

**हिरण्यसुवर्णपमाणाङ्कम-** पुं० [हिरण्यसुवर्णप्रमाणातिक्रम]

हिरण्यसुवर्णयोः प्रत्याख्यानकालगृहीतप्रमाणेल्लङ्घने, उवा० ।  
अथवा-राजादेः सकाशाल्लब्धं हिरण्याधभिग्रहोऽवधिं यावद-  
न्यस्मै प्रयच्छतः पुन रवधेः पूर्त्तौ ग्रहीष्यामीत्यध्यवसायवतो-  
ऽयमतिचारः । उवा०१अ

**हिरण्यसुवर्णविहि-** पुं० [हिरण्यसुवर्णविधि]

रजतस्य सुवर्णस्य च प्रकारं, उवा० ।  
हिरण्यं-रजतं सुवर्णं प्रतीतम् विधिः प्रकारः । उवा०१ अ० ।

**हिरण्णाऽऽगर-** पुं० [हिरण्णाऽऽकर]

हिरण्योत्पत्तिभूमौ, नाया०१ श्रु० १६ अ० । जीवा० ।

**हिरण्युकडी-** स्त्री० [हिरण्योत्कटी]

सुगृहीतनामधेयायाः आर्यायाः पूर्वभवजीवस्य धर्माचार्योप-  
लब्धिस्थानभूतायां राजधान्याम्, महानि०२ चू० ।

**हिरमिक-** पुं० [हिरमिक]

प्राणिनां पूज्ये आण्डवरापस्त्रामके यक्षे, वव०७ उ० ।

**हिरिमाणसत्त-** पुं० [हीमनःसत्त्व]

हिया हसिष्यन्ति मामुच्चकुलजातं जना इति लज्जया मनस्येव  
न काये रोमहर्षकम्पादिभयलिङ्गोपदर्शनात् सत्त्वं यस्य सः  
हीमनः सत्त्वं । ठा० ४ ठा० ३ उ० ।  
हियाऽपि मनस्येव सत्त्वं न देहे शीतादिषु कम्पादिविकारभा-  
वात् यस्य स हीमनः सत्त्वः । तथाविधसत्त्वशालिनि पुरुषे,  
ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

**हिरिली-** स्त्री० [हिरिली]

कन्दविशेषे, उत्त०३५ अ० । भग० ।

**हिरिवत्तिय-** न० [हीप्रत्यय]

ही लज्जा संयमो वा प्रत्ययो निमित्तं यस्य धारणस्य तत्तथा ।  
लज्जार्थे, 'हिरिवत्तियं वत्तं धारेज्जा' ठा० ३ ठा० ३ उ० ।

**हिरिवेर-** पुं० न० [हीवेर]

बालके, गन्धद्रव्यविशेषे च । नाया०१ श्रु० १७ अ० । उत्त० ।

**हिरिसत्त-** पुं० [हीसत्त्व]

हिया-लज्जया सत्त्वं परीषहेषु साधोः संग्रामादावितरस्य वाऽ-  
वष्टभ्योऽविचलनं यस्य स हीसत्त्वः । ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

**हिरिमण-** पुं० [हीमनस्]

हीर्लज्जा संयमो मूलोत्तरगुणभेदभिन्नस्तत्र मनो यस्यासौ  
हीमनाः, यदि वा-अनाचारं कुर्वन्नाचार्यादिभ्यो लज्जते स  
एवमुच्यते । पापभीरुतया लज्जालौ, सूय० १ श्रु० १३ अ० ।

**हिल्लिया-** स्त्री० [हिल्लिका]

त्रीन्द्रियजीवविशेषे, पन्न०१ पद ।

**हितीय-** न० [हृषीक]

इन्द्रिये, न० । 'हृषीकं करणं स्मृत' मिति वचनात् । आव०म०  
१ अ० ।

**ही-** अव्य० [हि]

कन्दर्पातिशयद्योतने, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ० । अणुओ० ।

**हीण-** त्रि० [हीन]

असमग्रे, नाया०१ श्रु०८ अ० ।

असंपूर्णे, उवा०२ अ० ।

न्यूने, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

**हीणक्खर-** न० [हीनाक्षर]

अक्षरन्यूने, । आव० । बुह०

**हीणणेत-** पुं० [हीननेत्र]

अपगतचक्षुषि, सूय०१ श्रु०१२ अ० ।

**हीणपुण्यचाउद्दस-** पुं० [हीनपुण्यचातुर्दश]

हीना-असम्पूर्णा चतुर्दशी तिथिर्जन्मकाले यस्य स हीनपुण्य-  
चातुर्दशकः । उवा०२ अ० ।

हीनायां चतुर्दश्यां जाते, भग० ।

**हीणसत्तया-** स्त्री० [हीनसत्त्वता]

सत्त्वाभावे, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

**हीणस्सर-** त्रि० [हीनस्वर]

लघुध्वनौ, तं० । ।

अल्पस्वरे, भग०१ श०७ उ० । ठा० ।

**हीमंत-** त्रि० [हीमत्]

हीरसंयमं प्रति लज्जा तद्दान । असंयमजुगुप्सावति, सूय०१ श्रु०  
२ अ० २ उ० ।

**हीयमाणय-** न० [हीयमानक]

पूर्वावस्थातोऽधोऽधो हासमुपगच्छत्यवधिज्ञाने, 'हीयमाणं  
पुष्पावत्याओ' 'अहोहो हस्समाणं' इति । न० ।

**हीर-** न० [हीर]

लघुकुत्सिते तृणे, जीवा०३ प्रति०४ ।

वृक्षमध्यसारे, निसि० १५ उ० ।

वज्रमणौ, पन्न०१ पद ।

**हीरग-** पुं० [हीरक]

सकोणकर्करिकाविशेषे, दशा०७ अ० ।

वज्रं, मणिविशेषे, अणुओ० ।

**हीरमाण-** त्रि० [हियमाण]

नीयमाते, आचा०२ श्रु०१ चू०४ अ०४ उ० ।

**हीलण- न० [हीलन]**

जात्याद्युद्धटनतोऽवमाने, ठा० ३ ठा० १ उ० । सूय० ।  
गुरुकुलाद्युद्धाटनतः । जात्याद्युद्धाटनतो वा । नाया०१ श्रु०८ अ०  
अनभ्युत्थानादिके, अंत० ।

असूयया दुष्टाभिधाने, दश०९ अ०३ उ० ।

**हीलणा- स्त्री० [हीलना]**

जन्मकर्ममर्मोद्धाटने, उव० । आव० ।

**हीलणिज्ज- त्रि० [हीलनीय]**

अवज्ञातुमुचिते, उत्त०१२ अ० ।

**हीला- स्त्री० [हीला]**

निन्दायाम्, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ० । अवमाने, उत्त०१२ अ० ।

**हीलिज्जमाण- त्रि० [हील्यमान]**

निन्द्यमाने, आव०म०१ अ० ।

**हीलिय- न० [हीलित]**

कदर्थिते, आचा०२ श्रु०४ चू० ।

निन्दिते, वन्दनदोषे, । बुह० ।

**हीलियवयण- न० [हीलितवचन]**

सासूयमवगणयता वाचकज्येष्ठार्येत्यादिजल्पने, ठा० ।

**हुअवह- पुं० [हुतवह]**

अग्रौ, 'धूमद्वओ हुअवहो' उत्त० ।

**हुआसण- पुं० [हुताशन]**

राजगृहनगरे स्वनामख्याते ब्राह्मणे नगरे पाटलीपुत्रे, श्रावको-  
ऽभूत् हुताशनः । तद्धार्याज्वलनशिखा, दहनज्वलनौ सुतौ ।  
आव०क०४ अ० ।

अग्रौ, उत्त० ।

**हुंकार- पुं० [हुंकार]**

वन्दने, हुंकारं दद्यात्-वन्दनं कुर्यात् । विशेष० । आव०म० । नं०

**हुंड- न० [हुण्ड]**

अव्यवस्थिताङ्गावयवे, विपा०१ श्रु०१ अ० ।

सर्वत्रासंस्थितं, यस्य हि प्रायेणैकोऽप्यवयवः शरीरलक्षणोक्तप्र-  
माणे न संवदति सर्वत्रासंस्थितं हुण्डमिति । ठा० ६ ठा० ३ उ  
पण्हा० ।

हुण्डं प्रायः सर्वावयवेषु आदिलक्षणविसंवादोपेतमिति । भग०  
१४ श०७ उ० । तं० । अणुओ० । पन्न० । जीवा०

सर्वावयवप्रमाणविकले संस्थानविशेषे, विपा०१ श्रु०१ अ० ।

**हुंडी- स्त्री० [हुण्डी]**

घटिकायाम्, 'हुंडी घडा' उत्त० ।

**हुंतए- अव्य०**

भवितुम्-सत्तां लब्धुमित्यर्थे, बुह० ६ उ० ।

**हुंबउट्ट- पुं० [हुम्बुतुष्ट]**

कुण्डिकाश्रमणे, भग०११ श०९ उ० । नि० । उव० ।

**हुडुका- स्त्री० [हुडुका]**

काहलानामके तूर्यविशेषे, जीवा०३ प्रति० ४ अधि० । आव०म० ।  
उव० । रा० ।

**हुयवह- पुं० [हुतवह]**

वैश्वानरे, जीवा०३ प्रति०४ अधि० । पन्न० ।

अग्रौ, नाया० १ श्रु०१ अ० । तं० । उव० । आव०म० । आव०  
हुतवहेन-अग्निना निर्धर्मात् सत् यत् धौतं शोधितमलं तप्तं  
तपनीयं सुवर्णविशेषस्तद्वत् रक्ते तले हस्ततले तालु ककुदं  
जिह्वा च रसना येषां ते हुतवहनिर्धर्मात्तथैतत्तपनीयरक्त-  
तलतालुजिह्वाः । जीवा०३ प्रति०४ अधि० । तं० । ।

**हुयहुयासण- पुं० [हुतहुताशन]**

दीप्तब्रह्मौ, सूय०२ श्रु०२ अ० ।

**हुयासण- पुं० [हुताशन]**

वैश्वानरे, नाया०१ श्रु०५ अ० ।

अग्रौ, कल्प १ अधि०६ ।

देवमायाकृते ब्रह्मौ, उत्त०१९ अ० ।

माहेश्वर्या नगर्या व्यन्तरगृहे, । आव०म० । आव०चू० ।

**हुरब्भ- पुं० [हुरभ]**

वाद्यविशेषे, उवा०२ अ० ।

हुरब्भो वाद्यविशेषस्तस्य पुटं पुष्करं तत्संस्थानेन संस्थितः ।  
उवा० २ अ० ।

**हुहुय- न० [हुहुक]**

चतुरशीतिलक्षगुणितेषु हुहुकाङ्गेषु, अणुओ० । ठा० । भग० । ।  
जीवा० । जंबू० ।

**हुहुयंग- न० [हुहुकाङ्ग]**

चतुरशीतिलक्षगुणिते अववे, ठा० २ ठा० ४ उ० ।

चतुरशीतिरवशतसहस्राणि एकं हुहुकाङ्गम् । जीवा० ३ प्रति०  
४ अधि० । भग० । अणुओ० । जंबू० ।

**हुहुहुहुय- न० [हुहुहुहुक]**

अणुकरणवचने, आव०म०१ अ० । रा० ।

**हूण- पुं० [हूण]**

अनार्यक्षेत्रविशेषे, तद्वासिनि जने च । सूय० १ श्रु०५ अ०१ उ० ।  
पन्न० ।

**हूयच्छी- स्त्री० [हूताक्षी]**

कन्दविशेषे, उत्त०३६ अ० ।

**हूयमाण- त्रि० [हूयमान]**

मयूराकग्रामवासिषु पाखण्डिगृहिषु, पञ्चा ०७ विव० ।



हेउ- पुं० [हेतु]

हिनोति गमयति ज्ञेयमिति हेतुः । अन्यथाऽनुपपत्तिलक्षणे, ठा०

हेउगोवएस- पुं० [हेतुगोपदेश]

कारणोपदेशे, प्रकरणोपदेशे, आव० चू० १ अ० ।

हेउजुत्त- त्रि० [हेतुयुक्त]

अन्वयव्यतिरेकलक्षणैर्हेतुभिर्युक्ते, अणुओ० । विशेष० । आव० म० ।

हेउणिज्जुत्ति- त्रि० [हेतुनिर्युक्ति]

सोपपत्तिके, दश० २ अ० ।

हेउदोष- पुं० [हेतुदोष]

असिद्धविरुद्धनैकान्तिकलक्षणे हेत्वाभासे, ठा० १० ठा० ३ उ०

हेउप्पभव- पुं० [हेतुप्रभव]

हेतुजन्मनि, दश० ४ अ० ।

हेउय- पुं० [हेतुक]

हेतुभ्यो जातो हैतुकः । कायाकारपरिणतभूतनिष्पादिते लौकायतिकसम्मतात्मनि, सूय० १ श्रु० १ अ० १ उ०

हेउवाय- पुं० [हेतुवाद]

हेतुरनुमानोत्थापकं लिङ्गमुपचारादनुमानमेव वा तद्वादो हेतुवादः । दृष्टिवादे । ठा० १० ठा० ३ उ० ।

हेउवायउवएस- पुं० [हेतुवादोपदेश]

हेतुनिर्मितं कारणमित्यनर्थान्तरं, तस्य वदनं वादः तद्विषय उपदेशः । कारणोपदेशे, आव० म० १ अ० ।

हेऊवण्णास- [हेतूपन्यास]

उपन्यासभेदे, दश० ।

हेच्चा- अव्य० [हित्वा]

त्यक्तवेत्यर्थे, सूय० १ श्रु० १५ अ० ।

हेज्ज- त्रि० [हेय]

उपेक्षणीये, अणुओ० ।

हेठय- पुं० [हेठक]

बाधके ऋक्संस्थानीये मन्त्रे, सूय० १ श्रु० ८ अ० ।

हेम- न० [हैम]

भेषजभेदे, जाम्बूनदे । सूय० १ श्रु० ६ अ० ।

स्वनामख्याते राजपुत्रे, 'हेमपुरिसे नगरे हेमकूडो राया हेमसंभवा भारिया, तस्स पुत्तो वरतिविज्जसन्निभो हेमो णाम कुमारो ।' निसि० ११ उ० । पंच० भा० ।

हेमन्त- पुं० [हेमन्त]

शीतकाले, वव० ४ उ० । उक्त० ।

ऋतुभेदे जीवा० १ प्रति० ।

पौषमाधौ हेमन्तः । नाया० १ श्रु० १ अ० । ज्यो० ।

शीतकालमासानां मध्ये चतुर्थो मासः । नाया० १ श्रु० ८ अ० ।

हेमंतगिम्ह- पुं० [हेमन्तग्रीष्म]

शीतकालोष्णकालयो, वव० ४ उ० ।

हेमकड- पुं० [हेमकृत]

स्वनामख्याते राज्ञि, बुह० ४ उ० ।

हेमकूड- पुं० [हेमकूट]

हेमपुरनगरराजे हेमकुमारपितरि, निसि० ११ उ० ।

हेमग- पुं० [हैमक]

हिमं-तुहिनं तदेव हिमकं तस्यैते हैमकाः । हिमपातरूपेषु जलकणेषु, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

हेमचंदवागरण- न० [हेमचन्द्रचितव्याकरणे]

हेमचन्द्रचितव्याकरणे, कल्प० १ अधि० १ क्षण० ।

हेमजाल- न० [हेमजाल]

सुवर्णमयदाससमूहे, रा० । उव० । जीवा० ।

हेमपुरिस- न० [हेमपुरुष]

हेमपुरिसनगरे हेमकूडो राया हेमसंभवा भारिया तस्स पुत्तो वरतिविज्जसन्निभो हेमो नाम कुमारो । निसि० ११ उ० ।

हेमव- पुं० [हेमवत्]

लोकोत्तररीत्या फाल्गुनमासे, चंद० १० पाहु० । ज्यो० । सूर० । जंबू० । कल्प० ।

हेमवय- त्रि० [हेमवत्]

हिमवत्पर्वतोद्भवे, नाया० १ श्रु० १ अ० । उव०

हेमवयकूड- न० [हैमवतकूट]

हैमवद्वर्षेशसुरकूटे जंबू० ४ वक्ष० ।

जम्बूद्वीपे हिमवद्वर्षधरपर्वते स्वनामख्याते कूटे, ठा० २ ठा० ३ उ० ।

हेमविमलसूरि- पुं० [हेमविमलसूरि]

हीरविजयसूरिगुरोः आनन्दविजयसूरेः गुरौ सोमसुन्दरसूरिशिष्ये, गच्छा० ३ अधि० ।

हेमसंभवा- स्त्री० [हेमसंभवा]

हेमकृतराजस्य भार्यायाम्, बुह० ४ उ०

हेमसुत्तग- न० [हेमसूत्रक]

हेमसङ्कलके, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

हेर- पुं० [हैर]

माण्डव्यगोत्रे गोत्रविशेषप्रवर्तके च ऋषो, तदपत्येषु च । ठा० ७ ठा० ३ उ० ।

हेरणवय- पुं० [हैरण्यवत्]

जम्बूद्वीपे वर्षक्षेत्रे, ठा० ६ ठा० ३ उ० । जंबू० । पन्न० ।

रुक्मिवर्षधरे अष्टकूटानां मध्ये सप्तमे कूटे, ठा० २ ठा० ३ उ० सूय० ।

**हेरणवयकूड-** न० [हैरण्यवतकूट]

शिखरिवर्षधरपर्वतस्य कूटे, ठा० ३ ठा० ३ उ० ।  
हैरण्यवतक्षेत्राधिपसत्के रुक्मिवर्षधरकूटे, जंबू०४ वक्ष० ।

**हेरण्य-** पुं० [हैरण्यिक]

स्वर्णकारे, आव०म० १ अ० । नं० ।

**हेरिय-** पुं० [हैरिक]

उद्भ्रामके, कल्प०१ अधि० ६ ।

**हेरुयाल-** पुं० [हेरुताल]

वृक्षविशेषे, नाया०१ श्रु०६ अ० । जंबू० ।

**हेला-** स्त्री० [हेला]

लीलायाम्, जीवा०१९ अधि० । उत्त० ।  
वेगे, दे०ना० ८ वर्ग ७२ गाथा  
अनादरे, उत्त० ।

**हेलियामच्छ-** पुं० [हेलिकामत्स्य]

मत्स्यभेदे, जीवा०१ प्रति० ।

**हेवाग-** पुं० [हेवाक]

स्वभावे, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।  
अभ्यासे च । निसि०१ उ० ।

**हेसिय-** न० [हेसित]

हयशब्दे, अणुओ० । जंबू० ।

**हेहभूय-** न० [हेहभूत]

गुणदोषपरिज्ञानविकलेऽशठभावे, वव० १ उ०

**हेहय-** पुं० [हेहय]

स्वनामख्याते क्षत्रियराजे, आव०४ अ० ।

**हो-** अव्य० [हो]

विस्मये, उत्त० ।

**होड-** पुं० [होड]

मोष, नाया०१ श्रु०२ अ० ।

**होत्तिय-** पुं० [होत्रिक]

अग्निहोत्रिके, भग०१ श०५ उ० । उव० ।  
तृण वनस्पतिविशेषे, पत्र०१ पद ।

**होम-** पुं० [होम]

अग्निहोतृभिः क्रियमाणे अग्निहोमे, अणुओ० । निसि० ।

**होयव्व-** न० [भवितव्य]

भाव्य, । आव०म० । निचू०

**होया-** पुं० [होतु]

होतरि, अग्नौ हविः प्रदातरि, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

**होरंभा-** स्त्री० [होरम्भा]

महाढक्कायाम्, रा० । तं० । भग० ।

**होरा-** स्त्री० [होरा]

ज्योतिषोक्ते लग्ने राश्यर्द्धभागे होराज्ञापकशास्त्रभेदे, रेखायाञ्च ।  
गणि० । सूय० ।

**होलवाय-** पुं० [होलवाद]

होलेत्येवं वादो होलवादः । होलेत्येवं पुरुषामन्त्रणे, सूय०१ श्रु०९

**ह-** अव्य० [ह]

वाक्यालङ्कारे, सूय०२ श्रु०७ अ० ।

**हुसा-** स्त्री० [हुषा]

पुत्रवध्वाम्, सूय०२ श्रु०७ अ० ।

**ह-** ह० [देशी]

चतुष्के, ह्रस्वोपादानात् नारकतिर्यग्रदेवाश्चत्वारो ग्राह्याः ।  
गच्छा० २ अधि० । निसि० ।

**ह-कारादि शब्द-परिभाषा: समाप्ता:**

**आगम परिभाषा कोषः  
भाग-५ परिसमाप्तः**

**आगम परिभाषा कोषः समाप्तः**

| [ 1 ] भूण आगम साहित्य ( १ थी ३ ) कुल पुस्त- १४८, कुलपाना 7864 |          |                                              |         |         |
|---------------------------------------------------------------|----------|----------------------------------------------|---------|---------|
| 1/1- आगम भूण प्रिन्टेड पुस्त- [49]                            |          |                                              |         |         |
| क्रम                                                          | इष्टानं. | पुस्तकनं नाम                                 | कुलपाना | कुलपाना |
| 1                                                             | 9727     | आगम ०१ आयारो अंगसुत्त ०१ मूलं                | 130     |         |
| 2                                                             | 9728     | आगम ०२ सूयगडो अंगसुत्त ०२ मूलं               | 122     |         |
| 3                                                             | 9729     | आगम ०३ ठाणं अंगसुत्त ०३ मूलं                 | 170     |         |
| 4                                                             | 9730     | आगम ०४ समवाओ अंगसुत्त ०४ मूलं                | 82      |         |
| 5                                                             | 9731     | आगम ०५ विवाहपन्नत्ती अंगसुत्त ०५ मूलं        | 514     |         |
| 6                                                             | 9732     | आगम ०६ नायाधम्मकहाओ अंगसुत्त ०६ मूलं         | 182     |         |
| 7                                                             | 9733     | आगम ०७ उवासगदसाओ अंगसुत्त ०७ मूलं            | 74      |         |
| 8                                                             | 9734     | आगम ०८ अंतगडदसाओ अंगसुत्त ०८ मूलं            | 42      |         |
| 9                                                             | 9735     | आगम ०९ अनुत्तरववाइदसाओ अंगसुत्त ०९ मूलं      | 18      |         |
| 10                                                            | 9736     | आगम १० पण्हावगराणं अंगसुत्त १० मूलं          | 42      |         |
| 11                                                            | 9737     | आगम ११ विवागसूयं अंगसुत्त ११ मूलं            | 50      |         |
| 12                                                            | 9738     | आगम १२ उववाइयं उवांगसुत्त ०१ मूलं            | 50      |         |
| 13                                                            | 9739     | आगम १३ राइपसेनीयं उवांगसुत्त ०२ मूलं         | 74      |         |
| 14                                                            | 9740     | आगम १४ जीवाजीवाभिगम उवांगसुत्त ०३ मूलं       | 162     |         |
| 15                                                            | 9741     | आगम १५ पन्नवण्णा उवांगसुत्त ०४ मूलं          | 210     |         |
| 16                                                            | 9742     | आगम १६ सूरपन्नत्ती उवांगसुत्त ०५ मूलं        | 74      |         |
| 17                                                            | 9743     | आगम १७ चंदपन्नत्ती उवांगसुत्त ०६ मूलं        | 74      |         |
| 18                                                            | 9744     | आगम १८ जम्बूद्वीपपन्नत्ती उवांगसुत्त ०७ मूलं | 130     |         |
| 19                                                            | 9745     | आगम १९ निरयावलीयानम उवांगसुत्त ०८ मूलं       | 22      |         |
| 20                                                            | 9746     | आगम २० कप्पवडिसानम् उवांगसुत्त ०९ मूलं       | 14      |         |
| 21                                                            | 9747     | आगम २१ पूप्फियाम् उवांगसुत्त १० मूलं         | 22      |         |
| 22                                                            | 9748     | आगम २२ पूप्फचूलियाम् उवांगसुत्त ११ मूलं      | 14      |         |
| 23                                                            | 9749     | आगम २३ वण्हिदसाणं उवांगसुत्त १२ मूलं         | 14      |         |
| 24                                                            | 9750     | आगम २४ चउसरणं पइण्णसुत्त ०१ मूलं             | 14      |         |
| 25                                                            | 9751     | आगम २५ आउरपच्चक्खाण पइण्णसुत्त ०२ मूलं       | 18      |         |
| 26                                                            | 9752     | आगम २६ महापच्चक्खाण पइण्णसुत्त ०३ मूलं       | 22      |         |
| 27                                                            | 9753     | आगम २७ भत्तपरिन्न पइण्णसुत्त ०४ मूलं         | 22      |         |
| 28                                                            | 9754     | आगम २८ तंदुलवेयालीयम् पइण्णसुत्त ०५ मूलं     | 26      |         |
| 29                                                            | 9755     | आगम २९ संथारग पइण्णसुत्त ०६ मूलं             | 18      |         |
| 30                                                            | 9756     | आगम ३०ए गच्छायारपइण्णसुत्त ०७ए मूलं          | 20      |         |
| 31                                                            | 9757     | आगम ३०बी चंदवेज्झयम्पइण्णसुत्त ०७बी मूलं     | 22      |         |
| 32                                                            | 9758     | आगम ३१ गणिविज्जा पइण्णसुत्त ०८ मूलं          | 18      |         |
| 33                                                            | 9759     | आगम ३२ देविदत्थओ पइण्णसुत्त ०९ मूलं          | 30      |         |
| आगम भूण प्रिन्टेड थापु...                                     |          |                                              |         |         |

| पाछला पानेथी आगम मूण प्रिन्टेड थालु               |         |                                                |         |         |
|---------------------------------------------------|---------|------------------------------------------------|---------|---------|
| क्रम                                              | इाईलिनं | पुस्तकनुं नाम                                  | कुलपाना | कुलपाना |
| 34                                                | 9760    | आगम ३३ए मरणसमाहि पइणसुत्त १०ए मूलं             | 52      |         |
| 35                                                | 9761    | आगम ३३बी विरत्थव चउसरणं पइणसुत्त १०बी मूलं     | 16      |         |
| 36                                                | 9762    | आगम ३४ निसिह छेयसुत्त ०१ मूलं                  | 90      |         |
| 37                                                | 9763    | आगम ३५ बृहत्कप्पो छेयसुत्त ०२ मूलं             | 26      |         |
| 38                                                | 9764    | आगम ३६ ववहार छेयसुत्त ०३ मूलं                  | 38      |         |
| 39                                                | 9765    | आगम ३७ दसासूयक्खंध छेयसुत्त ०४ मूलं            | 34      |         |
| 40                                                | 9766    | आगम ३८ए जीयकप्पो छेयसुत्त ०५ए मूलं             | 21      |         |
| 41                                                | 9767    | आगम ३८बी पंचकप्पभाष छेयसुत्त ०५बी मूलं         | 164     |         |
| 42                                                | 9768    | आगम ३९ महानिसिह छेयसुत्त ०६ मूलं               | 154     |         |
| 43                                                | 9769    | आगम ४० आवस्सयं मूलसुत्त ०१ मूलं                | 22      |         |
| 44                                                | 9770    | आगम ४१ए पिंडनिज्जुत्ती मूलसुत्त ०२ए मूलं       | 78      |         |
| 45                                                | 9771    | आगम ४१बी ओहनिज्जुत्ती मूलसुत्त ०२बी मूलं       | 52      |         |
| 46                                                | 9772    | आगम ४२ दसवेयालीयं मूलसुत्त ०३ मूलं             | 46      |         |
| 47                                                | 9773    | आगम ४३ उत्तराज्झयणम् मूलसुत्त ०४ मूलं          | 114     |         |
| 48                                                | 9774    | आगम ४४ नंदिसूयं चूलिकासुत्त ०१ मूलं            | 34      |         |
| 49                                                | 9775    | आगम ४५ अनुओगदारं चूलिकासुत्त ०२ मूलं           | 74      |         |
| 1/1- आगम मूण प्रिन्टेड कुल पुस्त- 49 कुलपाना 3510 |         |                                                | 03,510  |         |
| 1/2- आगम मूण नेट- [47]                            |         |                                                |         |         |
| क्रम                                              | इाईलिनं | पुस्तकनुं नाम                                  | कुलपाना | कुलपाना |
| 50                                                | 3701    | आगम ०१ आयारो पढमं अंगसुत्तं मूलं नेट           | 103     |         |
| 51                                                | 3703    | आगम ०२ सूयगडो बीइअं अंगसुत्तं मूलं नेट         | 85      |         |
| 52                                                | 3705    | आगम ०३ ठाणं तइअं अंगसुत्तं मूलं नेट            | 141     |         |
| 53                                                | 3707    | आगम ०४ समवाओ चउत्थं अंगसुत्तं मूलं नेट         | 81      |         |
| 54                                                | 3709    | आगम ०५ भगवई पंचमं अंगसुत्तं मूलं नेट           | 565     |         |
| 55                                                | 3711    | आगम ०६ नायाधम्मकहाओ षष्ठं अंगसुत्तं मूलं नेट   | 159     |         |
| 56                                                | 3713    | आगम ०७ उवासगदसाओ सत्तम अंगसुत्तं मूलं नेट      | 34      |         |
| 57                                                | 3715    | आगम ०८ अंतगडदसाओ अट्टम अंगसुत्तं मूलं नेट      | 31      |         |
| 58                                                | 3717    | आगम ०९ अनुत्तरोववाइदसाओ नवम अंगसुत्तं मूलं नेट | 10      |         |
| 59                                                | 3719    | आगम १० पण्हावागरणं दसमं अंगसुत्तं मूलं नेट     | 35      |         |
| 60                                                | 3721    | आगम ११ विवागसूयं एक्कारसमं अंगसुत्तं मूलं नेट  | 42      |         |
| 61                                                | 3723    | आगम १२ उववाइयं पढमं उवंगसुत्तं मूलं नेट        | 38      |         |
| 62                                                | 3725    | आगम १३ रायपसेणियं बिइअं उवंगसुत्तं मूलं नेट    | 62      |         |
| 63                                                | 3727    | आगम १४ जीवाजीवाभिगम तइयं उवंगसुत्तं मूलं नेट   | 152     |         |
| 64                                                | 3729    | आगम १५ पन्नवणा चउत्थं उवंगसुत्तं मूलं नेट      | 202     |         |
| आगम मूण नेट थालु...                               |         |                                                |         |         |

| क्रम | इतिहास | पाछला पानेथी आगम मूल नेट आलु                       | कुलपाना | कुलपाना |
|------|--------|----------------------------------------------------|---------|---------|
|      |        | पुस्तकनुं नाम                                      |         |         |
| 65   | 3731   | आगम १६ सूरपन्नति पंचमं उवंगसुत्तं मूलं नेट         | 66      |         |
| 66   | 3733   | आगम १७ चंदपन्नति छट्टं उवंगसुत्तं मूलं नेट         | 66      |         |
| 67   | 3735   | आगम १८ जंबुदीवपन्नति सत्तम उवंगसुत्तं मूलं नेट     | 122     |         |
| 68   | 3737   | आगम १९ निरयावलियाणं अट्टमं उवंगसुत्तं मूलं नेट     | 15      |         |
| 69   | 3739   | आगम २० कप्पवडिंसियाणं नवमं उवंगसुत्तं मूलं नेट     | 4       |         |
| 70   | 3741   | आगम २१ पुप्फियाणं दसमं उवंगसुत्तं मूलं नेट         | 15      |         |
| 71   | 3743   | आगम २२ पूप्फचूलियाणं एक्कारसमं उवंगसुत्तं मूलं नेट | 5       |         |
| 72   | 3745   | आगम २३ वण्हिदसाणं बारसमं उवंगसुत्तं मूलं नेट       | 6       |         |
| 73   | 3747   | आगम २४ चउसरणं पढमं पइण्णयं मूलं नेट                | 6       |         |
| 74   | 3749   | आगम २५ आउरपच्चक्खाणं बिइयं पइण्णयं मूलं नेट        | 7       |         |
| 75   | 3751   | आगम २६ महापच्चक्खाणं तइयं पइण्णयं मूलं नेट         | 11      |         |
| 76   | 3753   | आगम २७ भत्तपरिन्ना चउत्थं पइण्णयं मूलं नेट         | 13      |         |
| 77   | 3755   | आगम २८ तंदुलवेयालीयम् पंचमं पइण्णयं मूलं नेट       | 17      |         |
| 78   | 3757   | आगम २९ संथारगं छट्टं पइण्णयं मूलं नेट              | 10      |         |
| 79   | 3759   | आगम ३०/१ गच्छायारो सत्तमं पइण्णयं मूलं नेट         | 11      |         |
| 80   | 3760   | आगम ३०/२ चंदावेज्झयं सत्तमं पइण्णयं मूलं नेट       | 16      |         |
| 81   | 3761   | आगम ३१ गणिविज्जा अट्टमं पइण्णयं मूलं नेट           | 8       |         |
| 82   | 3763   | आगम ३२ देविंदत्थओ नवमं पइण्णयं मूलं नेट            | 21      |         |
| 83   | 3765   | आगम ३३/१ मरणसमार्हिं दसमं पइण्णयं मूलं नेट         | 42      |         |
| 84   | 3766   | आगम ३३/२ वीरत्थव दसमं पइण्णयं मूलं नेट             | 6       |         |
| 85   | 3767   | आगम ३४ निसीहं पढमं छेयसुत्तं मूलं नेट              | 85      |         |
| 86   | 3769   | आगम ३५ बृहत्कप्पो बिइयं छेयसुत्तं मूलं नेट         | 19      |         |
| 87   | 3771   | आगम ३६ ववहारो तइयं छेयसुत्तं मूलं नेट              | 30      |         |
| 88   | 3773   | आगम ३७ दसासुयक्खंधं चउत्थं छेयसुत्तं मूलं नेट      | 27      |         |
| 89   | 3775   | आगम ३८ जीयकप्पो पंचमं छेयसुत्तं मूलं नेट           | 9       |         |
| 90   | 3777   | आगम ३९ महानिसीहं छट्टं छेयसुत्तं मूलं नेट          | 153     |         |
| 91   | 3779   | आगम ४० आवस्सयं पढममं मूलसूत्तं मूलं नेट            | 12      |         |
| 92   | 3781   | आगम ४१ पिंडनिज्जुत्ति बीइअं मूलसूत्तं मूलं नेट     | 45      |         |
| 93   | 3783   | आगम ४२ दसवेयालियं तइअं मूलसूत्तं मूलं नेट          | 39      |         |
| 94   | 3785   | आगम ४३ उत्तरज्झयणं चउत्थं मूलसूत्तं मूलं नेट       | 112     |         |
| 95   | 3787   | आगम ४४ नंदिसूयं पढमा चूलिया मूलं नेट               | 26      |         |
| 96   | 3789   | आगम ४५ अनुओगदाराइं बिइया चूलिया मूलं नेट           | 68      |         |
|      |        |                                                    |         |         |
|      |        | 1/2- आगम मूल नेट कुल पुस्त- 47 कुलपाना 2832        | 02,832  |         |
|      |        |                                                    |         |         |



| 1/3- आगम मंजूषा नेट - [53] |        |                                                   |         |         |
|----------------------------|--------|---------------------------------------------------|---------|---------|
| क्रम                       | इतिहास | पुस्तकनुं नाम                                     | कुलपाना | कुलपाना |
| 97                         | 3901   | आगम मंजूषा 01 अंगसुत्तम मूल 01 आयारो              | 38      |         |
| 98                         | 3902   | आगम मंजूषा 02 अंगसुत्तम मूल 02 सूर्यगडो           | 39      |         |
| 99                         | 3903   | आगम मंजूषा 03 अंगसुत्तम मूल 03 ठाणं               | 62      |         |
| 100                        | 3904   | आगम मंजूषा 04 अंगसुत्तम मूल 04 समवाओ              | 30      |         |
| 101                        | 3905   | आगम मंजूषा 05 अंगसुत्तम मूल 05 भगवई               | 248     |         |
| 102                        | 3906   | आगम मंजूषा 06 अंगसुत्तम मूल 06 नायाधम्मकहाओ       | 85      |         |
| 103                        | 3907   | आगम मंजूषा 07 अंगसुत्तम मूल 07 उवासगादसाओ         | 19      |         |
| 104                        | 3908   | आगम मंजूषा 08 अंगसुत्तम मूल 08 अंतगडदसाओ          | 15      |         |
| 105                        | 3909   | आगम मंजूषा 09 अंगसुत्तम मूल 09 अनुत्तरोववाइयदसाओ  | 6       |         |
| 106                        | 3910   | आगम मंजूषा 10 अंगसुत्तम मूल 10 पण्हावागरणं        | 22      |         |
| 107                        | 3911   | आगम मंजूषा 11 अंगसुत्तम मूल 11 विवागसूयं          | 21      |         |
| 108                        | 3912   | आगम मंजूषा 12 उवांगसुत्तम मूल 01 उववाइअं          | 19      |         |
| 109                        | 3913   | आगम मंजूषा 13 उवांगसुत्तम मूल 02 रायप्पसेणियं     | 33      |         |
| 110                        | 3914   | आगम मंजूषा 14 उवांगसुत्तम मूल 03 जीवाजीवाभिगमं    | 76      |         |
| 111                        | 3915   | आगम मंजूषा 15 उवांगसुत्तम मूल 04 पन्नवणा          | 107     |         |
| 112                        | 3916   | आगम मंजूषा 16 उवांगसुत्तम मूल 05 सूरपन्नत्ति      | 38      |         |
| 113                        | 3917   | आगम मंजूषा 17 उवांगसुत्तम मूल 06 चंदपन्नत्ति      | 26      |         |
| 114                        | 3918   | आगम मंजूषा 18 उवांगसुत्तम मूल 07 जम्बुदीवपन्नत्ति | 60      |         |
| 115                        | 3919   | आगम मंजूषा 19 उवांगसुत्तम मूल 08 निरयावलियाणं     | 9       |         |
| 116                        | 3920   | आगम मंजूषा 20 उवांगसुत्तम मूल 09 कप्पवडिंसियाणं   | 3       |         |
| 117                        | 3921   | आगम मंजूषा 21 उवांगसुत्तम मूल 10 पुप्फियाणं       | 9       |         |
| 118                        | 3922   | आगम मंजूषा 22 उवांगसुत्तम मूल 11 पुप्फचूलियाणं    | 4       |         |
| 119                        | 3923   | आगम मंजूषा 23 उवांगसुत्तम मूल 12 वण्हिदसाणं       | 5       |         |
| 120                        | 3924   | आगम मंजूषा 24 पइन्नगसुत्तम मूल 01 चउसरणं          | 4       |         |
| 121                        | 3925   | आगम मंजूषा 25 पइन्नगसुत्तम मूल 02 आउरपच्चक्खाणं   | 4       |         |
| 122                        | 3926   | आगम मंजूषा 26 पइन्नगसुत्तम मूल 03 महापच्चक्खाणं   | 6       |         |
| 123                        | 3927   | आगम मंजूषा 27 पइन्नगसुत्तम मूल 04 भत्तपरिण्णा     | 6       |         |
| 124                        | 3928   | आगम मंजूषा 28 पइन्नगसुत्तम मूल 05 तंदुलवेयालियं   | 10      |         |
| 125                        | 3929   | आगम मंजूषा 29 पइन्नगसुत्तम मूल 06 संस्तारकं       | 5       |         |
| 126                        | 3930   | आगम मंजूषा 30 पइन्नगसुत्तम मूल 07 गच्छायारो       | 6       |         |
| 127                        | 3931   | आगम मंजूषा 31 पइन्नगसुत्तम मूल 08 गणिविज्जा       | 4       |         |
| 128                        | 3932   | आगम मंजूषा 32 पइन्नगसुत्तम मूल 09 देविंदत्थओ      | 9       |         |
| 129                        | 3933   | आगम मंजूषा 33 पइन्नगसुत्तम मूल 10 मरणसमाहि        | 16      |         |
| 130                        | 3934   | आगम मंजूषा 34 छेयसुत्तम मूल 01 निसीहं             | 15      |         |
| आगम मंजूषा नेट आलु...      |        |                                                   |         |         |

|      |        |                                                        |         |          |
|------|--------|--------------------------------------------------------|---------|----------|
|      |        | પાછલા પાનેથી આગમ મંજૂષા નેટ ચાલુ...                    |         |          |
| ક્રમ | ફાઈલનં | પુસ્તકનું નામ                                          | કુલપાના | કુલપાના  |
| 131  | 3935   | આગમ મંજૂષા 35 છેયસુત્તમ મૂલ 02 બૃહત્કપ્પો              | 11      |          |
| 132  | 3936   | આગમ મંજૂષા 36 છેયસુત્તમ મૂલ 03 વવહારો                  | 14      |          |
| 133  | 3937   | આગમ મંજૂષા 37 છેયસુત્તમ મૂલ 04 દસાસૂયવ્વંધો            | 14      |          |
| 134  | 3938   | આગમ મંજૂષા 38 એ છેયસુત્તમ મૂલ 05 એ જીયકપ્પો            | 56      |          |
| 135  | 3939   | આગમ મંજૂષા 38 બી છેયસુત્તમ મૂલ 05 બી પંચકપ્પ ભાસં      | 53      |          |
| 136  | 3940   | આગમ મંજૂષા 39 છેયસુત્તમ મૂલ 06 મહાનિસીહં               | 63      |          |
| 137  | 3941   | આગમ મંજૂષા 40 મૂલસુત્તમ મૂલ 01 આવસ્સયં નિજ્જુત્તિસહિયં | 47      |          |
| 138  | 3942   | આગમ મંજૂષા 41 એ મૂલસુત્તમ મૂલ 02 એ ઓહનિજ્જુત્તિ        | 25      |          |
| 139  | 3943   | આગમ મંજૂષા 41 બી મૂલસુત્તમ મૂલ 02 બી પિંડનિજ્જુત્તિ    | 18      |          |
| 140  | 3944   | આગમ મંજૂષા 42 મૂલસુત્તમ મૂલ 03 દસવેયાલિયં              | 15      |          |
| 141  | 3945   | આગમ મંજૂષા 43 મૂલસુત્તમ મૂલ 04 ઉત્તરજ્ઞયણં             | 31      |          |
| 142  | 3946   | આગમ મંજૂષા 44 ચૂલિકાસુત્તમ મૂલ 01 નંદીસૂયં             | 13      |          |
| 143  | 3947   | આગમ મંજૂષા 45 ચૂલિકાસુત્તમ મૂલ 02 અનુઓગદારં            | 32      |          |
| 144  | 3948   | આગમ મંજૂષા મૂલ કપ્પસૂયં                                | 22      |          |
| 145  | 3949   | આગમ મંજૂષા એન 01 આયારો નિજ્જુત્તિ                      | 10      |          |
| 146  | 3950   | આગમ મંજૂષા એન 02 સૂયગડો નિજ્જુત્તિ                     | 8       |          |
| 147  | 3951   | આગમ મંજૂષા એન 37 દસાસૂયવ્વંધં નિજ્જુત્તિ               | 6       |          |
| 148  | 3952   | આગમ મંજૂષા એન 42 દસવેયાલિય નિજ્જુત્તિ                  | 11      |          |
| 149  | 3953   | આગમ મંજૂષા એન 43 ઉત્તરજ્ઞયણં નિજ્જુત્તિ                | 14      |          |
|      |        | 1/3- આગમમંજૂષા-કુલ બુક્ક-53, કુલપાના- 1522             | 01,522  |          |
|      |        |                                                        |         | 0,07,864 |
|      |        | [2] આગમ અનુવાદ(૪ થી ૯)કુલ બુક્ક-175, કુલપાના 23180     |         |          |
|      |        | 211 આગમ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ નેટ [49] અથવા પ્રિન્ટેડ [15] |         |          |
| ક્રમ | ફાઈલનં | પુસ્તકનું નામ                                          | કુલપાના | કુલપાના  |
| 150  | 35601  | આગમદીપ ૦૧ આયારો ગુજરાતી ભાવાનુવાદ                      | 120     |          |
| 151  | 35602  | આગમદીપ ૦૨ સુયગડો ગુજરાતી ભાવાનુવાદ                     | 104     |          |
| 152  | 35603  | આગમદીપ ૦૩ ઠાણં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ                       | 140     |          |
| 153  | 35604  | આગમદીપ ૦૪ સમવાઓ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ                      | 088     |          |
| 154  | 35605  | આગમદીપ ૦૫ ભગવદ્ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ-1                    | 240     |          |
| 155  | 35606  | આગમદીપ ૦૫ ભગવદ્ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ-2                    | 240     |          |
| 156  | 35607  | આગમદીપ ૦૬ નાયધમ્મકહાઓ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ                | 144     |          |
| 157  | 35608  | આગમદીપ ૦૭ ઉવાસગદસાઓ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ                  | 040     |          |
| 158  | 35609  | આગમદીપ ૦૮ અન્તગડદસાઓ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ                 | 040     |          |
| 159  | 35610  | આગમદીપ ૦૯ અનુત્તરોવવાઈદસાઓ ગુજરાતી અનુ.                | 016     |          |
|      |        | આગમગુજરાતી ભાવાનુવાદ નેટ 49 અથવા પ્રિન્ટેડ 15 ચાલુ..   |         |          |

| પાછલા પાનેથી આગમગુજરાતી ભાવાનુવાદ નેટ 49 અથવા પ્રિન્ટેડ 15 ચાલુ.. |        |                                              |         |         |
|-------------------------------------------------------------------|--------|----------------------------------------------|---------|---------|
| ક્રમ                                                              | ફાઈલનં | પુસ્તકનું નામ                                | કુલપાના | કુલપાના |
| 160                                                               | 35611  | આગમદીપ ૧૦ પદહાવગરાણમ્ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ      | 160     |         |
| 161                                                               | 35612  | આગમદીપ ૧૧ વિવાગસૂચમ્ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ       | 161     |         |
| 162                                                               | 35613  | આગમદીપ ૧૨ ઉવવાઈયમ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ          | 162     |         |
| 163                                                               | 35614  | આગમદીપ ૧૩ રાઈપસેણીયમ્ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ      | 163     |         |
| 164                                                               | 35615  | આગમદીપ ૧૪ જીવાજીવાભિગમ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ     | 164     |         |
| 165                                                               | 35616  | આગમદીપ ૧૫ પત્રવણા ગુજરાતી ભાવાનુવાદ          | 165     |         |
| 166                                                               | 35617  | આગમદીપ ૧૬ સૂરપત્રતિ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ        | 166     |         |
| 167                                                               | 35618  | આગમદીપ ૧૭ ચંદપત્રતિ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ        | 167     |         |
| 168                                                               | 35619  | આગમદીપ ૧૮ જમ્બુદ્વીપપત્રતિ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ | 168     |         |
| 169                                                               | 35620  | આગમદીપ ૧૯ નિરયાવલીયાણં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ     | 169     |         |
| 170                                                               | 35621  | આગમદીપ ૨૦ કપ્પવડિંસિયાણં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ   | 170     |         |
| 171                                                               | 35622  | આગમદીપ ૨૧ પુષ્કિયાણં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ       | 171     |         |
| 172                                                               | 35623  | આગમદીપ ૨૨ પુષ્ક્યૂલિયાણં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ   | 172     |         |
| 173                                                               | 35624  | આગમદીપ ૨૩ વણિહસાણં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ         | 173     |         |
| 174                                                               | 35625  | આગમદીપ ૨૪ ચઉસરણં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ           | 174     |         |
| 175                                                               | 35626  | આગમદીપ ૨૫ આઉરપચ્ચક્રાણં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ    | 175     |         |
| 176                                                               | 35627  | આગમદીપ ૨૬ મહાપચ્ચક્રાણં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ    | 176     |         |
| 177                                                               | 35628  | આગમદીપ ૨૭ ભત્તપરિણા ગુજરાતી ભાવાનુવાદ        | 177     |         |
| 178                                                               | 35629  | આગમદીપ ૨૮ તંદુલવેયાલીયં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ    | 178     |         |
| 179                                                               | 35630  | આગમદીપ ૨૯ સંથારણં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ          | 179     |         |
| 180                                                               | 35631  | આગમદીપ ૩૦ એ ગચ્છાચારો ગુજરાતી ભાવાનુવાદ      | 180     |         |
| 181                                                               | 35632  | આગમદીપ ૩૦ બી ચંદાવેજ્ઞયં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ   | 181     |         |
| 182                                                               | 35633  | આગમદીપ ૩૧ ગણિવિજ્ઞા ગુજરાતી ભાવાનુવાદ        | 182     |         |
| 183                                                               | 35634  | આગમદીપ ૩૨ દેવીદત્થઓ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ        | 183     |         |
| 184                                                               | 35635  | આગમદીપ ૩૩ બી વીરદત્થઓ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ      | 184     |         |
| 185                                                               | 35636  | આગમદીપ ૩૪ નિસીહિં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ          | 185     |         |
| 186                                                               | 35637  | આગમદીપ ૩૫ બુહ્તકપ્પો ગુજરાતી ભાવાનુવાદ       | 186     |         |
| 187                                                               | 35638  | આગમદીપ ૩૬ વવહારો ગુજરાતી ભાવાનુવાદ           | 187     |         |
| 188                                                               | 35639  | આગમદીપ ૩૭ દસાસૂચક્રમં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ      | 188     |         |
| 189                                                               | 35640  | આગમદીપ ૩૮ એ જિચકપ્પો ગુજરાતી ભાવાનુવાદ       | 189     |         |
| 190                                                               | 35641  | આગમદીપ ૩૯ મહાનિસીહીં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ       | 190     |         |
| 191                                                               | 35642  | આગમદીપ ૪૦ આવસ્સયં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ          | 191     |         |
| 192                                                               | 35643  | આગમદીપ ૪૧ એ ઓહનિક્કુતિ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ     | 192     |         |
| 193                                                               | 35644  | આગમદીપ ૪૧ બી પિણ્ડનિક્કુતિ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ | 193     |         |
| આગમગુજરાતી ભાવાનુવાદ નેટ 49 અથવા પ્રિન્ટેડ 15 ચાલુ..              |        |                                              |         |         |

| પાછલા પાનેથી આગમગુજરાતી ભાવાનુવાદ નેટ 49 અથવા પ્રિન્ટેડ 15 ચાલુ.. |        |                                                 |         |         |
|-------------------------------------------------------------------|--------|-------------------------------------------------|---------|---------|
| ક્રમ                                                              | ફાઈલનં | પુસ્તકનું નામ                                   | કુલપાના | કુલપાના |
| 194                                                               | 35645  | આગમદીપ જર દસવેચાલિયં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ          | 048     |         |
| 195                                                               | 35646  | આગમદીપ જર ઉત્તરજયણં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ           | 136     |         |
| 196                                                               | 35647  | આગમદીપ જર નંદીસૂતં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ            | 048     |         |
| 197                                                               | 35648  | આગમદીપ જપ અનુઓગદારં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ           | 112     |         |
| 198                                                               | 35649  | કલ્પ(બારસા) સૂત્ર મૂળ                           | 106     |         |
| 2/1-આગમગુજરાતીભાવાનુવાદ કુલબુક્સ-49 નેટ અથવા પ્રિન્ટેડ15 કુલપાના  |        |                                                 | 03,450  |         |
| 2/2 આગમ હિન્દી અનુવાદ નેટ [ 48 ]                                  |        |                                                 |         |         |
| ક્રમ                                                              | ફાઈલનં | પુસ્તકનું નામ                                   | કુલપાના | કુલપાના |
| 199                                                               | 34667  | આગમ ૦૧ આચારાંગ સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ              | 126     |         |
| 200                                                               | 34668  | આગમ ૦૨ સૂત્રકૃતાંગ સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ          | 114     |         |
| 201                                                               | 34669  | આગમ ૦૩ સ્થાનાંગ સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ             | 158     |         |
| 202                                                               | 34670  | આગમ ૦૪ સમવાયાંગ સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ             | 96      |         |
| 203                                                               | 34671  | આગમ ૦૫ ભગવતી સૂત્ર ભાગ ૦૧ હિન્દી અનુવાદ         | 250     |         |
| 204                                                               | 34672  | આગમ ૦૫ ભગવતી સૂત્ર ભાગ ૦૨ હિન્દી અનુવાદ         | 254     |         |
| 205                                                               | 34673  | આગમ ૦૬ જ્ઞાતાધર્મ સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ           | 162     |         |
| 206                                                               | 34674  | આગમ ૦૭ ઉપાસકદશા સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ             | 33      |         |
| 207                                                               | 34675  | આગમ ૦૮ અન્તકૃદશા સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ            | 35      |         |
| 208                                                               | 34676  | આગમ ૦૯ અનુત્તરોપપાતિક સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ       | 13      |         |
| 209                                                               | 34677  | આગમ ૧૦ પ્રશ્નવ્યાકરણ સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ        | 54      |         |
| 210                                                               | 34678  | આગમ ૧૧ વિપાક સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ                | 52      |         |
| 211                                                               | 34679  | આગમ ૧૨ ઔપપાતિક સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ              | 40      |         |
| 212                                                               | 34680  | આગમ ૧૩ રાજપ્રશ્નીય સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ          | 62      |         |
| 213                                                               | 34681  | આગમ ૧૪ જીવાજીવાભિગમ સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ         | 136     |         |
| 214                                                               | 34682  | આગમ ૧૫ પ્રજ્ઞાપના સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ           | 181     |         |
| 215                                                               | 34683  | આગમ ૧૬ સૂર્યપ્રજ્ઞપ્તિ સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ      | 51      |         |
| 216                                                               | 34684  | આગમ ૧૭ ચન્દ્રપ્રજ્ઞપ્તિ સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ     | 52      |         |
| 217                                                               | 34685  | આગમ ૧૮ જમ્બૂદ્વીપપ્રજ્ઞપ્તિ સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ | 105     |         |
| 218                                                               | 34686  | આગમ ૧૯ નિરયાવલિકા સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ           | 17      |         |
| 219                                                               | 34687  | આગમ ૨૦ કલ્પવતંસિકા સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ          | 7       |         |
| 220                                                               | 34688  | આગમ ૨૧ પુષ્પિકા સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ             | 21      |         |
| 221                                                               | 34689  | આગમ ૨૨ પુષ્પચૂલિકા સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ          | 7       |         |
| 222                                                               | 34690  | આગમ ૨૩ વૃષ્ણિદશા સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ            | 9       |         |
| 223                                                               | 34691  | આગમ ૨૪ ચતુશરણ સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ               | 11      |         |
| આગમ હિન્દી અનુવાદ નેટ ચાલુ..                                      |        |                                                 |         |         |

| ક્રમ                                                       | ફાઈલનં | પાછલા પાનેથી આગમ હિન્દી અનુવાદ નેટ ચાલુ..   | કુલપાના | કુલપાના |
|------------------------------------------------------------|--------|---------------------------------------------|---------|---------|
| ક્રમ                                                       | ફાઈલનં | પુસ્તકનું નામ                               | કુલપાના | કુલપાના |
| 224                                                        | 34692  | આગમ ૨૫ આતુરપ્રત્યાખ્યાન સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ | 12      |         |
| 225                                                        | 34693  | આગમ ૨૬ મહાપ્રત્યાખ્યાન સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ  | 16      |         |
| 226                                                        | 34694  | આગમ ૨૭ ભક્તપરિજ્ઞા સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ      | 20      |         |
| 227                                                        | 34695  | આગમ ૨૮ તંદુલવૈચારિક સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ     | 22      |         |
| 228                                                        | 34696  | આગમ ૨૯ સંસ્તારક સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ         | 16      |         |
| 229                                                        | 34697  | આગમ ૩૦ ૧ ગચ્છાચાર સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ       | 16      |         |
| 230                                                        | 34698  | આગમ ૩૦ ૨ ચંદાવેજ્ઞયા સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ    | 19      |         |
| 231                                                        | 34699  | આગમ ૩૧ ગણિવિદ્યા સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ        | 9       |         |
| 232                                                        | 34700  | આગમ ૩૨ દેવેન્દ્રસ્તવ સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ    | 22      |         |
| 233                                                        | 34701  | આગમ ૩૩ વીરસ્તવ સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ          | 10      |         |
| 234                                                        | 34702  | આગમ ૩૪ નિશિથ સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ            | 51      |         |
| 235                                                        | 34703  | આગમ ૩૫ બૃહત્ કલ્પ સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ       | 20      |         |
| 236                                                        | 34704  | આગમ ૩૬ વ્યવહાર સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ          | 28      |         |
| 237                                                        | 34705  | આગમ ૩૭ દશાશ્રુતસ્કંધ સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ    | 30      |         |
| 238                                                        | 34706  | આગમ ૩૮ જીતકલ્પ સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ          | 15      |         |
| 239                                                        | 34707  | આગમ ૩૯ મહાનિશિથ સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ         | 151     |         |
| 240                                                        | 34708  | આગમ ૪૦ આવશ્યક સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ           | 19      |         |
| 241                                                        | 34709  | આગમ ૪૧ ૧ ઓઘનિર્યુક્તિ સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ   | 48      |         |
| 242                                                        | 34710  | આગમ ૪૧ ૨ પિંડનિર્યુક્તિ સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ | 56      |         |
| 243                                                        | 34711  | આગમ ૪૨ દશવૈકાલિક સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ        | 48      |         |
| 244                                                        | 34712  | આગમ ૪૩ ઉત્તરાધ્યયન હિન્દી અનુવાદ            | 128     |         |
| 245                                                        | 34713  | આગમ ૪૪ નંદિસૂત્ર હિન્દી અનુવાદ              | 28      |         |
| 246                                                        | 34714  | આગમ ૪૫ અનુયોગદ્વાર સૂત્ર હિન્દી અનુવાદ      | 68      |         |
| 2/2- આગમ હિન્દી અનુવાદ કુલ બુક્સ -48, કુલપાના 2898         |        |                                             | 02,898  |         |
| 2/3 આગમ દીપ પ્રિન્ટેડ [7] ગુજરાતી અનુવાદ                   |        |                                             |         |         |
| ક્રમ                                                       | ફાઈલનં | પુસ્તકનું નામ                               | કુલપાના | કુલપાના |
| 247                                                        | 5054   | આગમદીપ આગમ ૦૧ થી ૦૪ ગુજરાતી અનુવાદ ભાગ ૧    | 468     |         |
| 248                                                        | 5055   | આગમદીપ આગમ ૦૫ ગુજરાતી અનુવાદ ભાગ ૨          | 532     |         |
| 249                                                        | 5056   | આગમદીપ આગમ ૦૬ થી ૧૩ ગુજરાતી અનુવાદ ભાગ ૩    | 434     |         |
| 250                                                        | 5057   | આગમદીપ આગમ ૧૪ થી ૧૫ ગુજરાતી અનુવાદ ભાગ ૪    | 420     |         |
| 251                                                        | 5058   | આગમદીપ આગમ ૧૬ થી ૨૩ ગુજરાતી અનુવાદ ભાગ ૫    | 316     |         |
| 252                                                        | 5059   | આગમદીપ આગમ ૨૪ થી ૩૯ ગુજરાતી અનુવાદ ભાગ ૬    | 396     |         |
| 253                                                        | 5060   | આગમદીપ આગમ ૪૦ થી ૪૫ ગુજરાતી અનુવાદ ભાગ ૭    | 396     |         |
| 2/3- આગમદીપ પ્રિન્ટેડ ગુજ.અનુવાદ કુલબુક્સ -7, કુલપાના 2962 |        |                                             | 02,962  |         |



| 2/4 આગમ ઈંગ્લીશઅનુવાદ net [11]                    |         |                                                      |         |         |
|---------------------------------------------------|---------|------------------------------------------------------|---------|---------|
| ક્રમ                                              | ફાઈલનં. | પુસ્તકનું નામ                                        | કુલપાના | કુલપાના |
| 254                                               | 6815    | Antkruddasha Sutra English Translation               | 62      |         |
| 255                                               | 6817    | Anuttaropapatikdasha Sutra Eng.Translati.            | 22      |         |
| 256                                               | 6821    | Vipak Sutra English Translation                      | 71      |         |
| 257                                               | 6837    | Niryavalika Sutra English Translation                | 25      |         |
| 258                                               | 6839    | Kalpvatansika Sutra English Translation              | 8       |         |
| 259                                               | 6841    | Pushpika Sutra English Translation                   | 28      |         |
| 260                                               | 6843    | Pushpchulika Sutra English Translation               | 8       |         |
| 261                                               | 6845    | Vrushnidasa Sutra English Translation                | 10      |         |
| 262                                               | 6859    | Gachchhachar Sutra Engl. Translation                 | 15      |         |
| 263                                               | 6865    | Veerstava Sutra English Translation                  | 8       |         |
| 264                                               | 6887    | Nandi Sutra English Translation                      | 153     |         |
| 2/4- આગમ ઈંગ્લીશ અનુવાદ નેટ કુલ બુક્સ -11 કુલપાના |         |                                                      | 00,410  |         |
| 2/5 આગમ સટીક ગુજરાતી અનુવાદ પ્રિન્ટેડ [48]        |         |                                                      |         |         |
| ક્રમ                                              | ફાઈલનં. | પુસ્તકનું નામ                                        | કુલપાના | કુલપાના |
| 265                                               | 9034    | આગમ ૦૧ આચારાંગ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ             | 516     |         |
| 266                                               | 9035    | આગમ ૦૨ સુત્રકૃતાંગ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ         | 484     |         |
| 267                                               | 9036    | આગમ ૦૩ સ્થાનાંગ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ            | 676     |         |
| 268                                               | 9037    | આગમ ૦૪ સમવાયાંગ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ            | 242     |         |
| 269                                               | 9038    | આગમ ૦૫ ભગવતી સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ               | 1138    |         |
| 270                                               | 9039    | આગમ ૦૬ જ્ઞાતાધર્મકથાંગ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ     | 290     |         |
| 271                                               | 9040    | આગમ ૦૭ ઉપાસકદશાંગ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ          | 72      |         |
| 272                                               | 9041    | આગમ ૦૮ અંતકૃદ્ધશાંગ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ        | 38      |         |
| 273                                               | 9042    | આગમ ૦૯ અનુતરોપપાતિક સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ        | 20      |         |
| 274                                               | 9043    | આગમ ૧૦ પ્રશ્નવ્યાકરણાંગ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ    | 162     |         |
| 275                                               | 9044    | આગમ ૧૧ વિપાક સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ               | 92      |         |
| 276                                               | 9045    | આગમ ૧૨ ઔપપાતિક સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ             | 128     |         |
| 277                                               | 9046    | આગમ ૧૩ રાઈપસેણીય સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ           | 166     |         |
| 278                                               | 9047    | આગમ ૧૪ જીવાજીવાભિગમ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ        | 486     |         |
| 279                                               | 9048    | આગમ ૧૫ પ્રજ્ઞાપના સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ          | 660     |         |
| 280                                               | 9049    | આગમ ૧૬ સૂર્યપ્રજ્ઞાસિ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ      | 446     |         |
| 281                                               | 9050    | આગમ ૧૭ ચંદ્રપ્રજ્ઞાસિ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ      | 36      |         |
| 282                                               | 9051    | આગમ ૧૮ જમ્બુદ્વીપપ્રજ્ઞાસિ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ | 628     |         |
| આગમ સટીક ગુજરાતી અનુવાદ પ્રિન્ટેડ                 |         |                                                      |         |         |

| પાછલા પાનેથી આગમસટીકગુજરાતીઅનુવાદ અથવા પ્રિન્ટેડ ચાલુ   |         |                                                     |         |         |
|---------------------------------------------------------|---------|-----------------------------------------------------|---------|---------|
| ક્રમ                                                    | ફાઈલનં. | પુસ્તકનું નામ                                       | કુલપાના | કુલપાના |
| 283                                                     | 9052    | આગમ ૧૯ નિર્યાવલિકા સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ        | 52      |         |
| 284                                                     | 9053    | આગમ ૨૦ કલ્પવર્તસિકા સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ       | 36      |         |
| 285                                                     | 9054    | આગમ ૨૧ પુષ્પિકા સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ           | 50      |         |
| 286                                                     | 9055    | આગમ ૨૨ પુષ્પચૂલિકા સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ        | 36      |         |
| 287                                                     | 9056    | આગમ ૨૩ વૃષ્ટિદશા સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ          | 38      |         |
| 288                                                     | 9057    | આગમ ૨૪ ચતુશરણ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ             | 40      |         |
| 289                                                     | 9058    | આગમ ૨૫ આતુરપ્રત્યાખ્યાન આચારાંગ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી  | 44      |         |
| 290                                                     | 9059    | આગમ ૨૬ મહાપ્રત્યાખ્યાન સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ    | 40      |         |
| 291                                                     | 9060    | આગમ ૨૭ ભક્તપરિજ્ઞા સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ        | 40      |         |
| 292                                                     | 9061    | આગમ ૨૮ તંદુલવૈચારિક સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ       | 84      |         |
| 293                                                     | 9062    | આગમ ૨૯ સંસ્તારક સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ           | 48      |         |
| 294                                                     | 9063    | આગમ ૩૦ એ ગચ્છાચાર સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ         | 74      |         |
| 295                                                     | 9064    | આગમ ૩૦ બી ચંદ્રવેદ્યક સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ     | 48      |         |
| 296                                                     | 9065    | આગમ ૩૧ ગણિવિદ્યા સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ          | 40      |         |
| 297                                                     | 9066    | આગમ ૩૨ દેવેન્દ્રસ્તવ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ      | 54      |         |
| 298                                                     | 9068    | આગમ ૩૩ બી વીરસ્તવ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ         | 38      |         |
| 299                                                     | 9069    | આગમ ૩૪ નિશીથ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ              | 87      |         |
| 300                                                     | 9070    | આગમ ૩૫ બૃહત્ કલ્પ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ         | 27      |         |
| 301                                                     | 9071    | આગમ ૩૬ વ્યવહાર સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ            | 54      |         |
| 302                                                     | 9072    | આગમ ૩૭ દશાશ્રુતસ્કન્ધ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ     | 68      |         |
| 303                                                     | 9073    | આગમ ૩૮ એ જિતકલ્પ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ          | 36      |         |
| 304                                                     | 9075    | આગમ ૩૯ મહાનિશીથ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ           | 210     |         |
| 305                                                     | 9076    | આગમ ૪૦ આવશ્યક મૂલ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ         | 932     |         |
| 306                                                     | 9077    | આગમ ૪૧ એ ઓઘનિર્યુક્તિ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ     | 76      |         |
| 307                                                     | 9078    | આગમ ૪૧ બી પિણ્ડનિર્યુક્તિ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ | 184     |         |
| 308                                                     | 9079    | આગમ ૪૨ દશવૈકાલિક સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ          | 240     |         |
| 309                                                     | 9080    | આગમ ૪૩ ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ        | 680     |         |
| 310                                                     | 9081    | આગમ ૪૪ નન્દિ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ              | 224     |         |
| 311                                                     | 9082    | આગમ ૪૫ અનુયોગદ્વાર સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ        | 272     |         |
| 312                                                     | 9084    | કલ્પ સૂત્ર મૂલ ગુજરાતી અનુવાદ                       | 208     |         |
| 2/5- આગમસટીકગુજરાતીઅનુવાદ પ્રિન્ટેડ બુક્સ 48 પાના 10340 |         |                                                     | 10340   |         |
|                                                         |         |                                                     |         |         |
|                                                         |         |                                                     |         |         |
|                                                         |         |                                                     |         |         |
|                                                         |         |                                                     |         |         |

| 2/6 आगम हिन्दी अनुवाद अथवा प्रिन्टेड बुक्स [12]             |         |                                                 |         |          |
|-------------------------------------------------------------|---------|-------------------------------------------------|---------|----------|
| क्रम                                                        | इंटरलिन | पुस्तकनुं नाम                                   | कुलपाना | कुलपाना  |
| 313                                                         | 9779    | आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-१                   | 257     |          |
| 314                                                         | 9780    | आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-२                   | 274     |          |
| 315                                                         | 9781    | आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-३                   | 290     |          |
| 316                                                         | 9782    | आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-४                   | 306     |          |
| 317                                                         | 9783    | आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-५                   | 274     |          |
| 318                                                         | 9784    | आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-६                   | 274     |          |
| 319                                                         | 9785    | आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-७                   | 242     |          |
| 320                                                         | 9786    | आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-८                   | 242     |          |
| 321                                                         | 9787    | आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-९                   | 225     |          |
| 322                                                         | 9788    | आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-१०                  | 242     |          |
| 323                                                         | 9789    | आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-११                  | 242     |          |
| 324                                                         | 9790    | आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-१२                  | 242     |          |
| 2/6- आगम हिन्दी अनुवाद प्रिन्टेड बुक्स 12 पाना 3110         |         |                                                 | 03,110  |          |
|                                                             |         |                                                 |         | 0,23,170 |
| [3] आगम विवेचन साहित्य (१०थी१५) कुलबुक्स 171, कुलपाना 60884 |         |                                                 |         |          |
| 3/1 आगम सूत्र सटीक प्रिन्टेड बुक्स [46]                     |         |                                                 |         |          |
| क्रम                                                        | इंटरलिन | पुस्तकनुं नाम                                   | कुलपाना | कुलपाना  |
| 325                                                         | 3335    | आगम सूत्र सटीक ०१ आचार अंगसूत्र ०१              | 468     |          |
| 326                                                         | 3336    | आगम सूत्र सटीक ०२ सूत्रकृत अंगसूत्र ०२          | 484     |          |
| 327                                                         | 3337    | आगम सूत्र सटीक ०३ स्थान अंगसूत्र ०३             | 596     |          |
| 328                                                         | 3338    | आगम सूत्र सटीक ०४ समवाय अंगसूत्र ०४             | 204     |          |
| 329                                                         | 3339    | आगम सूत्र सटीक ०५ भगवती अंगसूत्र ०५             | 1096    |          |
| 330                                                         | 3340    | आगम सूत्र सटीक ०६ ज्ञाताधर्मकथा अंगसूत्र ०६     | 280     |          |
| 331                                                         | 3341    | आगम सूत्र सटीक ०७ उपासकदशा अंगसूत्र ०७          | 80      |          |
| 332                                                         | 3342    | आगम सूत्र सटीक ०८ अन्तकृद्दशा अंगसूत्र ०८       | 58      |          |
| 333                                                         | 3343    | आगम सूत्र सटीक ०९ अनुत्तरोपपातिकदशा अंगसूत्र ०९ | 34      |          |
| 334                                                         | 3344    | आगम सूत्र सटीक १० प्रश्नव्याकरण अंगसूत्र १०     | 192     |          |
| 335                                                         | 3345    | आगम सूत्र सटीक ११ विपाकश्रुत अंगसूत्र ११        | 86      |          |
| 336                                                         | 3346    | आगम सूत्र सटीक १२ औपपातिक उपांगसूत्र ०१         | 150     |          |
| 337                                                         | 3347    | आगम सूत्र सटीक १३ राजप्रश्रिय उपांगसूत्र ०२     | 184     |          |
| 338                                                         | 3348    | आगम सूत्र सटीक १४ जीवाजीवाभिगम उपांगसूत्र ०३    | 532     |          |
| 339                                                         | 3349    | आगम सूत्र सटीक १५ प्रज्ञापना उपांगसूत्र ०४      | 664     |          |
| 340                                                         | 3350    | आगम सूत्र सटीक १६ सूर्यप्रज्ञप्ति उपांगसूत्र ०५ | 336     |          |
| आगम सूत्र सटीक प्रिन्टेड थालु..                             |         |                                                 |         |          |

|      |      | पाछला पानेथी आगम सूत्र सटीक प्रिन्टेड थालु.          |         |         |
|------|------|------------------------------------------------------|---------|---------|
| क्रम | झाईल | पुस्तकनुं नाम                                        | कुलपाना | कुलपाना |
| 341  | 3351 | आगम सूत्र सटीक १७ चन्द्रप्रज्ञप्ति उपांगसूत्र ०६     | 28      |         |
| 342  | 3352 | आगम सूत्र सटीक १८ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति उपांगसूत्र ०७ | 564     |         |
| 343  | 3353 | आगम सूत्र सटीक १९ निरयावलिका उपांगसूत्र ०८           | 46      |         |
| 344  | 3354 | आगम सूत्र सटीक २० कल्पवतंसिका उपांगसूत्र ०९          | 27      |         |
| 345  | 3355 | आगम सूत्र सटीक २१ पुष्पिका उपांगसूत्र १०             | 44      |         |
| 346  | 3356 | आगम सूत्र सटीक २२ पुष्पचूलिका उपांगसूत्र ११          | 27      |         |
| 347  | 3357 | आगम सूत्र सटीक २३ वृष्णिदशा उपांगसूत्र १२            | 29      |         |
| 348  | 3358 | आगम सूत्र सटीक २४ चतुशरण पङ्गणसूत्र ०१               | 45      |         |
| 349  | 3359 | आगम सूत्र सटीक २५ आतुरप्रत्याख्यान पङ्गणसूत्र ०२     | 38      |         |
| 350  | 3360 | आगम सूत्र सटीक २६ महाप्रत्याख्यान पङ्गणसूत्र ०३      | 41      |         |
| 351  | 3361 | आगम सूत्र सटीक २७ भक्तपरिज्ञा पङ्गणसूत्र ०४          | 45      |         |
| 352  | 3362 | आगम सूत्र सटीक २८ तंदुलवैचारिक पङ्गणसूत्र ०५         | 88      |         |
| 353  | 3363 | आगम सूत्र सटीक २९ संस्तरक पङ्गणसूत्र ०६              | 38      |         |
| 354  | 3364 | आगम सूत्र सटीक ३० गच्छाचार पङ्गणसूत्र ०७             | 74      |         |
| 355  | 3366 | आगम सूत्र सटीक ३१ गणिविद्या पङ्गणसूत्र ०८            | 35      |         |
| 356  | 3367 | आगम सूत्र सटीक ३२ देवेन्द्रस्तव पङ्गणसूत्र ०९        | 60      |         |
| 357  | 3368 | आगम सूत्र सटीक ३३ मरणसमाधि पङ्गणसूत्र १०             | 103     |         |
| 358  | 3370 | आगम सूत्र सटीक ३४ निशीथ छेदसूत्र ०१                  | 1372    |         |
| 359  | 3371 | आगम सूत्र सटीक ३५ बृहतकल्प छेदसूत्र ०२               | 1500    |         |
| 360  | 3372 | आगम सूत्र सटीक ३६ व्यवहार छेदसूत्र ०३                | 1046    |         |
| 361  | 3373 | आगम सूत्र सटीक ३७ दशाश्रुतस्कन्ध छेदसूत्र ०४         | 110     |         |
| 362  | 3374 | आगम सूत्र सटीक ३८ जितकल्प छेदसूत्र ०५                | 56      |         |
| 363  | 3376 | आगम सूत्र सटीक ३९ महानिशीथ छेदसूत्र ०६               | 170     |         |
| 364  | 3377 | आगम सूत्र सटीक ४० आवश्यक मूलसूत्र ०१                 | 808     |         |
| 365  | 3378 | आगम सूत्र सटीक ४१ए ओघनिर्युक्ति मूलसूत्र 2ए          | 256     |         |
| 366  | 3379 | आगम सूत्र सटीक ४१बी पिण्डनिर्युक्ति मूलसूत्र 2बी     | 202     |         |
| 367  | 3380 | आगम सूत्र सटीक ४२ दशवैकालिक मूलसूत्र ०३              | 284     |         |
| 368  | 3381 | आगम सूत्र सटीक ४३ उत्तराध्ययन मूलसूत्र ०४            | 704     |         |
| 369  | 3382 | आगम सूत्र सटीक ४४ नन्दि चूलिकासूत्र ०१               | 265     |         |
| 370  | 3383 | आगम सूत्र सटीक ४५ अनुयोगद्वार चूलिकासूत्र ०२         | 257     |         |
|      |      | 3/1- आगम सूत्र सटीक प्रिन्टेड पुस्त 46 पाना 13806    | 13,806  |         |
|      |      |                                                      |         |         |
|      |      |                                                      |         |         |
|      |      |                                                      |         |         |

| ૩/૨ આગમ મૂલ એવં વૃત્તિ-૧ નેટ બુક્સ [૫૧] |      |                                               |         |         |
|-----------------------------------------|------|-----------------------------------------------|---------|---------|
| ક્રમ                                    | ફાઈલ | પુસ્તકનું નામ                                 | કુલપાના | કુલપાના |
| ૩૭૧                                     | ૪૧૦૧ | આગમ ૦૧ આચાર મૂલમ્ એવં વૃત્તી                  | ૮૭૧     |         |
| ૩૭૨                                     | ૪૧૦૨ | આગમ ૦૨ સૂત્રકૃત મૂલમ્ એવં વૃત્તી              | ૮૬૦     |         |
| ૩૭૩                                     | ૪૧૦૩ | આગમ ૦૩ સ્થાન મૂલમ્ એવં વૃત્તી                 | ૧૦૫૯    |         |
| ૩૭૪                                     | ૪૧૦૪ | આગમ ૦૪ સમવાય મૂલમ્ એવં વૃત્તી                 | ૩૨૪     |         |
| ૩૭૫                                     | ૪૧૦૫ | આગમ ૦૫ ભગવતી મૂલમ્ એવં વૃત્તી                 | ૧૯૬૭    |         |
| ૩૭૬                                     | ૪૧૦૬ | આગમ ૦૬ જ્ઞાતાધર્મકથા મૂલમ્ એવં વૃત્તી         | ૫૧૨     |         |
| ૩૭૭                                     | ૪૧૦૭ | આગમ ૦૭ ઉપાસકદશા મૂલમ્ એવં વૃત્તી              | ૧૧૩     |         |
| ૩૭૮                                     | ૪૧૦૮ | આગમ ૦૮ અન્તકૃદશા મૂલમ્ એવં વૃત્તી             | ૬૯      |         |
| ૩૭૯                                     | ૪૧૦૯ | આગમ ૦૯ અનુત્તરોપપાતિકદશા મૂલમ્ એવં વૃત્તી     | ૨૧      |         |
| ૩૮૦                                     | ૪૧૧૦ | આગમ ૧૦ પ્રશ્નવ્યાકરણમ્ મૂલમ્ એવં વૃત્તી       | ૩૩૫     |         |
| ૩૮૧                                     | ૪૧૧૧ | આગમ ૧૧ વિપાકશ્રુત મૂલમ્ એવં વૃત્તી            | ૧૩૨     |         |
| ૩૮૨                                     | ૪૧૧૨ | આગમ ૧૨ ઔપપાતિક મૂલમ્ એવં વૃત્તી               | ૨૪૪     |         |
| ૩૮૩                                     | ૪૧૧૩ | આગમ ૧૩ રાજપ્રશ્રીય મૂલમ્ એવં વૃત્તી           | ૩૦૪     |         |
| ૩૮૪                                     | ૪૧૧૪ | આગમ ૧૪ જીવાજીવાભિગમ મૂલમ્ એવં વૃત્તી          | ૯૩૮     |         |
| ૩૮૫                                     | ૪૧૧૫ | આગમ ૧૫ પ્રજ્ઞાપના મૂલમ્ એવં વૃત્તી            | ૧૨૨૭    |         |
| ૩૮૬                                     | ૪૧૧૬ | આગમ ૧૬ સૂર્યપ્રજ્ઞપ્તિ મૂલમ્ એવં વૃત્તી       | ૬૦૦     |         |
| ૩૮૭                                     | ૪૧૧૭ | આગમ ૧૭ ચંદ્રપ્રજ્ઞપ્તિ મૂલમ્ એવં વૃત્તી       | ૬૦૨     |         |
| ૩૮૮                                     | ૪૧૧૮ | આગમ ૧૮ જમ્બુદ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિ મૂલમ્ એવં વૃત્તી | ૧૦૯૭    |         |
| ૩૮૯                                     | ૪૧૧૯ | આગમ ૧૯ નિરયાવલિકા મૂલમ્ એવં વૃત્તી            | ૪૨      |         |
| ૩૯૦                                     | ૪૧૨૦ | આગમ ૨૦ કલ્પવતંસિકા મૂલમ્ એવં વૃત્તી           | ૯       |         |
| ૩૯૧                                     | ૪૧૨૧ | આગમ ૨૧ પુષ્પિકા મૂલમ્ એવં વૃત્તી              | ૩૬      |         |
| ૩૯૨                                     | ૪૧૨૨ | આગમ ૨૨ પુષ્પચૂલિકા મૂલમ્ એવં વૃત્તી           | ૯       |         |
| ૩૯૩                                     | ૪૧૨૩ | આગમ ૨૩ વૃષ્ણિદશા મૂલમ્ એવં વૃત્તી             | ૧૩      |         |
| ૩૯૪                                     | ૪૧૨૪ | આગમ ૨૪ ચતુશરણ મૂલમ્ એવં છાયા                  | ૧૪      |         |
| ૩૯૫                                     | ૪૧૪૯ | આગમ ૨૪ ચતુશરણ મૂલમ્ એવં વૃત્તી                | ૪૫      |         |
| ૩૯૬                                     | ૪૧૨૫ | આગમ ૨૫ આતુરપ્રત્યાખ્યાન મૂલમ્ એવં છાયા        | ૧૭      |         |
| ૩૯૭                                     | ૪૧૨૬ | આગમ ૨૬ મહાપ્રત્યાખ્યાન મૂલમ્ એવં છાયા         | ૨૪      |         |
| ૩૯૮                                     | ૪૧૨૭ | આગમ ૨૭ ભક્તપરિજ્ઞા મૂલમ્ એવં છાયા             | ૨૯      |         |
| ૩૯૯                                     | ૪૧૨૮ | આગમ ૨૮ તન્દુલવૈચારિક મૂલમ્ એવં છાયા           | ૪૯      |         |
| ૪૦૦                                     | ૪૧૫૦ | આગમ ૨૮ તન્દુલવૈચારિક મૂલમ્ એવં વૃત્તિ         | ૧૧૭     |         |
| ૪૦૧                                     | ૪૧૨૯ | આગમ ૨૯ સંસ્તારક મૂલમ્ એવં છાયા                | ૨૧      |         |
| ૪૦૨                                     | ૪૧૩૦ | આગમ ૩૦ ગચ્છાચાર મૂલમ્ એવં છાયા                | ૨૪      |         |
| ૪૦૩                                     | ૪૧૫૧ | આગમ ૩૦ ગચ્છાચાર મૂલમ્ એવં વૃત્તિ              | ૯૧      |         |
| ૪૦૪                                     | ૪૧૩૧ | આગમ ૩૧ ગણિવિદ્યા મૂલમ્ એવં છાયા               | ૧૬      |         |
| આગમ મૂળ + વૃત્તિ-૧ નેટ ચાલુ..           |      |                                               |         |         |



|      |      |                                                      |         |         |
|------|------|------------------------------------------------------|---------|---------|
|      |      | पाछला पानेथी आगम मूल + वृत्ति-1 थावु.                |         |         |
| क्रम | इाईल | पुस्तकनुं नाम                                        | कुलपाना | कुलपाना |
| 405  | 4132 | आगम ३२ देवेन्द्रस्तव मूलम् एवं छाया                  | 46      |         |
| 406  | 4133 | आगम ३३ मरणसमाधि मूलम् एवं छाया                       | 98      |         |
| 407  | 4134 | आगम ३४ निशिथ मूलम् एव                                | 18      |         |
| 408  | 4135 | आगम ३५ बृहत् कल्प मूलम् एव                           | 14      |         |
| 409  | 4136 | आगम ३६ व्यवहार मूलम् एव                              | 17      |         |
| 410  | 4137 | आगम ३७ दशा श्रुतस्कंध मूलम् एव                       | 17      |         |
| 411  | 4138 | आगम ३८ ए जितकल्प मूलम् एवं भाष्य                     | 59      |         |
| 412  | 4139 | आगम ३८ बी पंचकल्प भाष्य एव                           | 56      |         |
| 413  | 4140 | आगम ३९ महानिशिथ मूलम् एव                             | 66      |         |
| 414  | 4141 | आगम ४० आवश्यक मूलम् एवं वृत्ति                       | 1736    |         |
| 415  | 4142 | आगम ४१ १ ओघनिर्युक्ति मूलम् एवं वृत्ति               | 459     |         |
| 416  | 4143 | आगम ४१ २ पिंडनिर्युक्ति मूलम् एवं वृत्ति             | 364     |         |
| 417  | 4144 | आगम ४२ दशवैकालिक मूलम् एवं वृत्ति                    | 577     |         |
| 418  | 4145 | आगम ४३ उत्तराध्ययनानि मूलम् एवं वृत्ति               | 1428    |         |
| 419  | 4146 | आगम ४४ नंदिसूत्र मूलम् एवं वृत्ति                    | 514     |         |
| 420  | 4147 | आगम ४५ अनुयोगद्वार मूलम् एवं वृत्ति                  | 547     |         |
| 421  | 4148 | कल्प बारसा सूत्र                                     | 145     |         |
|      |      | 3/2- आगमसूत्र मूल एवं वृत्ति पुस्तक-1, 51 पाना 17992 | 17,992  |         |
|      |      | 3/3 आगम मूल एवं वृत्ति-2 पुस्तक [ 9 ]                |         |         |
| क्रम | इाईल | पुस्तकनुं नाम                                        | कुलपाना | कुलपाना |
| 422  | 6211 | आगम 05 भगवती दानशेखरीय वृत्ति अंग सूत्र 5 भाग 01     | 312     |         |
| 423  | 6212 | आगम 05 भगवती दानशेखरीय वृत्ति अंग सूत्र 5 भाग 02     | 305     |         |
| 424  | 7201 | आगम 40 आवश्यक मलयगिरि वृत्ति मूल सूत्र 1 भाग 01      | 307     |         |
| 425  | 7202 | आगम 40 आवश्यक मलयगिरि वृत्ति मूल सूत्र 1 भाग 02      | 325     |         |
| 426  | 7203 | आगम 40 आवश्यक मलयगिरि वृत्ति मूल सूत्र 1 भाग 03      | 316     |         |
| 427  | 7204 | आगम 40 आवश्यक मलयगिरि वृत्ति मूल सूत्र 1 भाग 04      | 327     |         |
| 428  | 7205 | आगम 44 नन्दिसूत्र हारिभद्रिय वृत्ति                  | 124     |         |
| 429  | 7206 | आगम 45 अनुयोगद्वार हारिभद्रिय वृत्ति                 | 133     |         |
| 430  | 7209 | कल्पसूत्र सुबोधिका वृत्ति                            | 411     |         |
|      |      | 3/3- आगमसूत्र मूल एवं वृत्ति -2, पुस्तक 9 पाना 2560  | 02,560  |         |
|      |      |                                                      |         |         |
|      |      |                                                      |         |         |
|      |      |                                                      |         |         |

| 3/4-आगम यूँि साहित्य बुक्स [ 9 ]               |       |                                  |         |         |
|------------------------------------------------|-------|----------------------------------|---------|---------|
| क्रम                                           | इाईल  | पुस्तकनुं नाभ                    | कुलपाना | कुलपाना |
| 431                                            | 6201  | आगम ०१ आचार चूर्णि:              | 388     |         |
| 432                                            | 6202  | आगम ०२ सूत्रकृत चूर्णि:          | 472     |         |
| 433                                            | 6203  | आगम 40 आवश्यक चूर्णि: 01         | 310     |         |
| 434                                            | 6203  | आगम 40 आवश्यक चूर्णि: 02         | 320     |         |
| 435                                            | 6204  | आगम 40 आवश्यक चूर्णि: 03         | 332     |         |
| 436                                            | 6205  | आगम 42 दशवैकालिक चूर्णि:         | 387     |         |
| 437                                            | 6206  | आगम 43 उत्तराध्ययनानि चूर्णि:    | 291     |         |
| 438                                            | 6207  | आगम 44 नन्दिसूत्र चूर्णि:        | 70      |         |
| 439                                            | 6208  | आगम 45 अनुयोगद्वार सूत्र चूर्णि: | 98      |         |
| 3/4- आगमयूँि साहित्य प्रिन्ट बुक्स 9 पाना 2667 |       |                                  | 02,667  |         |
| 3/5-सवृत्तिकआगमसूत्राणि प्रिन्टेड बुक्स [40]   |       |                                  |         |         |
| क्रम                                           | इाईल  | पुस्तकनुं नाभ                    | कुलपाना | कुलपाना |
| 440                                            | 35001 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 01   | 314     |         |
| 441                                            | 35002 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 02   | 586     |         |
| 442                                            | 35003 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 03   | 498     |         |
| 443                                            | 35004 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 04   | 392     |         |
| 444                                            | 35005 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 05   | 594     |         |
| 445                                            | 35006 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 06   | 494     |         |
| 446                                            | 35007 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 07   | 338     |         |
| 447                                            | 35008 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 08   | 592     |         |
| 448                                            | 35009 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 09   | 552     |         |
| 449                                            | 35010 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 10   | 514     |         |
| 450                                            | 35011 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 11   | 384     |         |
| 451                                            | 35012 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 12   | 522     |         |
| 452                                            | 35013 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 13   | 538     |         |
| 453                                            | 35014 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 14   | 384     |         |
| 454                                            | 35015 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 15   | 314     |         |
| 455                                            | 35016 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 16   | 480     |         |
| 456                                            | 35017 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 17   | 488     |         |
| 457                                            | 35018 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 18   | 426     |         |
| 458                                            | 35019 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 19   | 514     |         |
| 459                                            | 35020 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 20   | 336     |         |
| 460                                            | 35021 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 21   | 610     |         |
| सवृत्तिक आगम सूत्राणि प्रिन्टेड यालु..         |       |                                  |         |         |

|      |       |                                                             |         |  |
|------|-------|-------------------------------------------------------------|---------|--|
|      |       | पाछला पानेथी सवृत्तिक आगम सूत्राणि प्रिन्टेड थालु..         |         |  |
| क्रम | झाईल  | पुस्तकनुं नाम                                               | कुलपाना |  |
| 461  | 35022 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 22                              | 614     |  |
| 462  | 35023 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 23                              | 376     |  |
| 463  | 35024 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 24                              | 426     |  |
| 464  | 35025 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 25                              | 344     |  |
| 465  | 35026 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 26                              | 312     |  |
| 466  | 35027 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 27                              | 330     |  |
| 467  | 35028 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 28                              | 466     |  |
| 468  | 35029 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 29                              | 442     |  |
| 469  | 35030 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 30                              | 464     |  |
| 470  | 35031 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 35                              | 426     |  |
| 471  | 35032 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 36                              | 472     |  |
| 472  | 35033 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 37                              | 376     |  |
| 473  | 35034 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 31                              | 590     |  |
| 474  | 35035 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 32                              | 522     |  |
| 475  | 35036 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 33                              | 482     |  |
| 476  | 35037 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 34                              | 466     |  |
| 477  | 35038 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 38                              | 528     |  |
| 478  | 35039 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 39                              | 560     |  |
| 479  | 35040 | सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 40                              | 394     |  |
|      |       | 3/5-सवृत्तिक आगमसूत्राणी 1 प्रिन्ट बुक्स 9 पाना 18460       | 18,460  |  |
|      |       | 3/6-सवृत्तिक आगम सूत्राणि-2 प्रिन्टेड बुक्स [8]             |         |  |
| क्रम | झाईल  | पुस्तकनुं नाम                                               | कुलपाना |  |
| 480  | 35061 | सवृत्तिक आगम सूत्राणि 2 भगवती मूल एवं वृत्ति आगम 5 भाग 1    | 320     |  |
| 481  | 35062 | सवृत्तिक आगम सूत्राणि 2 भगवती मूल एवं वृत्ति आगम 5 भाग 2    | 318     |  |
| 482  | 35063 | सवृत्तिक आगम सूत्राणि 2 आवश्यक निर्युक्ति एवं वृत्ति आगम 40 | 318     |  |
| 483  | 35064 | सवृत्तिक आगम सूत्राणि 2 04 आवश्यक निर्युक्ति एवं वृत्ति आगम | 336     |  |
| 484  | 35065 | सवृत्तिक आगम सूत्राणि 2 05 आवश्यक निर्युक्ति एवं वृत्ति आगम | 328     |  |
| 485  | 35066 | सवृत्तिक आगम सूत्राणि 2 06 आवश्यक निर्युक्ति एवं वृत्ति आगम | 336     |  |
| 486  | 35067 | सवृत्तिक आगम सूत्राणि 2 07 नन्दि एवं अनुयोगद्वार वृत्ति:    | 270     |  |
| 487  | 35068 | सवृत्तिक आगम सूत्राणि 2 कल्पसूत्रम् मूल एवं वृत्ति          | 422     |  |
|      |       | 3/6-सवृत्तिक आगम सूत्राणी 2, प्रिन्टेड बुक्स 8 पाना 2648    | 02,648  |  |
|      |       |                                                             |         |  |
|      |       |                                                             |         |  |
|      |       |                                                             |         |  |

|      |       |                                                        |         |          |
|------|-------|--------------------------------------------------------|---------|----------|
|      |       | 3/7 स्यूष्टिक आगम सुत्ताणि, प्रिन्टेड बुक्स [8]        |         |          |
| क्रम | इाईल  | पुस्तकनुं नाम                                          | कुलपाना |          |
| 488  | 35051 | सचूर्णिक आगम सुत्ताणि 01                               | 400     |          |
| 489  | 35052 | सचूर्णिक आगम सुत्ताणि 01                               | 486     |          |
| 490  | 35053 | सचूर्णिक आगम सुत्ताणि 04                               | 320     |          |
| 491  | 35054 | सचूर्णिक आगम सुत्ताणि 05                               | 328     |          |
| 492  | 35055 | सचूर्णिक आगम सुत्ताणि 06                               | 344     |          |
| 493  | 35056 | सचूर्णिक आगम सुत्ताणि 06                               | 398     |          |
| 494  | 35057 | सचूर्णिक आगम सुत्ताणि 07                               | 302     |          |
| 495  | 35058 | सचूर्णिक आगम सुत्ताणि 08                               | 176     |          |
|      |       | 3/7-स्यूष्टिक आगम सुत्ताणि प्रिन्टेड बुक्स 8 पाना 2754 | 02,754  |          |
|      |       |                                                        |         | 0,60,884 |
|      |       | [4] आगम कोष साहित्य(१७ थी२१) कुल बुक्स 16 कुलपाना 5506 |         |          |
|      |       | 4/ 1 आगम सद् कोसो, प्रिन्टेड बुक्स [4]                 |         |          |
| क्रम | इाईल  | पुस्तकनुं नाम                                          | कुलपाना | कुलपाना  |
| 496  | 16024 | आगमसद्कोसो भाग- १                                      | 546     |          |
| 497  | 16025 | आगमसद्कोसो भाग- २                                      | 562     |          |
| 498  | 16026 | आगमसद्कोसो भाग-३                                       | 546     |          |
| 499  | 16027 | आगमसद्कोसो भाग- ४                                      | 530     |          |
|      |       | 4/ 1- आगम सद्कोसो प्रिन्टेड बुक्स 4 पाना 2184          | 02,184  |          |
| 500  | 16094 | 4/2 आगम कहा व नाम कोसो प्रिन्टेड बूक [1]               | 208     |          |
|      |       | 4/3 आगम सागर कोष: नेट बुक्स [5]                        |         |          |
| क्रम | इाईल  | पुस्तकनुं नाम                                          | कुलपाना | कुलपाना  |
| 501  | 16133 | आगम-सागर-कोश: भाग-१                                    | 238     |          |
| 502  | 16134 | आगम-सागर-कोश: भाग-२                                    | 200     |          |
| 503  | 16135 | आगम-सागर-कोश: भाग-३                                    | 272     |          |
| 504  | 16136 | आगम-सागर-कोश: भाग-४                                    | 246     |          |
| 505  | 16137 | आगम-सागर-कोश: भाग-५                                    | 170     |          |
|      |       | 4/3- आगम सागर कोष: नेट बुक्स 5 पाना 1126               | 01,126  |          |
|      |       | 4/4 आगमबृहत् नामकोष: प्रिन्टेड बुक्स [2]               |         |          |
| 506  | 35091 | आगम बृहत् नाम कोष: लाग- १                              | 250     |          |
| 507  | 35092 | आगम बृहत् नाम कोष: लाग- २                              | 250     |          |
|      |       | 4/3- आगम सागर कोष: नेट बुक्स 5 पाना 1126               | 01,126  |          |

| 4/5 આગમ શબ્દાદિ સંગ્રહ: પ્રિન્ટેડ બુક્સ [4]          |       |                                                       |         |         |
|------------------------------------------------------|-------|-------------------------------------------------------|---------|---------|
| ક્રમ                                                 | ફાઈલ  | પુસ્તકનું નામ                                         | ફુલપાના | ફુલપાના |
| 508                                                  | 34455 | આગમ શબ્દાદિ સંગ્રહ (પ્રાકૃત, સંસ્કૃત, ગુજરાતી) ભાગ 01 | 368     |         |
| 509                                                  | 34456 | આગમ શબ્દાદિ સંગ્રહ (પ્રાકૃત, સંસ્કૃત, ગુજરાતી) ભાગ 02 | 392     |         |
| 510                                                  | 34457 | આગમ શબ્દાદિ સંગ્રહ (પ્રાકૃત, સંસ્કૃત, ગુજરાતી) ભાગ 03 | 392     |         |
| 511                                                  | 34458 | આગમ શબ્દાદિ સંગ્રહ (પ્રાકૃત, સંસ્કૃત, ગુજરાતી) ભાગ 04 | 336     |         |
| 4/5- આગમ શબ્દાદિ સંગ્રહ: પ્રિન્ટેડ બુક્સ 4 પાના 1488 |       |                                                       | 01,488  |         |
|                                                      |       |                                                       |         | 05,506  |
| [5] આગમ અનુક્રમ સાહિત્ય(૨૨થી૩૦) ફુલ બુક્સ ૮          |       |                                                       |         |         |
| 5/1 આગમવિષયાનુક્રમ, પ્રિન્ટ/નેટ બુક્સ [2]            |       |                                                       |         |         |
| ક્રમ                                                 | ફાઈલ  | પુસ્તકનું નામ                                         | ફુલપાના | ફુલપાના |
| 512                                                  | 8040  | આગમ વિષય દર્શન                                        | 382     |         |
| 513                                                  | 9143  | આગમ વિષય અનુક્રમ                                      | 344     |         |
| 5/1- આગમવિષયાનુક્રમ પ્રિન્ટ/નેટ બુક્સ 2 પાના 726     |       |                                                       | 00,726  |         |
| 5/2 આગમ સટીક વિષયાનુક્રમ, નેટ બુક્સ [4]              |       |                                                       |         |         |
| ક્રમ                                                 | ફાઈલ  | પુસ્તકનું નામ                                         | ફુલપાના | ફુલપાના |
| 514                                                  | 7213  | અંગ સૂત્ર વિષયાનુક્રમ                                 | 179     |         |
| 515                                                  | 7214  | ઉપાંગ સૂત્ર વિષયાનુક્રમ                               | 108     |         |
| 516                                                  | 7214  | પ્રકિર્ણક સૂત્ર વિષયાનુક્રમ                           | 18      |         |
| 517                                                  | 7215  | નન્દિ આદિ સપ્ત સૂત્ર વિષયાનુક્રમ                      | 123     |         |
| 5/2- આગમ સટીક વિષયાનુક્રમ નેટ બુક્સ 4 પાના 428       |       |                                                       | 00,428  |         |
| 5/3 આગમ સૂત્ર-ગાથા અનુક્રમ, નેટ બુક્સ [3]            |       |                                                       |         |         |
| ક્રમ                                                 | ફાઈલ  | પુસ્તકનું નામ                                         | ફુલપાના | ફુલપાના |
| 518                                                  | 7210  | અંગ સૂત્ર ગાથાદી અકારાદિ ક્રમ                         | 148     |         |
| 519                                                  | 7211  | ઉપાંગ પ્રકિર્ણક સૂત્ર ગાથાદી અકારાદિ ક્રમ             | 79      |         |
| 520                                                  | 7212  | નન્દિ આદિ સૂત્ર ગાથાદી અકારાદિ ક્રમ                   | 197     |         |
| 5/3- આગમ સૂત્ર-ગાથા અનુક્રમ નેટ 3 બુક્સ પાના 424     |       |                                                       | 00,424  |         |
|                                                      |       |                                                       |         | 01,578  |
| [6] આગમ અન્ય સાહિત્ય(૩૧થી૪૪)ફુલ બુક્સ 14             |       |                                                       |         |         |
| 6/1 આગમ સંબંધી લેખ નેટ બુક્સ [3]                     |       |                                                       |         |         |
| 521                                                  | 24971 | આગમના પ્રખર વ્યાખ્યાતાઓ                               | 28      |         |
| 522                                                  | 24971 | આગમકાલીન શ્રાવક-શ્રાવિકા જીવન અને કવન                 | 36      |         |
| 523                                                  | 35150 | આગમ-યાત્રા                                            | 4       |         |
| 6/1- આગમ સંબંધી લેખ પ્રિન્ટેડ 3 બુક્સ પાના 68        |       |                                                       | 00,068  |         |



| 6/2 આગમ કથાનુયોગ પ્રિન્ટેડ બુક્સ [6]                     |       |                                               |         |         |
|----------------------------------------------------------|-------|-----------------------------------------------|---------|---------|
| ક્રમ                                                     | ફાઈલ  | પુસ્તકનું નામ                                 | કુલપાના | કુલપાના |
| 524                                                      | 5008  | આગમ કથાનુયોગ ગુજરાતી ભાગ ૦૧                   | 386     |         |
| 525                                                      | 5009  | આગમ કથાનુયોગ ગુજરાતી ભાગ ૦૨                   | 370     |         |
| 526                                                      | 5010  | આગમ કથાનુયોગ ગુજરાતી ભાગ ૦૩                   | 434     |         |
| 527                                                      | 5011  | આગમ કથાનુયોગ ગુજરાતી ભાગ ૦૪                   | 386     |         |
| 528                                                      | 5012  | આગમ કથાનુયોગ ગુજરાતી ભાગ ૦૫                   | 322     |         |
| 529                                                      | 5013  | આગમ કથાનુયોગ ગુજરાતી ભાગ ૦૬                   | 274     |         |
|                                                          |       | 6/2- આગમ કથાનુયોગ પ્રિન્ટેડ 6 બુક્સ પાના 2172 | 02,172  |         |
| 6/3 આગમ સંબંધિ અન્યસાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ [4]           |       |                                               |         |         |
| ક્રમ                                                     | ફાઈલ  | પુસ્તકનું નામ                                 | કુલપાના | કુલપાના |
| 530                                                      | 35073 | આગમ સૂત્ર-ગાથા આદિ અકારાદિ                    | 431     |         |
| 531                                                      | 35074 | આગમ સૂત્ર લઘુ બૃહત્ વિષયાનુક્રમ               | 439     |         |
| 532                                                      | 35071 | આગમીય સુક્તાવલિ આદિ                           | 96      |         |
| 533                                                      | 35072 | પ્રત્યેકબુદ્ધ ભાષિતાની ઋષિભાષિતસૂત્રાણિ મૂલં  | 78      |         |
| 534                                                      | 35100 | આગમ સંક્ષિપ્ત પરીચય                           | 96      |         |
| 6/4 આગમ પૂજન સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ [1]                 |       |                                               |         |         |
| 535                                                      | 5163  | ૪૫ આગમ મહાપૂજન વિધિ                           | 00,068  |         |
|                                                          |       |                                               |         | 03,352  |
| કુલ આગમ સાહિત્ય બુક્સ 535, કુલ પેજ 1,02,550              |       |                                               |         |         |
| આગમ સિવાયનું અન્ય સાહિત્ય                                |       |                                               |         |         |
| 7/1 તત્ત્વાભ્યાસ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ-13 કુલ પેજ 2090 |       |                                               |         |         |
| ક્રમ                                                     | ફાઈલ  | પુસ્તકનું નામ                                 | કુલપાના | કુલપાના |
| 536                                                      | 5030  | તત્ત્વાર્થ સૂત્ર પ્રબોધ ટીકા અધ્યાય ૦૧        | 254     |         |
| 537                                                      | 5031  | તત્ત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય ૦૧    | 174     |         |
| 538                                                      | 5032  | તત્ત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય ૦૨    | 194     |         |
| 539                                                      | 5033  | તત્ત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય ૦૩    | 170     |         |
| 540                                                      | 5034  | તત્ત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય ૦૪    | 186     |         |
| 541                                                      | 5035  | તત્ત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય ૦૫    | 194     |         |
| 542                                                      | 5036  | તત્ત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય ૦૬    | 178     |         |
| 543                                                      | 5037  | તત્ત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય ૦૭    | 170     |         |
| 544                                                      | 5038  | તત્ત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય ૦૮    | 154     |         |
|                                                          |       | તત્ત્વાભ્યાસ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ ચાલુ..         |         |         |

|      |       |                                                       |         |         |
|------|-------|-------------------------------------------------------|---------|---------|
|      |       | પાછલાપાનેથી તત્વાભ્યાસ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ ચાલુ..       |         |         |
| ક્રમ | ફાઈલ  | પુસ્તકનું નામ                                         | કુલપાના | કુલપાના |
| 545  | 5039  | તત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય ૦૯              | 202     |         |
| 546  | 5040  | તત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય ૧૦              | 82      |         |
| 547  | 5041  | તત્વાર્થ સૂત્રના આગમ આધાર સ્થાનો                      | 118     |         |
| 548  | 31008 | તત્વાર્થ સૂત્ર કે ૮૪ પ્રકાશનો સંબંધી ડીવીડી કી માહિતી | 14      |         |
|      |       | 7/1 - તત્વાભ્યાસ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ 13 બુક્સ પાના 2090 | 02,090  |         |
|      |       | 7/2 સૂત્રાભ્યાસ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 6 પાના 1480   |         |         |
| ક્રમ | ફાઈલ  | પુસ્તકનું નામ                                         | કુલપાના | કુલપાના |
| 549  | 8042  | પંડીત વિરવિજયજી જૈન એજ્યુકેશનલ સર્ટીફિકેટ કોર્સ       | 174     |         |
| 550  | 8043  | પ્રતિક્રમણસૂત્ર અભિનવ વિવેચન ભાગ ૧                    | 321     |         |
| 551  | 8044  | પ્રતિક્રમણસૂત્ર અભિનવ વિવેચન ભાગ ૨                    | 322     |         |
| 552  | 8045  | પ્રતિક્રમણસૂત્ર અભિનવ વિવેચન ભાગ ૩                    | 305     |         |
| 553  | 8046  | પ્રતિક્રમણસૂત્ર અભિનવ વિવેચન ભાગ ૪                    | 306     |         |
| 554  | 35075 | શ્રમણ જ્ઞાન-કૌશલ્ય અભિયાન ( કક્ષા- ૧ થી ૧૫)           | 52      |         |
|      |       | 7/2 સૂત્રાભ્યાસ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ ૬ પાના 1480   | 01,480  |         |
|      |       | 7/3 વ્યાકરણ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 5 પાના 1048       |         |         |
| ક્રમ | ફાઈલ  | પુસ્તકનું નામ                                         | કુલપાના | કુલપાના |
| 555  | 5135  | અભિનવ હેમ લઘુ પ્રક્રિયા ભાગ ૦૧                        | 256     |         |
| 556  | 5136  | અભિનવ હેમ લઘુ પ્રક્રિયા ભાગ ૦૨                        | 200     |         |
| 557  | 5137  | અભિનવ હેમ લઘુ પ્રક્રિયા ભાગ ૦૩                        | 310     |         |
| 558  | 5138  | અભિનવ હેમ લઘુ પ્રક્રિયા ભાગ ૦૪                        | 254     |         |
| 559  | 3632  | કૃદન્તમાલા                                            | 28      |         |
|      |       | 7/3 વ્યાકરણ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 5 પાના 1048       | 01,048  |         |
|      |       | 7/4 વ્યાખ્યાન સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 5 પાના 1300     |         |         |
| ક્રમ | ફાઈલ  | પુસ્તકનું નામ                                         | કુલપાના | કુલપાના |
| 560  | 9105  | અભિનવ ઉપદેશ પ્રાસાદ વ્યાખ્યાનો ભાગ ૦૧                 | 364     |         |
| 561  | 9106  | અભિનવ ઉપદેશ પ્રાસાદ વ્યાખ્યાનો ભાગ ૦૨                 | 402     |         |
| 562  | 9107  | અભિનવ ઉપદેશ પ્રાસાદ વ્યાખ્યાનો ભાગ ૦૩                 | 354     |         |
| 563  | 9108  | અભિનવ ઉપદેશ પ્રાસાદ વ્યાખ્યાનો ભાગ ૦૪                 | 98      |         |
| 564  | 9207  | લઘુ વ્યાખ્યાન સંગ્રહ કારણ કે તે સાધુ હતા              | 82      |         |
|      |       | 7/4 વ્યાખ્યાન સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 5 પાના 1300     | 1300    |         |

|      |       |                                                  |         |         |
|------|-------|--------------------------------------------------|---------|---------|
|      |       | 7/5 જિનભક્તિ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 9 પાના 1196 |         |         |
| ક્રમ | ફાઈલ  | પુસ્તકનું નામ                                    | કુલપાના | કુલપાના |
| 565  | 5165  | વિતરાગ સ્તુતિ સચ્ચ ૧૧૫૧ સ્તુતિ                   | 222     | 565     |
| 566  | 5166  | સિદ્ધાચલનો સાથી ભાવયાત્રા સહિત                   | 102     | 566     |
| 567  | 5170  | શત્રુંજય ભક્તિ                                   | 50      | 567     |
| 568  | 5176  | ચૈત્ય પરિપાટી                                    | 56      | 568     |
| 569  | 3631  | શત્રુંજય ભક્તિ                                   | 50      | 569     |
| 570  | 5133  | ચૈત્યવંદન માળા                                   | 362     | 570     |
| 571  | 3633  | ચૈત્યવંદન સંગ્રહ તીર્થ જિન વિશેષ                 | 146     | 571     |
| 572  | 3634  | ચૈત્યવંદન પર્વમાલા                               | 98      | 572     |
| 573  | 3635  | ચૈત્યવંદન ચૌવિસી                                 | 110     | 573     |
|      |       | 7/5 જિનભક્તિ સાહિત્ય પ્રિન્ટ બુક્સ 9 પાના 1196   | 01,196  |         |
|      |       | 7/6 વિધિ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 3 પાના 256      |         |         |
| ક્રમ | ફાઈલ  | પુસ્તકનું નામ                                    | કુલપાના | કુલપાના |
| 574  | 5161  | દીક્ષા યોગાદિ વિધી                               | 86      |         |
| 575  | 5162  | વિધિ સંગ્રહ                                      | 154     |         |
| 576  | 5183  | સાધુ સાધ્વી કાળધર્મ વિધિ                         | 16      |         |
|      |       | 7/6 વિધિ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 3 પાના 256      | 00,256  |         |
|      |       | 7/7 આરાધના સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 4 પાના 534    |         |         |
| ક્રમ | ફાઈલ  | પુસ્તકનું નામ                                    | કુલપાના | કુલપાના |
| 577  | 5134  | સમાધિમરણ                                         | 366     |         |
| 578  | 5182  | સાધુ સાધ્વી અંતિમ આરાધના                         | 18      |         |
| 579  | 5168  | શ્રાવક અંતિમ આરાધના                              | 50      |         |
| 580  | 35381 | સમાધિ મૃત્યુનું મેનેજમેન્ટ                       | 100     |         |
|      |       | 7/7 આરાધના સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 4 પાના 534    | 00,534  |         |
|      |       | 7/8 પરિચય સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 3 પાના 136     |         |         |
| ક્રમ | ફાઈલ  | પુસ્તકનું નામ                                    | કુલપાના | કુલપાના |
| 581  | 35151 | સાહિત્ય-યાત્રા ફોલ્ડર 1 થી 31 નો પરિચય           | 36      |         |
| 582  | 31012 | દીપરત્નસાગરની 585 સાહિત્ય કૃતિયો _word_2017      | 60      |         |
| 583  | 35152 | દીપરત્નસાગરની 585 સાહિત્ય કૃતિયો _Excl_ 2017     | 40      |         |
|      |       | 7/8 પરિચય સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 3 પાના 136     | 00,136  |         |
|      |       | 7/9 પૂજન સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ- 1 પાના         |         |         |
| 584  | 5163  | પાર્શ્વ પદ્માવતી મહાપૂજન વિધિ                    | 68      |         |

|      |       |                                                           |         |         |
|------|-------|-----------------------------------------------------------|---------|---------|
|      |       | 7/10 તીર્થંકર સંક્ષિપ્ત દર્શન પ્રિન્ટેડ બુક્સ 25 પાના 680 |         |         |
| ક્રમ | ફાઈલ  | પુસ્તકનું નામ                                             | કુલપાના | કુલપાના |
| 585  | 35101 | ભગવંત ઋષભ પરિચય                                           | 18      |         |
| 586  | 35102 | ભગવંત અજિતપરિચય                                           | 18      |         |
| 587  | 35103 | ભગવંત સંભવ પરિચય                                          | 18      |         |
| 588  | 35104 | ભગવંત અભિનંદન પરિચય                                       | 18      |         |
| 589  | 35105 | ભગવંત સુમતિ પરિચય                                         | 18      |         |
| 590  | 35106 | ભગવંત પદ્મપ્રભ પરિચય                                      | 18      |         |
| 591  | 35107 | ભગવંત સુપાર્શ્વ પરિચય                                     | 18      |         |
| 592  | 35108 | ભગવંત ચંદ્રપ્રભ પરિચય                                     | 18      |         |
| 593  | 35109 | ભગવંત સુવિધિ પરિચય                                        | 18      |         |
| 594  | 35110 | ભગવંત શીતલ પરિચય                                          | 18      |         |
| 595  | 35111 | ભગવંત શ્રેયાંસ પરિચય                                      | 18      |         |
| 596  | 35112 | ભગવંત વાસુપૂજ્ય પરિચય                                     | 18      |         |
| 597  | 35113 | ભગવંત વિમલ પરિચય                                          | 18      |         |
| 598  | 35114 | ભગવંત અનંત પરિચય                                          | 18      |         |
| 599  | 35115 | ભગવંત ધર્મ પરિચય                                          | 18      |         |
| 600  | 35116 | ભગવંત શાંતિ પરિચય                                         | 18      |         |
| 601  | 35117 | ભગવંત કુંથુ પરિચય                                         | 18      |         |
| 602  | 35118 | ભગવંત અર પરિચય                                            | 18      |         |
| 603  | 35119 | ભગવંત મહિ પરિચય                                           | 18      |         |
| 604  | 35120 | ભગવંત મુનિસુવ્રત પરિચય                                    | 18      |         |
| 605  | 35121 | ભગવંત નમિ પરિચય                                           | 18      |         |
| 606  | 35122 | ભગવંત નેમિ પરિચય                                          | 18      |         |
| 607  | 35123 | ભગવંત પાર્શ્વ પરિચય                                       | 18      |         |
| 608  | 35124 | ભગવંત વર્ધમાન પરિચય                                       | 18      |         |
| 609  | 34662 | ૨૪ તીર્થંકર પરિચય ૧૮૫ દ્વારોમાં                           | 248     |         |
|      |       | 7/10 તીર્થંકર સંક્ષિપ્ત દર્શન બુક્સ 25 પાના 680           | 00,680  |         |
|      |       |                                                           |         |         |
|      |       | 7/11 પ્રકીર્ણ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 4 પાના 246          |         |         |
| ક્રમ | ફાઈલ  | પુસ્તકનું નામ                                             | કુલપાના | કુલપાના |
| 610  | 05164 | ચોઘડિયા તથા હોરાની કાયમી સમય દર્શિકા                      | 66      |         |
| 611  | 05169 | અમદાવાદના જિનમંદિર ઉપાશ્ર આદિ ડિરેક્ટરી                   | 128     |         |
| 612  | 05159 | શ્રાવકના બાર વ્રત તથા અન્ય નિયમો                          | 16      |         |
| 613  | 00560 | અભિનવ જૈન પંચાંગ                                          | 36      |         |
|      |       | 7/11 પ્રકીર્ણ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 4 પાના 246          | 00,246  |         |
|      |       |                                                           |         |         |

| 7/12 દીપરત્નસાગરનાલઘુશોધનિબંધ નેટબુક્સ 2 પાના 106                 |                                                 |                                            |                    |         |
|-------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------|--------------------------------------------|--------------------|---------|
| ક્રમ                                                              | ફાઈલનં.                                         | પુસ્તકનું નામ                              | કુલપાના            | કુલપાના |
| 614                                                               | 249713                                          | આગમકાલીન શ્રાવક-શ્રાવિકા જીવન અને કવન      | 70                 |         |
| 615                                                               | 249547                                          | શ્રુત ઉપાસકો અને સાહિત્ય સર્જન             | 36                 |         |
|                                                                   |                                                 | 7/12 દીપરત્નસાગરનાલઘુશોધનિબંધ બુક્સ 2 પાના | 00,106             |         |
| મુનિ દીપરત્નસાગરજી દ્વારા [31/12/2020 સુધીમાં] થયેલ સાહિત્ય કાર્ય |                                                 |                                            |                    |         |
| આગમ સાહિત્ય                                                       |                                                 | બુક્સ 535                                  | કુલ પેજ 1,02,460   |         |
| આગમેતર સાહિત્ય                                                    |                                                 | બુક્સ 80                                   | કુલ પેજ 0,09,140   |         |
| કુલ સાહિત્ય નિર્માણ                                               |                                                 | બુક્સ 615                                  | કુલ પેજ 1,11,600   |         |
| + 'તત્ત્વાર્થ સૂત્ર'ના એક વિશિષ્ટ સંકલનની DVD કુલ પેજ 27,930      |                                                 |                                            |                    |         |
| અમારા સાહિત્યનો વિસ્તાર કુલપાના 1,39,530                          |                                                 |                                            |                    |         |
| એક લાખ ઓગણચાલીશ હજાર પાંચસો ત્રીશ પાના                            |                                                 |                                            |                    |         |
| મુનિ દીપરત્નસાગર વિશે અન્ય લેખક દ્વારા લખાયેલ મહત્વના 5 આર્ટીકલ્સ |                                                 |                                            |                    |         |
| ક્રમ                                                              | લેખનું નામ                                      | મેગેઝીન                                    | લેખક               |         |
| ૧                                                                 | જૈન ધર્મના મોબાઈલ એન્સાઈક્લોપીડિયા-દીપરત્નસાગર  | ચિત્રલેખા                                  | શ્રી પાર્થિવ વોરા  |         |
| ૨                                                                 | પ્રાચીન મુનિઓની ઉજળી પરંપરાનું તેજસ્વી અનુસંધાન | પ્રબુદ્ધજીવન                               | ડો. બીપીન આશર      |         |
| ૩                                                                 | જાણ્યું છતાં અજાણ્યું - 'દીપરત્નસાગર મહારાજ     | ગુજરાતસમાચાર                               | ડો. કુમારપાળ દેસાઈ |         |
| ૪                                                                 | વિશ્વમાં સૌ પ્રથમ જૈન આગમનો ગુજરાતી અનુવાદ      | દિવ્ય ભાસ્કર                               | પ્રો. વિજય આશર     |         |
| ૫                                                                 | જૈન જ્ઞાનસાગરના મોંઘેરા રત્ન 'દીપરત્નસાગરજી     | સાગરનું ઝવેરાત                             | આં હર્ષસાગરસૂરિજી  |         |
| 1/1/2021 થી આરંભ થઈ ગયું છે 'આગમનું એક વિરાટ કાર્ય'               |                                                 |                                            |                    |         |
| <b>" આગમ પરિભાષા કોષ: "</b>                                       |                                                 |                                            |                    |         |
| પુસ્તક સર્જન 616 થી 620, કુલ પાના 1700                            |                                                 |                                            |                    |         |
| કુલ પ્રકાશનો 620, પાના 1,13,300 + DVD-27,930 કુલ પાના 1,41,230    |                                                 |                                            |                    |         |
| સાહિત્ય વિસ્તાર- એક લાખ એકતાલીશ હજાર બસો ત્રીશ પાના               |                                                 |                                            |                    |         |



[illegible]

નમો નમો નિમ્મલદંસણસ્સ  
બાલ બ્રહ્મચારી શ્રી નેમિનાથાય નમઃ  
પૂજ્ય આનન્દ-ક્ષમા-લલિત-સુશીલ-સુધર્મસાગર-ગુરુભ્યો નમઃ

## [૫] આગમ-પરિભાષા-કોષઃ

આગમ શબ્દખણ્ડ- (વર્ણ- ય સે હ)

આગમ પરિભાષા કોષઃ - સંક્ષિપ્ત વિવરણ  
વિભાજન- પાંચ ભાગોમેં,  
કુલ પૃષ્ઠ- 1700  
આગમિક શબ્દ- કરીબ 36,000  
ઇન શબ્દો કિ વ્યાખ્યા- કરીબ 63,000  
ઇન વ્યાખ્યા કે આગમ સંદર્ભ 1,00,000 સે જ્યાદા  
સંપૂર્ણ ખર્ચ - ગુપ્તદાતાઓ કે દ્વારા

વેબ સાઈટઃ— (1) [www.jainelibrary.org](http://www.jainelibrary.org) (2) [deepratnasagar.in](http://deepratnasagar.in)  
ઈમેલ એડ્રેસઃ— [jainmunideepratnasagar@gmail.com](mailto:jainmunideepratnasagar@gmail.com) મોબાઈલ 09825967397